পুয়োগ-চিন্তামণিঃ।

অর্থাৎ

াকখানি অত্যুৎকৃষ্ট প্রাচীন আয়ুর্কেদীয় চিকিৎসা এছ)

।মদ্ রামনাধিক্য সেন কবিভূষণ-বিরচিত।

হারী হসংছিতা, বৈদ্যজীবন, পাচনচিকিৎসা, একাক্ষরকোর, মদুনবিমোদ প্রভৃতি গ্রন্থানামন্ত্রাদক—

গ্রীযুক্ত কালী প্রসন্ন বিট্সরকার কবিরাজেন অনুদিতং সংশোধিত।

কলিকাতা।

১৪১ নং চিৎপুর রোড্ জেমারল প্রিণ্টিং প্রেনে শ্বিনীমাধ্য ভইগোধ্য কর্ম্ব মুদ্রিত ও প্রকাশিত।

जन १२०७ जोग।

বিজ্ঞাপন।

বর্ত্তমান সময়ে আয়ুর্বেনীয় (কবিরাজী) চিকিৎসার উপ-ভা দর্শনে তৎপ্রতি সাধারণের আন্তরিক ভক্তি দেখিয়া ;ই প্রতীয়দান হইতেছে যে, আয়ুর্বেনীয় এন্থ বছল প্রচারের ান্ত প্রয়োজন হইয়াছে। আমি এই সকল নিরীকণ করিয়া, পূর্বের "মাধবনিদান, চক্রনত, বৈদ্যজীবন, নাড়ীবিজ্ঞান ও ভিতাননির্ণয়" নামক কভিপয় আয়ুর্বেনীয় আছ টীকা ও বঙ্কা-ন সহ প্রকাশ করার, তদ্ধারা সাধারণের সম্বিক উপকার াছে সন্দর্শন করিয়া এক্ষণে আবার শ্রীমদ্রাম্মাণিক সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" নামক আয়ুর্বেদীর হেলা প্রান্থখনি "হারীত সংহিতা, বৈদ্যালীবন, পাচন ংসা, একাকরকোষ, মননবিনোদ, প্রভৃতি" গ্রন্থসমূহের বাৰক এীযুক্ত কালীপ্ৰদন্ন বিট্দরকার কবিরাজ মহাশর া বাঙ্গালা ভাষার অনুবাদ করাইয়া, মুলানুবাদ সহ মুদ্রিত য়া জনসমাজে প্রকাশ করিলাম। ইছারারা যে সাধারণের ণ্য উপকার হইবে, ভাহা বলা বাস্থল্য; যে হেতৃ প্রথমভঃ কার নাড়ী, কিহ্বা, মূত্র, নেত্র প্রস্তুতির পরীকা, শারীরত হা, বিবরণ ও জার হইতে বিষ্দোষ পর্যান্ত সমস্ত রোগেরই ংশা প্রণালী ও অব্যর্গ আন্ত ফলপ্রন পাচন, বটী এবং নানি ও বিবিধ বৈনিক এবং তান্ত্রিক মন্ত্র এই উভয়বিধ ষই অতি ইন্দররূপে সংগ্রহপূর্বক এই "প্রয়োগ-চিন্তামণি" খিনি প্রণয়ৰ করিয়াছেন। আর বিভীরতঃ ইহার অনুবাদক দ'কবিরাজ মহাশর্ঞ অভীব যতু ও পরিশ্রম সহকারে চরক. ps, বাগ্ভট্, ভাবপ্রকাশ, রদরত্বাকর, আত্রেয়দংহিতা তি কভিপর প্রধান প্রধান আয়ুর্বেদীয় আছ হইতে বহু नित्र काजानिश्वक विवन्न मध्यद्यक्षक करे वारम् मध्योजना

করিলা দিয়া ইহার কলেবর অতীব পরিপুষ্ট কামরা দিয়াছেন।
এবং অমুবাদক অমুবাদ অতান্ত সরল, কঠিন শব্দের সহজ অর্থ,
দ্রব্য সমূহের প্রচলিত ভাষা নাম, কুটস্থলের তাৎপর্যার্থ, সমস্ত
আত্থানি আন্যোপান্ত দেখিয়া সংশোধন পূর্বক শুদ্ধিপত্ত,
প্রশন্ত স্থাপিত এবং স্থাপিতের মধ্যে "এন্থাতিরিক্ত বিষয়" এর
নিম্নভাগে এন্থান্তর হইতে সংগৃহীত বিষয় গুলির তালিকা
করিয়া দিয়াছেন। তৃতীয়তঃ এই আন্থানি অতি পুরাকালে
(আমুমানিক ২০০ তুইশত বৎসরের পূর্বে) প্রধান প্রধান আয়ু
ব্বেদীয় এন্থ হইতে সংগৃহীত এবং ভৈষজ্যরত্বাবদী, চক্রেদত,
ভাবপ্রকাশ প্রভৃতি গ্রন্থের ন্যায় চিকিৎসা বিষয়ক অতি উপযুক্ত গ্রন্থ।

একণে সহনর পাচিকগণ সমীপে আমার বিনীতভাবে নিবেদন এই সে, ভাঁহারা অনুকাশা প্রকাশপূর্দেক এই গ্রন্থানি আদ্যোপান্ত দর্শন করিয়া এতদ্বারা কিকিয়াত্র উপকার প্রাপ্ত হইলে, আমি আমার সমূলর পরিশ্রম এবং অর্থবার সার্থক জ্ঞান করিব।

পরিশেষে আমি রুত্তত্ত। মহকারে থীকার করিতেছি যে, রাজধানী কলিকাতার মন্নিকট পকালীয়াটছ খ্যাতনামা প্রপ্র-সিদ্ধ কবিরাজ পকালীপ্রমান দক্ত মহোনরের জ্যেতিপুর জীযুক্ত প্রসন্নকুমার নত কবিরত্ন কবিরাজ মহাশার এই প্রয়োগ-চিত্তামনি অন্তথ্যনি মুদ্রিত করিবার সময় আমাকে অতি প্রাচীন একখানি হস্ত লিখিত পুঁথি আনর্শ হরপ প্রদানপূর্বক বিশেষ উপকার করিয়াছেন। ইতি—

সাধারণ পুত্তকালর ১১৫ নং চিৎপুররোড। কলিকাড়া।

শ্রীবেণীমাধব ভট্টাচার্য্য।

সূচীপত্ত।

বিষয়	পৃষ্ঠা ।	বিষ র	श्रुष्ठे १
প্রথমে ২প। য়ঃ।	1	बि डीरशं २४गं तः।	
अप् ^{तिकु} ञ्चे से स्वनमकातः	5	শারীর বিষয়:	29
নাড়া পরীকামাহ	2	তত্ত কিয়ৎ শরীর সংখ্যামাছ	a
ভংগচাহ	•	অথ গর্ভোৎপত্তি:	२४
নাড়ী সংখ্যামাহ	ক্র	ভথাচাহ	65
क्षी श्रुक्यशार्खात्म नाष्ट्री	পরী-	অথ দোষতা কারণমাহ	&
কামাহ	8	তত্র বোগাঃ	02
ততো নাড়ী পৰীকামাছ: 🕿		অথ জর্থ পিত নিদান্	00
ৰাতাদীনাং তেদেন নাডা	াণতি-	অথ সোম রোগ নিদানম্	\$
मारु	ঐ		
নাডাণু ক্রবাদি ভক্ন জ নি	নতা ং	ভূভীয়েশহধাশয়ঃ।	
গতি শাহ	•	ভভশ্চিকিৎসা যথা	०2
যুকু নাডাঃ প্রীকামাহ	9	ভঙ্জাকংশা ব্যা জুর চিকিৎসা	\$
भूर्नाड़ी भ दीका दिस्यः	2)		
প্রীকাথক্রণ্মাহ	3)	ষড়ত্ব পানীয়ম্	6 3
অথ মার্ক গ্রীয়ে	ক্র	জরণোহকটি টিণিৎসা	84
ण थ भोजगीता	20	জ্বতা ভাকণ্যাদ্যবন্থানিণয়ঃ	89
অথ জিহ্বাপরীকা	28	मर्द्र ब्रु	85
্যুত্র পরীক্ষা	ঠ	ष्यथं दम्बद्	60
भागा गरी का	22	অথ পিত্তজ্বরে	€8
ঁআসাপরীকা ,	₹•	অথ বাতিকজন্তে	69
্নেত্রপরীকা ০	Ø.	পঞ্চাল:	64
অথ-আর্তবপরীকামাহ	13	च्याद्र धंथानिः	À
রোগ্রিক্স পরীক্ষা	રેર્	अष् हार्गिः	ð
রোগি পরীকা	10	व्रह्म अञ्चानिः	er
অথ দুতলকণ্মাহ	় ২৪	ज् निशानिः	Ø.
শিক্ষাযোগমাছ	रेड	म भ ग्रम्	¢Þ
তথাচাহ কুৰৈদাক লক্ষণম্	à	मर्राष्ट्	4
•		চতুৰ্দ্বশাদ:	À

•	

		Je ^{rri}	
्र-विवज	পৃষ্ঠা	। विवन्न	ମହା
(বাড়শাঙ্গ:	•	পুশারেচনীগুড়িকা	1.1
ं गरामानः	- 🏖	मर्का क्रम्पद्राद्रम	
পিত্তমেম্বরোহউাদশাক:	65	জ্বর কেশরী	40
ं मुखानिः	ঠ	मृ ङ्राक्ष्रद्यात्रमः	. 78
मदरीय शक्तिः	4	न रखदाकुणः	re
्र द्वाचानिः	62	च्यत धूयरेक जूदमः	. 1:16
व्यथ कीर्वज्ञात	ক্র	मृजमञ्जीवरना द्रमः	, 🏖
নিদিমিকাদি:	۵	জ্বারি: রস:	79
ভার্গাদি:	· &	উनकपक्षती द्रमः	A
অপর ভার্গাদিঃ	60	हिसार्या :	b 14.
দাত্যাদিঃ	ক্র	মহাজ্ব কুপোরসঃ	ঐ
বকুলমতে প্লীছজ্ববে	•8	क्र ा≥गे े	42
खात्रक्ष मङ्ग	**	ख व्रसीव ी	ð
ভড: প্রার্থনাপ্রোবধারিকে	**	যোগবাহিক জন্মজনতী	A
উৎপাটিভানং যুলিকায়াং ছে	रम-	ष्ट्रतानिः तगः	22
বন্ধনমাহ	ঐ	পঞ্চাননো রস:	25
অউচ্ছেৰ্প:	•9	मर्खञ्च इंश्टरलो इः	ð
ष्यभद्रास्त्रि उधुभः	ঠ	রুংজ্বাকুশোরসঃ	20.
পিপ্পল্যাদ্যং মুভ্য্	44	द्रह ्मक्षं कृ रहादात्नी रः	23
की दब्हे भनकः भ्रुष्	٩.	महामर्क्तज्ञ तहर ताती हः	20
मभग्ली वर्भनकः इड	ঠ	द्रश्च्युदाञ्चकत्नोहः	ð
ৰাগাদাং স্বতম্	95	হিদুলেখ্রো রদঃ	22
অবে হ্যবান্য্	92	ভক্রেগর চ্বম্	à
·· चाक्रा द्रकर टिडलम्	98	श्वम्बस्टिंडर (वा दूम:	à
व्यवानाः देखलम्	16	নবজ্বেভ!কুশঃ	22
मर्ऋ डिलम्	49	জ্বমুরারি রসঃ	
অথ চূৰ্ম্	Ø	জ্বরমী বটিক।	>
কঙ্গায় গুড়িকা	ঠ	प् वत्र प्रोव ि	ð
জ্নশনং চুৰ্য্	ঠ	ত্রৈলোকাডুম্বুরো রদৃঃ	å
ৰটা প্ৰক্ৰিয়া তথা	46	ভকণজরারি রসঃ	3.3
यथार _	å	প্রভাপমার্ত্ত। রুসঃ	. d
रेण्डाट छनी यगः	à	मरब्बत्रहत्री विज्ञी	3.05
व्यश्राद्वार्खनी द्रमः	45	मरब्बद्राद्वि"द्रमः	* &
नमब्दादीन्छ। एउनी द्रमः	B	বিদ্যাধরো রস:	à
ভূতীয়-ইচ্ছাভেদীরদঃ	4.	गमगुद्रादिः	3+0
देग्हार्खनी ७फिका	\$	मरब्दद्रक्रीत्रः	à
क्षिएभावनः	* * *	क्छाम्टमा प्रनः	>•1

विवृत	পূঠা	বিষয়	761
त्रविद्यमद्वा त्रमः	> 8	ত্যাহিকারি রুলঃ	210
चरंत्रीवरी	>•¢	ाकानन त्रमः	258
কম্পাত্তক বুস:	4	বিশ্বেপর রসঃ	526
মৃতসঞ্জীবনীর্টী	>.4	त्रविषयञ्जातकः लोदः	à
ज़ित्यब द्रमः	ð	চিন্তামণি রসঃ	250
व्यमुक्तांति-वजी	>•9	टेट्टलाकाविखायनि द्रमः	259
পঞ্চৰক্ত বুদ:	ঠ	মহারাজ ্ টী	à
পর্পটী রুসঃ	ঠ	क्ष्मना षिदलोरः	252
ৰাডপিত্তান্তক বুসঃ	3.4	कार्समात्रीचादाः दमः	212
বিশ্বেশ্বর রসঃ	>.>	জ্বারি-অভ্রম্	à
ত্রিপুরতৈরব রুসঃ	a	সন্নিপাডান্তকো রসঃ	20.
मरख्यत्रिपू:	>>•	স্বিপাতস্থা:	₫
শীভারি রস:	₫	সিংহনাদ রুস:	202
हि हो मिनिः	>>>	<u>নৌভাগ্যবদী</u>	205
'শীভভঞ্জী রসঃ	ঠ	कखूरीरे ब्रवः	. 4
(मधनाम द्रमः	>>>	त्र र ेक्खूरी टेख्द्रवः	200
অমৃতমঞ্জরী	à	্বৈতাল-রুমঃ	ð
চিন্তামণি বুদঃ	&	স্চিকাভরণো রস:	208
कूलरधृ:	>>0	त्रद्याज्यान[ला त्रमः	ক্র
मण्ड ेख्द्रवः	A	প্রাণেখ্যরো রস:	203
বিদাবিলভ রস:	>>8	ত্রৈলোক্যস্থলব্রোরসঃ	209
বিষমজ্বাকুশলোহঃ	ঠ	জ্বাস্থূশ-রসঃ	209
इ ब्ट्र्ण्यिन द्रमः	>>6	ब्बत्रादि-देगः	à
র ংজ্ রচ্ড়ামণি	224	শীতারি রসঃ	202
ভাত্ত্তামণি	224	লোকনাথ রুসঃ	262
চ্ডামণি রস: °	ঠ		
जिटमायरात्री त्रमः	22F	চতুর্থোইধাারঃ।	
व्यक्षनरेखत्रवः	.	1	
व्यवस्य द्रमः	222	জ্বাভিদারাধিকার:	986 \$
লক্তোভন্ত রশঃ	Ø.	কিরাভানি:	
हिन्दीमणि द्रमः	>>•	কিরাতানিঃ	>58 *
दृश्किखांपनि द्रमः	252	বিভূজাদি:	
जित्तावनीशात्रम् (र्या) तमः	, રરક	द्वीदनत्रामिः	4
মোহাত্ত্রহোর রসঃ	&	গুড়ু চাৰিঃ উশীরাদিঃ	98¢
উন্নত বুসঃ	ं ३१०		
চাতুর্থকান্তকো রনঃ	4	ाक् य्लानिः	384 4 86
वनन-धारमागः	4	समय्नादिः	•

ा यव त्र	পুতা	। दिवञ्च	शृके।
नाठातिः	789	धाना शक्षक र	> 69
कलिकानिः	ð	थाना ठळू कथ	٠. چ
ক্ থিদুর্ং	ক্র	व्यमश्रा:	1 / 51
मागतानिः	>84	নাগরাদি:	•
मुख्रानिः	<u> A</u>	কঞ্চকাদি:	५ ३ :
च नानि	à	কুটজন্বগানিঃ	.
्रिल् १४०दः	43 ¢	কুটজাদি:	
ीश मृलाभिः	&	কুটজাকীক:	<i>૯૭૬</i> ત્ર
मागतानिः	:0•	ममञ्जामिः	ঠ ১
ুকলিন্ধানিশুড়িকা	ঠ	ু নাভিপ্রলেপ:	ه .
নারারণ চ্ ৰ্য্	>6>	কুটজাবলেহ:	ۇ. ق
উ-প लामि हुर्गर	ঠ	त्रमञ्जनाम ह्य्	
ুকুটজপুটপাক:	. Sp	त्रशासकारः त्रशामिकारः	\$9\$
. क्रेडिकावल्यः	>@₹		292
ব্যাস্থান্য: চূৰ্ণং	202	পাঠাৰি চ্ ^{ৰ্} হঠীভক্যাণক দক:	₽
म्बजमञ्जीवनी-वजी	>68	्रदशकराम्यक्तकः दिश्वकराम् कार्यः	
ज्ञानन्दि छत्रद्या द्रमः	ď		&
অভ	204	লোগ্ৰাদি চূণ্য	395. S
কনকস্ন্রেগ রুসঃ	: 0 5	গলাধর চূল্ম	À
কনক প্রভা ্টী	D	হিত'র গজাধর চুবং সম্পূর্ণ স্থান	ঐ ক্র
बुह्दकनकग्रन्मद्वा द्वमः	389	রদ্ধান্ধর চূর্ণং কুটজন্মীরং	•
्र व्यार्थश्वरत्ना द्रमः	\$	म्डावदी कल्कः	>98
ুষ্তসঞ্জীবনো রস:	ঠ	শতাবরী স্বতঞ	১৭¢ ঐ
नागदानि हुर्गम्	282	म्बारमा १७ ० इम्मन रास्कः	\$
काकगागारदा दमः	>6>		1
সিদ্ধ প্রাণেশ্বরো রুগঃ	₫	শুনজংশ চিকিৎসা	a
অ্মূতাণ্ৰ বুদঃ	>6.	চৰ্যাদি কাথ: কিন্তু খনি চৰ্বৰ	
•		विज्ञामि हर्नर	398 2
পক্ষোহধ্যায়ঃ ৷		মুক্তাদিকযার: ক্লিকেন্স প্র	₩ &
		ক্ৰিমিশত্ৰ াদি: চিত্ৰকাদিক যায়:	₩.
অথাতীসারাধিকারঃ	202	श्वमान्याः श्रुमर्नेयानिकार्यः	> 9 9
ष्णभागम् भर्तातिः	348	भूनन गानकायः विलामि (लहः	4
कुरुम्हाल श्रीं। पिः	ঠ	विन्यान (तरः दिव्यानाविषयानि (नोरः	4
शरहाना षिः	366		a a
कांडिकनानि त्नरः	* &	विनाधग्रामरः	· 👌
व्यक्तित्वार्गः		বড়ক হতং	3 4 F
!প্লাড়িশাবি	4	कोति इषः	,
७ ष्विम् ग	>69	रद्री क्यापि पूर्वः	"3h•

- বিষয়	नुके।	বিষয়	76
ठात्वरी एउ र		मधानात्री हुर्गर	356
ड्यार्गारमात्मः	<u>چ</u>	महालाग्री हेर्नम्	\$5!
चाट्याठून हेकः	<u> </u>	मधामवन्नामि हुर्नः	256
বিলু তৈলং	242	গঙ্গাধর চূর্ম্	, 3
অভিফেনাদি বটীকা	3 5%	वृक्ष्म् जावत्री स्थानकः	251
অতীসার বারণোরস:	<u>ক্র</u>	অষ্টপলং মৃতং	>>6
र्विहरत्वातर्श दमः	∂	नागवानाः इंडः	>>>
क्षांमः (लोडः	240	ভ্ৰিয়াদি চূৰ্ণং	<u>ئ</u>
(लाकनार्था दुगः	& ,	नोभवाना हुन्-	3
দ্বিতীয়াহিকেনবটিকা	2 P-8	शाठामा हुनैः	ર ••
गर्काकञ्चल(दा दमः	۵	কপিখাউকচূৰ্ণং	4
মহাগন্ধং	220	দাভিমাইক চু ম্	5 • 2
		দ্বিকীয়গজাধীর চুৰং	, i
नदर्श २ था। यह		রুহদ্পঙ্গাধর চূর্ব	3 • 3
		मधालनकानि हुर्वः	Ē.
অথ গ্রহণ্যধিকার:	>49	भक्ला काना हुई ।	₹•€
তক্রস্থা গুণকর্ষনং	2 5 9	बह्गीगरकस ह्र्यः	> +1
सर्वापि भावनः	754	डेळ शामि हुर्दर	\$ a !
भाग्रकानि পाउनः	S.	विज्ञानि हुनैः	> 4
দাগরাদিকষার:	à	কঞ্চাশলেশ:	্ব
नान भर्गानिः	3	मभग्ली छड़:	5.64
অভয়াদি কাথ:	ক্র	কল্যাণগড়:	2 • 5
मार्काामिः	242	कूपा ७७ इं कलानिकः	3
न्नामिशकाम्नी काथः	Š.	किक्लामार्यामकः	3+3
ব্যান্ত্র্যাদি কাথঃ	ঐ	काधिक्षाद्रभानकः	53
সৈশ্ব।দি ভক্রম্		कूछानिटमानकः	55
हिन्न, पि उकः	à	खीवकामिटमानकः	\$3
नागतामाः करितः	<u>₹</u>	কন্দৰ্পঘোষক	२३।
विन कल्कः	À	महाकारमञ्जदमानकः	350
डि बेकामि वडीका	À	विजीत कारमन्त्रस्मानकः	
লায়ী চুগ্যু	297	শ্বন্থেটু ক্রম্	. 52
জাতিকলানি চূৰ্ণ	A	র্ছচে কম্	\$ 51
मुखकानि हुः	>>5	ডকারিন্ট ম্	· d
मर्कातम हर्गम्	(मित्रिमार चुकः	13
बार्खाकी खणिका	&	मनावष्ट्र शनवः इतः	२२
श्कश्रह्म	` `	विनामि श्रुउः	1
नियाम पूर्वर	220	नारमंत्री इकः	42

বিষয়	পৃষ্ঠা	বিষয়	পৃষ্ঠা
চিত্ৰক স্বতং	. 223	ন্থপ বঙ্গভ	ે. ર8૧
বিল্গৰ্ড মৃতং	ð	हर्म् १ व.	₹ 81
७१ । इडम्	२ २२	রাজবলভঃ	₽ .
विन् दिनम्	à	মহারাজ স্পাবলভঃ	र ८৯
नार्षिमाना रेखनम्	२२ ०	মহারাজ হপতি বলভো রুসঃ	_३ ৫ ∙
এহণীমিহির তৈলম্	२२8		
রুহৃদ্ এহণীমিহির তৈলম্	१२७	সপ্তমো২ধ্যায়ঃ।	
কণকস্থলবো রদঃ	२२٩		
এহণীকবাট:	A	অথার্শেধিকার:	२७३
গ্রহণীগঞ্জেন্ত্র বটিকা	२२४	ष्यञ्जूती गर्ठनः	રહે 5
অগ্নিক্মারঃ	२२৯	কুটজান্যং মৃতং	Ġ
হিরণ্যগর্ভপোট্ট লী	ď	ষট্পলকং ঘৃতং	২৫৪
সংগ্ৰহ গ্ৰহণীকৰাটঃ	₹3•	ব্যোষাদ্যং স্থাতং	ďa Š
স্বৰ্ণপূৰ্ণ টি	₫	সমশক্র চূর্ণং	₹9• ₹9
পঞ্চায়ভূপর্ণী	२०১	প্রাণদা গুড়িকা	
রসপর্ণচী	२७२	রহচ্ছ বণমোদক:	269
বি জ য়পর্ণটী	२७७	নাগাৰ্জ্বনপ্ৰয়োগ:	२६५
কণাদিলো হম্	Ď	নিভ্যোদিভো রসঃ	२৫৮
লবন্ধাদি বটী	A	চম্রপ্রভা গুড়িকা	ঐ
खां डिकलां मि नी	२ ၁ १	ভীক্ষমুখে৷ রসঃ	2 0 •
গ্রহণীকবাটো রসঃ	ঐ	পঞ্চাননোরস:	₩
পূর্ণকলা বটী	२०৮	জাভীফলাদি বটীকা	२७১
বক্তকপাটে রসঃ	२०३	•	
জাতীকলো রদ:	٨	অফমো২ধ্যায়ঃ।	
नीय्य ग्ली दमः	₹8•	•	,
अर्गीभाद्गं त्ला दमः	२8>	অর্থাগ্রিমান্স্যাধিকার:	२७२
रेवमानाथ वेषी	ক্র	ষভূ ষণ্যোগ:	&
অগ্নিকুমারে৷ রস:	782	হরীতকী চূর্ণং	d
গ্রহণীকপাটো রস:	૨૭ ૦	छ।ऋत्र मन्नर	ب
বিজয়া বটিকা	à	পথ্যাত্রম্	২ ৬৪ -
ৰভ্ৰামুখো রসঃ	₹8,8	চতু:সমম্	ď
এহণীকপৰ্দপোটলী	ቅ	हिन्नु केंकर हुर्गम्	à
इ :न ् रीडिली	À	অগ্নি স্তম্	Ø,
अधुकामि वर्षी	₹84	नथामिकः हुनः	રકહ
व्यक्तीकवार्धः	ঐ	রুছ্যুড়বানল চূর্ম্	à
अर्गी वक्षकरा है:	₹ ₹8	রাজনলভোরস:	. 200
जना ज न्जी	à	इष्हां ज्वांगलः	É

	- 1	'J• . ''	
white C	পৃষ্ঠা	বিষয়	পূৰ্ব
ব্যন্ত্র" মজীপুর্কন্টক:	289	ক্রিভণ্ডাদিচূর্ণং	245
মজাগুকতদঃ অপ্রাজীর্ণকউকঃ	8	মণ্ডুরপ্রয়োগ:	
क्ष राम्नाचा गर्मा व्यापना । इक्ष वं ग्राम्स्य मः	3 65	অঞ্নপ্রাগ	270
	282	नग्रश्रागः	
পথাৰটা 	\ <u>\</u>	ह्लीयक हिकिथमां	· 🚵
ৰহাশ ্ ৰতী	290	ज्यास्त्रिमा निर्मानकः	.
অ্যিকুদারক:	3	নবারসচুর্ণং	&
বৃহদ্গ্রিকুমারঃ 	293	পুনৰ্ণামণ্ড রম্	147
ভক্তপাকবটী		म छु दबज्जविकः	à
नवरमार्थाग्रह।		शार्श्वेत्र्यत्वादमः	२४२
অথ ক্রিমাধিকারঃ	२१७	হিন্দুগর্ভলোহ:	D
अव । जनगान सामग्र ७ ड्रामानी	S		
পারিভদ্রকপত্রস্বর্দঃ	à l	একাদশোহধ্যায়ঃ।	
বিভূল চুৰ্ণম্	ক্র		
भनाभाषार्थः	À	অথ ্রক্তপিত্তাধিকার:	₹ ₽8
বিভঙ্গ স্ভম্	২ ৭ ৪	বাসেষধ্য	A
दिक्ला घु खम्	ঐ	कबुक्लिश्चित्रमः	&
विष्म दिण्म विष्म दिण्म	à	ममञ्जाष्टि क कार्थः	ঐ
ধুন্তর তৈলম্	२५८	नीला (भला मिर्ग्य	Ø.
ক্রিমমুকার:	۵	উভূম্বাদি চ্ণানি	રષ્ટ
ক্রিমিরিপুরদঃ	۵ .	্বাসাথত কুত্মাত	ۇ ئ
की हे भटकी द्वारा	२ १७	সমশকরং লৌহম্	. (a)
	,	মূর্দ্ধপ্রলেপ:	21-6
ज्ञारमार्थायः।		चामलागर (लोहर	4
		অর্কেশ্বরোরসঃ	219
অথ পাণ্ডকামলা হলী	२ ५ 9		
মকাধিকারঃ	<u> </u>	দ্বাদশোহধ্যায় ।	
পাণ্ডুরোগ চিকিৎসা	٨	অথ রাজ্যক্ষাথিকার:	২৮৮
দোষভেদেন চিকিৎসা বিধিঃ	e S		4
মৃত প্রয়োগঃ		द्रव्यागायल्यः द्रव्यागायल्याः	3,42
পৈত্তিক পাণ্ডুৱোগন্ত চিকিৎসা		ज्ञवज्ञाना पूर्वम्	6
নৈশ্বিক পাণ্ডুরোগস্থ চিকিৎসা	₹ 19°	जानी भारताभावकः जानी भारताभावकः	2,20
मत्रु ब्रथ्रात्रांगः	A	मश्युगों (क्यांत्रमः	<u> </u>
जिसलामि कार्यः	₩	्रवाभावित्वां इः	595
হ রীতকীপ্রয়োগ	ख ज	क्रिका विश्वापर । दिव रिका विश्वापर । दिव	` <u>`</u>
ম ও রুযোগ		ক্ষকেশ্য়ী	
कामना চिकिৎमा जिक्नानीनाः चत्रमः	هه ک چي	इंड्रकनकञ्चलदः	

	•		
বিষয়	পৃষ্ঠা	- বিষয়	পৃষ্ঠা
ত্রোদ্শোহধাায়ঃ।		কলিভৰুফলাদিঃ	922
অথ কাসাধিকার:	ี	বদরীপত্রকদক্ম্	. ত্র
मुभयूली कवातः	ক্র	मधुत इक्षम्	ঠ
्रतीमोर्ग्लइः	Ē	সারস্বত ং য়ুভুম্	À
क्ष्मनामा देखलम्	२३७	कलागिरिटलइ:	623
মরিচাল চুর্ম্	S	যোগবাহকোরদ:	4
जि मम् क्ति हुर्नः	२৯७	-	
अलाकि हुन्। अलाकि हुन्।	4	সপ্তনশোহধ্যায়ঃ।	
ं ताळ मृगाषः	ঠ	অর্থারোচকাধিকার:	678
বরাটিকা প্রভেদ:	229	অলিকাদিঃ	3
माञ्जतीवी	E.	কার গাদিঃ	á
भूतम्बर्ग	324	বিট্ চুৰ্ণাদিঃ	à
কাসসংহার ভৈরব:	Š	অমৃতস্পরোরস:	<u>ā</u>
শৃঙ্গারাজং	\$22		
		অফাৰনেশাহধ্যায়ঃ।	
চতুর্দ্ধেশহধাশয়ঃ।		অথছদ্যধিকার:	૦ ১৬
অথ হিকাশাসাধিকার:	0.5	পৰ্পটকাথ:	Ď.
শিখিপুচ্ছাদিঃ	á	গুড় চ্যাদি:	Š
किनकल पृर्वः	á	জাতীধান্ত্ৰী	ঐ
मृत्थं भारतः	٩	क्ला कि हुर्न म्	&
তিলাদি প্রলেপ:	ď.	অশ্বথ বলকলকার:	७३१
খাসকুঠারঃ	3• ર	পদ্মকাদ্য মৃত্যু	<u>B</u>
		ছর্দিহরচূণ ং	á
পঞ্চদৰোহধাৰ্য়ঃ।	i	**************************************	
অথ কক আহ্বাধিকার:	0.0	ঊনবিংশোহধ্যায়ঃ।	
লৌরেশরং শ্বতং	ঠ	তৃষ্ণাধিকার:	650
মহাসেরেশ্বরং স্কৃতং	9.0	ৰাভিকভ্ষায়াশ্চিকিৎসা	ঐ
ত্রৈলোকাবিজয় তৈলং	9.0	লৈত্মিকভৃষ্ণায়াশ্চিকিৎসা	6
যোগরাজ:	9.6	नाटकामकामिः	ক্র
বীরভন্র রসঃ	9.9	গোন্তনাদিঃ	ঐ
ব্রামবাণ:	ā	कौरतक्त्रमानिः	७ २ •
(नपुत्रामान (लात्रमः	201	আন্ত্রাদিকবার:	Q
ल कारियना (मादमः	Ą	বটশুদানিঃ	ঐ
		কবল গ্ৰন্থণং	ঠ
্বোড়শোহধ্যায়ঃ।	. [গ তু বধারণম্	ঐ
শ্ব স্বরভেদাধিকার:	922	ঁৰাব্লি মধু	

,	Al	/•	
)
ৰিষয় <u> </u>	, शृंका	বিষয়	পূঠ
স্থানী দিকষার:	955	ভাষা রসঃ	903
রুস শব্দন্ত ব্যবস্থার:	A	নস্যাত্যঞ্জন	ঠ
नी जनस्तः	&	চট ীমাংদক্ষীরং	00.5
জলপ্রহাজনুং	ঐ	পানীয় কল্যাণ	ď
অতিজলপানস্যদোষ্	७२२	ক্ষীরকল্যাণ <u>ে</u>	á
মহোদ্ধির্সঃ	ক্র	ৈতসং য়তম্	೦೦೨
কুমুদেশ্বেরারদঃ		শিবায়তম্	008
•		মহানারায়ণ তৈলম্	996
বিংশতিতমোহধ্যাং	T 9	ভূততৈঃবেগ রসঃ	229
		উন্মাদাস্কুশো রসঃ	901
অথ সুচ্ছাধিকার:	958	অথাপন্মারাধিকারঃ	1
মুচ্ছ িয়াঃ সাধারণ চিকিৎসা	<u>ब</u> े	কুমাওক মৃত্যু	৾ ৩৩৯
-	(1ৰাং	शलक्षामाः दिलस्	Ğ
চিকিৎসা	<u> </u>	ইন্দ্ৰেশ্ব বটী	J G
(कालमञ्जामिः	<u> </u>		٦,
হ্রালভাকাথাদি:	956	চতুর্বিংশতিতমো২ধ্যায়	70 I
ब्राक्षनापिः	&	। व्याप्य-गाठ अटमारकान	iš į
অশ্বগৰাবিষ্ট:	ঠ	অথ বাতব্যাধাধিকার:	085
স্থানিথিরসঃ	७ २७	বাতরোগদ্য চিকিৎদা স্তুম্	ঐ
-		বাভরোগদ্য চিকিৎদ।	ঐ
একবিংশতিতমোহণ্যা	রঃ।	নিরামবাভস্য চিকিৎসা	ď
অথ পানাত্যয়াধিকার:	95F	विद्रुष्ठक प्रावा र	0 82
বম্বকরীযাদিঃ	ক্র	य्याः	S
শঙা চূৰম্	خ	মাংস রুসাঃ	089
কুত্বাও রসঃ	&	মাষাদিপয়:।	D
শক্রাত্থ্যমূ	<u>.</u>	भाषवलानिः '	۵
রুশামুভ্য্	<u> </u>	দশমূলীকাথ:	988
	•	স্বংপারদোশপিও:	ঠ
দ্বাবিংশতি,তমে হৈধ্যা:	TO I	অ্থগৰায়তম্	086
		মহাছাগলায় ছঙ্ম্	B
ঘ্রথ দাহাধিকার:	99 •	र नामि इउम्	081
গ্রহন্য সাঞ্জারণ চিকিৎসা	ঐ	भाव टेडलम्	480
धनाक जनम्	<u> </u>	অথগ্ৰা ভৈল্	<u>ئ</u>
	_	বিষ্ণু তৈলম্	000
্ত্রয়োবিংশতিতমো>ধ	11 88 1	कुल धमात्रभी देखन य	083
অথোশাদাহিকার:	202	निकार्थ दिलम्	983
খেতোমত পায়দঃ	ক্র	हर्द मिद्धार्थ देखलम्	969

বিবন্ন	পৃষ্ঠা	বিষয় •	% ह
রহংশতপুষ্পানি তৈনং	010	উক্তত্তে সুপধ্যানি	79
মহাবিষ্ণু তৈলং	948	উৰু ভয়েক কান্তক ক্ৰিয়া	993
मधानातात्रण टेडलः	330	শিলাকতুনাং প্রয়োগ:	ā
महामाय रिजलः	939	ভলাভকাদি:	d
হ্মদাগর ভৈলং	029	পিপ্পল্যাদিঃ	ď
ছবিভক্যাদ চূৰ্ণং	<90	ধোগত য় শ্	.043
বিভীতক্যাদি চুণি	ঐ	চব্যাদি কল্ক:	ğ
বাস্ব। গুগভনু:	&	প্রলেপ:	Ğ
ब्रांतमाञ्च खग् खतूः	ঠ	कूष्ठी नार टेडन म्	હે
বাভারি রসঃ	06.	रिमक्तवामाः दिल्लामि	098
ধাতগজাস্কুৰ:	<i>065</i>	অথামবাভাধিকার:	ঐ
বৃহদ্বাত্ত াজ্ৰ:	ঠ	शक्षरकाना निः	کی
ভালকেশ্বরো রসঃ	045	द्राञ्चा सभगूलम्	098
डामरे छत्रवी ७ जानम रे डत्र वः	ঐ	রাস্থা পঞ্চক্	· @
শীভারি রসঃ	060	নাগরং স্তম্	کی
শীক্তবাভদ্য লক্ষণং	ঐ	व्रह्दिमक्तरामा टिल	290
অথ বাত্রকাধিকার:	940	व्यलस्यागः हूर्यः	ঐ
ब ८माननीकाथः	ঐ	যোগরাজ গুগওলু:	૦૧ંષ
ৰাসাদিকাথ:	ঐ	সিংহনাদগুগগুলু:	399
মুগুভিক৷ চুৰ্ণং	Ď.	রামবাণঃ	کی
ওড়হ রী তকী	à	অথ শূলাধিকার:	292
শুড় চাা: কাথ: শুড় চাা: স্বরদাদর:	· 🔄	শুলরোগস্থ চিকিৎসা	ď
ও ড়ূচ্যা: স্বরসাদয়:	966	মাতৃলুঙ্গরসশিগুরাবে	ع)
भटिंग नामः	ঐ	चामगूलमा हिकिथमा	ď
<i>(ল</i> পদেক)	&	পঞ্চকোলাদিঃ	3
थ्रान्थः	ঐ	শভাবৰ্যাদি কাৰ্থ:	01
কটুকুদি কল্ফ	ঐ	विक्नामि कार्थः	ď
গুড় চী স্বতং	୦୬୬	मध्क काथः	ģ
व्ययुष्टागार युष्टर	ঐ	वलापि कार्थः	ď
দশপাকবলা তৈলম্	069	হিন্দু উক চূৰ্ণং	SF.
পিও ভৈলম্	. (2)	क्षि । मि हुर्गर	Š
ভড় চী ডেলম্ মহাপিও ডেলং	992	কক্ষৈত্তিক শূলতা চিকিৎসা	3
मशां १७ एवर	Ą	गढ़ोनाहि कार्यः	
भावित्रामाः रिजनः	<u>a</u>	वामान कन्कः	0 1
ৰা ভরক্তান্তকো রসঃ	942	বাডপিডক শূলত চিকিৎসা	
অধোকন্তম্ভাধিক্রি: উক্তম্ভক্ত সাধ্যমণ চিকিৎসা	০৭০ ক্রি	এরও ঘাদশকং পিপানী যুক্তং	j j

বিষয়	পৃষ্ঠা	বিষয়	961
ৰীক্তপুরক স্বতং	010	অক্তরিধারাহ	440
णुनगर्कक रेडनः	á	অন্তরিকরা	.
इस्मादीरकल थनः	OF 8	পঞ্চন্দ্রত্য ক্রিয়া	· 🗳
मांत्री कला गुजर	246	मश्चविष्णनकः इउः	8
শুলসংখারকঞ্জং	७৮७	द्रानामाः मृष्टः	<u>ئ</u>
विमां भिद्राज्यः	940	রক্তগুলাস্থা চিকিৎসা	D
শূলবজ্ঞিনী বটী	966	ভলাভক স্বভং	8 - 5
অথ পরিণামশূলাধিকার:	3 20	বচাদি চূৰ্ং	à
পরিণামশূল চিকিৎসা	à	क्ति गंगिः	A
শভাবরী মৃত্রং	্ৰ	रिक्र ीमा हुर्नः	্ঐ
मायूखामार हुनैः	022	প্রাণবলভো রসঃ	8.0
नात्रोदक(लोयधिः	₽	গুলাকালানলো রসঃ	8 • 8
সপ্তামৃত লৌহ:	9>5	অথ হুদ্রোগাধিকার:	8•4
ভারা মঞ্রঞ্ডঃ	Ś	বলাদ্যং মৃতং	8••
শূলভাপথ্যানি	ece	গুঞ্জাভজে রুসঃ	à
অথোদাবর্তানাহাধিকার:	ক্র	क्त्यार्गद्वा द्रमः	ক্র
(मोवर्कनामा मिनदा	۵	পঞ্চনারে৷ রসঃ	8•9.
হিলুাদি বর্তিঃ	Ś	অথ মৃত্রকৃদ্ধাধিকার:	8 • 1
কল [°] বৰ্ত্তিঃ	B	ত্রিকণ্টকাদ্যং স্বৃতং	8•>
भक्र ग्लामाः चुजः	8 40	স্কুমারকুমারকং ম্বতং	@
श्चित्र पि हुर्नं १	<u>چ</u>	অথ মূহাদাভাধিকার:	8>>
শারাচ চূর্ণ্	&	বৰুণাদ্যং গুড়ং	879
অথ গুলাধিকার:	926	চিত্ৰকাদ্যং স্বতং	878
গুলুরোগস্থ সাধারণ চিকিৎসা	ক্র	অথ অশাৰ্যাধিকার:	876
কক গুলা-পঞ্মূলীকাথানয়:	&&C	বৰুণাণ্যং স্থতং	B
পিত্তগুলাস্থ চিকিৎসা	ا ه	ব্ৰুণাদিগণ:	879
বিরেচন প্রয়োগ:	ঠ	বীরভুরাদি গণ:	٩
পাকগুলাস্য লকণাণ্ডি	& ·	खाडीकनामा वर्गः	854
ৰাভগুলাম্ম চিকিৎুদা	₽	अनानि कार्यः	A
তিলানি:	929	কুলখাদাং মূতং	871
यमानी हुन्र	₫	वक्षांगर देखनः	.
्यम् ध्वर ज्ञागः	ঐ	তিবিক্তমে রসঃ	822
অক্স	क	व्यथं व्यामहाक्षिकादः	8₹•
গুল্ম হিডকরী ক্রিরা	924	माज्यानाः चुडः	8 . 8
न्त्रक्ता प्रजुः	à	इरकाष्ट्रियानाः इडः	4
वमनाई-क्यी	4	ত্রিকন্টকাদ্যং ডৈলং	85.6
নাডাৰিলোবভেনেন চিকিৎসা	` `	जिक्छेकामाः इष्ठः	A

	h	•	r
বিষয়	পৃষ্ঠা	বিষয়	পৃষ্ঠা
ত্রিকতকাদাৎ যমকং	. 874	দরভস্ম	e38°
ग्रद्याधानाक र्वं	ক্র	উরো গ্রহনিদানং	4
विष्मानाः (लोहर	৪২৬	অথ ছড়ীচিকিৎসা	81 •
মেহমুদ্দারো রসঃ	ক্র	অথশোখাধিকার:	• 3
বঙ্গেশ্বঃ	829	পুনন বাছতং .	8€ूर
চন্দ্ৰপ্ৰভা বটী	ক্র	পঞ্চলোলান: মৃতং	´ ≥
যোগীশ্বরো রস:	852	পু नर्गतिहः	ð
(यारगगदता दमः	ক্র	ক: সহরীভকী	840
ভালকেশ্বর:	852	পুनर्न शासः इडः	à
অসাধ্যস্ত্যুত্রোগ লক্ষণং	ট	মাণকল্বতং	8 6 8
ञथ (ऋोना मिर्गका धिकादः	85•	শুষ্মূলাদাং ভৈলং	ď
ব্যোষাদ্য শ ক্তু প্রয়োগঃ	ক্র	সমুদ্রশোষ ভৈলং	à
লোহরসারনং	603	শোথশার্চ, তৈলং	864
ত্রিফলাদ্যং ভৈলং	८०२	त्रहरकाथनाम् नरेडमः	₫.
षामृजाता। श्राक्तः	800	ন্দার গুড়িকা	849
নুবকোগুগগুলু:	۵	(भाषभाक् लाउम:	3
অথ সর্বোদরাধিকারঃ	858	শোথোদরারিরস:	862
বিন্দু দ্বতং	৪৩৬	অথর্ছি ত্রগ্ন ধিকার:	80>
নারায়ণ চূর্ণং	839	ञ्चत्रमानिगनः	ঞ
উদরারি রস:	856	द्रहर रेमकवानाः टेडलः	845
বভ্ৰাগ্মিমুখে৷ রসঃ	802	নিভাগনন্দে রস:	£ & 3
বন্দ গটী	ক্র	অ্থ গ্লগ্ডগ্ডমাৰাপ্টী-	
हेलू कर्भृतः	88•	এন্থার্ক্র দাধিকার:	۵
অथ श्री रयकृषधिकारः	હો	जुषी टेंडनें	562
ভড়পিপালী ও রহদ্ভড়পিপ	भनी 🏖	অমৃতাদাং তৈলং	&
মহারোহিডকং স্বতং	882	ছूছून्मत्री देखनः	848
ৰানাদ্যগুড়িকা	88२	नार्थाहेकामा॰ टेड लः	663
অৰ্কলবণং	688	নিৰ্গণী তৈলং	4
অগ্নিমুখং লবণং	ঐ	ব্যোষাদ্যং ভৈলং	842
শিবাবটী	888	ভঞ্জা ভৈলং	ঐ ∙
বহ্নিকুমারোরসঃ	à	অথ শ্লীপদাধিকার:	893
রোহিডকাদ্যং লৌহং	88€	विष्माभाः दिलः	89२
ব ্রে শ্বের্নর	3	ক্ৰক ভৈলং	845
লোকনাথরসঃ	868	মহাক্রনক ভৈলং	Ď
वृह्द स्रोद-मार्थात्रमः	4	वृह्दकमक देखनः	898
श्री रशकादभद्री जायर	889	नी भागक (कर्णनी द्रनः	846
ক্রান্তব্যক্ত	884	নিভাগনন্দ রুগ:	85,5

বিষয়	প্তা	বিষয়	961
ত্মশ বিভ্রথ্যধিকার:	811	অথ শ্কদোষাধিকার:	2.0
অথ শারীরত্ত্রণ	81.	অথ ভগ্নাধিকার:	
সদ্যোত্রণাধিকার:	ው		2.7
তিলাইকঃ ও ত্রিফলাগুণগুলুঃ	870	•	e•3
বটিকাগুগ্লু:	878	অথ কুঠাধিকারঃ	.
কঁরঞ্জাদ্যং স্বতং	ক্র	পঞ্চৰশয়:	3
জাতিকান্যং স্বতং	á	নৰক্ষায়ঃ	67.
গৌরাদ্যং স্বতং	8 b @	प्रक्रगटज्ञसमिः इः	622
চন্দ্ৰাদ্যং যুমকং	a	শিত্ৰদজৎপাটন দেপ:	
• দূৰ্ব্বাদ্যতৈলং ও দ্বতং	875	থিত্ৰাব লে পঃ	৫১२
কুঠারাদ্যং তৈলং	ďa)	কুষ্ঠগ্রিত্রনাশনোলেপ:	ঐ
বিপরীভমলটেভলং	ঐ	গিত্ত ে পঃ	<u>چ</u>
গুণবভীবর্ত্তি:	8৮9	পঞ্চক্তিকং ম্বতং	673
অমুভগুড়িকাগুগ্গুলু:	874	মহাখাদরান্যং স্বতং	6>8
বিভূঙ্গাদি বটিকাগুণ্ গুলুঃ	ঠ	বজ্ৰকং মৃতং	ঐ
অমৃতাগুণ্ ওলু:	ঐ	ন্তুগ্রন্থ পঞ্চিক্তকং স্বত	e>c i
ব্রণরোগ	845	শরিচাদ্যং তৈলৎ	620
অথ নাড়ীত্রণাধিকার:	• ໔3	বৃহৎ মরিচাদ্যং তৈলং	ঐ
স্বৰ্জিকাদ্যতৈলং	६ ३२	चेश्रव्हे बलः	629
কার্পাদতৈলং	820	মহাসিন্দুরান্যং তৈলং	ঐ
ভঙ্গাতকান্যং ভৈলং	ঐ	ভাহুতৈলং	B
কুম্ভাকাদ্যং তৈলং	<u>a</u>	বিষ্ঠেলং ও বাদাক্ত্ৰভৈলং	67F
मथाष्ट्रश्चनू:	8 % 8	মহাৰুক্ৰতৈলং	& 6 3
নাড়ীব্ৰণগজাকুশঃ ়	ঐ	রহৎদোমরাজীতৈলং	& 2 •
অথ ভগন্দরাধিকারঃ	948	কন্দর্পসার ভৈলং	C > 3
বিষ্যুন্দনং তৈলং	829	নিস্বাদিচ্ৰং	6 55
করবীরাদ্যং তৈলং	ক্র	একবিংশতিকোগুণ্ গুলু:	650
. निभागाः देखलः	ď	উৎয়ভাশ্কর:	638
নৰকাৰ্ষিকোগুগ্ গুলুঃ	ል	অমৃতাঙ্কুর শৌহং	ď
সপ্তবিংশতিকোঞ্গল্য	824	যোগরাজ:	eze ·
রাবিতাগুব:	ঐ	ক্তকুঠারোরশঃ	Z)
রবিত†গুবঃ	822	তালকেশ্বর:	८ २ ७
অথ উপদংশাধিকারঃ	¢••	মহাতালেশ্ব:	.
উপদংশারিধু মং	6.2	মহাতালকেশ্বরোরসঃ	७ २१
,ভূনিম্বাদ্যং স্বতং	\$ • \$	অথ শীতপিত্তোদৰ্দ্ধকোঠাধিকার	ezp
व्यागात्रध्याताः टेडलः	ঐ	অথ অন্নপিত্তাধিকার:	60.
রুস্পেশ্বর:	\$	দ্রাক্ষান্যং স্বতং	602
(1)			

	t	J.	
বিষয়	शृंखें।	বিষয়	পুঠা
শতাবরী স্তং	\$00.	का १८ ज् <i>ल</i> १	
অবিপত্তিকরং চুৰিং	ঐ	শভাবরী তৈল্ং	694
अलामिट्यामकः	600	অথ নামারোগাধিকার:	6 92
কুধাৰতী গুড়িকা	4	চিত্রকুহরীতক	<i>a 4 2</i>
ভা হ্রস:	869	শিখ্রীতৈলম্	. 69.
मीलाविलारगात्रगः	909	मूर्कामाः रिजनः	, (
অন্নপিভান্তকোর্য:	a	व्यायामि ह्वः	ঐ
অথ বিদর্পবিক্ষোট স্নাযুধিকার	: ঐ	অথ চকুরোগাধিকার:	645
অমৃভাদিপ1চনং	६७७	বাসকাদি ও বৃহদ্বাসকাদি	698
রুষদ্রাং স্বতং	609	य एक श्रा श्रु श्रु ः	ዸ ጓዸ [°]
মহাপদাকং স্তং	A	दिकलामाः घुउः	\$
কালাগ্নিকজোরদ:	4	মহাত্রিফল। মৃতং	ď.
বিদর্পবিশ্ফোট স্নায়ুকানিদানং	G OP.	ভূদরাজাদাং ভৈলং	৫ ዓ ৬
অথ মস্ব্যিক্র:	Ø.	न्रभवल चरेखनः घुउष	Ð.
শর্করা প্রক্রেপ:	ঐ	চূৰ্ণাঞ্জনং ও চন্দ্ৰপ্ৰভাৰতি:	@ 9 9
অথ কুদ্ররোগাধিকার:	68.	চন্দ্রোবর্তিঃ	e 96
চালেরী মৃত্ৎ	@88	গজকেশরীবর্তিঃ	ঐ
মুষিকাদ্য: ভৈলং	686	ভারকাদ্যাবর্তি:	鱼
क्नक्टेंबनः ७ मिक्किं।टेडनः	G 8P	সপ্তামৃত্লোহং	د ۹۵
क्कूमामार जिनर	682	অথশিররোগাধিকার:	ঐ
কুকুমাদ্যং তৈলং	À	যষ্টাপাং মৃতং	GAG
ৰণকং স্বতং	e e •	মগুরাণ্যং স্তং	4
ঘিহরিন। ভৈলং	002	বৃহন্মরকং স্তং	e p ዓ
७३ । देवलः	599	व्यत्भी खत्री कामाः रेखनः	ঠ
ভূপরাজ ভৈলং	ď	खीवकामार टेडलर	à
स् रागाः ट्रिलः	468	भ डास्तामः रेडनः	era
ठमनामाः ८७ नः	666	मभयूलः रेज्लः	Ą
गहांनीलरेडलः	e t 9	মহাদশমূল তৈলং	ক্র
অথ মুখরোগাধিকার:	£99	ब्रह्मभगूलः टिजलः	6 P.P.
क्षामार पृत्र	601	সর্কাদস্কর:	4
कानीभाषाः हुन्द	۵	শির:শূলাদিবজ্ঞিকা	647
কাণকচূৰ্ণ ও পীতক চূৰ্ণং	ď	स्र्वामयद्रमः	ď
স্বন্দা খদিরাদি গুড়িকা	८७७	অধ প্রদর্রোগাধিকার:	650
त्ररूथमित्रामि वर्षिक।	À	गूनतानार मुख्	692
সপ্তামৃত রস:	698	1 * .	À,
व्यक्षं कर्वद्वागाधिकातः	696	অশোকান্যং স্বতং	· 695

विषय 	भृ	^{ঠা} এস্থাতিরিক্ত	fare (
অৰু সোমরোগাধিকার:	e:	8 जिल्लाहरू	1948 ।
ধাতীয়ভং		<u> বাড়ীসংখ্যামাহ</u>	Ó
गंगना मिटलो ००	. 62		à
অথ যোনিব্যাপদাধিকার:	62		ঠ
ক/সমূতং	62		8
ফুলগ্নতং	3		\$
मीटलां ६ भनामाः श्रुजः	وع		ው
ফা রটৈতলং	ঐ		à
ভগশক্ষোচ:	622		&
অথ স্ত্রীরোগাধিকার:	&	নাডাা:—ত্তরলক্ষণ:।	ŧ
অত্যোপায়: ও মন্ত্রং যথা	b	মন্দং-সপ্তাহতোবা॥	. 5.
অথ দেবভাধ্যানং যথা	ক্র	পতিত: – কারণম্ 🏽	à
অথ নউপুল্পিভায়াণ	4.5	যাত্র—বিনির্দ্ধিশেৎ॥	3
ত্তিংশদ ক্ষি তকোঠী	6.6	ভূলতা – এচবম্॥	. (
পঞ্চনশান্ধিত কোষ্ঠী	ঐ	ক্ষণা—ব্জিড: 1	a
বজ্ৰকাঞ্জিকং	6.9	জহাতি—মৃতিম্॥	22
অখগনাম্বতং	\$	স্বস্থান-স্থিতিং॥	à
রুহদশ্যকান্ত্তং	*•৮	আর্ত্তবপরীক্ষা সমস্ত	२३।२३ -
শ্ৰীপৰ্ণী ভৈলং	ঠ	তৃতীয়—ইচ্ছাভেদীরসঃ	b •
কৃশীশাদাং তৈলং	۵٠۵	ইচ্ছাভেদী-গুড়িকা	ď.
সেভাগ্যশুঠী	ঐ	ৰুক্মিশোরসঃ	۲۵
মহাস্ ভোগ্যশুগুৰী	ঠ	পুষ্পরেচনী গুড়িকা	.) •{
इह ्टमोङ्गागुरु ने	\$ >•	সর্বাঙ্গস্থন্দরোরসঃ	&
জাত কলাদ্যাবটিকা	\$25	জ্বরপুমকেতবসঃ	7
গর্ভবিলাদোরদ:	₫	মহাসর্বজ্বরহরো লৌহ:	* 6
অথ বালরোগাধিকার:	620	হিন্দুলেশ্বরোরসঃ	24
অধ্যন্ধ দ্বতং	659	ভস্মেশর চূর্বম্	3
কুমারকল্যাণ স্বতং	&	षण्डमरेखद्ररादमः	. J
ल। का पिट जलः	450	নবজ্বরেভাকুশঃ	32
শিশুচ্বা তুর্থকং	₫	জ্বসুরাবিরদ:	~
त्रक्र ण मिह्र्नंश	ক্র	জ্বরমী বটিকা	>•• >••
মহাপ্ৰকঃ	422	ष्वत्रप्री वि	ঐ
বালকুমারোরসঃ	65.	ত্রৈলোক্যভুম্বুরোরসঃ	ĕ
অথ বিষাধিকার:	452	ভকণজরারিরস:	>∙> •
কালশৈলাশনিঃ	à	প্রভাপমাত্তগ্রেদ:	.
बस् मगालः	622	नरखद्रह्ती वर्ती	व्य 3•३
**************************************		नरकत्राद्रिद्रमः	٠ چ

বিষয়	পৃষ্ঠা	বিষয়	- अर्था	
विमाधदा तमः	3.3	অতীসারবারণোরসঃ	•245	
श्रमभूत्रोतिः	5.0	र्शनहरसामर्शितमः	جَيْ ٠	
নবজব্রেভিনিংহঃ	(१ १००१२४८ असे। १४६ असे।		
হুডাশনোরসঃ	>•8	নাগরাদি ক্যারঃ	٠ ، ١ ١ ١	
রবিস্পরোরশ:	<u>ئ</u>	भाल भन्ति ।	D	
ब् दबीव ी	>•&	অভরাদিকাথ:	. 🗞	
কম্পভক্রসঃ	&	(नागदानाः कीदः) व	८४८ मूर्	
১.৬ পৃষ্ঠা হইতে ১৪. পৃষ্ঠা	পর্যান্ত	হইতে ১৯২ পৃষ্ঠা		
সমাপ্ত		(নাগরাদ্যং মৃতং) ব	ददद मा	
পিক্তাচার—ভিবগ্ডি:॥	>80	इहेए २०० शृष्ठ।	1 .	
অবাতি—ধান্তা কঃ	A	२३६ इहेए २२२ श्र	का।	
কিরাতাদি:	>88	বুহদু গ্রহণী মিহির তৈলং	২১৬	
বিভূদাদি:	@	২৩৭ ছইতে (বৈদ্যুদাথ বটী) বাদে		
গুড় চ্যাদিঃ	28¢	२०० श्रुवा।		
১৪৭ পৃষ্ঠা সমাপ্ত	1	হুণাক্লং—উচ্যতে।	२६२	
মৃস্তকাদি:	282	यना-मर्गरमः।	A	
. श्रेन पेतिः	۵	ভঙ্কা-পৈত্তিকী।	ď	
১৪৯ পৃষ্ঠা সুমাগু	1	সমস্ত-শোধনস্।	२७२	
ે લ ે એ		তিফলাম্বতৰ্	২૧૩	
কুটজাবলেহঃ	765	বিড়ঙ্গতৈলম্	· 🗞	
>६८।>६६ शृष्टी ।		पुश्च ः टेडलग्	२ ५ €	
কনকপ্ৰভাবটী	>66	ক্রিমিরিস্থর্গঃ	ঐ	
১৫৭ ১৫৮ পৃষ্ঠা	l	কীটমর্দোরসঃ	२ १ ७	
· কা ৰ ণ্যসাগ্রোরসঃ	262	হরীতকী প্রয়োগঃ	グル	
১৬২ হইতে ১৬৬ পৃষ	श्री ।	মণ্ডুরযোগঃ	ঐ	
ও ড়বিলু ম্	369	२ २ २ १ व्हार समा छ	1	
১৭১ হইতে (ষড়ক মুৰ	उनारम)	অঞ্জনপ্ররোগঃ	२৮•	
১৭৭ পৃষ্ঠা পৰ্যান্ত	1	নম্মপ্রয়োগ:	ঐ	
बिम् टिण्मः	222	হলীমকচিকিৎশা 🤈	፞	

স্থীপত্র সমাপ্ত।

পুয়োগ-চিন্তামণিঃ।

প্রথমোহধ্যায়ঃ।

এস্থারন্তে২ভীফদেন-নমস্কারঃ।

অজং জনোদেযাগসমৃদ্ধি রৃদ্ধিদং পরং পরানন্দরসোলসেক্ষণম্। অনাদিমাদিং পরিচিন্ত্য যোগিনং নতোংস্মি চিন্তোপশমাশিবং শিবম॥

·যিনি জন্মরহিত, মহযোর উদ্যোগরূপ সমৃদ্ধির রদ্ধিকারী এবং সর্বজ্ঞেষ্ঠ । বাঁছার নয়ন পরম আনন্দ-রসরূপ উদ্যাসে সতত উদ্যাসিত ; বাঁছার আদি নাই ও বিনি স্বয়ংই আদিভূত , এবং বাঁছাকে চিন্তা করিলে আশিব (অমঙ্গল) সকল দ্রীভূত হয় ; এমন পরমধোগী সেই শিবকে কায়মনে চিন্তা পূর্বাক প্রণাম করিতেছি।

> ষচ্চারূপাদায়ুজ্যাশুতোর শ্রীরাজরাজেশরতঃ প্রদিউম্। সঞ্চিন্ত্য চিন্তামণিপীঠভিন্নং প্রয়োগচিন্তামণি মাতনোমি॥

• স্বয়ং আশুতোষ (শিব) ভগৰান্ শ্রীপতিব যে পাদাস্ক্রন্বয় আর্চনা করিয়াছেন, আমি কমলাপতি বিষ্ণুর 'চিন্তামণি' নামক রজাসনে সংস্থাপিত সেই চরণযুগল চিন্তাপুর্বক এই "প্রয়োগ চিন্তামণি" নামক প্রস্থ খানি প্রকাশ করিভেছি।

অথাসেব্য কালীপদাজোজযুগাং
পরং ত্রন্ধর পং কিরদ্ধাল্পপুঞ্জম্।
সমালয় চিন্তামণিনাম পূর্ণপ্রণালীং বিনিধীয়ডেখালীব্রাপিনা
শনতর পরাংপর ত্রন্ধরমণ কার্লিপারাক্তর্মণাল কর্মনা, পূর্বক কডিপর

*

প্রস্থ অবলম্বন করিয়া, সম্পূর্ণ স্থাণালীমতে এই 'প্রয়োগ চিন্তামণি" নামক অস্থ্ মৎ কর্ত্বক প্রণীত হইতেছে।

> নচান্তিশাস্তাধ্যয়ন বেষাং মনোহর্থনারিক্রকুলারভানাম। নিতান্ত সন্তোষচয়া ভবস্তু প্রয়োগচিন্তামণি-চিন্তনেন॥

যাঁছাদের মনোবৈকলা ও অর্থদরিদ্রভায় ব্যাকুলতা বশত: আয়ুর্কেদ-শাস্ত্রাধ্যয়ন জনিত জ্ঞানের অভাব আছে, তাঁছারা এই "প্রয়োগ চিন্তামণি" নামক গ্রন্থ খানি সমাক্ প্রকারে চিন্তা (অধ্যয়ন পূর্বেক শিক্ষা) করিয়া যথোচিত সন্তোয প্রাপ্ত হউন।

বিবিধবুধসভারাং শব্দকল্লোলিতারাং
সকলগুণিবিচারাৎ প্রজ্ঞসংজ্ঞারতারাম্।
ইতিক্তনবশাস্ত্রাগুদ্দিনাশারবৈদ্যো
হন্তনরতি বিধিতঃ জীরামমাণিক্যসেনঃ॥

বিবিধ পণ্ডিত পরিবেক্টিত, শাস্ত্রতরক্ষে তরঙ্গায়িত ও সকল গুণিগণের বিচার বিষয়িণী প্রজ্ঞায় অভিজ্ঞাগণে সমাক্ষাদিত ; এমত্ সভার মৎকর্তৃক কূতন শাস্ত্রে "প্রয়োগ-চিন্তামণি"নামক এই প্রস্তের অশুদ্ধি বিনাশের নিমিত্ত, শ্রীরাম-মাণিক্য সেন" অভিধের বৈদ্য বিধিপূর্ব্যক (কর্যোড়ে) অস্বয় করিতেছে।

নাড়ীপরীক্ষামাহ।

রোগমাদে পরীক্ষেত ততোহনন্তরমৌষধম্। ততঃ কর্মা ভিষক্ পশ্চাজ্ঞানপূর্বহ সমাচয়ে ॥ অনস্তর নাড়ীপরীকা কথিত হইতেছে।

(जियक् - िर्विष्मक, देवना ।)

চিকিৎসক প্রথমতঃ রোগীর কি প্রকার রোগ (জ্বর, জ্বতীসার প্রভৃতি যে কোন রোগ) এবং সেই রোগ সাধ্য, জ্বসাধ্য জ্বথন যাপ্য কি না , তাহা জ্বতি সমাহিতচিত্তে পুঝাল্পুঝরপে পরীক্ষা করিবেন; তৎপরে ভাহার উপযুক্ত উষধ পরীক্ষা পূর্বক জ্বর্থাৎ ষে উষধ্ন ছারা সেই রোগ উপশমিত হইবে, তাহা দ্বির করিয়া চিকিৎসায় প্রবৃত্ত হইবেন।

নাড়ী জিহ্বাগ্রমূত্রাণাং বৈশিষ্যাৎ প্রতিভায়ুবঃ। নিদানান্যবিশেষাচ রোগং জানন্তি ধীভূতঃ। (প্রক্রিল—শারীরিক ও মান্সিক বলাবল। ধীভূৎ—বুদ্ধিমান্।)

সাধারণতঃ নিদানাদি দ্বারা যে প্রকারে রোগসমূহের এবং রোগীর জীবিত কালের পরীকা হইয়া থাকে; সেই রূপ সাংক্রেপিক নিয়মায়সারে নাড়ী

. .

ক্রিহ্বাঙ্কী, নেত্র, মুত্র ও আর্ত্তর বিশেষরূপে পরীকা করির। বুদ্ধিমান ব্যক্তিগণ ব্যাধি, প্রতিভা (শারীরিক ও মানসিক বলাবল) এবং জীবিত কালের নির্ণয় করিবেন।

তন্ত্রানে রচ্যতে নাড়ী জিহ্বাগ্রঘূত্রসম্ভবা 🗓

' পরীক্ষা সুগমারুষ্য এন্থানেব যথামতি॥

এই হেতু প্রথমেই মদীয় বৃদ্ধির অন্তক্তল স্থখবোধার্থে বিবিধ এন্থ হইতে সংগ্রহপূর্বক নাড়ী, জিহ্বা থা, মৃত্র প্রভৃতির পরীক্ষা মথকর্ত্তক বর্ণিত হইতেছে।

তথাচাহ ৷

আদে সর্কের রোগের নাড়ীজিহ্বাগ্রসম্ভবাম্। পরীক্ষাং কারয়েদ্বৈদ্যঃ পশ্চাদ্রোগং চিকিৎসয়েৎ॥ অন্য প্রকার।

চিকিৎসক দর্জাশ্রে রোগীর নাড়ী, জিহ্বা, নেত্র এবং মুত্র পরীক্ষা করি-বেন, অধিকন্ত স্ত্রীলোকদিগের আর্ত্তব পরীক্ষাও করা কর্ত্তব্য। এডদ্বারা রোগের সামতা, নিরামতা এবং সাধ্যাসাধ্য,যাপা প্রভৃতি লক্ষণ সকল বিশিষ্ট-রূপে অবগত হইয়া, তৎপরে চিকিৎসা করিতে নিযুক্ত হইবেন।

নাড়ীসংখ্যামাহ।

সাৰ্দ্ধত্তিকট্যোনাড্যো হি স্কুলাঃ সুক্ষাশ্চ দেহিনাম্। নাভিকন্দ নিবদ্ধান্তা স্তিগ্যগৃদ্ধ মধঃ স্থিতাঃ॥ নাড়ীর সংখ্যা কথিত হইতেছে।

নাড়ীত ত্রবিং পাণ্ডতগণ স্থির করিয়াছেন যে, মানব-দেহে স্থুল ও স্ক্রমরূপে সাড়ে তিন কোটা নাড়ী অবস্থিত। ঐ নাড়ীগুলি নাভিমূল ছইতে উৎপন্ন ছইয়া কতকগুলি শরীরের উদ্ধিদিকে, কতকগুলি অধ্যোদিকে এবং কতকগুলি বক্রভাবে গমন করিয়াছে।

দ্বাসপ্ততি সহস্রস্তু তাসাং স্থূলাঃ প্রকীর্তিতাঃ। নেহে ধমন্যো ধন্যাস্তাঃ পঞ্চেন্দ্রিগুণাবহাঃ॥

তিলিখিত সাড়ে তিন কোটী নাড়ীর মধ্যে ৭২০০ বাহাতর হাজার নাড়ী। ছলতর ও প্রধান রূপে গণনীয়। ইহারা কর্ণ, তুক্, চক্ষু জিহ্বা এবং নাসিকা। এই পঞ্জেয়ের বিষয় শব্দ, স্পর্শ, রস ও গন্ধ বছন করে।

> তাসাম্ভ স্ক্ষাশুষরাণি শতানিসপ্ত স্থান্তানি ধৈরদক্ষণন্নসং বহুদ্রিঃ। আপ্যায়তে বপুরিদং হি নৃণামমীয়া মন্তল্পন্তিরিব সিমুশতেঃ সমুদ্রঃ॥

উক্ত ৰাহাত্তর হাজার হল নাড়ীর মধ্যে সাভশত নাড়ী হক্ষ ভিত্রবিশিষ্ট।

থেমন শত শত নদীর জল আসিয়া সমৃত্র পরিপুরিত হয়। তজ্ঞপ থাহারীয় সামগ্রীর সারভূত রস, ঐ সচ্ছিত্র ধমনীসমূহ দ্বারা বাহিত হইয়া সর্বশ্রীরে সঞ্চরণ ও শ্রীর পোষণ করে।

> আপাদতঃ প্রততগাত্ত মশেষশেষ মামস্তকাদপি চ নাভিপুরঃস্থিতেন। এতন্দঙ্গ ইব চর্মচয়েন নদ্ধং

- কায়ং নৃণামিহ শিরা শতসপ্তকেন॥

ফিতার স্থায় চর্মসমূহে বদ্ধ উক্ত ৭০০ সাতশত ধমনী পাদ হইতে মস্তক পধ্যস্ত অবস্থান পূর্বক শরীর রক্ষা করিতেছে।

> সপ্তশতানাং মধ্যে চত্ত্রধিকা বিংশতিক্ষু টাঃ। তাদামেকা পরীক্ষণীয়া দক্ষিণকরচরণবিন্যস্তাঃ॥

উক্ত সাতশত ধমনীর মধ্যে ২৪ টী স্পন্দনশীল। তম্মধ্যে এক একটী করিয়া দুই হল্তে এবং দুই পদে যে ৪ টী নাড়ী আছে, তাছার এক একটী পরীক্ষা, অর্থাৎ পুরুষের দক্ষিণ হস্তগত একটী ও দক্ষিণ পাদগত একটী এবং জ্ঞীদিগের বাম হস্তগত একটী ও বামপাদগত একটী পরীক্ষা করিবেন।

ন্ত্রীপুরুষয়ো র্ভেদেন নাড়ীপরীক্ষামাহ।
ন্ত্রীণাং বামকরে নাড়ীং পুরুষাণাঞ্চ দক্ষিণে।
পরীক্ষেত ভিষক্ সম্যক্ ধ্ত্বা ধ্ত্বা বিমুচ্য চ ।
ন্ত্রী ও পুৰুষভেদে নাড়ীর পরীক্ষা।

ন্ত্রীদিণের বামছন্তের এবং পুরুষদিণের দক্ষিণছন্তের নাড়ী পরীক্ষা করিতে হয়। নাড়ী পরীক্ষা কালে একবার স্পর্শ করিয়া ত্যাগ করিবেন, আবার ধরিবেন, এইরূপে পুনঃ পুনঃ নাড়ী ধরিয়া চিকিৎসক সম্যক্ প্রকারে পরীক্ষা করিবেন।

ন্ত্রীপুংসোন্চিহ্নভেদেন নাড়ীং পশ্যেদ্ বিচক্ষণঃ। ন্ত্রীচিহ্নে ন্ত্রীক্লীবং বিদ্যাৎ পুংচিহ্নে পুংনপুংসকং॥

নপুংসকদিশের স্ত্রীপুরুষের চিইভেদে অর্থাৎ স্ত্রী আফুডি নপুংসকের বাম-ভাগের এবং পুরুষ আফুডি নপুংসকের দক্ষিণভাগের নাড়ী, পরীক্ষা করিবেন।

অনম্যমতিকো বৈদ্যঃ সংযমিতেন্দ্রিয়স্তবি।
আৰু লিভিস্ত তিসৃতি র্নাড়ী মবহিতঃ স্পৃশেৎ।
ভিক্তিন্দর অন্তমনা: ও ইন্দ্রিয়ে সংযত হইয়া তিনটী অসুলি যারা অব
বিশ্বনিতে মাড়ী পরীকা করিবেন।

নাড্যাঃ স্থানভেদাদাতি ক্রমেণ বাতাদিলকণমাহ। আদৌ চ বহতে বাতো মধ্যে পিতং তথৈবচ।

অত্তে চ বহতে শ্লেষ্মা নাড়িকা ত্রুরলক্ষণং॥

নাড়ীর গতিভেদে তিন প্রকার লক্ষণ প্রকাশিত হয়। যথা;—ডর্জনী নিবেশস্থানে তর্জনী দ্বারা বাহুর গতি, মধ্যমা নিবেশস্থানে মধ্যমা অস্থূলী দ্বারা পিত্তের গতি, এবং অনামিকা নিবেশস্থানে অনামিকা দ্বারা কক্ষের গতি জানা থায়।

ততে নাড়ীপরীক্ষামান্তঃ প্রাচীনাঃ। করদ্যাঙ্গুন্তমূলে যা ধমনীজীবদাক্ষিণী। তচ্চেষ্টরাস্থাং ডুঃখং জ্ঞেয়ং কায়দ্য পণ্ডিতঃ॥ প্রাচীন মুনিগণ কর্ত্বক নাড়ী পরীক্ষা বিবরণ।

(কর—হস্ত। অস্কুষ্ঠমূল – রদ্ধান্সূলির গোড়া। ধমনী – নাড়ী বা শিরা। তচ্চেন্টা – সেই নাড়ীর স্পান্দন। কায় – শরীর।)

করের অসুষ্ঠমূলে যে ধমনী আছে, তাহার স্পন্দন দ্বারাই জীবন আছে বলিয়া জ্বানা যায়। পণ্ডিতগণ শরীরের স্থখ হঃখ তাহার স্পন্দন দ্বারাই অবগত হইয়া থাকেন।

বাতাদীনাং ভেদেন নাড্যা গতিষাই।
নাড়ীখন্তে মরুৎকোপে জলৌকাঃ সর্পয়োর্গতিম্।
কুলিঙ্গকাকমণ্ডু কগতিং পিতুপ্রকোপতঃ॥
হংসপারাবতগতিং খতে শ্লেম্বপ্রকোপতঃ।
লাবতিভির বন্ধীরগমনং সমিপাততঃ॥
বাডাদিভেদে নাডীর গতি।

(মঙ্ক--বারু। জলোকা-জোক। কুলিঙ্গ-চড় ই পক্ষী। মঞ্ক--ভেক। পারাবত -কবুতর। বর্তীর-সালীক।)

বায়ুর প্রকোপে নাড়ী জ্বলোকা ও দর্পের গতির স্থায় গতিবিশিষ্ট হয়। পিত্তের প্রকোপে কুলিঙ্গ, কাক ও ভেকের গতির স্থায় গতিবিশিষ্ট হয়। কক্ষের প্রকোপ্রে ধমনী রাজহংস ও কপোতের গতির সকুশ গতিবিশিষ্ট হয়। এবং সন্মিপাতাশ্রিত ধমনী লাব, তিত্তির ও সালীক পক্ষীর গতির স্থায় গাতিনীল হইয়া প্রবাহিত হইতে থাকে।

কদাচিম্মন্দগমনা কদাচিদ্বেগবাহিনী।
দ্বিদোৰকোপতো জ্ঞেয়া নিহন্তি স্থানবিচ্যুতা॥
স্থিত্বা স্থিতা চলতি যা সা স্মৃতাপ্রাণনালিনী।
স্থাতিক্ষীতা শীতলা চ জীবিতং হন্তাসংশয়ঃ॥

হুই দোবের প্রকোপ হইলে নাড়ী কখন মন্দ্রণাদিনী ও কখন খেগবাৰ্দ্রবনী, হয়। নাড়ী অস্থান হইতে বিচ্যুতা হইলে রোগীর মৃত্যু হয়। থাকিয়া খাকিয়া বে নাড়ী চলে, তাহা প্রাণনান্দিনী বলিয়া জানিবে। অভিন্যাণা ও শীতলা (মৃত্যাঘিনী) নাড়ীও জীবন বিনাশ করে।

জ্বপ্রকোপে ধমনী সোক্ষা বেগবতী ভবেং।
কামাৎ ক্রোধাদ্বেগবতীক্ষীণা চিন্তাভয়ায়ৢত।॥
মন্দাগ্রেঃ ক্ষীণধাতোক্ষ নাড়ীমন্দবহা ভবেং।
অসুক্পূর্ণা ভবেং কোক্ষা ক্রের্কানামা গরীয়দী॥
লঘ্নী বহতি দীপ্তাগ্রেন্ডথা বলবতী মতা।
চপলাক্ষ্বিত্ন্যানো তৃপ্তন্য বহতি হিরা॥
স্থাহিরন্য হিরা জ্যেরা তথা বলবতী মতা॥

'(खरुक-तुकु । माभा-खाभमश्युका ।)

জরের কোপে এবং কান ও কোধ দারা নাড়ী উকা ও বেগবতী এবং

চিন্তা ও তর দারা আচ্ছনা হইলে ক্ষীণা হয়। মন্দায়ি ও ক্ষীণ ধাতুবিশিষ্ট

ব্যক্তির নাড়ীর গতি মন্দতরা হয়। রক্তপূর্ণা নাড়ী উকা ও গুরু এবং আমের

দারাও নাড়ী গুরু হয়। দীপ্রায়ি ব্যক্তির নাড়ী কখন মন্দগামিনী কখন বা

বেগবতী হয়। ক্ষুধিত ব্যক্তির নাড়ী চঞ্চলা, তৃপ্ত (তৃক্ষা, ক্ষুধা অথবা অক্তবিধ অস্থবে পীড়িত নয়) ব্যক্তির নাড়ী দ্বিরা এবং স্থা ব্যক্তির নাড়ী দ্বিরা
ও বলবতী হয়।

নাড্যা দ্রব্যাদিভক্ষণজনিতাং গতিমাহ।
অন্ত্রেশ্চ মধুরৈকৈচব নাড়ী মন্দতরা ভবেৎ।
চিপীটকৈ ভূ উদ্রব্যিঃ স্থিরা মন্দবহা ভবেৎ॥
কুয়াত্তিমূলজৈকৈচব নাড়ী মন্দগতির্ভবেৎ।
উপবাসাদ্ভবেৎ ক্ষীণা নাড়ী চ ক্রতবাহিনী॥
শাকৈঃ কদলকৈশ্চাপি গুরুঃ স্লিগ্রাচ নাড়িকা।
সম্ব্যোগৈশ্চ ভবেৎ ক্ষীণা জ্ঞেয়া ক্রতগতিশুণা।
মাংসৈঃ স্থিরবহা নাড়ী হুঃখৈঃ শীভা বলীয়সী।
গুড়েংকীরৈশ্চ পিত্তিশ্চ স্থিরা মন্দবহা ভবেৎ॥
নাড়ীর দ্রব্যাদি ভক্ষণ জনিত গতি বলা যাইতেছে।

(চিপীটক—চিড়া। তৃষ্টদ্রব্য—ভাজা জিনিদ। কুমাণ্ড—কুমুড়া। কদলক—রম্ভা, কলা। সম্ভোগ—স্ত্রীসহ কামজনিত স্থখভোগ। ক্ষীর—হ্বন।)
অম ও মধুর দ্রব্য ভক্ষণ করিলে নাড়ী মন্দ্রগামিনী এবং চিপীটক ও ভৃষ্ট—
দ্রব্য ভোজন স্থারা স্থিরা ও মুহুপ্রবাহিনী হয়। কুমাণ্ড ও উৎপলাদির মূল-

কান্ত দ্বব্য ভক্ষণে নাড়ী মন্দগতি এবং উপৰাস ছারা নাড়ী কীণা ও ক্রভ-বাহিনী হয়। শাক ও কললী ভক্ষণ ছারা ধ্যনী গুৰু ও শ্বিদ্ধা এবং স্ত্রীসম্ভোগ ঘারা কীণা ও ক্রতগতি হয়। নাড়ী মাংস সেবন ছারা ছিরবছা, ছংখ ছারা অত্যন্ত মৃহগামিনী এবং গুড়, ফেণ, ছ্ম্মপান ও পিত ছারা ছিরা ও মন্দ-গামিনী হয়।

মৃত্যু-মাড্যাঃ পরীক্ষামাহ।

জঙ্গুন্তমূলতো বাহে হঙ্গুলে যদি নাড়িকা। প্রহরাদ্ধাদ্বহিম্ব ত্যু নাস্তি তস্য চিকিৎসিত্যু॥ মৃত্য-নাড়ী-পরীক্ষা।

যদ্যপি নাড়ী মণিবন্ধ ছাড়িয়া যায় অর্থাৎ তর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা এই তিন অন্তুলির কোন অন্তুলিতেই নাড়ীর স্পন্দন অন্তত্ত্ব না হয়; তবে অর্জপ্রহরের পর নিশ্চয়ই রোগীর মৃত্যু হইবে।

> সাৰ্দ্ধৰয়াঙ্গুলাদ্বাহে যদি তিষ্ঠতি নাড়িকা। প্ৰহরৈকাদ্বহি মূজুৰ্জায়তে নাত্ৰসংশয়ঃ॥

আর যদি তর্জনী নিবেশ স্থান হইতে ।। আড়াই অঙ্গুলি অন্তরে অর্থাৎ অনামিকার শেষার্দ্ধ ভাগে মাত্র নাড়ী স্কুরিত হয়, তাহা হইলে একপ্রহরের পর রোগীর মৃত্যু অবশ্বস্তাবী জানিবে।

षामुलाषा इटिं। वालि मर्या त्रथा वहिर्यना ।

সার্দ্ধ প্রহরতো মৃত্যুরবশ্যং জায়তে নৃণাম্।

যদি অঙ্গুৰ্মূল হইতে হুই অঙ্গুলি বাছিরে নাড়ী ছাড়িয়া যায় অর্থাৎ মধ্যমাঞ্গুলী স্পর্ণ স্থানের বহির্দেশে স্পন্দন অহুভূত হয়, তবে ১ঃ দেড়প্রহরের মধ্যে রোগীর মৃত্যু ঘটিবে।

মধ্যে রেখা সমা নাড়ী যদি তিষ্ঠতি নিশ্চলা।

তদ্যৈব মরণং সদাঃ প্রছরেকাদ্বহির্ভবেৎ॥

মধ্যমান্ত্রলি নিবেশ স্থানে নাড়ী যদ্যপি নিষ্পান্দিত ভাবে অবস্থান করে, ভাষা হইলে রোগী নিশ্চয়ই এক প্রহরের পর মৃত্যু মুখে পতিত হর।

সর্বান্ধূলব্যাপিকা তু যদি তিন্ততি নিশ্চলা।

, চতুর্ভিঃ প্রছরৈয় ত্যা নান্তি তদ্য নদংশয়ঃ॥

তিনুটী অঙ্গুলি অর্থাৎ তর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা এই তিনটী অঙ্গুলি নিবেশ স্থানের কোন স্থানেই স্থাদি নাড়ীর স্কুরণ অহ্নভব না হয়, তবে চারি' প্রহরের পর নিশ্চয়ই রোগীর মৃত্যু ছইবেক। কোন প্রকার চিকিৎসাতেই তাহার প্রতীকারের সম্ভাবনা থাকে না।

সদা চাল্পুলতো নাড়ী যদি তিন্ঠতি নিশ্চলা। প্রছরেঃ পঞ্চতিশ্চৈব মরণং তদ্য নির্দ্ধিশেৎ॥ যদ্যপি ভিনটি অন্তুলির কোন অন্তুলির নিবেশ স্থানে সর্বাদাই নাড়ী নিস্পন্দিত ভাবে থাকে; অর্থাৎ আদো নাড়ীর স্পন্দন অন্তভ্ত না হয়, পদ্ধবে পঞ্চ প্রস্থারের পর রোগী কাল থাসে নিপতিত হয়।

> সপানাঙ্গুলতে। নাড়ী যদি তিন্ঠতি নিশ্চলা। ষঠৈপ্চ প্রহরৈত্ব ত্যুক্তেরস্তদ্য বিচক্ষণৈঃ॥

যদ্যপি তর্জনীর সর্বাংশ এবং মধ্যমাঙ্গুলির চতুর্থাংশস্থানে নাড়ী নিশ্চল-ভাবে অবস্থিতি করে, আদে স্পন্দন অস্কৃত্তব করা না ধায় এবং মধ্যমাঙ্গুলীর অবশিষ্ট পাদত্রয়ে এবং অনামিকার সর্ব্বাংশে নাড়ীর স্কুরণ অস্কৃত্তব হয়; ভাছা হইলে ছয় প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু অবশ্বস্তাবী।

দ্বাঙ্গুলাভান্তরে নাড়ী বক্রগা যদি বা ভবেথ।
মরণং তদ্য জানীয়াৎ দপ্তভিঃ প্রহরৈরু ধিঃ॥
তর্জনী ও অনামিকা এই উভরের মধ্যে মধ্যমাঙ্গুলিতে যদি নাড়ী বক্রভাবে অবস্থান করে, তবে দাত প্রহরের পর অবস্থা রোগীর মৃত্যু ঘটে।

অঙ্গুলাভ্যন্তরে নাড়ী মন্দা মন্দা যদা ভবেৎ। অফডিঃ প্রহরৈয় ত্যুনির্দিকৌ মুনিপুঙ্গবৈঃ॥

তর্জনী ও অনামিকা এই উভয়ের মধ্যে মধ্যমান্তলৈতে যদাপি নাড়ী মন্দ মন্দামনে স্পন্দিত হয়, তবে অই প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু অবশ্রস্তাবী।

> অঙ্গুলাভ্যন্তরে নাড়ী যদি তিষ্ঠতি শীতলা। প্রহরৈর্নবভিন্তস্য মরণং নিশ্চিতং ভবেৎ।

যদি তর্জ্জনী ও অনামিকা এই উভয়ের অভ্যস্তরে মধ্যমাঙ্গুলি নিবেশ-স্থানের নাড়ী নীতল অন্তভূত হয়, তাহা হইলে নয় প্রহরের পর নিশ্চয় রোগীর জীবন নম্ট হয়।

> পাদেনাঙ্গুলীমধ্যে তৃ নাড়ী তিষ্ঠতি নিশ্চলা। প্রহরৈদণভিজে য়ো মৃত্যুক্তস্য ন সংশয়ঃ॥

यि ভর্জনীর চতুর্থাংশ পরিত্যাগপূর্বক অবশিষ্ট পাদত্তরে এবং মধ্যমা ও অনামিকার নিবেশহলে নাড়ী নিশ্চলভাবে অবস্থিতি করে, তবে ১০ দশ্ প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু হইয়া থাকে।

> পানেনান্সুলীমধ্যে তু নাড়ী সোক্ষাভিজায়তে। প্রহরৈ রুদ্রসংখ্যেশ্য মৃত্যুক্তসা বিনির্দ্ধিশেৎ॥

বদি জ্বানীর চতুর্থাংশ ছাড়িয়া অবশিষ্ট পাদত্তরে এবং মধ্যমা ও অনা-মিকার স্কাংশে নাড়ী উষ্ণভার সহিত স্পন্দিত হয়, তবে একাদশ প্রহরের পর রেগীর মৃত্যু ঘটিয়া থাকে। পানেনাঙ্গুলিষধ্যে তু নাড়ী শীততরা ভবেৎ। দ্বাদশপ্রহারমূ ত্যু স্তদ্যজ্ঞেয়ে। বিচক্ষণৈঃ॥

যদি তর্জনীর চতুর্ধাংশ ছাজিরা অবশিষ্ট পাদত্রের এবং মধ্যমা ও অনা-মিকার সর্বাংশে নাড়ীর শীতলতা অহত্ত হয়, তবে দ্বাদশ প্রহরের পর রোগী কালকবলে পতিত হয়।

· অদ্ধান্দুলীগতা নাড়ী শীতলা যদি তিষ্ঠতি। ত্ত্বিপূৰ্বনশভিধামৈৰ্মরণং জায়তে ঞ্ৰুবম্॥

যদ্যপি তর্জনী নিবেশস্থানের অর্জাংশ শীতল হয়, আর অবশিষ্ট অর্জাংশ ,এবং মধ্যমা ও অনামিকার নর্বাংশে শীতলতা অহুভূত না হয়, তবে ত্রয়ো-দশ প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু হয়।

> অদ্ধাঙ্গুলিগতা নাড়ী সোষ্ণা বেগবতী ভবেৎ। 'প্রহরৈ র্বেদচক্রৈশ্চ মৃত্যুজ্ঞে য়ো বিচক্ষণৈঃ॥

যদ্যপি ভর্জনী নিবেশস্থানের নাড়ীর অর্দ্ধাংশ উষ্ণতার সহিত সবেশে স্পন্দিত হয়, আর অপর অর্দ্ধাংশ এবং মধ্যমা ও অনামিকার সমস্ত ব্যাপিরা নাড়ীর উষ্ণতা ও বেগবত্বা অন্তভ্ত হয়, তাহা হইলে চতুর্দ্ধশ প্রহরের পর রোগীর জীবন বিনম্ট হইয়া থাকে।

অর্দ্ধাঙ্গুলিগতা নাড়ী চঞ্চলা যদি তিন্ঠতি। প্রহরৈন্তিথিসংবৈশ্যত মরণং নির্দ্ধিশেদ্বধঃ॥

যদ্যপি তর্জনীর অর্দ্ধাংশ ব্যাপিয়া নাড়ীর চঞ্চলতা অন্তত্ত হয়, আর অবশিক অর্দাংশ এবং মধ্যমা ও অনামিকার দমন্ত ব্যাপিয়া নাড়ীর চঞ্চলতা অন্তত্ত না হয়, তবে পঞ্চদশ প্রাহরের পর রোগীর জীবন ধংস ছইয়া থাকে।

> পানান্ধলগতা নাড়ী সহসা যদি তিষ্ঠতি। ষোড়শপ্রহরৈস্তস্য পঞ্চত্ত্বং নির্দিশেদ্বধঃ॥

যদি তর্জনীর সর্বাংশ এবং মধ্যমান্থলীর চতুর্থাংশ স্থান ব্যাপিয়া নাড়ী হঠাও থামিয়া বায়, তাহা হইলে ১৬ ষোল প্রহরের পর রোগী মৃত্যুমুখে নিপ-তিত হয়।

> পাদান্ধুলিগতা নাড়ী সোষ্ণা বেগবতী ভবেৎ। চতুর্ভির্দিবদৈশুক মৃত্যুরেব ন সংশয়ঃ॥

ভর্জনীর সমস্ত এবং মধ্যমার চতুর্থাংশ স্থান ব্যাপিরা ষদ্যপি নাড়ী অজন্ত উষ্ণভার সহিত তীত্রগতি বিশিষ্ট হইয়া অবস্থিতি করে, তবে চারি-দিবসের পর রোগী নিশ্চরই মৃত্যুধানে নিপতিত হয়।

[3].

এবং সুক্ষাদিভেদেন নাড়ী জ্বেয়া বিচক্ষণৈঃ। স্বর্গে২পি তুর্লু ভা বিদ্যা গোপনীয়া প্রয়ত্তঃ॥

বিচক্ষণ পণ্ডিতগণ এবলিধ স্থক্ষামুস্ক্ষারপে নাড়ীর বিষয় অবগত হইবেন। এই নাড়ী-বিষয়িনী-বিদ্যা স্বগেও হল্ল'ভা, অতএব ইহা অতীব যতু সহকারে প্রচ্ছন্নভাবে রাখিবেন।

> মন্দং মন্দং কুটিলং কুটিলং স্পন্দতে যশ্য নাড়ী। তদ্যাবশ্যং ভবতি মরণং পঞ্চদপ্রাহতো বা॥

যে রোগীর নাড়ী মৃত্ন অথচ বক্রভাবে স্পন্দিত হয়, সে রোগী পাঁচ দিন অথবা সপ্তদিন মধ্যে মৃত্যুমুখে পতিত হয়।

পতিতঃ সন্ধিতো ভেদী নইশুক্রশ্চ যঃ পুমান্।

শাম্যতি বিনায়স্তদ্য ন কিঞ্ছিযুত্যকারণম্॥

উচ্চস্থান হইতে পতন, সন্ধিস্থান ভঙ্গ এবং অতিরিক্ত দৈপুন কা যক্ষা-রোগ প্রযুক্ত থাতু ক্ষীণ হইলে, যাহাদের নাড়ী অসাধ্য লক্ষণযুক্ত বলিয়া বোধ হয়; তাহাদের জীবনের প্রতি কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।

স্বস্থানহীনে শোকে চ হিমাক্রান্তে চ নির্গদাঃ।

ভবন্তি নিশ্চলা নাড্যো ন কিঞ্চিত্তত দূষণ্মু॥

অতি উচ্চস্থান হইতে পজিত, শোকপ্রাপ্ত ও হিমাভিভ্ত ব্যক্তির নাড়ী স্পন্দনশূম হইলেও কিছুমাত্র দোষাবহ হয় না।

যা ভুচ্চকা স্থিরা নাড়ী যাচেয়ং মাংসবাহিনী।

যা চ স্থানা চ বক্রা চ তামদাধ্যাং বিনির্দিশেৎ।

অসাধ্য নাড়ীর লক্ষণ বলা যাইতেছে।

বে নাড়ী উচ্চতরা অর্থাৎ স্বস্থান হইতে উদ্ধাণতা এবং মন্দাগামিনী, ষে নাড়ী মাংসপরিবেন্টিতবৎ বোধ হয় এবং যে নাড়ী স্থন্ম অথচ বক্রভাবে স্পন্দিত হয়; সে নাড়ী অসাধ্য লক্ষণসংযুক্ত বলিয়া জানিবে।

> ভুলতা ভুজগাকারা নাড়ী দেহস্য সংক্রমাৎ। বিশীর্ণে ক্ষীণতাং যাতি মাসান্তে মরণং ধ্রুবম্॥

(चूलका-किकिलूक, (कैंटा। जूकग-मर्भ।)

ষে রোগীর শরীর অভ্যস্ত ক্ষীণ এবং নাড়ী মহীলভা (কেঁচো) ও সর্প্রের ক্লার কুশ, অভিশয় মন্থণ অথচ বক্ষণামিনী এবং শরীরের সঙ্গে সংশ্লে ক্ষীণ হয় সে একমাস জীবিত থাকিয়া পরমাসে নিশ্চরই মৃত্যুমুখে পতিত ক্লুয়

> ক্ষণাদগ্যন্থতি বেগেন শান্ততাং গচছতি ক্ষণাৎ। সপ্তাহীশ্বরণং তদ্য যদ্যসং শোধবঞ্চিতঃ॥

ষে রোগার শরীরে শোথ নাই, অথচ নাড়ী কণেক জীব্রবেগে ও কণেক মুহুবেগৈ প্রবাহিত হয়; তাহার সপ্তাহ মধ্যে মৃত্যু ঘটিয়া থাকে।

জহাতি যদ্য স্বস্থানং যবাৰ্দ্ধমপি করস্থা।

• ন স জীবিত মাপ্লোতি ত্রিদিনাভ্যন্তরে মৃতিম II

ষদ্যপি কর্মতা নাড়ী স্বস্থান (মণিবন্ধ) ছইতে অর্ধ্বয়ৰ পরিমিত স্থান ছাড়িয়া যায়, তবে রোগী তিন দিনের মধ্যে কালকবলে পতিত হয়।

> স্বস্থানবিচ্যুতা নাড়ী যদা বহতি বা ন বা । জ্বালা চ হদয়ে তীব্ৰা তদা জ্বালাবধি স্থিতিঃ॥

্ যাহার নাড়ী মনিবন্ধ হইতে স্থালিত হয় এবং বক্ষংস্থলে নিরতিশয় জ্ঞালা উপস্থিত হয়, তাহার ঐ জ্ঞালা পর্যান্ত প্রাণ থাকে অর্থাৎ হৃদয়ের জ্ঞালা নিবারণের সঙ্গে সঙ্গেই জীবন ধংসপ্রাপ্ত হয়।

> প্রাতঃ স্নিধ্বময়ী নাড়ী মধ্যাকে চোকতা ভবেৎ। সায়াকে ধার্বমানা চ চিরস্থা রোগবঙ্জিতা॥

যে ব্যক্তির নাড়ী প্রাতঃকালে স্মিঞ্ধা, মধ্যাহ্নকালে উষ্ণা এবং সন্ধ্যাকালে অত্যন্ত বেগবতী হয়; ভাহাকে সম্পূর্ণরূপে রোগবর্জিত বলিয়া জানিবে।

তৈলাভ্যঙ্গে প্রস্থপ্তে বা ভোজনান্তে তথৈব চ।
তদা ন জ্ঞায়তে নাড়ী যথা তুর্গতমানদী॥
নাড়ী পরীক্ষার নিষিদ্ধকাল বলা মাইতেছে।

তৈল (তৈল, মৃতাদি শ্লেছবন্ধ) মর্দন অন্তে, নিদ্রিত অবস্থায় এবং ভোজ-নান্তে, নাড়ী পরীক্ষায় নিযুক্ত ছইবে না; যেছেতু বেমন হুর্গমা নদীর প্রভ্যাভি-মুখে গমন হুঃসাধ্য, সেই প্রকার ঐ সকল অবস্থায় নাড়ীর গতির প্রতি বুদ্ধি প্রবেশ করিতে পারে না।

সদ্যঃ স্বাত্স্য ভুক্তস্য ক্তৃফাতপদেবিনঃ।
ব্যায়াম ক্লান্তদেহদ্য সম্যঙ্নাড়ী ন বুধ্যতে॥
ইতি নাড়ীপরীক্ষা সমাপ্রা।

স্থানান্তে, আহারান্তে এবং স্কুধিত, তৃঞ্চার্ত্ত ও ব্যায়ামাদি দ্বারা ক্লান্ত-ব্যক্তির নাড়ী পরীক্ষা কর। উচিত নহে; কারণ উক্ত অবস্থা সমুদ্যে নাড়ীর গতি সম্যক্ প্রকারে জ্ঞান্ত হওয়া যায় না।

ইতি,নাড়ীপরীকা সমাপ্ত।

পুনর্নাড়ীপরীক্ষাবিশেষঃ। বিলদতিমণিবদ্ধে এন্থিরস্কৃতভাগে তদধরণমিতাভিস্তাস্থলীভির্নিপীড়া। ক্ষুরণ সমক্ষতারা নাড়িকারাঃ পরীক্ষা পদমন্তঘটিকাধো২ক্ষুষ্ঠভাগে তথৈব। পুনর্কার বিশেষ প্রকার নাড়ী পরীক্ষা বলা যাইতেছে।

করপ্রস্থির র্**দ্বাঙ্গু**লির মূলভাগের নিম্নদেশে যে নাড়ী মূত্র্যুক্তঃ স্পন্দিত ছইজেছে, তিনটী অঙ্গুলি (তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা) 'রারা নিপীড়ন-করতঃ সেই নাড়িকার স্কুরণ পরীক্ষা করিবেন। পাদ্বয়ের গুল্কদেশের অধ্ঃপ্রান্তম্ব অসুষ্ঠ মূলগভা নাড়ীও উক্ত প্রকারে পরীক্ষণীয়।

পরীক্ষা প্রকরণমাহ।

ঈষদ্বিন্দ্রপ্রভাগভাজি
হত্তে প্রদারিতকরেঙ্গুলী সক্ষরেব।
অঙ্গুষ্ঠমূলমধিপশ্চিমবামভাগে
নাড়ীং প্রভঞ্জন-গতিং সততং পরীক্ষেৎ।

্ কুর্পর-রদ্ধাঙ্গুলির সমস্থত্তী হস্তপঞ্জার নিম্নে যে "মণিবন্ধ" নামক স্থান আছে, তাংহার পূর্ব্বপার্শ্ব নাড়ীর অবস্থিতির স্থান। প্রভঞ্জনগতি-বায়ুরগতি।)

রোগীর প্রদারিত হস্তের কুর্পর স্থানকে ঈষৎ বিনম্রভাবে ধারণপূর্বক অঙ্গুলিক্রয় দ্বারা অর্থাৎ ভর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা; এই তিন**টা অঙ্গুলী** দ্বারা কোমলভাবে পীড়ন করিলে প্রথম যে গতি অন্তৃত্ত হয়, তাহাই বাহুর গতি। ইছা নিয়তই পরীক্ষণীয়।

অথ মার্কজীয়ে।

বাতেন বক্রা ক্ষ্রতি প্রগাঢ়ং গত্যা জলৌকাঃ প্রতিমা চ পিতাৎ । দ্রুতং বহেদ্বা বকবদ্ব জতি কফেন হংসীব তু মন্দ্র্যানা॥ বাতাদিক্রমে নাড়ীর গতি বলা যাইতেতে।

বাতাশ্রিতা নাড়ী বক্তভাবে স্পন্দিত হয়, পিত্তাশ্রিতা জলোকার গতির স্থায় গতিবিশিষ্ট হয় এবং কফাশ্রিতা নাড়ীবকপক্ষীর সদৃশ জতীব চ্রুতবেগে অথবা রাজহংদের স্থায় অত্যন্ত মুহুভাবে প্রবাহ্বিতা হয়।

অত্যুগ্ৰা ঘনবাতেন অতিশীব্ৰা চ পিতলা। অতিহিন্না ককবতী সা নাড্যত্যম্ভপিচ্ছলা॥ অত্যন্ত বায়ুন আধিক্যে নাড়ী উপ্ৰসাদিনী হয়, অত্যন্ত পিতাধ্ৰিক্যে অতীৰ

ক্ষাৰ বাধুৰ আধিকো নাড়া ডম্মানান হয়, অভান্ত পিজাধিকো অভাব ক্ষতগভাৰিক সাতিশয় কফাধিকো নাড়ী অভান্ত পিজ্জা (মন্থ্ৰগামিনী) হয় ৷

আদেপিতং কফো মধ্যে অনামায়াৎ প্রভঞ্জনঃ। ক্ষ টং বিকাশতে নাডী জ্ঞাতব্যান্সা চিকিৎসকৈঃ॥

নাতীর গতিভেদে তিন প্রকার লক্ষণ প্রকাশিত হয়।—বথা তর্জনী निर्दिश्वरल उर्द्धनी यात्रा शिखित गिष्ठि, मधामा निर्देशवादि मधामा व्यक्ती দ্বারা কফের পতি এবং অনামিকা নিবেশস্থানে অনামিকা দ্বারা বায়ুর গতি বুর্বীতে পারা যায়।

বায়ুর্য দাহনামিকায়াং স্বগত্যা পরিপৃরিতঃ ! শ্লেয়পিতং অবেৎকিঞ্চিৎ কেবলং বাতমাদিশেৎ !

় যদি বায়ু স্বীয় গতি দ্বারা অনামিকা অঙ্গুলিতে পরিপুরিত হয় এবং শ্লেষ্যা ও পিত্ত অপ্পেমাত্র পরিষ্ক ট হয়, তবে কেবল মাত্র বায়ুর প্রকোপ বলিয়া জানিবে।

মধ্যমায়াং প্রশন্তায়াং কলঃ অবতি পুরিতঃ। বাতপিত্তং অবেৎ কিঞ্চিৎ কেবলং ক্ষমাদিশেৎ ॥

যদাপি মধামা অঙ্গুলিতে স্বগতি দারা শ্লেদ্বা পরিপূর্ণ বলিয়া অন্তছ্ত হয় এবং কিঞ্চিয়াত্র বায়ু ও পিত পরিক্ষুট হয়; তাহা হইলে শ্লেমার প্রকোপ বলিয়া জানিবে।

> তর্জ্জন্যাঞ্চ যদা পিত্তং স্বগত্যা পরিপূরিতম্। কফবাতে) স্পূৰ্ণেৎ কিঞ্চিৎ কেবলং পিত্তমাদিশেৎ॥ ইতি বণিষ্ঠমতমু।

তৰ্জনী অন্থলিতে স্বীয় গতি দ্বারা পিত পরিপূর্ণবোধ এবং কফ ও বায়ু অম্পেমাত্র পরিক্ষুট হইলে, কেবলমাত্র পিত্ত প্রকুপিত হইয়াছে বলিয়া ख्रानिद्व ।

ইতি বশিষ্ঠ মন্ত সমাপ্ত।

অথ গৌতমীয়ে ।

বামনাড়ী দীর্ঘরেখা বাহুমূলে চ স্পন্দতে। জীবেৎপঞ্চশতং বর্ষং নাত্র কার্য্যবিচারণা ॥

নাড়ীর গতি দারা জীবিত কালের নির্ণয়। ষাহার বামহন্তগত নাড়ী দীর্ঘরেখাবিশিষ্ট ও বান্তমূলে স্পন্দিত হয়, দে পাঁচশত বৎসর জীবিত থাকে।

দীর্ঘাকারা বামনাড়ী কর্ণমূলে চ স্পন্ধতে। জীবেৎ পঞ্চশতং সার্দ্ধি ধনিকো ধার্দ্মিকো ভবেৎ ॥ বে ব্যক্তির বাদহস্তগতা লাড়িকা দীর্ঘ আকারবিশিষ্ট ও নাড়ী কর্নমূলে স্পন্দিত হয়, সে ব্যক্তি সাড়ে পাঁচশত বর্ধকাল জীবন ধারণ করিয়া থাকে এবং অত্যন্ত ধনী ও ধার্মিক হয়।

> বামনাড়ী স্বণ্পরেখা হনুমূলে চ স্পন্ধতে। পঞ্চবর্যাধিককৈব জীবনং নাত্র সংশয়ঃ॥ ইতি প্রয়োগ চিন্তামণো নাড়ীপরীক্ষাবিবরণম্।

যাহার বামহস্তন্থা নাড়ী স্বাপ্প রেখাবিশিষ্ট এবং হনুমূলে প্রচলিত হয়, সে পাঁচশত বৎসরের অধিক কালও নিঃসংশয়ে প্রাণ ধারণ করিয়া থাকিতে পারে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণি এম্থে নাড়ী পরীক্ষা বিবরণ সমাগু।

অথ জিহ্বাপরীক্ষা।

জিহ্বা পীতা খরস্পর্শা ক্ষু টিতা মারুতাধিকা। ন রক্তশ্যাবা ভবেৎ পিত্তে কফাৎ শুক্লা দ্রবা ঘনা॥ অনন্তর জিহ্বা পরীক্ষা বলা যাইতেছে।

বাতাধিক্যে জিহ্বা পীতবর্ণ, খরস্পর্শ ও ক্ষ্রাটত (বিদারিত) হয়। পিত্ত-প্রকোপে রক্তবর্ণ ও শ্রাবর্ণ (কৃষ্ণপীতাদি মিশ্রিত জঘত্য বর্ণ) হয়। এবং শ্লেম্মাধিক্য হইলে অত্যন্ত শুক্লবর্ণ ও সাতিশয় দ্রব অর্থাৎ চট্চটের ক্রায় হইমা থাকে।

ক্কাপিসংক্টা গুকা সন্নিপাতাত্মিকা তু সা। মিশ্রিতে মিশ্রিতা জ্বেয়া লিপ্তলক্ষণয়াশ্রিতা॥

সন্ধিপাত অর্থাৎ এককালীন বায়ু, পিত্ত ও কফ; এই ত্রিদোষের প্রকোপে জিহ্বা কৃষ্ণবর্ণ, গোজিহ্বার স্থায় ক্ষ্ণটিত (কন্টারতবং) ও শুষ্ক হইয়া থাকে। আর মিশ্রিত দোষে মিলিত লক্ষণ সংযুক্ত হয়, অর্থাৎ দিদোষে দিলেযের মিলিত লক্ষণ এবং ত্রৈদোষিক রোগে দোষত্রের লক্ষণান্থিত হইয়া থাকে।

इं ि जिस्ता भरीका ममाथ।

অথ মূত্রপরীকা।
পাশ্চাভু রন্ধনী বানে ঘটিকানাং চতুইয়ে।
উত্থাপ্য রোগিনং বৈদ্যো মূত্রোৎসগর্ভ কারয়েৎ॥
আদ্যধারান্ত সংভ্যক্তা মধ্যধারাসমুদ্ধবম্।
ভতে কাচময়ে পাত্রে রুত্রা মূত্রং পরীক্ষয়েৎ॥
স্ক্রেণ্ড মত্র পরীক্ষা বর্জি ক্রিক্সের্ড

অতঃপর মূত্র পরীক্ষা বর্ণিত হইতেছে। চিকিৎসক ৪ চারি দণ্ডকাল রাত্রি অবশিক্ষ থাকিতে রোগীকে উত্থাপন করাইয়া মূত্র ত্যাগ করাইবেন। প্রথম কিঞ্চিৎ পরিমাণে মূত্র নিঃস্ত হইলে; তৎপরে মহা অবস্থায় যে মূত্র নির্গত হইবে, তাহাই নির্মাল কাচপাত্রে ধারণ-পূর্বক পরীক্ষা করিবেন।

্ভাক্ষরোদরবেলায়াং প্রকাশস্থানকে প্রতম্।
লোলপ্রিত্বা পুনঃ সম্যক্ ততো মূত্রং পরীক্ষরেৎ ॥
স্বাের উদ্য হইলে প্রকাশ্ত (অনারত) স্থানে উক্ত মূত্র রাখিবে। তৎপরে দেই মূত্র পুনঃ পুনঃ সম্যক্ প্রকারে চালিয়া (হস্তদ্বারা দোলাইয়া)
পরীক্ষা করিবে।

ত্ণেনাদ্রার তৈলম্য বিন্দুং মূত্রে রুতে সতি।
জারতে বুদ্ধুদো যত্র বিকারঃ সোহস্তি পিত্তজঃ॥
স্মিঞ্চং শ্যাবারুণছারং বাতান্মৃত্রং প্রজারতে।
তাবদূর্দ্ধান্ধ বগ্গাতি তৈলবিন্দুযুত্ত্তথা॥
মূত্রং শ্লোম্বানি জায়েত সমং পল্লবারিণা।

তৃণে করিয়া একবিন্দু তৈল মুত্র মধ্যে নিক্ষেপ করিলে, ইদ্যুপি দেই তৈলবিন্দু বুদ্ধু দাকৃতি ধারণ করে; তবে পিত্ত প্রকোপ বলিয়া জানিবে। যদি
তৈলখিন্দু মূত্র মধ্যে নিক্ষেপ করিলে বুদ্ধু দাকৃতি না হইয়া ছায়াবিশিষ্ট হইয়া
প্রদারিত হয়, এবং দেই ছায়াটী দেখিতে স্নিন্ধ, শ্যামবর্ণ বা রক্তবর্ণ বলিয়া
বোধ হয়, তাহা হইলে বায়ুর প্রকোপ জানিবে। যদ্যপি তৈলবিন্দু নিক্ষেপ
করিলে মূত্রের উপরিভাগে সম্পূর্ণরূপে ভাসমান হইয়া থাকে, প্রসারিত হইয়া
না পড়ে, তবে মেন্মার প্রকোপ জানিবে। আর মেন্মার প্রকোপে মূত্র
পল্লস্থ (কর্দমমিশ্রিত) জলের স্থায়ও হয়।

দক্ষিণস্যাং তথা জ্ঞেরা, যথাযোগ্যং ক্রমান্তবেৎ॥ বারুণ্যাং প্রসরেদ্বিন্দুঃ সুখারোগ্যং প্রচক্ষতে। উত্তরস্যাং তথারোগ্যং জানীয়াদ্ব্যাধিপীড়িতে॥

মূত্রৈ তৈলবিন্দু নিন্দেপ করিলে যদাপি মূত্রাধারের দক্ষিণদিকে দেই ত্র ছড়াইরা পড়ে, তবে কফ প্রকোপের লক্ষণ সংযুক্ত হয় অর্থাৎ তৈলবিন্দু ত্রের উপরিত্তীগে ভাসিয়া থাকে এবং কর্দমাক্ত জ্বলের স্থায় দেখায়।

পশ্চাৎ যথাবোগ্য পরীক্ষা বলা মাইতেছে। যথা;—পাত্তের পশ্চিম ও ভারদিকে ভৈলবিন্দু প্রসারিত হইলে, রোগী স্থথে আরোগ্যলাভ করিভে ীরে।

. বাতেন পাণ্ডুরং মূত্রং সফেণং কফরোগিণাম্। রক্তবর্ণং ভবেৎ পিত্তে দ্বন্দক্তে মিঞ্জিতং ভবেৎ॥ মূত্র বাডামিক্যে পাণ্ডুবর্ণ (পীত শুক্র মিঞ্জিবর্ণ), এবং পিত্তাধিকো রক্তবর্ণ আর দিলোবে বাতপিত্ত, বাতমেশ্ব প্রভূর্তি দিলো-বের মিলিত লক্ষণ সংযুক্ত হয়।

ঐশান্যাং বর্দ্ধতে বিন্দু প্রতি মাসে বিনশত ।
আয়েয্যাক তথা জ্ঞেয়ং নৈশ্বতাাং প্রসরেদ্যানা ॥
চিত্রিতক ভবেৎ পশ্চাৎ প্রবং মরণনির্দিদেশ ।
বায়বাাং প্রসরেদ্বিন্দুঃ সুধাপীতে।২পিনশাতি॥

মূত্রাধারে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে, যদ্যপি সেই মূত্র ঈশানকোণে, আমিকোণে, নৈশ্ব তিকোণে অথবা বায়ুকোণে, ছাহা প্রসারিত হয়, এবং পশ্চাং বিচিত্র বর্ণবিশিষ্ট হয়, তাহা হইলে সে রোগী স্থধাপান করিলেও তাহার মরণ অবশ্বস্তাবী জানিবে।

দ্রবতে মজ্জতে বিন্দৃঃ প্লবতে চ মুমূর্ তাম্। বিকাশিতং হলং কুর্দং দৈব বিকারসংযুতম্॥

মুমূর্ব্ ব্যক্তির মূত্রে তৈলবিন্দু প্রক্ষেপ করিলে, দেই মূত্র দ্রবীভূত, নিম-জ্ঞিত ও প্লাবিতশ্হর এবং বিকৃত হইরা হলাকৃতি বা কূর্ম (কচ্ছপ) সনৃশ আকার প্রাপ্ত হইরা থাকে।

কারওমওলং বাশি নরং মন্তকবর্জ্জিতম্। পাত্রখণ্ডক খড়াক খরপুচ্ছদমন্বিতম্॥

শির্ক লণ্ডড়কৈব তথিব ত্রিচতুষ্পথম্।

বিন্দুরূপং ভবেজ্জু ষ্টং ন কুর্য্যাত্তৎ প্রতিক্রিয়াম্॥

(কার গু-মঞ্জল — বাঁ াপি, পেটারির ন্যায় গোলাকার। খর-কর্দ্মন্ত। শর বাণ। লগুড় লাঠি। জুই-প্রাপ্ত। প্রতিক্রিয়া-চিকিৎসা।)

মূত্রে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে যদি সেই তৈলবিন্দু কারগু সদৃশ গোলা ক্বভি, মন্তকবিহীন নরাকৃতি অথবা পাত্রখণ্ড, খড়ান গর্দ্ধভের পুচ্ছ, শার, যদি ত্রিপথ বা চতুষ্পথের স্থায় আকার ধারণ করে; ভবে সে রোগীর চিকিৎস্করিবে না।

হংসপারাবতাকারং কলসপ্পজচামরম্।
ছত্ত্বগ তোমরং হর্দাংবৈবর্ত্তাং দৃশ্যতে যদা॥
আরোগ্যক্ষ তদা ভেরং ফ্রব্থ কার্য্যা প্রতিক্রিয়া।
(श्वজ—নিশান। তোমর—অন্তবিশেষ। হর্দ্যা—অটালিকা। বৈবর্ত্তা
ঘূর্বিতবং আবর্ত্ত।)

ু মুত্রে ভৈলবিন্দু নিন্দিপ্ত হইলে, যদ্যপি সেই ভৈলবিন্দু হংস, কপো কলস, ধজ, চামর, ছত্র, ভোমর অথবা অক্টালিকার ভার আকারবিশিক্ত ন কিমা বিবর্জতা (ঘূর্ণিতবৎ) দুষ্ট হয়; ভাহা হইলে নিশ্চয়ই সে রোগী আরোক্ত ক্রিকে ক্রিকে গ্রেকিব ক্রেকিব সা করা সর্বভোভাবে কর্তব্য । তৈলবিন্দুর্যদা মূত্রে চালনীসদূশো ভবেৎ।
কুলদোষং ধ্রুবং জ্রেয়ং প্রেতদোষসমুদ্ধবম্॥
মানার মতে তৈলবিন্দ্র তিকেপ কবিলে চালনী সদুশ আকার প্র

যাহার মূত্রে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে চালনী সদৃশ আকার প্রাপ্ত হয়, তাহার প্রেতদোষ সম্ভূত কুলদোষ বলিয়া জানিবে।

নরাকারঞ্জনয়েৎ কিংব। স্যান্মস্তকদ্বয়ম্।

ভূতদোষং বিজানীরাৎ ভূতবিন্যাং সমাচরেৎ॥ মুত্রে তৈলবিন্দু নিক্ষিপ্ত হইলে বদ্যাশি মেই তৈলবিন্দু মূত্রসহ মিলিড যা মুমুয়াক্তি অংবা দুইটা মুজুকের সায় হয়, তবে ভুতদোষ বলিয়া

হৃছিয়া মহ্য্যাকৃতি অথবা ছুই**টা** মন্তকের স্থায় হয়, তবে ভূতদোষ বলিয়া জানিবে, অতএব উহাতে ভূতাপদারণ প্রতীকারের চে**ই**। করিবে।

মূত্রেণ সার্দ্ধং মিলিতবৈত্তলং বিন্দৃঃপ্রজায়তে।
সিদ্ধার্থতৈলসদৃশং মূত্রং স্যাদামপিভজে ॥
বৈতলবিন্দৃস্তপা ক্ষিপ্তঃ শ্যামবুদ্ধ দসংযুতঃ।
বাতপিভোদ্ভবং মূত্রং জ্ঞাতব্যক্ষ ভিষয়বৈঃ॥

(সিদ্ধার্থ—শ্বেত সর্বপ।)

মূত্র মধ্যে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে যদ্যপি সেই তৈলবিন্দু মুত্রের সহিত মিলিত হইয়া সর্বপ তৈল সদৃশ বলিয়া বোধ হয়, তবে আমপিত দোষ জানিবে। আর সেই তৈলবিন্দু খ্যামবর্ণ বুদ্ধুদ সংযুক্ত বলিয়া বোধ হইলে, বাতপিত্তের প্রকোপ জানিবে।

তৈলবিন্দুত্তথা কিপ্তশ্চ তুর্দ্দিক্ষু বিসর্গতি। শ্লেম্মবাতে ভবেম্মূত্রং সৌবীরেণ সমং যথা॥ পাণ্ডুরং শ্লেম্মপিতে চ পিতে চৈব পরীক্ষয়েৎ। সন্মিপাতেন কৃষ্ণক বহুবর্ণকু জায়তে॥

মূত্রে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে তাহা চতুর্দ্ধিকে বিক্ষিপ্ত হইয়া সৌবীর (কাঁজি) দদৃশ বর্ণবিশিষ্ট হইলে, শ্লেম্মবাতের প্রকোপ, পাণ্ডুবর্ণ হইলে শ্লেম্মবাতের প্রকোপ, পাণ্ডুবর্ণ হইলে শ্লেম্মবাতের প্রকোপ অবং কৃষ্ণবর্ণ অথবা ক্ষণে ক্ষণে ভিন্ন বর্ণ প্রপ্ত হইয়া ব্লুদ্ধাকৃতি ধারণ পূর্ব্জক মূত্রের উপরিভাগে ভাসমান থাকিলে, তিদোষ্ট্রের প্রকোপ বলিয়া জানিবে।

তৈলবিন্দুর্যনা কিপ্তো বুদ্ধুদোর্দ্ধং ভবেতথা। খেতধারা মহাধারা পীতধারা মহাজ্বঃ॥ রক্তধারা দীর্ঘরোগাঃ কৃষ্ণা চ মরণান্তিকা॥

বে ব্যক্তির মুত্রে নিক্ষিত্ত তৈলাবিন্দু বুদ্ধ দাকৃতি হইরা উপরিভাগে ভালমান থাকে এবং দেই মুত্র খেতবর্গু বা পীড়রর্ণ সদৃশ ও দীর্ব প্রারাবিশিক্ট হয়,

আর যাহার বহুকালন্থায়ী রোগাবন্থার মৃত্তের ধারা রক্ত বা কৃষ্ণবর্ণ হয়, ভাহার মৃত্যু সন্নিকট জানিবে।

সৌবীরেণ সমং স্বচ্ছং মাতুলুঙ্গরসপ্রভম্।

পানীয়সদৃশং মূত্রং প্রপাকরহিতং ভবেৎ॥

(দৌবীর-কাঁজী। মাতৃলুঙ্গ-ছোলন্ধ বা টাবানের। পানীয়-জল।)

ধে মূত্র মাতুলুকের রস সদৃশ অতীব স্বচ্ছ অথবা জলের ন্যায় হয় ; ভাহা প্রপাক রহিত জানিবে।

> বাতাত্মন্বরমানঃ স্থানধো বহুল এব চ। তৈলতুলাং ভবেন্তুং নিত্যং সহজপিত্তজম্। কফাৎপল্লপানীয়তুলাং মূত্রং প্রজায়তে॥

বাতজ্বরে মূত্র পাত্রের নিম্নে (তলে) বহু পরিমাণে মসীভূত হয়। পিত্ত-জ্বে তৈল সদৃশ এবং কফজ্বরে কর্দমাক্ত জ্বলের স্থায় হইয়া থাকে।

পিত্তবাতোদ্ভবং মূত্রং শ্বেভং রক্তং প্রজায়তে।
বাতশ্লোশ্বাদ্ভবং মূত্রং ঘনং শ্বেভং প্রজায়তে।
তৈলতুল্যং ভবেন্মৃত্রং পিত্তশ্লেশ্বসমুদ্ভবম্।
রক্তবাতেন রক্তং স্যাৎ কৌসুদ্ভং পিত্ততো ভবেৎ॥

মূত্র বাতপিত্তজ্ঞরে শ্বেতবর্গ ও রক্তবর্গ হয়। বাতরেশ্বজ্ঞরে ঘন ও শ্বেত-বর্গ, পিত্তশ্বেজ্বরে তৈল সদৃশ, বাতরক্তদোযে রক্তবর্গ এবং পিত্ত প্রকোপে কৌস্কুস্তু (উমাপুষ্পের তৈল) সদৃশ হইয়া থাকে।

অধোবহুলমারক্তং মূত্রমালোক্যতে ধদা। বদস্তি তদতীসারলিঙ্গং তল্লিঙ্গবেদিনঃ॥

অতীসার রোগীর মূত্র পাত্তের অধোভাগে ঈষৎ রক্তবর্ন'ছয় বলিয়া পণ্ডিত-গণ নির্দেশ করিয়াছেন।

জলোদরভবং মূত্রং ভবেদ্যুতকণোপম্মূ, ৷

অজামূত্রসমং মূত্রং জীর্ণস্কর্সমুদ্রবম্ ॥

জ্বলোদর রোগে মূত্র ছতের কণা সংস্কীবৎ এবং জীর্ণজ্বরে ছাগামুত্তের বর্ণ বিশিষ্ট হয়।

মূত্রঞ্চ ক্ষণতাং যাতি ক্ষয়রোগো যদা ভবেৎ।
ক্ষররোগান্তবেৎ খেতমসাধ্যং তচ্চ নির্দিশেৎ॥
ক্ষয়রোগের প্রারম্ভে মূত্র কৃষ্ণবর্ণ এবং ক্ষয়রোগ সম্পূর্ণরূপে আক্রমণ করিলে, দেই মূত্র আবার খেতবর্ণ হইরা থাকে। এই অবস্থায় উক্ত ক্ষয়-

প্রবর্ততে তদা মূত্রং স্নিগ্নং তৈলসমপ্রভম্। আহার উদরহুন্চ জীবং ষাতি যদা কিল। উদরস্থ আহারীয় ভূক্ত বস্ত জীর্ণ হইলে, তৎকালে মূত্র তৈল সদৃশ সিধ অবন্ধায় প্রবর্ত্তিত হয়।

> উৰ্দ্ধ পীত মধোরক্তং মূত্রং চেদ্রোগিণো ভবেৎ। পিত্রপ্রকৃতিসন্ত্ত সন্নিপাত্স্য লক্ষণম্ ॥ বাতাধিকে সন্নিপাতে ক্লফমধাং ভবেত্তথা।

কফাধিকে সন্নিপাতে শুক্রমধ্যং ভবেতদা।

পিত্তপ্রকৃতিক সমিপাতে মূত্রের উপরিভাগ পীতবর্ণ ও অধোভাগ রক্ত-বঁৰ্ণ, বাতপ্ৰকৃতিক দল্লিপাতে মূত্ৰের মধ্যভাগ কৃষ্ণবৰ্ণ এবং কন্ধপ্ৰকৃতিক দল্লি-পাতে মুত্রের মধ্যভাগ শুক্রবর্ণাভ হয়।

ষ্দ্যেকুরস্কাশং মূত্রং নেত্রে চ পিঞ্জরে। রসাধিক্যং বিজানীয়াৎ নির্দিশেৎ তত্ত লক্ষণমূ॥ রুসাধিক্যে মূত্র এবং নেত্র ও পিঞ্জরও (পাঁজেরাও) ইক্লুরসের স্থায় বর্ণ বিশিষ্ট হয়।

পীতন্ততো পরিচ্ছায়ং রুঞ্চ বুদুদসংযুত্র । মূত্রং প্রস্থৃতিদোষেণ সন্দেছো নাস্তি কশ্চন । নিরামদেহং স্বচ্ছঞ্চ শ্বেতঞাপি প্রজায়তে॥ ইতি মূত্রপরীকা।

প্রস্থতির দোযে মৃত্র পীতবর্ণ, প্রতিবিশ্ববৎ স্বচ্ছ, ক্ষ্ণবর্ণ এবং বুদ্বুদ সং-বুক্ত হয়। এবং নিরাম অবস্থায় অতীব স্বচ্ছ ও শ্বেতবর্ণ হইয়া থাকে। ইতি মুক্ত-পরীকা সমাপ্ত।

অথ নাসাপরীকা। শুক্লা শুকা গুৰুঃ শাবা লিপ্তা স্থপ্তাচ নাসিকা। নাসিকামন্তবিরতা সংরতা পীড়কাযুতা॥ সশূলা ক্ষুটিতা নাসা মরণার ভবেৎ নৃণাম্।। ইতি নাসাপরীকা।

• নাদাপরীকা।

নাসিকা শুক্লবর্ণ, শুষ্ক, শুষ্ক, শ্বাববর্ণ, পরিলিপ্তবং (চট্ চটে) অথবা স্থাবং (অসাড়) বিস্তৃত্তবং, কিমা সঙ্কুচিত, শীড়কাসংযুক্ত, বেদনাযুক্ত এবং ্ৰিফ টিড হইলে, মৃত্যু অবশ্ৰম্ভানী বলিয়া জানিৰে। इंडि नामा भंदीका नमाख।

धारत्रागं-विखामनिः।

অথাস্তপরীকা ৷

বাতে লবণমাশ্যং স্থাৎ পিত্তে তিক্তং ককে মধু। দ্বন্দকে দ্বন্দকং জ্বেয়ং সন্নিপাতে ত্রিলিঙ্গকম্॥

ইতি আশ্বপরীকা।

আশ্ব (মুখ) পরীক্ষা বলা যাইতেছে।

বাতাধিক্যে মুখ লবণরদসংযুক্ত, পৈত্তিকে তিক্তরসযুক্ত এবং শ্লেম্পর প্রকোপে মধুররসাক্ত হয়। আর দিনোষে দিনোষের মিলিত লক্ষণযুক্ত অর্থাৎ বাতপিত্তে লবণমিশ্রিত তিক্তরসাক্ত, বাতমেশ্বে লবণ ও মধুর রসাক্ত এবং পিত্তশ্লেমায় তিক্তরসাক্ত মধুর রসাম্বাদ এবং ত্রিদোষে ত্রিদোষের মিলিত লক্ষণ অর্থাৎ লবণ, তিক্ত ও মধুর এই তিন রসেরই আস্বাদ অর্ভুত হয়।

ইতি আস্থাপরীক্ষা সমাপ্ত।

অথ নেত্রপরীক্ষা।

রৌদ্রে রুক্ষে চ ধূমাভে নরনে তারচঞ্চল। অথাভ্যন্তরকৃষ্ণাভে ভবতো বাতরোগিণঃ॥
নেত্র পরীক্ষা।

বাতপ্রকোপে রোগীর চক্ষর্ব য় রোক্তবর্ণ, রুক্ষ, ধূত্রবর্ণ, চঞ্চলভারাবিশিষ্ট এবং অভ্যন্তর ভাগ কৃষ্ণবর্ণাভ হয়।

পিত্তকোপে তু পীতাভে ভবতঃ পিত্তকোপতঃ।
সংতপ্তে ভবতো দীপমালোকয়িতু মীক্ষণে॥
পিত্ত প্রকোপে চকু পীতবর্ণাভ এবং প্রদীপ দর্শন করিলে অভীব সম্বপ্ত হয়।

> জ্যোতির্হীনে চ শুক্রাভে জলপূর্ণে সংগীরবে। মন্দাবলোকনে নেত্রে ভবতঃ কফকোপতঃ॥

কফের প্রকোপে নেত্র জ্যোতিবি হীন, শুক্রবর্ণাভ, জলপূর্ণ, অত্যস্ত গুৰু এবং মুহ্ন (অস্পন্ট) দলী হয়।

> তন্ত্রামহাকুলে শ্রামে নিভুগ্নে ক্ষত্রক্তক । রক্তবর্ণে চ সভতং বিক্ততে ঘোরতারকে । ক্ষণা ভূমীলিতে চৈব ক্ষণাদেবনিমীলিতে । বিলুপ্তক্তকতারে চ বহুবর্ণে চ তৎক্ষণাৎ । ভবতো নয়নে চেখং সন্নিপাতেবিশেষতঃ ।

চকুর্থ র সদিপাতে (ত্রিদোষে) তন্তাকুলিত, স্থামবর্ণ, কোটরগত, কক, কুর্ত্তবর্ণ সতত বিকৃত, যোর তারা বিশিষ্ট, কণে কণে উন্মীলিত, কণে কণে নিমীলিত, কুক্তারার বিলুপ্ত এবং তৎক্ষণাৎ বছবিধ্বণ বিশিষ্ট হয়। ' সৌমোঁ দৃষ্টি প্রসন্নাতে প্রক্নত্যা চ মনোরমে । নেত্রে কথয়তঃ শীত্রং শ্রেয়াংসি খুলু রোগিণঃ॥ ইতি নেত্রপরীক্ষা।

চঙ্গুন্থাভাবিক অবস্থায় সৌম্যদৃষ্টি, প্রাকৃতিক আভা সন্নিবিষ্ট ও মনোরম দর্শনশীল হয়। সুর্ব্বথা চঙ্গুর অবস্থা দ্বারা শীয়েই রোগীর শুভাশুভ নির্দ্ধারিত হয় ১

নেত্র-পরীকা-সমাপ্ত।

অথ আর্দ্রব পরীক্ষামাহ।
মিথ্যাচারেণৈব স্ত্রীণাং প্রভুষ্টেনার্দ্তবেন চ।
জারন্তে বিবিধা রোগা স্তস্মাদ্রজঃ পরীক্ষয়েৎ॥
অর্দ্রব পরীক্ষা।

অনিয়মিতরূপে আংহার বিহার করিলে স্ত্রীদিগের আর্ত্তব সংদূষিত হইরা বিবিধ রোগ উৎপাদন করে, একারণ স্ত্রীদিগের সর্বাধ্যে আর্ত্তব পরীক্ষা করা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য।

> মাদেনোপচিতং কালে ধমনীভ্যাং তদাৰ্ভবং। ঈষৎ কৃষ্ণং বিগন্ধঞ্চ বায়ুর্যোনিমুখং নয়েৎ॥

স্ত্রীদিগের রজোরক্ত একমাদে সঞ্চিত ও ঈষৎ কৃষ্ণবর্ণ ও বিগন্ধি ছইয়া যথাকালে বায়ু কর্তৃক চালিত ছইয়া ধমনী দারা যোনিমার্গে আনীত ও নিগ্ত হয়।

> তদ্বন্দ্রাদশাৎ কালে বর্ত্তমানমসূক্ পুনঃ। জরাপক শরীরাণাং যাতি পঞাশতঃ ক্ষয়ম্॥

স্ত্রীদিগের এই আর্ত্তব বার বৎসর বরদের সময় প্রায়ন্ত হইতে আরম্ভ হইয়া, শরীরের জীর্ণতাদি অবস্থান্তর প্রাপ্তি প্রযুক্ত পঞ্চাশ বৎসর বরদে নিরন্ত হয়।

দ্বাদশাদ্বৎসন্নাদূর্দ্ধ মাপঞ্চাশৎ সমাঃস্ত্রিয়ঃ।

মাসি মাসি ভগদ্বারা প্রকৃতি্যবার্দ্তবং অবেৎ॥
জীদিগের মাদশ বংনর হইতে পঞ্চাশ বর্ষ পর্যন্ত আভাবিক নিরমায়গারে প্রতিমানেই যোনি দ্বারা আর্ত্তব নিঃসত হইয়া থাকে।

রজঃ অবতি যদ্মিন্ স ঋতুকালঃ প্রকীর্ত্তিতঃ।
অতন্তস্থালকণস্ত বৈশিষ্যাৎ কৃথ্যতে২ধুনা॥
শীনপ্রসন্নবদনাং প্রক্লিনাঅমুখনিজাং।
নরকাষাং প্রিয়কথাং অন্তকুক্যকিমূর্দ্ধজামু॥

ক্ষুরস্কুজরুচ শ্রোণি নাভ্যুর জ্বনক্ষিচং।

হর্ষে থিসুক্যপরাঞ্চাপি বিদ্যাদৃত্যতীমিতি॥

জ্রীলোকের আর্ত্তব নিঃসরণ কালকে ঋতুকাল বলে। এই ঋতুকালে বে সমস্ত লক্ষণ প্রকাশিত হয়, ভাষা বিশেষরূপে বলা যাইতেছে। যথা ,-- মুখ-কান্তি হর্ষগন্তীর ও মলাক্ত, দন্তপংক্তিও মলসমন্বিত, কামবিহ্বলচিত্ত, পুক্ষ সংসর্গে ইচ্ছা, গর্ডাশরের শিখিলতা, কুক্রির অলসতা, কেশসমূহের বিশু-খালতা, বাছ, গুন, নিতম্ব, নাভি, উক, জ্বন ও ক্মিক্দেশ ক্ষুরিভ হয়, পরস্ত রজম্বলা কামিনী, প্রিয়ভাষিণী, হর্ষাম্বিতা ও উৎস্ক্রয়ুক্তা হয়; এই সকল লক্ষণাস্থিতা নারীকে ঋতুমতী বলিয়া জানিবে।

> সুরেন্দ্রগোপসংকাশং স্মিগ্ধঞ্চ মধুগন্ধি চ। অপিচ্ছিল মশীতঞ্চ যদ্বাসো ন বিরুজ্যতে॥ মাসারিপিচছদাহার্ত্তি পঞ্চরাত্রানুবন্ধি চ। নৈবাতি বহুলাত্যল্প মাৰ্ত্তবং শুদ্ধমাদিৰেও॥ ইতি আর্ত্তবপরীকা।

স্ত্রীগণের আর্ত্তন যদি ইন্দ্রগোপের (রক্তনর্ণ কীটবিশেষের) তুল্য রক্তন্বর্ণ হয় এবং স্নিম্ব, মধুরগন্ধযুক্ত ও অপিচ্ছিল হয়, অপিচ উহা শীতল না হয়, এবং ঐ রজোরক্ত দারা বস্তা রঞ্জিত করিয়া প্রকালন করিলে রক্তের দাগ উঠিয়া যায়, এবং প্রতিমানে পাঁচ রাত্রি ব্যাপিরা অপিচ্ছিল ও দাহ-বেদনা-রহিত অন্ধিক অথচ অনম্পভাবে আর্ত্তব নিঃ স্বত হয়; তবে মেই আর্ত্তব বিশুদ্ধ বলিয়া জানিবে। ইতি আর্ত্তব পরীক্ষা সমাপ্ত।

অথ রোগিবস্ত্র-পরীক্ষা। স্থরব্যাপ্তশরীরশু উন্মা ভবতি দারুণঃ। ৰী উন্থা বহি রাপ্নোতি বন্ধে তিন্ঠতি নিশ্চয়ঃ॥ রোগীর-বস্ত-পরীকা।

জরসংযুক্ত ব্যক্তির দেহাভ্যন্তরে দাকণ উত্মা সমুদ্ধুত হইয়া, তাহ। শরী-রের বাছদেশে (সর্বাচ্ছে) অবছিতি করে; অতএব উক্ত উন্মা রোগীর পরিহিত বস্ত্রকে আশ্রয় করিয়া থাকে।

> তদ্বসং ভ্ৰাণতো জ্ঞাত্বা পৃথগ্ৰন্দ্ৰয়াণিচ। সাধ্যাসাধ্যবিভাগজ্ঞ। জানীয়াঁদ্বস্তুলকণাৎ॥

অভএৰ চিকিৎসক রোগীর সেই বস্ত্র আজাণ পূর্বক, ভন্বস্ত্রের ভিন্ন ভিন্ন লকণ দারা বাতিক, পৈত্তিক, মৈশ্মিক, বাডগৈত্তিক, বাডলৈশ্মিক, পিত-লৈত্মিক কিছা সান্নিপাতিক; ইছাদের যে কোন প্রকার রোগ এবং দেই রোগ नाक्ष कि जनाया, जार्थ छाहात निर्वत्र कत्रुष्ठ शहत विकिथमात्र क्षत्रुष्ठ हरेट्स ।

বাতেন প্রাণং কুসুমং পৈত্তিকে মৎস্থমেবচ। শ্লেম্মি বাসো ভবতি চ কচিৎ কর্দ্দমগন্ধতৃল্যং এতদ্দ্বন্দ্বং ভবতি নিয়তং তৈস্ত্রয় স্তিসৃভির্বা

• জ্ঞাতবাং দ্রাণতো বা সুমতিঃ সুভিষ্যাজতে রাজযোগাঃ ॥
কুমতি ভিষ্ণাগণ রোগীর বস্ত্রে পুষ্পাগন অন্তত্ত হইলে বাতিক, মৎস্থান
অন্তত্ত হইলে পৈত্তিক, কর্মনথ গন্ধ থাকিলে সৈত্মিক আর ছিলোমের
মিলিত লক্ষণ অন্তত্তব হইলে দিনোযজ অর্থাৎ পুষ্পত মৎস্থের গন্ধে বাতপৈত্তিক, পুষ্প ও কর্মনের গন্ধে বাতলৈছিক ও মৎস্থ ও কর্মনের গন্ধে পিত্তসৈত্মিক, এবং তিদোষের মিলিত লক্ষণে (পুষ্পা মৎস্থ ও কর্মন এককালীন
এই তিনের গন্ধের অন্তত্তবে) সান্ধিপাতিক রোগ বলিয়া জানিবেন।

যদাবস্ত্রে ভবেদান্ধঃ সহিতো জলকর্দ্দমঃ।
তদা দীর্ঘো ভবেদ্ধোগী দ্রিয়তে শবগন্ধকঃ॥
ইতি রোগিবস্ত্রপরীক্ষা।

যদ্যপি রোগীর পরিধান বদনে জলমিশ্রিত-কর্দ্ধমের গন্ধ অমৃত্ত হয়, ভবে সেই রোগী দীর্ঘকাল ব্যাধিতে আক্রান্ত থাকে, আর বস্ত্রে শ্বগন্ধ অমৃত্ত ছইলে, রোগী নিশ্চয় কালের করাল কবলে নিপতিত হয়। ইতি রোগীর বস্ত্র-পরীক্ষা সমাপ্ত।

অথ রোগিপরীক্ষা।

বালস্ত খলু মোহাদ্বা প্রমাদত্তার বুধ্যতে। উৎপদ্যমানং প্রথমং রোগং শত্রু মিবাবুধঃ॥ রোগিপরীকা।

বালকগণ, (মনোভাব প্রকাশ করিতে অক্ষম অজ্ঞ শিশুরা) মূঢ় ব্যক্তিসকল (মোহপ্রাপ্ত বা বুদ্ধিজম্ট) এবং প্রমন্ত (ক্ষিপ্ত অথবা ধন, ধান্ত,
পুত্রোদি বিরোগ হেতু জ্ঞানহীন বা হঃখিত) ব্যক্তিগণ স্বীয় স্বভাববশতঃ,
প্রকৃতির বিকৃতি প্রযুক্ত অথবা অঞাহ্ম কারণেই হউক, প্রথম উৎপদ্যমান
রোগকে অর্থাৎ রৌগ জন্মিবার প্রথম অবস্থায় উহাকে বিষম শক্র (ভয়ানক
অপকারী বা প্রাণনাশক) বলিয়া জ্ঞান করে না।

ন মূঢ়োলভতে সংজ্ঞাং যাবতাবন্ন পীডাতে।
পীড়িতস্ত মতিং কুর্যাৎ পশ্চাৎ স ব্যাধিনিত্রহে॥
অথ পুত্রাংশ্চদারাংশ্চবন্ধু নাহুয় ভাষতে।
সর্ববেনাইপিমেকশ্চিন্তিষগানীয় দীয়তাম্।
ইতি রোগিপরীক্ষা।

মুদ্রাজিগণ হতকণ পর্যন্ত ব্যাধিকর্ত্বক বিশেষরূপে আকার্ত হইরা
মর্মান্তিক অসহ যন্ত্রণা না পার, ততকণ পর্যন্ত কিছুতেই লংজ্ঞালাভ (বুড় বা
চেক্টা) করিতে পারে না। কিছু যখন ব্যাধিদারা প্রকৃতীরূপে পীড়িত হইয়া
পড়ে, তখন দেই রোগ নিবারণ করিবার জন্ম মনোযোগ সহকারে বিশেষ
চেক্টা করিতে আরম্ভ করে। একারণ তদনত্তর পুত্র, জ্রী প্রভৃতি পরিবার ও
বন্ধু বান্ধবদিগকে আহ্বান পূর্বক কাতরোজিতে তাহাদিগকে বলে যে, "আমি
বরবাতল্যে সর্বস্থান্ত হইলেও তোমরা, আমার এই রোগ বিনাশার্থে চিকিৎসার পারদর্শী একজন উপযুক্ত চিকিৎসক আনিয়া দেও।"

ইতি রোগি পরীকা সমাপ্ত।

অথ দূতলকণমাহ।

দূতেনোক্তাহিবাণীখলুদশগুণিতরাশিচক্রেণমিশ্র।
পশ্চাদেকীক্বতাচেত্বিকটজ নযুতা সপ্তভাগাবশেষা
চক্রেবস্থোশরেবাবিষমপদগভানান্তিলাভঃকদাচিৎ;
যুগ্মেবেদেরদেবাসকলগুভকরং লভ্যতে২ত্যন্তসৌধ্যম্।
শ্ন্যেমরণং বোধ্যম্॥

ইতি দূতলক ।ম্।

मृ उलक्त ।

वानी—कथा। त्रांभिष्ठक—द्वांतमं मश्या वार्थाः २२। वसः २ मश्या। विक्रि-० मश्या। मंत्र- ६ मश्या। युगा-२ मश्या। (वतः – ८ मश्या। त्रम-७ मश्या।

রোগীর উপস্থিত রোগ চিকিৎসা করিবার জন্ম যে ব্যক্তি চিকিৎসক আনরনার্থে গমন করে, তাহাকে দূত বলে। ঐ দূত চিকিৎসকের নিকটে যাইয়া যে সকল কথা বলিবে, তাহার সংখ্যা করিয়া উক্ত সংখ্যাকে ১০ দশ দিয়া গুণ করিবে; তৎপরে তদ্গুণিত সংখ্যাতে ১২ যোগ করিয়া মিলিত সংখ্যাকে ৭ সাত দিয়া ভাগ দিলে, ভাগাবশিষ্ট ছারা রোগীর শুভাশুভ লক্ষণ অবগত হওয়া যায়। অর্থাৎ ভাগাবশেষ ১,০ বা ৫ হইলে রোগীর স্থখ লাভের সম্ভাবনা নাই। ২,৪ অথবা ৬ অবশিষ্ট থাকিলে রোগী সম্বর স্থম্ম হইজে পারে। এবং ভাগাবশেষ শৃষ্ম হইলে অর্থাৎ অবশিষ্ট কিছুই না থাকিলে রোগীর মরণ অবধারিত।

উদাহরণ। দূত চিকিৎসককে বলিল "সত্ত্বরই আহ্বন, ভয়ানক অবস্থা ঘটিরাছে" অক্ষর সংখ্যা সর্বশুদ্ধ ১৮ ছইল, ১০ দিয়া গুণ করিলে ১৮০ হয়, উহাতে ১২ যোগ দিলে ১৯২ ছইল ; একণে এই ১৯২ সংখ্যাকে ৭ দিয়া ভাগ-বিলে ২৭ বার বাইয়া ৩ অবশিষ্ট রহিল। স্থৃত্রাং ইহাদ্বারা বোধ হুইল: রোগীর স্থান্থ্য লাভের সম্ভাবনা নাই। এই প্রকার সমস্ত জানিবে। ১৮x১•

১৮•+১২

ভাজ্ঞাং
ভাজ্ঞাং
ভাজ্ঞাং
৭)১৯১ (২৭ ভাগাকলং
১৪

৫২
৪৯
ভাগাবশিস্কাম্
৩
অনেন রোগিণোহস্বাস্থাং জানীয়াং।
ইতি দূতপরীক্ষা সমাপ্ত।

শিক্ষাযোগমাহ।

অপরিচ্ছেদতাং যাতি চৈকবৈশেষ্য-চিন্তনে।
কিং পুনঃ পরবৈশেষ্যং চিন্তামণৌ মনীবিণাম্॥
শিক্ষাযোগ।

শনে একটী বিষয় চিন্তা করিলে, তৎকালে যুগপৎ অন্থ আর কোন বিষয় কিছুতেই মনোমধ্যে স্থান পাইতে পারে না। অর্থাৎ আয়ুর্বেদ শাস্ত্র এমত হরহ যে, একটা বিষয় শিক্ষা করিতে যথোচিত কয় করিতে হয়। স্থতরাৎ সম্প্র আয়ুর্বেদ শাস্ত্র আয়ত্ত করা কিছুতেই সম্ভবনীয় নহে। একারণ বলি-য়াছি যে, আমার এই চিন্তামণি প্রস্থানি সংক্ষিপ্ত হইলেও পণ্ডিতগণের অ্যত্তের বা অ্শিক্ষার বিষয় হইবে না।

কিয়ল্লক্ষণ মজ্ঞাত্বা চিকিৎসা ফুঃখদা ভবেৎ। তেনৈব চ সমাসেন যত্নুক্তং তদিহোচ্যতে॥

পরস্ক পাঠকদিনের ইহা জ্ঞাত থাকা আবশ্যক ষে, নাড়ী, জ্বিহ্না এবং
মুত্রের তারতম্য ভেদে নিরাময়তা ও সাময়তার লক্ষণ কিয়ৎ পরিমাণে মাত্র
যিনি অবগত আছের; তাঁহার দ্বারা চিকিৎসিত হওয়া ক্লেশ ভোগের অর্থাৎ
আরোগ্যের প্রত্বিক্বকতার কারণ। একারণ প্রথরধীশক্তিসম্পন্ন মহা মহোপাধ্যায়-সর্বায়ুর্বেদ্বেত্তা কণাদ প্রভৃতি মহাভাগ মুনিগণ কর্ত্বক বিরচিত গ্রন্থ
সমূহ হইতে সারাংশ গ্রহণ পূর্বক অ্থবোধার্থে সংক্ষেপে এই গ্রন্থ প্রকাশ
করিতেছি।

তথাচাহ কুবৈদ্যত লক্ষণমৃ।

নাড়ী জিহবাগ্রমূত্রাদেল বণং যোন বিন্দতি। মারয়ত্যাশু জন্তুনাং স বৈদ্যোন চ শোভনঃ॥

क्रिवरमात्र लक्क्ष ।

ষিনি নাড়ী, জিহনাঞ, নেত্ৰ, মূত্ৰ এবং আন্তবৈর স্বাভাবিক ও অস্বাভাবিক লক্ষণ বিশিক্টরূপে অবগত নহেন। এবং উহাদের লক্ষণ দ্বারা যে ব্যক্তিরোগ নিরূপণ করিতে অসমর্থ ; তাঁছার চিকিৎসার প্রবৃত্ত হওয়া কেবল প্রাণিগণের জীবন বিনাশের নিমিত্ত ব্যতীত আর কিছুই নহে। অতএব এব-ভূত বৈদ্য প্রকৃত চিকিৎসক বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন দা।

> নিদানান্যবিশেষাতু লোকত্বর্লজ্যবিস্তৃতঃ। ঔষধপ্রক্রিয়াএন্থে নোচ্যতে ২ধিকশঙ্কয়া॥

ইতি জ্বরামমাণিক্য সেন কবিভূষণ বিরচিতে নাড়ীজিহ্বাগ্র-মূত্রাদেবৈশেষ্যবিবরণং নাম প্রয়োগ-চিন্তা-মণে প্রথমোইধ্যায়ঃ।

এই প্রয়োগ চিন্তামণি নামক ঔষধ-প্রক্রিয়া-এত্থে, রোগ সমূর্ছের নিদান, স্থুত্র এবং শারীরাদি বিষয় অত্যস্ত বিস্তৃত প্রযুক্ত প্রকৃষ্টরূপে বিরত হইল না।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন কবিভূষণ বিরচিত "প্রয়োগ চিন্তামণি" গ্রন্থে নাড়ী, জিহ্বাঞ, মুত্তাদির "বৈশেষ্য বিবরণ" নামক প্রথম-অধ্যায় সমাধ্য।

দ্বিতীয় অধ্যায়।

শারীর-বিষয়ঃ।

বিনা শর রং রোগশু স্থিতিরেব ন গম্যতে। শারীরস্থান মালয়্য ততঃ কিঞ্চিরিগদ্যতে॥ শারীর বিষয়।

শরীর ব্যতীত ব্যাধির অবস্থিতি নাই অর্থাৎ রোগ জীবের দেছকে আশ্রয় পূর্ব্বক কর্ম প্রদান করে। একারণ শারীর-স্থান অবলম্বন পূর্বক মৎ কর্ত্বক কিয়ৎ বিযর কথিত ছইভেছে।

> সৃষ্টিলক্ষণ-নির্দ্ধিষ্টে ত্রেক্সণো জ্ঞায়তে পরিঃ। সমূলং নোচ্যতে নুনং গ্রন্থগৌরবশঙ্কয়া॥

ংরোগ সমূহের উৎপত্তি ও লক্ষণ নির্দেশক ব্রহ্মার নিকট হইতে ক্রমান্বয়ে অপরাপর মুনিগণ যে আয়ুর্কেদ শাস্ত্র শিক্ষা করেন। এন্থ বিস্তার আশব্দায় সে সকল বিষয় আত্মপুর্কিক বর্ণিত হইল না।

ততঃ কিয়ৎ শরীর-সংখ্যামাহ।
স্থাবরং লক্ষবিংশত্যা জলজো নবলক্ষকঃ।
কৃষিজো রুদ্রলক্ষ্ত পক্ষকো দশলক্ষকঃ॥
পশাদীনাং ত্রিংশলক শততুর্লক্ষ্ত বানরঃ।
ততোহিপি মানুষং প্রাপ্য কুৎসিতাদে) দ্বিলক্ষকঃ॥
শুলাঃ সাহস্রকং প্রাপ্য ব্রাহ্মণান্তদনন্তরম্।
কতিপয় শরীর সংখ্যা কথিত হইতেছে।

স্থাবর শরীর °২০ লক্ষ্য, জ্বলজ্ঞ ৯ লক্ষ্য, ক্রিমিজ্ঞ ১২ লক্ষ্য, পক্ষক (পিক্ষ-সংযুক্ত) ১০ লক্ষ্য, পশ্বাদি ৩০ লক্ষ্য, বানর শরীর ৪ লক্ষ্য, কুৎসিত মান্ত্র্য দেহ ২ লক্ষ্য এবং শুভ্র ব্রাহ্মণাদূর শরীর সহত্র প্রকার জানিবে।

উত্তমে চোভমং প্রাপ্য আত্মানং যো ন ভারয়েৎ। স এব আত্মঘাতী স্থাৎ পুনর্যাস্থতি যাত্রশাম্॥

ষে উৎকৃষ্ট প্রাণী (মহ্যা) শক্টাপর অবছার উৎকৃষ্ট প্রাণীর (স্বজাতির) সাহায্য না লইয়া স্বীয় জীবন রক্ষা করে না, সে আত্মঘাতী রূপ মহাপাপী হয়, এবং জনান্তরে অসহনীয় যন্ত্রণা ভোগ করিয়া থাকে। স্থাবরানিশরীরঃ স্থাত্ত্পেরো যথাসম্ভবঃ।
রোগচিকিৎসামণি গৌরবান্ন প্রপঞ্চিতম্॥
দেশবিশেষেহপি বিষয়ত্বাচ্চ।

ছাবরাদি শরীর যথাসম্ভব উৎপন্ন হয়। রোগের চিকিৎসাও দেশ বিশেষে ভিন্ন ভিন্ন প্রকার হেতু, এম্থ বাহুল্য প্রযুক্ত এম্থলে তৎসমুদ্য় কথিত হইল না। অথ গর্জোৎপ্রভিত্ত।

> কামান্মৈথুনসংযোগাৎ শুক্রশোণিতসম্ভবঃ। গর্ভঃ সংজায়তের্নাধ্যাঃ সংজাতো বা ন উচ্যতে॥ গর্ভোৎপত্তি বিষয়ণ।

কামপ্রযুক্ত সঙ্গমাভিলাষী স্ত্রী ও পুরুষের পরস্পার সংযোগে, পুরুষের শুক্র এবং স্ত্রীর শোণিত ; এই উভয় সন্মিলিত হইয়া নারীদিগের গার্ব উৎপন্ন হয়। কিন্তু কথন কথন উলিখিত সংযোগাদিসত্ত্বেও বিশেষ কারণ বশতঃ গার্বোৎ-পাদনের প্রতিবন্ধকতা ঘটে। এক্ষণে গার্বোৎপাদনাদির বিষয় বর্ণিত হইতেছে।

> নৈবসংযোগাদকরো হবারো ভূতাত্মা সন্ত্রজ-ভুমোভির্দেবাসুরগন্ধর্বপিশা চৈরনৈ বায়ুনা প্রেষা-মানো লঘুতনো গর্ভো য মনু প্রবিশতি, প্রবিষ্টঃ সন্ শুক্রশোণিতাবভিক্ষজ্য স্থিরীভবতি। অতঃ পঞ্চ মহাভূত রসাদ্বহুল মুপগচ্ছতি। পৃথিবী হসতি তেজঃ প্রচরতি বায়ু বিভিজ্যতে আকাশং বর্ষতে।

দৈব সংযোগ বিধায়ক ক্ষরশীল অথচ অক্ষয়, এতাদুশ কোন একটী ভ্তামা; সত্ত্ব, রজঃ ও তমঃ এই গুণত্তারের অহাতম গুণাশ্রায়ী দেবতা, অহ্বর, গম্বর্ক, পিশাচাদি কোন একটী ভ্তযোনি, বায়ু কর্ত্ত্বক গর্প্তে প্রবেশ করত শুক্র ও শোণিতকে সংক্রমণ পূর্বক ছিরভাবে অবছিতি করে। তদমন্তর পৃথিবী, জল, অগ্রি, বায়ু ও আকাশ এই পঞ্চ মহাভ্তের আশ্রয়ীভূত হইলে, ক্রমাইনারে রস (জল) হইতে বহুগুণ গ্রাপ্ত হয়, এবং পৃথিবী হাস্য, ভেজঃ, (অগ্রি) দীপ্তি, বায়ু অঙ্গবিভাগ এবং আকাশ বর্ষণ (ভ্রমিস্তীকরণ) প্রদান করিয়া থাকে।

প্রথমে মাসি কললং দ্বিতীয়েংহিত্বমাপুরাৎ।
তৃতীয়ে মাসে পিগুন্ত চতুর্থেংক্ষবিভাগতা॥
প্রকমে স্থাননঃ সত্যং ৰচ্চে বৃদ্ধিঃ পরা ভবেৎ।
সপ্তমে সর্বসম্পূর্ণো গর্ভো ভবতি নিশ্চলঃ॥
স্থিমে বর্ষসম্পূর্ণা গর্ভা পরস্পর সংযুক্ত হইয়া গর্মের প্রথম মাসে

कलल (श्रक अ भागिक मः रियागि तृष् मार्किक गर्कि भागि रेख) आकांत थात्र में मूर्किक विजीत मारम अधिक थाछ इत्र । क्कीत मारम मारमिथाकिक इहेत्र। क्कीत मारम आक्रमग्रहत विजागका कर्या। शक्षम मारम किर्जिद देखी अ वर्षे मारम तृष्कित श्रभतका क्रिताता, मछम मारम गर्ज मण्णुर्ग इहेता निम्मन जारन व्यव-

রাজগুণৈর্মহাভুতিঃ সুন্মেশ্চ সত্ত্বগৈশ্চতৈঃ।

মাতৃরাহারতো গর্ভঃ ক্রমাৎ কুক্ণে বিবর্দ্ধতে॥

রাজগুণ সম্পন্ন, হক্ষা ও সত্ত্বগত প্রঞ্চ মহাভূত কর্ত্বক মাতার (গর্ভিণীর)
আহার ক্রমে গর্ভবতীর কুক্ষিদেশে গর্ভ উত্তরোত্তর বর্দ্ধিত হইতে থাকে।

আহারাচারচেষ্টাভির্যাদৃশীভিঃ সমন্বিতৌ। স্ত্রীপুংসো সম্প্রযুজ্যেত তয়ে। র্গর্ভোইপি তাদৃশঃ॥

ন্ত্রী ও পুৰুষ যে প্রকার আহার, আচার ও চেফার (কার্যাশীলভার) সমন্ত্রিত হইরা স্থরতপ্রসঙ্গে প্রবৃত্ত হয়, তংকর্ত্বক গর্ভও তাদৃশ স্বভাবসম্পন্ন হইরা থাকে।

> মাতাশিত্রোরশচারাৎ কর্মভিশ্চ পুরাক্ততঃ। বাতাদীনাং প্রকোপেন গর্ভো বৈক্তমাপুরাৎ॥

পিতা মাতার অনাচার, পূর্বজন্মকত অপকর্ম (পাপ) ও বাতাদির প্রকোপ বশতঃ গর্ভ বিকৃত অবস্থা প্রাপ্ত হয়।

> সর্পরন্দিককুম্বাণ্ডা নানাবিত্বতয়শ্চ যে। গর্ভাদ্যান্তে স্থিয়শ্চাপি জ্ঞেয়াঃ পাপত্রতা ভূশম্॥

স্ত্রীদিগের দর্প, রশ্চিক (বিছা) ও কুম্মাণ্ড (কুমুড়া) প্রভৃতির আধকৃত্তি বিশিষ্ট যে দকল গাঁভ উৎপন্ন হয় ; ভাষী অভীব পাপকৃত বলিয়া জানিবে।

> যুগোরু চ দিনেষাদাং ভবেদপেতরং রক্তঃ। সংযোগন্ততি যা গচ্ছেৎ পুমাংদং দা প্রস্থতে॥

জ্বীপ্তিগের যুর্গা (যোড়া) দিনে অম্পাপরিমাণে রক্ষঃ নিঃস্ত হইলে, তৎকালে পুরুষ সহ সংযোগ ঘটিয়া গর্ভ হইলে, তদ্ধারা পুরুষই প্রস্তু হয়।

অমুগ্রেষু দিনেষাসাং ভবেদ্বহুতরং রজঃ। সংযোগান্তত্র যাগচেছ্ৎ সা জ্রী কন্যাং প্রস্থাতে ॥ অযুথা (বিষোড়া) দিবসে নারীগণের বহুতর পরিমাণে রজঃ নির্গত ইউলে, এবং ডৎসময়ে পুৰুষ সহ সম্ভ হইরা গর্ভ উৎপন্ন হইলে, তদ্বারা ক্যা শুক্রাধিকত্বাৎ পুরুষঃ প্রমদা চ রজৌধিকাৎ। শুক্রশোণিতসামাচিচ জারতে বওসংজ্ঞিতঃ॥

ন্ত্রী ও পুৰুষের পরস্পর দঙ্গদে উৎপাদিত শুক্রশোণিতের মধ্যে শুক্রের ভাগ অধিক হইলে গর্ভে পুৰুষ, রজোভাগ অধিক হইলে ন্ত্রী এবং উভয়ের (শুক্র ও রজের) দমতা হইলে যগু (ক্লীব) সমুস্কৃত হয়।

> বীজোহন্তর্বায়ুনা ভিন্নো দ্বৌ বীজো কুক্ষিমাঞ্রিতো। যোনো স্থাতাং দ্বিধা চৈব চতুদ্ধা বহুধাপি বা॥

বীজ (গর্ডোৎপান্য বস্তু) নারীনিগের গর্ভাশরে, আভান্তরিক বায়ু দারা পৃথক্ষৃত হইয়া, কুন্দিনেশকে আশ্রয়পূর্বক হুই, তিন, চারি অথবা বন্ত অংশে বিভক্ত হইয়া যোনিমার্গে অবস্থান করে। এই কারণ প্রযুক্তই এককালে যুমজু বা তদ্ধিক সন্তান প্রস্থৃত হইয়া থাকে।

চতুর্থেষ্টিপ ততঃ স্নাতা শুক্রমান্যা যা বা শুচিঃ। ইচ্ছম্ভীভর্কুদদৃশং পুল্রং পশ্যেৎ পুরঃপতিম্॥

রজন্মলা নারীগণ প্রথম রজোনির্গদনের চতুর্থ দিবদে লানকরতঃ শুদ্ধ-ভাবে সমুখে পভিকে দর্শনপূর্বক তৎ (স্বামী) সদৃশ পুত্র প্রাপ্তির নিমিত্ত স্বামীর নিকটে গর্ভার্থে শুক্র (বীজ) কামনা করিবেক।

> পূর্বাং পশ্যেদ্ ঋতুস্নাত। যাদৃশং নরমঙ্গনা। তাদৃশং জনয়েৎ পুত্রং ভর্তার দর্শয়েততঃ॥

অন্ধনাগণ ঋতুদিবদে স্থানপূর্ত্তক তৎকালে যে ব্যক্তিকে দর্শন করে, দেই ব্যক্তির আকৃতিবিশিষ্ট পুত্রই প্রদান করিয়া থাকে অতএব স্থানান্তে প্রথমেই পাতিকে দর্শন করিবে। নচেৎ কিছুতেই পতি সমৃশ সন্তান জন্মে না। অর্থাৎ দেই সময়ে পতিকে দর্শন ব্যতীত তৎ (স্বামী) সদৃশ সন্তান উৎপন্ন হয় না।

> আহারমাপ্নোতি যদা ন গর্ভং শোবং সমাপ্নোতি পরিদ্রবয়া। দা জ্রী প্রস্থতে স্থচিরেণ গর্ভং পুষ্টা যদা বর্ষগুণৈরপি স্থাৎ॥

এতাদৃশি ভবেচ্চৈব শরীরে রোগসম্ভবঃ। জায়তে ন প্রকোপৈস্ত ককপিভানিলৈর্বিনা॥

বে সময়ে যে নারীর গর্ভ (গর্জছনীব) যথোচিত আহার প্রাপ্ত না হয়, তৎকালে সেই গর্জ শুহতা অথবা পরিদ্রবতা (অপুষ্টতা) প্রাপ্ত হইরা থাকে এবং সেই স্ত্রী অনেক কাল বিলয়ে অর্থাৎ গর্জপুষ্ট হইতে বর্ষাধিক সমগ্র কার্মীলেও, তৎকালে গর্জ (সন্তান) প্রসব করে। জ্রীদিগের বায়ু পিত বা

বিভীয়-প্ৰযায় ৷

তথাচাহ ৷

নান্তি রোগো বিনা লোবৈর্যসাতস্মানিচকণঃ। অনুক্তমণি নোষাণাং লিকৈর্ব্যাধি মুপাচরেৎ।

বায়, পিত বা কফ এই ডিন দোষের একটিকৈ অবলম্বন না করিয়া ব্যাধি কিছুতেই উৎপন্ন হইতে পারে না। একারণ বিচক্ষণ ব্যক্তিগণ রোগজ্ঞাপক নিদানে কোন দোষের উল্লেখ না থাকিলেও লক্ষণ ঘারা ভাষা জ্ঞাড হইয়া ব্যাধি নিবারণার্থে চিকিৎসায় প্রব্রত্ত হইবেন।

কফপিত্তানিলাঃ পূর্ব্বমধ্যান্তেয়ু ব্যবস্থিতাঃ। দেহাহোরোত্তিবয়সাং সন্ধিষপি কফানিলো॥

মানবগণের দেহ ও বয়ংক্রম এবং দিবা ও রাত্তির পূর্বভাগে কক্ষ, মধ্যভাগে পিত্ত, অত্তে বায়ু এবং উহাদের দক্ষিত্বলে কক্ষ ও অনিল হুইটীই অধিক পরিমাণে অবস্থিত থাকে।

বঁরোহপি ত্রিবিধং জ্ঞেরং বাল মধ্যম রদ্ধতঃ।
আশোড়্যান্তবেদ্বালো যাবৎ ক্ষীরান্য বর্ত্তকঃ॥
মধ্যমঃ সপ্ততিং যাবৎ পরতো রদ্ধ উচ্যতে।
বালে বিবর্দ্ধতে শ্লেক্সামধ্যাকে পিত্তমেব চ।
ভূরিপ্রো বর্দ্ধতে বায়ুর দ্ধি সংবীক্ষ্য যোজয়েৎ॥

মন্ত্রাগণের বরঃক্রম তিন প্রকার। বাল্য, মধ্যম (যৌবন)ও বার্দ্ধক্য (জরা)। তথাধ্যে ১৬ যোড়ল বর্ষ পর্যন্ত বাল্য, ৭০ সপ্ততি বৎসর পৃষ্যন্ত যৌবন (মধ্যম) এবং তৎপরবর্তী বরসকে বার্দ্ধক্য বলা যার। মানবগণের এই বাল্যকালেই শ্লেখ্যা, মধ্যমকালে পিত্ত এবং বার্দ্ধক্যে বায়ু বর্দ্ধনশীল থাকে। স্থবিজ্ঞ চিকিৎসক্যণ এই সমস্ত বিশিষ্টপ্রকারে পর্য্যালোচনা পূর্বক রোগীর চিকিৎসার্থে ঔষধাদি প্রয়োগ করিবেন।

অত্র দোষস্য কারণমাহ।
থারু মধুর রসাতিস্মিপ্ত দুগ্দেক্ষু ভক্ষদ্রেকাধি দিননিদ্রো পুগ সর্পিঃ প্রপরেঃ।
ভূহিন-পতন-কালে শ্লেম্বাণঃ সংপ্রকোপঃ
প্রভবতি দিবসাদে ভুক্তমাত্রে বসন্তে।
অনন্তর দোষসমূহের কারণ বলা ধাইডেছে।

গুকজব্য, মধুর জব্য, রসাল জব্য, অতিমিশ্ববস্তু, মৃশ্ধ ও ইমুভক্ষণ, জবজব্য ও দমি দেবদ, দিবানিজা, পৃগ (স্থপারী) ও সর্পি: (মৃড) ভোজন করিলে এবং শিশির-পতন সময়ে, দিবদের পূর্বভাগে (প্রাত্তঃকালে), ভোজনাত্ত সময়ে ও বসন্তকালে মেলার প্রকোপ হয়। 01

কটুমোফ বিদাহি তীক্ষলবণ ক্রোধোপবাসাতপ্র ন্ত্রীসম্পর্কতিলাতসীদধিস্থরাশুক্তারনালাদিভিঃ ৷ ভুক্তে জীর্যান্ড ভোজনে চ শরদিঞীয়ে সতি প্রাণিনাং-মধণক্ষে চ তথার্দ্ধরান্ত্রসময়ে পিতপ্রকোপং ত্রজেৎ ॥

কটু (ঝাল) দ্রব্য, অন্ন (টক্) দ্রব্য, উষ্ণ (গরম) দ্রব্য, বিদাহিদ্রব্য, ভীক্ষদ্রব্য ও লবণরসমুক্ত বস্তু ভক্ষণ, ক্রোধ, উপধাস, আতপ (রৌদ্র) সেবন, জ্রীদস্তোগ, ভিল ও অভসী (মিদিনা), দধি, হুরা (মদ)ও আরনাল (কাঁজি) দেবনে, ভোজনকালে, ভ্কবস্তু পরিপাক সময়ে, শর্ব ও গ্রীদ্ম-কালে, মধ্যাহ্ন ও অর্জ্রাত্র সময়ে পিত্তের প্রকোপ হর।

ব্যায়ামানপতর্পনাৎ প্রপতনা দুঙ্গাৎ ক্ষয়াজ্জাগরাৎ-বেগানাঞ্চ বিধার গান তিশু চঃ লৈত্যানতিত্রাসতঃ। রুক্ষ ক্ষোভ ক্যায়তিক্ত কটুকৈরেভিঃ প্রকোপং ব্রঙ্গে-দ্বায়ুর্বারিধরাগমে পরিণতে চাচ্ছে পরাক্ষেহপি চ॥ ব্যায়াম, অপতর্পণ (অভোজন বা মানসিক হুঃখ) উচ্চন্থান হইতে পতন, অস্বাদিভন্ধ, ধাতুক্ষয়, জাগরণ, মল মুত্রাদির বেগধারণ, অভ্যন্ত শোক, শীত, অভিত্রাস, ক্ষোভপ্রযুক্ত, রক্ষত্রব্য, ক্যায়দ্রব্য, কটুবস্থ সেবন করিলে, মেঘোনয়কালে, দিবসের শেষভাগে (প্রদোষকালে) এবং রাত্রির অন্তভাগে (শেষরাত্রিতে) বায়ুর প্রকোপ হইয়া থাকে।

তত্ত্র রোগাঃ।

জ্বাতিসারো এহণী চার্শেইজীণ বিস্চিকা।
সালসক বিলয়ী চ ক্ষমিকক্ পাণ্ডুকামলা॥
হলীমকং বক্তপিন্তং রাজযক্ষা উরঃক্ষতঃ।
কাসো হিক্কা সহখাসৈঃ স্বরভেলস্বরোচকঃ॥
ছিদিস্থকা চ মূর্চ্ছা চ রোগাঃ পানাত্যয়াদয়ঃ।
দাহাখ্যস্ত২পরোমালোহপন্মার শ্চানিলাময়ঃ॥
বাতরক্তমুক্তস্ত আমবাতোহপশূলকক্।
পৈতিকং শূলমানাহ মূলাবর্তো হি গুলাকক্॥
স্বদেশো মূত্রকুচ্ছ ক মূত্রাঘাতস্তথাশারী।
প্রমেহ মধুমেহাশ্চ পীড়কা চ প্রমেহজা॥
মেলোলোবোলয়ং শোথো রিজিন্ট গলগণ্ডকঃ।
গণ্ডমালাপটী এন্থিরব্রুলঃ শ্লীপদস্তথা॥
বিক্রিধি ত্রণশোধো চ ব্রী ত্রণো ভয়নাড়িকে।

ভগদরোপনংশে চ শৃকদোষস্থগামরঃ॥
শীতপিভমুদর্দ্ধাঞ্চ কোচকৈবামপিতকঃ।
বিসর্পশ্চ সবিস্ফোটঃ সরোমান্তী মস্থরিকা॥
স্কুদাস্য কর্ণ নাসান্ধি শিরঃ স্ত্রী বালকামরঃ।
বিষক্তেতি রসায়ণো বাজীকরণ মেব চ ।
প্রয়োগচিন্তামণো হি মৎকৃতেহিনিন্ নবগ্রন্থে।
ভ্যাতবাশ্চায়মুদ্দেশো ক্রিনিশ্চরসংগ্রন্থে॥
রোগসমূহের সংখ্যা।

জুর, অভীদার, গ্রহণী, অর্ণং, অজীণ বিস্তৃতিকা (ওলাউঠা). অলসক, বিল্যিকা, কিমিরোগ, পাণ্ডু, কামলা, হলীমক, রক্তপিত্ত, রাজ্যক্ষা, উরংক্ষত, কাম, হিকা, খাদ, বরভেদ, অরোচক, ছর্দ্দি, তৃষ্ণা, মৃদ্র্ছা, পানাত্যয়, দাহ, উন্মাদ, অপস্মার, বায়ু, বাতরক্ত, উক্তন্তম, আমবাত, শূল, পিতৃশূল, আনাহ, উদাবর্ত্ত, গুলা, হলোগ, মৃত্রুক্তু, মৃত্রাঘাত, অশারী, প্রমেছ, মধু-মেহ, প্রমেছজনিতপীড়কা, মেনোরোগ, উদর, শোথ রন্ধি, রণশোথ, দ্বিত্রণ, অপচী, গ্রন্থ, অর্কুদ, (আল্) লীপদ (গোদ), বিদ্রন্ধি, রণশোথ, দ্বিত্রণ, ভ্রা, নাড়ীব্রণ, সদ্যোত্রণ, ভগদর, উপদংশ, শূকদোয়, শীতপিত্ত, উদার্দ্ধ্য, কুঠ, অল্পিত, বিদ্রপ্তি, বিশ্লোট, রোমান্ত্রী (হাম্), মস্থরিকা (বসত্রোগ), কুদরোগ, মুখরোগ, কর্ণরোগ, নাদারোগ, চক্ত্রোগ, জ্রীরোগ, বালরোগ ও বিষরোগ, রুই সকল ব্যাধির নিবারক ঔষধ এবং রদায়ন ও বাজীকরণ ঔষধ সমূহ এই রিধিনিশ্য গ্রন্থে সম্মিবিউ হইবেক।

অথ জরৎপিত্তনিদানম্।
বাতেন দূষিতং পিতং পিতক্তদ্ধং ককাশ্রিতে।
রস্তৃষ্টমিতি জ্ঞেরং জরংপিত্তমুদাহতম্॥
অনন্তর জরৎপিত্তনিদান বলা যাইতেছে।
বায়ুদারা দূষিত গিত, পিত কর্তৃক কর হইয়া কফাশ্রিত হইলে বদ দুষ্ট
হয়, ইহাকেই জর্থুপিত বলিয়া জানিবে।

অথ সোমরোগনিদানম্।

প্রসঙ্গর্থনশোকৈশ্চ-গরদোষাভিচারতঃ।
আপঃ দর্বনরীরস্থা মূত্রস্রোতঃ প্রপদ্য বৈ ॥
নির্গন্ধোনীরুজঃ স্বচ্ছ দিতবারিনিভাঃ দিতাঃ।
অবস্তি চাতিমাত্রস্ত ন শক্রোতি সুস্তর্বলা॥
বেগং ধাররিত্থ তত্র ন বিন্দৃতি মুখং ক্রচিৎ।

লৈথিল্যং শিরসকৈব মুখতালুবিশোধনম্ ॥ প্রলাপো মূর্চ্ছ। জ্ঞা চ ত্বক্ চ রুক্ষমবাপ্রতা। রোগঃ দোম ইতি স্ত্রীণাং নিত্যং নিশ্চেত ডৎক্ষণাৎ ॥

ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য দেন কবিভূষণ বিরচিতে "রোগ পরীকা বিবরণং" নাম প্রয়োগচিন্তামণো

দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

(गामदता ग निषान।

অত্যন্ত পুরুষ সংসর্গ, শোক, পরিশ্রম, বিযদোষ এবং অভিচার; এই সকল কারণে স্ত্রাদিগের সর্কাশরীরগভ জলীয় ধাতু মুক্তমার্গ দ্বারা নির্গন্ধ, বেদনাহীন, স্বন্ধ, নির্মালবারিসদৃশ অথচ শীতল ও শ্বেতবর্ণরূপে অধিক পরিমাণে আব হয়; রোগিনী অসহনশীলা এবং বলহীনা হয়; বেগধারণ করিতে সমর্ধা হয় না; মন্তবের শিথিলতা, মুখ ও তালুর শুষ্কতা, প্রলাপ, মুক্তা, জৃস্তা (হাই) এবং চর্মা অত্যন্ত রক্ষ হইলে সোমরোগ বলিয়া জানিবে। স্ত্রীদিগের "সোম" নামক ধাতু নির্গত হয় বলিয়া গোমরোগ বলে।

ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য সেন কবিভূষণ বিরচিত "প্রয়োগ চন্তামণি" এম্থে "রোগ পরীক্ষা বিবরণ" নামক দিডীয়-অধ্যায় সমাপ্ত।

তৃতীয়-অধ্যায়ঃ।

ততশ্চিকিৎশা যথা।-

আহুরী মানুষী দৈবী চিকিৎদা ত্রিবিধা মতা। শক্তিঃ ক্যায়ৈ হোমাদৈয়ে ক্রমেণান্ত্যাস্থপ্জিতা॥

অনন্তর রোগ সমূহের চিকিৎসা বলা যাইভেছে।

চিকিৎসা ভিনপ্রকার। যথা;—আন্থরী, মান্থী এবং দৈবী। শস্ত্রাদি (অস্ত্রাদি) দ্বারা চিকিৎসাকে আন্থরী, ক্যায়াদি প্রারোগ্যারা চিকিৎসাকে মান্থ্যী এবং জ্বপ, ছোমাদি দ্বারা চিকিৎসাকে দৈবী চিকিৎসা বলে। এই চিকিৎসাত্রয় উত্তরোত্তর প্রপৃজ্ঞা অর্থাৎ আন্থরী চিকিৎসা হ**ইতে মান্থ্যী** চিকিৎসা উৎকৃষ্টা এবং মান্থ্যী চিকিৎসা হুইতে দৈবী চিকিৎসা উৎকৃষ্টা।

> দেশবিশেষে ভিষজামস্ত্রচিকিৎসাহতোহত্ত মোচ্যতে। পাচনাদিং ম্বতং ক্ষীরং তৈলং চূর্ণং বটীন্তথা॥

ভিষশ গণদেশবিশেষে অন্তর চিকিৎসারও প্রয়োগ করিয়া থাকেন। কিন্তু এই প্রস্থেতাহার (অন্তর চিকিৎসার) উল্লেখ করা হইল না। ইহাতে পাচ-নাদি, ছত, ফীর (হৃদ্ধ), তৈল, চূর্ণ ও বটী প্রভৃতি দ্বারা চিকিৎসার বিষয় কথিত হইল।

কালাকালং সমাগম্য চিকিৎসৈত যথাক্রম্।
আদিশব্দাদ্যথাযোগং রুজিধারণৌষধমন্ত্রোপলেপাদি॥
• চিকিৎসা কার্য্যে প্রন্ত হইয়া কালাকাল বিবেচনা পূর্বক যথাক্রমে পাচনাদি ঔষধ প্রয়োগু করিবেন। "পাচনাদি" এই শব্দে আদি শন্ধ বলায়, রোগা;
হুসারে প্রবেণীষধ (যে ঔষধ অন্ধ বিশেষে ধারণ করিলে রোগ আরোগ্যে
হয়), মন্ত্র এবং প্রলেপাদিও ব্যবহার করা যাইতে পারে।

জর চিকিৎসা।

কালাকাল-স্থাগ্যন-বিশেষেণ নবস্তুরেতি বক্তব্যমৃ। যথাক্রমশব্দন পাচনত্বতাদি রপ্য ২ধিকারোক্তা-ভুক্তেন চিন্তাঃ॥ নবজরে কালাকাল সমাগমন (প্রকৃতি) বিশেষ দারা উহার ভিকিৎদা প্রাণালী কথিত হইল। এবং যথাক্রম শব্দ দ্বারা ইহাও বুঝিতে হইবে যে, নব-জ্বরে অধিকারামুলারে উক্ত অথবা অম্বক্ত পাচন, মৃতাদিও ব্যবহার্য।

> নবন্ধরে নিবাস্থর আনাভ্যঙ্গার মৈথুনম্। ক্রোধপ্রবাতব্যায়ামকবায়াংশ্চ বিবর্জন্তরং ॥ নিদান পরিভাগ।

নবজ্জরে দিবানিদ্রা, স্থান, অঞ্জে (অঙ্গে তৈলাদি মর্দ্দন) গুরু আহার, (নৰজ্বরে গুড় আহাবের নিষেধ, কি**ন্তু** লযু আহাবের বিধান আছে। একারণ .এম্বলে ইহাই বুনিয়া লইতে হইনে।) মৈপুন (স্ত্রীমস্তোগ), ক্রোধ, প্রবাত (প্রথলবারু কিমা পূর্বদিকের বারু দেবন) ব্যায়াম (পরিশ্রম) এবং ক্যায় বস্তু দেবন (তরুণজ্বে ক্যায় রদ হুক্ত দ্রব্য প্রয়োগ করিলে, উহা পরিপাক না হইরা রোগীর মলরোধ এবং বায়, পিত ও ফফের অবরোধ জন্মাইয়া বিষমজ্জর উৎপাদন করে, এই কারণে ক্যায় দ্রব্য দেবন নিষেধ্ব) পরিভাগা করা উচিত। (এম্বলে দিবানিদ্রাদি যে কয়েকটী পরিত্যজ্ঞা বলিয়া কথিত হুইল, কেবল ভাহাই যে জ্বরের কারণ (নিদান) এমত নহে, অর্থাৎ উহাদের সমানধর্মীও জরের কারণ বলিরা জানিবে। নবজরে দিবানিক্রাদি পরিত্যাগ ক্রিতে বলিবার কারণ এই যে, যে সকল আছার ব্যবছারাদি রোগের নিগান (কারণ), সে সকল পরিহার না করিলে রোগ কিছুতেই উপশ্যমিত হয় না। বে হেত এববিধ আহার বিহারানি দারা দোষের (বায়ু পিতাদির) বল রদ্ধি প্রাইয়া আরোগ্য নহক্ষে প্রতিবন্ধকতা ঘটে, একারণ এমতন্থলে চিকিৎসক কোনও প্রকার ঔষধ প্রয়োগ দার। আশাসূত্রপ ফললাভ করিতে সক্ষম হন না। অতএব আহার বিহারাদি রূপ যে কোন প্রকার নিদানই হউক না, প্রথমতঃ তৎসমুদায় পরিত্যাগ করিবে। এমন কি অনেক সময়ে কেবল মাত্র নিদান প্রবিত্যান করিয়াই রোগ হইতে নিষ্কৃত হওয়া যায়। এই নিমিত্ত প্রাচীন পানতাণ নিদান পারত্যাগকেও একপ্রকার চিকিৎদা বলিয়া উদ্দেখ করি-রাছেন। এবং চিকিৎনার অভিজ্ঞ পণ্ডিত্যান, সকল প্রকার চিকিৎসার প্রথমে নিদান পরিত্যাগ রূপ তিকিৎদার উপদেশ দিয়াছেন ৮ এই কারণে নবজরে দিবানিস্রাদি পরিভাজা।

জ্বরে লজ্বনমেবাদা বুপদিষ্ট মতে জ্বরাৎ।
ক্ষানিলভয়ক্রোধকাম শোক শ্রমোদ্ভবাৎ॥
উপবাস-বিধি।

কর (ধাতু ক্ষয় অথবা যক্ষমা রোগ), নিরাম বায়ু (বায়ু ছইপ্রকার—সাম বায়ু ও নিরামবায়ু। সহ+আম-সাম; আম শন্তের অর্থ অপক্রস, অভএব নামবায়ু শক্ষে অপক্রসসংযুক্ত বায়ু। যে বায়ুর সহিত আম অর্থাৎ অপক্রস নাই, ভাষ্ট্রেক নিরাম বায়ু বলে), ভয়, কোধ, এবং পরিশ্রম ; এই সমুদ্র কারণ গ্রাতীত অক্স কোন কারণে জ্বর হইলে, প্রথমতঃ উপানাস করাই উচিত।
উপান্দ শব্দে যে সাধারণতঃ অনাহার অর্থ বুরায়, এখানে তাহা নহে।
কারণ নিদান পরিবর্জন বিধিতে শুকু আহারের নিষেধ এবং লঘু আহারের
যে বিধান আছে; এছলে উপানাস বা লঙ্জন অর্থে সেই লঘু আহার বুনিতে
হইবে। মণ্ড, পেয়াদি এবং তৎসদৃশ সাশু, এরাকট প্রভৃতি লঘু আহারের
মধ্যে গণনীয় ৯

আমাশয়ত্থে হত্বাবিং দামো মার্গান্ পিধাপয়ন্। বিদ্যাতি করং নোবস্তমাল্লজ্ঞ্যন মাচরেৎ॥

সাম দোষ (অপক্রসসংযুক্ত বিক্বতিপ্রাপ্ত, বায়ু, পিত্ত ও শ্লেদ্মা)
ত্থামাশরে অবস্থান পূর্বক প্রথমতঃ অগ্নিমান্দ্য জন্মায়, তৎপরে ঘর্দ্মবাহী
ও রসবাহী স্লোভঃ সমূহকে আচ্ছাদন করিয়া জ্বর উৎপাদন করে। এই কারণেই জ্বের প্রথম অবস্থায় উপবাদ বা লঙ্কন দিবার বিধান হইয়াছে।

প্রাণাবিরোধিনা চৈনং লজ্জনে নোপপাদয়েৎ। বলাধিষ্ঠানমারোগ্যং যদর্থো২য়ং ক্রিয়াক্রমঃ॥

উপ বাস এতদূর উপকারী ছইলেও, যাহাতে রোগীর শরীর হুর্বল ছইরা না পড়ে, এমন ভাবে উপবাস দেওয়া কর্ত্তব্য। কারণ যে আরোগ্যের নিমিত্ত চিকিৎসার নিয়ম, বলই তাহার প্রধান আগ্রায়; অর্থাৎ বল ব্যতীত আরোগ্য লাভের সম্ভাবনা অতি কম।

তন্ত্র মারত ক্ষৃত্ফামুখশোব ভ্রমাশ্বিতে।
কার্যাং ন বালে হদ্ধে বা ন গর্ভিণ্যাং ন ত্র্বলে॥
বায়ু প্রধান, ক্ষার্ত, ড্ঞার্ত, মুখশোবযুক্ত ও ভ্রমদংযুক্ত এবং বালক, রদ্ধ,
গর্তিনী ও হর্বল ব্যক্তিকে উপবাদ দিবে না।

বাতমূক্রপুরীষাণাং বিসর্গে গাক্রলান্বে।
স্থান্যোদগারকণ্ঠান্য শুদ্ধে তন্ত্রা ক্লমে গতে॥
স্থানে জাতে ক্লগে চাপি কুৎপিপাসাসহোদয়ে।
কৃতং সজ্জনমাদেশ্যং নির্ব্যথে চাল্টরাজ্মনি॥

সমাক্প্রকারে (আবশ্যকান্থারী) উপবাদ করান হইলে, রৈ গীর মল,
মৃত্র ও বার্র নিং দরণ, শরীরের লযুতা, হুলরের ভার দ্র, বিশুদ্ধ উদ্ধার,
ঘর্মা, আহারে ক্রচি, কণ্ঠ ও মুত্রের পরিষ্কারতা, তন্ত্রা ও ক্লান্তির নাশ, অসহ
ইথা ও পিপাদার উদর এবং অন্তঃকরণের প্রসন্ধতা হয়। এই সমুদ্র লক্ষণ
প্রকাশ পাইলে আর উপবাদ দেওয়া উচিত নহে; যে হেতু এই সকল
লক্ষণ প্রকাশের পরেও লঙ্কন দিলে, অতিরিক্ত উপবাদের লক্ষণ সকল
ক্ষমশং প্রকাশিত হইতে থাকে।

পর্বভেদোং ক্লম্প্রিন কাসঃ শোষো মুখত চ।
ক্লিনাশো কচিত্তা দৌর্বলাং শোত্তবেরাঃ॥
মনসঃ সম্রমোহভীক্ল মুর্দ্ধবাত ভ্রমো হদি।
দেহাগ্রিবলহানিশ্চ লজ্মনেইতিক্লতে ভ্রেথ॥

অতিরিক্ত উববাস করান হইলে, রোগীর পর্বভেদ (মৃদ্ধিছলে ডলবং বেদনার অহাত্তর), অঙ্গবেদনা, কাস, মুখপোষ, ক্ষ্পার নাশ (ক্ষ্পার অভাব), পিপাসা, দর্শন ও প্রবণ ইন্দ্রিয়ের দৌর্বলা, চিত্তচাঞ্চলা, অভাব্ত উর্দ্ধবাত (হিন্ধা, খাস, কর্নে ভৌ ভৌ শব্দ প্রভৃতি বায়ুপ্রধান লক্ষণ সমূহ) মোহ এবং শরীর ও জঠরাগ্লির ত্বর্বলতা উপস্থিত হয়। পর্বভেদ প্রভৃতি অভিনিক্ত লক্ষণ গুলি অভিশয় ভ্যাবহ, কারণ উহার দারা প্রাণনাশের বিশেষ সম্ভাবনা। এহেতু ঐ লক্ষণ সকল প্রকাশ পাইবা মাত্রেই চিকিৎসা করা কর্ত্তবা অর্থাৎ উহার প্রভীকারার্থে বলকারক ঔবধ এবং যথোপযুক্ত আহার প্রদান পূর্বক শরীরের ক্ষতিপূরণ করা উচিত এবং হিন্ধা খাসাদিয় প্রতিকৃলে ইবধ প্রয়োগও আবশ্রক। অতিরিক্ত উপবাস দ্বারা শ্লেম্মার ক্ষয় এবং বায়ুর আধিক্য প্রযুক্ত এছলে উদ্ধ্বাতশন্দে উদ্ধার বিশেষ না বুঝাইয়া হিন্ধা, খাস, কর্নে অব্যক্তশ্বনি ও জ্ব্পা (হাই) প্রভৃতিই বোধ করাইতেছে।

সদ্যোভুক্তশ্ব বা জাতে স্বরে সন্তর্পণোথিতে। বমনং বমনার্হশ্ব শন্তমিত্যাহ বাভটঃ॥

दमन-दिश्चि।

বাভট বলেন—যদি আহারের অব্যবহিত পরেই জুর, অথবা সন্তর্পণ দ্বারা (রসাদি ধাতুর রদ্ধি কারক ক্রিয়া দ্বারা) জুর উপস্থিত হয়, তবে রোগীকে যত্ন দহকারে বমন করাইবে। কিন্তু সর্বত্ত রোগী বমনের যোগ্য কি না ভাহা দেখিবে। অর্থাৎ তিমিররোগ, গুলা, পাণ্ডু, উদর ও স্থুল রোগাক্রান্ত; ক্ষতক্ষীণ ও কুশব্যক্তি; অর্থ্য; প্রমেহ ও আক্ষেপক বায়ুরোগগুন্ত এবং ভঙ্কণ গর্ভিণী প্রভৃতিকে বমনের অযোগ্য বলিয়া জানিবে।

> কক প্রধানানুৎক্লিফীন্ নোষানামাশয়হিতান্। বুদ্ধা স্কুরকরানু কালে বম্যানাং বমনৈ র্হরেৎ॥

বদি রোগীর আমাশরস্থদোবে লেখার বাছলা দর্শিত হয়, এবং বিবমিষা (বমনেছ।) থাকার আপনা হইতেই নির্গত হইবে বলিয়া অন্ত্র্ভ হয় ঃ তবে নবজরী কি জীর্গজরী বমনের যোগ্য সকল ব্যক্তিকেই যথা সময়ে বমন-কারক ঔষধ প্রয়োগ করিয়া জরের কারণ ভ্ত ঐ সকল দোষের বাহির করান করেবা।

সমূপস্থিতদোষাণাং ব্যনং তরুণেশ্বরে। স্বলোগং শাস্মানাহং নোহক কুরুতে ভূশম্য পূর্ব্বোদ্ধিত লক্ষণ সকল না ঘটিলে, নবজরীকে বঁড়পূর্ব্বক বমন করা-ইলে, প্রবল ছাজোগ, খাস, আনাহ (মলমূত্রের রোধজনিত উদরে অসহ বেদনা) এবং মোহ উপস্থিত হইতে পারে।

> তৃষ্যতে সলিলং চোক্ষং দদ্যাদ্বাতকফক্করে। মদ্যোখৈ পৈভিকে চাপ শীতলং তিক্তকং স্মৃতমূ॥

জল-প্রদান-বিধি।

বাতজ্ঞরে, কফ জরে এবং বাত-শ্লেম্মজ্বরে উফজ্ঞল, এবং পিতজ্বরে ও মদ্যপান জনিত রক্ষজ্বরে তিক্ত দ্রব্যের সহিত পাক করা জল পান করিতে দিবে। বাতপিত্ত জ্বরে, পিত্তশ্লেম্মজ্বরে এবং দিদোযজজ্বরে কি প্রকার জল পান করিতে হইবে, মূলে তাহার কোন প্রকার ব্যবস্থা না থাকিলেও পিত্ত-শ্লেম্মজ্বরে ও ত্রিদোযজজ্বরে উফ জল এবং বাতপিত্তজ্বরে তিক্ত বস্তুর সহিত সদ্ধ করা জল শীতল করিয়া পান করিতে দিবে। এ স্থলে ইহাও অবগত থাকা উচিৎ যে, জ্বরোগীর তৃষ্ণা উপস্থিত হইলে, জলপান করিতে দেওয়া সাতিশ্র কর্ত্তব্য; কিন্তু কর্ত্তব্য বলিয়া অধিক পরিমাণে দিবে না। রোগী যত সম্থ করিয়া থাকিতে পারে, ততই ভাল। কিন্তু একেবারে জলেকর করাও অত্যন্ত দোষ জনক। কারণ, আহার না করিয়া কিছুকাল জীবিত থাকা যায়, কিন্তু জলাভাবে অত্যম্পকালের নিমিত্তও জীবন ধারণ করা অভীব স্থক্তিন। পিপাদার সময়ে জল না পাইলে নানাপ্রকার যন্ত্রণা, পরে মোহ পর্যান্ত উপস্থিত হয়, এবং দেই মোহই চিরমোহে পর্যাব্যিত হইয়া থাকে। অর্থাৎ প্রাণ বিন্তী করে।

कंकन উষ্ণ করিবার নিয়ম—উষ্ণ জল প্রস্তুত করিতে হইলে, যে পরিমাণ জল সিদ্ধ করিতে আরম্ভ করিবে, তাহার অর্জাবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ব্যব-হার করিবে। দিবসের সিদ্ধ জল রাত্তিতে এবং রাত্রির সিদ্ধ করা জল পর- ৺ দিবসে ব্যবহার করিবে না।

> দীপনং পাচনকৈব জ্বন্ন মুভয়ক তৎ। শ্রোতসাং-শোধনং বলাং রুচিন্দেলপ্রদং শিব্যু॥

্রাক্ত উভয়বিধ জল অগ্নিবর্জক, আম (অপক্ষ) রদের পরিপাচক, ১৯ বিনাশক, প্রজ্ঞাব (মূত্র নিঃব্লবণ) ও ঘর্মাদি দারা জ্যোতঃ সমুহের পরি-ছারক এবং ক্ষৃতি ও ঘর্মা-জনক।

ষড়ঙ্গপানীয়ম্।

মুক্ত পশ্প টকোশীর চন্দলোদীচানাগরৈঃ। শুতনীতং জলং দদাৎ পিপাসাস্থরশান্তরে।

🐩 ্র ষড়ঙ্গ-পানীয়।—

(মুস্ত — মুখা। পর্পটক — ক্ষেত্পাপ্ডা। উণীর—বেণার মূল। চন্দ্র — ব্রক্তচন্দ্র, । উলীচ্য-বালা (পাথরকুচি)। নাগর—শুঠী।

শুমুথা, কেতৃপাপ্ডা, বেণারমূল, রক্তান্দন, বালা এবং শুঠ এই ছয়্টী এবা দমুদায়ে ২ ছই তোলা পরিমানে এহণ পূর্বক কুটিত করতঃ এ চারিসের জলে দিদ্ধ করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে জল শুক্ত হইয়া /২ ছইদের মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইবে। তংপরে শীতল হইলে পান করিতে দিবে। ৬ ছয়্টী বস্তু দারা এই জল প্রস্তুত হয় বলিয়া, ইহাকে যড়ঙ্গ-জল বা হড়ঙ্গ-পানীয় বলে। এই যড়ঙ্গ-পানীয় পিপামা ও জ্ব, উভয়েরই শান্তি করিয়া থাকে।

মুখ্য-ভেষজ-দম্বন্ধে নিধিদ্ধ শুরুণে জ্বরে। তোয়পেয়াদি সংস্কারে নির্দ্ধোহ**ে তেন** ভেষজম্॥

পরে কথিত হইবে যে, তরুণ জ্বরে সপ্তাহ মধ্যে উযুধ প্ররোগ নিষেধ, অথচ এইলে জলের সহিত মুখা প্রভৃতি ঔষধ যোগ করিয়া জরের মূতনা-बञ्चात्र मश्चाह मध्याहे वाबका कता हहेल। পরস্ত কিঞ্চিৎ পরেও মণ্ড, পেয়াদি मহযোগে পিপুল, শুঠ প্রভৃতি ঔষধ প্রয়োগের ও ব্যবস্থা করা মাইবেক। অতএব যাহার নিষেধ, তাহারই বিগান, এই পরস্পার বিপরীত নিয়ম কেমন कतिज्ञा मञ्जल इंटेरल्डिं। अहे निर्दार्थित मीमाश्मात खन्न और कथा वला ষাইতে পারে যে, সূতনজরে যে সগু। হ মধ্যে ঔষধ প্রয়োগের নিষেধ আছে, তोश मुश्रा उयथ मयत्त्र क्यानितः , मकल श्रकात उयथ मयत्त्र नहर । व्यर्थाद গৌণ (অপ্রধান) ঔবধ বাবহৃত হইতে পারে। সুতরাং জল বা মগুদি সংস্থারের (শোধনের) নিমিত্ত জল বা মতের সহিত যে সমস্ত ঔষধ প্রয়োগ করা যায়, সে সকল অপ্রধান বলিয়া উহাদের নিষেধ ছইতে পারে না। বি সকল উষধ জল বা মণ্ডাদি শোধনার্থ প্রযুক্ত না ছইয়া স্বতস্ত্ররূপে দেবনার্থে नारहा इस, जाहा मिगरक मूथा अयथ नला यात्र। उपनीम ना नालुकारखन जिल्लार्थ श्रामा कदा हा ना विलिया, उहा मुशा अयथमार्था मेना नहा आदि य नमख डेयश कल वा मछानित भाधनार्थ कल वा मछानित महरवारा बादकं হয়, তাহাদিগকে অপ্রধান অর্থাৎ গৌণ ঔষধ বলা যায়।

> ষদপ্দা শৃতশীতাম ষড়প্লাদি প্রযুক্তাতে। কর্মাত্রং ততো দত্ত্বা সাধ্য়েৎ প্রান্থিকে ২ন্তুদি। অর্ধুণতং প্রয়োজকাং পানে পেয়াদিসমিধী॥

ষড়ক পানীর, কষার (काथ), সাধ্য মণ্ড, পেরাদি প্রস্তুত করিতে ছইলে, কি পরিমাণে উষধ ও জল লইতে হর ইত্যাদি বিষর পরিজ্ঞানের জন্ম একটা নিরম বলা ষাইতেছে। ষড়ক জলে এবং মণ্ডাদি, যুষ ও মাংস রসাদিতে বে সকল ক্ষাবীধ্য উষধ ব্যবহার করিবার আবশ্যক হর, ভাহাদের সমুদারে ু শ্বহতোলা লইয়া /৪ চারি সের জলে নিদ্ধ কর্ম /২ ছই সের অবশিষ্ঠ থাকিতে নামাইবে। পরে বস্ত্র হারা সেই জল টুাকিয়া পানার্থে অথবা মঞ্জ পেয়াদি পাক করিবার জন্ম ব্যবহার করিবে।

> বমিতং লজ্মিতং কালে ষ্বাগৃভিরূপাচরেৎ। যথাকৌষধ্যিদ্ধাভির্মগুর্জাভিরাদিতঃ॥ আহার বিধি।

রোগীকে অবস্থাস্থারে কখন কেবল বমন, কোন সময়ে কেবলমাত্র উপনিবাস অথবা কোন সময়ে বমন ও উপবাস; এই উভয়ও প্রয়োগ করিতে হয়। এই বমন, উপবাসাদি দ্বারা তাহার সামদোষ (অপক্ষরস সংযুক্ত বাত, পিজে শ্রেমা) ক্ষর প্রাপ্ত হইয়া, রোগীর কুধার উদ্রেক হইলে আহার করিতে দিবে। কিন্তু কোন প্রকার গুরু আহার প্রদান করিবে না। কারণ আহার-দোবে রোগীর পুনর্কার অগ্নিমান্য উপত্বিত হইবার সম্ভাবনা। একারণ আহারী বস্তু লঘুর অনুসারে প্রথমে মণ্ড, তৎপরে পেয়া এবং তদনত্তর বিলেপী প্রদান কর্ত্তবা। কিন্তু ঐ মণ্ড, পোয়া প্রভৃতির যাহাতে যে প্রকার উষধ দিবার বিশ্বেষ্ট আছে, দেই সেই উষধ সহ মণ্ডাদি পাক করিয়া লইতে হইবেক। এবং ইত্তেই বিশেষরূপে জ্ঞাত থাকিবে যে, উপবাস ও বমনের অযোগ্য ব্যক্তিকেও প্রথমতঃ মণ্ড, তৎপরে পেয়া এবং তদন্তর বিলেপী আহার করিতে দিবে

লাজপেরাং স্থেজরাং পিপেলী নাগরৈঃ শৃতাম্। পিবেৎ জ্বরী জ্বরহরাং ক্ষুদ্ধানপোগ্নি রাদিতঃ॥ (পিপুপলী–পিপুল। নাগর—শুঠী। লাজ—খৈ।)

জুরিত ব্যক্তি প্রথমতঃ পিপ্পলী ও শুগীর সহিত খৈর মণ্ড প্রস্তুত করিয়া সৈবন করিবে। কারণ—এই মণ্ড জুরনাশক এবং অনায়াসে অপ্প সময়ের মধ্যে পরিপাক হইয়া থাকে। স্থতরাং জ্ব-রোগী অপ্প কুধাতেও এই লাজ-মণ্ড (খৈর মণ্ড) ব্যবহার করিতে পারে।

পেয়ায়া রক্তশালীনাং পার্শ্বব্যিশিরোরজে। শ্বদংক্তা কৃটকারীভ্যাং সিদ্ধাং জ্বহরাং পিবেৎ॥ (রক্তশালি—ধান্ত বিশেষ। বস্তি—মুত্তাশয়। খনংষ্ট্রা—গোক্সর।)

জ্বরিত ব্যক্তির পার্শ্বদ্ধ, বস্তিদেশ এবং মন্তকে বেদনা থাকিলে, গোক্সর ও কন্টকারীর সহিত রক্তশালির অর্থাৎ রক্তশালি নামক থান্তের চাউলের মণ্ড প্রস্তুত পূর্বক রোগ্রীকে আহারার্থে প্রদান করিবে। এই মণ্ড অতীন জ্বর-নাশক।

কোতে বিবদ্ধে সক্ল পিবেৎ পেরাং শৃতাং জ্বী।
ম্বীকা পিপেলীমূল চব্যামলকনাগরেঃ॥
(জ্বীকা—কিন্দিন বা মনেকা। চব্য—হৈ। আমলক—বাসক।)
জ্বীক ক্তির কোঠ বন্ধ (দান্তবন্ধ) হইয়া, উদরে (পেটে) বেননা উপ-

ছিত হবলে, কিন্মিন্ প্রিপুলের মূল, হৈ, বানক এবং শুঠ । এই সকল এন্ত্রের সহিত রক্তশালি থাতের তথুলের (চাউলের) যও গুলুক করিয়া রোমীক্রি সাহারার্থে প্রদান করিবে।

পঞ্মুল্যা লখীরকা গুর্বনা ভাভনাং স্থান্যরা। কণরা যুধ পেয়ানি সাধনং স্যাদ্যথাক্রমমৃ॥ বাতপিতে বাতককে ত্রিদোবে শ্লেম্পিডজে। মবাগৃঃ স্থাভ্রিদোবন্ধী ব্যান্ত্রী হঃস্পর্শ গোকুরৈঃ॥

(श्राष्ठ-धता। कंगा- शिश्रुल। गाञी-कंग्ठेकाती। इः स्थर्न-इतालखा।)
ंलधीत्रमी शक्ष्यली व्यर्थाय लघू व खल्य शक्षपूत। यथा;-भालभानी
(हालामी), ठाकूरल (शिठामी): वार्क्ड् (त्रह्खी), (गाकूत ७ कंग्नेकाती;
अहे ६ भाँ। ठिता। खर्की शक्षपूली व्यर्थाय महर्शक्षपूल। यथा;-राल, भागा,
गास्त्रती (गामहित), शाकल अवर गंगिताती; अहे ६ भाँ। ठिता।

বার্তপিতজ্বরে জ্বিত ব্যক্তিকে স্বস্প পঞ্চম্ল অর্থাৎ শালপাণী, চাকুলে, ব্যাকুড়, গোকুর ও কণ্টকারী, এই কয়েকটী দ্রেখ্য দ্বারা সাধিত যুব বা মণ্ডাদি আহার করিতে দিবে।

ৰাতলেম্ব-জ্বে মহৎ পঞ্চমূল অর্থাৎ বেল, শোণা, গান্তারী, পাকল ও গণিয়ারী; এই ৫ পাঁচটা এবের মূলের ছাল ঘারা নাঞ্চিত মূব বা মগুদি আহার করিতে দিবে।

পিত্তমেম্মজরে ধনিয়া ও পিপুলের সহিত দাইল সহযোগে ধ্ব অথবা চাউল সহযোগে মণ্ড প্রস্তুত পূর্বক রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

ত্রিদোষজন্ত্র দশমূল অর্থাৎ পূর্ব্বোক্ত শালপানী, চাকুলে প্রভৃতি ৪পাঁচটি অর্থাৎ স্বন্ধ পঞ্চমূল এবং বেল, শোণা প্রভৃতি ৫পাঁচটী অর্থাৎ মহৎ পঞ্চমূল; এই ১০ দশটা স্তব্যের সহযোগে প্রস্তুত রক্তশালি ধান্তের চাউলের পেয়া কিবা দাইল সহযোগে সাধিত বৃষ রোগীকে পান ব্যরতে দিবে।

্র অধিকন্ত ত্রিদোষজজ্বরে (সান্নিপাতিকজ্বরে) কণ্টকারী, হুরালভা ও গোকুর; এই দ্রব্যত্রয় সহযোগে প্রস্তুত হক্তশালির মণ্ড, পেরাদিও রোগীকে আহার করিতে দিবে। ইহাও ত্রিদোষজ্ব বা সন্নিপাত জুরনাশক।

> কং। জিং বা কণা ৬ ঠো। হ কল্ডেব্যস্য বা পলম্। বিনীয় পাচয়েল্ যুক্তন বারি প্রছেন চাপরাম্। কল্ড সাধ্য যবাগু সাধনের নিয়ক্ত

(कर्राक्ष—> अक्टाना। क्यां—शिशून। कन्क अया—स जवन देवध जुर युव, श्वित्रानि शांक क्रिंडि इत्र । बाह्रि—छन। श्रेष्ट /२ इरेर्जद्र।)

े कन्क बाता मधानि, युवानि (वृष, मारमानि) शाक करिएक इन्हेली, कि श्रीतमान कर्ता ७ वेवध ज्ञेश लहेएक इन्हेर्स, कानात नित्रम । वेत्रम मकल बीर्या (कर्ता किन व्यक्ति । यथा ;—कीक्सीर्या, महानीया असर বিদ্বারী প্রভৃতিকে মধানীর এবং আমলকী, কিন্তিন, হরীতকী প্রভৃতিকে ব্যাবীর এবং আমলকী, কিন্তিন, হরীতকী প্রভৃতিকে মধানীর এবং আমলকী, কিন্তিন, হরীতকী প্রভৃতিকে মুখুনীরা জেন্য বলে। বনাগু অর্থাৎ মণ্ডপেরানিতে, যে মকল উবর প্রয়োগ করিবে, তাহ ডাল্পনীয় ছইলে ২ চাতোলা, মধানীর ছইলে ৪ চারিভোলা এবং মুখুনার। জেন্য হইলে ৮ জনীতোলা লইনে। এই নিংলে ওয়ধজন্য সকল অশপারিমিত জলের সহিত বাটিলা লহন চুর্ন করিয়া /ও চার্চিনের জল হহ-বোগে, রোগার মহজকালীন আভাতের চতুর্বংশা (৪ চারিভাগের ২ ভাগ) পরিমাণ চাউল প্রহণপূর্বক, তাহ, অশপ জল মহ বাটিলা অহন চুর্নীরভ করিয়া ১৪ গুণ জলে মণ্ড, ৬ গুণ জলে পেরা এবং ৪ গুণ জলে বিলেশী শাক করিতে করিতে বাধন মণ্ড পেরানির লক্ষণ দেখিতে শহিবে, তথন মামাইরা রোগাকৈ আহার করিতে দিবে।

্ বড়ঙ্গ-পরিভাবৈব প্রায়ঃ পেয়ানিসমৃতা। যবাগু মুচিডায়েক্তা চচত্রভাগকতাং বনেৎ॥

কার্থ সাধ্য বনাগু (মণ্ড, পেরা ও নিলেপী) প্রস্তুত করিবার নিমিত্ত উহার ক্রাথ, বড়গ-পানীয়ের বিধানাল্লারে প্রস্তুত হয়। অর্থাং শিপুল, মরিচানি ভীল্পনীর্ব্য দ্রেরের ২ ভোলা, বেল গণিয়ারী ওভৃতি মধ্যনীর্ব্য দ্রেরের ৪ ভোলা প্রথম আমলকা, হরীতকা, কিদ্মিদ্ প্রভৃতি মৃত্যনীর্ব্য দ্রেরেদ ভোলা প্রহণকুর্বক /৪ চারিদের জল সহযোগে গিদ্ধ করতঃ /২ ছই সের অবশিষ্ট থাকিছে নামাইয়া, ভাহা পরিকার বস্তুদ্ধারা ছাকিয়া লইবে। তৎপরে রোগীর আভ্যানিক চাউলের চতুর্থাবল প্রহণপূর্ণক অম্পপরিমিত জল সহ বাটিয়া অথবা চুর্ব করিয়া, ঐ চুর্ণীকত চাউল, উহার ১৪ গুণ পরিমানে পুর্কোক্ত ঔষধ দ্বারা প্রস্তুত করিবে।

পূর্ব্বে কথিত হইল যে, মন্তা, পোনাদি প্রস্তুত করিবার জন্ম আজ্ঞাসিক তিপুলের চতুর্থাংশ লেইতে হইবে। এক্ষণে তাহা বিশেষরপে কথিত হই-জেছে। যথ। ;—যে ব্যক্তি যে পরিমাণে চাউলের অন্ন সহজ্ঞ অবহার আহার করিয়া থাকে, মন্তাদি প্রস্তুত করিবার নিমিত্ত সেই চাউল লইতে হইলে, গাঁহার ৪ চারিভাগের ই ভাগ গ্রহণ করিতে হয়। মন্তাদির ততুল চুর্গ করিয়া। গ্রহণ করিছে হয়। মন্তাদির ততুল চুর্গ করিয়া।

দিক্থকৈ রহিতে। মণ্ডঃ পেয়া দিক্থ-সমন্বিত: । ধবাগু বহুদিক্থা ম্যাদিলেগী বিরদদ্রবা॥

मछ, भिन्न ७ विलिभीद लक्ता।

মণ্ড, পেরা ও বিলেপীর সাধারণ নাম যবাগু। কোন কোন ছানে যবাগু কৈ কেবল মাত্র পেরাই বুঝার। তণুল ও জল হারা সাধিত বস্তু নিক্ষ নিটে না কণা) বিহীন হইয়া অতীব তরল হইলে মণ্ড, অংশ নিক্ষ সংমুক্ত অথচ অথিক পরিমাণে তরল পদার্থ থাকিলে পেরা এবং অথিক দ্রিক্**থ ও** অপপপরিমাণে তরল পদার্থ থাকিলে বিলেপী বলা যায়।

> অন্নং পঞ্চতে সাধ্যং বিলেপী চ চতুত গৈ। মণ্ডশ্চতুর্দ্ধশন্তনে যবাগুঃ ষড় তেণে২ন্তনি॥

মগু, পেরাদির পাকার্থে যে জল ব্যবছত হয়, সেই জলের চাউলের ৫ পাঁচ গুণ জলে অন্ন, ১৯ উনিশ গুণ জলদারা মগু, ১১ গুণ জলে (যবাসূ) পোরা এবং ৯ গুণ জল দারা বিলেশী এক্তত ক্রিতে হয়।

পাংশুধানে যথা র্ষ্টিঃ ক্লেদয়ত্যতিকদিমম্ ।

তথা শ্লেম্বাণি সংরদ্ধে যবাগৃঃ শ্লেম্বর্কনী॥

শ্রেদ্মার আধিক্য থাকিলে, কোন প্রকার রোগে যবাগু প্রদান করিবে বা।
কারণ ঐ শ্রেদ্মাবস্থান যবাগু ব্যবহার করিলে, শ্রেদ্মা পূর্ব্বাপেক্ষা আরপ্র
অধিকতর বর্দ্ধিত হইনা থাকে। যেমন কোন স্থানে ধূলিরাশিতে র্ফি পড়িড
হইনা অত্যন্ত কর্দম হইনা দেই স্থানকে পক্ষমন করিনা থাকে, সেইরপ শ্রেদ্মা
ধিক রোগে যবাগু প্রযুক্ত হইলে, শ্রেদ্মা রিদ্ধি পাইনা রোগীকে বিপদাশন
করিনা ফেলে।

মদাতায়ে মদানিত্যে গ্রীয়ে পিত্তকণতাকে। উর্দ্ধণে রক্তপিতে চ যবাগু রহিতা দ্বরে॥

মদাত্যর রোগীর জ্বরে, মদ্যপারীর জ্বরে, মদ্যপান জ্বনিত জ্বরে, থীম-কালোন্ড ভ জ্বরে, পিত্তমেম্বাধিক জ্বরে এবং উদ্ধৃণ রক্তপিত্ত রোগে পেরাদি প্রয়োগ করিলে অতীব অহিত ঘটিয়া থাকে।

তত্ত্ব তর্পণ মেবাত্রে প্রদেরং লাজশজুভিঃ। জ্বরাপহৈঃ ফলরসৈয়ু ক্তং সমধুশর্করম্। দ্রবেশালোড়িতান্তে স্থ্য স্তর্পণং লাজশক্তবঃ॥

পূর্ব্বোক্ত মধাত্যর রোগী প্রভৃতির জরে কিন্মিন্, নাড়িম (বেদানা), ও খর্জুর (পিণ্ড খর্জুর) প্রভৃতি জ্বর ফল সমূহের রসে খৈর চূর্ন এবং ডদহ্নরপ মধু ও শর্কর। (ইকু চিনি) মিপ্রিত করিয়া প্রথমতঃ আহার করিছে দিবে। এবরিধ খাদাকে "তর্পণ" বলে। এইরূপ অবস্থার কিন্মিন্ প্রভৃতি দ্রবাসমূহ পরিমাণে / ০ এক ছটাক, জল / ২ সের এবং অবশিক্ত /॥ অর্জ দ্রের জানিবে। এবং উক্তদাবিত /॥ জলে খৈ চূর্ম ৪ চারি ভোলা এবং মধু

শ্রমোপবাসানিলজে হিতো নিতাং রসৌদনঃ।
মুদাব্যৌদন শ্চাপি দেয়ঃ কফ-সমুখিতে ॥
ম এব মিত্রা যুক্তঃ নীতঃ পিতত্তের হিতঃ॥

সম প্রিমান উপবাস এবং বাহা: এই জিন প্রবার কার্য

তাজ্ঞ পরিপ্রন, উপবাদ এবং বায়ু; এই তিন প্রকার কারণে জর হবলে,

জবের স্কুল ও পুরাতন উভয়বিধ অবস্থাতেই মাংল রলের (মাংল স্থানের) সহিত অন (ডক্ত অর্থাৎ ভাত) আহার করিতে দিবে। এবং সেম্মজরে মুদা দাইলের যুযের সহিত অন এবং পিতজ্জরে ঐ মুগের যুখ সহ শর্করা (ইক্ল চিনি-) সমেত অন্ন আহার করিতে দিবে।

• ব্রস্থাক্যুয়ন্ত কফবাতাত্মকে হিতঃ। নিম্বকুশক্যুয়ন্ত হিতঃ পিতুকফাত্মকে॥

বাতরেশ্য জরে কটি মূলার যুষের সহিত জন্ধ এবং শিশুশ্লেশ্য জ্বরে নিমপাতা ও পটোল পত্রের (পল্তার) যুষ সহ জন্ধ দেবন করিতে দিবে।
এ ছলে ঔষধ দ্রব্য সমুদায়ে ২ তোলা, মুগের দাইল / ০ একছটাক বা ১ ০ জর্ক্ধ
পোরা এবং জল / ২ ছই দের লইবে। ইহার জর্ক্ধ দের পরিমাণে জবশিষ্ট রাখিয়া নামাইন্না লইবে। যেখানে কেবল মাত্র ঔষধের উল্লেখ আছে. কিন্তু দাইলের উল্লেখ নাই, সে ভলে যুষ পাক করিতে হইলে দাইল এহণ করিতে ইইবেক। এবং দেই দাইল যবাগুর তণ্ডুলের নিয়মান্ত্র গ্রহণ করিবে।

মুদ্যানান্তরাং শ্চণকান্ কুল্থান্ সমুকুটকান্। আহারকালে যুবার্গং জ্বিতায় প্রদাপয়েৎ।

জর রোগীকে আছার কালে মৃগ, মস্থর, চণক (ছোলা বা বুট) ও বনমুগ; এই সকল দাইলের যৃষ প্রদান করিবে।

পটোলপত্রং বার্দ্তাকুং কুলকং কারবেল্লকম্। কর্কোটকং পর্পটকং গোজিহ্বাং বালমূলকম্। পত্রং গুড়ু চ্যাঃ শাকার্থং জ্বরিভার প্রদাপয়েৎ॥

পটোলপত্র (পল্তা), বার্তাকু (বেগুন), কুলক (পটোলকল), কারু-বেলক (করলা উচ্ছে). কর্কোটক (কাকরোল), পর্পটক (ক্ষেত্র পাপ্তা), গোজিহ্বা (গুজিয়া শাক), বালমূলক (কিচ মূলা) এবং গুড় চীর (গুলঞ্জের পত্র); এই দমস্ত ত্রবোর শাক পাক করিয়া জ্বরোগীকে আহারকালে ভোজন করিতে দিবে।

জ্বিণোহক্টি-চিকিৎসা।
জ্বিতো হিতমশ্লীয়াদ্ যদ্যপ্যস্যাহক্টি **র্ভবেৎ।**তম্প্রকালে হভুঞ্জানঃ ক্ষীয়তে ব্রিয়তেহ**প্র।।**অক্টির চিকিৎসা।

জরিত ব্যান্তর আহারে অকাচ হইলেও তাহাকে জনাহারে হা বিশ্ব না অথবা কচি জনাইবার জন্ম কুপথা দ্রবা ভোজন করিতে দিবে না। স্থপন্দ হিতকর দ্রবাই ভোজন করিতে দিবে। কারণ-জরুরোগী জাহার সময়ে যথেও শাস্ত আহারীর দ্রবা ভোজন করিতে না পাইলো, ভাহার শরীর ক্রমণ্ড জনাহারীর ভার দীণ হইতে শাবে। এবং সুপথা দ্রবা ভোজন করিলো রোগ বলপ্রার্ড ইইরা রোগীর খল ক্ষর করিছে খাকে: একারণুলারিত-ব্যক্তির ছব হইতে মৃতি লাভ করা মুদ্রে খাকু, বরঞ দিব দিবাবলকর প্রস্তুত অবশেষে মৃত্যু পর্যাত ঘটিয়া থাকে।

व्यक्तरही माजुनुकना रक्षक्रश माकारेमस्वय् ।

শাত্রী জাক সিতানাং বা কল্কগাসেন ধাররে**ং ।**

ছররোগীর আহারে অকচি হইলে যাতুলুকের কেশর (ছোলক, টাবা বা ফলষা লেবুর কেশর) স্থত ও দৈশ্বব প্রবণ সহযোগে মিপ্রিড করিরা মুধ্রে রাখিবে। কিষা ধাত্রী (আমলকী), ত্রাক্ষা (কিসুমিসু) ও শর্করা (ইক্টুটিমি) এক্তর করিরা মুখে রাখিবে।

সাতত্যাৎ স্বান্বভাবান্ধা পথাং বেষ্যত্ত্বযাগতম্ । কম্পনা-বিধিভিত্তৈ তৈঃ প্রিয়ত্ত্বস্বয়েৎ পুনঃ ॥

ষদাপি প্রতিদিন এক ত্রব্য আহার করার, অথবা স্বাহরদের অভাব (বিন্দা। গুরুক্ত খাদের প্রতি বিষেষ (অপ্রদা) ক্রমে। তাহা হইদে কম্পনাস্কারে নানা প্রকার ত্রব্য দ্বারা বিবিধ প্রকার খাদ্য প্রস্তুত পূর্মক রোগীকে ভোজন করিতে দিবে। ধে প্রকারে খাদ্য ত্রব্য রোগীর মুখপ্রির হর, চিকিৎসকের তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখা অভিশর আবশ্রক। বে হেডু অনাহারে রোগীর জীবন পর্যান্ত ২ংস হইতে পারে।

> জ্বতিং জ্বমুক্তং বা দিনান্তে ভোগরেলবু। শ্লেমুক্তরে বিরুদ্ধোম্মা বলবাননলন্তদা॥

জ্বরোগীকে অবঁবা জ্বমুক্ত ব্যক্তিকে দিনান্তে (মধ্যাহ্নকালে) লাছু আছার ভাষান করিবে। যে হেতু ঐ সময় মেন্সার ক্ষয় হইরা অঠরায়ির উষ্ণতা এবং বল রঙি হয়; একারণ উক্ত সময়ে আহার প্রদান করিলে, অবিলম্বে পরিক্রণাক হইরা মহুই উপকার সংসাধিত হয়। এবং অজীর্ন দোব ঘটিবার সম্ভাবনা থাকে না। কিন্তু বাহার উক্ত নির্দিষ্ট সময়ের পুর্কেই স্থার উদ্রেক হর, তাহার পক্ষে মধ্যাহ্র কালের অপেক্ষা না করিরা স্থার সময়ে হথা পরিমাণে আহার প্রদান করিবে।

গুৰ্বভিষ্যন্দাহকালে চ শ্বরী মাল্যাৎ কংক্ষম। নহিত্যাহিতং ভুক্তমায়ুষে বা সুখায় বা ॥

জনবাদী গুৰুপাক ত্ৰবা (শিকক, ৰটকানি), অভিবালি-ত্ৰবা (ক্লেৰ্ড জনক তেঁতুল, বৰি প্ৰভৃতি) আহার করিলে; তুথার সমরে আহার না করিরা অধিক পরে আহার করিলে এবং অসুধার অর্থাৎ সুধার উত্তেক না হইলেও ক্ষেত্র ভোজন করিলে, বিশেব প্রকার অবিভ ঘটিবার সক্রাক্ষান বৈত্তে ক্ষাব্ছার অবিভ ভোজন করিলে, বিশেব প্রার্ রক্ষার অববা পরিগাবে স্থানিক পাহরের ক্ষাব্ছার অবিভ ভোজন করিলে আরু রক্ষার অববা পরিগাবে স্থানিক পাহরের ক্ষাব্ছার ঘটিরা থাকে

Well-Waltat

मध्यमः (यक्षमः कारमः ययागृष्टिकरकी त्रमः। शाहमामाविशकामाः (मायागाः एकर्तन सद्र॥

নবজ্বে লঙ্কন (উপনাস), বেদক্রিয়া (উপায় বিশেষ বারা শরীরে উত্তাপ প্রদান), কাল (অন্টাহকাল—আট দিন পর্যান্ত), ধ্বাস্ (মণ্ড পেরাণ্ড বিলেপী) আহার এবং জল ও মণ্ডাদির সহযোগে ডিক্তরস দেবন। এই সমস্ত সামনোষের পরিপাচক অর্থাৎ উপনাসাদি প্রক্রিয়া করিতে করিছে সাজ দিন গত হইলে, অপক্রদোষের পরিপাক হইয়া থাকে; এবং তাহা হইলে জরম উমধ প্রয়োগ করিবার স্থবিধা ঘটে ও সম্বর রোগীরও রোগ আরোগা হইবার সম্ভাবনা হয়।

জ্বস্থ তারুণ্যাদ্যবস্থা-নির্ণয়ঃ।

আসপ্তরাত্তং তরুণং জ্বরমান্তর্ঘনীবিণঃ। মধ্যং দ্বাদশরাত্তম্ভ পুরাতনমতঃ পরম্।

জ্বরের তকা। মধ্যম ও পুরাতন (জীর্ণ) অবস্থা নির্ণয়।

রিজ্ঞ চিকিৎসকগণ চিকিৎসার স্থাবিধার্থে অবস্থাবিশেষে জ্বকে তিনভাগে বিজ্ঞাগ করিয়াছেন। যথা;—১ তকণজ্বর, সূত্তনজ্বর বা নবজ্বর; ২ মধ্যজ্বর এবং ও পুরাতনজ্বর, পুরাণজ্বর বা জী-জ্বর। জ্বরোৎপত্তির প্রথম দিবস হইতে সপ্তাহ পর্যিন্ত জ্বরকে তকণজ্বর, অন্তম দিন (অন্তাই) হইতে হাদশ দিবস পর্যান্ত মধ্যজ্বর এবং দাদশ দিবসের পর অর্থাৎ হাদশ দিবসের পরবর্তী স্থায়ী জ্বরকে পুরাতন বা জী-জ্বর বলা যায়। সপ্তাহ পর্যান্ত জ্বরের তাকণা অবস্থা বলিবার প্রয়োজন এই যে, জ্বরিত ব্যক্তির আমাশয়গত সামনোয় (অপক্রস যুক্ত বায়ু, পিত্ত ও কক) উপবাস কালে আহারন্থানীয় হর্মী; একারণ জঠরাগ্রিও অপর পাচ্য দ্বব্যের অভাব হেতু ঐ অপক দোষকেই জ্বমশং পরিপাক করিতে থাকে। এবং সামনোযের পরিপাক হইমা উদ্যান্ত্র জ্বাত্রিবাত রিদ্ধি পাইরা ধাতুগত অগ্রিকে উত্তেজ্ঞিত করিয়া তুলে। স্ক্তরাং থাতুগত অগ্রির বলে থাতুন্থ আমরসেরও পরিপক্তা হয়। এই অবস্থা প্রায়ই সন্তাহ মধ্যে ঘটে বলিয়া অন্টাহকে নিরাম (আম বা অপক্রস বিহুনি) কাল বলে।

পাঁচনং শমনীরং বা কষারং পাররেভুতম্। স্করিতং ষড়হেহত তে লঘুরং প্রতিভোজিতম্॥

मध्यभितम भर्गा छ खारात एकन कर्यका थाकात, छाराए छेभवामानि विकित्यात विद्यास करा रहेन । छ०भारत काकरित वावसात छारासन वज्यक वाहाल विद्या कर्यक एरएएए। मध्य निवास स्वामीटक स्वयू कात (मध्य, भारति) स्वयून कराहिता, कार्येय विदय स्वयू कात अवर भारत वा भागन करात

यमाता (मारवर शतिशाक इत्र काशास्क शाहन अवर यमाता (निक्क বায়ু, পিত, কফ বা আমরম) বিরেচিত বা উদ্রিক্ত না হইরা প্রশামিত হয়, ভাছাকে শমন বা সংশমন কষায় বলে। বৈদ্যশাক্তাত্মসারে ক্যায় শব্দের वह ध्वकात वर्ष इत्र. उटाव अञ्चल मन्नजास्यात्री जिन्ही वार्थत উल्लंभ कर्ता যাইতেছে। ১ম অর্থ কাথ; ইহা জরের তরুণ অবস্থার বাবুছের নহে, কারণ জরের তাকণাবস্থায় কাথ প্রয়োগ করিলে বায়ু, পিত্ত ও মেন্সা উৎশিপ্ত ছইরা রোগীর শোচনীয় অবস্থা ঘটার। ২য় অর্থ-কবার রদ; ইহাও তকণ জ্বরে নিষিদ্ধ। যে হেডু ক্যায় রদ গুরু, শীতগুণ যুক্ত, বায়ু বর্দ্ধক এবং মল, মুত্র রোধ করে। স্মৃত্রাং জ্বিত ব্যক্তিকে ইহা দেবন করাইলে জ্বের উপশ্য হওয়া দুরে থাকুক, বরঞ্চ জরের বেগ বর্দ্ধিত হইয়া অহিত সংসাধন করিয়া খাকে। ৩র অর্থ-স্বরদ, কাথ, বলক, শীত ও কান্ট। ইছার মধ্যে স্বরদ, কল্ক প্রভৃতিই প্রয়োক্তব্য। তরুণজ্বরে ষড়ঙ্গ-পানীয়ের বিধান করিয়া পুন-রায় কাথের নিষেধ করায়, ইহা বুঝিতে হইবে যে,— কাথের ধোলগুণ জল সহযোগে চতুর্ভাগাবশিষ্ট রাখিয়া যে কাথ করা হয়, তাহা নহে, অর্থাৎ প্রদত্ত জলের অর্ধাবশিষ্ট রাখিয়া যড়ঙ্গপানীয় প্রস্তুত করিতে হয়। স্বতরাং ইহা লঘু পাক বশতঃ রোগীকে দেবন করাইলে অশুভ করিবার সম্ভাবনা ্লাই; অথচ জরের উপশম হয়।

> সপ্তাহাৎ পরতোহস্তব্ধে সামে স্যাৎ পাচনং জ্বরে। নিরামে শমনং শুদ্ধে সামে নৌষধ্যাচরেৎ।

मश्चाह शत वर्षा व वस्मितिनाम ब्यादागीत व्यक्त मामानकात वर्षाः আমরদ পরিপক হইয়াছে বোধ হয়, কিন্তু কিয়ৎ পরিমাণে অপক্রদ কোঠকে আত্রয় করিয়া গুণ্ডভাবে আছে কিনা, এমত সন্দিম্ধ অবস্থায় পাচন (লেবের পরিপাচক) ঔষধ প্রদান করিবে। এবং দম্পূর্গ নিরাম অবস্থায় (যখন দেখিবে আমর্ম আদে) নাই) সংশমন ক্যায় প্রয়োগ করিবে। কিন্তু ভাষা সামাবস্থায় (আমরদ প্রাচর পরিমাণে নিশ্চিন্তরূপে অবস্থিত পাকিলে) পাচন কি শমন, কোন প্রকার ক্ষায়ই প্রয়োগ করিবে না। কারণ এতাদুর অবস্থার অপক্রম পরিপাক না হইরা জরের বেগ বর্ছন করিয়া থাকে। একণে প্রকৃত অর্থ দ্বির ছইল যে, যত্দিন পর্যান্ত জরিত ব্যক্তির আমরদ পরিপাক না পাইবে, ভাহার মধ্যে শমন কষার দেওয়া কর্ত্তব্য নিছে। এবং नां किरामत शृद्धि आगत्रम शतिशाक शोहरान, जाहाराज्य मश्ममन द्वेषद প্রয়োগ করা উচিত ; পাচন (দোবের পরিপাচক) ঐবধ তদবস্থার প্রয়োগ করা व्यन्धिक माज । प्रव्यतार "व्यक्षीर" अस उपानमान माज । (यद्वादा भरवर्ष व्यक्ति ধানিক অৰ্থ বাতীত অন্তবিধ সম্বত অৰ্ধত প্ৰতিশঙ্গ হয়, ভাষাকে উপৰাক্ষ बरल । अन्यटन अकार भारत रक्तन अके विन मात्र मी त्यारेका किराह অভিস্থোৰক অৰ্থ সহিত নিরাম জরের নিরাম কালকেও বুঝাইভেছে।

শালাপ্রনেকে। বল্লাস সদয়াশুদ্ধারোচকাঃ।
তন্ত্রালস্যাবিপাকাস্য-বৈরস্যং গুরুগাত্তা।।
কুনাশো বহুমূত্রত্বং স্তক্তা বলবান্ কুরঃ।
আমন্ত্রস্য লিঙ্গানি ন দদ্যাত্ত্র ভেষজম্।
ভেষজং হামদোষস্য ভূয়ে। জ্বনয়তি জ্বম্।।

আমজুরের লক্ষণ।

লালান্তাব, বিবমিষা (বমনেচ্ছা), হৃদয়ে ভারবাধে অরুচি, তন্ত্রা, আলম্ম, অবিপাক (উদরস্থ আহারীয় দ্রবার অজীর্ণতা) এবং পোষের (বায়ু, পিতৃ ও ককের) অপকতা, শরীরের গুরুতা, মুখের বিরসতা, আহারে অনিচ্ছা, প্রভাববাহল্য, শরীরের জড়তা ও জ্বরের বেগাধিক্য : এই সমস্ত লক্ষণ জ্বরের স্তব্ধ সামাবস্থায় অর্থাৎ আমজ্বের লক্ষিত হয়। এতদবস্থায় কোন প্রকার সংশামন ঔষধ প্রয়োগ করিবে না ; যেহেতু তাহাদারা জ্বের কোন উপশম না হইয়া বর্ণ্ণ বেগ বর্ধিত করে।

মূদো জ্বরে লঘো দেহে প্রচলেমূ মলেমূ চ । প্রকং দোষং বিজানীয়াজ্জ্বরে দেয়ং তদৌষধম্॥ আমর্ম প্রিপাকের লক্ষণ।

জ্বরের বেগ মৃত্র, শরীরের লঘ্তা, দোষের (বায়, পিত্র, শ্লেম্বার) অবি-কদ্ধতা (চলাচলের অপ্রতিবন্ধকতা) এবং মলের নির্গমন; এই সকল লক্ষণ অবলোকিত হইলে;, আম (অপক) রসের পরিপাক হইয়াছে জানিয়া, জ্বরোগীকে এতদবস্থায় ঔষধ প্রয়োগ করিবে।

সর্বজ্বরেষু।

নাগরং দেবকাষ্ঠঞ্চ ধন্যাকং রহতীদ্বরম্।
দদ্যাৎ পাচনকং পূর্ববং জ্বিতায় জ্বাপহম্॥
সক্তরে।

ু (নাগর—শুগী। দেবকাষ্ঠ—দেবদারু। ধন্সাক—**ধনে। "রহতীদর—** যাকুড় ও কটকারী)।

শুঠ, দেবদাক, ধনিয়া, ব্যাকুড় এবং কণ্টকারী; এই করেকটী দ্রবা সমুদায়ে ই ছইতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক কুটিড করতঃ /॥। অর্ধ-দের জলের সহিত পাক করিতে থাকিবে; যখন দেখিবে / ১/। অর্ধপোরা মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইয়া পরিষ্কার বস্ত্র দারা ছাঁকিয়া সিটে বাদ দিরা জ্বলীয়ভাগ গ্রহণ করিবে। এই জ্বনাশক পাচন (কাথ) প্রথমে সকলপ্রকার

> পীতায়ু লজিতঃ কীণো২জীণী ভুক্তে পিপাদিতঃ। ন পিবেদৌষধং জন্তঃ সংশোধন মথেতরং।

প্রােগ-চিন্তামণিঃ।

क्षेत्रध (मय्दानद्र ममग्र निटर्फ्न ।

ষে ব্যক্তি জলপান অথবা অন্ধ আছার করিরাছে, ভাছার পক্ষেণ; ক্ষাণ-শরীরবিশিক্ট ব্যক্তি, লডিবত (উপবাসী), অজীর্ণরোগী এবং ভ্রুণর্ভব্যক্তির পক্ষে; সংশোধন, সংশমন প্রভৃতি কোন প্রকার ঔষধ সেবন করা যুক্তিযুক্ত নহে।

বীর্যাধিকং ভবতি ভেষজ মন্নহীনংহন্যান্ডদামর মসংশন্ত মাশু চৈব।
তদ্বাল রদ্ধ যুবতী মৃত্তভিশ্চ পীতংপ্রানিং পরাং নরতি চাশু বলক্ষরক।
শীঘ্রং বিপাকমুপযাতি বলং নহিংস্থাদন্নারতং ন চ মুস্কর্বদনান্নিরেতি।
প্রাগ্ভুক্তসেবিত মহৌবধ মেতদেব,
দদ্যাচ্চ রদ্ধ শিশু ভীরু বরাঙ্গনাভ্যঃ॥
ঔষধশেষে ভুক্তং পীতক্ষ তথৌষধংসশেষেংরে।
ন করোতি গদোপশমং প্রকোপয়ত্যন্যরোগাংশ্চ॥

আহার পরিপাকান্তে যে ঔষধ দেবন করা যায়, তাহার বল (বীর্য্য) আ পরিমাণে রদ্ধি পাইয়া শীদ্রাই উপকার দর্শিয়া থাকে। যেহেতু আহারকি ক্রমধ কোন প্রকার আবরণে আবরিত হইতে না পারায়, সত্বর স্রোতঃসমূহকে প্রাপ্ত হইয়া সম্যক্প্রকারে যথোচিত ক্রিয়া প্রকাশ করিতে সক্ষম হয়, এবং কোষ্ঠদেশকেও সম্পূর্ণরূপ শোধন করে। ঔষধ জীর্ণ হইতে না ছইতে ভোজন করিলে অথবা ভোজনের অব্যবহিত পরেই ঔষধ দেবন করিলে, দেই ঔষধ ম্বারা কোন প্রকার উপকার সংসাধিত হয় না, বরঞ্চ উহা অক্সাম্র রোগ উৎ-পাদনের মূলীভূত কারণ হয়। কিন্তু বালক (শিশু), রদ্ধ, মৃত্রু (কোমলপ্রকুডি), ভীক, বরাজনা (উত্তমা নারী) ও যুবতী নারীদিগকে কোন মতে ভোজনবিহীন প্রয়ধ দেবন করিতে দিবে না। কারণ—ভোজনবিহীন ঔষধদেবন করিলে. ভদ্মারা উহাদের অন্তর্মানি ও হর্ববলতা উপস্থিত হয়। এই হেতু ঐ সকল ব্যক্তিকে ভোজনের কিঞ্চিৎকাল পূর্ব্বে ঔষধ দেবন করাইবে। কারপ আহারের প্রাক্কালে উহাদিশকে ঔষধ দেবন করাইলে অথবা ঔষধ দেবনের অব্যবহিত পরেই ভোজন করিতে দিলে, ছুক্ত ঔষধ আন্ন (ভক্ষিত আহারীয় বস্তু) দ্বারা আচ্ছাদিত হওয়ায়, মুখ দিয়া পুনঃ পুনঃ নির্গমনের কিয়া বলছানির সম্ভাবনা থাকে না।

ত্র অনুবোমাধনিলঃ স্বাস্থ্যং সুক্তৃফা স্থমনকতা। লবুত্মিজ্রোকাারশুদ্ধিজীর্ণে বিধারুতিঃ॥

कीर्ग छयद्यं नक्तर्ग।

উষ্ধ সম্যক্ প্রকারে পরিপাক পাইলে, বায়ুর অহলোমতা (স্থীর পথে স্বাভাবিক গমন), শরীর ও মনের প্রসন্ধতা, স্থা ও তৃষ্ণার উত্তেক, দেহের লযুতা, ইন্দ্রিয় সকল পরিষার এবং উদ্ধার বিশুদ্ধ হয়।

> •ক্লমো দাহো২ঙ্গসদনং ভ্রমো মূর্চ্ছা শিরোরজ্জা। অরতি বলহানিশ্চ সাবশেষৌষধাক্তভিঃ॥

ভুক্ত ঔষধ সম্যক্ প্রকারে জীর্ণ না হইলে, দেহের ক্লান্তি, অঙ্গাদি দাহ; অঙ্গের অবসন্নতা, ভ্রমবোধ, মুর্চ্ছা (মোছ), মস্তকবেদনা, অরতি (চিত্তের অস্থিরতা ও অপ্রবৃত্তি) এবং বলহানি ঘটিয়া থাকে।

মাত্রায়া নান্ত্যবস্থানং দোষমগ্নিং বলং বয়ঃ ।
ব্যাধিং দ্রব্যক্ষ কোষ্ঠক বীক্ষ্য মাত্রাং প্রবোজয়েং ॥
উত্তমক্ষ পলং মাত্রা ত্রিভিশ্চাকৈশ্চ মধ্যমে ।
জ্বন্যক্ষ পলার্দ্ধেন স্নেহক্রাথ্যৌবধেষু চ ॥
উবধের পরিমাণ নির্ণয় ।

উষধের পরিমাণের স্থিরতা নাই। অর্থাৎ চিকিৎসক দোষ (বাত, পিন্ত ও শ্লেষা), অগ্নি, শারীরিক ও মানসিক বল, বয়:ক্রম, ব্যাধি, দ্রব্য (তীক্ষরীর্ব্য, মধ্যবীর্ব্য অথবা মৃত্বীর্ব্য কি না) এবং কোষ্ঠ (ক্রুরকোষ্ঠ, মধ্যকোষ্ঠ অথবা মৃত্বু-কোষ্ঠ কি না); এই সকল বিষয় যথানীতি বিচার পূর্বক উষধের মাত্রা নির্ণর করিবেন। ঔষধের পরিমাণ অলপ বা অধিক; এই উভয় প্রকার দ্বারাই উদ্দেশ্য সিদ্ধির পক্ষে বিয়তা ঘটিয়া থাকে। অর্থাৎ অলপ মাত্রায় ঔষধ প্রযোজিত হইলে, রোগের উপশম হয় না; এবং অধিক মাত্রায় প্রবোজিত হইলে অক্সবিধ ব্যাধি উৎপন্ন হয়। একারণ ঔষধের পরিমাণ যাহাতে উপযুক্ত হয়, সে বিষয়ে বিশেষ দৃষ্টি রাখিবে। যাহার অগ্নি ও বল অবিক, তাহাকে ক্ষেহ (তৈল, য়ড, বুসা ও মজ্জা) ও ক্বাথ্যবস্তু একপল (৮ তোলা) পরিমাণে, যাহার বল ও অগ্নি মধ্যম, তাহাকে ৩ তিনকর্ষ (৬ তোলা) এবং অলপ বল ও অলপায়িবিশিক্ট ব্যক্তিকে ২ তুই কর্ষ (৪ তোলা) মাত্রায় ঔষধ প্রদান করিবে। কিন্তু একণে ক্রথা বস্তু এনিয়মে ব্যবহৃত হয় না। প্রচলিত পরিমাণায়সারে ৮০ রুক্তি পরিমিত তোলার ২ তোলা, জল অর্দ্ধদের এবং শেষ অর্দ্ধপোরী; এই নিয়মে ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

কর্বাদে তু পলং যারদদ্যাৎ বোড়শিকং জলম্।
ততন্ত কুড়বং যাবভোয়মইগুণুস্তবেৎ ॥
চতুগু পুনতশ্চাদ্ধং যাবৎ প্রস্থাদিকং ভবেৎ।
কাথদেরগেপলে কুর্যাৎ প্রস্থাদ্ধং পাদশেষিতম্॥
২ মইডোলা ক্রিনির প্রান্তভোলা পর্যন্ত কাথান্তব্য ১৬ বোলগুণ জল,
সমস্বের) প্রান্ত কাথান্তব্যে ৮ গুণু জল এবং তদুর্দ্ধ প্রস্থ

প্রভৃতি কাধ্যক্রব্যে ৪ গুণ জল দিবে। কিন্তু প্রবলায়ি ব্যক্তির জন্ত শেথ্যক্রব্য ।
বিলেশিয়াবকৈ মৃষি শ্চরকক্ষ তু তৈঃ পলমৃ ।
আইচত্বারিংশতা স্থাৎ সুক্রান্তক্ষ তু মাষকঃ ॥
ব্লাদশভির্যান্যযাবৈশ্চতুঃষষ্ট্যা তু তৈঃ পলমৃ ।
এতচ্চ তুলিতং পঞ্চ-রক্তি-মাষাত্মকং পলম্ ॥
চরকার্দ্ধপলোন্মানং চরকে দশরক্তিকৈঃ ।
মাবৈঃ পলং চতুঃষষ্ট্যা যন্তবেত্তু তথেরিতম্ ॥
তক্মাৎ পলং চতুঃষষ্ট্যা মাষকৈ দশরক্তিকৈঃ ।
চরকান্মতং বৈদ্যৈ শ্চিকিৎসাস্প্যুজ্যতে ॥
প্রিমাণ ।

আয়ুর্বেদ শাস্ত্রে চরক ও স্থক্রত; এই উভয়ের লিখিত পরিমাণ অধিক প্রচলিত; কিন্তু প্রচলিত হইলেও স্থক্রতের মাত্রাপেক্ষা চরকের মাত্রা অধিক খলিয়া, চিকিৎসকগণ চরকের মাত্রাই ব্যবহার করিয়া থাকেন। এই হেতু এই প্রস্থের বিষয় কথিত হইল, তৎসমুদার চরকের মতান্ত্র্যারী মাত্রাতেই প্রয়োগ করা কর্ত্ত্রা। চরকের মতে ৩২ বলিশ মাঘকে (মাষক্রায়ে) ২ এক মাষা, ৪৮ আটিচল্লিশ মাঘায় ২ পল (৮ তোলা); স্থক্রত মতে ২২ বার মাযকে ২ এক মাষা এবং উহার ৬৪ চৌঘট্ট মাঘায় ২ এক পল (৮ তোলা)। চরক এবং স্থক্রতের মাত্রার প্রভেদ এই বে, চরকের ২০ দশ রাজ্রতে যে মাযা; প্রক্রতের ৫ পাঁচ রাতিতে সেই মাষা হয়। স্থত্রাং চরকের, অর্দ্ধপল স্থক্রতের ২ পলের সমান অর্থাৎ চরকের মাত্রা ম্বন্ধতের বিশ্বণ মাত্রার সমান। এই প্রস্থে যে মাত্রা ব্যবহৃত হইবে, তাহা ৮০ অশীতি রতিতে তোলা এবং ৬৪ চৌঘট্ট তোলায় ২ সের বুনিতে হইবে।

পরিমাণের ক্রম।

> जमरत्नु, धरमी। ৩০ পরমাশু … ১ মরীচি। ৬ ত্রসরেপু ··· ৬ মরীচি ১ সর্যপ। ৬ সর্বপ ১ যব। ১ গুঞ্জা, রক্তি। ... ১ মাবক (মাবা), ছেম, প্রামক। ১০ বজি ১ শান (অর্দ্ধকোলা), নিকাইক, ধরণ। ১ ক্যার্দ্ধ (১ ভোলা), দ্রংজ্ফণ, বটক, কোল I ১ কর্ষ (২ ভোলা), স্থবর্ণ, অন্ধ, কিঞ্চিৎ, বিড়ালপদক, পিচু, পাণিতল, উড় বর, ভিন্দুক, কবড় এই। १ कर्म 👑 🥶 अधिर्भागन (८ (ङाना), ७ ङि, अस्मिका ।

ং প্রলার্ক্তি... > পল (৮ ভোলা), মুক্তি, প্রকৃষ্ণ, চতুর্থিকা, বিৰুদ্ধ

২ পল ... > প্রস্ত (> তোলা বা ৮ কর্ব) প্রস্তি।

২ প্রস্তত ... ১ কুড়ব (অর্দ্ধ দের বা ৩২ ভোলা), অঞ্চলি, অফীমান।

২ কুড়ব ... ১ মানিকা, শ্রাব (সের), ৮ পল (৬৪ ভোলা)।

২ শরাব •... ১ প্রস্থ (/২ (মর), ১৬ পল।

🕯 প্রস্থ 🔐 🕠 আঢ়ক (৮ দের), পাত্র, কংস, ভাজন (৬৪ পল)।

8 আঢ়ক ... > ফ্রোণ (৩২ সের বা ২ 🖦 পল), ঘট, কলস, উন্মান, ললন ও অর্মাণ।

২ দ্রোণ ... > স্থ (৬৪ দের), কুন্ত ।

२ स्टर्न ... > (जानी, ज्ञह्म (जानी (>२৮ मित्र)।

৪ দ্রোণী ... > খারী (১০৯৬ পল) বা (৫১২ দের)।

১০০ পল ... ১ তুলা।

২০ তুলা ... ১ ভার (২০০০ পল)।

মাষা, শান, তিন্দুক, পল, কুড়ব, প্রস্থ, রাশি, দ্রোণ ও খারী ; ইহারা উত্তরোত্তর চতুর্গুণ।

অথ কফজ্বরে।

কেশরং মাতুলুঙ্গন্ত মধু সৈদ্ধব সংযুতম্। জিহ্বাতালু গল ক্লোম শোষে মূর্দ্ধিত্ব দাপয়েৎ। সিম্বুবারদলকাথং শোষণং হি কফেব্ধুরে॥

কফজুর-চিকিৎসা।

মাতুলুকের (ছোলক বা টাবা নেরুর) কেশর মধু ও সৈম্বব লবণ সহ মিশ্রিত করিয়া, জিহ্বা, তালু, এবং ক্লোম (পিপাসা স্থান) শুক্ষ হইলে, রোগীর মন্তকে প্রলেপ দিবে।

সিন্ধুবারদল (নিসিন্দাপাতা) ২ তোলা, জল /॥॰ অর্দ্ধ দের, শেষ অর্দ্ধ পোয়া, প্রক্রেপ । চারি আনা পরিমাণে পিপুলচ্র্ন। এই কাথ কফজজ্ব-রোগীকে নিন করিতে দিবে।

ক্ষৌদ্রোপকুলা। সংযোগঃ কাস খাস ব্যৱাপছঃ। প্লীহনং হন্তি হিক্কাঞ্চ বালানাঞ্চ প্রশস্ততে।

পিপুলচূর্ণ মধুসহ সংযুক্ত করিয়া লেহন পূর্বক সেবন করিলে, শ্বাস, কাস, জব, প্লীহা এবং হিন্না নিবারিত হয়, বিশেষতঃ ইহা বালকদিগের ককজরে জাতীব হিতকর।

অর্থ পিতজ্বরে।

একঃ পর্পটকঃ শ্রেষ্ঠঃ পিতত্ত্বে বিনাশনঃ।
কিং পুনর্যদি যুজ্যেত চন্দনোদীচ্যনাগরৈঃ॥
পিতত্ত্ব্ব-চিকিৎসা।

এক মাত্র ক্ষেত্পাপ্ডার কাথ অথবা স্বরস দারাই পিত্তম্বর বিনক্ট হর। অধিকন্ত তৎসহ রক্তচন্দন, বালা এবং শুঁঠ সমত্তে ২ তোলা, জল /। তর্জনি সের, শেষ অর্জপোয়া। এই ক্লাথ দারা যে পিতজ্বর আরোগ্য হইবে, তৎসম্বন্ধে আর সন্দেহ কি ?।

বিশ্বায়ু পর্পটোশীর ঘন চন্দন সাধিতম্।
দদ্যাৎ সুশীতলং বারি তৃট্ছন্দিত্ত্বরদাহনুৎ।
পর্পটায়ত ধাত্রীণাং কাথঃ পিতজ্বরাপহঃ॥
(বিশ্ব—শুগী। অক—বালা। ঘন—মুখা।)

শুঠ, বালা, ক্ষেত্পাপূড়া, মুথা বেণারমূল এবং ব্রক্তচন্দন এই সমস্ত দ্রব্য দমুদারে ২ তোলা গ্রহণ পূর্বক /॥• অর্দ্ধ দের জলে সিদ্ধ করিরা / ১/• অর্দ্ধ পোরা থাকিতে নামাইবে। এবং বস্তু দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া, ঐ কার্য শীতল করিয়া রোগীকে দেবন করাইলে, ছর্দ্দি (বমি), জ্বর এবং দাহ ও পোগালা নিবারিত হয়।

ক্ষেত্পাপ্ ড়া, অমৃতা (গুলঞ্চ) এবং ধাত্রী (আমলকী) ; এই কয়েকটী দ্রব্য সমুদায়ে ২ তোলা গ্রহণ পূর্ব্বক /॥• অর্দ্ধ দের জল সহ পাকপূর্ব্বক অর্দ্ধ পোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া বস্ত্র দারা ছাকিরা ঐ কাথ রোগীকে দেবন করাইলে সত্ত্বর পিত্তস্বর বিনষ্ট হয়।

> ব্যাষিতং ধন্যাকজলং প্রাতঃপীতং সশর্করম্। অন্তর্দাহং শময়ত্য২চিরাদ্ধরপ্ররুমপি। পিতজ্বরেশ তপ্তক্ষ ক্রিয়াং শীতাং সমাচরেৎ॥

পূর্ব্বদিবদ রাত্রি ২ তোলা ধনে কুটিত করতঃ / এ তর্জ পোলা জলে ভিজাইরা রাখিবে, পর দিন ঐ ব্যুষিত (বাসী) জল বস্ত্র দ্বারা ছাকিরা অপপ পরিমাণে ইকু চিনির সহযোগে পিতজ্বর-রোগীকে পান ক্রাইলে, অত্যন্ত অসন্থ অন্তর্জাহ সত্বর নিবারিত হয়।

পিতত্ত্বরে শরীর তাপিত হইয়া অসহনীয় গাত্তদাহ জন্মিলে, নিম্নলিখিত শীতল ক্রিয়া প্রয়োগ করিলে, তাহা নিঃসংশয়ে দুরীভূত হয়।

> বিদারী দাড়িমং লোএন্দধিঅং বীজপ্রকম্। এভিঃ প্রদিস্থামূদ্ধানং তৃড্দাহার্তক্য দেহিনঃ॥

বিদারী (ছমি কুমাও), লোএ (লোধ), দধিথ (করেডবেল) এবং বীজপুরক (ছোলন্দনেবুর কেশর); এই সকল সমভাগে এছণপুর্বক লাড়িনের রদের **ছিভে বাটিয়া মন্তকে (ব্রহ্মতালুতে) প্রলেপ দিলে পিওজ**রজনিত পিশাসা এবং দা**হ অতি ত্বরায় নিবারিত হয়**।

> স্বতভৃষ্টামুপিষ্টাচ ধাত্ৰী লেপাচ্চ দাহরুৎ। অমুপিষ্টেঃ সুশীতৈর্বা পলাশতক্লকৈর্দেছেৎ॥

আমলকী ঘুতে ভর্জন করিয়া (ভাজিয়া) অল (কাঁজি) সহ পেষণপূর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে পিতজনিত দাহ নিবারিত হয়।

পলাশ হক্ষের কোমল পাতা কাঁজির সহিত বাটিয়া পিপাসিত ও দাহার্দ্ধ ব্যক্তির মন্তকে প্রলেপ দিলে তৃষ্ণা ও দাহ (আভ্যন্তরিক ও বাহ্নিক জ্বালা) নিবারিত হয়।

> বদরী-পল্লবোথেন ফলেনারিউকন্স চ। কালেয়চন্দনানন্তা যঞ্চিবদরকাঞ্জিকৈঃ।

সন্ধতিঃ স্যাচ্ছিরোলেপস্থাদাহার্তিশান্তয়ে ॥

বদরীপল্পব (কুলপাতা) প্রথমতঃ অম্পপরিমাণে কাঁজির সহিত পেষণপূর্বক, পরে অধিক পরিমাণে কাঁজির সহিত মিশ্রিভ করিয়া মন্থন করিতে
থাকিবে। মন্থন করিতে করিতে যখন কেণা উঠিবে, তখন সেই ফেণা গাত্তে
মর্দন করিলে পিত্তজনিত জ্বালার শান্তি হয়।

কুলপাতার সায় নিম্পত্তের ফেণা প্রস্তুত করিয়া গাত্তে লেপন করিলেও (পিত্তজ্বজ্বনিত জ্বালার উপশম হয়।

কালের (কালিরা কাষ্ঠ), রক্তচন্দন, অনস্ত (অনস্তমূল), যফি (যফিমধু) এবং কুলফল ; এই দকল বস্তু সমভাগে এহণপূর্বক কাঁজির সহ বাটিরা মন্তকে প্রলেপ দিলে পিত্তত্বরজনিত তৃষ্ণা ও জালার উপশাস্তি হইরা থাকে।

উত্তানস্থপ্রস্য গভীরতাত্ত্ব-কাংস্যাদি পাত্রং প্রণিধায় নার্ভো। তঠ্কামুধারা বহুলং পতন্ত্রী-নিহন্তি দাহং ত্বরিতং সুশীতা॥

জ্বিত ব্যক্তিকে উত্তানভাবে (চিৎক্রিয়া) শারিত করিয়া, তাহার নাভিদেশে তাম, কাংস্থাদিপাত্র (বাটী, ঘটা জ্বাদি) স্থাপনপূর্বক. ঐ পাত্রে উচ্চস্থান ইটুত অধিক পরিমাণে শীতল জল ঢালিবে। ঐ জল উন্ধ হইলে তাহা কেলিয়া দিয়া পুনর্বার শীতল জল ঢালিবে, ঐ প্রকার তিন চারিবার করিলে অতি সম্বর পিত্তজ্বর-জনিত অসহ জ্বালাও নিবারিত হইবে, তাহাতে কিছুকাত্র সংশার নাই। জল ঢালিবার সময়ে অত্যন্ত সাবধানে জলা ঢালিবে, যেন বিন্দুমাত্র জল রোগীর গাত্রে পতিত না হয়।

> ন পিতেন বিনাদাহো ন কম্পো বায়ুনা বিনা ৷ বাভট্য্য প্রতিজ্ঞেরং বিনাজীর্ণেন নুগদঃ ॥

বাভট বলিয়াছেন ধে পিত ব্যতীত দাহ, বায়ু ব্যতীত কম্প এই অজী-ৰ্ণতা দোষ না ঘটিলে কিছুতেই কোন বোগই উৎপন্ন হইতে পারে না । ১

অথ বাতিকজ্বরে।

নাগরং পিপ্পলীমূলং গুড়্চী বাতিক**ন্ধ্**রে। দদ্যাৎ পাচনকং পূর্ব্বং লিঙ্গে সপ্তম-বাসরে ॥

শুঁঠ, পিপুলমূল এবং গুলঞ্চ; এই দ্রব্যত্তর সমুদায়ে ২ হুইতোলা গ্রহণপূর্বক /॥• অর্দ্ধদের জলে পাক করিতে থাকিবে; যখন দেখিবে / ৪ ই
ছটাক মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন চুল্লী হইতে নামাইরা, পরিষ্কার বস্ত্র দ্বারা
ছাঁকিরা দিটে বাদ দিয়া উহার ক্লাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথ (পাচন)
বাতিকজ্বরে সপ্তমদিবদে রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

রাস্না রক্ষাদনী দারু সরলং সৈলবালুকম্। ক্যায়ঃ শর্করা ক্ষোদ্রযুক্তো বাত জ্বরাপহঃ॥

(রক্ষাদলী বন্দা, পরগাছা বা চিলে। এই গাছ আত্র প্রস্তৃতি রক্ষের উপরি উৎপন্ন হয়, কদাচ মাটিতে হয় না এবং শীত ঋতুতে ইহার রক্তবর্ণ পুষ্প হয়। দাক-দেবদাক। সরল-সরলকাঠ। এলবালুকা-গন্ধদ্রব্য বিশোষ।কৌজ-মধু)।

রাম্বা, পরগাছা, দেবদারু, সরলকার্চ এবং এলবালুকা; এই কয়েকটী দ্রব্য সমৃদায়ে ২ ছুইতোলা গ্রন্থপূর্ব্যক /॥• অর্দ্ধসের জলে সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইবে। এই পাচন সহ সিকিতোলা ইক্ষুচিনি ও সিকিনোলা মধু মিশ্রিত করিয়া বাতজ্বরীকে সেবন করিতে দিবে।

প্রক্রেপঃপাদিকঃ ক্বাথ্যাৎ স্নেছে কল্কসমো মতঃ।
পরিভাষা মিমামন্যে প্রক্রেপেপুর্টেরে যথা॥

কর্ষশ্চু র্ণস্থ কল্কস্য গুড়িকানাঞ্চ সর্ব্বশঃ।

দ্বশুক্ত্যা স লেঢ্ব্যঃ পাতব্যশ্চ চতুক্র্বিঃ।

মাত্রাক্ষ্যে স্থতাদীনাং স্বেছকাথেয়ু চূর্ব্বং॥

কাথে (পাচনে) যে ত্রব্য প্রক্রেপ দিতে হয়, তাহার মাত্রা কাথের চারিভাগের একভাগ মাত্র। এবং ছত তৈলাদি লেহ বস্তুতে একপ দিতে হইলে, তাহা কল্কের সমান দিবে। কিন্তু কোন শুদ্ধ চুর্ণাদি ত্রব্য হাদ প্রভৃতি তরল ত্রব্য সহ লেহন বা পান করিতে হইলে; তবে চুর্ণ ত্রব্য হাদ একপল (৮ তোলা) হয় এবং উহা ছতাদির সহিত লেহন করিতে হয়, তাহা হইলে য়ত, মধু প্রভৃতি তরলবস্তু শুক্তি মাত্রায় (অর্থাৎ চুর্ণ ত্রব্যের অর্কেক পরিমাণে ৪ তোলা) দিবে এবং পান করিতে হলৈ মতাদি ত্রব্য ত্রের চতুশ্রণ পরিমাণে দিবে। কিন্তু একণে এবন্ধি মাত্রায় ঔষধ ব্যবহৃত হয় না ক্রিপ্রশাৎ ক্লাথ্যবস্থ সমুদায়ে ২ তোলা, প্রক্রেপবস্তু অর্কতোলা এবং

বৈশ্বৰ, জীয়া আদি দ্বৰা ২।০ নাধার অন্ধিক পরিষাণে ব্যবহার করিতে হয়। কারণ-অধুনা মানবগণের ধার্যাদি পূর্বকালাপেকা ক্ষীণ হইরাছে, স্তরাং উবধ মাত্রার অধিক বশতঃ তাহা অসহ বিধার অজীর্ণ হইরা অপকার ঘটাইতে পারে।

বিলাদি পঞ্চূলী চ গুড়্চ্যামলকে তথা।
• কুন্তুমুক্তমান হেষ কষায়ো বাতিকে জ্বরে॥

ংলা, শোণা, গান্তীর, পাঞ্চল, গণিয়ারী, গুলঞ্চ, আমলকী ও ধনিয়া। এই সকল দ্রব্য সমস্তে ২ ছুইতোলা গ্রহণ পূর্ব্বক অর্ধদের জল সহযোগে সিদ্ধ করিয়া অর্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া, সেই কাথ রোগীকে পান করিতে দিলে বাতিকজর বিন্ত হয়।

পঞ্চালঃ ।—

পিপালী পিপালীমূল চব্য চিত্রক নাগরম্। দীপনীয়ঃ স্মতো বর্গঃ কফানিলগদাপইঃ॥ পঞ্জোল পাচন।

পিপুল, পিপুলমূল, চৈ, রক্তচিতা ও ওঁঠ; এই ৫ পাঁচটী দ্রব্য একত্রিত হইলে পুঞ্চকোল পাচন বলা যায়। ইহা সমূদায়ে ২ ছুইতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলের মহিত পাক করিয়া অর্দ্ধপোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া জ্বরোগীকে দেবন করিতে দিবে। এই পঞ্কোল পাচন অগ্রি-সম্পীপক এবং কফ ও বায়ুনাশক। বিশেষতঃ এই কাপ বালকদিগের পক্ষে অভীব উপকারী।

আরগ্বধানিঃ।-

আরথণ এন্থিক মুস্ততিক্তা-হরীতকীভিঃ কথিতঃ কথায়ঃ। সাথে সমূলে কফবাতযুক্তে-জ্বরে হিতো পাচনো দীপনশ্চ॥

আরথধানি পাচন।

আর্থধ (সোঁচালফল), এছিক (পিপুলমূল), মুধা, ভিক্তা (কটুকী)
এবং হরীতকী এই করেকটাকে আরধধানি বলা যায়। এই সকল দ্রব্য
সমস্তে ২ হুইতোলা মাত্রায় এহণ পুর্বাক অপ্প কুটিত করতঃ /॥• জলসহ সিদ্ধ
করিয়া চতুর্ভাগাবশিক্ট থাকিতে নামাইয়া ক্বাথ এহণ করিবে। এই আরধধানি
পাচন বেমনা এরং কফ ও বাতসংযুক্ত জ্বরের সামাবস্থার প্রযুক্ত হইলে আমরনের (অপ্রকর্নের) পরিপাক ও জাঠর অ্যিকে সন্দীপিত করে।

গুড়ু চী নিষধন্যাকং পদ্দকং রক্তচন্দন্য।

श्रीम-विद्यामनिः।

এষ সক্ষরান্ হত্তি গুড়্ চ্যাদিস্ত দীপনঃ। কলাসারোচকচ্ছদিপিপাসাদাহনাশনঃ॥

গুড় চ্যাদি পাচন।

গুল্ঞ, নিম্ন, ধনিয়া, পদ্মকাষ্ঠ ও রক্তচন্দন; এই পাঁচটী দ্রবাকে গুড়ুচ্যাদিগণ বলে। ইহা সমস্তে বছুইতোলা, জল অর্জনের এবং অবশিষ্ট অর্জপোয়া। এই গুড়ু চ্যাদি পাচন দর্কপ্রকার জর-নাশক, অগ্নিবর্দ্ধক এবং ছলাস (বমনেজ্য), অরোচক, ছর্দি, পিপাসা ও অন্তর্দাই বিনাশ করে।

রহদ্ওভূ চ্যাদিঃ।—

গুড়্ চী চন্দনং পদ্মং নাগরেক্রযবাসকম্।
অভয়ারশ্বধোদীচ্য পাঠা ধান্যক রোহিণীঃ॥
কষায়ং পায়য়েদেত পিপেলীচুর্ণ-সংযুত্য্।
কাসখাসহরং তক্রী পিপাদা দাহনাশন্ম্॥
বিশুত্রানিলবিষ্টম্ভতিদোধশমনং প্রম্।
গুড়ু চ্যাদিগণো ছেষঃ পাচনো দীপনঃ পরঃ॥

इस्ता ् जुन्नामि शान्तः।

শুড় টী, রক্তচন্দন, পদ্ম (পদ্মকাষ্ঠ), নাগর (শুণ্ঠী), ইন্দ্র (ইন্দ্রয়ব),
যবাসক (হরালভা), অভয়া (হরীতকী), সোণালুফল, উদীচা (বালা), পাঠা
(আকান্দীলতা), ধাম্মক (ধনে) এবং রোহিণী (কটুকী); এই সকল
দ্রব্যকে রহদা ড় চাদিগণ বলে। এই সকল বস্তু সমুদায়ে ২ হইডোলা লইয়া
অর্ধসের জল সহ সিদ্ধ করিয়া অর্ধপোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া কাথ
গ্রহণ করিবে। এই গুড় চাদি পাচন চারি আনা পিপুল চুর্গ সহযোগে সেবন
করিলে কাস, স্থাস, তন্দ্রা, পিপাসা ও দাহ বিনাশ করে। এবং বিঠা, মৃত্ত ও
বায়ুর বিষ্টম্ভনাশ, তিদোঘের (বাড, পিত্র, শ্লেখার) প্রশমন, আমরসের
পরিপাক ও অ্যার সন্দীপন করে।

ভূনিয়াদিঃ।—

ভূমিষং চন্দনং মুক্তং পটোলং কটুরোহিণী। কণ্টকার্যয়তা ভার্গী নাগরেন্দ্রযাসকম্। কষারং পারয়েদেতৎপিত্রশ্বেজ্রাপহম্। দাহত্ফারুচিচ্ছদিকাসম্বৎপার্যশূলরুৎ॥

ভূনিস্বাদি পাচনঃ

ভূনিষ (চিরাভা), রক্তচন্দন, মুখা, পট্টোলপত্র (পল্ডা), কটুরোহিনী (কট্কী কুটকারী, অযুভা (গুলঞ্চ), ভার্গী (বামনহাটী), গুঁঠ, ইন্দ্রবর এবং মুক্তা ; এই সকল ত্রবাকে ভূনিয়াদি বলে। ইহা সমস্তে ২ মুইভোলা, ্জন অর্দ্ধবিদ্ধ, শেষ অর্দ্ধপোয়া। এই কাথ পান করিলে পিত্তমেম্মজর এবং শাহ, তৃমুগ, অক্টি, বনি, কাস, হদয়বেদনা এবং পার্যসূল নিবারিত হয়।

मभगूलग्।-

বিলু খোণাক গাড়ারী পাটলা গণিকারিকা।
দীপনং কুকবাতত্বং পঞ্চুলমিনং মহৎ ॥
শোলপর্নী পৃশ্বিপর্নী রহতীদ্বয় গোক্ষুরম্।
বাতপিত্তহরং র্ষাং কনীয়ঃপঞ্চুলকম্॥
উত্যং দশ্যুলস্তু সন্নিপাতত্বরাপহম্।

কানে শ্বানে চ তন্ত্ৰায়াং পাৰ্শ্লে চ শশুতে । পিংপলী-চুৰ্ণ সংযুক্তং কণ্ঠছদ্ গ্ৰহ্মাশন্ম ॥ দশমুল পাচন।

মহৎ পঞ্চমূল।—বিশ্ব, খ্যোণা, গাস্তারী, পাটলা (পাকল) এবং গণি-কারিকা (গণিরারী); এই পাঁচটীকে মহৎ পঞ্চমূল বলা যায়। ইছা সমস্তে ২ তুইতোলা, জল অর্জসের এবং শেষ অর্জপোয়া। এই কাথ অগ্নিদীপক এবং কক ও বায়ুনাশক।

স্বাস্থ্য পঞ্চমূল।—শালপাণী, পৃশ্বিপণী (চাকুলে), ব্যাকুড়, কন্টকারী ও গোকুর; এই ৫ পাঁচটীকে স্বল্প পঞ্চমূল বলে। ইহা সমস্তে ২ হুইতোলা, জ্বল জ্বৰ্জনের এবং শেষ অৰ্জপোয়া। এই কাথ সেবনে রোগীর বাত ও পিন্ত নাশ ্রবং বলবর্জন করে।

দশমূল। —উপযুর্গক্ত মহৎ পঞ্চমূল এবং স্বন্পে পঞ্চমূল, এই হুইটি একত্রিত করিলে দশমূল পাচন বলে। এই দশমূল পাচন সন্নিপাত (ত্রিদোষজ্ঞ)

ক্ষির বিনাশক এবং শ্বাস, কাস, তন্ত্রা ও পার্যপূলে স্থপ্রশস্ত। অধিকন্ত পিপুলের চুর্গ সহযোগে দশমূলের কাথ পান করিলে কণ্ঠবেদনা ও অদ্যবেদনার
শান্তি হয়।

নবাঙ্গঃ ।---

বিশ্বায়তাক ভূনিষৈঃ পঞ্চ্লী, সমন্বিতঃ।
কৃতঃ ক্ষায়ো হন্ত্যাশু বাতপিভোদ্ধবং জ্বম্॥
নবাদ।

বিশ্ব (শুঠী), গুলঞ্চ, অন্দ (মুখা), চিরতা ও পঞ্চমূলী (শ্বণ্প পঞ্চমূল) অর্থাৎ শালপাণী, চাকুলে,ব্যাকুড়, কণ্টকারী এবং গোচ্ছর; এই ৯ নর নী দ্রবাদ একত্রিত হইলে নবাল বলা যায়। ইহা সমস্তে ২ হুইডোলা, জল অর্জনের এবং শেব অর্জণোয়া। এই ক্লাথ সেবন করিলে বাতগৈত্তিক ক্লব সম্ভব্ধ বিন্ত হয়।

চতুৰ্দশাসঃ।— চিনন্ধনে বাতকফোলণে বা

ত্রিদোষজে বা দশমুলমিখাঃ। কিরাততিক্তাদিগণঃ প্রযোজ্যঃ-শুদ্ধার্থিনে বা ত্রিরতা বিমিশ্রঃ॥

চতুর্দশাঙ্গ।

দশমূল (বেল, শোণা, গান্তারী, পাকল, গণিয়ারী; শালপাণী, চাকুলে, গোকুর, কন্টকারী ও ব্যাকুড়) এবং কিরাভিজ্ঞাদিগণ (চিরভা, শুঠ, মুখা ও গুলঞ্চ); এই ১৪ চৌদ্দটী দ্রব্যকে চতুর্দশান্ত বলে। ইহা সমুদায়ে ২ ছই-ডোলা প্রহণপূর্বক অর্দ্ধমের জল সহযোগে পাক করতঃ অর্দ্ধপোরা থাকিতে নামাইয়া কাথ প্রহণ করিবে। এই কাথ বাতক্ষোল্ণ চির (বহুকালীয়) জ্বরে এবং ত্রিদোযজ্ঞ (সারিপাতিক) জ্বর প্রশস্ত । পরস্ত রোগীর উদরে মলবদ্ধ থাকিলে, কোঠ শুদ্ধির জন্ম ত্রিয়তা (ভেউড়ী) চূর্গ ছই আনা বা চারি আনা মাত্রায় উক্ত কাথের সহিত মিশ্রিত করিয়া রোগীকে প্রয়োগ করা যাইডে পারে।

যে।ড়শাঙ্গঃ।— - ১৯ — ১৯ চন

ত্র্যমণ দশমূল শঠী ভার্গী ছিল্লোন্তবঃ কাথঃ। পীতঃ শমরতি সহসা ভ্রঞারং সন্নিপাতহরঃ॥
শোদশাদ্ধ।

ত্র্যণ (শুঠ, পিপুল ও মরিচ), দশমূল (বেল, শোণা, পাফল, গণি-মারী, গাস্তারী, শালপাণী, চাকুলে, গোকুর, ব্যাকুড় ও কণ্টিকারী), শঠী, ভার্গী (বামনহাটী) এবং ছিন্না (ছিন্নরহা অর্থাৎ গুলঞ্চ); এই ১৬ বোলটী দ্রব্যকে ষোড়শাঙ্গ বলে। ইহা সমস্তে ২ হুইভোলা, জল অর্ধ্ধসের এবং শেয অর্ধপোরা। এই কাথ দেবন করিলে নান্নিপাতিক জ্ব সহসাই (অভি-শীত্রই) আরোগ্য হয়।

সপ্তনশাঙ্গঃ।—
ভাগীপুক্রমূলক রামা বিলুং ষমানিকা।
নাগরং দশমূলক পিপুলী চাপ্সু সাধ্যে ॥
সরিপাতজ্বরে দেয়ং হংপার্থানাহশূলিনাম্।
কাস্থাসাগ্রিমনত্বং তন্দ্রী চ বিনিবর্ততে॥
সপ্তদশাদ্ধ।

ভার্কী (বামনহাটী), পুরুরমূল (অভাবে কুড়), রান্ধা (অভাবে পর গাছা), বিলু এমানিকা (জৈন), নাগর (ওঁঠ), পিপেলী এবং দশমূল (বেল, শোলা, পারুল, গানিয়ারী, গাস্তারী; শালপানী, চাকুলে, ব্যাকুড় ক্রিকারী ও গোকুর); এই ১৭ সপ্তদশটী বস্তু একত্রিত করিলে সপ্তদশাল বলা বার্যাইহা সমত্তে ২ তোলা, জল অর্দ্ধনের এবং অবশিষ্ট অর্দ্ধপোয়া।

कर मिन्नाक काथ मात्रिभाठिक खुद्ध श्रामा कतित्व क्षाप्तमा, भार्यभून, ्र ष्यानार, काम, याम, ष्यामिमाना अवः उत्सा निवातिङ रत्र ।

পিত্রগ্রেছরোইফাদশাঙ্গঃ।—

নিম্ব দারু দশমূল মহৌষধাবা-তিক্তেন্দ্রবী জধনিকেভকণা-ক্ষায়ঃ I তন্দ্রী প্রলাপ কসনারুচি মোহ-খাসাদিযুক্তমখিলং জুরমাণ্ড হন্তি॥

পিত্তশেষ্যহর-অফীদশাল।

निच (निमछाल), माक (प्रविमाक), मभगूल (रवल, भौगी, शिकल, গণিয়ারী,গাস্তারী, শালপাণী, চাকুলে, গোকুর,কণ্টিকারী এবং ব্যাকুড়),মহৌ-ষধ (৬ ঠ), অন্দ (নুথা), ডিক্তা (চিরতা),ইন্দ্রবীজ (ইন্দ্রেষ্ব), ধনিকা (ধনে)এবং ইভকণা (গঁজপিপ্পলী); এই ১৮ অফাদশটী দ্রব্যকে অফাদশান্ত বলে। ইহা ममूनारम २ घ्रष्टेरां ना धर्म पूर्विक /॥• अर्फ मित खरन शाक करित्र शाकित ; যখন দেখিবে / ১০ ছই ছটাক মাত্ৰ অবশিষ্ট আছে, তখন চুল্লী হইতে नामाहरा এবং रख द्वाता हांकिया मिटि यान निया काथ अहन कतिरा । अह কার্থ পিত্তশ্লেদ্য-জরে প্রযোজ্য। আর ইহা সেবন করিলে তন্দ্রা, প্রলাপ, কাস, অফচি, মোহ এবং শ্বাদাদি সংযুক্ত দকলপ্রকার জ্বরই আশু বিনম্ট হয়।

মুন্তানিঃ 1-

মুস্তামলকে বিশ্বৌষধং কণ্টকারী চ কাণঃ। পীতঃ কণাযুক্তঃ সমধু বিষমজ্বরং হন্তি॥ विवयक्तरत-मूखानि।

मूथा, नामक, राष्ट्री अनः कल्काती ; अहे करामकी क मूखामिगंग रतन । हेरा সমুদারে ২ ছইতোঁলা গ্রহণপূর্বক অর্ধদের জলে সিদ্ধ করিয়া অর্ধপোয়া অবশিষ্ট রাখিয়া কাথ এহণ করিবে। এই কাথ দিকিতোলা পিপুলচুণ ও দিকিতোলা মধু সহু দেবন করিলে বিষমজ্বর বিনষ্ট হয়।

> मद्शिषधानिः।— শহোষধামতামুক্তচন্দনোশীরধান্যকৈঃ।

কাথস্ততীয়কং হন্তি শর্করামধু-যোজিতঃ॥ তৃতীয়কজ্ঞরে-মহৌষধাদি।

শুঠী, গুলঞ্চ, মুথা,বক্তচন্দন,বেণারমূল এবং ধনিয়া ; এই সকল বস্তু সমস্তে •২ ছইভোলা লইয়া অর্ধদের জল সহযোগে পাক করিয়া অবশিষ্ট / এ অর্ধ-পোরা থাকিতে নামাইরা কাথ এহণ করিবে। এই কাথ সিকিভোলা ইস্কুচিনি ূ পাবং সিকিভোলা মধু সহযোগে সেবন করিলে ভূতীয়ক জুর বিন্ট হয়।

রাহ্মাদিঃ।--

রাত্মাধাতী ত্রিরা দারু পথ্যা শাগরসাধিতঃ।
সভামধুযুতঃ কাথ শ্চাতুর্থক-নিবারণঃ।
চাত্র্থকজ্বে-রালাদি।

রাস্থা, আমলকী, শালপাণী, দেবদাক, হরীতকী এবং শুঠ; এই সকল বরা একত্রে ২ ছইভোলা মাত্র লইনা অর্ধদের জলের সহিত পাক করিছে নারস্ত করিবে। যখন দেখিবে জল শুষ্ক হইনা চতুর্থাংশ মাত্র অর্থাৎ অর্ধ-পান্না অবশিষ্ট আছে, তখন উছা চুল্পী হইতে নামাইবে এবং পরিষ্কার বস্ত্র-বারা ছাঁকিয়া নিটে বাদ দিনা কাথ প্রহণ করিবে। এই কাথ সিকিভোলা নিতা (ইক্টনি) ও সিকিভোলা মধু সহ প্রযুক্ত হইলে চাতুর্থকজ্বর নিবা-বিত হয়।

তাথ জীর্ণজ্বরে।

নিদিধিকাদিঃ।—
নিদিধিকা নাগরকায়তানাং
কাথং পিবেনিপ্রেতিপিপালীকম্।
জীর্ণজ্বরারোচক কাস শূলখাসাগ্নিমান্য জ্বরপীড়িতেয়ু॥
হস্তার্দ্ধগামরং প্রায়ঃ সারত্তেনোপযুজ্যতে॥
জীর্ণজ্বে (পুরাতন্জ্বে)-নিদিধিকাদি।

নিদিধিকা (কন্টকারী), শুগী ও গুলঞ্চ; এই মিলিত দ্রব্য ত্রেরকে নিদিধিকাদি বলে। ইহা সমস্তে ২ সুইতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলে সিদ্ধ করিরা চতুর্ভাগাবশিষ্ট থাকিতে নামাইরা ক্লাথ-গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথসিকিতোলা পিপুসচ্ব সহযোগে জীব জ্বরে প্রয়োগ করিলে, অক্টি, কাস, শূল, শ্বাস, অগ্নিমান্দ্য এবং জর শীদ্রেই নিবারিত হয়। পারস্ত এই ক্লাথ সন্ধ্যাকালে দেবন করিলে গ্রীবার উদ্ধাত পীনমাদি রোগসমূহ বিনষ্ট হয়।

ভার্গ্যাদিঃ।-

ভার্গ্যব্দ পুক্ষরক পর্পট শৃঙ্গবের-পথ্যা কণামু দশমুলকতঃ ক্ষায়ঃ। সদ্যো নিহন্তি বিষমন্বরসন্নিপাতান্। জীর্ণব্দরশ্বস্থা বহিন্দাদান্যরোগান্॥

ভাগী / ৰামনহাটী), ন্ৰা প্ৰক্ৰমল (অভাবে কৃড়), কেতৃপাপভা, শল-

ভূতীয়-অধানঃ [

বের, (৩%), হরীতকী, কণা (পিপুল), বালা ও দশমুল (বেল, শোণা, পাকল: গণিয়ারী, গান্তীর, শালপাণী, চাকুলে, গোকুর, ব্যাকুড়, কন্টকারী), ইহাদিগকে ভার্ম্যাদি বলে। ইহা সমস্তে ২ হুইডোলা গ্রহণপূর্বক অর্ধসের জলসহ পাক করিতে আরম্ভ করিবে। যখন দেখিবে অর্ধপোয়া মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইবে এবং বস্ত্র দ্বারা ছাঁকিয়া সিটে বাদ দিয়া ক্লাথ গ্রহণ করিবে। এই ভার্ম্যাদি পাচন সদাই বিষমজ্বর, সান্নিপাতিকজ্বর, পুরাত্তনজ্বর, শোধ, ভার্মি মান্য এবং অভান্সরোগ নিবারণ করে।

অপরভার্গ্যাদিঃ !—

ভার্গীবাসা গুড় চী চ পিপেলী মুক্তকন্তথা।
পৌক্ষরং নাগরকৈব পর্পটং দশমূলকম্॥
এষ ভার্গাদিকঃ খ্যাতঃ কষায়ো জ্বনাশনঃ।
প্লীহানং যক্তং গুলামুদরং বিষমজ্বরং।
জ্বরং ধাতুগতং হন্তি কাসখাসাদিসন্তবম্॥
ভাগর ভার্যাদি পাচন।

বামনহাটী, বাসক, গুলঞ্চ, পিপ্পালী, মুখা, পুষ্করমূল (অভাবে কুড়), শুঠী, ক্লেত্পাপ্ডা, বেল, শোণা, পাস্কল, গণিরারী, গান্তীর, শালপাণী, চাকুলে, গোক্ষ্র, ব্যাকুড় এবং কণ্টকারী; এই সকল দ্রব্য একত্তে ২ হুইডোলা মাত্র লইয়া /॥• অর্ধনের জলের সহিত গিদ্ধ করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে উহার চতুর্থভাগ অর্থাৎ হুই ছটাক মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইবে এবং বস্ত্র দ্বারা হাঁকিয়া ক্লাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথদ্বারা প্লীহা, যক্রৎ, গুল্ম, উদর, বিষমজ্বর এবং শ্বাস, কাসাদি সংযুক্ত সন্ততাদি ঘোরতর ধাতুগতজ্বর সম্বর আরোগ্য হয়।

मामानिः।-

দাসী দারুকলিঙ্গলোহিতলতাশ্যামকপাঠাশঠী।
শৌগুনুনীরুকিরাতকুঞ্জরকণাত্রায়ন্তিকাপদ্ধকৈঃ॥
বজ্ঞী ধান্যকনাগরাক্ষদরলশিগ্রম্বুসিংহাশিবাঃ।
বুদুর্ত্ত্রী পর্পট দর্ভমূল কটুকানন্তাম্বতাপুক্ষরৈঃ॥
ধাতৃস্থং বিষমং ত্রিদোষজনিত মৈকাহিকং দ্ব্যাহিকম্।
শীতং হন্তি ক্যোদ্রবঞ্চ বিষমং চাতুর্থকং ভৌতিকম্।
কামশোকসমুদ্ধবঞ্চ বিবিধং তৃট্ছদ্বিযুক্তং নৃণাম্।
মোগোহয়ং মুনিভিঃ পুরা নিগদিতো জীনজ্বরে তৃশুরে ॥
দাস্থাদি পাচন।

मानो (नीलानाको), मारू (एनमारू), कान्य (देखवर), लाहिएमछ।

(মঞ্জি), প্রামক (প্রামালতা, অভাবে অনন্তমূল), পাঠা (আব্ কিন্তুল), পাঠা (পিপ্লাল), বেণার্মূল, চিরভা, কুঞ্জরকণা (গজপিপুল), আমন্তিকা (বলালতা), পদ্মকাঠ, বজী (হাড়ভাঙ্গা). ধনে, শুঠ, মুখা, সরলকাঠ, শিশু (সজিনার ছাল), বালা, সিংহা, (বাাকুড়), শিবা (হরীতকী), ব্যাত্রী (কট-কারী), কেতৃপাপড়া, দর্ভ্যুল, (কুশমূল). কটুকা (কট্কী), অনন্তা (অনন্তমূল), গুলঞ্চ এবং পুষ্ণরমূল (অভাবে কুড়); ইহাদিগকৈ দাস্যাদিগণ বলে। এই সকল দ্রব্য মিলিত ২ হইতোলা গ্রহণপূর্কক অর্দ্ধদের জলের সহিত পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে জল ওছ ইইয়া অবশিষ্ট অর্জ-পোয়া মাত্র আছে, তখন চুলী হইতে নামাইবে, এবং একখানি পরিষার বন্দ্র দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া উহার কাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্যায় সেবন করিলে থাতুগত বিষমজর, ত্রিদোষজ (সালিপাতিক) জর, ঐকাহিক জর, দ্বাহিকজ্বর, শীতজ্বজ্বর, হাতুক্ষরজনিত জর, বিষমচাতুর্ধক্ত্বর, ভৌতিকজ্বর, কামজ্বর, শোকজ্বর, ত্রুজাজনিতজ্বর, ছর্দ্দিজ্যজ্বর এবং অ্যায় বিবিধ প্রকার জ্ব বিনম্ট হয়। এই যোগটা পুরাকালে মূনিগণ কর্ত্বক ছন্তুর, জীর্ণজ্বর ক্থিত হইনাছে।

বকুলমতে-প্লীহন্থরে। কণাচূর্ণং মরুযুক্তং প্লীহন্ধরবিনাশনম্। বুক্কা গ্রং যক্তং পাণ্ডু ক্রিমিশোথহরং প্রম্॥ বকুলমতে প্লীহাজ্বে।

দিকিতোলা পিপুলচ্ব দিকিতোলা মধুনছ দেবন করিলে প্লীছাজ্বর, বুকাথা (অঞ্চমান), যকুৎ, পাণু, জিমি এবং শোথরোগ নিবারিত হয়।

> প্লীহোদরে চ শ্বরথো জ্বেরু বিবিধেরু চ। বাতরক্তে মহাঘোরে শুক্রস্তম্ভে ক্ষরোদ্ধেরে। শশুতে শর্করা শ্রেষ্ঠা গুড়ু চীদত্ত্বসম্ভবা॥ মূলং জয়ন্ত্রাঃ শিরদা ধ্বতং সর্বজ্বরাপহম্।

গুলঞ্চের চিনি (পালো) প্রত্যন্থ সিকিডোলা কিয়্ৎ পরিমাণে হ্রন্ধ, মধু, অথবা ইক্লুচিনি সহযোগে সেবন করিলে প্লীহা, উদর, শোথ, বিবিধপ্রকার জার, বাতরক্ত ও ধাতুক্তর জনিত শুক্রস্তম্ভ নিবারিত হয়।

জয়ন্তীর মূল স্বত্তধারা মন্তকের কেশে বন্ধনপূর্বক ধারণ কার্তিল সর্ব-প্রকার জ্বর বিনস্ট হয়।

> কর্ম দাধারণং জন্থাৎ তৃতীয়ক চতুর্থকো। আগন্তরনুবন্ধো হি প্রায়দো বিষম স্থরে॥

চিকিৎসক্ষণ তৃতীয়ক ও চাতুর্থক অবে সাধারণ ক্রিয়া (দৈবব্যপাঞ্জন অর্থাৎ ক্র্যাহাদি শান্তির নিমিত্ত স্বস্তায়ন, জপ. হোগাদি, বলি, উপহার এবং ক্রিক্রাপাল্রয় অর্থাৎ বিকৃত দোষের (বায়ুপিতাদির) উপশমার্থে ক্রাপ্ত,চুর্নাদি; বিষ্ট উভরীবিধি চিকিৎসাই) প্রয়োগ করিবেন। যেতেতু বিরম্ভরে প্রারহী লগিজজনর অমুবদ্ধ থাকে অর্থাৎ অভিচার, অন্ত্রাপাদি দোবের সংঘটন দ্বারাই অধিক সময়ে বিষমজ্বর উৎপন্ন হয়। একারণ বিষমজ্বর উত্পূলক সাধারণ (জ্বরনাশক পাচনাদি) চিকিৎসা ধারা প্রতীকারের আশা করা অমন্তব্য স্ত্রাং অভিচার, অভি-শাপাদি প্রধংসের নিমিত্ত জ্বপ, ছোম ও বলি উপছারাদি প্রয়োগ করি-বেন।

কাকজ্ঞা বলা শ্যামা ত্রহ্মদণ্ডী ক্বতাঞ্জলিঃ।
পৃথক্পর্নাপামার্গস্থা ভৃত্মরাজাইমম্॥
এষামন্যতমং মূলং পৃষ্যেণোদ্বত্য যত্নতঃ।
ক্রক্তস্ত্রেণ সংবেষ্ট্য বদ্ধবৈষণাহিকং জয়েৎ॥

কাকজন্তবা (কেউয়াঠেকা), বলা (বেডেলা), শ্রামালতা, ব্রহ্মদণ্ডী (বামনহাটী), কৃতাঞ্জলি (লজ্জাবতীলতা),পৃথক্পর্ণী (চাকুলে), অপামার্গ (আপাঙ্গাছ) এবং ভ্রুরাজ, এই ৮টী স্রব্যের যে কোন একটীর মূল পুষাানকতে তুলিয়া রক্তবর্ণ স্তত্তদারা বেউনপূর্বক রোগীর মন্তকে, গলে অথবা হত্তে বকুন করিয়া দিলে ঐকাহিক জ্ব (পালাজ্ব) বিনষ্ট হয়।

অপামার্গজটা কট্যাং লোহিতৈঃ সপ্ততম্ভ্রভিঃ।
বদ্ধা রবৌ দিনে তুর্ণং জ্বরং হন্তি তৃতীয়কম্॥
অপামার্গের মূল ৭ সাডগাছি লোহিত স্থত্ত দারা রবিবারে কটিদেশে
বন্ধন করিলে তৃতীয়ক জ্বর অতিশীত্তই নিবারিত হয়।

সমুদ্রফোভরে ভীরে কুমুদো নাম বানরঃ। তম্ম সারণ মাত্রেণ মুঞ্চত্যকাহিকং জ্বরম্॥

সমূদ্রের উত্তর তীরে "কুমূদ" নামক একটী বানর বাস করিয়া থাকে, একবার মাত্র তাহার নাম সম্মরণ করিলে ঐকাহিক জ্ব হইতে মুক্ত হওয়া বাম।

এতনুদ্রং জরহরং ধারণাৎ শিরদি প্রবম্।—
"ওঁ ক্ষং হুং ঋ কঃ হুং ফট্ নমঃ"।—
অনেন উল্লকাদিসরেণ যোগাত্তদফৌতরশতমন্তিতেন দিদিঃ॥

নিম্নলিখিত মন্ত্রটী উল্লকাদি সর সহযোগে অক্টোত্তরশত ১০৮ বার কোন ভূজপত্তে (অভাবে তালপত্তে বা কদলীপত্তে কিংবা কাগজে) লিখিনা মন্তকে ধারণ করিলে নিক্ষিত সকল প্রকার জুর বিন্দ্র হয়।

मज । - ७ कः इर भ कः दर करे नमः

ততঃ প্রার্থনাপ্যৌষধান্তিক।

ওঁ নমন্তে মুক্তিই ভূতে বলবীর্য্য-বিবর্দ্ধিন।

বলমায়ুশ্য মে দেহি পাপামে জহি দূরতঃ॥

যেন তাং খলতে ব্রেলা যেন তাং খলতে ভৃগ্যঃ।

যেন ইন্দ্রোহথ বরুণ স্তেন তামুপচং ক্রমে॥

তেনাহং খলরিষ্যামি মন্ত্রপুতেন পাণিনা।

ওঁ মাতন্তে মাত্রি জাততেজোবীর্য্যাহন্যথা ভবেৎ॥

অত্রৈব তিন্ঠ কল্যাণি মম কার্য্যকরী ভব।

মম কার্য্যে কতে সিদ্ধে ততঃ স্বর্গং গমিষ্যসি॥

"ওঁ দ্রীং চপ্তে ক্রং ফট্ স্বাহা"।

অনেন মন্ত্রেণাত্যসংযভম্॥

ত্তবধান্তিকে প্রার্থনা যোগ্য মন্ত্রের অর্থ।

তং হে বলবীর্যাবিবর্দ্ধিনি! মৃতদঞ্জীবনি! তোমাকে নমস্কার। তুমি আমাকে বল ও আয়ু: প্রদান কর এবং পাপ হইতে দূরে রাখ। যে কারণে ব্রহ্মা তোমাকে সমাদর করিরাছেন, ভৃগু যতুপূর্ব্বক ভক্তি করিয়াছেন এবং ইন্দ্র ও বকণদেবও অতীব সমাদরে ব্যবহার করিয়াছেন; আমিও দেই কারণে কারমনে যত্ন ও ভক্তি দহকারে মন্ত্রপূত হস্ত দ্বার। তোমাকে উত্তোলন করিতেছি। হে মাতঃ! যেন ইহার সঞ্জাত তেজঃ ও বীর্যা অবার্থ হয়। হে কল্যানি! আমার ভভ কার্য্যকরী হইয়া, এক্ষণে এইস্থানে অবস্থান কর এবং আমার কার্য্য সিদ্ধ হইলে, তৎপরে স্বর্গে গমন করিও।

अरः "अ जीः घट कर करे चाहा" अहे मस्री वाता व्याच-मःयम कतिरत ।

আভপে ত্রিদিনং শুক্ষং নিহিতং বীর্ষ্যপ্প ভবেৎ। অর্কপুষ্যায়াং সর্ব্বে ঔষধা উৎপাটান্তে॥

উৎপাটিত ঔষধ দকল ০ তিন দিবদ রৌক্রে শুষ্ক করিলে অতীব গুণশালী হয়। দকল প্রকার ঔষধ স্থ্য-সংযুক্ত পুষ্যান্ত্রশত্ত্ব উৎপাটন (উভোলন) করিবে।

উৎপাটিতানাং মূলিকারাং ছেদনবন্ধনমাহ।
"ওঁ রক্তে চামুণ্ডে ওরু ওরু অমুকদ্য
সর্বজ্বকাচবন্ধং হং ফট্ স্বাহা"॥
অনুনন মন্ত্রেণ মূলিকাংছেদয়েও।
পঞ্চত্রেণ বেউরিজা উক্তেশ্বনে বন্ধয়েৎ

উৎপাটনেপ্যদৈকান্তে প্রজাতে মন্ত্রমুক্তিতঃ। সংগ্রাহমৌষধং সিদ্ধৈনতিদ্বৈতি কৃষ্ঠিবৎ।

"ওঁ রক্তে চামুণ্ডে এক ঔক অমৃকস্ত সর্বজন কাটবন্ধং হং ফট্ স্বাহা"
এই মন্ত্রটী দ্লারা উৎপাটিভ উষধ দকলের মূল ছেদন পূর্বক অপর মন্ত্র দ্বারা
ঐ উষধ দমূহকে দেই স্থানে উত্তমরূপে বেইন পূর্বক বন্ধন করিবে। উষধ
দকল উৎপাটন পূর্বক সংগৃহীত হইয়া মন্ত্র ও মৃক্তি সহকারে প্রযুক্ত না হইলে,
উহা কাঠবৎ হয়; অর্থাৎ কোন প্রকার উপকার দর্শায় না।

অফ্টাঙ্গ-ধূপঃ। –

পলক্ষ্যা নিয়পত্রং বচা কুন্তং হরীতকী।
 সর্বপাঃ স্থপাঃ স্থপাঃ স্থপাঃ দিপি ধ্পিনং জ্বরনাশনম্॥
 অভীদ-ধূপ।

পলস্ক্ষা (গুণ্গুলু), নিম্নপত্র, বচা (বচ), কুঠ (কুড়কাঠ), হরী তকী; সর্বপ, ঘব এবং গবায়ত ; এই দকল দ্রব্য দমভাগে গ্রহণ পূর্বক অগ্নিতে জালাইলে যে ধুম উন্ত ভয়, তাহা উপায় বিশেষ দ্বায়া (সম্মুখে দ্রবাগুলি অগ্নিতে জালাইতে ধুম উদ্গারণ হইলে, দেই ধূমদহ রোগীকে এক বস্ত্রম্বারা আদ্বাদন করিতে হয়) রোগীর শরীরে ধূম লাগাইলে দকল প্রকার জর বিনষ্ট হয় ।

পুর ধ্যাম বদা সর্জ নিশ্বার্কাগুরুলারুভিঃ। সর্বজ্রহরে। ধূপঃ কার্য্যোয়মপরাজিতঃ॥ অপরাজিত-ধূপ।

পুর (গুণ্গুল), থাম (গন্ধত্ণ, অভাবে বেণার মূল), বচ, সর্জ্জ (ধুমা), নিষ্ণপত্র, অর্ক (আকল্পের মূল), অগুরু চন্দন এবং দেবদারু কান্ঠ; এই সকল ব্রুব্য সমতাণে গ্রহণপুর্ব্বক অগ্নিতে নিক্ষেপ করিলে যে ধূম উথিত ছইবে, ্থা শরীরে লাগাইলে সকলপ্রকার জর দুরীভূত হয়।

বৈড়ালয়া শক্লদেয়াজ্যং বেপমানস্য ধূপনে।

• মধুনা জ্বক শীদ্রং শেকালী-দলজো রসঃ॥

বিড়ালের বিষ্ঠা অন্নিতে পোড়াইয়া ধূম প্রস্তুতপূর্বক শরীরে সংলগ্ন বিলে কম্পজ্জ প্রশমিত হয়।

শেকালিকা পত্তের (সিউলী পাতার) রদ মধু সহ সেবন করিলে সক**ল** কার ত্বর অভিশীজ নিবারিত হয়। [®]

অজাজী গুড়-সংযুক্তা বিষদ-জ্ব-নাশিনী।

অগ্নিসাদপ্তরেৎ সম্যক্ বাতরোগাংশ্চ নাশগ্রেৎ॥
অর্জান্তী (কুমজীরা অর্থাৎ সাজীরা) নিকিডোলা পরিমাণে চূর্ন ক্রতঃ
াপরিমাণ ইম্পুত্ত সহ নেবন ক্রিলে বিষম্পুর, অগ্নিমান্য এবং বাত

পিপেল্যান্যং মৃত্য । —
পিপেল্যান্টন্দনং মৃত্ত মুশীরং কটুরোহিণী।
কলিঙ্গক স্তামলকী শারিবাংতিবিযান্থিরা।
দোক্ষামলকবিল্যানি ত্রায়মাণা নিদিপ্পিকা।
সিদ্ধমেতৈভূতং সদ্যো ব্রং জীর্নমপোহতি।
ক্ষয়ং কাসং শিরঃশূলং পার্শশূলং হলীমকম্।
অঙ্গাভিতাপ মগ্লিঞ্চ বিষমং সন্নিয়চ্ছতি।
পিপেল্যান্য মিনং কাপি তত্ত্বে ক্ষীরেণ পচ্যতে।

পিপাল্যাদ্য-ছত।

পিপুল, রক্তচন্দন, মুথা, বেণামূল, কট্কী, ইন্দ্রযন, তামলকী (ভূঁইআাম্লা), শারিবা (অনস্তমূল), অতিবিয়া (আতইচ্), শানপাণী, কিন্মিন্
বাদক, বিষ, বলাডুমুর এবং কণ্টকারী; এই দকল দ্রব্য দমভাগে দমত্তে
/১ একদের প্রহণপূর্বক পরিষ্কার জলে খোত করিয়া কুটিত থেও
করিবে। তৎপরে /৪ চারিদের গব্যন্থত ঐ দকল কুটিত দ্রবাদহ মিশ্রিত
করিয়া।৬ যোলদের জলদহ পাক করিতে থাকিবে। তদনস্তর সমুদায় জল
শুষ্ক হইয়া মৃতের শেষপাকের লক্ষণ দমুদায় প্রকাশ পাইলে, চুলী হইতে
নামাইয়া পরিষ্কার বস্ত্রদারা ছাকিয়া, নিটে বাদ দিয়া মৃত গ্রহণ করিবে।
কোন কোন প্রস্তু মন্ধারা এই মৃত পাকের বিধান আছে। এই পিপলাদ্যমৃতদারা জীণজর (পুরাণজর), কায় (ধাতুক্রম বা যক্ষমা), কাস, শিরঃপীড়া,
পার্যবেদনা, হলীমক, অঙ্গদস্তাপ ও বিষমান্বিতা দূরীভূত হয়।

যত্রাধিকরণে নোক্তি র্গণে স্যাৎ স্বেহসমিধে। তত্ত্বৈব কল্কনিযুৰ্গহাবিষ্যেতে স্বেহবেদিনা। এতদ্বাক্যবলেনৈৰ কল্কসাধ্যং পরং মৃত্যু॥

যে ছলে অধিকার মধ্যে তৈল ও মৃতাদিম্ম্থপাকে কল্ক বা কাথাদি স্প্রকাশে লিখিত থাকে না; সে ছলে স্নেছবিৎ চিকিৎসক্ষণ কল্ক ও কাথ উভয়েরই প্রয়োগ বিধান করেন। স্নতরাং এই পিপ্পাল্যাদ্য মৃতে লিখিত দ্রব্য সমূহ কল্করপে এবং উহাদের কাথ উভয়ই ব্যবহৃত হইতে পারে; কিন্তু এখানে তাহা হইবে না। পরন্ত মতান্তরে কথিত আছে যে, স্নেহাদি পাক বিধানে নির্দিষ্ট দ্রব্য সমূহের কাথ বা কল্ক ব্যবহার করিতে হইবে, তাহা স্প্রকাশ না থাকিলে, সেই দ্রব্য সকল কল্করপে অথবা উহাদের কাথ ইহার যে কোন একটী ব্যবহার করা যায়; স্নতরাং পিপ্পাল্যাদ্য মৃতে কাথ ইতার যে কোন একটী ব্যবহার করা যায়; স্নতরাং পিপ্পাল্যাদ্য মৃতে কাথ ইউক বা কল্কই হউক, কোন একটী ব্যবহার করিলেই হইতে পারে। কিন্তু এইলে ডাহাও হইবে না; এই মৃতের দ্রব্যসমূহ কল্করপেই প্রয়োগ করিং ক্রিয়া দেওকা মৃত্তিসম্বত নহে। কার্ণ স্নেহসাধনে দ্রুব

সকলের কাথ (কথায়) রূপে সাক্ষাৎ সম্বন্ধ নাই; কল্করূপেই নেকট্য সম্বন্ধ থাকে। সুতরাং এই পিপ্পল্যাদায়ত কল্কসাধ্য, ক্ষাথসাধ্য নহে।

> জলম্বেহৌষধানাস্ত্র প্রমাণং ষত্র নেরিতম্। তত্ত্ব স্যাদৌষধাৎ স্নেহঃ স্নেহান্ডোয়ং চতুগু নম্। দ্রবকার্য্যেহণি চাহনুক্তে সর্বত্তি সলিলং মতম্॥

বে স্থলে ইত তৈলাদি স্নেহের পরিমাণ লিখিত না থাকে, তথায় স্নেহদ্রব্য /৪ চারিসের এবং যে স্থলে কল্কদ্রব্যের পরিমাণ লিখিত না থাকে,
দে স্থলে কল্ক স্নেহের চতুর্থাংশ ব্যবহার করিতে হয়। আর যেখানে দ্রব (তরল) দ্রব্যের পরিমাণ স্থাপষ্ট উল্লেখ না থাকে, দেখানে তরলবস্তু স্নেহের ৪ চারিগুণ দিতে হইবে এবং হুগ্নের মাত্রা স্থির না থাকিলে, স্নেহের সমান হুদ্ধ দিবে। কিন্তু যে স্থলে অন্ত প্রকার তরল বস্তু দিবার বিধান না থাকে, সে স্থলে স্নেহের ৪ চারিগুণ হুদ্ধ প্রয়োগ করিতে হয়। আর দ্রব দ্রব্যের আদে) উল্লেখ না থাকিলে, স্নেহ সর্বত্ত কেবল জল দিবার বিধান আছে।

য়ত-তৈল-গুড়াদীংশ্চ নৈকাহাদবতারয়েৎ।.
ব্যাধিতাস্ত প্রকুর্বন্তি বিশেষণ গুণানু যতঃ॥

ন্বত, তৈল, গুড়াদির পাক একদিবদের মধ্যেই শেষ করা বিধেয় নহে উহা ব্যুষিত (বাদী) করিয়া পাক শেষ করিয়া লইবে। কারণ তাহা হুইছে উহার গুণ অধিক হুইয়া বিশেষ উপকার সংসাধন করে।

স্বেছকল্কে। যদাঙ্গুল্যা বর্ত্তিতো বর্ত্তিবন্তবেৎ।
বক্ষো কিপ্তে চ নোশস্বস্তদা সিদ্ধিং বিনির্দিশেৎ॥
শস্বব্যুপর্মে প্রাপ্তে ফেণস্যোপর্মে তথা।
গন্ধ-বর্ণ-রমাদীনাং সম্পত্তো সিদ্ধিমাদিশেৎ॥
স্বত্তিস্যাব বিপক্ষ্য জানীয়াৎ কুশলো ভিষক্।
ফেণোভিমাত্তং তৈল্যা শেষং স্বত্বদাদিশেৎ॥

. স্বেহপাকসিদ্ধির বা শেষপাকের লক্ষণ।

য়তের মুদ্র্লাপাক দিবার নিয়ম নাই, কিন্তু তৈলের মুদ্র্লাপাকের বিশ্
আছে। মুদ্র্লাপাকের বিষয় তৈল পাকের প্রকরণ স্থলে বলা যাইবে।
স্থলে মৃত, তৈল, গুড়াদির শেষপাকের বিষয় বর্ণন করা যাইতেছে। ম্নে
(মৃতাদিতে) কল্ক প্রদান-পূর্বক জল বা হুমাদি দিয়া মন্দ্র মন্দ্র আমি সন্তা
পাক করিতে থাকিবে। তৎপরে যখন মৃতাদির মধ্যস্থ কল্ক (সিটে) তুলি
অস্ত্রলিদ্বারা পাকাইলে, বর্তির (বাতির) স্থায় হইবে, এ ঐ কল্ক ঝ বি
অগ্লিদ্বারা পাকাইলে, বর্তির (বাতির) স্থায় হইবে, এ ঐ কল্ক ঝ বি
অগ্লিদ্বারা পাকাইলে, বর্তির (বাতির) স্থায় হইবে, এ ঐ কল্ক ঝ বি
অগ্লিদ্বারা পাকাইলে, বর্তির (বাতির) স্থায় হইবে, এ ঐ কল্ক ঝ বি
অগ্লিদ্বারা পাকাইলে, বর্তির (বাতির) স্থায় হইবে, এ ঐ কল্ক ঝ বি
অগ্লিদ্বারা পাকাইলে, বর্তির (বাতির) স্থায় হইবে, এ ঐ কল্ক ঝ বি
অগ্লিদ্বারা মান্তর করিলে চড় চড় প্রভৃতি শব্দ না হয়, এবং স্লেহপাককাট
ব্য একপ্রকার শব্দ হয় ও কেণোদ্ব হয়, তাহার নির্ভিত এবং স্লেহে যে
বিশ্ব বিশ

শিলাক্কি হয়; এই দকল লক্ষণ লক্ষিত হইলে, স্থতে কি তৈলে জিলা নিংশেষিত হইয়াছে বলিয়া স্থির করিবে। এমত অবস্থার স্থতাদিতে জ্যার বাল না দিয়া নামাইবে এবং পরিষ্কার একখানি বস্তান্তা ছাকিয়া দিটে গুলি বাদ দিয়া স্থতাদি অহ গ্রহণ করিবে। এই পাককে চলিত ভাষায় লোকে নামপাক বলিয়া থাকে। স্থতপাক ও তৈল পাকের এক প্রকারই লক্ষণ, বে প্রত্যেদ এই বে, তৈলে শেষকালের সময়ে অধিক পরিমাণে ফেণোদাম ইরা থাকে।

কীরষট্পালকং মৃতম্। —
পঞ্চকোলৈঃ সাসিমুখিঃ পালিকৈঃ পায়না সমম্।
সার্পাঃ-প্রস্থং শৃতং প্লীছবিষমজ্বগুলানুৎ ॥
অত্র দ্রবাস্তরেইনুক্তে কীরমেব চতুগুণম্।
দ্রবাস্তরেণ যোগে হি কীরং স্লেহসমং ভবেৎ॥
কীর যটপালক মৃত।

গাব্যস্থান্ত /৪ চারিদের। পিপুল, পিপুলের মূল, চৈ, রক্ত চিভার মূল, শুঠ সৈশ্বব লবণ; এই দ্রান্য গুলি প্রভাবে ৮ ভোলা (একপল)করিয়া গ্রহণপূর্বক এমরপে জলছার। ধৌত ও কুট্রিত করিয়া, উল্লিখিত মৃতদহ ।৬ যোলদের ভীর হগ্ধদহিত পাক করিয়া শেয পাকের লক্ষণ দৃষ্ট হইলে, চুল্লী হইতে নাইয়া বস্তুদ্ধারা ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া মৃত গ্রহণ করিবে। ৬ ছয়টী দ্রব্য পাল করিয়া লইয়া ক্ষীর (হ্রপা) দহ মৃতশাক করিয়া লওয়া যায় বলিয়া, ক্ষে ক্ষীর-ষট্পলক মৃত্ত বলে। এই মৃত দেবনে প্রীহা,বিষমজ্বর এবং গুল্মান বিন্যু হয়। এই মৃতে অন্ত কোন প্রকার দ্রব (তরল) দ্রব্যের উল্লেখ না কার, হ্রম্ম মৃতের চতুপ্রপ দিতে হইল। কিন্তু অন্ত দ্রব দ্রব্যের উল্লিখ কলে, হ্রম্ম মৃতের সমান পরিষাণে দিতে হইবে।

দশমূলী ষট্পলকং স্বতম্। —
দশমূলীরসৈঃ সর্পিঃ সক্ষীরেঃ পঞ্কোলকৈঃ।
সক্ষারৈহন্তি তৎসিদ্ধং জ্বন-কাসাগ্রিমন্দভাঃ।
বাতপিত্তক্ষব্যাধীন্ প্লীহানকাপি পাণ্ডুভাম্॥
দশমূলী ষট্পলক স্বত।

াবাছত /৪ চারিদের। পিপুল পিপুলেরমূল, চই, রক্তচিভারমূল, শুঁঠ, গর (গোরা); ইহাদের প্রত্যেক ত্রব্য ১ পল (৮ ভোলা) পরিমাণে লইরা কক্ষরতঃ ভাহা এবং দশমূলের কাথ।৬ যোলদের ও হয়/৪চারিদের; এই দ সমস্ত ত্রব্যগুলি একত্রিত করিয়া পাক করিতে করিতে শেষ পাকের দৃষ্ট হইলে নামাইরা ছত গ্রহণ করিবে। দশমূলের কাথ এবং ৬ ছয়্টী নমস্তে ৬পর্কি স্পইয়া ছত পাক করার, ইহার নাম শদ্মন্তীষ্ট পলকঃ ছড়।

पृष्ठीत-स्वाह्यः

এই ঘুট জর, অগ্নিমান্দ্র, কাস, বাতিক, পৈতিক ও সৈত্মিক রোগ, সীহা এবং পাণ্ডুরোগ নিবারণ করে।

কাথ প্রস্তুত করিবার নিয়ম।

বিশেষরপে কিছু উল্লেখ না থাকিলে কাথ্য দ্রব্যে (যে দ্রব্য দারা কাথ্য প্রস্তুত্ত করিতে হয়, তাহাতে)৮ গুণ জল দিয়া তাহার চতুর্বাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবৈ এবং একখানি পরিষ্কার বস্তু দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া জলীয় ভাগ গ্রহণ করিবে। ঐ জলীয়ভাগকেই ক্লাই বলে, উহার অপর নাম ক্যায়, পাচন ও নির্মৃহ।

কাথ্যাক্তত্বত নং বারি পাদস্থ স্যাক্তত্বত নিম্। সেহাৎ সেহসমং ক্ষীরং কল্কন্ত সেহপাদিকঃ।
চতুত্ব নিন্তু ইন্তানং ক্রিবৈশুণ্যতো ভবেৎ ।
তিল-মৃতাদি পাক সম্বন্ধ বিশেষ নিয়ম।

যে পরিমাণ কাথ্য দ্রব্যের উক্তি থাকিবে, তাহাতে জল দিয়া কাথ করিবার জন্ম পাক করিতে হইলে, দেই বস্তুর পরিমাণের ৪ চারিগুণ মাত্রার জল তাহাতে দিতে হইবে এবং ঐ জল তরল দ্রব্য বলিয়া ৪চারিগুণের দ্বিশুণ অর্থা: ৮ আটগুণ দিতে হয়। অর্থাৎ ৪ চারিদের কাথ্য দ্রব্যে ৩২ বিজেশসের জল দিয়া পাক করিয়া ৮ দের থাকিতে নামাইয়া কাথ প্রহণ করিবে। এইজন্ম শুলে উক্ত আছে যে, পাদস্থ অর্থাৎ চারিভাগের একভাগ যে অব্লিক্ট থাকিবে তাহা স্নেহের (তল স্বতাদির) ৪ চারিগুণ হইবেক। আর কলক্রব্যও ক্ষেহ বস্তুর (স্বত তৈলাদির) রিদিকি অর্থাৎ ৪ চারি ভাগের ২ একভাগ গ্রহণ করিতে হয়।

পঞ্চ প্রভৃতি যত্ত্র স্থা দ্র বাণি স্নেহসন্ধি। তত্ত্র স্নেহ-সমান্যাহরব্রাক্চ স্যাচ্চতৃগুণম্॥

যে ক্ষেহদ্রব্যে (তৈল অথবা ঘতে) ৫ পাঁচটী অথবা তাহার অধিক প্রকার দ্রবদ্রব্য (তরলবস্তু) প্রদান করিতে হয়, তাহাদের প্রত্যেকের পরি-নাণ ক্ষেহের সমান জ্ঞানিবে। কিন্তু ৫ পাঁচটীর কম হইলে, ক্ষেহ বস্তু অপেকা তরল দ্রব্য সমুদায়ে চতুগুর্ণ দিয়া পাক করিতে হয়।

বাদান্যং মৃত্যু।—
বাদাং গুড়ু চীং ত্রিফলাং তায়মাণাং ফ্রাদক্যু।
পক্তা তেন ক্ষায়েণ পয়দা দ্বিগুণেন চ॥
পিপালী মুন্ত মন্ত্রীকা চন্দ্রোৎপলনাগ্রেঃ।
কল্কীকৃতিশ্চ বিপচেৎ মৃতং জীপ্রাপ্তয়

वानक अनुक, जियना (इदी उकी, कामनकी, तरका), जानमाना (बना

লভা) এবং ববাদক (হুরালভা); এই দকল দ্রব্য দমুদারে /৪ চারিদের লইরা ০২ দের জলদহ পাক করিরা /৮ দের অবশিষ্ট থাকিতে কাথ প্রহণ করিবে। প্রথমে /১ দের গব্যস্থতে কল্ফার্থে পিপুল্মূল, মুখা, কিদ্মিদ্, রক্ত-চন্দ্র, নীলোৎপল এবং ওঁঠ; এই দমন্ত দ্রব্য দমন্তে /১ একদের মাত্র প্রহণপূর্বক অপপ কুট্টিভ করিয়া স্থতে প্রদান করিয়া পাক করিবে। ভংপরে পূর্বেজি কাথ /৮ দের এবং গব্যহৃদ্য /৮ আটদের ঐ স্বতে প্রদানপূর্বক যথানিরমে পাক করিতে থাকিবে; পরে শেষপাকের লক্ষণ দকল উদিভ হইলে, চুল্লী হইতে নামাইবে এবং একথানি পরিষ্কার বন্ত্রদ্রারা ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া স্বভ গ্রহণ করিবে। এই বাসাদান্থত চারি আনা পরিমাণে প্রভিদিবদে একবার করিয়া গরম হন্ধের সহ দেবন করিলে জীণজ্ব (পুরাতন-জ্ব) দূরীভূত হয়।

জ্বরে পেয়াঃ কষায়াশ্চ সর্পিঃ ক্ষীরং বিরেচনম্ । ষড়হে ষড়হে দেয়ং কালং বীক্ষ্যাময়স্য চ॥ জ্ব-রোগীকে পেয়াদি দিখার নিয়ম।

কাল এবং ব্যাধি বিবেচনা করিয়া জ্ব-রোগীকে প্রতি ১ ছয় দিন অন্তর পোয়া, কষায়, দ্বত, ভ্রন্ধ এবং বিরেচন প্রদান করা কর্ত্তব্য।

জীৰ্ণস্কুরে কফে ক্ষীণে ক্ষীরং স্যাদমূতোপমম্। তদেব তরুণে পীতং বিষৰদ্ধন্তি মানবম্॥ স্কুরে ছঞ্চ ব্যবহার।

জীগজ্বরে (পুরাতনজবে) রোগীকে হন্ধ পান করাইলে. তাহা অমৃতের স্থার মহোপকার সাধন করে; কিন্তু এই হন্ধই আবার তরুণ জ্বরে প্রয়ুক্ত হইলে বিষবৎ অনিষ্ট উৎপাদন করিয়া থাকে। অর্থাৎবায়ু ও পিত্তের প্রকোপ সংযুক্ত জীর্নজরেই হন্ধ ব্যবস্থেয়; ঐ পুরাতন জ্ব শ্লেঘাধিক হইলে, তাহাতে হন্ধ বিধের নহে। থেহেতু হন্ধে শ্লেঘার্কক গুণ থাকার, পুরাতন জ্বের শ্লেঘাধিক্য অবস্থার প্রয়ুক্ত হইলে তাহাতে অবশ্য বিশেষ অপকার ঘটিবার সম্ভাবনা। একারণ বায়ুনাশক অথবা পিত্তনাশক কোন প্রকার ঔষধের সহিত হন্ধপাক করিয়া পুরাতনজ্বীকে পান করিতে দিবে।

> কাসাচছ্বাসাৎ শিরঃশূলাৎপাশ্বশূলাচিরজ্বরাৎ। মুচ্যতে জ্বরিতঃ পীত্রা পঞ্চমূলীশৃতং পয়ঃ॥

শালপানী, চাকুলে, ব্যাকু ড় (রহতী), গোকুর ও কন্টকারী ; এই সকল দ্রুব্য সমুদায়ে ২ ছই ভোলা গ্রহণপূর্ব্যক ১৬ ভোলা হ্রন্ধ এবং ৬৪ ভোলা জ্ঞলসহ পাক করিয়া হ্রন্ধনাত্র থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া তাহা রোগীকে দেবন করাইলে কাস, শ্বাস, শিরংপীড়া, পার্শ্ববেদনা ও জীর্নজ্বর নিবারিত হয়।

রশ্টীর বিল্ব বর্যাভূ পয়শ্চোদকমেব চ। পচেৎ ক্ষীরাবশিষ্টম্ভ তদ্ধি সর্বজ্বাপহম্। রক্তপুশিবা ও খেতপুন্রবা এবং বেলছাল; এই দ্রব্যত্তর সমন্ত ২ ভোলা।
লইয়া অংশ্য কুটিয়া ১৬ তোলা ত্রম এবং ৬৪ তোলা জ্বাসহ পাক করিয়া
ত্র্মানত অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে, এবং একখানি পরিকার বস্ত্রদার।
হাকিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে সর্বপ্রকার ছার বিন্ত হয়।

नीजिटकांकृश खुदत कीतः यथाटेच्यतीयटेवः मृज्य ।

এরওয়লিদদ্ধ জুরে সপরিকর্তিকে ॥

জ্ব-রোগীর গুইদেশে কর্তনবৎ বেদনা থাকিলে, উক্ত বেদনা নাশক যথা-যোগ্য ঔষধের সহিত ত্বন্ধ সিদ্ধ করিয়া উন্ধ অবস্থায় অথবা শীতল করিয়া পান করিতে দিবে। কিয়া এর ওমুলের (ভেরেগুামুলের) সহিত হন্ধ সিদ্ধ করিয়া রোগীকে পান করাইলেও উক্ত বেদনা নিবারিত হয়।

জ্বরিভ্যো বহুলোবেভ্য উর্দ্ধপথশ্য বুদ্ধিমান্।
দদ্যাৎ সংশোধনং কালে কপেশ যতুপদেক্ষ্যতে॥
জ্বে ব্যন ও বিরেচন উষধ প্রয়োগ।

জ্ব-রোগীর শরীরে বন্ত দোষ আবদ্ধ থাকিলে, তাহা বমন অথবা বিরেচনদারা নির্গত করান উচিত। কিন্তু অপ্প দোষ থাকিলে কদাচ বমন বা
বিরেচন ঔষধ প্ররোগ করিবে না। চরক-সংহিতার কপ্পছানে যে দকল
বমন ও বিরেচনকারক ঔষধের উল্লেখ আছে; বমন ও বিরেচনযোগ্য
ব্যক্তিকে যথোচিত দময়ে তাহা বমন বা বিরেচনার্থে প্রয়োগ করিবে।

অভ্যন্ধাংশ্চ প্রদেহাংশ্চ সম্বেহান্ সাবগাহনান্। বিভজ্য শীতোঞ্জ্বতান্দ্যাজ্জীণজ্বরে ভিষক্॥ তৈরাশু প্রশমং যাতি বহির্মার্গাতো জ্বরঃ। লভত্তে সুখমন্সানি বলং বর্ণঞ্চ বর্ধতে॥

পুরাতনজ্ব-রোগীকে অভাঙ্গ (তৈলাদিমর্দন), প্রদেষ (প্রলেপ), স্বেষ্ট্র পান (স্থভাদি পান) এবং অবগাহন (স্থান) প্রদান করা কর্ত্তবা। কিন্তু চিকিৎসক রোগীর অবস্থা বিবেচনা করিয়া উক্ত তৈলাদি শীতল বা উষ্ণগুণশালী
দেখিয়া ব্যবহার করিতে দিবেন। অর্থাৎ উষ্ণভা হেতু জর হইলে শীতবীর্ঘাতৈলাদি এবং শীতভা বশতঃ জর হইলে, উষ্ণবীর্ঘা তৈলাদি প্রয়োগ করিবেন। এই দমুদায় ষ্থাযোগ্যরূপে প্রযুক্ত হইলে বহিমার্গগভজ্বর শীত্রই নির্ভ্ত
হয়: এবং শরীরের স্থাধদয় ও বল, বর্ণ প্রভৃতি সংবর্ধিত হইয়া থাকে।

দ্রব্যানউগুণং স্বীরং ক্ষীরাজোয়ং চতুগুর্ণম্। ক্ষীরাবশেষঃ কর্ত্তব্যঃ ক্ষীরপাকে ত্বয়ং বিধিঃ॥ ক্ষীর (হন্ধ) পাকের নিরম।

ক্ষীর পাক করিতে হইলে, ত্রবা হইতে হয় ৮ অইঞা পরিমাণ এবং ইয়া অপোকা জল ৪ চারিঞা অধিক দিয়া, পাক করিতে করিতে যখন সমদায় ক্ষল শুক্ষ হইয়া ইপ্নদাত অবলিষ্ট থাকে; তথন নাুদাইয়া বস্ত্ৰবাৰ্ত্ত ইাকিয়া। লইতে হয়।

রসোন কল্কং তিলতৈলমিঞ্জং
যোহন্নাতি নিত্যং বিষমন্ত্রার্ভঃ ।
বিমুচ্যতে সোহপ্যচিরেণ বাতামরৈঃ প্রকোপৈস্ক সুঘোররূপৈঃ ॥

বিষমন্ত্র-পীড়িত ব্যক্তি যদ্যপি প্রতিদিন ১০ ছই আনা বা । চারি আনা পরিমাণে রসোন বাটিয়া কিঞ্চিং তিলতৈলসহ দেবন করে, ডাছাছইলে নে অতিনীত্রই বাতানিজনিত ঘোরতর প্রকোপ হইতে বিমুক্ত হইতে পারে।

অঙ্গারকং তৈলম্। -

মুর্কা লাক্ষা হরিদ্রে দ্বে মঞ্জিষ্ঠা সেব্দ্রবারুণী। রহতী সৈম্ববং কুষ্ঠং রাক্ষা মাংসী শতাবরী॥ আরনালাঢ়কেনেব তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। তৈলমন্বারকং নাম সর্বস্করবিমোক্ষণম্॥

অঙ্গারক তৈল।

মূর্কা (স্বচমুখী), লাক্ষা, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, দঞ্জিষ্ঠা, ইন্দ্রবাকণীর মূল (রাখালশশা বা মামালাড় রমূল), ব্যাকুড়, দৈন্ধবলবণ, কুড়, রাস্না, জটানাংসী এবং শতাবরী; এই সমুদর কল্কদ্রব্য সমস্তে /> একদের পরিমাণে লইরা /৪ চারিদের তিলতৈল সহ কিছুদিন পাক করিবে; (অর্থাৎ এক দিবসে তৈলের শেষ পাকের বিধান না থাকার, অন্ততঃ > এক মান ব্যাপিরা পাক সমাপ্ত করিতে হয়। এবং মধ্যে মধ্যে ২।৪ দিন অন্তর অগ্নিসংখোগে কিয়ৎক্ষণ পর্যান্ত জ্বাল দিয়া রাখিতে হয়। তৎপরে শেষ পাক নিষ্পন্ন করিয়া লইতে হয়।) পরে ১৬ ষোলদের কাঁজি দিয়া পাক করিয়া শেষ পাকের লক্ষণ লক্ষিড হইলে, চুল্লী হইতে নামাইবে এবং বস্তুদ্বারা ছাঁকিয়া সিটে বাদ দিয়া তৈল গ্রহণ করিবে। এই অক্লার্ক তৈল সকলপ্রকার জ্বর নাশক।

তৈলপাকের নিয়ম।

য়ত পাকাপেক। তৈল পাকে করেকটা অতিরিক্ত নিরম অবলয়ন করা হয়। য়তে কেবল কল্পাক ও অবপাক; এই হুইটা মাত্র পাক করিতে হয়। তৈলে একটা পাক অধিক আছে; উহা আবার ২ হুইপ্রকার। যথা;—কটাপাক ও মুর্চ্ছাপাক। কটাপাক—প্রথমত: তৈল কটাছে (কড়ার) চালিরা চুলীর উপর রাখিরা মূহ অগ্নি সংখোগে পাক করিতে থাকিবে; যখন ভৈল কেনাবিহীন হুইগ্রাহে দেখিবে, তখন চুলী হুইতে নামাইবৈ; এই পাক্ষেই কটাপাক বলে। মূর্চ্ছাপাক—কটাপাকক্ত ভৈলে কিয়ৎ পরিমাণে কাঁচা

ছবিদ্রা (হছ্মন) জলসহ পেষণপূর্বক প্রদান করিবে; এবং ডদনন্তর মঞ্জিতানি পানার্থ (কলক) সকল কুটিত করিরা, কিঞ্চিৎ জলের সহিত উক্ত ডৈলে প্রদান-পূর্বক তৈলের ৪ চারিগুণ জল তাছাতে দিয়া, পুনর্বার পাক করিতে লাগিবে এবং অপপ পরিমাণে জল অবশিষ্ট থাকিতে চুল্লী হইতে নামাইবে। ইছাকে মুর্চ্ছাপাকশ্বলা যায়। তৈলভেদে মূচ্ছাদ্রব্যেরও (তৈলের মূচ্ছাপাকার্থে তৈলে যে সকল দ্রবা দিতে হয়, তাছাদের) কিঞ্চিৎ পার্থক্য আছে।

ভিলতৈলের মূর্চ্ছাপাকের ক্রব্য।

্ মাঞ্জা, হরিন্দা, লোধ, নালুকা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কেয়ারমূল, বটের নাম্না (ঝুরি), স্থচমুখী ও বালা।

मर्वभटेजला मुर्ह्शभारकत स्रवा।

আঁমলকী, হরিদ্রা, মুথা, বেলছাল, দাড়িমছাল, কৃষ্ণজীরা (माজীরা), নালুকা, বালা, নাগেশ্বর পুষ্পা, বহেড়া ও মঞ্জিষা।

👡 এরগু (ভেরেগু) তৈলের মুর্চ্চান্তব্য।

মঞ্জিষ্ঠা, মুখা, ধনে, আমলকী, হরীতকী, বছেড়া, জন্মন্তীপত্র, বালা, বক্সখর্জ্বর, বটের ঝুরী, হরিজা, দাকহরিজা, নালুকা, শুঠী কেয়ারমূল, দ্বি, ও কাঁজি। প্রথমে হরিজা, ও মঞ্জিষ্ঠা দিয়া, পরে অক্সান্ত ক্রব্য দিতে হইবে। মুক্তান্তব্যের পরিমাণ।

ठक्कामार देउलम् ।—

চন্দনং চিত্রকং সিংহী মুস্তকঞ্চ সনাগরম্।
কাকোলী ভায়মাণা চ ধাক্র্যশীরং নিশা বীরা ॥
এতান্যর্দ্ধপলাংশানি সৌম্যবারে সমাহরে ।
কীরাচক-সমাযুক্তং সর্পিসোহর্দ্ধভূলাং পচে ॥
রদ্ধবিদ্যোপদেশেন তৈলমর্দ্ধভূলা পচে ।
চাতুর্থক-ক্রে শন্তমুশ্বাদে বিষমক্রে ॥

व्यवामा देखन ।

तकाष्यन, तकाविषांत्र गूल, गांकूण, गूथा, श्रुष्ठी, कारकाली, रलाष्ट्रमूत, गांनलकी, रागात्रमूल, रतिज्ञा अवर माजावती ; अर मकल क्रया तूथवारत विकालन क्रिता, कन्कार्य अर्फारक व्यक्ताल (६ (काला) शक्तिमारन अर्थन 95

পূর্বক ১৬ সের হন্ধ সহযোগে অর্কতুলা (৫০ পল) পরিমাণে ঐতিলত্তিল পাক করিবে। রন্ধবৈদ্যগণের উপদেশাস্থ্যমারে এই চন্দনাদ্যতৈলে /৬।০ ছর-সের একপোরা তৈলই ব্যবহার হইয়া আদিয়াছে। এই তৈল চাতুর্থক-জরে, উন্নাদে ও বিষমজ্বরে স্থপশস্ত।

मर्ज रेजनम् ।--

সর্জ কাঞ্জিক সংসিদ্ধং তৈলং শীতামুমর্দ্দিতম্। জ্বর-দাহাপহং লেপাৎ সদ্যো বাতার্ভিদাহনুৎ॥

मर्ड्डिटन।

ধুনা, কাঁজি এবং শীতল জল সহযোগে তৈল পাক করিয়া গাত্তে প্রলেপ দিলে (মর্দ্দন করিলে) সদ্যই জর, দাহ এবং বাতজনিত দাহ নিবারিত হয়।

অথ চুর্ণমৃ।

কলায়-গুড়িকা।—

কলায়-চূর্ণ ভাগদ্বো লোহচূর্ণক্ত চাপরঃ।
কারবেল্ল-পলাংশানাং রদেনৈব বিমর্দ্দরেও॥
কর্ষমাত্রাং ততশৈচকাং গুড়িকাং ভক্ষয়েররঃ।
মণ্ডামুপানাৎ সা হন্তি জ্বং পিন্তসমুদ্দেবম্।
চূর্ণ-প্রকরণ।

কলায়-গুড়িকা।

কেলায় – মটর কলাই। কারবেল্ল – করলা উচ্চেছ । কর্ম – ২ জোলা)।
২ স্থই ভাগ কলায়চূর্ন ও ১ ভাগ লৌহচূর্ন একত্রিত করিয়া ১ পল
করলা উচ্চের রসে মর্দ্দন করিয়া কর্ম (২ তোলা) মাত্রায় গুড়িকা (বটিকা)
গুন্তুত করিবে। ইহার এক এক বটিকা প্রভাহ ভক্ষণ করিয়া, ভৎপরে মণ্ড
অমুপান করিলে পিত্ত-সমুদ্ধুত জুর আরোগ্য হয়।

স্থদর্শনং চুর্ণম্।—

ত্রিফলা রজনীযুগাং কণ্টকারীযুগাং তথা।
ত্রিকটু এন্থিকং মূর্বা গুড় চী ধন্বযাসকম্॥
কটুকী পাপা টী মুস্তা ত্রায়খাণা চ বালকম্।
নিয়ং পুক্ষরমূলক চবাং পত্তং পটোলকম্॥
জীবকর্ষভকো চৈব মধুষ্টি চ বৎসকঃ।
বুমানীক্রমবো ভাগা শিলুবীজং সুরাফ্রিকা।
বুচা ত্রক্ পত্রকোশীর চন্দনাতিবিষা বলাঃ।
সালপণী পৃশ্বিপণা বিভঙ্কং তগরন্তথা।

ভেতীয়-সধ্যাসঃ।

চিত্রকং দেবকাষ্ঠক লবকং বংশলোচনা।
পুণ্ডরীকক্ষ কাকোলী পত্রক জাতিপত্রকম্।
তথা তালীশপত্রক সমভাগানি চুর্ণয়েৎ।
সর্বাচ্পন্ত চার্লাংশকৈরাতং প্রক্ষিপেদ্ বুধঃ॥
এতঃ স্থাননিং নাম চুর্ণং দোষতারাপহম্।
জ্রাংশ্চ নিখিলান্ হন্তি নাত্র কার্যাবিচারণা॥
পৃথক্ দ্বন্ধান্তজাংশ্চ ধাতুস্থান্ বিষমজ্বরান্।
সন্নিপাতোদ্ভবাংশ্চাপি মানসানপি নাশয়েৎ॥
শীতন্তবিকাহিকাংশ্চ তন্ত্রাং দাহং ভ্রমিং তৃষাম্।
শাসং কাসক পাও তুং হ্যদ্রোগং হন্তি কামলাম্॥
তিক-পৃষ্ঠ-কটী-জানু-পার্শশ্লনিবারণম্।
শীতামুনা পিবেদ্ধীমান্ সর্বজ্ব-নিবর্তয়ে॥
স্থাননং যথা চক্রং দানবানাং বিনাশনম্।
তদ্বজ্বরাণাং সর্বেষামিদং চুর্ণং বিনাশনম্॥

স্থদর্শন চূর্ণ।

(ত্রিফলা — হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া। রজনীয়ুগা — হরিদ্রা, দাক্বহরিদ্রা। কন্টকারীয়ুগ — বাাকুড় ও কন্টকারী। ত্রিকটু — ভ ঠ, পিপুল, মরিচ।
আহিক — পিপুলমূল। মূর্বা — হুচমুখী। ধন্ববাসক — হুরালভা। পর্পটী —
ক্ষেত্রপাপড়া। ত্রায়মাণা — বলালভা। বালক — বালা, পাধরকুচি। পুছরমূল — অভাবে কুড়। জীবক — অভাবে গুলঞ্চ। ঋষভক – অভাবে বংশলোচন। বংসক — কুরচিছাল। ভার্গী — বামনহাটী। শিগু — সজিনা। ত্বক্
লাক্ষ্চিনি। প্রক — ভেজপাভা। হ্রাক্রিকা — সোরাজ্রম্বিকা। বলা —
বেড়েলা। পৃশ্বিপর্ণী — চাকুলে। দেবকান্ধ — দেবদাক। কৈরাভ — চিরভা।
ত্রিক – পৃষ্ঠবংশয়র অর্থাৎ ঘাড়। অন্ব — জল। দানব — দৈতা। ভগর —
ভগরপাছকা।)

হুরীতকী, আমলকী, বছেড়া, হরিজা, দাকহরিজা, কন্টকারী, ব্যাকুড় পিপুল, শু ঠ, মরিচ, পিপুলমূল, স্থচমুখী, গুলঞ্চ, হুরালভা, কটকী, ক্ষেত্র পাপ্ড়া, মুথা, বলালভা, বালা, নিম্বপত্র, কুড়, চই, পটোলপত্র, (পল্ডা) জীবক, ঋষভক, যফিমধু, কুরচিছাল, যমানী, ইক্রমব, বামনহাটী, সজ্জিনাবীজ্ব সোরাই্রমাটী, বচ, দাক্টিনি, ভেজপত্র, বেনারমূল, রক্তচন্দন,আভইস, বেড়েলা শালপানী, চাকুলে, বিড়ঙ্গ, ভগরপাছকা, রক্তচিভারমূল, দেবদাক, লবল বংশলোচন, পুগুরীয়াকাঠ, কাকোলী, ভেজপত্র, জাডিপত্র এবং ভালীশপত্র এই সকল তাবা প্রভারেক সমতাগে প্রহলপর্কক চর্ব করিবে এবং এই চর্ব ক্ষ ভের অর্থেক পরিমাণে চিরভাচ্ব ভাষার সহিত মিজিত করিবে। ইছার নাম স্থাননিচ্ন। এই স্থাননি চূর্ব বাজ পিত্ত কক, বাজস্বর, গৈতিকজ্বর, মোলিক-জ্বর, সির্বাচজ্বর, বাউপৈতিকজ্বর, বাউনৈত্মিকজ্বর, পিত্তলৈত্মিকজ্বর, আগা-জ্জ্জ্বর, থাতুস্থবিষমজ্বর, শীতজ্বর, মানসিকজ্বর, ঐকাহিকজ্বর, তপ্রা, নাহ, জ্বার, ত্থা, বাস, কাস, পাণ্ডু, ছজোগা, কামলা, ত্রিকশূল, পৃষ্ঠশূল, কট্টিশূল, জ্বায়শূল এবং পার্যপূল নিবারণ করে। সকল প্রকার জ্বর নিবারণ করিবার নিমিত্ত ইছা শীতল জ্বল সহ সেবন করিবে। বিহুর স্থাননি চক্র যেমন দানবদিগকে বিনাশ করিয়াছিল, তজ্রপ এই স্থাননি চুর্ণ সকল প্রকার জ্বরকে
বিনাশ করে।

বটী প্রক্রিয়া যথা।—
আদে বিরেচনং কার্যাং ন চ ক্ষীণে কদাচন।
কীণ্দেহে বালকে বা রেচনং প্রাণনাশনম্॥
বটীপ্রক্রিয়া। যথা—

(বিরেচন বা রেচন—মে ঔষধে দান্ত হইয়া উদর পরিশুদ্ধ হয়।)
ক্ষীণব্যক্তির প্রতি কদাচ বিরেচন ঔষধ প্রয়োগ করা উচিত নহে। যেহেতু
ক্ষীণদেহবিশিক্ট ব্যক্তিকে এবং বালককে বিরেচন করাইলে, ভাহাদের প্রাণ লক্ষ হইবার সম্ভাবনা।

যথাহ ৷

বাল-রদ্ধ কশ-কীন-পীনসার্ভ-ভয়ার্দ্ধিতাঃ।
ক্রন্ধ-শোষ-তৃষ্ণা-যুক্তা গর্ভিণী চ নবন্ধরী।
অধো গচছতি যস্যাসূক্ স্থতিকাতক্ষপীড়িতাঃ।
নৈতে বিরেক্ষোগ্যা স্থারণ্যেষাঞ্চ বলাবলম্।
নবন্ধরে প্রয়োক্তব্যা যে যোগা ভেদকারকাঃ।
তে তথৈব বিনির্দ্ধেশ্যা বীক্ষ্য দেহমলাদিকম্।
অন্তপ্রকার কথিত আছে। যথা –

বালক, রদ্ধ, কৃশব্যক্তি, ক্ষীণব্যক্তি, পীনস রোগাক্রান্ত, ব্যক্তি, ভয়ার্দিড জৈ, কক্ষব্যক্তি, শোষ ও তৃষ্ণা সংযুক্তা গর্ভিণী, নবজ্বনী, স্থতিকারোগা-ভা নারী এবং বাহার রক্ত অধোমার্গ (গুছ) দিরা নির্গত হয়; এই সকল জ্ব এবং বলাবলাস্পারে অপর ব্যক্তিগণও বিরেচনের অধোগ্য। নবজ্বরে সকল ভেদকারক (বিরেচক) যোগ (ঔষধ) প্রয়োগ করিবার বিধান আছে, াই দেহ, বলাদি বিবেচনা করিয়া রোগীর প্রতি প্রয়োগ করিবে।

रेष्ट्राट्डमी तमः।—

ष्ट्रणाः भारतिकन्ः ममहित्रः ज्लाक भस्कस्य। विश्वा क विश्वना ज्ला नवस्रनः देवभागवृन्धः विरंभः॥

শুরিক প্রনিতো রসো হিম জলৈ সংসেবিতো রেচয়ে । যাবল্লোফজলং পিবেদপি বরং পথাঞ্চ দখ্যোদম্য। ইচ্ছাভেনী রস।

্টিকণ – সোহাগার খৈ। পারদ – পারা। বিশ্বা – শুঠী। জৈপাল – জয়পাল বীজ। শুঞ্জা – রক্তিকা। এদন – অন্ন।)

গারদ, সোহাগা, মরিচ ও গন্ধক; এই সকল দ্ব্য প্রত্যেকে এক একভাগ, ওঠী ২ ভাগ এবং জরপাল বীজ ৯ ভাগ; এই সমুদার বস্তু একত্র মিশ্রিড করিরা ১ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম ইচ্ছাভেদী রস। এই ইচ্ছাভেদী রস এক বটী শীতল জলের সহিত সেবন করিলে ইচ্ছান্থসারে বিরেচন হয়। এই ঔষধ ভক্ষণ করিয়া যতক্ষণ পর্যন্ত উষ্ণ গেরম) জলাপান না করা যায়, ততক্ষণ পর্যন্ত বিরেচন হইতে থাকে। এই ঔষধ সেবন করিয়া বিরেচন হইলে, দধির সহিত জন্ধ পথ্য করিতে দিবে।

অপরেচ্ছাভেদী রদঃ।—

কৈপালাফৌ দ্বিকো গন্ধ স্তিশুগু মরিচং দ্বিকম্। একস্থতঃ লোহাগৈকো গুঞ্জামাত্রাং বটীং ক্বতাম্॥ শূলব্যাধি ত্রয়ো গুলাাঃ কুষ্ঠাফাদশ পিডজাঃ। ভগন্দরাদিষ্টোগাঃ সর্ব্বে নশ্যন্তি ভক্ষণাৎ॥

অপর ইচ্ছাভেদী রস।

মতান্তরে ইন্ছাভেদী রস কথিত হইতেছে। ৮ আট ভাগ জরপাল বীজ, ২ ছই ভাগ গৰক, ০ তিন ভাগ শুঠী, ২ ছই ভাগ মরিচ, পারদ একভাগ এবং গোহাগা একভাগ; এই সকল দ্রব্য একত্রিড করিয়া এক রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকেও ইচ্ছাভেদী রস বলে। এই প্রয়ধ সেবন করিলে, বিশ্রেচন ইইয়া শরীর বিশুদ্ধ হয় এবং শূলরোগ, বাতিকগুলা, পৈত্তিকগুলা, মৈশ্মিকগুলা, অন্টাদশ প্রকার কুর্চরোগ, পৈত্তিকরোগ সকল, ভগ-শদর ও ছদ্যোগ প্রভৃতি সকল প্রকার ব্যাধি বিনষ্ট হয়।

গদমুরারীচ্ছাভেদী।—

রস বলি গগনাহর্ক শুদ্ধতালং বিষঞ্চ ত্রিকলা ত্রিকট্রকন্তিট্রকণং ভূপনেভিঃ। সম্মিছ জয়পালোন্ত তুর্গুং বিষদ্য ভিনিশমনিশ্যেতন্ত স্বরাজোখবারা॥ ভবতি গদমুরারিঃ বেচ্ছ্যা ভেদকোহয়ম্ হয়তি সকলরোগান সমিপাভানশেষান্।

ইহ হৈ ভবতি পথ্যং মৎস্য-মাংসাদি-সর্বং স্নতবিলোড়িতসম্মিন্ ভোজনঞ্চ ভূরিদেয়ম্ । গদম্বারীক্ছাভেদী।

ে (রস—পারদ। বলি—গন্ধক। গগন – অভ্র। তাল—হরিতাল। ত্রিকলা-হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া। ত্রিকটুক – ওঁঠ, পিপুল ওমরিচ। টঙ্কণ— গোহাগা। অর্ক—তাম্র। অনিশ – সতত।)

পারদ, গন্ধক, অভ্র, তাত্র, হরিতাল, বিষ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া,
মরিচ, পিপালী, শুণ্ঠী, সোহাগার থৈ ও ভৃদ্ধরাজ , এইদকল দ্রব্য প্রত্যেকে
এক এক ভাগ এবং এই দকল দ্রব্য সমষ্টির সমান পরিমাণ জয়পাল বীজ্ব
লইরা হুই দিবদ পর্যন্ত নিরন্তর ভৃদ্ধরাজ রদে মর্দ্দন করিবে। এবং এক রতি
প্রমাণ বর্টিকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার নাম "গদমুরারি-ইচ্ছাভেদী রদ"। এই
ঔষধ দেবন করিলে ইচ্ছান্ত্যায়ী ভেদ হয় এবং দল্লিপাতাদি দর্বপ্রকার ব্যাধি
দম্পূর্ণরূপে বিনষ্ট হয়। আর ইহা দেবন করিয়া বিরেচন হইলে, মৎস্থ মাংদাদি দকল প্রকার বস্তু ত্বতদহ মিশ্রিত করিয়া অধিক পরিমাণে পথ্য দেবন
করিবে।

তৃতীয়—ইচ্ছাভেদী রস।—

শুঠীমরিচসংযুক্তং রসগন্ধক টঙ্গণম্। জৈপালা স্তিগুণাঃ প্রোক্তাঃ সর্ব্যেকত্র চূর্ণয়েৎ॥ ইচ্ছাভেদী দ্বিগুঞ্জঃ স্যাৎ সিতয়া সহ দাপয়েৎ যাবন্তশ্চুলুকাঃ পীতা স্তাবদ্বারান্ বিরেচয়েৎ। তক্রোদনং খাদিতব্য মিচ্ছাভেদী যথেচ্ছয়া॥

তৃতীয়-ইচ্ছাভেদী রস।

(শুগী-শুঠ। রদ—পারা। টঙ্গণ—দোহাগা। জৈপাল—জয়পাল। চুক্লুক—গগুষ। ডক্ৰ—ঘোল।)

শুঠ, মরিচ, পারদ, গদ্ধক ও দোহাগার খৈ; ইহাদের প্রত্যেকে ১এক এক তাগ এবং জন্নপাল বীজ ৩ তিন ভাগ একত্র মিশ্রুপ পূর্বক উত্তমরূপে চুণ্ (ও ড়া) করিবে। এই চুর্গ ২ তুই রতি পরিমাণে ইক্ষ্টিনির সহযোগে দেবন করিলে ইচ্ছাত্যানী বিরেচন হয়। ইহাকে ইচ্ছাতেদী রস বলে। এই উষধ্য দেবন পূর্বক যত গণ্ডুয জল পান করা যার, তত্বার দান্ত হইন্না থাকে। ইহা দেবন করিয়া বিরেচন হইলে, স্বীয় ইচ্ছাত্যানী তক্র সহ অন্ন ভোক্তন করিবে।

ইচ্ছাভেদী গুড়িক৷ ৷—

शांत्रकः गन्नकः क्यां आक्रांताः भिशानी नमः।

সমানি জয়পালানি ক্রিয়ন্তে রেচনায় চ। শীতেন রেচয়েৎ সম্যক্তক্ষেনৈব প্রশাম্যতি॥ ইচ্চাভেনী গুডিকা।

পারদ, গন্ধক, সোঁভাগ্য (টছণ) ও পিপ্পালী; এই সকল দ্রব্য সম পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক সকল দ্রব্যের সমান জয়পাল বীজ চূর্ণ করতঃ, মিশ্রিড করিয়া যথাযোগ্য অহাপানের সহিত সেবন করিলে বিরেচন হইয়া থাকে। ইহাকে ইচ্ছাভেদী গুড়িকা বলে। এই ঔষধ সেবন করিয়া শীতল জল পানাদি শৈত্যক্রিয়া করিবে। কিন্তু উষ্ণ আচরণ করিলে দাস্ত বন্ধ হয়।

ক্রিশো রসঃ।-

অভয়াচৃণমাদায় মৃতনৈর্জয়পালকৈঃ।
পঞ্চমাংশেন মিলিতৈঃ স্ব হীক্ষীরেণ মর্দ্দিতাঃ॥
গুড়িকান্তদাাঃ কর্ত্তবা বর্ত্ত লাশ্চণকপ্রভাঃ।
একৈকদ্যাদা টক্ষ্যা কৈচনেশ্চ রদৈন্তদা॥
কর্মিশো ন চ দাহঃ দ্যান্ন চ মূর্চ্ছা ভ্রমঃ ক্রমঃ।
বেগতঃ সারয়েদেষা বিশেষাদামনালিনী॥
নিরহেণ তথা নৈব তথা বিন্দুয়তেন চ।
ত্রিরত্যা ন তথা রেচ্যা মথাস্যাদ্গুড়িকোন্তমা॥
অতিশুদ্ধং ভবেদেহ্যতিপ্রবলমুক্তমম্।
অতিরপম্ভিপ্রে গুড়িকা দেয়া চোদরে দারুণাময়ে।
অধ্যেদেশেরু সর্বের্ গুদেরু চ মহৌদধিঃ।
দীয়তে ক্ষায়তে চামঃ কামকায়-বিবর্দ্ধনঃ॥
ক্রিশারদ।

(অভন্না – হরীতকী । স্থা – মনসাসিজ। ক্ষীর—তাহার আঠা। বর্জু লই গোলাকার। চণক—বুট। টক্ল—চতুর্মাষক পরিমাণ। নিরহ – মল নিঃস-রণার্থে পিকারী বিশেষ। বিষয়ে—উদরে গুড়গুড়া শব্দ। গুদ্দ – গুছা।)

উত্তমরূপে হরিতকী চূর্ণ করিয়া ঐ হরিতকী চূর্ণের পঞ্চমাংশ নূতন জয়পাল বীজের চূর্ণ একত্র মিশ্রিত করিয়া, মনসাসিজের হুদ্দের সহ উত্তমরূপে মর্দ্দর-পূর্দ্দক চলক (৪ মাষা) প্রমাণ গোলাকার বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন এই বটিকার এক একটী বটী, সেবন করিলে দাহ, মূর্ক্তা, শ্রম, ক্লান্তিবোধ, বিশেব্দি আমানোয সমূলে বিনাশ করে। ইহাকে "ক্লিশ রস" বলা যায়। ইহা শেবন করিলে ধেমন স্থানে বিরেচন হয়; নিরহণ (পিচ্কারী), বিশুষ্ত ও ক্লিউডীচুর্ল প্রয়োগেও বে প্রকার পরিভাররূপে বিরেচন হর না। এই ক্লিশ রস সেবলে বিরেচন ছইলে, তদারা দেহ ওছ, সম্মিক রক্ষালী, অজীব পুন্দর ও সুদৃঢ় এবং রোগীর আয়ংহ্বদ্ধি ছইরা থাকে। বিউন্ত, দাকণ উদরা-ক্ষ্ম, অধোদেশগত সকলপ্রকার রোগ এবং গুলুরোগসমূহে ইহা দর্হোব্যি। গ্রুই প্রথা সেবন দ্বারা আমনোয় ক্ষর প্রাপ্ত হইরা শরীরের দীন্তি বর্দ্ধিত হয়।

পুষ্পরেচনী গুড়িকা ।—

দেবদালী স্বৰ্ণপুষ্পং শুড়েন বটকীকৃতম্।
শুদমধ্যে প্ৰদেয়েষা পাতয়েচ্চ মহাগদম্ ॥
অধশ্য সামমায়াতি পুনঃ সা দীয়তে শুদে।
প্ৰকাল্য বারিণা চৈষা বারং বারং প্রয়চ্ছতি ॥
অনেন ক্রমযোগেন মলমামং বিরেচনম্ ।
জায়তে সকলং দেহং শুদ্ধবর্ণং নিরাময়ম্ ॥
পুশারেচনী গুড়িকা।

((मरतानी - इन्टिर्शायक, (शायाकन । खर्नभूष्म - (मानानू ।)

ঘোষাকল, সোণালুকলের মজ্জা; এই ছুইটি দ্রব্য সমান ভাগে এছণপূর্বক উছাদের দ্বিগুণ গুড়ের সছিত মর্জনপূর্বক লম্বাকৃতি বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইছার এক একটা বটা গুছ মধ্যে প্রবেশ করাইলে, উত্তমরূপে দাস্ত ছইয়া নানাবিধ্ব জ্ঞসাধ্য রোগ বিনম্ভ ছইয়া থাকে। এবং অন্ত কোন প্রকার বিকদ্ধ প্রথম উদর্ব মধ্যে সনিবিষ্ট রছিলে, ভাষাও এই ঔষধ দেবন দ্বারা আন্মের সহযোগে বিরেচন ছইয়া নিঃস্ত ছইয়া যায়। এই ঔষধে একবার বিরেচন ছইলে গুছদেশ জ্ঞলন্দ্রারা থৌত করিয়া পুনর্বার অপর আর একটা বটা গুছদেশে প্রবেশ করাইবে। এবস্প্রকারে জলদিয়া গুছদেশ পুনঃ পুনঃ ধৌত করতঃ বটিকা প্রদান করিলে, আম ও মল বিরেচিত ছইয়া দেছ বিশুদ্ধ, স্কুন্দর কান্তিবিশিষ্ট ও নিরাময় ছয়।

সর্বাঙ্গন্ধরো রসঃ।—

শুদ্ধক গন্ধক বিষক জয়পালকম্।
কটুত্রক ত্রিকলা টদ্ধণক সমাংশকম্।
ক্যুত্রক ত্রিকলা টদ্ধণক সমাংশকম্।
ক্যুত্রক ত্রিকলা প্রয়োজব্যা গুঞ্জাত্রসমা ততঃ।
সর্বেষু জ্বরোগেষু সামবাতে বিশেষতঃ।
নাশয়েৎ খাসকাসক ছ্যিসাদং বিশেষতঃ।
ব্রেক্ষণা নির্মিতঃ পূর্বং রসঃ স্ব্রিদ্যুক্ষরঃ।

मर्काक्यभद्र दम्।

্ভদ্বত — শোধিত পারদ। কটুত্র — দরিচ, শিপুল ও ভাই জিল্লাল আমলনী, হরীতকী, বহেড়া। টক্লণ – সোহাগা। ক্ষেত্র বিষয় ক্ষিত্র ক্ষিত্

জুরকেশরী।--

ভদ্ধতং বিষং ব্যোষং গদ্ধ স্থিকলমেবচ।
জয়পালং সমং কুর্যাৎ ভৃঙ্গতোয়েন মর্দমেৎ॥
বিটিকাং গুঞ্জমাত্রাস্ত্র কৃত্রা বৈদ্যঃ প্রযত্নতঃ।
প্রমাণং সর্বপাকারং বালানাঞ্চ প্রশাসতে॥
মারিকেলামুনাবাপি সর্ব্রন্ধর বিনাশিনী।
মারিকেল ঙ্গলং শস্তং ত্রিকর্ষক পিবেদকু॥
দিতয়া চ সমং পীত্রা পিভজ্বর বিনাশিনী।
মারিচেন চ পীতা সা সন্নিপাতজ্বরং জয়েই॥
পিপেলী-জীরকাভ্যান্ত দাহজ্বরবিনাশিনী।
বিষমজ্বর-ভূতোথং ক্বরশ্লীহানমেব চ॥
জামান্দ্রমজীর্ণকু শ্রথক সুদারুণম্।
শ্লব্যাধি ত্রয়োগুল্যা কুষ্ঠান্টাদশপিতজান্॥
জ্বরকেশরী নামেয়ং তরুণ-ক্বরনাশিনী॥

জ্বকেশ্রী।

্ ক্ত—পারদ। ব্যায়-তিকটু অর্থাৎ শুঠ, পিপুল, মরিচ। গন্ধ-গন্ধক। তিফল—হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া। ভূকভোর—ভূলরাজের স্বরস। সর্বপু—সরিষা। শ্বরপু—শোখ। ত্রিকর্ষ—ও ভোলা। সিতা—চিনি। জীরক—জীরা।)

শোষিত পারদ, শোষিত বিষ; ওঠী, পিপালী, দারিচ, শোষিত গন্ধক, আঘলনী, বহেড়া, হরীতনী এবং জরপাল; এই সমুদর বস্তু প্রফ্রোকে সমান ভাগে গ্রহণ পূর্বাক ভূজরাজের রদে মর্জনপূর্বাক ১ এক রভি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুক্ত করিবে। ইয়া বালক্ষিপকে সেবন করাইতে হুইলে এক সর্বপ আকার করি করা বিধের। এই উবধ নারিকেলের জলের সহিত্ত সেবন করিরা, প্রকাশ ৬ ভোলা করিকিন্তু করিব। ইতাতে স্বর্গা, প্রকাশ আকার রোগ বিনই হয়। ইহা ইকুচিনির সহিত দেবন করিলে পিক্সির আন্তোগ্য হয়। ও মরিচচ্প সহযোগে সেবন করিলে সালিপাতিক জবং পিপুলচ্র্ণ অথবা জীরা চুর্ণ সহ সেবন করিলে দাইজর, ভূতোথিতজ্বর, প্রীহা, অগ্লিমন্দ্রতা, অজীপ্র অনাকণ শোথ, শূল, শূলজনিত অজীর্ণতা, ত্রিবিধ গুলা, অষ্ঠাদশ প্রকার কুষ্ঠ এবং পিত্তজন্ম রোগ সকল বিনই হয়। এই ওবধ তক্ষণজুর দাশক জ্বকেশরী নামে বিখ্যাত।

মুব্যুঞ্যোর বনঃ।—

বিষদ্যৈকং তথা ভাগং মরিচং পিপ্পলীকণাম । গন্ধকদ্য তথা ভাগং ভাগং দ্যাৎ টঙ্কনদ্য বৈ ॥ সর্বত্ত সমভাগং স্যাধিস্কুলন্ত দ্বিভাগিকম্। জমীরসা রসেনাত্র ভাবাং হিঙ্গুলণোধিতে 1 রসম্ভে সমভাগং স্যাদ্ধিস্থলং নেষাতে তদাণ গোমূত্র-শোধিতকাত্র বিষং সৌবীর-শোধিতম্॥ শুক্ষকেৎ সমভাগং স্যাৎ দৌবীর-শোধিতঞ্চরেৎ। **চ্**ৰ্ণয়েৎ খলমধ্যে তু মুদ্যামান্বটীঞ্রেৎ ॥ রসশ্চেৎ য়মভাগং স্যাদ্ধিঙ্গুলং নেষ্যতে তদা I মুত্যুরপং জ্রং হন্তি শূলপাণিঃ স্বরং রসঃ॥ মৃত্যুর্বিনির্জিতে। যশাৎ তেন মৃত্যুঞ্জয়রসঃ। অব্যক্তঃ দিদ্ধিদঃ শুদ্ধো রোগল্পঃ কীর্ত্তিবর্দ্ধনঃ ॥ ষশঃপ্রদঃ শিবঃ সাক্ষাৎ মৃত্যুঞ্জয়ো রসঃ স্মৃতঃ। মধুনা লেছনং প্রোক্তং সর্বজ্ব-নির্ভয়ে॥ দধ্যদকারুপানেন বাতন্ত্র-নিবর্ণঃ। আদ্র কিন্য রদে পানং দারুণে নাল্লিপাভিকে 🛭 জন্বীর-দ্রেবিধাগেন চাজীর্ণ-জ্বর নাশনঃ। অজাজীগুড়সংযুক্তং বিষমন্বর নাশনম্॥ তীব্রস্থারে মহাঘোরে পুরুষে যৌবনান্থিতে। পূर्नमांबा अनांडिंगा পূर्न बर्षि हें छुस्सम् ॥ ন্ত্ৰীবালে রদ্ধে ক্ষীণে চ অৰ্দ্ধদাত্তা প্ৰকীৰ্ত্তিত।। জতিরদ্ধে চ ক্ষীণে চ শিশে চাল্পবয়স্যাপি । তুর্য্যাতা প্রদাতব্যা ব্যবস্থা দারনিশিকো। स्व बद्द अमार्ग ह यारियकान्नान्दर्शक्त्रय ॥

মধ্যস্করে তথাজীর্ণে ত্রিরাত্রারাশরেদ্ গ্রুবম্ । সপ্তাহাৎ সন্নিপাতোখং জুরাজীর্ণকসঙ্কং ॥

মৃত্যুঞ্জর রস।

(কণা – চূর্ণ। টকণ – সোহাগা। জন্তীর – জামীর নেবু। সৌবীর – কাঁজি । সৌর – স্থ্যাতপ। খল – ত্তবধ মাড়িবার খল। শূলপাণি – মহাদেব। তুর্বা – চতুর্থাংশ। নিবর্ছণ – বিদাশক। আর্দ্রিক – আদা। অজাজী – কৃষ্ণজীরা। যাম – প্রহর। দ্যাদক – দধিরমাত্।)

বিষ, মরিচ, পিপ্পলী, গন্ধক এবং সোহাগা; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে এক এক ভাগ, এবং হিন্দুল ২ হুই ভাগ একত্র মিশ্রণ পূর্বক জলসহ খলে প্রেষণ করতঃ মূদ্যা (মুগের দাইলের সদৃশ) প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। জন্মীররদে হিন্দুল শোধন করিবে। ইহাতে ১ এক ভাগ পারদ প্রদান করিলে ছিলুল দিতে হয় না এবং গোমূত্র দ্বারা বিষ সংশোধন করিয়া লইবে। এই ঔষধ মৃত্যুন্দরূপ জ্বাকে বিনাশ করে এবং মৃত্যুকে জ্বয় করে বলিয়া ইহাকে "মৃত্যুঞ্জরদ" বলে। এই মৃত্যুঞ্জর রদ দকল প্রকার রোগে দিদ্ধি-প্রদা, দেহভান্ধি কারক, সর্ব্ববিধ রোগ নাশক, কীর্ত্তিবর্দ্ধক, যশঃপ্রদায়ী এবং माकाद बिव (महाराव) खक्र निव (महल) छनक । हेश मधुद्र महिछ লেছন পূর্ব্বক দেবন করিলে সর্ব্বপ্রকার জ্বর বিন্ট হয়। আদার রুসের সহিত দেবন করিলে ইহাতে সান্নিপাতিক জ্ব বিনাশ পায়। দধির মাতের সহযোগে পেবন করিলে ইহা বাত নিবারণ করে। জম্বীর রদের সহিত দেবন করিলে অজীর্গজর বিন্ট হয়। ক্রঞ্জীরা ও ইক্সগুড সহযোগে সেবনে ইহা বিষম্ভার নষ্ট করে। লোকের যৌবনকালে অতি তীত্র ঘোরতর ত্বর হইলে, পূর্ণ-মাত্রায় অর্থাৎ ইহার ৪ চারিটী বড়ী পর্যান্ত দেবন করিবে। জ্রীলোক, বালক, बुद्ध এবং ক্ষীণদেহ বিশিষ্ট ব্যক্তিগণকে অর্দ্ধশাত্রার অর্থাৎ ২ ভূইবটী দেবন করাইবে। এবং অতি রৃদ্ধ, অতি ক্ষীণ ও অতি শিশুদিগকে একটী মাত্র विज्ञैकारे श्रमान कतित्व। अरे छियश मिवन कतित्न महारमात्र नरक्त्र, अक প্রছরের মধ্যে; মধ্যজ্বর ও জীর্ণজ্বর তিনরাত্তের মধ্যে এবং দান্নিপাতিক জ্বর এক সপ্তাহ মধ্যে বিনষ্ট হয়।

নবৰ্রাকুশঃ।—
ক্রেণে রদ্ধান্ রস-গন্ধ-হিন্দুলান্,
নৈকুন্তবীজান্যথদন্তীবারিণা।
পিন্টুাস্য গুঞাভিনবৰ্রাপহণ,
জলেন চার্দ্ধিতারা প্রয়োজিতা॥
নবৰ্রাহুশ।

(রস—পারদ। গন্ধ – গন্ধক। নৈকুজনীজ – দন্তীনীজ। সিভা – ইকুচিনি) পারদ ১একভাগ, গন্ধক ২ চুইভাগ, হিজুল ৩ ভিন্তাগ এবং দন্তীনীজ চান্ত্রিভাগ ; এই সকল জবা একত্ত গিতাণ পূর্বক দন্তীর স্কাৰে উত্যানপৌ দিন করিয়া ০ ভিন্ত্রতি পরিমাণ বঁটীকা প্রকৃত করিবে। এই তবধ নবজরে মুর্বাৎ জ্বের প্রথম অবস্থায় অর্থেক পরিমাণ ইক্ষুচিনি মিশ্রিত করিয়া জল-হু রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

জ্বর-ধুমকেতু রসঃ।

অদ্যাৎ সমং স্থতসমুদ্রকেণহিন্দুলগন্ধং পরিমন্য যামম্।

লব জ্বরে বল্ল-যুগং দ্বিখ্তামাদ্রে যুনায়ং জ্বরধুমকেতুঃ॥

জ্বধুমকেতু।

শৈষিত পারদ, সমৃত্রকোন হিন্দুল এবং গন্ধক; এই দ্রব্য চতুষ্টয় সমভাগে এইন পূর্বক > প্রহরকাল খলে পেষণপূর্বক মিশ্রিত করিবে। তৎপরে ২ ছুইদিন পর্যান্ত আদার রদের সহিত মর্দ্দন করিয়া ৪।৫ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকে জ্বরধুমকেতু বলে। এই উষধ এক বল্প (তর্তি) পরিমাণে সেবন করিলে সকল প্রকার তহুণজ্বর বিনষ্ট হয়।

শানো পারদগদ্ধে চ কণা চ কটুকী তথা।
প্রত্যেকং পিচুভাগেন ভাবরেদ্ধি রসন্ততঃ।
কুলস্য কারবেল্লস্য রসৈন্দ্র সপ্ত-তোলকৈঃ।
মৃতসঞ্জীবনো নাম রসো গুঞাচতুইরম্।
ব্যাতিকং হণ্ডি মহাঘোরং দ্বনজং সত্রিদোবজম্।
বাতিকং পৈতিককৈব সদাহং শৈয়িকং প্রিয়ে॥
ঐকাহিকং দ্বিতীয়াহং তৃতীয়কচাতুর্থ কে।।
হন্তি সর্বান্ স্বান্ ঘোরান্ দিনৈকেন মহেশ্বরি॥
পথাং মথেন্সিতং ভকং শাল্যন্নং স্নীতং দধি।
নাতঃ পরতরং কন্টিৎ বিদাতে জ্বরক্র্মনি॥
মুতসঞ্জীবন রস।

শান – ৪ চারিমাযা অর্থাৎ অর্থ তোলা। কট্কী – কট্কী। পিচু – কর্থ ১ ২ ডোলা। কুল – পটোলপত্তা, পল্ডা। কার্থেয় – করেলা উচ্ছে। কে – তোলা।)
গারদ, গারক, পিথুজুচুর্গ, কট্কীচুর্থ। এই তাব্য চতুইর প্রভাৱে ওক্তোলা চারিদ, গারক, পিথুজুচুর্গ, কট্কীচুর্থ। এই তাব্য চতুইর প্রভাৱে ওক্তোলা চারিদ, গারক প্রথমিক বিশ্ব হ ছইভোলা ক্রিমা। আহল করিরে।। একং পাই- করেলাউন্দের রুদে ভারমা দিবে। ভদনম্ভর সৃষ্টাতপে শুক্ত করিয়া ৪ চারির বিদ্যাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম মৃত্যঞ্জীরন রুদ। দেবদের মহাদেব মহেশ্বরীকে বলিলেন, হে প্রিয়ে। এই মৃত্যঞ্জীবন রুদ বাতিকজ্ঞর পৈতিকজ্ঞর, লোগিকজ্ঞর, বাতপিওজ্ঞর, বাতসেশ্বজ্ঞর, পিতন্তেজ্ঞর, নামি পাতিকজ্ঞর, দাহসংযুক্তজ্ঞর, ঐকাহিকজ্ঞর, দাহিকজ্ঞর, দ্ভতীয়কজ্ঞর, এবং চাতুর্থকজ্ঞর প্রভৃতি সকলপ্রকার অতি ভয়ানক ঘোরতর জ্ঞর সমূহ এক দিক সের মধ্যেই বিনাশ করে। এই ঔষধ সেবন করিয়া যথেপিত শালিখাজ্ঞের জ্ঞান, শীতল দ্রব্য ও দ্বি প্রভৃতি ভক্ষণ করা যায়। জ্ব্যতে এতদপেক্ষা উৎক্ষিই প্রয় আর নাই।

জুরারিঃ রসঃ ।---

রসো বলিস্ত্রিকটুকং জয়পালাময়ত্বচম্।
ক্রিরাভতিক্তকং মুন্তং সমভাগং প্রকল্পয়েৎ।
নিশু গুটার্দ্র রৈসভাব্যং ভক্ষয়েৎ রক্তিকাদ্বয়ম্।
আচ্ছাদ্য যত্নতো বৈদ্যৈগাবদ্যর্মসূতির্ভবেৎ।
যামাদ্ধাদ্দেহিনাং তত্ত্ব ক্রো মুক্তি নিশ্যয়ঃ।

জ্বারি রদ।

(রদ—পারদ। বলি—গন্ধক। ত্রিকটু—শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ। আদর কুড়। ত্বক্—দারুচিনি। কিরাততিক্তক—চিরাতা। দিগুঁওী—শেকালিক অর্পাৎ সিউলী।)

পারদ, গন্ধক, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, জরপাল, কুড়, দারু চির্দান, চিরাতা এবং
মুথা , এই সমস্ত দ্রব্য সমানভাগে গ্রহণ পূর্বক চূর্ণ করিবে। উৎপরে ৩৪ দিন
শেকালিকা পত্রের রসে ও আদার রসে মর্দ্দন পূর্বক ২ছই রক্ত্রি প্রমাণ বটীক
প্রস্তুত করিবে। ইহার ১ এক বটীকা রোগীকে সেবন করাইরা মর্ম্মন্তাব ন
হওয়া পর্যন্ত রোগীর সর্বাদ্ধ বুজ্র দ্বারা যত্ত্বপূর্বক আচ্ছাদন করিয়া রাখিকে।
এই ঔষধ সেবন করিলে অর্দ্ধপ্রহের মধ্যে রোগী জার হইতে মুক্ত হইয়
ংগকে। ইহার নাম জরারি রস।

উদকমঞ্জরী রসঃ।—
স্থাতো গন্ধ উদ্ধণঃ দোষণং স্যা
দেতৈ স্তল্যাও শর্করাং মৎস্যাপিতৈঃ।
ভূয়োভূয়ো ভাবয়েজু তিরাজং,
বলো দেয়ং শৃকবেরস্য ব্যব্ধা।
দিকেন্ত্রেই বারিণা তক্র ভূতিই
চুণিকার্যাই পথাবের ক্রিক্রিয়া।

धाराग-विद्यापनिः।

অন্নরোগং হত্তি সাম্থ প্রবাতং পিতাধিকো মূর্দ্ধি বারি-প্রয়োগঃ ।

উদক মঞ্জরী রস।

্পত-পারদ। গন্ধ – গন্ধক। উষণ—মরিচ। শর্করা – ইকুচিনি। বল্ল – ন্বতি। শূলবের – আদা। তক্র – ঘোল। চূর্নিকা – শর্ক্ত অর্থাৎ ছাতু ব্যানে দেধান খৈ।)

পারদ ১এক মাষা, গদ্ধক ১ এক মাষা, টঙ্গণ ১ এক মাষা ও মরিচু,

ত এক মাষা এবং ইক্লিনি ৪ মাষা; এই সকল বস্তু একত্র মিশ্রিত করিয়া

ত ভিন রাত্রি পুন: পুন: রোহিতম দেখার পিত্ত দ্বারা ভাবনা দিয়া ৩ রভি

পরিমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক বটিকা আদার রসের সহিত সেবন

করিবে। অত্যন্ত উষ্ণতা অহ্নভূত হইলে শরীরে জল সিঞ্চন এবং তক্রসহ

দেখানের খৈ পথ্য করিতে দিবে। পিতাধিক্যে মন্তকে জলের পটী দিবে।

এই ঔষধ সেবন দ্বারা অম্বরোগ, সামজ্বর ও বাতজ্বর বিন্দ্র হয়। ইতি উদক
মঞ্জরী রস।

চিন্তামণিঃ।

তালকং শুক্তিকাচূর্ণং শিখিগ্রীবং সমাংশকম্।
সংপিষ্য কারয়েৎ সর্বাং চক্রিকা সদৃশং শুভম্॥
শরাবেংপি হিতং রাঝৌ পুটেদাজপুটেন চ।
স্বাঙ্গি শীতল মুদ্ধত্য ভক্ষরেগ্রাষ্যাত্রকম্॥
শর্করা-সহিতং দেব্যং সর্বজ্বরহরং পরম্॥

চিন্তামণি।

(তালক – হরিতাল। শুক্তিকাচ্ণ – নিয়কভস্মচ্ণ। শিথিপ্রীব – ভূঁতে চক্রিকা – রক্তি। শরাব – মুখ্যপাত্রবিশেষ, শক্কা।)

ছরিতাল, শুক্তিচূর্ণ ও তুঁ তেভন্ম ; এই দ্রব্য সকল সমানভাগে গ্রহণপূর্ব্বক পোষণ করত ; চক্রিকা সদৃশ বটী করিয়া রাহিতে গজপুট দ্বারা শ্রাব সংপুটে পুটপাক দিবে। তদনন্তর শীতল হইলে ঐ ঔষধ গ্রহণপূর্ব্বক ১ একমাযা পরি-মাণে শর্করা সহ সেবন করিবে। ইহা দ্বারা সর্কবিধ ক্ষর বিন্তু হয়।

মহাজ্রাকুশো রদঃ।

রসং গন্ধং বিষং তুল্যং ধৃর্ত্তবীজং ত্রিভিঃ সমস্।
চতুর্ণাং দ্বিগুণং ব্যোষং চুর্ণং গুঞ্জাদ্বরং হিতম্॥
জন্মীরস্যা চ মজ্জাভিরাক্রে ক্সা রসৈয়্তিম্।
মহান্ধ্রাস্কুশো নাম জ্রাফকনিস্থানঃ॥

ঐকাহিকং দ্যাহিকঞ্চ ত্র্যাহিকঞ্চ চাতুর্থকম্। বৈষমঞ্চ ত্রিদোরে বিষয় কর্মান ক্রিকার বিষয় । মহাজরাক্তম।

পারদ্ধ গদ্ধক ও বিষ; এই জব্যত্রয় প্রত্যেকে ১ একভোলা, ধূর্ত্তবীজ্ঞ, (ধৃতুরার বীজ) ০ ভোলা, মরিচ্চ্র্ন ৪ চারিভোলা, পিপ্পলীচ্র্ন ৪ চারিভোলা, এবং শুঠীচ্র্ন ৪ চারিভোলা; এই সমস্ত জব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া জ্বীরের মজ্জার রদে ও আদার রদে মর্দ্দন করিয়া ৪।৫ রভি প্রমাণ বিটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম মহাজ্বরাস্কুশ। ইহা দেবন করিলে ঐকাহিকজ্বর, ঘাহিকক্ষর, ত্রাহিকজ্বর, চাতুর্থকজ্বর, বিষমজ্বর এবং সাশ্লিপাতিক প্রস্তৃতি অস্টবিধ্ব ক্ষর বিন্যী হয়।

জয়াবটী।--

বিষং ত্রিকটুকং মুস্তং হরিদ্র। নিম্ব-পল্লবম্। বিভূপ্দমন্টমং সর্বাং ছাগী-মূত্রৈঃ সমং সমম্॥ চণকাভা বটী কার্য্যা স্যাজ্জয়া যোগবাহিক।॥
জ্ঞাবনী।

বিষ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, মুথা, ছরিদ্রা, নিম্নপত্র, বিড়ন্দ, ও জয়ন্তীমূল; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণ পূর্বক ছাগা মুত্রসহ পেষণ করিয়া চণক প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম জয়াবতী। এই জয়াবটী সেবন করিলে, সকল, প্রকার জর বিনষ্ট হয়।

জয়নী বটী।—

বিষং পাঠাখগন্ধা চ বচা তালীশ-পত্ৰকম্।
মরিচং পিপোলী নিষং ছাগমূত্তিঃ সমং সমম্॥
বটিকা পূর্ববৎ কার্য্যা জয়ন্তী যোগবাহিকা॥
জয়ন্তী বচী।

বিষ, আক্নাদি, অশ্বগন্ধা, বচ, তালীশপত্ত, মরিচ, পিপুল, নিম্নপত্ত ও জন্মন্তীপত্ত ; এই দকল দ্বান্য দমান পরিমাণে এছণ পূর্বক ছাগামুত্র দহ বাটিয়া চণক প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ সেবন করিলে দকল প্রকার জ্ব বিন্দ্র হয়।

ষোগবাহিক জয়াজয়ন্তী।—
জয়ন্তী বা জয়া বাথ ক্ষীরেঃ পিভজ্বরাপহা।
মুদ্যামলক-ফুষেণ পথ্যং দেয়ং য়তং বিনা॥
জয়ন্তী বা জয়া বাথ সক্ষোদ্র-মরিচাম্বিতা।
সন্নিপাতজ্বরং হন্তি র্মুশ্চানন্দভৈরবঃ॥
জয়ন্তী বা জয়া বাথ বিষমজ্বমুদ্ য়তিঃ।

मर्ज्बद्धतः मधुरवागंवः शवाः मृत्वन नीज्यम् ॥ চন্দ্রতা ক্ষায়েণ রক্তপিভছরাপহা। জয়ন্ত্রী বা জয়া বাথ মান্দিকেণ চ কাশজিৎ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাথ ক্ষীরৈঃ পাওু বিবাশিনী জয়ন্ত্রী বা জয়। বাথ তণ্ডুলোনকপানতঃ॥ অধ্যীং হন্তি নে। চিত্রং মূত্রকৃচ্ছূং সমুদ্রবন্। জরন্ত্রী বা জরা বার্থ গোয়ত্রেণ যুকাং পিবেও।। इन्तरं को कार कुरेर एउडरभग ठ एफ्र वर्। হিনিন্দং কেতকী লং পিষ্টা তোয়েন পায়য়েও।। হাতী বা জয়। বাগ মেহং হ**ত্তি সু**রাহ্বয়ং । জরন্তী বা জয়া বাথ মধুন: সর্বমেহনুৎ ॥ লোধ্রং মুক্তাভয়াত্ত্লাং কট্ফলঞ্চ জলৈঃ সহ। কাথয়িত্বা পিবেচ্চানু নধুনা সর্বমেহনুৎ । জয়ন্তী বা জয়। বাথ গুট্ডেঃ কোফজলৈঃ সহ। ত্রিদোষখং হরেদ্ওলাং রসো বাননভৈরবং॥ জয়ন্তী বা জয়া বাপ হত্তি শুগা। ভগনরমু। জয়ন্তী বা জয়া বাথ তক্রেণ গ্রহণীং প্রন্নুৎ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাথ রস্পানন্দভৈরবঃ। রক্তপিতে তিনোযোগে শীততোয়েন পায়য়েৎ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাথ ভূমদ্রাবৈর্নিশান্ধানুৎ। জয়ন্তী বা জয়া বাথ সুটা তন্যেন চাঞ্চম্॥ প্রাবণং সর্বলোযোগ্য মাংসর্দ্ধিক নাশয়েৎ॥ বোগবাহিক জন্নাজন্তী।—

ক্ষে নাম — হজ। মূলা— নুগের দাইল। আমলক—আমলকী। ক্ষেত্রি—
মধু। ব্যোষ — ত্রিকটু। মালিক—মধু। ক্যায়—কাথ। তণ্ডুলোদক— চাউলের
জল। দিনিষ্ক— ৪ মাষা। কট্ফল—কারফল। তক্র— ঘোল। শীততায়—
শীতলজল। ভূকুজাব—ভীমরাজের স্বরুষ। নিশাক্ষ্য—রাত্রক্ষতা। প্রাবণ—
কর্ণরোগ। কেন্ত্রী—কেন্ত্রপুষ্পা)।

জয়াবটী অথবা জয়য়ীবটী ছমের সহযোগে সেবন করিলে পিতজন্ম জর বিনষ্ট হয় এবং উক্ত জ্বরে এই জয়াবটী বা জয়য়ী বটিকা সেবন করিয়া মুগার যুষ জাথবা আমলকীর যুষ পথ্য করিবে; ক্লিন্ত উক্ত যুষে কদাচিৎ য়ত প্রদান দ করিবে না। উক্ত জয়াবটী এবং জয়মী বটী এবং "আনন্দভৈরবর্দা" নামক ু বঁটা মরিচ্ছা ও মধুসহ সেবনে দান্নিপাতিক জর বিন্ট হয়। জন্ম বা জনজী বটী স্বতের সহিত দেবন করিলে বিষমজ্ঞর ভিরোহিত হয়। মধু ও ত্রিকটুর সহ (मवन क्रिल मकल धकांत ख्व ; भागुज महर्शारगर्भवन क्रिल गैष्डक्ष ख्व ; त्रक्रम्मर-दे काथ मह (मरन क्रिल दक्कि विक्कित : यधुमह (मरान काम রোগ; ছগ্ধ সহ সেবন করিলে পাণ্ডুরোগ; তণ্ডুলোদক সহিত সেবন করিলে অশারী ও মূত্রকৃচ্ছ ; গোমূত্র সহ মেননে অথবা প্রলেপে "কাকণ" নামক কুষ্ঠ-ব্যাধি ; ৪ চারিমায়া কেয়ারমূলের দহিত জল সহযোগে বাটিয়া দেবন করিলে স্থরামেছ এবং মধুসছ দেবনে সকল প্রকার মেহরোগ আরোগ্য হয়। উক্ত জয়াবটী বা জয়ন্তী বটিকা সমভাগ লোধ, হরীতকী, মুখা ও কট্ফলের কাথ প্রস্তুত্করিয়া, সেই কাথ ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে দর্বপ্রেকার মেছ রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। ঐ জয়া বা জয়ন্তীবটী অথবা "আনন্টভরবর্নন" উফঅল সংগ্ৰক ইকুগুড় সহ সেবন করিলে ত্রেদোষিক গুলা; শুগী চুর্ণ সহ দেবনে ভগন্দর ; তক্রসহদেবন করিলে গ্রহণীরোগ ; উক্ত জ্বারণী, বা জ্বান্তী-বটী অথবা "আন্দিটভরবর্ম" শীতল জলের সহিত মেবন করিলে ত্রিধোযজ রক্তপিতঃ ভৃদ্যাজের স্বরম মহ মেবন করিলে এবং স্তম্ম তুম্বের সহ উক্ত वर्णित (य क्लानेजी धर्वभभूवर्षक ठकूटा व्यक्षन मिल्ल तांबाक्वा ও मर्व्यमायक কর্ণরোগ বিন্তু হয়। এমন কি উক্ত ২টী দুয় দ্বারা সকল প্রকার রোগ নিধান রিত হইরা শরীরে বলোপায় ও মাংস রদ্ধি হয়।

জ্বাশনিঃ রসঃ ।—

রসং গদ্ধং সৈদ্ধবঞ্চ বিষং টক্ষং সমাংশিকম্।
সর্বচূর্ণসমং লৌহং তৎসমং শুদ্ধমন্ত্রকম্ ॥
লৌহেন লৌহদণ্ডেন নিগু গ্রাঃ স্বরসেনচ।
মর্দুরেন্য রুতঃ পশ্চাৎ মরিচ স্থৃতত্ত্বাকম্ ॥
পর্ণেন সহ দ্বাতব্যং রসং রক্তিপ্রমাণতঃ।
সর্বস্থরহরঃ শ্রেণ্টো জ্বরাশনির্দ্দাহতঃ॥
কাসং শ্বাসং তথা ঘোরং বিষমাধ্যং তথা ব্যম্।
ধাতৃশ্বং মজ্জগং মেদোগতমন্থিগতং জ্বম্ ॥
রক্তিগং মাংসগং হন্তি দাহং সর্বাঙ্গমাঞ্রম্॥

জ্বাশনির্ম।—

(টক্ব—সোহাগা। অভক—অভ । স্বরস—কাঁচা দ্রব্য পেষণ করিলে যে রদ বহির্গত হয়, ভাহাকে দেই দ্রব্যের স্বরদ বলে। নিগু'গ্রী—নিদিন্দা। হত—পারদ। পর্ণ—ভাস্থল। অশনি—বজ্ঞ)। ★ পারদ, গন্ধক, দৈশ্ববলবণ, বিষ, দোহাগা; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে সম-ভাগ এবং লৌহ ও অভ পারদাদি দ্রব্য চতুক্তরের স্বান প্রহণপূর্বক সমুদার অব্যগুলি একত মিশ্রণপূর্বক লেছিখলে রাখিয়া লেছিনও ছারা ' নিদিন্দার রদে মর্দন করিবে। তৎপরে উছাতে পারদ তুল্য একভাগ মরিচ নিক্ষেপ করিয়া এক রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইছার এক এক বটী রোগীকে সেবন করিতে দিবে। এই ঔষধ ছারা সকলপ্রকার জর, খাস, কাস, খোর বিষমজ্বর,বমি, দাছ,ধাতুগত জর, মজ্জাগত জ্বর,মেদোগত জর, অন্থিগত জ্বর, রক্তগত জর ও মাংসগত জ্বর বিনম্ট হয়।

পঞ্চাননো রসঃ ।-

শড্ডোঃ কণ্ঠবিভূষণং সমরিচং দৈত্যেক্সরক্তং রবিঃ। পক্ষো সাগরলোচনং শশিযুতং ভাগার্দ্ধনংখ্যান্বিতম্। খাদেৎ খলুবিমর্দ্ধিতং রবিজলৈগুর্তিঞ্ক্মাতাং দদেও। সিংহোহয়ং স্কুরংহন্তি দর্পদলনঃ পঞ্চাননাখ্যো রসঃ॥

(শক্ষেত্রকণ্ঠবিভূষণ-বিষ। নৈভেন্দ্র-গন্ধক। রক্ত-হিঙ্গুল। রবি--ডাম। পক্ষ্যে-চারিভাগ। অর্ক--আকন্দ্র)।

বিষ ৪ ভাগ, মরিচ ৪ ভাগ, গদ্ধক ৩ ভাগ, হিন্ধুল ২ ভাগ এবং তাত্র ১ ভাগ , এই দ্রব্য সমুদায় একত্র মিশ্রিত করিয়া আকন্দ মূলের রস দিয়া খলে পেষণপূর্ব্বক ১ একরতি পরিমাণে বটকা প্রস্তুত করিবে। ইহা জ্বরূপ হন্তীর দর্প দলনে সিংহ স্বরূপ।

সর্ববন্ধরহরলে ছঃ।—

চিত্রকং তিকলা ব্যোকং বিড়ঙ্গং মুক্তকং তথা।
শ্রেরদী পিপ্পলীমূলমূশীরং স্থরদারু চ॥
কিরাততিক্তকং বালং কটুকী কণ্টকারিকা।
শোভাঞ্জনস্য বীজানি মধুকং বৎসকং সমম্॥
লৌহতুলাং গৃহীত্বা তু বটিকাং কার্য়েন্তিষক্।
সর্বজ্বহরং লৌহং সর্বরোগং বিনাশরেও॥
বাতিকং পৈতিককৈব শ্রৈত্মিকং সান্নিপাতিকং।
দক্ত হং বিষমাধ্যক ধাতৃত্বক জ্বং জয়েও॥
প্রীহানং যক্ততং গুলাং সাম্বাতং স্থলারুণং।
অর্পাংসি ঘোরমূলরং মূর্চ্ছাং পাতৃং হলীমকং॥
অতীসারং গ্রহণীক যক্ষ্মাণং বাতরোগক।
শীতং কম্পং বিষং দাহং ঘর্মসূতি বমিভ্রমান্॥
হল্লাসম্কটিং তন্ত্রাং কাসং শ্বাসং ক্রিমিন্ত্রথা।

ত্তীর-অখ্যার:।

রক্তপিত্বজীর্ণস্ত মন্দাগ্নিং শোথমেব চ।।
হিক্কাং মণ্ডলকং কুন্ঠং উদর্দ্ধক বিনাশরেৎ।
বল্যং পুটিকরং রষ্যং সর্ব্বরোগং বিনাশয়েৎ।।
সর্ববন্ধরহরং লৌহং চন্দ্রনাথেন ভাষিতম্।

गर्खज्ञतहत (लीह।--

(চিত্রক – রক্ত চিতার মূল। ব্যোয – ত্রিকটু। শ্রেয়নী – গজ শিপালী। উনীর—বেণারমূল। স্বরদাক — দেবদাক কাষ্ঠ। কিক্ল তিজক – চিরাতা। বাল – বালা। কটুক – কট্কী। শোভাঞ্জন – সজিনা। মধুক – বফিমধু। বংসক – কুটজ)।

রক্তচিতার মূল, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, বিড়ন্ধ, মুথা, গজ্পপুল, পিপুলমূল, বেণারমূল, দেবদাফ, চিরাতা, বালা, কটুকী, কুন্টকারী, সজিনার বীজ, যফিমপু এবং কুটজত্বক্; এই সকল দ্বব্য প্রেড়েকে সমানভাগে গ্রহণ করিবে, এবং ইহাদের সমষ্টির তুলা লোহ গ্রহণপূর্বক তৎসহ মিশ্রিভ করিয়া জল দিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকে সর্বজ্ঞরহর লোহ বলে। এই সর্বজ্ঞরহর লোহ সকল প্রকার রোগ বিনাশক। এই ঔষধ সেবন করিলে বাতিক জ্বর, পৈত্তিক জ্বর, কোত্মিশ্মিক জ্বর, বিষম জ্বর প্রাত্তিক জ্বর, পিতুমৈশ্মিক জ্বর, বাতদৈত্তিক জ্বর, পিতুমেশ্মিক জ্বর, বাতদৈত্তিক জ্বর, পিতুমেশ্মিক জ্বর, বাতদৈত্তিক জ্বর, পিতুমেশ্মিক জ্বর, বাতদৈত্তিক জ্বর, পিতুমেশ্মিক জ্বর, বাতদেত্বক বিষম জ্বর প্রাত্তিক হয়। স্বয়ং চক্রনাথ বলিয়াছেন যে, এই সর্বজ্বরহরলোহ ক্রমধ দেবন করিলে প্রীহা, যক্রৎ, গুলা, স্থদারণ আমবাত, অর্খাঃ, যোরতর উদররোগ, মূর্ল্ডা, পাণ্ডু, হলীমক, অতীসার, গ্রহণী, যক্ষনা, শোখ, শীত, কম্পাঃ, বিষ, দাহ, ঘর্মজ্বার, বিম, জ্বম, বিবর্মিয়া, অক্রচি, তন্দ্রা, কাস, খ্বাস, জিমি, রক্তপিত্ত, অজ্বীণ, কুন্ঠ, মন্দায়ি, হিক্কা, মণ্ডলকুন্ঠ, বাতব্যাধি ও উদর্ধ প্রভৃতি সকল প্রকার রোগ বিনম্ব ইইয়া বল, পুষ্টি ও তেজ্বন্থিতা বর্দ্ধিত হয়।

রহজ্বান্ধ্রশোরসঃ।—

পারদং গন্ধকং তাত্রং হিন্দুলং তালমেব চ।
বঙ্গং লৌহং মান্দিকঞ্চ খর্পরঞ্চ মনঃলিলা॥
মৃতাভ্রং গৈরিকং তুখং টঙ্কণন্দন্তিবীজকম্।
সর্ববান্যেতানি দ্ব্যানি চৃনিয়ত্বা বিভাবয়েৎ॥
জন্মীর বিজয়া চিত্র তুলদী তিন্তিড়ীরদৈঃ।
এভির্দিনত্রয়ং ভাবাং নির্জ্জনে রৌদ্রসংকুলে।
চণমাত্রাং বটীং কৃত্বা ছায়াশুকাঞ্চ কারয়েং।
মন্দায়িদীপনীচৈব সর্বজ্ববিনাশিনী।
বন্দুজং সর্বজ্বেণ চিরকালসমুদ্ভবম্।

श्रामानिकामानः।

প্রকাহিকং দ্ব্যাহিকঞ্চ ত্র্যাহিকঞ্চ জ্বরস্তথা।।

চাতৃর্থকং তথাত্যুক্স সামদোষ-সমুদ্ধেবম্ ।

সর্ববন্ধরং নিহন্ত্যাশু ভাক্ষরস্তিমিরং যথা॥

রহৎ জ্বাক্ষুশো নাম রসোহয়ং মুনিভাষিতঃ॥

রহজ্বাকুশব্দ।

(তাল—হরিতাল। মাক্ষিক—স্থানিকিক। থপরি—একপ্রকার মৃত্তিকানত ধাতুদ্রবা। মনঃশিলা — মন্থাল। গৈরিক—গেরীমাটী । তুথা—ভুঁতি। তিড়ী—তেঁতুল। চণ —কলায়। ভাস্কর—স্থা। তিমির—অক্ষকার। ধ্রা—ভাঙ্, সিদ্ধি, স্থিবা)।

পারদ, গন্ধক, তাত্র, হিসুল, হরিতাল, বন্ধ, লেহি, ফর্মান্ফিক, হাপ্র, নিলা, অজ, গৈরিক, দোহাগা এবং দন্তীবীজ; এই সমন্ত দ্রা প্রভেতের গান সমান এহণপূর্বক চুর্গ (গুঁড়া) করিবে। তদনত্তর জামীর, ভাঙ্,,রক্তচিভা, নমী ও তিন্তিড়ী; ইহাদের রুসে ১ তিন দিবস ভাবনা দিয়া চণক পরিমাণ টকা প্রস্তুতপূর্বক ছায়াতে শুষ্ক করিয়া লইবে। এই ঔষধ জঠরাগ্রি সন্দীপক বং সর্বজ্ঞর বিনাশক; এবং ছন্দুজ, সাদ্মিপাতিক, বহুকালস্থায়ী, ঐকাহিক, ছিক, ত্যাহিক, চাতুর্বক ও আমনোষজ জ্বর নাশ করে। যেমন স্থ্যাদেব ক্ষার বিনাশ করেন, তজ্ঞপ এই ঔষধ দ্বারা সকলপ্রকার জ্বর বিনন্ট হয়। ই হেতু মহাত্ম মুনিগণ কর্ত্বক ইহাকে "বহুজ্জরাকুশরস" নাম প্রদত্ত হইয়াছে।

রহৎ দর্বজ্বরহরে। লৌহঃ।—

পারদং গন্ধককৈব তাত্রমভক্ত মাক্ষিকম্।
হিরণাং তারতালক কর্যেকং পৃথক্ পৃথক্ ॥
মতং কান্তং পলং দেরং সর্ব্যেকীকৃতং শুভম্।
বক্ষ্যমানৌবধৈর্ভাব্যং প্রত্যেকং দিনসপ্রকর্ম্ ॥
কারবেল্ল রসেনৈব দশমূল রসেন চ।
পাপা ট্যাশ্চ ক্যায়েণ ত্রিফলাকাথকং তথা ॥
শুভূচ্যাঃ স্বরসেনিব নাগবল্লীরসেন চ।
কাক্যাচীরসেনৈব নিশ্র গ্রাঃ স্বরসেন চ॥
পুনর্ণবাদ্র কান্ডোভির্ভাবনাং পরিকল্প্য চ।
রক্তিকাদি ক্রমেনৈব বর্জয়েঘটিকাং ভিষক্ ॥
শুভূপিপালীসংমুক্তা বটিকা বীর্যবর্জিনী।
জ্বম্যবিধং হন্তি জীর্ণজ্বহরং পরম্ ॥
বারিদোষ্ক বিবিধং লানাদোষোত্রবং তথা।

সততাদিশ্বং হন্তি সাধ্যাসাধ্যমথাপি বা ॥
ক্ষয়েন্ত্ৰক ধাতৃশ্বং কামশোকভবন্তথা।
অভিঘাতন্ত্ৰরকৈব অভিচারকমেব চ ॥
ভূতাবেশন্ত্ৰরকৈব অক্ষদোষোদ্ভবন্তথা।
শীতপূর্বং দাহপূর্বং ক্রিদোষং বিষমন্ত্রং ॥
প্রলেপকত্ত্রং ঘোরমর্দ্ধনারীশ্বরন্তথা।
অভিন্যাসং মহাঘোরং বিষমং ক্র্যাহিকং তথা ॥
এতান্ সর্বান্ নিহন্ত্যান্ত পক্ষাদ্ধেন ন সংশ্রঃ।
প্রীহন্ত্বরে তথা কাসে চাতুর্থকবিপর্যায়ে ॥
শাল্যরং তক্রসহিতং ভোজয়েদ্ গুড়সংযুত্র্য়।
ককারপূর্বকং সর্বং বর্জ্জনীয়ং ন সংশ্রঃ॥
বৈশুনং বর্জ্জাবদ্যাবন্ধ বলবান্ ভবেৎ।
সর্বন্ধ্ররহরং লৌহং তুর্জ ভং পরিকীপ্তিত্র্য়॥
রহৎ সর্বন্ধরহর লৌহং।

শোক্ষিক—স্বর্ণাক্ষিক। হিবণা—স্বর্ণ। তার—রৌপা। তাল—হরি-তাল। কম—> ভোলক। পল—৮ তোলক। বক্ষামাণ—পশ্চাৎ কম্বি-তব্ম। কারবেল – করেলা উচ্ছে। পর্পটী—ক্ষেত্পাপ্ডা। কমায়—ক্ষাথ। নাগবলী—তাসুল, পর্ণলতা। নিগুগুী—নিসিন্দা। আর্দ্রকাস্তঃ—আদার রস।বারিদোব—জলদোষ। বিড়—বিট্লবণ। মৈধুন—স্ত্রীসহবাস)।

পারদ, গদ্ধক, তাম, অন্ত্র, অর্ণমান্দিক, স্বর্ণ, রৌপ্য ও হরিতাল; এই সকল বস্তু প্রত্যেত্য ২ তোলা এবং কান্তলোহ ৮ আটতোলা; সকল দ্রব্যগুলি একত্র মিজিত করিয়া করলা, দশমূলী, ক্ষেত্পাপ্ডা, ত্রিফলা, গুলঞ্চ, তামুল, কাকমাচী, নিদিন্দা, পুনর্না ও আদা; ইহাদের প্রত্যেকের রদে ৭ সাতদিবদ করিয়া ভাবনা দিয়া উত্তমরূপে পেয়ণপুর্বক ১ এক রজিনকাদি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই বটিকা ইক্ষুপ্তড় ও পিপুলচ্র্ণ সহ সেবনে বীর্ষা বর্দ্ধিত হয়; এবং অন্টবিগজ্বর, জীর্ণজ্বর, জলদোষজ্ব জ্বর, অ্যান্ত দোষজাত জ্বর, সন্ততাদি-সাধ্যাসাধ জ্বর, পাতুক্ষরজনিত জ্বর, যক্ষমারোগোল্লড-জ্বর, পাতুত্বর, কামজ্বর, শোক্ষরের, ভ্তাবেশোন্ত ভ জ্বর, নক্ষত্রদোষজ্ব জ্বর, অভিযাস জ্বর, বিষমজ্বর, ত্র্যাহিক, শীতপূর্বর, দাহ, তিদোষজ্বত্য, বিষমজ্বর, প্রলেপক জ্বর, অর্কনারীশ্ব জ্বর, প্রীহজ্বর, চাতুর্ধক জ্বর, চাতুর্বক বিপর্যায় জ্বর, পাতুরোগা, কামলারোগা, এবং মন্দান্নি প্রভৃতি উৎকট ব্যাধি সকল ৭॥ সাড়ে সাত দিবদের মধ্যে বিনাশপ্রাপ্ত হয়। এই ইয়ধ স্থাবন করিয়া শালি তথুলের জন্ম বিট্লবণ ও তক্র সহ ভোজন করিবে। এই উরধ ব্যবহারকালে ধে সকল বস্তুর নাদের প্রথম অক্ষর "ক"কার আছে, দেই

3

কল দ্রব্য কদাচিৎ ভোজন করিবে না। যথা; কদলী, কর্কোটক ইর্জাদি। ই প্রথম দেবন করিয়া যভ দিন রোগী বলবান না হয়, ভতদিন পর্যান্ত দ্রী-হবাদ পরিত্যাগ করিবে। ইহার নাম দর্বজ্ঞরহর লৌহ। ইহা অত্যন্ত সূর্দ ভ ক্ষা।

মহা সর্বজ্বহরলোইঃ।—
দ্বিপলং জারিতং লোহং রসং গন্ধং বিভোলকম্।
ভোলৈকং ত্রিফলা ব্যোষং বিভঙ্গং মুন্তকন্তথা॥
শ্রেমনী পিপেলীমূলং হরিদ্রে দ্বে চ ধান্যকম্।
আদ্রু ক-স্বরুদেনৈব বটিকাং কারুয়েন্তিষক্॥
শুঞ্জাদ্বরং বটীং কুর্যান্তেক্ষরেদান্ত্র ক-দ্রবিঃ।
সর্বজ্বহরলোইং মহাজ্বর বিনাশনম্॥
বাতিকং পৈতিককৈব শ্রেমিকং সান্নিপাতিকং।
বিষমন্ত্রর ভূতোত্থং জ্বর্পীহান্মেব্চ॥
মাসজং পক্ষতকৈব জ্বরং সংবৎসরোথিতম্।
মহাগ্রি-দীপককৈব জ্বরানাং কুলনাশনম্॥
মহাগ্রি-দীপককৈব জ্বরানাং কুলনাশনম্॥

জারিত লৌহ ১৬ তোলা, পারদ ২ তোলা, গন্ধক ২ তোলা, আমলকী ২ তোলা, হরীতকী ২ তোলা, বহেড়া ২ তোলা, ৬৯ ী ২ তোলা, মরিচ ১ তোলা, পিপালী ২ তোলা, বিড়ঙ্গ ২ তোলা, মুখা ২ তোলা, গজপিপালী ২ তোলা, বিড়ঙ্গ ২ তোলা, মুখা ২ তোলা, গজপিপালী ২ তোলা, পিপুলমূল ২ তোলা, হরিদ্রা ২ তোলা, দাকহরিদ্রা ২ তোলা এবং ধনিরা ২ তোলা; এই সকল দ্রব্য চূর্ণ করিয়া আদার রস দ্বারা ভাবনা দিয়া ২ হুইরতি পরিমাণে বটিকা গ্রন্থন্ত করিবে। ইহার ২ বটিকা করিয়া প্রতি দিবস আদার রসের সহিত সেবন করিলে মহাজুর, বাতিক জ্বর,

আভানের আনার রসের সাহত সেবন কারলে নহাজর, বাতিক জ্বর, সৈম্মিকজ্বর, দান্নিপাতিক জ্বর, বিষমজ্বর, প্রীহাজ্বর, একমানিক জ্বর, পা**লিক-**জ্বর, সংব**্**নরোথিত জ্বর প্রভৃতি নকল প্রকার জ্বর বিন**ই এবং জ্ঠরায়ি**

উদ্দীপিত হয়।

রহজ্বরান্তকলীহঃ।—
রসং গদ্ধং তোলকঞ্চ জাতীকোষফলে তথা।
হেমভন্ম তু পাদৈকং তোলাদ্ধং রূপ্যলোহকম্॥
অভ্রং শিলাজতুকৈব ভৃদ্ধরাজক মুন্তকম্।
কেশরাজমপামার্গং লবক্ষঞ্চ ফলত্রিকম্॥
বরাদ্ধৰক্ষলকৈব শিপ্পলীমূলমেবচ।
সৈদ্ধাংগ বিভাকেব গুড় চীচর্গ মেবচ॥

্রণ্টকারী রসোনক ধন্যাকং জীরকদ্বরম্। **ठम्मनः (मवकार्ष्ट्रक मार्की क्रियवस्मर ह ॥** কিরাততিক্তকং বালং তোলকঞ্চ সমাহরেৎ। 'षिट्यांनाः मित्रहः (महाः छात्रहामार्क् क-तरेमः ॥ मामार्क्षः जन्मराय প্রাতর্মধুনা মধুরীকৃত্য । জুরং নানাবিধং হন্তি শুক্রন্থং চিরকালজমু॥ সাধ্যাসাধ্যং বিচারোত্ত নৈব কার্যাং ভিষম্বরৈঃ। অন্তর্জাত্রগতকৈব নাশয়েল্লাত সংশয়ঃ॥ ভুতোখং শ্রমজং চৈব সন্নিপাতং জ্বং তথা। অসাধ্যক জ্বরং হন্তি যথা সূর্য্যোদয়ো তমঃ। গরুড়ক সমালোক্য যথা সপঃ পলায়তে। তথৈবাস্য প্রসাদেন জ্বরঃ শীঘ্রং পলায়তে ॥ वलनः शुक्तितिकव मैन्नारभ्रम्भग्नः शत्रम्।* বীর্যান্তম্ভকরকৈব কামলা-পাণ্ডু নুদ্তবেৎ। সদা তু রমতে নারীং ন বীর্যাং ক্ষয়নো ভবেৎ। প্রমেহান্ বিংশতিকৈব গ্রহণীং বিবিধান্তথা। अञ्चलानविद्यासन मर्व्दवाधिः विनागरहे ॥

রহজ্জ্বান্তক লৌহ।

রেস –পারদ। গন্ধ – গন্ধক। তোলক – তোলা। জাতী – জায়ফল।
কোষফল – জন্মিত্রী। হেমভস্ম – স্বর্গভস্ম। কেশরাজ – কেস্র্রা। অপামার্গ — আপাঙ্র ফলব্রিক – ত্রিফলা। বরাঙ্গকল্কল – দারুচিনি। জীরকদ্বন্ম — জীরা ও কৃষ্ণজীরা (সাজীরা), দেবকাঠ – দেবদারুকাঠ। ধাস্তক –
ধনিয়া। দার্কী – দারুহরিদ্রা। বাল – বালা)।

পারন, গদক, জাতিফল, জয়িত্রী; এই দ্রব্য চতুইয় প্রত্যেকে ১ এক তোলা, স্থাভিম্ম ১ এক তোলা, রৌপ্য । এ অর্ধতোলা, লৌহ । ত অর্ধতোলা, অত্র ১ তোলা, শিলাজতু ১ তোলা, ভ্রুরাজ ১ তোলা, মুথা ১ তোলা, কেমুর্যা ১ তোলা, অপামার্গ ১ তোলা, লবক্ষ ১ তোলা, হরীতকী ১ তোলা, আমলকী ১ তোলা, বহেড়া ১তোলা, দাকচিনি ১তোলা, পিপুলমূল ১তোলা, দাকবেবণ ১ তোলা, বিট্লবণ ১তোলা, গুলঞ্চ ১তোলা, কন্টকারী ১তোলা, বস্থন ১ তোলা, বিট্লবণ ১তোলা, জ্বার্ম ১ তোলা, কন্টকারী ১ তোলা, বস্থন ১ তোলা, ব্রেন ১ তোলা, ব্রুবন ১ তোলা, বিরুত্তা ১ তোলা এবং বালা ১ তোলা, আর মরিচ ২ তোলা, ব্রুবন বস্তুর্ব কর্মার আদার রুলে ৭ সাতবার ভাবনা দিবে । এই ব্রুব্ধ

অর্দ্ধনাষা পরিমাণে মধুর সহিত প্রাতঃকালে সেবন করিবে। ইহার্ডে উক্তন্ত ও চিরকালীন নানাবিধ জর চিন্ট হয়। এই উবধ প্রদানকালে রোগের সাধ্যা-সাধ্য বিবেচনা করিবে না। ইহাবারা অন্তর্ধাতৃগতজ্বর, ভ্তোখজ্বর, শ্রম্জনিত-জর, সান্ত্রিপাতিক জর প্রভৃতি সকল প্রকার অসাধ্য জর স্বর্ধ্যাদয়ে অন্ধকার বিনাশের ন্যায় বিনম্ট হয়। যেমন গরুভকে দর্শনিমাত্র সর্পগণ পলায়ন করে, তক্রপ এই ঔষধের প্রসাদে সকলপ্রকার জ্বর নীত্র তিরোহিত হয়। বিশেষতঃ রোগীর বলোপচর ও ধাতুর পুর্টিবর্দ্ধন হইয়া থাকে। এবং অগ্নিমান্দ্য, পাণ্ডু ও কামলা বিনম্ট হয়। এই উষধ দেবনদ্বারা বীর্যান্তল্পন হয়, সতত জ্রীসন্ত্রোগ করিলেও বীর্যাক্ষয় হয় না এবং বিংশতিবিধ প্রমেহ ও নানাবিধ শ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। এমন কি অন্থপান বিশেষে দেবন করিলে এই ঔষধ দ্বারা সকল প্রকার রোগ বিনম্ট হয়।

হিন্দুলেশ্বর রসঃ।—

তুল্যাংশং মর্দ্রেৎ খল্লে পিপ্পলী হিঙ্গুলং বিষ্ণ। দ্বিগুঞ্জা মধুনা দেয়া বাতজ্ব-নির্ক্তয়ে॥
হিঙ্গুলেশ্বর ব্যা।

পিপুল, হিঙ্গুল ও বিষ ; এই দ্রব্যত্তর সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক খলে করিয়া উত্তমরূপ পেষণ করিবে। এই ঔষধ ২ হুইরতি প্রমাণ অত্প মধুর সহিত দেবন করিলে বাতজ্বরের নিয়তি হয়।

ভস্মেশ্রচূর্ণম্।—

ভদ্মবোড়শনিকং দ্যাদারণ্যোপলকোদ্ভবং।
নিক্ষত্রয়ঞ্চ মরিচং বিষনিক্ষত্বপুরিং ॥
আয়ং ভদ্মেশ্বরো নাম দ্রিপাতকনিহন্তা।
পাঞ্চঞ্জামিতং খাদেদাদ্র কদ্য রদেন তুঁ॥
ভদ্মেশ্বর চুর্ন।

(निक-वर्षाकां । व्यादगा-वना । उपलक - पूँ रहे)।

শুক গোমর (গোবর) ভস্ম ৮ তোলা, মরিচচ্র্ণ ১॥ • দেড়তোলা এবং বিষ অর্দ্ধতোলা; এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিভ করিয়া ৫ রভি পরিমাণে আদার রসের সহিত সেবন করিলে সাল্লিপাতিক জ্বর বিনম্ট হয়।

স্বচ্ছন্দভৈরবো রসঃ!—
ভাত্রভস্ম বিষং হেমঃ শতধা ভাবিতং রসৈঃ।
ভঞ্জার্ক্তং সন্ধিপাতাদি নবজ্বরহরং পরং॥
আন্ত্রোমু-শর্করা-সিমুযুতঃ স্বচ্ছন্দভৈরবঃ।

ক্রিন্দ্রান্তি দ্বিপথাং রুচৌ দদেৎ॥

. चन्द्रक्रीख्तु द्रम ।

(रहम-पूजूता। ७३)-तिक्का। व्यक्तिष्य भ्वातात्र वतम। भर्कता-हिनि। सिक्क्-टेमकवलवर्ग। स्वाका-किम्पिम् वा मत्नकः। मिछा-हिनि)।

তাত্রত্ব ও বিষ সমভাগে গ্রহণ পূর্বক ধৃতুরার রসে ১০০ শতবার ভাবনা দিয়া অর্দ্ধর্তি পরিমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক বটী আদার রস, চিনি ও সৈশ্বব লবণ সহযোগে সেবন করিলে সারিপাতিক জর বিনম্ট হয়। এই ঐষধ সেবন করাইয়া রোগীকে ইক্লু, কিন্মিস্, শর্করা ও দ্বি ক্ষির নিমিত্ত পথ্য দিবে।

নবজ্রেভাস্কু শঃ।—

সগন্ধটকং রসতালকক,
বিমন্দরেন্দ্রাবয়েন্দীনপিতৈঃ।
বিনদ্ধরং বল্লমিতং প্রদদ্যাৎ,
রস্তাকতকৌদনমেব পথ্যম্।
নবন্ধরেভাক্ষুশ নামপেরঃ,
ক্রণেন ধর্ম্মোদ্যমমাতনামি॥

নবজরাকুশ।

(গ্র-গন্ধক। টক্ষ-সোহাগা। রস-পারদ। তালক-ছরিতাল। ু মীন-মংস্থা বল্ল-ওরতি। রস্তাক-বেশুণ। তক্র-গোল। নবজ্বর-ইভ-অকুশ-নবজ্বরূপ হস্তীর অকুশ স্বরূপ)।

গন্ধক, টঙ্গণ, পারা ও হরিতাল এই; দ্রব্য চতুইয় সমভাগে এহণ পূর্বক ২ দিবস পর্যান্ত রোহিত মৎস্তের পিত্তের সহিত মর্দন করিয়া ৩ রভি পরি-মাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটী সেবন করিলে ক্ষণকাল মধ্যে ঘর্ম্মোদ্যাম হইয়া জরের নির্নতি হয়। এই ঔষধ সেবন করাইয়া রোগীকে বার্তাকী ও ঘোলের সহযোগে অন্ন পথ্য দিবে।

জ্বমুরাবিরশঃ।—

হিষ্কুলঞ্চ বিষং ক্ল্যোষং টঙ্গণং নাগরাভয়া। জয়পালসমাযুক্তং সদ্যোক্তর-বিনাশনম্॥

জ্বমুরারি রস।

(ব্যোষ—ত্রিকটু (ম্ব্রিচ, শিপুল ও শুগী)। নাগর—শুগী। অভয়া— হরীভকী)।

হিত্তল, বিষ, মরিচ, জুঠী, শিপুল, সোহাগা, ওঁঠ ও হরিতকী; এই সকল প্রবি: সমভাগে এবং ইহালের সকলের সমান জয়পাল বীজ; এই সমস্ত জবা নামা চুর্ণ করিয়া জলা ট্রি পেবণ পুর্বকি ও রতি পরিমাণে বচীকা প্রস্তুত করিবে ৷ রোগীর অবস্থায়সারে বিবেচনা পূর্বক অন্তপানের সহিত দেবন করিলে ডৎক্ষণাৎ জ্বর নিবারিত হয়।

· 本 1 一

্ একোভাগো রসাচ্ছুদ্ধাচৈছলেয় পিপ্পলী নিবা। আকারকরভোগন্ধঃ কটুতৈলেন শে।ধিতঃ॥ ফলাণি চেন্দ্রবারুণ্যা শুতুর্ভাগমিতা অমী। ্রতক্ত মর্দ্রেচ্চ র্ণ মিন্দ্রবারুণিকারসৈঃ॥ भार्याचिजाः वेतैः कृष्टः प्रमाप मरमाष्ट्रात तुरः। ছিন্নার্শানুপানেন জ্বত্বী বটিকা মতা॥

জবন্ধী বটীকা।

(রস-পারা। শৈলেয়-শৈলজ। শিবা-হরীতকী। আকারকরভ-আকরকোরা। গন্ধ - গন্ধক। কটুতৈল - সর্বপতৈক। ইন্দ্রবারুণী - রাখাল-শশ। (মামালাড়)। ছিনা—গুলঞ্চ।)

শোধিত পারা ১ ভাগ, শৈলজ, পিপুল, হরীতকী, আকরকোরা, কটু-তৈলে শোধিত গন্ধক ও রাখালশশার ফল; এই সকল দ্রব্য মিলিত ৪ চারিভাগ , উক্ত সমস্ত জব্য গুলি চূর্ণ করতঃ মিশ্রিত করিয়া রাখালশশার রদে মর্দন পূর্বেক ১ মাষা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিয়া গুলঞ্চের রস সহ সেবন করিলে সদ্যোজর বিনষ্ট হয়।

জরত্বীবটী।—

রসং গন্ধক দরদং কৈপালং ক্রমবর্দ্ধিতং। দন্তী রদেন সংপিষ্য বটীং গুঞ্জামিতাং কুর্য্যাৎ॥ প্রভাতে দিত্যাসার্দ্বশিতা শীতবারিণা। একেন দিবসেনৈষা নবজরহরী ভবেৎ॥ জुत्रशीविी।

ু (দরদ—হিন্দুল। অশিতা—ভক্ষিতা। শীতবারিণা—শীতলজ্ঞলেন।) িপারা ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, হিন্তুল ৩ ভাগ ও জয়পালবীক ৪ ভাগ ; এই সমস্ত বস্তু একত্রিড করিয়া দন্তীর রুসে পেষণ পূর্ব্বক ১ রুতি পরিমাণে বনীকা প্রস্তুত করিয়া, প্রাত্তংকালে শীতল জল সহযোগে ইকুচিনির সহিত (मरन क्रिट्न, এक्रिक्टिन्त मधारे नवस्त विनश्चे एत ।

ত্রৈলোক্যভুষুরো রসঃ।—

স্তাৰ্কগৰ্চপলা জয়পালভিজ্ঞা-

मःभमा वज्जीभव्रमा मधूना वि**७४**३ ত্তিলোক্যডুম্বুরোর্নে।২ভিনবস্কুরত্বঃ॥

ত্রৈলোকাডুমুর রস।

(ম্বত-পারা। অর্ক-ভাত্র। চপলা-পিপুল। ভিক্তা-কট্কী। বিষতিব্দুকজ্ব – মধুরতিব্দুক (গাব) ফল। বজ্ঞীপয়: – মনসাসীজের ত্যাঠা)।

পারা, তামা, গন্ধক, পিপুল, জ্বসালবীজ, কট্কী, হরীতকী, তেউড়ী ও গাব : এই সকল দ্রব্য সমান ভাগে গ্রহণ পূর্ব্বক সীব্রের ছয়ে মর্দ্ধন করিয়া ২ রতি পরিমাণে বড়ী প্রস্তুত করত: মধুর নহিত সেবন করিলে অতি সম্বর नरंज्य दिनश्चे हम ।

তরুণকরারিরসঃ।-

জৈপালগন্ধং বিষপারনক, তুল্যং কুমারী স্বরদেন পিষ্টং। অস্য দ্বিগুঞ্জাদি সিতোদকেন, খ্যাতো রসোহয়ং তরুণজ্বারিঃ ॥ দাতব্য এষো২ছনি পঞ্চমে বা, ষষ্ঠে২থবা সপ্তম এব বাপি। জাতে বিরেকে বিজিতঃ জরঃস্যাৎ, পটোলমুদ্যায়-নিষেবণেন॥ ভৰুণজ্বগরি-রুদ।

জয়পালবীজ, গন্ধক, বিষ ও পারা; এই দ্রব্য চতুষ্টর সমভাগে গ্রাহণ পূর্ব্বক দ্বতকুমারীর রদে মর্দ্দন করিয়া ২ রতি পরিমাণে বটী এল্পড করিবে। ইহার এক এক বটী চিনির জলের সহিত জরিত ব্যক্তিকে জরের পঞ্চম, যঠ অথবা সপ্তম দিবসে দেবন করিতে দিবে। এই ঔষধ দেবন করা-ইলে, বিরেচন হইয়া অম্পে সময়ের মধ্যে নবজুর নিবারিত হয়। ইহা সেব-নের পরে রোগীকে পটোলের বা মুগের য্য পথ্য দিবে।

প্রতাপমার্ততো রসঃ।--

বিষ হিন্দুল জৈপাল টঙ্গণং ক্রমবর্দ্ধিতং। রদঃ প্রতাপমার্ভণ্ডঃ সদ্যোজর-বিনাশকঃ॥ প্রভাপমার্ত্ত রস।

১ ভাগ বিষ, ২ ভাগ হিন্দুল, ও ভাগ জয়পালবীক এবং ৪ ভাগ সোহাগা ; এই **এব্য চতুষ্ট**য় একত্রিভ করিয়া রোগীর অবস্থা বিশেৰে অঞ্চ-. शान विद्युष्टमाञ्च (मयन कदाहित्स महाहै अद्ग विन्छ स्त्र ।

नवब्द-इती विग ।-

রসগদ্ধে বিষং শুণ্ঠী পিপেলী মরিচানি চ।
পথ্যা বিভীতকং ধাত্রী দম্ভীবীজং চ শোধিতং॥
চূর্ণমেষাং সমাংশানাং দ্রোণপুষ্পী রসৈঃ পুটেছ।
বটীং মাধনিভাং কুর্যাছ ভক্ষয়ের তুনে জ্রো॥
নবজ্বইরী বটী।

শোধিত পারদ, শোধিত গন্ধক, শোধিত বিষ, শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, হরী-ডকী, বহেড়া (বিভীতক), আমলকী এবং শোধিত দন্তীবীজ; এই সমস্ত দ্রব্য সমভাগে লইয়া চূর্ণ করতঃ দ্রোণপুষ্পীর (ঘল্ঘসের বা হল্কসার) রস দ্বারা মর্দ্দন পূর্বক পুটপাকে প্রস্তুত করিয়া ২ এক মাষকলায় সদৃষ্ণ বঢ়ী প্রস্তুত করিবে।এই উষধ সেবন করিলে মবজর নিবারিত হয়।

নবন্ধরারি রসঃ I—

এক ভাগো রদো ভাগদ্বরুষ শুদ্ধং গদ্ধকং।
গরলদ্য ত্রেয়া ভাগা শ্চতুর্ভাগা হিমাবতী॥
জৈপালক পঞ্চভাগো নিমুদ্রব-বিমর্দ্দিতঃ।
কমিম্ব-প্রমিতা বট্যঃ কার্যাঃ দর্বজ্বরচ্ছিদঃ॥
শৃঙ্গবেরেণ দাতব্যা বটিকৈকা প্রতিদিনে।
জীর্ণজ্বরে তথাজীর্ণে দমেবা বিষমেহ পি বা॥
জ্বরং দর্বং নিহন্ত্যদৌ দাবো বন্মিবানলঃ॥
নব্দ্রবারি বদ।

(গরল — বিষ । নিস্থু — নারাঙ্গী নেরু । কৃমিন্ন — বিড়ঙ্গ । শৃঙ্গবের — আদা । দাব—রক্ষে রক্ষে পরস্পর ঘর্ষণে উৎপন্ন বনাগ্নি । ছিমাবভী — স্বৰ্ণক্ষীরী)।

শোধিত পারা > তোলা, শোধিত গন্ধক ২ তোলা, শোধিত গরল (সর্প-বিষ) ৩ তোলা, স্বর্ণকারী ৪ তোলা এবং জ্বরপাল ৫ তোলা; এই দ্রব্য সমুদার নারাদী নেবুর রসে মর্দ্দন করিয়া বিড্লের সদৃশাকার বটী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা আদার রসের সহিত প্রতিদিন সেবন করিলে জীর্ণজ্বর, সামজ্বর এবং সম, বিষম প্রভৃতি সর্ব্বপ্রকার জ্বর বিন্ধী হয়। ষেমন দাবাগ্রি বনসমূহ দক্ষ করে, তজ্ঞপ ইহা সকুল জ্বরের নিহস্তা।

বিদ্যাধরো রসঃ।—

রসোগন্ধন্তান্তং তিকটু কটুকী টঙ্গণ বরাঃ। তিরদন্তী হেমত্র্যাণিবিব্যেত্থ সম্মিদং ॥ সম্বৈস্তল্যং স্যাধিমল জ্য়পালান্তব্রজঃ। ততঃ শ্ব ক্ষীরেণ প্রচুরম্মিতং দৃশ্ভীসলিলৈঃ॥ বিগুঞ্জান্য প্রোচং জয়তি বটিকা সামমুতুলং।
 বরং পাঞুং গুলাং এহণী গুলকীলোন্তবক্তজঃ॥
 মকচ্ছুলাজীর্ণং প্রবলম্থ সামং ক্রিমিগদং।
 প্রীহানং বিবদ্ধং প্রবলম্পি বিদ্যাধরোরসঃ॥

विषाधत्र-त्रम ।

(বরা – ত্রিফলা। (হম – ধুস্তুর। ছামণি – আকন। স্কৃ – সীজ। মকং – বায়।)

পারা, গন্ধক, তামা, ত্রিকটু, কট কী, দোছাগা, ত্রিফলা, তেউড়ী, দন্তী, ধৃতুরা, আকন্দ এবং বিষ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে এবং ঐ সকল দ্রব্য সমকির তুল্য জয়পালবীজ গ্রহণ পূর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া মনসাসীজের হন্ধ দিয়া উত্তমরূপে মর্দন পূর্বক দন্তীর কাথে ভাবনা দিয়া ২ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই উষধ সেবন করিলে তত্ত্বভাজর, পাণ্ডু, ভল্ম, গ্রহণী, অর্শ, বাতশূল, অজীর্গ, ক্রিমিরোগ, নিবদ্ধ ও প্লীহা প্রভৃতি প্রবল ব্যাধি সকল নিবারিত হয়।

গদমুরারিঃ ।—

রদ বলি শিললৌহ ব্যোষ তাদ্রাণি। তুল্যান্যথ সদরদ নাগং ভাগমেতৎ প্রদিষ্টং॥ ভবতি গদমুরারিশ্চাস্য গুঞ্জাদ্বয়ং বৈ। ক্ষপরতি দিবসেন প্রোচ্মাম জ্বরাখ্যং॥

গদমুরারি।

(বলি—গন্ধক। শিলা—মনঃশিলা (ছন্দো রক্ষণার্থে শিল ইতি হ্রস্ব), দরদ—হিন্তুল। নাগ—সীসা।)

পারদ, গন্ধক, মনঃশিলা, লৌহ, ত্রিকটু, তাত্র, হিছুল ও সীসা; এই সমস্ত ত্রব্য তুল্য পরিমাণে এছণ পূর্বক জলসহ বাটিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে এক দিবসের মধ্যেই তরুণজ্বর বিনম্ট হয়।

নবন্ধরেভিসিংহঃ।—

শুদ্ধতং তথা গদ্ধং লৌহং তাত্রগু সীসকং।
মরিচং পিপেলী বিশ্বং সমভাগং বিচুর্ণয়ে ॥
অর্দ্ধভাগং বিষং দত্ত্বা মর্দ্মেদ্ বাসরদ্বরং।
শৃঙ্গবেরানুপানেন দদ্যাৎ গুঞ্জাদ্বয়ং ভিষক্॥
নবস্থারে মহাঘোরে মারুতে গ্রহণীগদে।
নবস্থারভিসিংহোহয়ং স্বাধ্রীগে প্রযোজয়ে ॥

नवंश्वदत्रक्षिश्ह।

(विश्व-७०)। योगत-मिवम।)

পারদ, গন্ধক, লৌহ, ভাত্র, সীস, মরিচ, পিশালী এবং শুঠী; এই এবা লকল সমভাগে লইয়া উত্তমরপে চূর্ণ করিয়া, তৎমই উক্ত সমুদায় তেবোর আর্দ্ধেক বিষ বিশ্রণ পূর্মক ২ ছই দিবস পর্যান্ত মর্দ্ধন পূর্মক ২ রভি প্রমাণে বটিকা করিয়া, আনার রসের মহিত সেবন করিলে ঘারতর নবজব, বাতরোগ ও এহণী প্রভৃতি রোগ নিবারিত হয়।

হুতাশনো রসঃ ।—

নাগরং কর্মাত্রক টক্ষণং কর্মকন্বয়ং।
মরিচং সাদ্ধিকর্মং সাগভাবদ্দশ্ধ বরাটকম্॥
বিষং কর্মচতুর্থাংশং সর্ব্যেকত্র চূর্ণয়েও।
রস্যে হুতাশনো নামা খাদ্যো গুঞ্জামিতো ক্সরে॥
তুতাশন রস।

(নাগর—শঠী। বরাটক—কপর্দক, কড়ি)।

শুর্থ হ তোলা, টঙ্গণ ৪ ডোলা, মরিচ ১ ডোলা, কড়িভন্ম ১ ডোলা, এবং শোধিত বিষ ॥॰ অর্ধতোলা ; এই দ্রবাগুলি চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রণ পূর্ব্বক ২ রতি পরিমাণে দেবন করিলে জ্বর উপশমিত হয়।

রবিস্থদরো রসঃ।—
বিভাগতালেন হতঞ্চ তাড্রং,
রসঞ্চ গন্ধঞ্চ সমীনমায়ঃ।
বিষং সমঞ্চ দ্বিগুণঞ্চ তাড্রং,
ত্রিসপ্তবারেণ দিবাকরাংশো॥
বিষদ্য চারিষ্ট রসেন চূর্ণং,
গুল্পৈনভং সিত্যাসমেতং।
জ্বাস্তকোহয়ং রবিস্থলরাখ্যো,
জ্বান্নিহন্তাফ্বিধান্ সমন্তান্॥
রবিস্থলর রস।

(ভাল-হরিতাল। মীন-রোহিত ম্বর। আয়ু:-ভাহার পিতা। ত্রিসপ্ত-২০। দিবাকর-স্থা। অংশু-ভাহার কিরণ অর্থাৎ রৌদ্র। অরিক্ট-নিম্বপত্র।)

বিশুণ হরিডাল দ্বারা মারিত তাত্র > তোলা, শোধিত পারা ॥• অর্ক-জোলা, গন্ধক ॥• অর্জতোলা, রোহিত মংস্থের পিত্ত ॥• অর্জতোলা এবং বিশ্ব ॥• অর্জতোলা ; এই সমস্ত ত্রব্য ২১ একবিংশতিবার নিমপাতার রুসে ভারমা।
ক্রিলা বিশ্বাসাক্ষ্য করতঃ ১ রুতি পরিমাণ বৃদ্ধী প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক ্ একটা বঁটা ইক্চিনির সহিত সেবন করিলে সকল প্রকার বিষমন্থর বিনষ্ট হয়।

জরত্নীবটা।—

•শুদ্ধ জৈপাল টকস্ত কট্ ীটক্ষন্বয়োন্মিতং।
গৈরিকং টক্ষমেকঞ্চ কল্যানীরেণ মর্দ্দরেও॥
কলায়সদৃশী কার্যা বটীকা তাঞ্চ ভক্ষরেও।
শীতলেন জলৈনৈব বটী জীর্ণজ্বরাপহা॥
জন্মবিটী।

'(देखभान- क्रमभाननीक । कहेंगै- भिभून । हेक-॥॰ व्यक्ताना । रेगतिक-(गतीमार्जि । कना।- इतीजकी । कनाम-मायकनाम ।)

শোধিত জন্মপালবীজ ॥ অর্ধতোলা, পিপুল ১ একতোলা, গেরীমাটী
॥ অর্ধতোলা , এই দ্রবাত্তর প্রহণপূর্বক চূর্ণ করতঃ হরীতকীর রসে মর্দ্দন করিয়া কলায় সদৃশ বঁটা প্রস্তুত করিবে। এই প্রয়ধ শীতল জল সহযোগে দেবন করিলে সর্বাপ্রকার জীর্ণ বা পুরাতন জ্বর বিনষ্ট হয়।

কম্পতরুরসঃ।—

শুদ্ধং শক্ষরশুক্র মক্তব্লিতং মারারিনারীরজ-ন্তরভাবভুমাপতিক্ষু টগলালফারবস্তুস্মতম্।
তাবত্যের মনঃশিলা চ বিমলাতাবভণা টঙ্গণং।
শুগীদ্বাক্ষমিতা কণা চ মরিচং দিক্পাল সংখ্যাকম্॥
বিবাদিবন্তু নি শিলোপরিস্থাৎ বিচুর্ণয়েদ্বাস্সি শোধয়েচ্চ।
ততস্ত খলে রসগন্ধকো চ চুর্ণঞ্চল যামযুগং বিমন্দ্য॥
কল্পতক্ষ নিধেয়ো যথার্থনামা রসঃ শ্রেষ্ঠঃ।
সমীরণ শ্লেমাগদান্ হরতে মাত্রাস্য স্মৃতা শুকৈকা॥
আদ্রু কিন সম্মেষ ভক্ষিতো হন্তি বাতক্ষসম্ভবং জরং।
শ্বাস্কাস মুখশোষ শীততা বহ্নিমান্য বিস্কীশ্চ মাশয়েৎ।
নস্যে লেপে হরতি শিরোহর্তিং ক্ষবাতজাং।
মোহং মহান্তম্পি চ প্রলাপং ক্ষবথুগ্রহম্॥
কল্পভক্ষম।

(শব্দরশুক্র – পারদ। মারারি নারীরজঃ – গব্দক। উমাপতিক্ষু টুগলা-লক্ষার – কালকুট বিষ। বিমলা – স্বর্নাফিক। কণা – পিপ্পালী। দিক্পাল-লংখ্যা – ৮ জন্ট। জক্ষ – ২ ভোলা। সমীরণ – বায়ু। বহ্নিমান্দ্য – মন্দাগ্লিতা। ক্ষবপু – হচ্চী, হাঁচি)। শোধিত পারদ ২ তোলা, শোধিত গন্ধক ২ তোলা, কালকুট (কৃঞ্সপ্রের বিষ) ২ তোলা, মনঃশিলা, ২ তোলা, অর্ণমান্ধিক ২ তোলা সোহাগার খৈ ২ তোলা, শুণ্ঠী হ'তোলা, পিপুল ৪ তোলা এবং মরিচ ৮ তোলা। প্রথম্মতঃ পারা ও গন্ধক মিশ্রিত করিয়া খলে ছই প্রহর পর্যন্ত মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে; এবং বিষাদি দ্রুবাগুলি শিলার উপরি চুর্ণ করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তদনন্তর সমস্ত বস্তু একত্র মিশ্রিত করিয়া জলসহ এক রতি প্রমাণ বটী শ্রন্ত করিবে। এই ঔষধকে "কয়ভক রস" বলে। ইহা আদার রসের সহিত দেবন করিলে বায়ুরোগ, স্নেত্মরোগ, বায়ু ও কফ জন্ম জর, খান, কাশ, মুখশোম, শীতবাধ, অগ্রিমান্দা ও বিস্কৃচিকা (ওলাউঠা) নিবারিত হয়। উহা নস্থে ও প্রলেপে ব্যবহার করিলে বায়ু বা কফ কর্ম্থক শিরং পীড়া, অত্যন্ত মোহ, প্রলাপ ও হাঁচির ক্ষতা বিনম্ব হইয়া থাকে।

মৃতসঞ্জীবনী-বটী।—

বিষং ত্রিকটুকং গন্ধং টক্ষণং মৃতশুলুকং।
পুস্তুরস্য বীজানি চ হিন্দুলং নবমং স্মৃতম্॥
ত্রতানি সমভাগানি দিনৈকং বিজয়াদ্রবিঃ।
মর্দ্দরেচ্চণকাকারা কর্ত্রবা বটিকাথ সা॥
ভক্ষণীয়োহিপাতব্যা রবিমূল-ক্ষায়কঃ।
মৃতসঞ্জীবনী নামা সম্লিপাত-জ্বান্তক্রং॥
মৃতসঞ্জীবনী বটী।

(মৃতগুলুক—মারিত তাম। বিজয়া—চিদ্ধি, ভাঙ্। চণক—ছোলা বা বুট। রবিমূল—আকন্দমূল)।

বিষ, শুগ্ঠী, পিপ্পলী, মরিচ, গন্ধক, সোহাগা, মারিত তাম, ধুতুরার বীজ ও হিন্দুল; এই বস্তু সকল সমভাগে গ্রহণপূর্ব্বক সিদ্ধিব কাথে এক দিবস ভাবনা দিয়া চণক প্রমাণ বটিক। প্রস্তুত করিয়া; তাহার এক এক বটী আকন্দমূলের কাথ অত্নপানে সেবন করিলে সাদ্ধিপাড়িক জ্বর বিনম্ট হয়।

ত্রিনেত্র-রসঃ।—

শুদ্ধসূতং সমং গন্ধং সূতাংশং মৃততান্তকং।
বিভিন্তল্যৈর্গবাং ক্ষীরেমর্দ্দিয়েলাতপে খরে।
মর্দ্দয়েন্দিনমেকস্ত নিপ্ত গুলিগুজক্তবৈঃ।
বিধায় গোলন্তং গোলমন্ধ্যুমাগতং পচেছ।
বিধায় গোলন্তা তিও খলে বিচুর্ণয়েছ।
ক্ষিনেন্তাখ্যো রসো হোষ দেয়ো গুঞাদ্যোন্তিওঃ।

পঞ্চোল-কথারেণ ছাগীদুশ্ধেন বা সহ॥
রদেনানেন ভুক্তেন সন্নিপাত-জ্বো মহান্।
সংক্ষয়ং ব্রজতি ক্ষিপ্রং কর্তব্যো নাত্র সংশয়ঃ॥

ত্রিনেত্র রস।

্ ক্ষীর—ছন্ধ। আতপ—রৌক্র। নিগু গ্রী—নিসিন্দা। শিগু—সজিনা। ত্তিয়াম—৩ প্রছর)।

শোধিতপারা, শোধিতগন্ধক ও মারিততাম্র: এই দ্রব্যত্রর সমানভাগে প্রহণপূর্বক, ইহাদের সমান গাভীর হুন্ধে মর্দ্দন করিবে। অনন্তর খরতর রৌদ্রে শুকাইয়া পুনরায় নিসিন্দা ও সজিনার ক্লাথে এক দিবস মর্দদন করিবে। তৎপরে উহাকে পিগুাকৃতি করিয়া একটা অন্ধসুষার মধ্যে রাখিয়া বালুকাযন্ত্রে তিনপ্রহর জ্বাল দিবে। পরে খলে পেষণ করতঃ চূর্ণ করিয়া, উহার ৮ ভাগের ১ ভাগ বিষ সহ মর্দদন করিয়া ২ রতি পরিমাণে বটা করিবে। ইহার এক এক বটা পঞ্চকোলের ক্লাথ অথবা ছাগছ্পের সহিত দেবন করিলে ঘোরতর সন্নিপাত জর বিন্ধী হয়।

অয়তানি-বটী।—

অয়ত বরাটক-মরিটের্দ্বিপঞ্চনবভাগযোজিতৈরাচিতা। বিটিকা মুদ্যাসমানা কফত্রিদোষাগ্নিমান্দ্যহরী॥ অয়তাদি বিটা।

অমৃত (বিষ) ২ ভাগ, কড়িভস্ম ৫ ভাগ এবং মরিচ ৯ ভাগ; এই সকল একত্রিত করিয়া জলের সহিত বাটিয়া মুপের সমান বঁটা করিয়া সেবন করিলে কফ, ত্রিদোষ ও অগ্নিমান্দ্যতা বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পঞ্চবক্ত-রদঃ।—

গদ্ধেশ টক্ষং মরিচং বিষং পুস্তুরকৈদ্র বৈঃ।
দিনং সংমদিতং শুক্ষং পঞ্চবক্তো রদো ভবেৎ॥
আদ্রুকিস্য দ্রবেশৈষ দাতব্যো রক্তিকামিতঃ।
সন্নিপাতস্করে দেয়ো ঘোরে তদ্যোষনাশনঃ॥
পঞ্চবক্ত রস।

(গন্ধ-- গন্ধ । ঈশ-- পারদ)।

গন্ধক, পারা, সোহাগা, মরিচু ও বিষ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রাহণপূর্বক ধূতুরাপাভার রসে একদিন মর্দ্দন করিরা শুরু করিবে। ইহা ১ রভি
পরিমাণে আদার রসের সহিত সন্ধিপাত ছরে প্রয়োগ করিলে, ঘোরতর
্বিদোষ দুরীভূত হয়।

পর্ণটী-রসঃ।—

छन्छ दिशामा मिनः स्मात्राम ह।

वृष्टः छात्र लोश्ख्य भानाः स्नि छत्याः किर्निः लोश्नां छ विभटित हानत्य लोश्नां हो । जिल्ला हिना हो जिल्ला हिना हो जिल्ला हिना हो जिल्ला हिना है जिल्ला है ज

পর্শ দীর্স।

(ভূক-ভীমরাজ। লোহচাটু-লোহার দার্ক্ষী (হাতা); কন্সা—ছত কুমারী।বাদা—বাসক।ভাগী-বামনহাটী।অগ্নি-চিতা।মূত্তী-মুত্তীরি পথ্যা—হরীতকী। অমৃতা—গুলঞ্চ)।

পারা ১ভাগ এবং গন্ধক ১ভাগ লইয়া ভূদ্দরান্তের রস দিয়া মর্দ্দন করিবে পারে পারা ও গন্ধকের চতুর্ধাংশ পরিমাণে মারিত তাত্র ও লৌহভত্ম একত্রিক করিয়া লৌহণাদ্রে পাক করিবে এবং পাককালে ঘন ঘন লোহার হাতা দ্বার ঘূটিবে। পাকশেষ হইলে গোময় উপরি কলার পাতা রাখিরা, তত্তপরি ও উষধ ঢালিবে। এই রূপ করিলে উহা পর্পটীবং হইবে, তৎপরে প্র পর্পটি খলে চূর্ণ করিয়া নিসিন্দার স্বরস দিয়া এক দিবস ভাবনা দিবে এবং তৎপদ্ধের্মী, ত্রিফলা, ঘৃতকুষারী, বাসক, বামনহাটী, ত্রিকটু, ভূদ্দরাজ, চিতাস্থ ও মুণ্ডিরীর রসে ৭ সাতদিন ভাবনা দিয়া জ্বলম্ভ অন্ধারে সেক দিয়া লইবে ইহার নাম পর্পটীরস। এই ঔষধ ৪ চারি রতি পরিমাণে সেবন করিছে মৈন্দ্রিক-জর সমূলে বিনাশ পায়। এই ঔষ্পরে অভূপানার্থে হ্রিতকী শুণ্ঠী ও গুলঞ্চের কাথ সেবদ করিবে।

বাতপিতান্তক-রদঃ।—

মৃতস্থতাজমুস্তার্ক তীক্ষমান্দিক তালকং।
গন্ধকং মর্দ্দরেৎ তুল্যথ যতিলাক্ষামৃতারলৈঃ।
ধাত্রী শতাবরীদ্রাবৈঃ দ্রবিঃ ক্ষীরবিদারিকৈঃ।
দিনং দিনং বিভাব্যাথ সিতক্ষোদ্রযুতা বটী॥
শাষ্মাত্রং নিহন্ত্যাশু বাতপিভজ্বং ক্ষয়ং।
দাহং তৃষ্ণাং ভ্রমং শোবং বাতপিভান্তকো রসঃ॥
• শিতাকীরং পিবেচানু যতিকাথ-সিতাযুত্তম্॥

বাডপিত্রান্তক রুস।

(অর্ক-ভাম । তীক্ন-লোহ। মান্দিক-তর্নান্দিক। তালক-হরি-ভাল। যক্তি-বন্ধিমধু। ক্লীরবিদারী-ভূমিকুত্মাও। নিতা-শর্করা)।

পারদভন্ম, অভ্র, মুথা, তাত্র, লৌহ, ন্বর্ণমান্ধিক, হরিতাল এবং গন্ধক; ইহাদের প্রত্যেকে ১ তোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক যফিমধু, কিস্মিস্, গুলঞ্চ, আমলকী, শত্মুলী এবং সাদা ভূঁইকুমুড়া; এই সকলের প্রত্যেকের রুসে এক দিবস করিয়া ভাবনা দিয়া ও রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা চিনি ও মধুর সহিত দেবন করিলে বাতপৈত্তিক জর, দাহ, ত্রুগ, ভ্রম ও শোষ প্রভৃতি বিনক্ত হয়। এই ঔষধ ষেবন করিয়া চিনির সহিত প্রথম অথবা যফিমধুর কাথ চিনির সহিত পান করিবে।

বিশ্বেশর-রসঃ।---

মৃত্যুতার্কতীক্ষণ তালং গন্ধ কট্ফলং।
নেষশৃঙ্গী বচা শুণ্ঠী ভাগী পথ্যা চ বালকং॥
ধান্যকং মর্দ্দয়েভুলাং পর্পটোখ-দ্রেবৈর্দিনং।
মর্দ্দ্যং মাবং লিহেৎ ক্ষোডিড কফপিভ-মদাত্যয়ে॥
রসো বিশেশরো নাম প্রোভ্জো নাগার্জ্জুনেন চ।
কাকমানীরসং চানু সৈম্ববন যুতং পিবেৎ॥

विष्युष्यंत्र तम ।

(অর্ক—ভাত্র। তীক্ষ্ণ—লোহ। মেবশৃন্ধী—মেঢ়াশৃন্ধীর গাছ। ভাগী—
বামনহাটী। পথ্যা—হরীতকী। বালক—পাথরকুচি বা ৰালা। ক্লোত্র—মধু)।
পারদভস্ম, তাত্রন লোহ, হরিভাল, গন্ধক, কট্ ফল, মেবশৃন্ধী, বচ, শুন্ধী,
বামনহাটী, হরীভকী, বালা ও ধনিয়া: এই সমস্ত দ্রব্য তুল্যপরিমাণে লইয়া
উত্তর্বরূপে মর্দন করিয়া এক দিবস ক্লেত্পাপ্ডার রুসে ভাবনা দিয়া একমাবা পরিমাণে বটী প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক বটী মধুর সহিত সেবন্দ
করিলে, অথবা কাকমাটীর রস এবং সৈক্বের সহিত পান করিলে কক, পিত্ত
ও মদাত্যয় প্রভৃতি রোগ বিদ্যু হয়। বিখ্যাত দাগার্জুন মুনি কর্তৃক এই
ভিষ্ণ উইয়াছে।

ত্ৰিপুরভৈরৰ-রশঃ।—

বিষটক বলি মেচ্ছ দত্তীবীজং ক্রমান্বছ।
দত্ত্যমুমদিতং যামং রদন্ত্রিপুরতৈরবঃ॥
বল্যো ব্যোষেণ চার্ক্র স্থানেল দিত্রাথবা।
দত্তো নবস্থরং হন্তি মান্দ্যামানিলশোথহা॥

हिंबुन्तः निविधेष्ठमर्गाःनि क्रिकान् शर्मान्। পথাং তক্রেণ ভূঞীত রসেংস্থিন রোগহারিণি ।

ত্রিপুরভৈরব রস।

১ ভাগ বিষ, ২ ভাগ দোহাগার খৈ, ৩ ভাগ গন্ধক, ৪ ভাঁগ লেছ (ডাড়া) अत् e छात्र मसीतीक : अरे मगूनाय सन्। अक शहत शर्व स्वीत सत्ताम মর্দ্দন করিবে। ইছা আদার রস. ইকুচিনি, শুঁঠ, পিপুল বাঁ মরিচ সহ সেবন করিলে নবজর, অগ্নিমান্দ্য, আমবাত, শোথ, শুল, বিউক্লাজীণ, অর্শ: এবং কুমিরোগ সমূহ আরোগ্য হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া তক্র সহ অন্ধ পথ্য করিবে ।

নবজ্র-রিপুঃ।—

তাত্র পত্রচয়ং প্রতাপ্য বহুশো নির্ববাপ্য পঞ্চায়তে, গোমূত্রেইগ্নিজলে বলিদ্বিগুণিতং মেচ্ছেন পিষ্টেন চ। লিপ্তা সপ্তয়দংশুকৈরথপুনঃ সামুদ্র-যামং পচেৎ, যত্ত্রে লাবিনিকে নবন্ধর-রিপুঃ স্যাদ্গুঞ্রা সন্মিতঃ॥ নবজুর রিপু।

(পঞ্চাম্ত – হুদ্ধ, দধি, ঘূত, চিনি ও মধু; এই পঞ্চবন্ত মিশ্রিত পদার্থ। ক্লেচ্ছ—ভাত্র। মৃৎ-অংশুক—মৃগায়বস্ত্র। অগ্নিজল—চিভার কাথ)।

তাত্রপাত্রকে পোড়াইয়া বহুবার পঞ্চামৃত, গোমূত্র ও চিতার কাথে নির্ব্বাপিত করিয়া চূর্ণ করিবে। তৎপরে উক্ত তাম্রচূর্ণ > ভাগ এবং গন্ধক ২ ভাগ একত্র করিয়া মৃত্তিক:-সংলিপ্ত বস্ত্র দ্বারা লিপ্ত একটা মুষার মধ্যে রাখিয়া এক প্রহর লবণ-যন্ত্রে পাক করিবে। ইহা > রতি পরিমাণে আদার রসের সহিত সেবন করিলে নবজুর বিনষ্ট হয়।

শীতারি-রসঃ ৷—

পারদং গন্ধকং শুদ্ধং টক্ষণঞ্চ সমং সমং। পারদাদ্বিগুণং দেয়ং কৈপালং তুষবৰ্জ্জিতং॥ দৈশ্ববং মরিচং চিঞাত্বগ্ভন্ম শর্করাপি চ। প্রত্যেকং স্থতকং তুল্যং জয়ীরেমর্দ্ধয়েদিনং। বিগুঞ্জা তপ্ততোয়েন বাতশ্লে**ন্নর্**রাপহঃ। রসঃ শীতারিনামায়ং শীতক্ষরহরঃ পরঃ ॥ শীভারিরস।

(চিঞা-ভিত্তীভী। শর্করা-বিষ। স্থতক-পারা)।

পারদ, গছক, সোহাগা, দৈল্পৰ, মরিচ, ডিস্তীড়ি ত্বগু ভত্ম এবং বিষ ; এই मकल ज्ञेरा मम्बारा अरः शाहरात विश्व जूद बर्किड ब्रम्भान बार् शृक्तक সমূদার জীবাগুলি একত্র মিশ্রিড করিরা এক দিবস জম্বীরের রসে মর্দন করিয়া ২ রতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা উষ্ণ জলের সহিত্ত দেবন করিলে বাতমেশ্ব-জ্বর ও শীতজ্ঞ জ্বর বিনম্ট হয়।

চিন্তামণিঃ।—

রসবিষয়ন্ধক টঙ্গণ তাত্র যবক্ষারকং ব্যোষং।
তালকফলত্রক ক্ষোডিঃ শতং বারান্॥
সংমদি। রক্তিমিত-বটিকা কার্যা ভিষণ্ভিঃপ্রাক্তিঃ।
শুগীপিন্টেন সমমেকাং দ্বে বাথবা তিত্রঃ সংপ্রাশ্য॥
নারিকেল জল মনুপেয়ং সেবয়েৎ,
সৈন্ধবং জীরং তক্রপথাং প্রয়োক্তব্যং।
প্রশ্যাতি সন্নিপাতত্বরং তথা জীর্ণজ্বং বিবিধক ॥
প্রীহানং চাধানকং কাসং শ্বাসং বহ্নিমান্যক।
চিন্তামণিরসোহয়ং কিল শ্বয়ং ভৈরবেণ নির্দিন্টঃ॥
চিন্তামণি।

পারা, বিষ, গন্ধক, সোহাগার খৈ, তাদ্র, যবক্ষার (সোরা), শুঠ, পিপুল, মরিচ, হরিতাল, আমলকী, বহেড়া, হরীতকী; এই সকল দ্রব্য সমভাগে শ্রহণপূর্বক একশতবার মধুর সহিত মর্দন করিয়া ৪ চারিরতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুক্ত করিবে। ইহার ১।২ বা ৩ বটা রোগীকে শুগীচূর্ন সহ সেবন করাইয়া নারিকেলের জল অভ্পান দিবে। এবং সৈন্ধব লবণ, ক্রম্বজ্জীরা ও ডক্র পথ্যস্বরূপ প্রদান করিবে। এই প্রথম দ্বারা সাদ্মিপাতিক জ্বর, বিবিধপ্রকার জীর্নজ্বর, প্রীহা, উদরাগ্বান, শ্বাস, কাস ও অগ্নিমান্য প্রশ্মিত হয়। স্বয়ং

ভৈরবদেব (মহাদেব) এই ঔষধ স্জন করিয়াছেন।

শীতভঞ্জী রসঃ।—

রসহিন্ধুলগন্ধক জৈপালং মর্দ্রিতং ত্রিভিঃ।
দিন্তিকাথেন সংমৃদ্যি রসো জ্বহরং পরঃ॥
নবজরং মহাঘোরং নাশ্যেদ্যামমাত্রকং।
আদ্রুক-স্বরসেনাপি দাপরেদ্রুক্তিকার্যং॥
শর্করা দ্বিভক্তক পথ্যং দেয়ং প্রযত্নতঃ।
শীতভঞ্জীরসো নাম সর্বজ্বকুলান্তর্কং॥
শীতভঞ্জীরস।

পারা, হিন্দুল, গদ্ধক ও জরপাল; সমভাগে প্রহণপূর্বকাও বার দন্তীর কাথে ভাবনা দিয়া শুদ্ধ করিয়া ২ রুডি পরিমানে বটী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটিকা আধার রদের সহিত বেবন করিলে বহা ঘোরতরী নবজর একপ্রহর মধ্যেই আরোগা হয়। এই উষধ সেবন করিরা চিনি, দধি, ভক্ত (অম), শীতলজল, ইক্লু ও মূগের যুষ পথ্য প্রদান করিবে। এই উষধ সকল প্রকার জর বিনাশ করে।

মেঘনাদ-রসঃ।---

আরংকাংশ্যং মৃতং তাত্রং ত্রিভিন্তলান্ত গন্ধকং।
রসেন মেঘনাদস্য পিষ্টা রুদ্ধা পুটে পচেছ।
সংচূর্ণ্য পর্ণরসেন দাতব্যা বিষমাপহা।
অত্র মাত্রা হিগুঞা স্যাহ পথ্যং হুগ্নোদনং হিতং॥
পঞ্চামৃতপলকৈকমনুপানং প্রযোজয়েছ॥
মেঘনাদরদ।

(আর—পিত্তল। মেঘনাদ—তণ্ডুলীয়শাক (চাঁপানটে)। পর্য—পান)।
পিত্তল ১ ভোলা, কাঁদা ১ ভোলা, তামা ১ ভোলা এবং গন্ধক ৩ ভোলা,
এই দ্রের্য সকল একত্রিত করিয়া নটেশাকের রক্ষে মর্দ্দন পূর্বকি গজপুটে
পাক করিবে। অনন্তর উক্ত ঔষধ চুর্য করতঃ ২ রভি পরিমাণে পানের রদের
সহিত সেবন করিলে বিষমজ্বর বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ সেবনান্তে ত্বন্ধ বা
৮ ভোলা পঞ্চায়তের সহিত অন্ন পথ্য করিবে।

অমুত্যঞ্জী।—

হিন্ধুলং মরিচং টক্ষং পিপ্পালী বিষমেবচ।
জাতীকোষং সমং সর্বাং জম্বীরান্তিবিমর্কিতং॥
গুঞ্জাদ্বাং ত্রাং বাপি প্রদেরং সান্নিপাতিকে।
কাসখানে) জয়ত্যাশু সর্বান্ত্রবিনাশনঃ॥
অয়ত্মঞ্জরী।

হিন্দুল, মরিচ, সোহাগার খৈ পিপুল, বিষ ও জয়িত্রী; এই দ্রব্য সকল সমভাগে গ্রহণপূর্বক জন্বীরের রদে মর্দ্দন করিয়া ২ বা ৩ রতি প্রমাণ দ্বাসী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বদী রোগীকে সেবন করাইলে সান্ধি-শাতিক জ্বর, খাদ, কাদ এবং অভান্ত সর্বপ্রকার জ্বর বিনষ্ট হয়।

চিন্তামণি রসঃ।—

রসং গন্ধং বিষং লোহং ধূর্তবী দন্ত তৎসমং।
দ্বো ভাগো তাত্ত্ববিহ্নক ব্যোষচূর্ণন্ত তৎসমং॥
জমীরস্য চ মজ্জাভিরাদ্র ক্যায় রসৈর্যুতং।
স্বাহানর্পানেন বটীং স্বারে দেয়াং প্রয় ব্রতঃ॥
শুঞ্জাদ্বয়ং বটীং খাদেৎ সদ্যোহরং ব্যপোহতি।

তৃতীয়-অধ্যায়ঃ।

বাতিকং পৈতিকঞাপি শ্লৈষ্মিকং সান্নিপাতিকং।

ঐকাহিকং দ্ব্যাহিকণ চাতুর্থক-বিপর্যারং।

অসাধ্যঞাপি সাধ্যঞ্চ জরকৈবাতি হস্তরং॥

শ্লেমান্দ্যেইপাজীর্ণে চ আপ্যানেইনিল-সম্ভবে।
জতিসারে ছর্দিতে চ অরোচক-নিপীড়িতে॥
স্কুরান্ সর্কান্ নিহন্ত্যাশু ভাক্ষরন্তিমিরং যথা।

চিন্তামণিরদো নাম সর্কান্ধরং ব্যপোহতি॥

চিন্তামণিরদা

পারদ, গন্ধক, বিষ, লৌহ ও ধুতুর। (ধুর্ত্ত্ব) বীজ; এই সকল জন্য প্রত্যেকে এক একভাগ এবং তাত্র, চিতা, পিপুল, শুঠ ও মরিচ প্রভ্যেকে হ ছইভাগ; এই সমস্ত জব্য ওলি একত্রিত করিয়া জন্মীরের মজ্জা এবং আদার রদের মহিত মর্দন করিয়া, ২ ছইরতি পরিমাণে বটকা প্রস্তুত পূর্বক সেবন করিলে মদোজর, বাতজজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, শৈল্মিকজ্বর, সামিপাতিক জন্ম, প্রকাহিকজ্বর, দ্যাহিকজ্বর, চাতুর্থক প্রভৃতি সাধ্যাসাধ্য সকল প্রকার আজি হস্তর জ্বর, অগ্নিমান্য, অজীর্গ, বায়ুজ্ম আদান, অতীসার, ছর্দি ও অরোচক নিবারিত হয়। এই উষধ সেবন করিলে স্ব্যোদ্যের অন্ধকার বিনাশের স্থায় সকল প্রকার জ্বর বিনম্ভ হয়।

ক্লবপুঃ।—

শুদ্ধসূতং মূতং তাত্রং মূতং নাগং মনঃশিলা।
তুপকং তসা তুল্যাংশং দিনমেকং বিমন্দ্রেৎ॥
দ্রবিরুত্রবারুণ্যাশ্চণমাত্রা বটী ক্রতা।
সন্নিপাতঃ নিহন্ত্যাশু নস্মাত্রেণ দারুণং॥
এবা কুলবধূর্নমি জলে মুক্টা প্রযোজয়েৎ॥

कूल यधू ।

্ শুদ্ধত — শোধিতপারদ। নাগ — সীস। তুত্থক—তুঁতে। উত্তরবারুণী-গোরক্ষচাকুলে)।

বিশুদ্ধ পারদ, মারিত তাত্র, মীদা, মনঃশিলা ও তুঁতে; এই সকল দ্ধবা তুল্যভাগে এহণপূর্বক গোরক্ষচাকুলের রদে একদিন মর্দ্দন ক্রিয়া, রৌদ্ধে শুষ্ক করতঃ চণক মাত্রায় বটা প্রস্তুত করিবে। এই বটা জ্বলে ঘর্ষণ করিয়া নক্ষ গ্রহণ করিলে ভয়ানক সন্নিপাঠত জর বিনক্ট হয়।

> নস্তভিরবঃ।— মৃতসূতার্কতীক্ষায়িং টঙ্গণং খর্পরং সুমং।

সব্যোষমর্ক ভূগ্রেন দিনঞ্চ মর্দ্ধরে দিনং । অর্কন্দীরযুতং নন্ডং সন্নিপাতহরং পরং । নতাত্তরব

(মৃতস্ত—রসসিন্দ্র। অর্ক – তাম্র। তীক্ন—লৌছ। অগ্নি–চিত্র। টক্ষণ–সোহাগার খৈ। বোষ—ত্রিকটু। অর্কন্দীর—আকন্দের আঠা)।

রসদিন্দুর, ডাম্র, লৌহ, চিতা, সোহাগার খৈ, খর্পর এবং ত্রিকটু: এই সমস্ত দ্রব্য সমপরিমাণে এহণপূর্ব্বক আকন্দের হুদ্ধে এক দিন মর্দ্দন করিয়া লইবে। এই ঔষধ আকন্দের ক্ষীরের সহিত নস্থ এহণ করিলে সামিপাতিক জব মত্বর বিনষ্ট হয়।

বিদ্যাবল্লভ-রদঃ ৷—

রসো স্লেচ্ছ শিলা তালাশ্চক্রদ্বাগ্যর্কভাগিকাং।
পিষ্টা তান্ সুষবী তোরৈস্তাত্রপাত্রোদরে ক্ষণেৎ॥
ন্যতং শরাবে সংরুধ্য বালুকা মধ্যগং পচেৎ।
ক্ষুটন্তো ব্রীহয়ো যাবভৎশিরংস্থাং শনৈং শনৈং॥
সঞ্গা শর্করা যুক্তং দ্বিবল্লং সংপ্রযোজয়েৎ।
নাশয়েৎ বিষমাধ্যঞ্জ তৈলামানি বিবর্জয়েৎ॥
বিদাবল্লভবদ।

(রস —পারা। স্লেচ্ছ —তামা। শিলা—মনঃশিলা। তাল —ছরিতাল। চন্দ্র—১ ভাগ। অগ্নি—৩ ভাগ। অর্ক—১২ ভাগ। স্ববী—করেলা উচ্ছে। বল্ল—৬ রতি। শরাব—শরা)।

১ ভাগ পারা, ২ ভাগ তাত্র, ৩ ভাগ মনছাল এবং ১২ ভাগ ছরিতাল একত্তিত করিয়া করেল। উচ্ছের পাতার রেদে মর্দ্দন করিয়া একটি তাত্রপাতের পূরিবে; অনন্তর বালুকাপূর্ণ মুগ্রয় শরাবে রাখিয়। পাক করিতে থাকিবে; এবং পাক সমাপ্তি জানিবার জন্ম দেই শরাবোপরি কতকগুলি ধান্ম রাখিয়া দিবে। যখন দেখিবে যন্ত্রন্থ ধান্ম ফুটিতে লাগিবে, তখন পাক সমাপ্ত ছইয়াছে জানিয়া নামাইবে, এবং শীতল ছইলে চূর্ণ করতঃ ৬ রতি পরিমাণে সেবন করিলে বিষম জ্বর বিন্দ্ত হয়। এই ঔষধ দেবন করিয়া জৈল ও অয় জব্যাদি ভোজন নিষেধ জানিবে।

বিষ্মন্ধরান্ধ্রশ-লৌহঃ।—

রসে যুক্তং হ্র্যভক্তং সনীরং তক্ত ভক্তকং। অজাহ্র্যাং কেবলং বা দ্বতং বা সাধিতং হিতং॥ রক্তচন্দনহীবের পাঠোশীর কণাশিবা। নাগরোৎপলধাতীভিক্রিমদেন সমন্বিতং॥

লোহং নিহন্তি বিবিধান সমস্তান বিষমজ্বান । মিলিত-সমস্ত-চুর্ণসমং লৌহং । • বিষমজ্বাকুশ লৌহ।

(অজ্বা—ছাগী। হ্রীবের—বালা। পাঠা—আকন্দীলতা। উশীর—বেণার-মূল। শিবা—হত্ত্বীতকী। নাগর—শুঠা। উৎপল—শুঁ দিনাল। ধাত্রী— আমনকী। ত্রিমদ—মুখা, চিতা ও বিড়ঙ্গ)।

রক্তচন্দন, বালা, পাঠা, বেণারমূল, পিপুল, হরীতকী, শুণ্ঠী, উৎপল, জ্ঞানলকী, মুথা, চিতা এবং বিড়ঙ্গ এবং এই সমস্ত দ্রব্যের সমান লৌহচূর্য একত্র মিশ্রিত করিয়া মর্দ্দনপূর্বক শুষ্ক করতঃ চূর্ন করিবে। এই উষধ সেবন করিলে সর্ববিধ বিষমজ্বর বিনম্ট হয়। এই উষধে হ্রন্ধ অন্ন, সজল তক্ত্র অন্ন কিয়া কেবলমাত্র ছাগহুন্ধ অথবা পাক করা মৃত অতীব হিতজ্বনক।

রহচ্চূ ড়ামণি রসঃ।—

কন্তুরিকা বিক্রম রৌপ্য লৌহং,
তালং হিরণ্যং রসসিন্দুরক।
স্থবর্ণসিন্দুরলবঙ্গমৌক্তিকং,
চোচং ঘনং মান্দিক রাজপট্রং॥
গোক্ষুর জাতীকল জাতীকোবং,
মরিচ কপুর শিখিগ্রীবঞ।
প্রগৃহ্থ সর্বাং হি সমং প্রযত্নাদথাশ্বসন্ধা দ্বিগুণং হি বৈদ্যঃ॥

বক্ষামাণোষধৈর্ভাব্যং প্রভাকং মুনিসংখ্যয়া।
নিপ্ত তী কঞ্জিকা বাসা রবিমূলত্রিকণ্টকৈঃ॥
তদ্বীর্যাং কথ্যিষ্যামি বাতিকং পৈত্তিকং জ্বরং।
কফোন্তবং'দ্বিদোষোধ্যং ত্রিদোষজনিতন্ত্রথা॥
সততং সন্ততং হন্তি তৃতীয়কচাতৃর্থকো।
কাহিকং দ্বাহিকঞ্চ বিষমং ভুতসন্তবং॥
নাশয়েদচিরাদেব ক্রক্ষমিক্রাশনির্যথা।
চুড়ামণিরসো ছেষ শিবেন প্রিভাষিতঃ॥

র্হচ্চৃ ড়ামণিরস।

, (কন্ত রিকা—মুগনাভি। বিক্রম—প্রবাল। তাল—হরিতাল। হিরণ্য— স্বর্ণ। চোচ—দাক্চিনি। স্বর্ণসিন্দ্র—মকরঃজ্ঞ। ঘন—মুখা। মান্দিক— স্বর্ণমান্দিক। রাজপঞ্জ-বিরাটদেশীয় হীরক। শিখিঞ্জীব – ভূতে। নি- গু ি—নিসিদা। কঞ্জিকা—বামনহাটী। রবিমূলু—আকম্বের মূল বিক উক—গোকুর। ইন্দ্রাশনি—ইন্দ্রদেবের বজ্ঞ। শিব—মহাদেব। মুনিসংখ্যা— ৭ বার)।

কন্ত রী, প্রবাল, রূপা, লৌহ, হরিতাল, স্বর্গ, রস্পান্দ্র, স্বর্ণসিন্দ্র, লবন্ধ, দাকচিনি, জায়ফল, করিত্রী, মুখা, মুক্তা, স্বর্ণমান্দিক, হীরকা গোস্থার, মরিচ, কপুর এবং তুঁতে : এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমভাগে এক একভাগ ; আর অন্ধান্ধ, ইহাদের প্রত্যেকের রুথে ৭ দাতবার করিয়া ভাবনা দিয়া স্ম্বাতিপে শুখাইয়া ২ তুই রতি প্রমাণ বর্টিকা প্রস্তুত করিবে। প্রত্যেই ইহার এক এক বটী সেবন করিলে বাভিক জ্বর, পৈছিক জ্বর, ক্রিম্মিক জ্বর, বাত-পৈত্তিক জ্বর, বাতমেশ্ব-জ্বর, পিত্তমেশ্ব জ্বর, দারিপাতিক জ্বর, দতত জ্বর, সন্তত জ্বর, তৃতীয়ক জ্বর, চাতুর্থক জ্বর, ঐকাহিক জ্বর, বিষম জ্বর, ভূতোথ-জ্বর প্রভৃতি সকল প্রকার জ্বর বিনম্ট হয়। যেমন ইন্দ্রদেবের বক্ত মুমন্ত ক্লমকে বিনাশ্ব করে, তজ্ঞপ এই উষধ রোগ সমূহকে নই করে। এই রহচ্চ ড্রামনিব্রস্থ স্বয়ং শিব কর্ত্বক কথিত ইইয়াছে

রহজ্বরচূড়ামণিঃ।—

সুবর্ণ দিন্দুরং স্বর্ণং লৌহং তারং মুগাদ্ধজং।
জাতীফলং জাতীকোমং লবদ্ধ ত্রিকন্টকং॥
কপুরিং গগনকৈব চোচং দুমলতালকং।
প্রত্যেকং কর্যানন্ত তুরঙ্গক দ্বিকার্হিকং॥
বিক্রমং ভন্মস্তক মৌক্তিকং মান্দিকং তথা।
রাজপট্টং শিখিগ্রীবং সর্বাং সঞ্বা্য যত্নতঃ॥
খলে তু চুর্ণমানায় ভাবয়েৎ পরিকীর্তিকঃ।
নিশুগ্রী কঞ্জিকা বাসা রবিমূলত্রিকন্টকৈঃ॥
জ্বমন্টবিধং হত্তি সাধ্যাসাধ্যমথাপি কা॥

ব্রহজ্জরচূড়ামণিরস।

(সুবর্ণসিন্দুর—স্বর্ণ সিন্দুর। তার – রোপ্য। মৃগাক্ষজ – কন্তুরী। ত্রিকন্টক – গোকুর। গগন – অভ। চোচ – দাকচিনি। মুবল – তালমূলী।
ভালক – হরিতাল। কর্ব – ২ ভোলা। তুরঙ্গ – গন্ধক। বিদ্রুদ – প্রবাল। ভস্মস্থত – রুসসিন্দুর। মৌজিক – মুক্তা। মাক্ষিক – স্বর্ণ মাক্ষিক। রাজপট্ট –
কান্তপাযাণ (হারক)। শিখিথীব – তুঁ ডিয়া। নিগ্রন্তী – নিসিন্দা। কঞ্জিকা –
ব্রহ্মইটি (বামনহাটী)। রবি – আকন্দ)।

े অর্থ সিন্দুর, দোণা, লোহ, রৌপ্য, মুগনাভি, জাতিফল, জয়িত্রী, লবজ, গোক্ষর কপ্র, জজ, ধাক্চিনি, ভালমূলী, ছরিতাল; এই সমস্ত দ্রব্য ্প্রত্যেকে ২ ডোলা এবং গদ্ধক, প্রবাল, রসসিন্দুর, মুক্তা, স্বর্ণশাক্ষিক, হীরক . ও তুঁতে; এই দকল বস্তু প্রত্যেকে ৪ চারিডোলা; এই দ্রব্যগুলি দমুদায় গ্রহণপুর্বক একত্ত মিশ্রিত করিয়া নিসিন্দা, বামনছাটী, বাসক, আকন্দমূল এবং গোকুর; ইহাদের প্রভ্যেকের স্বর্দে ৭ সাতবার করিয়া ভাবনা দিয়া ২ছুই রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটী দেবন করিলে माधा, जमाधा, या भारति व्यक्तिय छत्र विनक्ते हत्र ।

ভারুচুড়ামণিঃ ৷—

ञ्चर्नः त्रममिन्दृतः श्रवानः वृत्रस्यव ह । লৌহং তান্ত্ৰং তেজপত্ৰং যমানী বিশ্বভেষজং॥ বৈন্ধবং মরিচং কুষ্ঠং খদিরং দ্বিহরিদ্রেকং। রসাঞ্জনং মান্দিকঞ্চ সমভাগঞ্চ কারয়েৎ ॥ বারিণা বটিকা কার্যা রক্তিদ্বয় প্রমাণতঃ। ভক্ষয়েৎ প্রাতরুত্থায় সর্ব্বন্ধুরকুলান্তরুৎ॥ ভাত্মভূগমণি।

(यमानी - देखन। कूर्छ - कूछ। विद्यतिक्रक - इतिका अ माक्दतिका। मा-গিক - স্বৰ্ণমান্ধিক)।

স্বর্ণ, রমসিন্দ্র, প্রবাল, বঙ্গ, লৌহ, ডাত্র, ডেজপত্র, যমানী, শুঠী, দৈশ্ববলবণ মরিচ, কুড়, খদির, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, রুসাঞ্জন ও বর্ণমাক্ষিক; এই দ্রব্য দকল দমভাগে এহণপূর্ব্বক চূর্ণ করতঃ জ্বল দছ বাটিয়া ২ হুই রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করতঃ, ভাছার এক একটী বড়ী প্রাতঃকালে দেবন করিলে সকল প্রকার জ্বর বিনষ্ট হয়।

চূড়ামণি-রসঃ।— মৃতং স্থতং প্রবালক স্বর্ণং তারক বঙ্গকং। শুলুং মুক্তা তীক্ষমভ্রং সর্ববেদকত্র যোজয়েৎ॥ জলেন পৃষ্টু। বটিকা কার্য্যা বল্লপ্রমাণতঃ। ধাতুস্থং সন্নিপাতোথং জ্বং বিষমসম্ভবং॥ -কামশোকসমুদ্ভূতং ত্রিদোষজনিতন্ত্রথা। কাদং খাদক বিবিধং শূলং দৰ্কাঙ্গসম্ভবং॥ निरतारतानः कर्ग्नः पख्न्नः नन्धः। বাতপিত্তসমুদ্ভূতাং গ্রহণীং সর্কসম্ভবাং॥ আমৰাতকটীশূলমগ্নিমান্দাং বিস্ফচিকাং। অৰ্ণাংনি কামলাং মেহং মূত্ৰকুচ্ছ । দিকঞ্চৰ ॥

তৎসর্বং শাশয়ত্যাশু বিষ্ণুচক্রমিবাস্থরান্ । চূড়ামণিরদো শ্বেষ শিবেন পরিকীর্ত্তিতঃ॥ চূড়ামণিরস।

(ভার – রৌপ্য। শুন্ধ – ভার্ম। ভীক্ষ্ণ – লৌহ। বল্ল – ২ রভি)।

রসদিন্দুর, প্রবাল, স্বর্ণ, রৌপা, বন্ধ, তাত্র, মুক্তা, লৌছ এবং অভ্র; এই সমস্ত দ্রব্য তুলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক জল সহ বাটিয়া ২ ছুই রভি প্রমাণে বটী প্রস্তুত পূর্বক সেবন করিলে ধাতুত্ব জ্বর, সান্নিপাতিক জ্বর, বিষমজ্বর, কামজ্জ্বর, শোকসঙ্গুত জ্বর, কাম, শ্বাস, নানাবিধ শূল, অঙ্গবেদনা, শিরোরোগ, কর্ণশূল, দস্তপূল, গলগ্রহ, বাতপিত্ত সমুস্তুত ও তৈলোষিক গ্রহণী, আমবাত, কটীশূল, মন্দাগ্রি, বিস্ফৃতিকা, অর্পঃ, কামলা, প্রমেহ এবং মুক্তকুত্ব রোগ বিনক্ত হয়। যেমন কমলাপতি বিষ্ণু স্থাদনিচক্র দ্বারা সমস্ত অস্ত্রকে বিনস্ত করিয়া ছিলেন, তক্রপ মহাদেব কর্তৃক সমস্ত রোগ বিনাশার্থে এই চূড়ামণিরস কথিত হইয়াছে।

তিদোষহারী-রসঃ।—

রসবলি শিলালতাপ্য তুথোদধি মলটঙ্গ নিকুম্ভজায়তাখ্যম্ । বিলুলিতমিহ পিততস্ত্রিধা স্যাৎ, রুধিরগতঃ শিরসি ত্রিদোষহারী॥ তিদোষহারী রস।

(রস-পারা। বলি - গন্ধক। আল- হরিতাল। শিলা- মনঃশিলা। ভাপ্য-স্থানিকিক। তুথ - তুঁতে। উদ্ধিমল- সমুদ্রফেণ। টঙ্গ- গোহা-গার খৈ। নিকুন্তজা-আতইচ। অমুতা-গুলঞ্চ। ক্ষির-শোণিত।)

পারদ, গন্ধক, মনছাল, হরিতাল, স্বর্ণমান্দিক, তুঁতে, সমুদ্রের ফেণা, সোহাগার খৈ, আতইচ ও গুলঞ্চ; এই দ্রব্য সকল সমভাগে এহণপূর্বক পঞ্চপিত্ত দ্বারা (শুকর, ছাগ, মহিষ, মংস্থা ও ময়র; এই পাঁচপ্রকার জন্তর পিত্ত দ্বারা) তিনবার ভাবনা দিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইছা সেবন করিলে রক্তগত মস্তকস্থ ত্রিদোষ বিনম্ভ হয়।

অঞ্জনভৈরবঃ।—
স্থততীক্ষকণাগন্ধমেকাংশং জরপালকং।
সর্বৈক্সিগুণিতং জন্তবারিণা চ স্থপেষিতং॥
নেত্রাঞ্জনেন হন্ত্যাশু সর্বোপদ্রবনুদ্ধতং॥
অঞ্জনভৈরব।

(হত-পারন। তীক্ষ-লোহ। কণা-পিপ্ললী। গন্ধ-গদ্ধক। জন্তু-

পারনী লোহ, পিপালী ও গন্ধক; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে একভাগ এবং জয়পালবীজ দকল দ্রব্যের ত্রিগুণ লইয়া, একত্র মিপ্রাণপূর্বক জামীরের রদে মর্দ্দন করিয়া নেত্রে অঞ্জন দিলে উপদ্রবসংযুক্ত দকলপ্রকার দান্ধি-পাতিক জ্বর বিনষ্ট হয়।

জয়মঙ্গল-রসঃ।---

ভসাস্তাভ্রকং তারং মুগুতীক্ষারমান্ধিকং।
বহ্নিটঙ্গণ সব্যোষং সমং সংমর্দ্রেদ্দিনং॥
পাঠা নিগু গুকা যফি বিলুমূল-ক্ষায়কৈঃ।
ততো মূষাগতং রুদ্ধা বিপচেৎ ভূধরে পুটে॥
মাবৈকং দশমূলস্য ক্ষায়েণ প্রযোগ্রেহং।
অঞ্নেনাথবা নদ্যে সন্ধিপাতং জ্যেদ্ধ্রং॥

ष्ठश्रमञ्जल तुम ।

(ভস্মস্থত – রদিন্দ্র। তার – রৌপায়। মুগুতীক্ষ্ম—মুগুলোই। আর – পিত্তল। মান্দিক – স্বর্ণমান্দিক। বহ্নি – চিতা। ব্যোষ – ত্রিকটু। পাঠা – আক্লাদি।)

রদদিন্দ্র, অজ্র, রৌপ্য, মুগুলৌহ, পিত্তল, স্বর্গাক্ষিক, চিতা, দোহাগা ও ত্রিকটু; এই জব্য দকল দমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক আফ্রাদি, নিদিন্দা, যফিমধু ও বিলুমূলের কাথে এক দিবদ মর্দনপূর্বক মুযামধ্যে পূরিয়া ভূধর যক্তে পুটপাক করিবে। এই ঔষধ এক মাষা পরিমাণে দশমুলের কাথের সহিত অঞ্জন বা নস্ত দিলে দান্নিপাতিক জ্বর বিনষ্ট হয়।

সর্বতোভদ্র-রসঃ।—

বিশুদ্ধং গগনং আছং দ্বিকর্ষং শুদ্ধগদ্ধকং।
তোলকং তোলকার্দ্ধক হিন্দুলোথরসন্তথা ॥
কপূরং কেশরং মাংসী তেজপত্তং লবঙ্গকং।
জাতীকোষফলকৈব সুক্ষেলা করিপিপেলী ॥
কুষ্ঠং তালীশপত্তঞ্চ ধাতকী চোচ মুস্তকং।
হরীতকী মরিচঞ্চ শৃঙ্গবের বিভীতকং ॥
পিপেল্যামলককৈব শাণভাগং বিচুর্ণিতং।
সর্বমেকীকৃতং পিফুা বটীং কুর্য্যাদ্বিশুঞ্জিকাং ॥
ভক্ষয়েৎ পর্ণগণ্ডেন মধুনা সিতয়াপি চ।
রোগং জ্ঞাত্বানুপানক প্রাতঃ কুর্য্যাদ্বিচক্ষণঃ॥
হক্তিংমন্দান্দ্রান্ধ প্রবিনাম্দোবং বিস্কৃচিকাং।

পিভশ্নেরভবং রোগং বাতশ্রেরভবন্তথা।
জানাহং মূত্রকৃচ্ছু ও সংগ্রহগ্রহণীং বৃদিং।
জন্মপিত্তং শীতপিত্তং রক্তপিত্তং বিশেষতঃ।
চিরজ্বং পিত্তবং ধাতুত্তং বিষমন্ত্রহ।
কাসং পঞ্চবিধং খাসং কামলাং পাওুমেবচ।
সর্বলোকহিতার্থয়ে শিবেন ভাষিতঃ পুরা।
সর্বতোভদ্রনামায়ং রসঃ সাক্ষান্মহেশ্বঃ॥

সর্বভোভন্ত রস।

(গাণ – অভ। তোলক – তোলা। কেশর – নাগকেশর। মাংসী – জটামাংসী। স্ক্রেনা – ছোটএলাচি। করিপিপালী – গজপিপুল। কুঠ – কুড়। ধাতকী – ধাঁইফুল। চোচ – গুড়ত্বক্। মুস্তক – নাগরস্থা। শৃদ্ধবের – শুগী। বিভীতক – বহেড়া। আমলক – আমলকী। শাণ – অর্ধতোলা। দিতা – শর্করা। মহেশ্বর – মহাদেব, শিব।)

অভ ৪ চারিভোলা, গন্ধক ১ একভোলা, হিন্ধুলোথ পারদ॥ অর্ধভোলা এবং কপুর, নাগকেশর, জটামাংসী, তেজপত্ত, লবন্ধ, জাতিকল, জরিত্তী, ছোটএলাচি, গজপিপুল, কুড়, তালীশপত্র, ধাইফুল, দারুচিনি, মুথা, হরীতকী, মরিচ, শুগী, বহেড়া, পিপুল ও আমলকী; এই সকল দ্রব্যের প্রত্যেকে ॥ অর্ধভোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক চুর্গ করিয়া জলম্ছ বাটিয়া ২ ফ্রই রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। এই ঔষধ পান, মধু ও শর্করা সহ অথবা প্রাত্যংকালে রোগাল্লারে অল্পানবিশেষে দেবন করিলে, সর্বপ্রকার অগ্নিমান্দা, আমনদো, বিস্কৃতিকা, পিত্তমেত্মজন্ম ও বাতমেত্মজন্ম রোগা, আনাহ, মূত্রকুজ্ঞ, সংগ্রহগ্রহণী, বিম, জম্লপিত্ত, শীতপিত্ত, রক্তপিত্ত, জীর্জির পৈত্তিকজ্ব, ধাতুগতজ্ব, বিষমজ্বর, পঞ্চবিধ কাস (বাতিক, পৈত্তিক, মৈত্মিক, ক্ষতজন্ম ও ধাতুক্ষর নিমিত্তক; এই পঞ্চবিধ কাস), কামলা এবং পত্তে রোগসমূহ বিনম্ব হয়। জ্বগতের সমস্ত লোকের হিতার্থে মহাদেব কর্ত্বক এই প্রথানী কথিত হইয়াছে। এই সর্ব্বভোভক্ত রস রোগ বিনাশে সাক্ষাৎ মহেশ্বর সদৃশ বলিয়া জানিবে।

চিন্তামণি রসঃ।—

রসং গন্ধং বিষং শুলুং মৃতমন্ত্রং ফলত্রিকং।
ত্যুষণং দন্তীবীজঞ্চ সমং খলে বিমর্দ্ধয়েৎ॥
ভোগপুন্সী রসৈভাব্যং শুক্ষং তদ্বস্থাগালিতং।
তিন্তামনিরসো হেষ অজীর্নে শুসাতে সদা॥
জ্বুমফবিধং হন্তি সর্বাশুলহরঃ পরঃ।

চিন্তামণি রস।

্পুলু — তাত্র। ফলত্তিক — ত্রিফলা। জুয়কা — ত্রিকটু। জ্রোণপুষ্পী — ঘলু ঘনে বা হলুক্সা। আর্ক্রবারি — আদার রস।)

পারদ, গন্ধক, বিষ, তাত্র, অভ্র, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, শুঠ, শিপুল, মরিচ এবং দন্তীবীজ্ঞ; এই সমস্ত দ্রব্য সমানভাগে এহণপূর্বক খলে উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া দ্রোণপুষ্পের রুসে ভাবনা দিবে। তদনন্তর স্থ্যাতপে শুক্ষ করিয়া স্থান্ধ পরিষ্কার বস্ত্র দারা ছাকিয়া লইবে। ইহা আদার রুসের সহিত ১ এক রতি বা ২ রতি পরিমাণে সেবন করিলে অজ্ঞীর্গ, অক্টবিধ জ্বর (বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, ক্রৈন্থিকজ্বর, বাতপৈত্তিকজ্বর, বাতশৈল্যকজ্বর, পিত্তশৈশ্বিকজ্বর, সান্নিপাতিকজ্বর ও আগন্তকজ্বর; এই অক্টবিধ জ্বর) এবং সর্ব্বপ্রকার শূলরোগ বিনক্ষ হয়।

রহজিন্তামণি-রসঃ ।—
রসগন্ধকলীহানি তাত্রং তারং হিরণ্যকং।
হরিতালং খর্পরঞ্চ কাংসাং বঙ্গঞ্চ বিক্রমং॥
মুক্তা মান্দিক কাশীশং শিলা চ টঙ্গকং সমং।
কপুরঞ্চ সমং দত্তা ভাবনা সপ্তসপ্তকং॥
ভাগী বাসা চ নিশু তী নাগবল্লী জয়ন্তিকা।
কারবেলং পটোলঞ্চ শক্রাশনং পুনর্নবা॥
আদ্র কঞ্চ ততো দদ্যাৎ প্রত্যেকং বারসপ্তকং।
চিন্তামণি-রসো নাম সর্বজ্ব-বিনাশনঃ॥
বাতিকং পৈত্তিককৈব শ্লৈঘ্রিকং সান্নিপাতিকং।
দ্বন্দুজং বিষমাখ্যঞ্চ ধাতুস্থক জ্বং জ্বেছে॥
কাসং খার্সং তথা শোথং পাপ্তুরোগং হলীমকং।
প্রীহানমগ্রমাংসঞ্চ যক্তক বিনাশয়েৎ॥
রহচ্ছিন্তামণি রস।

(রস—পারা। তার—রৌপ্য। হিরণ্যক—সোণা। বিদ্রুম—প্রবাল।
মাক্ষিক—স্বর্ণমাক্ষিক। কাশীশ—ধাতুকাশীশ (হিরাকসবিশেষ)। তার্গী—
বামনহাটী। নিপ্ত গ্রী—নিসিন্দা। নাগবলী—তামুল। আর্দ্রক—আদা।
জয়স্তিকা—জয়স্তী। কারবেল—করেলা উচ্ছে। শক্রাশন—বিজয়া, দিদ্ধি,
সহিদা বা ভাঙু।)

পারদ, গন্ধক, লৌহ, তাত্র, রৌপ্য, স্বর্ণ, হরিডাল, খর্পর, কাংস্থ, বঙ্গ, প্রশ্নল, মুক্তা, স্বর্ণমাক্ষিক, প্রাতৃকাশীশ, মনঃশিলা, সোহাগা ও কপুর; এই সমস্ত দ্বব্য সমভাগে গ্রহণপুর্বক বামনহাত্রী, বাসক, নিসিন্দা, পান, জয়ন্ত্রী, কুরলা, রিদ্ধি, প্রটোল, পুনর্ববা ও আদা; এই সকল দ্বব্যের স্বর্নে ৭ সাত্তঃ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ২ ছইরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম রহচ্চিন্তামণি রস। এই ঔষধ দেবন করিলে বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, স্নৈত্মিকজ্বর, বাতপৈত্তিকজ্বর, বাতস্নেত্মজ্বর, পিত্তশ্লেজ্জর, দান্নিপাতিকজ্বর, ধাতুগতজ্বর, বিষমজ্বর, খাস, কাস, পাণ্ডু, হলীমক, শোথ, প্লীহা, জ্ঞামাস এবং যক্ত্ব প্রভৃতি রোগসকল বিন্ষ্ট হয়।

ত্রিদোষনীহারসূর্য্যো-রসঃ।—
রসেন গন্ধং ত্রিগুণং ক্রশানুরসৈ বিমর্দ্দাথ দিনানি ঘর্ট্যাঃ।
রসামভাগং অমৃতঞ্চ দত্ত্বা,
বিমর্দ্দমেদ্বারুজলেন কিঞ্চিৎ॥
পিতিস্ত সম্ভাবিত এম দেয়ক্রিদোষনীহারবিনাশসূর্যাঃ॥
ত্রিদোষনীহারস্থা রস।

(কুশার - চিতা। ঘর্ম - রৌদ্র। অমৃত-মিঠাবিষ। বহ্ন-চিতা। পিত-ম-স্থা, শুকর, ময়ুর, ছাগ ও মহিষ; এই পঞ্চপ্রকার জন্তর পিতা। নীহার-হিম।)

১ একভাগ পারা এবং ৩ তিনভাগ গন্ধক একত্রিত করিয়া কিয়দ্দিবদ চিতার রদে মর্দ্দন করিয়া বৌদ্রেশুক্ষ করিবে। তৎপরে তাহার সহিত ৮ আটভাগ মিঠাবিষ মিলিত করিয়া চিতার রদে কিঞ্চিৎ মর্দ্দনপূর্বক, মংস্থ্য, শুকর, ময়ুর, ছাগ এবং মহিষ; এই পঞ্চ জন্তুর পিত্তে পাঁচবার ভাবনা দিয়া ৩ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বড়ী আদার রদের সহিত সেবন করিবে। যেমন স্বাদেব নীহারসমূহ বিনাশ করেন, তক্ত্রপ এই উষধ তিদোষ নই্ট করিয়া থাকে।

মোহাদ্ধস্থো-রদঃ।--

গন্ধেশো লশুনান্তোভির্মন্দ্রেদ্ যাম্মাত্রকং। তম্মোদকেন সংযুক্তং নসাং তৎপ্রতিবোধকং॥ মরিচেন সমাযুক্তং ছন্তি তন্দ্রাপ্রকাপকং॥

মোছারত্র্য রস।

(গন্ধ--গন্ধক। ঈশ--পারা। লশুন--রস্থন। অন্ত:--ভাহার রস। যাম--প্রহর।)

গন্ধক এবং পারদ সমান পরিমাণে এহণপূর্বক, রন্থনের রস দারা ২ এক প্রেছরকাল মর্দন করিয়া ঔষধ প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ রন্থনের রসের সংহিত প্রায়াগ করিলে রোগীর চৈতক্ত এবং মরিচচূর্ণ সহযোগে নস্তু দিলে

উমত্ত-রসঃ।—

तमगद्भक जूनगाश्मः ध्रुख् तकलरेकमः रेवः। यर्फ्राह्मिनरमकस्त्र जुलारिंगर जिकरेर किर्पर ॥ উন্মন্তরসো নামকঃ নদ্যে দ্যাৎ সন্নিপাতজিৎ॥ উন্মত্ত বদ।

পারা এবং গন্ধক দমভাগে এছণপূর্বক একদিন পর্যান্ত ধৃতুরা ফলের রেদে মর্দ্দন করিবে। তৎপারে তাহাতে সমান পরিমাণে শুঠ, পিপুল ও মরি-চের চূর্ণ নিক্ষেপ করিয়া, নম্ভে প্রয়োগ করিলে সন্ধিপাত বিন্ত হইয়া থাকে।

চাতুর্থকান্তকো-রসঃ।—

শিলাতুখং হরিতালং গন্ধকঞ্চ শঙ্খচুর্ণং। সমাংশং মর্দয়েৎ প্রাক্তঃ কুমারীরসভাবিতম্।। শরাষ-সংপুটে রুত্বা পশ্চাদাজপুটে পচেৎ। কুমারী স্বরসেবৈব বল্লমাতা বটী কুতা। দত্তা শীতজ্বরং হন্তি চাতুর্থকং বিশেষতঃ। মরিচ মুভযোগেন তক্রং পীত্রা চরেদ্বটীমু॥ এতরা ছদিঃ সম্ভুয় জ্বরস্তমাদ্বিনশাতি॥ চাতুর্থকান্তক রস।

(শিলা—মন:শিলা। তুত্থ – তুঁতে। কুমারী– ছতকুমারী। শরাব–শরা। বন্ধমাত্রা—৩ রতি। তক্র-হোল। ছর্দ্দি—বমন।)

মনঃশিলা, তুঁতে, ছরিতাল, গন্ধক এবং শখচূর্ণ; এই দকল দ্রুব্য দম-ভাগে গ্রহণপূর্ত্তক মৃতকুমারীর রসে মর্দ্দন করিবে। তদনস্তর শরাব সংপুটে রাখিয়া গজপুট দারা পাককরত, পুনর্বার ছতকুমারীর রুদে মর্দনপূর্বক, ৩ রতি পরিমাণে বড়ী । প্রস্তুত ক্রিবে। ইহা দেবন করিলে চাতুর্থক জ্বর ও শীতজ্ব বিনষ্ট হয়। ইহা তক্রপানপূর্ব্বক মরিচচূর্ণ ও দ্বত সহযোগে এক বটিকা দেবন করিলে রোগীর বমন হইয়া শীঘ্রই জর দূরীভূত হইয়া থাকে:

বমন-প্রয়োগঃ।

कूमातीभूलकरेर्वकः शिरवः कारूकलन है। জুরং হন্তি বিষমন্ত বমনেন চিরন্তনমূ॥ বমন প্রয়োগ।

इ उक्रमातीत यूल २ इहेर जाला शितिमार्ग अर्गिश्विक के यह स कल मह-ষোগে দেবন করিলে, রোগীর বমন হইয়া চিরকালীন বিষমজ্বরও বিনষ্ট হয়।

ত্ত্যাহিকারি-রদঃ।---

রসেন গন্ধং শত্মক শিধি গ্রীবঞ্চ পাদিকমু।

গোজিহ্বরা জয়ন্তা। চ তণু লীরৈশ্চ ভাবরেৎ॥
প্রত্যেকং সপ্তসপ্তধা শুক্ষং গুঞাচতুষ্টয়ম্।
জরণেন মতেনাদ্যাৎ ত্যাহিকজ্বশান্তয়ে॥

ত্র্যাহিকারি রস।

(রস—পারা। গন্ধ—গন্ধক। শঙ্খ—শাখ। নিধিগ্রীব—তুঁতে। পাদিক—চতুর্থাংশ। গোজিহ্বা—গোজিয়ালতা। তণ্ডুলীয়—নটেশাক। জ্বরণ—জীরা।)

পারা, গন্ধক এবং শশ্বচূর্ণ; এই দ্রব্যত্তর প্রত্যেকে ২ ভোলা এবং তুঁতে

। অর্দ্ধভোলা একত্র মিশ্রিভ করিয়া গোমজিয়াশাক, নটেশাক এবং জ্বয়ন্তীশাক; এই দ্রব্যত্তয়ের স্বর্মে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিবে। এই ঔষধ জীরা
চূর্ণ ও গব্যন্থত সহযোগে প্রতি দিবস ৪ চারি রতি পরিমাণে দেবন করিলে
অতি সত্তর ত্র্যাহিকজ্বর বিনম্ভ হয়।

পঞ্চানন-রুসঃ।---

রদকং তালকং তুথং উপ্লণং রদগন্ধকম্।
তুল্যাংশং সুষবীভোৱৈর্মক্ষেদ্যামধুগ্রকম্।
কৃত্বা গোলং তাত্রপাত্রে নাধোবক্তেন রোধয়েৎ।
স্থালীং মুৎকর্পটে লিপ্তা পচেৎ চুল্ল্যাং দিনং ততঃ॥
তচ্ছীতং তাত্রভন্মাপি গৃন্ধীয়াৎ সুরদাজলৈঃ।
যামং মর্দ্যং ততো বল্লং তুলদীমরিচৈমু তম্॥
হন্তি সর্বং জ্বং ঘোরং বিষম্প ত্রিদোষজম্।
ধাত্রীকল্কেন বা যুক্তং দাহাখ্যং বিষমং জয়েৎ॥
পথ্যং ক্ষীরৌদনং দদ্যাৎ মুদাযুষ্থ দশর্করম্।
ধাতুম্থে চ জ্বে দেরং পিপ্পলীক্ষোদ্রদংযুত্ম্॥
অয়ং পঞ্চাননো নাম বিষমজ্বর নাশনঃ॥

পঞ্চান্দ রুদ।

রেসক—খর্পর। তালক—হরিতাল। টঙ্গণ—সোহাগা। স্থযবী—করলা-উচ্ছে। যামযুগ্থা—২ প্রহর। অধোবক্ত্র—নিম্নুখ। মুৎ—মাটি। কর্পট— ছিন্নবন্ত্র। স্থালী—হাঁড়ী। চুল্লী—উনন। স্থরসা—তুলসী। ধাত্রী—আম-লকী। কল্ক—আর্দ্র বস্তু জল সহ পেষণ করিয়া লইলে কল্ক বলা যায়। ক্ষীর—হ্রমা। শর্করা—চিনি। ক্ষোক্ত—মধু। পঞ্চানন—মহাদেব।)

খর্পর, ছরিভাল, তুঁতে, সোহাগার খৈ, পারা এবং গদ্ধক; এই ত্রা সমুদায় তুলা পরিমাণে এহণপূর্বক ২ ছই প্রহর পর্যান্ত করলার স্বর্গে মর্দন কবিবা, শিক্ষাকৃতি করতঃ একটা হাঁডির ভিডরে রাখিবে। এবং একটা ভাত্র- পাত্র থাকা সেই হাঁড়িটী চাকিবে। তদনন্তর হাঁড়িটী মুগার বন্ত্রখণ্ড দ্বারা লোপিয়া চুদ্ধীর উপরি রাখিয়া অগ্নিসংযোগে জ্বাল দিয়া একদিন পর্যান্ত পাক করিবে। তদনন্তর শীতল হইলে ঐ ঐষধ সকল এবং কিঞ্চিৎ তামভস্ম এইণপূর্বক এক প্রহর পর্যান্ত তুলসীপত্রের রসে মর্দ্দন করিবে। এই ঐষধ ৩ ইতনরতি পরিমাণে মরিচচ্র্ন ও তুলসীপত্রের রস সহযোগে সেবন করিলে সকলপ্রকার ঘোরতর বিষমজ্বর ও সাগ্নিপাতিকজ্বর বিনম্ট হয়। আমলকার কল্ক সহযোগে সেবন করিলে দাহসংযুক্ত বিষমজ্বর নিবারিত হয়। এবং পিপুলচ্র্ন ও মধুর সহিত সেবন করিলে ধাতুগতজ্বর দূরীভ্ত হয়। এই ঐযধ সেবন করিয়া ত্ল্পান্ন অথবা চিনির সহিত মুগের দাইলের যুষ পথা করিবে। ইহার নাম পঞ্চানন রস। ইহা সর্বজ্বর বিনাশক।

বিশ্বেশ্বর-রসঃ।—

দর্দং গন্ধকং স্তং তুল্যাংশং মর্দ্রেদ্দ্রবিঃ।
অশ্বর্থকৈন্ত্রহং পশ্চাদ্রবিঃ কানকমূলজৈঃ॥
নিদিয়িকা রুসৈঃ কাকমাচিকারাঃ রুসৈঃ পুনঃ।
দ্বিগুঞ্জাং বা ত্রিগুঞ্জাং বা গোক্ষীরেণ প্রদাপরেৎ॥
রাত্রিক্বরং নিহন্ত্যাশু নায়া বিশেষরো রসঃ।
বিশেষর রস।

(দরদ—হিস্কুল। স্থত—পারা। কানক—ধুতুরা। নিদিম্বিকা—রহতী।)
হিস্কুল, গদ্ধক ও পারা; এই তিনটী দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক
একত্রিত করিয়া অশ্বরক্ষের ছালের রসে, ধুতুরার মূলের রসে, রহতীর রসে
এবং কাকমানীর রসে ক্রমাগত ৩ তিনদিবস মর্দ্দন করিবে। রোগীর রোগের
অবস্থা বিবেচনাপূর্বক এই ঔষধ ২ ছইরতি বা ৩ তিনরতি পরিমাণে ছম্বের
সহিত সেবন করিতে দিবে। এই "বিশ্বেশ্বর রস" নামক ঔষধ রাত্রিগত জ্বর
বিনাশ করে।

রুহদ্বিমজ্বান্তক-লৌহঃ।—
শুদ্ধতং তথাগন্ধং কারয়েৎ কজ্ঞলীং শুভাং।
মতস্তং হেমতারং লৌহমল্রঞ্চ তাত্রকং॥
তালসত্তং বন্ধভন্ম মৌক্তিকং সপ্রবালকং।
স্বর্ণমান্ধিকঞ্চাপি চুর্ণয়ত্তা বিভাবয়েৎ॥
নিপ্ত তী নাগ্রন্নী চ কাকমাচী সপর্পত্তী।
ত্রিফলা কারবেল্লঞ্চ দশমূলী পুনর্নবা॥
শুড়ু চী রুষকশ্চাপি সভ্লকেশরাজ্ঞকঃ।

এত্বাঞ্চ রুসেনেব ভাবয়েৎ ত্রিদিনং পৃথক্॥

শুঞ্জামাত্রাং বটীং কুর্যাৎ শাস্ত্রবিৎ কুশলো ভিষক্ষ পিপ্পলীগুড়কেনৈব লিছেচ্চ বটিকাং শুভাং॥ জ্বমন্টবিধং ছন্তি নিরামং সামমেব বা। সপ্তধাত্ব্যক্তাপি নান্দোষোদ্ভবন্ত্রখা॥ সততাদি জ্বং ছন্তি সাধ্যাসাধ্যমথাপি বান অভিযাতাভিচারোখং জীর্ণজ্বং বিশেষতঃ॥

রহদ্বিষমজ্ববাস্তক লৌহ।

(মৃতস্থত—রদ্দিন্দ্র। হেম—স্বর্ণ। তার—রৌপ্য। তালদত্ত্ব — হরিতালভস্ম। নাগবলী — পর্ণলতা। পর্প টী — ক্ষেত্পাপ্ড়া। কারবেল্ল-করেলা।
গুড় চী — গুলঞ্চ। র্যক — বাদক। ভূল — ভীমরাজ। কেশরাজক — কেশুর্যা।
প্রথমতঃ বিশুদ্ধ পারা ও বিশুদ্ধ গন্ধক দমভাগে লইয়া কজ্জলী প্রস্তুত্ত করিবে; তৎপরে ঐ কজ্জলী, রদদিন্দ্র, স্বর্গ, রৌপ্যা, লৌহ, অভ্র, তাম,
হরিতালভস্ম, বঙ্গভস্ম, মুক্তা, প্রবাল এবং স্বর্গমান্দিক; এই দ্রব্য দমুদায়
সমান পরিমাণে এহণপূর্বক চুর্গ করিবে। তদনন্তর ঐ চুর্গিত বস্তু দকল একত্রিত করিয়া নিদিন্দা, পান, কাকমাচী, ক্ষেত্পাপ্ডা, আমূলা, হরীতকী,
বহেড়া, করলা, দশমূলী, পুনর্নবা, গুলঞ্চ, বাদক, ভূলরাজ্ব এবং কেন্ত্র্যা।
এই দকলের প্রত্যেকের রুদ্দে ৩ দিন পর্যান্ত ভাবনা দিয়া ১ একরতি প্রমাণ
বিটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই উম্বর্ধ পিপুলচুর্গ ও ইক্ষুগুড় সহযোগে লেহ্লপূর্বক দেবন করিলে অন্টবিধ নিরামজ্বর, সামজ্বর, সপ্তধাতুগাতজ্বর, নানাবিধ
দোষোস্ত ভল্লর, সভতাদি সাধ্যাসাধ্যজ্বর, অভিঘাতজ্বর এবং অভিচার নিমিত্তক্ত্বর বিনস্ট হইয়া থাকে।

চিন্তামণি-রসঃ।-

হাটকং রজতং তালং মুক্তা গন্ধকপারদৌ। ত্রিকটু কুনটী চৈব কন্তুরী চ পৃথক্ সমং॥ জলেন বটিকা কাগ্যা দ্বিগুঞ্জাফলমানতঃ। চিন্তামণিরসো ছেষ জ্বাফানাং নিক্তুনঃ॥

চিন্তামণি রস।

(হাটক—স্বর্ণ। রজত – রৌপ্য। তার্ল – হরিডাল। ত্রিকটু – শুগুী, পিপ্পলী ও মরিচ। কুনটী – মনঃশিলা।)

সোণা, রূপা, হরিভাল, মুক্তা, পারা, গন্ধক, ত্রিকঁটু, মনছাল ও কস্তুরী; এই সকল ত্রবা সমভাগে গ্রহণপূর্বক চুর্গ করিয়া জলের সহিত পেষণকরক্ ২ তুইরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে অ্ফবিধ জর সমলে বিনক্ত হইয়া থাকে। ত্রৈলোক্যচিন্তামনি-রসঃ।—
ভাগত্রং স্বর্ণভন্ম দ্বিভাগং তার্মভকং।
লৌহাৎ পঞ্চ প্রবালক্ষ মৌক্তিকন্ত্রয়সন্মিতং॥
ভন্মসূতং সপ্তকঞ্চ সর্বং মর্দ্দান্ত কন্যয়া।
ভারাপ্তকা বটী কার্য্যা ছাগীত্র্যানুপানতঃ॥
ক্ষয়ং হন্তি তথা কাসং গুলাক্ষাপি প্রমেহনুৎ।
জীর্ণজ্বরহরশ্চায়ং উন্মানস্ত নিক্তন্তনঃ॥
সর্বরোগহরশ্চাপি বারিলোক্ষনিবারণঃ॥
তৈলোক্যচিন্তামনিবারণঃ॥

(তার—রৌপ্য। ভস্মস্ত —রদিন্দ্র। কন্সা—ছতকুমারী। বারিদোষ— জলদোষ।).

স্বৰ্ণভস্ম ও ভিনভাগ, রৌপ্য ২ হুইভাগ, অভ্র ২ হুইভাগ, লৌহ ৫ পাঁচ ভাগ, প্রবাল ৫ পাঁচভাগ, মুক্তা ও ভিনভাগ এবং রসিন্দর ও সাতভাগ; এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ছতকুমারীর রস দ্বারা মর্দ্দনপূর্বক ছায়ায় শুষ্ক করিবে। তদনন্তর ২ হুইরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিয়া, তাহার এক একটী বটী ছাগীছ্র্মের সহিত সেবন করিলে ক্ষয়, কাস, গুল্ম, প্রমেহ, জীর্ণজ্বর এবং উন্মাদ প্রভৃতি সকলপ্রকার ব্যাধি বিনষ্ট হয়। এবং জলদোষপ্র নিবারিত হইয়া থাকে।

মহারাজ-বটী।--

রসগন্ধকমন্ত্রক প্রত্যেকং কর্ষসন্থিতং।
রদ্ধণারক বঙ্গণ লৌহ কর্যান্ধকং ক্ষিপেও॥
স্থান্থ ভাত্রং কপুরঞ্চ প্রত্যেকং কর্ষপানিকং।
শক্রাশনং বরী হৈব খেতসর্জ্জলবঙ্গকং॥
কোকিলাক্ষং বিদারী চ মুমলী শুকশিষিকং।
জাতিফলং তথা কোষং বলা নাগবলা তথা॥
শাষদ্বয়মিতং ভাগং ভালমূল্যা রসেন চ।
পিন্টা চ বটিকা কার্য্যা চতুগুঞ্জা প্রমাণতঃ॥
মধুনা ভক্ষয়েৎ প্রাতর্বিষমন্ধরশান্তয়ে।
ধাতৃস্থাংশ্চ জ্বান্ সর্বান্ হন্যাদেব ন সংশয়ঃ॥
বাত্রিকং পৈত্তিকঞ্চাপি শ্লৈষ্মিকং সান্ধিপাতিকং।
জ্বং মানাবিধং হন্তি কাসং খাসং ক্ষয়ন্ত্রপা॥
বালপ্রিকরং নিভাং কামিনীং রম্মেৎ সদা।

ন চ শুক্রক্ষয়ং যাতি ন বলং হ্রাসতাং ব্রেজেৎ ॥ উর্ন্ধাং শ্লেয়জং হৈন্তি সন্নিপাতং স্থারুণং । কামলাং পাণ্ডুরোগঞ্চ প্রমেহং রক্তপিভকং ॥ মহারাজ-বটী খ্যাতা রাজ্যোগ্যা চ সর্বদা ॥

মহারাজ বটী।

(त्रम-शाता। कर्च-२ (छाना। त्रक्षमात्रक-विखाफ्क। कर्षशामिक-कक कर्षत्र । व्यर्शः ॥ व्यक्षं छाना। मकामन-मिक्षि। वती-मछगूनी। (यं छमर्क्क-(यं छपूना। काकिनाक्ष-छान माश्ना। विमाती- क्षिक्षपा छ। मूसनी-छान मूनि । मूकिमिकिक-धान क्ष्मी। वना-(वर्ष्णा। नागवना-(गातक्ष काकुला।)

পারা, গন্ধক এবং অভ্র প্রত্যেকে ২ তোলা; রদ্ধদারকবীজ, বন্ধ এবং লৌহ প্রত্যৈকে ২ তোলা; দোণা, তামা ও কপূ র প্রত্যেকে ॥ অর্ধতোলা; দিদ্ধি, শতাবরী, শ্বেভধুনা, লবন্ধ, কোকিলাক্ষ, ভূমিকুত্মাণ্ড, তালমূলী, শুক-শিষী, জাতিফল, জয়িত্রী, বেড়েলা এবং গোরক্ষচাকুলে প্রত্যেকে । দিকি তোলা; এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া তালমূলীর রুমে মর্দ্দনপূর্বক ৪ চারি রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই ঔষধ প্রাত্তংকালে মধুর মহিত সেবন করিলে বিষমজ্বর নিবারিত হয়। এবং এই ঔষধ দ্বারা ধাতুগত সর্ব্ববিধ জ্বর, বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, ক্লৈত্মিকজ্বর, নানাবিধ সান্ধিপাতিকজ্বর, শ্বাস, কাস ও ক্ষয়রোগ বিন্ত্র হয়। ইহাতে শরীরের বল ও পুটি বর্দ্ধিত হয় এবং প্রতিদিবস স্ত্রী সহ মেথুনের শক্তি বর্দ্ধিত হয়। কদাপি শুক্র ক্ষয়প্রাপ্ত হয় না, উদ্ধান্ধিপাত এবং শ্লেত্মক্তর স্থাকণ ব্যাধিসকল, কামলা, পাণ্ডু, প্রমেহ ও রক্তপিত্ত প্রভৃতি রোগ সমুদায় বিন্ত্র হয়। ইহার নাম মহারাজবিটী। এমন কি এই ঔষধ রাজার সেবনযোগ্য।

চন্দনাদি লৌহঃ।—
রক্তচন্দনহীবের পাঠোশীর কণা শিবা।
নাগরোৎপল ধাতীভিস্থিমদেন সমন্বিতম্॥
লৌহং নিহন্তি বিবিধান্ সমৃস্তান্ বিষমজ্বান্॥

চন্দনাদি লৌহ।
(হ্রীবের – বালা। পাঠা – আকান্দীলতা। উশীর – বীরণ (বেণার মূল)।
কণা – পিপুল। শিবা – হরীতকী। নাগর – শুঠী। উৎপল – নীলস্থ দি,
অভাবে কুড়। ধাত্রী – আম্লা। ত্রিমদ – বিড়ন্ধ, চিরতা ও মুথা।)

রক্তচন্দন, বালা, আরাদি, বেণারমূল, পিপুল, হরীতকী, শুগুী, নীলোৎ-পল, আম্লা, বিড়ঙ্গ, চিতা ও মুথা; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভাগ এবং লৌহ ১২ ভাগ একত্র মিশ্রণপূর্বক জলসহ মর্দ্দন করিয়া ৩।৪ রতি প্রমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ রোগীর অবস্থাস্থসারে সেবন করিতে দিবে।

অর্দ্ধনারীশ্বরো-রসঃ।—

শ্রমা শুদ্ধো রদগদ্ধো বিষং প্রাছ্থ তৎসমং।
তৎসমং জৈপালং গ্রাছং মরিচঞ্চ চতুগু পম্।
ক্রিফলারা রদৈমন্দ্রং ভাবনা পঞ্চধা তথা।
জমীরাণাং দ্রেবৈর্নস্থমেকসিন্নাদিকাপুটে।
শরীরার্দ্ধগতং ঘোরং জ্বরং হন্তি ন সংশয়ঃ।
অর্দ্ধনারীশ্বরো নাম রসঃ শভুপ্রকীর্ত্তিতঃ।
অর্দ্ধনারীশ্বরদ।

পার। ১ একভাগ, গদ্ধক ১ ভাগ, বিষ ২ ছইভাগ, জরপাল ২ ছইভাগ এবং মরিচ ৪ চারিভাগ। এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া ত্রিফলার রসে মর্দ্দন-পূর্বাক ৫ পাঁচবার ভাবনা দিবে। এই ত্রম্ব জন্বীরের রসের সহিত এক নামিকাজে নস্থী গ্রহণ করিলে, অর্দ্ধশরীরগত ঘোরতর জ্বর বিন্ধী হইয়া খাকে। স্বরং শস্তু (মহাদেব) এই ত্রম্ব আবিফার করিয়াছেন।

জ্বরারি-অভ্রম্।---

জলং তামং রসং গন্ধং বিষক্তিব সমং সমং।
দ্বিগুণং ধূর্ত্তবীজক ব্যোবং পক্তপং মতং॥
আদ্রু কিসা রসেনৈব বটী কার্যা বিশুঞ্জিকা।
অনুপানং প্রয়োক্তব্যং ষথাদোষানুসারতঃ॥
জলুং জ্বরারি নামেদং সর্বজ্ব বিনাশনং।
বাতিকং পৈত্তিককাপি শ্লৈঘ্রিকং সান্নিপাতিকং॥
বিষমাখ্যান্ জ্বরান্ সর্বান্ ধাতৃস্থান্ বিষমজ্বরান্।
প্লীহানং যক্ততং গুলুম্থ্যমাংসং সশোধকং।
হিক্কাং শ্বাসক কাসক মন্দানলমরোচকং।
নাশ্যেন্নাত্ত্র সন্দৈহো রক্ষমিক্রাশনির্ব্ধা॥

জ্বারি-অভ।

(রস-পারা। গন্ধ-গন্ধক। ধূর্ত্তবীজ-ধুক্ত রবীজ। ব্যোষ-ত্রিকটু)।
অন্ত্র, তাত্র, পারদ, গন্ধক ও বিষ; এই দকল দ্রব্যের প্রত্যেকে ১ এক
ভাগ; ধুতুরাবীজ ২ ছইভাগ ও ত্রিকটু ৫ পাঁচভাগ; এই দমস্ত দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া আদার রদে মর্দ্দনপূর্বক ছইরতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিবে। রোগীর দোষাহ্লারে অহুপান বিশেষে এই প্রমধ দেবন করিতে দিবে। ইহার নাম জ্বারি অভ। ইহা দকল প্রকার জ্বর বিনাশ করে; যেমন ইশ্র দেবের বজ্ল, দমুহ রক্ষকে বিনষ্ট করে, তজ্প এই জ্বারি অভ্ন বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, শ্লৈষ্মিকজ্বর, সাদ্ধিপাতিকজ্বর, ধাতুগত সকল প্রকার বিষমজ্বর, প্লীহা, যকৃৎ, গুলা, অগ্রমাস, শোথ, হিকা, শ্বাস, কাস, মন্দায়ি ও অরোচক প্রভৃতি রোগসমূহ বিনাশ করিয়া থাকে।

সন্নিপাতান্তকো-রসঃ।—

শুদ্ধস্তঃ সমো গদ্ধঃ দরদং শুদ্ধ খর্পরং।
রস্স্য দ্বিগুণো দেয়ে মৃততান্ত্রাম্পরেতসো॥
ভূপরাক্রিবৈভাব্যং প্রত্যহং ভাবনা পৃথক্।
দাতব্যং তচ্চতৃগু প্রমান্ত্রে কন্য রসৈঃ সহ॥
সদ্ধিপাতারকবন।

পারদ, গন্ধক, হিন্ধুল ও খর্পর; এই দ্রুব্য চতুষ্ট্রের প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং পারদের দ্বিগুণ মারিতভাম ও অস্ত্রেবতস লইরা, একত্রিত করণা-নন্তর, ভূজরাজের রদে পৃথক্রপে ৭ সাতদিবস ভাবনা দিবে। এই ঔষধ চারি-রতি পরিমাণে আদার রদের সহিত দেবন করিলে সন্মিপাতরোণ বিন্ফ হয়।

> স্ত্রিপাতসূর্যাঃ।— त्रामन शब्द विकाश विभक्ता, তৎপাদভাগং রবিতার হেম। ভস্মীকৃতং যোজয়েমর্দ্দরিতা দিনত্রং বহিরদেন ঘর্মো॥ বিষঞ্চ দত্তাৰ্দ্ধকলা প্ৰমাণং, মৎস্যাদি-পিতৈঃ পরিভাবয়েচ্চ। বল্লদ্বয়ঞ্চান্য দদীত বহি-কটুত্রহাদ্রে দ্রব সংপ্রযুক্তম ॥ তৈলেন চাভাঞ্জনমেব কুর্যাৎ, यानः जलनाशि ह नीज्लन । याव खुरव मः श्मरं गी जमग्र, মূত্রং পুরীষঞ্চ শরীরকস্পঃ॥ পথ্যং যদীহা পরিজায়তে২স্য, মরিচখণ্ডং দধিভক্তকঞ্চ। স্বন্দাং দদীতাদ্র ক মৎস্যাদাকং, দিনান্তরং স্নানবিধিঞ্চ কুর্য্যাৎ।।

তৃতীয়-অধায়ঃ।

সন্নিপাতস্থ্য।

(গন্ধ – গন্ধক। রবি – ভাজ। ভার – রৌপ্য। ছেম – স্বর্ণ। বহ্নিরস – চিভারস্বরম। ঘর্ম – স্ব্র্যাভপ। বল্লদ্ম – ৪রভি। পুরীয – বিষ্ঠা)।

একভাগ পারা ও ছুইভাগ গন্ধক একত্রিত করিয়া, উত্তমরপে মর্দন করতঃ কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তংপবে উহার পারা ও গন্ধক; এই উভয়ের চতুর্পাংশ সমভাগে ভাত্রভন্ম, রৌপ্য ও সোণা মিশ্রিত করিয়া চিতার রমে উত্তমপ্রকারে তিন দিবস মর্দ্ধিত করিয়া রৌদ্রে শুক্ষ করিবে। তদনন্তর ঐ সমস্ত ঔষধের অর্দ্ধপরিমাণে বিষ তৎমহ মিশ্রণ পূর্ব্ধক, পূর্ব্ধবৎ মৎস্থ আদি পঞ্চ প্রকার জন্তর পিত্রদারা ভাবনা দিয়া ৪ চারিরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার একএক বড়ী চিতার ক্রাথ ও ত্রিকটু চূর্ণ সহযোগে রোগীকে সেবন করাইবে। এই ঔষধ সেবন করাইয়া রোগীর সর্বশরীরে তৈল মর্দ্দন করতঃ শীতল জলৈ তাহাকে স্থান করাইবে; এক রোগীর ছুঃসহ শীত, মলসূত্র নিঃসরণ ও শরীরে সাভিশয় কম্প উপস্থিত না হওয়া পর্যান্ত ভাহাকে শীতল জলে রাখিবে। রোগীর ক্র্বার উদ্রেক হইলে মরিচ, চিনি, দির্ধি, আয়, আদা, মৎস্য ও শাক অলপ পরিমাণে ভোজন করিতে দিবে। এবং এক এক দিন অন্তর রোগীকে স্লান করিতে দিবে।

সিংহনাদ-রসঃ।--

লোহপাত্রগতে গন্ধে দ্রাবিতে তত্ত্ব নিংক্ষিপেৎ।
শুদ্ধস্তং সমং চাত্রং ভাগীদ্রাবং তয়াঃ সমং॥
নিগু গ্রাঃ পল্লবোপঞ্চ তুলাং তুলাং প্রদাপয়েৎ।
পচেম্বিমিনা তাবদ্যাবৎ শুক্ষং দ্রবং দ্বয়ং॥
বিষপাদমূতং পোহয়ং সিংহনাদরসোভমঃ।
শুপ্রামাত্রঃ প্রদাতবাঃ সন্নিপাত-জ্রান্তকঃ॥
অনুপানং পিবেদ্যাম্রীকাপং পুক্রচ্ণিতম্॥

मिश्इनात तम ।

গন্ধক লৌহপাত্তে করিয়া মৃত্র অগ্নি সন্তাপে গলাইবে; পরে সেই দ্রবীভূত গন্ধকে উহার সমান পরিমাণে পারদ ও অভ্ন এবং উহার (সেই গন্ধকৈর) দ্বিগুণ মাত্রায়, সমভাগ নিসিন্দা পাতার রস ও বামনহাটীর রস
নিক্ষেপ করিয়া, যভক্ষণ পর্যন্ত জলীয়ভাগ শুষ্ক না হইবে, ভভক্ষণ পর্যান্ত
মৃত্র অগ্নি সন্তাপে পাক করিবে। তদনন্তর উক্ত পাকর্বত ঔষধ প্রহণপূর্বক,
ভৎসহ পূর্ব প্রদত্ত গন্ধকের চতুর্ধাংশ র পরিমাণে বিষ মিশ্রণ পূর্বক উত্তমক্রপে মর্দ্দিত করিয়া, ১ একরতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই সিংক্রমান্ত্র

সহ সেবন করিলে, সত্ত্বর সৃদ্ধিপাতরোগ বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ সন্নিপা ভজ্জ-জ্বের একটী মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

দৌভাগ্য-বটী।—

দৌভাগ্যায়তজীরপঞ্চলবন ব্যোষাভ্য়াক্ষামলানিশ্চন্দ্রাভ্রক গুদ্ধগন্ধক রসানেকীকতান্ ভাবয়েৎ।
নিশু গ্রীযুগ ভূঙ্গরাজক র্যাপামার্গপত্রোল্লসংপ্রত্যেক স্বরসেন সিদ্ধগুড়িকা হন্তি ত্রিলোযোদ্যম্ ॥
যেষাং শীতমতীবদেহমখিলং স্বেদদ্রবার্দ্রীকৃতং
নিদ্রা ঘোরতরা সমস্তকরণব্যামোহমুধ্বং মনঃ।
শূলশাসবলাসকাসসহিতং মূর্জ্যক্রিড্ড় জুরং
তেষাং বৈ পরিহৃত্য মূর্যুবদনাৎ প্রত্যানয়েজ্রীবনম্ ॥
সৌভাগ্রেটী।

(সৌভাগ্য — সোহাগা। অমৃত — বিষ। পঞ্চলবণ — সৈদ্ধবলবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, উদ্ভিদলবণ ও সচললবণ। ব্যোষ— ত্রিকটু। অভয়া— হরীতকী। অক্ষ—বহেড়া। আমল — আমলকী। চন্দ্র — কপূর। রষ—বাসক। যুগভূক্ষ-রাজ—ভূক্ষরাজ ও কেশরাজ। বলাস—কফ)।

দোহাগা, বিষ, জীরা, পঞ্চলবণ, ত্রিকটু, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, কপূর, অল্ল, গন্ধক ও পারা; এই দ্রবা সম্দায় তুল্য পরিমাণে গ্রহণপূর্বক নিসিন্দা, ভূলরাজ, কেন্ত্র্যা, বাদক ও অপামার্গ; ইহাদের প্রত্যেকের রুদে পৃথক্ পৃথক্ তাবনা দিরা ২ ফুইরতি পরিমাণে বড়ী প্রস্তুত করিবে। যাহাদের শরীর শীতল ও ঘর্মাক্ত, যাহারা ঘোরতর নিদ্রোয় অভিভৃত, যাহাদের, ইন্দ্রিয় নকল বিকল হইয়াছে এবং যাহাদিগের চিত্ত মুগ্ধ হইয়াছে; তাহা-দিগকে এই ঔষধ দেবন করাইলে শূল, খাস, শ্লেষ্মা, কাস, মৃচ্ছা, ভাকচি ও জর বিনাশ করিয়া মৃত্যুমুখ হইতে রোগীর জীবন প্রত্যানয়ন করে।

কস্তরীভৈরবঃ।—

হিন্দুলক বিষং টঙ্কং জাভীকোষফলন্তথা।
মরিচং পিপেলীচৈব কন্তুত্তীচ সমং সমং॥
রক্তিবয়ং ততঃ খাদেৎ সন্নিপাতে সুদারুণে॥
কন্তুরীভারব।

হিন্দুল, বিষ, সোহাগার খৈ, জারিত্রী, জাতিফল, মরিচ, পিপুলী ও কন্তুরী; এই দ্রব্য সকল সমভাগে গ্রহণপূর্বক খলে উত্তমরূপে পেষণ ক্রিকে ওবং এই উষধ ২ চুইরতি পরিমাণে বটিকা করিয়া, রোগীকে সেবন

ব্রহৎকন্তু রীভৈরবঃ।—

মুগমন শশিস্ব্যা ধাতকী শুকশিষীকনক রজত মুক্তা বিক্রম লৌহপাঠাঃ।
ক্রিমিরিপু ঘনবিশাতোয়তালাভ্রধাতীরবিদলরনপিঞঃ কন্তুরীতিরবোহয়ম্॥
কন্তুরীতিরবং খ্যাতঃ সর্বস্থের বিনাশনঃ।
আর্দ্র ক্যা রসঃ পেরো বিষমজ্বরুক্তনঃ॥
দ্বন্দ্র ভৌতিকান্ বাপি জ্বান্ কামাদিসম্ভবান্।
অভিচারক্তাংকৈচব তথা শুক্রক্তান্ পুনঃ॥
কিহন্যান্তক্ষণাদেব ডাকিন্যাদিযুতাংক্ট হি॥

রহৎ কন্ত রাভিরব।

(মৃগমদ—কন্ত রা। শ্লী—কণুর। স্থা—তান্ত। ধাতকী—ধাইফুল।
শূকশিলী—আলকুশী। কণক—স্বর্ণ। রজত—রোপা। বিদ্রুদ—প্রবাল।
পাঠা—আক্লী। কিনিরিপু—বিড়ন্ত। ঘন—মুখা। বিশ্বা—শুঠী।
ভোর—বালা। তাল –হরিতাল। ধাত্রী—আম্লা। রবিদল—আকন্দের
পাতা)।

্মগনাভি, কপূর, তাম ধাইকুল, শুকশিদ্বী, স্বর্ণ, রৌপ্য, মুক্তা, প্রবাল, লৌহ, আরাদি, বিভুল, মুখা, শুঠ, বালা, হরিতাল, অত্র ও আমলকী; এই সমস্ত বস্তু প্রত্যেকে সমানভাগে এহণপূর্মক আকন্দ পাতার রসে মর্দ্দন করিয়া, শুদ্ধ করভঃ ২০ রতি পরিমাণে বটিলা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটী আদার রসের সহিত সেবন করিলে, সর্ব্যপ্রকার জ্বর, বিষম্ভর, দ্বন্দ্বজ্জর, ভৌত্তিক্জর, কামাদি সম্ভূত্জর, অভিনার জন্ম জ্বর, শুক্রস্থ্জর এবং ডাকিনী প্রভৃতি ভৃত্যোনির আগ্রয়জনিত জর বিনষ্ট হয়।

বেতাল রসং।—

রসং গন্ধং বিষক্তিব মরিচালং সমাংশিকং।
শিলায়াং মর্দ্দরেন্ডাবদ্যাবজ্ঞানেত কজ্ঞলং॥
শুঞ্জামাত্রং প্রয়োক্তবাং হরেদ্ধাদশসংজ্ঞকং।
সাধ্যাসাধ্যং নিহন্তান্ত সন্নিপাতং সুদারুলং॥
দন্তপংক্তিদ্ ঢ়া যস্য লোচনে ভ্রান্ততারকে।
চলিতে চেন্দ্রিয়ামে বেতালং বিনিযোজ্যেৎ॥
মানেযু লিপ্তদেহেযু মোহগ্রন্তেযু দেহিয়ু।
স্লাক্ষ্মিনি বেলালা হম্দতঃ নিবারকঃ॥

বেভালর্ম।

(जाल-इतिडाल। थाम-मगुइ)।

পারা, গন্ধক, বিষ, মরিচ ও হরিতাল : এই সকল দ্রবা তুলা পরিমাণে লইরা শিলার মর্দ্দন করিতে করিতে যথন কজ্জলী দৃশ হইবে ; তখন ঐ ঔষধ সরতি পরিলাণে রোগীকে দেবন করাইবে। এই ঔষধদ্বারা সাধা, অসাধ্য দ্বাদশ প্রকার দোরতর সন্নিপাত্ত্বর বিনষ্ট হইয়া থাকে। যে রোগীর দহুসমূহ জ্বজ্জন্ত দৃঢ়রূপে সংলগ্ধ হইয়া (আঁটিরা যায়, আদে খোলা যারনা অর্থাৎ দাঁতকপাটী লাগে) চক্ষুদ্বরজ্ঞান্ত (ঘূর্নিত বং) হয়, ইন্দ্রিরচয় বিকল হইয়া পড়ে এবং যে ব্যক্তি লান, লিপ্তবেহ ও মোহগ্রন্ত হয়, এমত রোগীকেই এই ঔষধ সেবন করাইলে সমন্দিক ফল দশিত হয়। এমন কি এই বেতালরস স্বমৃত্তকে পর্যান্ত করিরা থাকে।

স্টিকাভরণোরদঃ।—
রসগন্ধক নাগঞ্চ বিষং স্থাবর জঙ্গমং।
মাৎস্য বারাহ মায়ূর ছাগপিত্তির্বিভাবরেৎ॥
স্টিকাভরণো নাম ভৈরবেণ স্থভাষিতঃ।
স্থাটিকাথোণ দাতব্যঃ সন্নিপাতনিবর্হণঃ॥

স্থচিকাভরণ রম।

(রস-পারা। নাগ-সীসা। স্থাবরবিষ-মিঠাবিষ। জক্মবিষ-কৃষ্ণ-সর্পবিষ। স্থাচিকা-স্ফু)।

পারা, গন্ধক, সীদ, স্থাবরবিব ও জঙ্গদমিষ, এই দ্রব্য দমুদায় দমানভাগে গ্রহণপূর্বক পৃথক্ পৃথক্ রূপে মহন্ত্য, বরাহ, ময়ুর ও ছাগল; এই জন্ত চতুইয়ের পিত্তে ভাবনা দিবে। স্থাচকার অঞ্যভাগ দিয়া অর্থাৎ অনুপরিমাণে প্রয়োগ করিতে হয় বলিয়া, এই ঔষধ্বের নাম স্থাচকাভরণ রদ। স্বয়ং ভৈরব (মহাদেব) কর্ত্বক এই ঔষধ কথিত হইয়াছে। ইহা দ্বারা দকল-প্রকার দারিপাতিক রোগ বিশ্বস্ত হইয়া থাকে। এই ঔষধ ব্যতীত দোরতর দরিপাতাশ্রিত রোগীর জীবন রক্ষা করা ফুঃদাধ্য। এই "স্থাচিকাভরণ" নামক ঔষধানী যে দরিপাত ক্ষেত্রীয় রোগীর পক্ষে অব্যর্থ, তাহা বিজ্ঞ চিকিৎসক্ষাণ বছবার অস্থত্বক করিয়া থাকেন। কিন্তু এই স্থাচিকাভরণরদ প্রয়োগ দছক্ষে চিকিৎসক্ষের অত্যব্ধ করিয়া থাকেন। কিন্তু এই স্থাকাভরণরদ প্রয়োগ দছক্ষে চিকিৎসক্ষের অত্যব্ধ সাবধান হওয়া কর্ত্ব্য; যেন্ত্রে এই থাগে বিষের ভাগই অধিক পরিমাণে প্রযুক্ত হইয়া থাকে, স্থতরাং রোগীর প্রতি মাত্রার একট্ব অর্থাৎ বিন্দুমাত্র বেশী হইলে, রোগীর জীবন নই হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।

রহদ্বাড়বানলো-রসঃ।— স্তকং গদ্ধককৈব হরিতালং মনঃশিলা। অভকং বৎসমাভক দারুজঙ্গমজং বিষং॥

्रकीत-मधानः।

জৈপালাৎ সাদ্ধিশতকং সর্বং. সঞ্ব্য মদিয়েও।
মাৎস্য মাহিষ মায়ুর ছাগপিতৈরিভাবয়েও॥
বটিকাং শীততোয়েন কুর্যাৎ গুঞ্জাপ্রমানতঃ।
বড়বানলো নামায়ং নারিকেল জলেন বৈ॥
ভক্ষেৎ সন্নিপাতার্ভো মৃত্যুন্তস্যামুখো ভবেও॥

রুছ্দ্বাড়বানলরস।

পারা, গন্ধক, হরিতাল, মনঃশিলা, অভ্র, বৎসনাত (কাঠবিষ), দাকমুষ
ও জল্পবিষ; এই দ্রব্য সমুদার প্রত্যেকে হ তুইতোলা এবং জয়বীজ ১৫০
দেওঁশত গ্রহণপূর্বক একত্র চূর্য করতঃ মৎস্থা, মহিষ, ময়ুর ও ছাগ; এই জস্ত
চারিসীর পিত্ত দ্বারা পৃথক্ পৃথক্ রূপে ভাবনা দিয়া, ১ এক রভি পরিমাণে
বটিকা প্রস্তুত করিবে। সন্নিপাত পীড়িত রোগীকে শীতল জল অথবা নারিকেলের (ডাবের) জল সহযোগে এই প্রয়ধ সেবন করাইলে, তাহার মৃত্যু
পলায়ন করে। ইহাও সন্নিপাত ক্ষেত্রের এক মহৌষধ বলিয়া জানিবে।
ভারতর অবস্থায় ইহা সেবনীয়।

প্রাণেশরো-রসঃ ।---

শুদ্ধত্বতং তথা গদ্ধং স্তার্ক্ধং বিষসংযুতং।
সমস্তং মর্দ্দরেজালমূলনীরৈস্ত্র্যহং বুধঃ॥
পূর্য়েৎ কুপিকান্ত্রেচ সন্ধিরোধ্য বিশোষয়েৎ।
সপ্ততিম্ব তিকা বস্ত্রৈ বেইরিত্বা তু শোধয়েৎ॥
পূটেৎ কুদ্বীপ্রমাণেন স্বাঙ্গণীতং সমুদ্ধরেৎ।
গৃহীত্বা কুপিকায়ণ্ট মর্দ্দরেচ্চ দিনন্ততঃ॥
অজাজী জীরকং হিন্দু সর্জ্জিকাটপ্রণৈযুতিং।
শুগ্গুলুঃ পর্কলবণং যবক্ষারো যমানিকা॥
মুরিচং পিপ্পলীতৈব প্রত্যেকক সমাংশতঃ।
এষাং কষায়েণ পুনর্ভাবয়েৎ সপ্তধাতপে॥
নাগবল্লীদলযুতং পর্কগ্রপ্তং রসেশ্রং।
দদ্যান্নবন্ধরে তীত্রে কোক্ষং বারি পিবেদমু॥
প্রাণেশ্রা রসোনান্না সন্নিপাতা প্রকোপজিৎ।
শীতজ্বরে দাহপূর্বে গুল্যে শুলে ত্রিদোষজে॥
বাঞ্চিতং ভোজনং দদ্যাৎ কুর্য্যাচ্চন্দনলেপনং।

তাবদেব প্রশমনো নানাতিসারনাশনঃ॥ ভবেচ্চ নাত্র সন্দেহঃ স্বাস্থ্যঞ্চ লভতে নরঃ॥ প্রাণেঃররস।

(কুপিকা -- কাচকুপিকা। অজাজী -- কৃষ্ণজীরা। সর্জ্জিকা -- সাচিক্ষার (माक्कीयां है) । यवकात-(माता । नागवजी- भर्नला । खोच्हा-बाद्रागा) । পারা ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ এবং বিঘ অর্ধভাগ , একত্র মিশ্রিত করিয়া ভালমূলীর রুমে মর্দ্দন করিবে। তৎপরে একটা কাচকুপিকার মধ্যে পুরিয়া ঐ কুপী মৃত্তিকালিপ্ত বস্ত্র দ্বার। ৭ সপ্তবার বেষ্টন করিবে: এবং কুন্তীপাক-দ্বারা পুটপাক করিয়া নামাইয়া, শীতল হইলে ঔষধ গ্রহণ করিবে। তদনন্তর এই ঔষধ খলে করিয়া মর্দিত করতঃ, পরে এক দিন পর্যান্ত কুঞ্জীরা, জীরা, হিঙ্জ, সাচিক্ষার, মোছাগার খৈ, গুগগুল, দৈশ্ববলবণ, দৌবর্চললবণ, विवृत्तवन, मामूजनवन, छिछितलवन, यवकात, यमानी, मतिव अ शिश्वानी; গ্রহণপুর্গ্বক ইহাদের কাথে ৭ মাতবার ৭ সাতবার রৌক্রে শুষ্ক করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৫ পাঁচরতি পরিমাণে পানের রুদের সৃহিত দেবনীয়। তীব্রতর নবজুরে ইছা দেবন কবিয়া পশ্চাৎ উষ্ণ জল পান করিতে হয়। ইছার নাম প্রাণেশ্বর রস। এই প্রাণেশ্বর রস সন্ধিপাত প্রকোপ জয় করে। শীতজ্ব, দাহজ্বর, গুল্ম, শুল এবং ত্রিদোষ-বিকারেও এই ঔষধ প্রয়োক্তব্য। এই ঔষধ দেবন করাইয়া রোগীকে ইচ্ছাত্র-यात्री श्रेश अमान कतित्व । এवः छाष्टात मर्खाक ठन्मन द्वाता अलिश करित्व । এই প্রাণেশ্বর রদ দেবনে নানাবিধ অতীদার বিনষ্ট হয় এবং রোগী নিশ্চয়ই স্বাস্থালাভ করিয়া থাকে।

বৈলোক্যস্থলরো-রসঃ।—
রসগন্ধকরোম্থা প্রত্যেকং কজ্ঞলীক্তা।
শক্রক সুষ্বীকৈব ধুস্তু রকেশরাজকং॥
দেবদানী জয়ন্তীচ তথা মণ্ডু কপ্রিকা।
এষাং পত্ররসৈঃ শানিঃ শিলায়াং হল্লয়েৎ পুনঃ॥
শোষ্যিত্বা বটী কার্যা। ত্রনেকা রাজিকোপমা।
ভিদোষজং জ্বং হন্তি তথা প্রবলকোষ্ঠকং॥
তপ্রেত্ব মারিকেল্যা জ্লং দেয়ং প্রযত্তঃ।
তদা বটী ন কার্যা। তু, তদা খাদ্যাত্ রক্তিকা॥
তিলোক্যস্থলরক।।
তিলোক্যস্থলরক।।

শেক — কুটজ। স্থবী — তালমূলী। দেবদানী — ঘোষাফল। রাজিকা — শ্বেত দর্ষণ। মণ্ডু কপর্ণিক। — খুলকুড়ি)। া নির্দিতোলা পারা এবং । বিকিতোলা গন্ধক একত্র কর্ম্বান্তর মর্দিত করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। পরে দেই কজ্জলী কুটজ, তালমূলী, ধুস্তুর, কেন্থর্যা, ঘোষাফল, জয়ন্তী ও পুলকুড়ি, ইহাদের প্রত্যেকের পত্রের রস। অর্ধতোলা পরিমাণে লইয়া, তদ্বারা মর্দনপূর্বক রৌদ্রে শুষ্ক করিয়া, রাই সর্ধপঞ্জমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাদ্বারা প্রবলতর সামিপাতিক জর দ্রীভৃত হয়। রোগীর শরীরে অধিক তাপ থাকিলে, ইহা সেবন করাইয়া, তাহাকে নারিকেলের জল পান করিতে দিবে। কিন্তু তাপকালীন ঔযথের পরিমাণ সর্মপ আকার না করিয়া, ১ রতি প্রমাণে রোগীকে সেবন করিতে দিবে। এই ঔযথের নাম ত্রৈলোক্য স্কলর রস। ইহা সন্মিপাতজ্বর নিবারণ করিয়া থাকে।

জ্বান্ধ শ বসঃ।—

খণ্ডিতং হারিণং শৃঙ্গং জ্বালামুখ্যা রসৈঃ সমস্।
কদ্মা ভাণ্ডে পচেচ্চু ল্যাং যামযুগ্যন্ততো নয়েও॥
অফাংশন্ত্রিকটুন্দ্যান্নিক্ষাত্রস্ত ভক্ষেও।
নাগবলীরসৈঃ দার্দ্ধং বাতপিত্রজ্বাপহম্॥
-অয়ং জ্বাঙ্গু শোনাম রসঃ সর্বজ্বাপহঃ॥

জ্বাকুশ রদ।

(জ্বালাসুখী — স্থ্যাবর্ত্ত (হুড়হুড়ে)। ত্রিকটু — শুঁঠ, পিপুল, মরিচ। নিষ্ক — ।• অর্দ্ধভোলা। নাগবলী — ভামুললতা)।

খণ্ডিত হরিণ শৃদ্ধ ও জ্বালামুখীর রদ দমভাগে গ্রহণপূর্বক একটি ভাও মধ্যে পূরিয়া ২ হইপ্রহর পর্য্যন্ত অগ্নিদংযোগে জ্বাল দিবে। তদনন্তর উত্তোলন করিয়া, তৎদহ তাহার অফ্টাংশ (১ ভাগ) ত্রিকটু চূর্ণ মিপ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ ॥ ০ অর্দ্ধতোলা মাত্রায় পানের রদের দহিত দেবন করিলে, বাতপিত্তজ্ব বিনষ্ট হয়।

জ্বারি-রসঃ।---

পারদং রদকং তালং তুথং টঙ্গণ গন্ধকং।

দর্বদেতৎ সমং শুদ্ধং কারবেল্যা রদৈর্দিনং॥
মর্দ্দরেল্লেপয়েত্তেন তাত্মপাত্রোদরন্তিষক্।
অঙ্গুল্যর্দ্ধপ্রমাণেন ততো রুদ্ধা চ তন্মুখং॥
পচেতং বালুকাষন্ত্রে কিপ্তা ধান্যানি তন্মুখে।
যণা স্ফুটন্তি ধান্যানি তদা দিদ্ধং বিনির্দিশেৎ॥
ততো নয়েৎ স্বাঙ্গশীতং তাত্মপাত্রোদরং ভিষক্।
রসং ক্রারি নামানং বিচুর্ণ্য মরিটেঃ সমম্॥

মাইবকং পূর্ণগ্রেম ভক্ষয়েরাশয়েজ্বরান্। তিনিবৈষিমং তীব্রমেতদ্বিতিচতুর্থকং॥ জ্বারিরদ।

(तमक—थर्शतः। ভाল—हतिजाल। कातरवलाः!—कत्रला। ভिषक— रेवमाः)।

পারদ, খর্পর, হরিভাল, তুঁতে, সোহাগা এবং গন্ধক; এই দকল দ্রব্য সমভাগে এইণপূর্বক একদিবস করলার রসে মর্দ্দন করিবে। পরে উহা একটি ভাত্রপাত্তের ভিতরে পুরিবে এবং দেই তাত্রপাত্তি মৃত্তিকা দ্বারা অর্দ্ধান্তুলি স্থল করিরা লেপিবে। তদনন্তর ঐ তাত্রপাত্তির মুখ কদ্ধ করিরা, বালুকা-যন্ত্রে পাক করিবে। পাককালে ঐ যন্ত্রের উপরি ধান্তক্ষেপণ করিবে; মখন ঐ ধান্ত ফুটিতে লাগিবে, তখন পাকদিদ্ধ হইরাছে জানিয়া নামাইবে। পরে শীতল হইলে, তাত্রপাত্তের ভিতর হইতে ঔষধ এইণ করিবে। এই ঔষধ সমভাগ মরিচচুর্ন সহ ১ একমায়া পরিমাণে পানের রদের সহিত দেবন করিলে, তিন দিবদের মধ্যে ঐকাহিকজ্বর, দ্যাহিকজ্বর প্রভৃতি অতি তীর্রতর বিষম জ্বর সকল নিবারিত হয়।

শীতারি-রসঃ।—

তালকং তুথকং তাত্রং রসগন্ধমনংশিলাঃ।
কর্ষং কর্ষং প্রয়োক্তব্যং মর্দয়েত্রিকলামুভিঃ॥
গোলং ন্যদেৎ সংপুটকে পুটং দদ্যাৎ প্রযত্নতঃ।
ততো নীত্বার্ক হুয়েন বক্তীহুয়েন সপ্তধা॥
কাথেন দন্ত্যাঃ শ্যামায়া ভাবয়েৎ সপ্তধা পুনঃ।
মাষমাত্রং রসং দিবাং পঞ্চাশন্মরিচৈযু তম্॥
শুড়ঙ্গদ্যানককৈব তুলদীদলযুগ্যকম্।
ভক্ষয়েৎ ত্রিদিনং ভক্ত্যা শীতারিং হুলভং পরম্।
পথাং হুয়োদনং দেয়ং বিষমং শীতপূর্বকং।
দাহপূর্বং হরত্যাশু তৃতীয়কচতুর্থকো॥
দ্যাহিকং সততকৈব বৈবর্ণাঞ্চ নিষচছতি॥
শীতারিরদ্।

হরিতাল, তুঁতে, ভাষ্ণ, পারা, গন্ধক এবং মনংশিলা; এই সকল দ্রব প্রত্যেকে ২ তোলা পরিমাণে এইণপূর্বক ত্রিফলার কাথে মর্দন করিয়া গোলক করিবে। এবং শরাবসংপুটে রাখিয়া অগ্রিসংযোগে পাক করিবে। তদনন্তর অর্কছন্দেও সিজহুদ্ধে সাতবার এবং দন্তীর ও খ্যামালভার ক্রুপ্রে সাজব্যিকভাষ্ণা দিকে। একমাষা পরিমাণে ৫০ পঞ্চাশতী গোলস্বিচ, গদ্যানক ১৮ ছিটি) পরিমাণে গুড় ও ২ ছইটা তুলসীপত্র সহ ভক্তি সহকারে ্তিনদিবস্থিই শ্রেষ্ঠ ও ত্রলভ শীতারিরদ দেবন করিবে। এই ঔষধে ত্রশ্ধ দছ অন্ন পথ্য দিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে শীতপুর্ব্বক ও দাছপূর্ব্বক বিষমজ্বর বিনম্টছন ; এতদ্ভিন্ন তৃতীয়কজ্বর, চাতুর্ধকজ্বর, দ্যাছিকজ্বর নাট হইনা থাকে। মাত্রা ইছা অপেক্ষা কম করা উচিত।

লোকনাথ-রসঃ ।---

শুদ্ধো বুভুক্ষিতঃ সূতো ভাগদ্বয়মিতো ভবেৎ। তথা গন্ধশু ভাগো দ্বৌ কুৰ্যাৎ কজ্ঞলিকাং দ্বয়োঃ॥ স্তাচ্চত্বর্গু ণেম্বের কপর্দেয়ু বিনিঃক্ষিপেৎ। ভাগৈকং টঙ্গণং দত্ত্বা গোক্ষীরেণ বিমর্দ্ধয়েৎ॥ তথা শঙ্খান্য খণ্ডানাং ভাগান্যকৌ প্রকর্ণায়েৎ। ক্ষিপেৎ সর্বাং পুটস্যান্তশ্চূর্ণলিপ্তশরাবয়োঃ N গর্ভে হস্তোমিতে ধুত্রা পচাঙ্গজপুটেন চ। স্বাঙ্গণীতং সমুদ্ধৃত্য পিফ্বা তৎসর্বমেক্তঃ॥ বড় গুঞ্জাসংমিতকূর্ণ্যমেকোনত্তিংশদূষ্ঠনঃ। য়তেন বাভজে দদ্যান্নবনীতেন পৈভিকে॥ क्षोत्किन ककरक मन्त्रानठीमादत करत्र उथा। অরুচৌ গ্রহণীরোগে কার্শ্যে মন্দানলে তথা।। কাসশ্বাসেযু গুলোুেযু লোকনাথরসং ভিষক্। তদ্যোপরি য়তান্নঞ্চ ভুঞ্জীতকবলত্ত্রয়ং॥ মঞ্চে ক্ষপৈকমুভানঃ শরীতা**নুপ**ধানকে। অনুমুমরং সন্থতং ভুঞ্জীত মধুরং দধি। প্রায়েণ জাঙ্গলং মাংসং প্রদেয়ং য়তপাচিতং। সুত্র্গ্বভক্তং দদ্যাচ্চ জাতে২গ্রে) সান্ধ্যভোজনং । সন্নতান্ মুদ্দাবটকান্ ব্যঞ্নেম্বকারয়েৎ। তিলামলককক্ষেন স্নাপয়েৎ সর্পিষাথবা॥ অভাঞ্জয়েৎ সর্পিষা চ স্নানং কোঞ্চজলেন চা বার্ত্তাকুং সকরীং চিঞ্চাং ত্যজেন্ত্যায়ামনৈথুনে 🕸 কচিত্তিলং ন গৃহীয়াৎ ন বিলৃৎ কারবেল কঃ मगार मद्दानकः रिक् ७०ी मोनमञ्जिकाः কুমাওরাজিকাকোলং কাঞ্জিককৈব বজারীয় ট

তাজেদযুক্তনিদ্রাঞ্চ কাংস্থপাত্তে চ ভোজনং ॥ ककांत्रानियुज्ध मर्क्यः जारजद भाककनानिकः। আহো২য়ং লোকনাথস্ত শুভে নক্ষত্রবাসরে। পূর্ণাতিথো নিতেপক্ষে জাতে চক্রবলে তথা। পূজয়িত্বা লোকনাথং কুমারীং ভোজয়েভতঃ। দানং দত্ত্বা দ্বিঘটিকামধ্যে আছো রদোভমঃ। রসাচ্চ জায়তে তাপগুদা শর্করয়া যুত্র্ ॥ সত্তং গুড়ুচ্যা গৃহীয়াদ্বংশলোচনয়। যুতং। খর্জুরং দাড়িমং দ্রাক্ষা ইক্ষুখণ্ডাংশ্চ দাপয়েৎ॥ অরুচো নিস্তবং ধান্যং মৃতভৃষ্টং দশর্করং। দদ্যাৎ তথা জ্বরে ধান্যং গুড় চীকাথমাহরেৎ : উশীরং বাসককাথং দদ্যাৎ সমধুশর্করং। রক্তপিতে কফে শ্বাদে কাদে চ স্বরসংক্ষয়ে। অগ্নিভৃষ্টং জয়াচূৰ্ণং মধুনা নিৰি দীয়তে। নিজানাশেহতীসারে চ গ্রহণ্যাং পাবকক্ষয়ে॥ সৌবর্চনাভয়াক্লঞাচূর্ণমুক্ষোদকৈঃ পিবেৎ। শূলেই জীর্নে তথা ক্বকা মধুযুক্তা জ্বরে হিতা॥ প্লীহোনরে বাতরত্তে ছর্দ্যাং চৈব গুলান্ধুরে। নাসিকাসূতরক্তেয়ু রসং দাভ়িমপুষ্পজম্ ॥ मूर्काशः यतमः नरमा श्रामाण्डकतावि**७**म्। কোলমজ্জাকণাবর্হিপক্ষভন্মসশ্র্করং॥ মধুনা লেহয়েচ্ছ দিহিক্কাকোপপ্রশান্তয়ে। ইত্যয়ং লোকনাথোক্তরসঃ সর্ব্বরুজাং জয়েৎ॥ ইতি জ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগ-চিন্তামণে

জ্বাধিকারঃ স্মাপ্তঃ।

ইতি তৃতীয়োহধ্যারঃ সমাপ্তঃ।

লোকনাথরস।

(কপর্দ্ধ—কড়িভন্ম। উষণ—পিপুল। নবনীত—ননী, মাখন। ক্ষোদ্র— মধু। বটক—বড়া। সর্পিঃ—মৃত। কোঞ্চ—ঈষত্বন্ধ। বার্তাকু—বেঞা। সক্রী—পুটিমাছ। কারবেলুক—করলা। সন্ধানক—কাজি। মাধ—মাধ- কলাই •বাজিকা—শ্বেডসর্বপ। কোল—কুল। নিত—শুক্ল। লোকনাথ— মহাদেব। কুমারী—অবিবাহিতা কন্তা। ঘটিকা,—ঘন্টা। দ্রাকা—কিস্মিন্। খণ্ড—খাঁড়গুড়। উশীর—বীরণমূল। জয়া—সিদ্ধি। পাবক—অগ্নি। দৌব-র্চল—সচললবণ। অভয়া—হরীতকী। কুঞা—পিপুল। কণা—পিপুল। বহিপক্ত—ময়ুরপুচ্ছ)।

প্রথমতঃ বিশ্রদ্ধ পারদ ও বিশুদ্ধ গদ্ধক প্রত্যেকে ২ ছইভাগ এহণপূর্বক থলে মর্দিত করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তৎপরে উহাতে পারার চতুর্গুণ চড়িভস্ম এবং ১ ভাগ দোহাগার খৈ মিশ্রণ**পূর্ব**ক গোত্বন দারা মর্দিত চরিবে। তদনন্তর তৎসহ শঙ্কখণ্ড৮ আটভাগ মিশাইয়া, সমস্ত দ্রব্যগুলি ণরাবসংপুটে রাখিয়া, শরাবদ্বয় চূণের দ্বারা লেপন করিয়া ১ হস্ত পরিমিত ার্ত্তে গজপুটে পাক করিবে। পরে শীতল হইলে দেই ঔষধ দকল শরাব াইতে উত্তোলন করতঃ, একত্র উত্তমরূপে শিলায় পেষণ করিয়া ৬ য়েরতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিবে। এই বটীকা ২৯ উনত্রিশটী পপুল ও ঘতদহ বাতজ্বোগে, নবনীত সহ পৈত্তিকরোগে এবং মধুসহ গ্দজরোগে প্রয়োগ করিবে। অতীসার, ক্ষর, অকচি, গ্রহণী,কুশতা, মন্দায়ি, াদ, কাদ ও গুলারোগেও ইহা মধুদহ ব্যবহার্য। এই ঔষধ দেবনের পর ১ উন গ্রাস মৃতার ভোজন করিবে। এবং মাথায় বালিশ না দিয়া ক্ষণকাল চিৎ ইয়া শয়ন করিয়া থাকিবে। ঘত দহিত অস্তরহিত অন্ন এবং মধুর দহিত ধি ভোজন করিবে। জঠরাগ্নি বর্দ্ধিত হইলে, মতদহ জাঙ্গলমাংদ (মৎস্থা, গ্ছেপাদির মাংস) পাক করিয়া এবং দ্রন্ধসহ অন্ন সন্ধ্যাকালে ভোজন করিবে। াছত মুগের বড়া ব্যঞ্জনের মহিত দিবে। তিল বা আমলকীর কল্ক অথবা তে মাখিরা উঞ্চলে স্নান করিবে। তৈল, বিল্, করলাউচ্ছে, বেগুন, গুঁটিমাছ ও তেঁতুল কদাচিৎও ভোজন করিবে না। ব্যায়াম, মৈথুনও শরিহার্যা। মৎস্থা, আদব, হিন্ধু, শুগ্ঠী, মাষকলায় ও মস্থরের দাইল, কুত্মাও, াইনর্ষপ, কুল ও ক্লাজি পরিবর্জন করিবে। অযুক্তনিদ্রা, কাংস্থপাত্তে ভাজন ও ককার আদি শাক ও ফল পরিত্যাগ করিবে। শুভ নক্ষত্র ও দিনে, শুক্রপক্ষে ও চল্লের রদ্ধি সময়ে, লোকনাথের (মহাদেবের) পূজ। করিয়া, চুমারী ভোজন করাইয়া দানাদি করতঃ, ২ ছুই ঘটিকার মধ্যে এই সর্বশ্রেষ্ঠ লাকনাথ রুদ ঔষধ দেবন করিবে। ইহা দেবনান্তে শরীরে মন্তাপ উপস্থিত हिल, भर्कद्रामह छल्एकद दम अथेवा वर्भालाहन स्मवन कतित्व। এवर খজুর, দাড়িম, দ্রাক্ষা ও ইকুখাঁড় ভোজন করিবে। অরুচিতে নিম্বর ধনিয়া মতে ভাজিয়া, চিনির মঙ্গে এবং জরে ধনে ও গুলঞ্চের কাথ দেবন করিবে। াক্তপিত্ত, শ্বাস, কাস, কফ ও স্ববক্ষয়রোগে উশীর ও বাসকের ক্রাথ মধু ও চনির সহিত; নিজানাশ, অতীসার, এহণী ও মন্দাগ্লিতে সিদ্ধি ভাজিয়া ূর্ব করিয়া, তাহা মধুর সহিত রাত্তিতে এবং শূল, অজীর্ণ, জ্বর, প্লীহা, উদ্ধ্য, ।।ভবক্ত, ছর্দ্ধি ও অর্থোরোগে সচললবণ, হরীতকী ও পিপুলচূর্ণ মধু সহ-वार्ग मिवनं कद्भिरत। नामिका विज्ञा त्रक्टवान स्ट्रेस्न माफ्नि पूरण्यत

तम ७ प्रकात तम हिनित मर नष्ण धर्म कतित्। अवः रेश कूलात कांहित । भोम, शिश्रूल, मज़्तश्रूष्ट्रच्यू, भक्ता ७ मधूमर लग्न पृक्तक मिनम क्तिल एक्ति ७ रिका धर्माम् रज्ञ ।

> ইতি জীরামমাণিকা সেন বির্চিত প্রয়োগ চিন্তামণি প্রস্থে। জরাধিকার সমাপ্ত। তৃতীয়-অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুর্থোইধ্যায়ঃ।

জ্বাতিদারাধিকারঃ।

পি**ভন্ত**রে পিভভবোহতিসার-স্তথাতিসারে যদি বা জ্বঃ স্যাৎ। দোষস্য দূষ্যস্য স্মানভাবো-জ্বাতিসারঃ কথিতো ভিষ্ণভিঃ॥ অনন্তর জ্বাতিসার চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

যদি পৈত্তিকজ্বরে পিত্তজন্ম অভীদার অথবা অভীদার মধ্যে জ্বর ছইয়া, দোষ (বায়ু, পিত্ত ও কফ) এবং দূষ্যের (রদ, রক্তাদির) দমান ভাব হয়, ভাহা হইলে ভাহাকে জ্বরাতিদার বলা যায়।

জ্বরাতিসারী পেরাং বা পিবেৎ সামাং শৃতাং নরঃ।

পৃশ্লিপর্নী বলা বিলু নাগরোৎপল ধান্যকৈঃ॥

(मान्ना—দাড়িমাদির রম সংযুক্তা। পুরিপর্ণী—চাকুলে বা পীঠানি। লো—বেড়েলা। বিলু—বেলশু ঠ। নাগর—শুঠী। উৎপল—নীলোৎপল, ঘভাবে কুড়। ধাস্থক—ধনে)।

চাকুলে, বেড়েলা, বেলশু ঠ, শু ঠ, নীলোৎপল ও ধনিয়া । এই সমস্ত দ্রব্য দমভাগে লইয়া কাথ প্রস্তুত করিবে। তদনন্তর সেই কাথ দ্বারা সাধিত পেয়া প্রস্তুত করতঃ, তাহাতে দাড়িম, বেদানা প্রভৃতির রদ মিশ্রণপূর্বক জ্বাতি-দার রোগীকে দেবন ক্রিতে দিবে।

কিরাতাদিঃ।—

কিরাতাক। মৃতাবিশ্বচননো দীচ্যবৎস কৈঃ। শোথাতিসারশমনং বিশেষাজ্জ্বনাশনম্॥.
কিরাতাদি।

চিরাতা, মুথা, গুলঞ্চ, শুঠী, রক্তচন্দন, বালা, ইন্দ্রযব; এই দ্রব্য সমুদায় দমন্তে মিলিড ২ ছইতোলা পরিমাণে এছণপূর্বক /॥। অর্ধনের জলের দাহিত মিশ্রিড করিয়া, অগ্নিসংযোগে জালদিয়া পাক করিতে থাকিবে। ত্রুপরে যখন দেখিবে যে জল শুষ্ক হইয়া /১। অর্ধপোয়া মাত্র অবশিষ্ট আছে, তথন চুলী হুইতে নামাইবে; এবং একখানি পরিষার বস্তুদারা

ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ এছণ করিবে। এই কাথ শোধসংযুক্ত **ওভীসার-**রোগীকে সেবন করিতে দিবে। বিশেষতঃ ইহা জ্বরোগীর অভীব উপকারী।

কিরাতাদিঃ।--

কিরাতাকায়তোদীচ্যমুস্তচন্দনধান্যকৈঃ। শোথাতিদারতৃড়্দাহ শ্মনো জ্বনাশনঃ॥ কিরাতাদি।

চিরাতা, মুথা, গুলঞ্চ, বালা, মুথা, রক্তচন্দন ও ধনিয়া। এই দ্রব্য সমুদায় সমভাগে ২ ছইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধদের জল সহ পাক করিয়া, অর্দ্ধপোয়া মাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। তৎপরে ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া ক্লাথ গ্রহণ করিবে। ইহা দেবনকরিলে শোথ, অতীসার, দাহ, পিপাসা এবং জ্বর নিবারিত ছইয়া থাকে।

বিভূঙ্গাদিঃ ৷—

বিড়ঙ্গাতিবিষামুন্তং দারুপাঠাকলিঙ্গকং।
মরিচেন সমাযুক্তং শোখাতিসারনাশনম্॥
বিডঙ্গাদি।

(অতিবিধা – আতইচ্। মুস্ত – মুখা। দাৰু – দেবদাৰুকাঠ। পাঠা – আকান্দিলতা। কলিঙ্কক – ইন্দ্ৰয়ব)।

বিভূষ্ণ, আতইচ, মুথান দেবদাকন পাঠা এবং ইন্দ্রয়ব; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমতে ২ হুইতোল। মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্ধ্বসের জল সহযোগে সিদ্ধ করিতে থাকিবে। যথন দেখিবে জল শুদ্ধ হইয়া /১/০ হুইছটাক মাত্র অবশিষ্ট আছে; তখন চূলী হইতে নামাইবে, এবং একখানি পরিষ্কার সক্ষ বন্ত্র দিয়া ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ (জলীয়াংশ) গ্রহণ করিবে। এই কাথ। দিকিভোলা মরিচচূর্ণ সহযোগে সেবন করিলে, অপ্পদিনের মধ্যে শোধসংযুক্ত অতীসার দূরীভূত হয়।

হীবেরাদিঃ।—

হ্রীবেরাতিবিষামুস্ত বিল্পন্যাক নাগরৈঃ। পিবেৎ পিচ্ছাবিবন্ধত্বং শূলদোষামপাচনম্। সরক্তং হন্তাতিশারং সন্ধরং বাথ বিজ্রম্॥ হ্রীবেরাদি।

(হ্রীবের – বালা (পাথরকুচি)। অতিবিষা – আতইস্। বিলু – বিলু –

বালা, আতইচ, মুখা, বেলওঁ ঠ, ধনিয়া ও শুগী, এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমুদায়ে ২ ছইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধদের জলে সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্দ্ধপোয়া মাত্র থাকিতে নামাইবে এবং ছাঁকিয়া দিটে বাদুপুরুষা, ক্ষাথ এই শীকরিবে। এই কাথ দেবন করিলে মলের পিল্ছিলতা, বদ্ধতা এবং শূলবং বেদনা নিবারিত ইইয়া থাকে। এবং আম (অপক্ষল) দোষের পরিপাক নিদ্ধ হয়। আর রোগীর জুর সংযুক্ত অথবা বিজ্ঞর অবস্থার অতীনদার ও রক্তাতিসার বিনষ্ট হয়।

গুড়ু চ্যাদিঃ।—

গুড়ু চ্যাতিবিষা ধান্য শুগীবিল্যাক্ষবালকৈঃ। পাঠা ভুনিষ কুটজ চন্দনোশীরপদ্মকৈঃ॥ কষায়ঃ শীতলঃ পেয়ো জ্ব্বাতিসারশান্তয়ে। হল্লাসারোচকচ্ছদি পিপাসা দাহনাশনঃ॥

গুড়ুচ্যাদি।

(গুড় চী – গুলঞ্চ। অতিবিয়া – আতইম। ধান্ত – ধনিয়া। বিলু – বেলপ্ত ঠ। বালক – বালা। পাঠা – আকাদি। ভ্নিষ – চিরতা। কুটজ – কুর্চি। চন্দন – রক্তচন্দন। উশীর – বীরণ (বেণারমূল)। পদ্মক – পদ্মকাষ্ঠ। ক্ষার – পাচন। হল্লাস – বিবমিষা)।

গুলঞ্চ, আতইচ, ধনে, শুণ্ঠী, বেলশুঠ, বালা, মুথা, পাঠা, চিরতা, কুটজ, রক্তচন্দন, বেণারমূল এবং পদাকাঠ ; এই দ্রব্য সমুদার স্থান পরিমাণে সমস্তে হ ছুইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলের সহিত সিদ্ধাকরিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে, জল শুষ্ক হইয়া অর্দ্ধপোরা মাত্র অব-শিষ্ট আছে, তখন নামাইয়া ছাকিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ শীতল করিয়া পান করিলে জরাতীসার, বমনেচ্ছা, অরোচক, ছর্দ্দি, পিপাসা ও দাহ বিনষ্ট হয়।

উশীরাদিঃ।—

উশীরং বালকং মুক্তং ধন্যাকং বিশ্বভেষজম্।
সমঙ্গা ধাতকী লোঞ্জং বিলৃৎ দীপন পাচনম্॥
হন্তারোচকপিচছামং বিবন্ধং সাতিবেদনম্।
সশোণিতমতীসারং সন্ত্রং বাথ বিজ্বর্ম॥
উশীরাদি।

(উশীর-বীরণমূল। বালক-বালা। বিশ্বভেষজ-শুগী। সমঙ্গা-মঞ্জিষ্ঠা কিন্তু এখানে বরাহক্রান্তা। ধীতকী-ধাইফুল। লোগ্র-লোগ্ধ। সশো-ণিড-রক্তসংযুক্ত।)

বেণারমূল, বালা (পাধরকুচি), মুখা, ধনিরা, শুঠী, বরাহক্রান্তা, ধাই-ফুল,লোধ এবং বেলশুঠি; এই সমস্ত তাব্য সমস্তাশে সমুদারে ২ হুইতোলা বাত্র এহণপুর্বক, অর্দ্ধনের জলের সহিত দিশ্রণপূর্বক চুলীতে উঠাইরা, অগ্নি-মংবোগে তাল দিয়া পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে, জুল শুফ হইরা অর্ধপোরা মাত্র অবশিষ্ট আছে, তথন চুলী হইতে নামা হৈব; এবছ একখানি পরিষার বস্তুদ্ধারা ছাঁকিয়া, গিটে বাদ দিয়া জলীয়াংশ (কাথ) এহণ করিবে। এই পাচন অগ্রিসন্দীপক ও আমদোষের পরিপাচক। এবং ইহা সেবন করিলে অফচি, মলের পিচ্ছিলতা, অপক্ষতা ও অভান্ত বেদনাসংযুক্ত বিবদ্ধতা এবং রোগীর সজ্বর বা বিজ্বর অবস্থার রক্তসংযুক্ত অতীসার নিবা-রিত হয়।

পঞ্মূল্যানিঃ।-

পঞ্মূলী বলা বিলু গুড়ু চী মুস্তনাগরৈঃ।
পাঠা ভূনিষ খ্রীবেরকুটজত্বক্ ফলৈঃ শৃতম্॥
হন্তি সর্কানতীসারান্ জ্বদোষান্ বিমং তথা।
সশ্লোপদ্রবং শূলং কাসং হন্তাশু হুস্তরম্॥
পঞ্মূলী তু সামান্যা ষোজ্যা পৈতে কনিয়সী।
মহতী পঞ্মূলী তু বাতশ্লেষাত্বে হিতা॥
পঞ্মূল্যাদি।

(পঞ্চমূলী—স্বস্পেমূল অর্ধাৎ শালপানা, চাকুলে, গোকুর, ব্যাকুড়, কন্ট কারী। বলা—বেড়েলা। বিলু—বেলশুঠ। পাঠা—আক্নাদি। ভ্নিস্থ— চিরতা। হ্রীবের—বালা। কুটজত্বক্—কুর্চিরছাল। কুটজফল—ইব্রুয়ব)।

শালপানী, চাকুলে, গোক্ষর, ব্যাকুড়, কন্টকারী, বেড়েলা, মুখা, বেলশু ঠর গুলঞ্চ, শুগুী, পাঠা, চিরভা, বালা, কুব্ চি, ইন্দ্রয়ব ; এই দকল দ্রব্য দমভাগে দমন্তে ২ছইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধদের জলের দহিত দিদ্ধ করিয়া নামা-ইবে। এবং ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া উহার ক্লাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথ দেবন করিলে দকলপ্রকার অতীদার, জরদোষ, বিম, অতি প্রবল শূলবৎ বেদনা, শ্বাদ ও কাদ বিনইট হইয়া থাকে। শালপানী, চাকুলে আদি স্বম্পেমূল পিত্তা-ধিকাজরে অতীব উপকারী; আর বেল: শোণা, আদি মহৎ পঞ্চমূল বাত-রেক্ষাতুর রোগীর পক্ষে নিরভিশয় হিতকর বলিয়া জানিবে।

দশমূল্যাদিঃ 1-

দশমূলী কষায়েণ বিশ্বমক্ষসমং পিবেৎ। জ্বরে চৈবাভিসারে চ সশোথে গ্রহণীগদে॥ দশমূল্যাদি।

দশমূলী অর্থাৎ বেল, শোণা, পাৰুল, গণিয়ারী, গাস্তারী, শালপানী, চাকুলে, ব্যাকুড, কণ্টকারী এবং গোকুর; এই দ্রব্যগুলি সমান পরিমাণে সমস্তে ২তোলামাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধদের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া,অর্দ্ধপ্রায়া থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ গ্রহণপূর্বক, সেই কাথ ২ তোলা পরিমাণে শুঠী চুর্গ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে জুর, অতীসার ও

্শোথ সংযুক্ত এহণীরোগ বিনষ্ট হয়। এক্লণে ওঠী, মরিচ, পিপুল প্রভৃতি তীদ্ধনীয়া দ্রব্য সকল উক্ত (২ তোলা) পরিমাণ্ডে প্রক্রেপ দিয়া ব্যবহার করা উচিত নয়। যেহেতু অধুনা মানবগণের প্রাতু, বল, বীর্যা ও মেপ্তা প্রভৃতি শারীরিক ও মানসিক প্রতিভা বা রক্তি সমুদায় অতীব ক্ষীণ; স্বভরাং তীদ্ধনীয়া বন্ধ সকল এতাদৃশ অধিক মাত্রায় ব্যবহার করিলে, উপকার না হইয়া, বরঞ্চ অসহতা ও অপাক জ্যাইয়া সম্প্রিক অপকার সাধন করে। অতএব উক্ত মাত্রায় পরিবর্তে বল,বীর্ষ্য, অগ্রি প্রভৃতি বিবেচনাপূর্ব্বক॥০ অর্জতোলা বা তাহারও হান পরিমাণে ব্যবহার করিবে।

পাঠাদিঃ।-

পাঠেন্দ্রযব ভূনিমমুস্তপপটকামতাঃ। জয়ন্ত্যামমতীসারং সম্বরং সমহৌষধাঃ॥ পাঠাদি।

পাঠা, ইন্দ্রম্ব, চিরতা, মুখা, কেতৃপাপ্ডা, গুলঞ্চ ও শুঠী; এই সমুদার ক্সে সমভাগে সমস্তে ২ ছইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /॥• অর্দ্ধরে জ্বল সহ-যোগে সিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধগোয়া মাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ক্বাথ লইবে। সেই ক্বাথ।• সিকিতোলা বা। ১/• ছয়আনা পরিমিত শুঠীচূর্ণ সহ সেবন করিলে জ্বরশংযুক্ত আমাতীদার (আমাশয় রোগ) বিনষ্ট হয়।

কলিঙ্গাদিঃ।---

কলিঙ্গাতিবিধাশুগুণী কিরাতামুযবাসকং। জ্বরাতিসারসন্তাপং নাশয়েদবিকপ্পানঃ॥ কলিঙ্গাদি।

(কলিঙ্গ—ইন্দ্রয়ব। অভিবিধা—আওইচ। কিরাত—চিরাভা। **অসু—** বালা। যবাসক—ত্নরালভা)।

ইন্দ্রয়ব, আতইন, শুঠী, চিব্নতা, বালা এবং হুরালভা; এই দ্রব্য সকল নমান পরিমাণে সমস্তে ২ হুইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /॥• অর্দ্ধনের জ্বল নহযোগে পাক করিয়া, অর্দ্ধিয়া অবশিষ্ট রাখিয়া ক্লাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথ পান করিলে জ্বরাতিসার সংযুক্ত সন্তাপ নিঃসংশয়ে দূরীভূত হয়।

কাথদ্বয়ং।--

বৎসকস্য ফলং দারু রোহিণী গজপিপেলী। শ্বনংক্রাপিপেলী ধান্যং বিলৃং পাঠা ষ্মানিকা॥ দ্বাবপ্যেতৌ সিদ্ধযোগে শ্লোকাৰ্দ্ধেনাভিভাষিতৌ। ক্রাতিসারশমনো বিশেষাদ্বাহনাশনো॥

ক্রাথদয়।

(वदमारकत्र कन-देख्यव। नाक-(नवनाककार्छ। (त्राहिनी-कहेकी।

খনংক্রা—গোসুর। ধান্য—ধনে। পাঠা—আকান্দিলড়া। বিশানিকা-

ইক্রম্বন, দেবদাক, কট্কী এবং গঞ্জপিপুল; এই তাবা চতুইর সমতে সমানাংশে ২ তোলা মাত্র এহণপূর্বক অর্ধনের জলে দিয় করিয়া, অবশিষ্ট অর্ধপোরা মাত্র থাকিতে নামাইয়া, দিটে বাদ দিয়া জলীয়াংশ (হাথ) এহণ করিবে। এই ফাথ দেবন করিলে জ্বাতিসার নিবারিত হয়়, বিশেষতঃ ইছা দাহ বিনাশে অতীব উপযুক্ত।

গোক্র, পিপুল, ধনে, বিল, পাঠা এবং যমানী, এই দ্রব্য সমুদায় তুলা-পরিমাণে সমস্তে ২ ছুইতোলা মাত্র লইরা, অর্কসের জলের সহিত পাক করিরা, অর্কপোয়া মাত্র অবশিষ্ট রাখিয়া কাথ এছণ করিবে। এই কাথও পূর্ব্ববং অরাতিসার ও দাহ বিনাশক।

নাগরাদিঃ।-

নাগরায়ত ভূনিয় বিলৃবালক বৎসকৈঃ। সমুস্তাতিবিষোশীরৈশ্বরিবাতিদার-হজ্জলং॥

নাগরাদি।

শুঠী, গুলঞ্চ, চিরতা, বেলশুঁঠ, বালা, কুর্চি, মুথা, আতইচ ও বেণার-মূল; এই দকল দ্রবা তুলাভাগে দমস্তে ২ তোলা গ্রহণ করিয়া অর্জদের জলসহ পাক করতঃ, অবশিষ্ট অর্জপোরা রাখিয়া ক্রাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্রাথ জ্বর ও অতিদার বিনাশক।

মুস্তকাদিঃ।—

মুস্তকবিল্বাতিবিষা পাঠা ভূমিশ্বৎসকৈঃ।
মকরন্দগর্ভযুক্তো জ্বাতিসারৌ জ্বেদ্ ঘোরে।
মুস্তকাদি।

(ভূনিম্ব — চিরতা। বৎসক— কুটজ্ঞ। মকরন্দ— মধু)।

মুথা, বেলশু ঠ, আতইচ, পাঠা, চিরতা, কুর্চি; এই দ্রন্য সকল তুল্য-পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা মাত্রায় গ্রহণপূর্বক, অর্দ্ধার জলের সহিত সিদ্ধ করতঃ, অবশিষ্ট /১/ হুইছটাক মাত্র থাকিতে নামাইয়া রুগথ লইবে। সেই কাথে। দিকিতোলা বা তদপেক্ষা ভূনে বা কিঞ্চিদ্ধিক পরিমাণে মধু মিশ্রণ-পূর্বক দেবন করিলে জ্বর ও অতীদাররোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

ঘনাদিঃ !--

ঘনজলপাঠাতিবিষা পথ্যোৎপলধান্য রোহিণী বিশ্বৈঃ। সেন্দ্রঘবৈঃ ক্বতমন্তঃ সাতিসারং জ্বরং জয়তি॥

श्नाति। (घन—मूथा। जन--नाना। भथा।—हत्रीडकी। उँ८भन-नीनच्चंती, काकार्यकृष्। श्राम-श्रान)। বুলা, বালা, আক্নাদি, আতইস, হরীতকী, নীলোৎপল, ধনিয়া, কট্কী, ইন্দ্রথব এবং শুঠী; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় সমস্তে ২ তোলা লইয়া, অর্জনের জলসহ সিদ্ধ করিয়া, অর্জপোয়া থাকিতে নামাইয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ সেবন করিলে জ্বযুক্ত অতীসার বিনাশপ্রাপ্ত হইয়া থাকে।

বিল পঞ্চক্য ।—

শালপূর্ণী পৃশ্নিপূর্ণী বলাবিলুং সদাড়িমং । বিলুপঞ্চমতোতৎ কাথং কৃত্বা প্রদাপয়েৎ ॥ অতীসারে স্থারে ছদ্যাং শস্যতে বিলুপঞ্চকং । বিলপঞ্চক।

(শালপর্ণী –শালপানী। পৃশ্বিপর্ণী – চাকুলে। বলা—বেড়েলা। বিলু – বেলশ্র ঠ)।

শালপানী, চাকুলে, বেড়েলা, বেলশুঠ এবং দাড়িমের ছাল। এই পাঁচিকে বিল্পঞ্চক বলা যায়। এই বিল্পঞ্চক সমস্তে সমান পরিমাণে ২ ছই তোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /॥ তর্জাদের জলের সহিত দিদ্ধ করিয়া, অর্জপোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া, উহার কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ, জ্বর, অতীস্বার ও ছর্দিরোণে প্রয়োগ করিলে সমধিক উপকারী হয়।

পক্মূল্যাদিঃ ৷—

পঞ্চলী শৃঙ্গবের শৃঙ্গাটকঞ্চীং খন ।
জয়ুদাড়িয়পত্রঞ্চ বলা বালং গুড়ু চিকা ॥
পাঠাবিল নমঙ্গা চ কুটজত্বক্ ফলং তথা ।
ধান্যকং ধাতকীকাথং বিষাজীরক-সংযুতং ॥
পিবেৎ জ্বাতি,সারেচ সরক্তে বাপারক্তকে ।
অপি যোগশতৈন্তাক্তে চাসাধ্যে সর্বরূপকে ॥
পঞ্চমুল্যাদি।

(शक्षम्ली — भालभानी, ठाकूल, त्राकूत, नाकूड, कलेकाती। भृष्टावत— राष्ट्री । भृषाचे—भीष्ट्राड, भानीकल। कथाने—कां ठाड़ाताम। घन—मूथा। क्रमू—काम। नला—विष्ड्रा। नाल—नाला। खड़् ठिका—खलकः। भाठा— काकनाती। निल् —विलाखं ठे। नमष्ट्रा — नताहकासा। निया — कां उनिया)।

শালপানী, চাকুলে, গোকুর, রহতী, কন্টকারী, শুঠী, পানীফল, কঞ্চি, মুখা, জন্মপত্র, দাড়িম্বপত্র,বেড়েলা, বালা, গুলঞ্চ, পাঠা,বেলশু ঠ, বরাহক্রান্তা কুর্চির ছাল, ইন্দ্রযথ, ধাইফুল এবং ধনিয়া; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ জোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক, অর্দ্ধনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধনিয়া অ্বশিক্ট রাখিয়া নামাইবে। এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথগ্রহণ

করিবে। এই কাথ। • সিকিভোলা আডইচ ও। • সিকিভোলা জীরার্চ্স সহ সেবন করিলে, শতশতযোগ (ঐষধ) দ্বারাও পরিত্যক্ত সকলপ্রকার অসাধ্য রক্তদংযুক্ত বা রক্তবিহীন জরাতিসার নিশ্চয়ই নিবারিত হইয়া থাকে।

নাগরাদিঃ।--

নাগরাতিবিষামুস্ত ভূনিম্বায়তবৎসকৈঃ। সর্বজন্তরঃ কাথঃ সর্বাতীসারনাশনঃ॥ মৃতক্ষীরতৈলমপ্যনুপয়োগিত্বাদত্ত নোক্তং॥ নাগরাদি।

শুপী, আতইস, মুখা, চিরতা, গুলঞ্চ এবং কুর্চি; এই সকল দ্রখ্য প্রত্যেকে সমানভাগে সমস্তে ২ তৃইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বকি, অর্দ্ধসের জলের সহিত্য সিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধপোরা অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া, ছাকিয়া জলীয়-ভাগ (ক্বাথ) গ্রহণ করিবে। এই ক্বাথ সেবন করিলে সকলপ্রকার জ্বর ও সর্ববিধ অতীসার সমূলে বিনষ্ট হইয়া থাকে।

দ্বত, ক্ষীর (হ্রশ্ব) ও তৈল ঐষধ জ্বরাতিদারে অলুপ্রোগী হেতু, এস্থলে ভবিষয় কিছু মাত্রও উল্লিখিত হইল না।

কলিঙ্গাদি-গুড়িকা।—

কলিন্ধ বিলু নিয়াত্র কপিথং সরসাঞ্জনং।
লাকাং হরিত্রে ব্রীবেরং কটফলং শুকনাসিকাং॥
লোগ্রং মোচরসং শঞ্জং ধাতকীং বটশুন্দকং।
পিফু তণ্ডুলতোয়েন বটকানক্ষসন্মিতান্।
ছায়াশুকান্ পিবেৎ ক্ষিপ্রং জ্বরাতিসারশান্তয়ে।
রক্তপ্রসাধনা হেতে শূলাতিসারনাশনাঃ॥

কলিঙ্গাদিগুড়িকা।

(কলিক — ইন্দ্রধব। বিলু — বেলশু ঠ। কপিথ — কছে ইবেল। হ্রীবের— বালা। কট্ফল — কায়ফল। শুকনাসিকা — কেওয়াঠু ঠা। লোগ্র — লোগ্র। মোচরদ — দিমুল-আঠা। বটশুক্ষক – বটের ঝুরী। তণুলভোয়—কালুনী-জ্বল। বটক — বটিকা। অক্ষ – ২ ভোলা। ক্ষিপ্র – শীন্ত্র)।

ইক্রয়বন, বেলশুঠ, নিম্নপত্রন, আমেপত্রন, করেতবেল, রসাঞ্জন, লাক্ষা, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, বালা, কট্ ফল, শুকনাসিকা, লোধ, মোচরস, শুধু, ধাতকী, বটের ঝুরী; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক তপুল জ্বলম্বারা বাটিয়া, ২ তোলা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। এবং দেই বটিকা ছায়ায় শুক্ষ করিয়া, সেবন করিলে জ্বলাতীদার, রক্তাভিদার এবং শূলসংযুক্ত অভীদার শীদ্রই নিবারিত হয়। নারায়ণচূর্ণম্।—

শুড় চী রদ্ধারক কুটজনা ফলন্তথা।
বিড়ঙ্গাতিবিষাকৈব ভৃঙ্গরাজক নাগরম্।
শক্রাশননা চূর্ণক সর্বমেকত্র কারমেৎ।
সর্বচূর্ণসমং গ্রাহুং কুটজনা অচোহপি চ।
শুড়েন মধুনা বাপি লেহয়েদ্রিসজায়রঃ।
শোথং রক্তমতীনারং চিরজং হুর্জ্জয়ং তথা।
জরং ভৃষ্ণাক কানক পাণ্ড রোগং হলীমকং।
মন্দানলং প্রমেহক শ্লকাপি ত্রিদোষজম্।
নারায়ণেন কথিতং জনানাং হিতকামায়া।
নারায়ণ্চ্র্ণ।

(গুড়্টী—গুলঞ্চ। রদ্ধণার—বি**স্তাড়ক। শকাশন – সিদ্ধি। নারায়ণ –** বিষ্ণু);

গুলঞ্চ, বিস্তাড়ক, ইন্দ্রয়ন, বিড়ন্থ, আতুইন, ভূদ্ধরাজ, শুণ্ঠী এবং সিদ্ধি; এই দ্রবাগুলি প্রত্যেকে ন্যানাংশে লইয়া চূর্ন করিবে। তৎপরে ঐ সমস্ত চূর্ন দ্রবারে ন্যান কুটজের ছাল চূর্ন করতঃ, উহার সহিত মিশ্রিত করিবে। চিকিৎসক এই চূর্ন বিধ ইক্ষুণ্ড বা মধুসহ রোগীকে লেহন দ্বারা সেবন করাইলে, শোধ্য চিরকালোৎপন্ন হুর্জন্ন রক্তাতিসার, জ্বর, তৃষ্ণা, কাস, পাণ্ডুরোগা, হলীমক, মন্দান্ত্রি, প্রমেহ এবং সকল প্রকার শূলরোগ নিবারিত হয়। এই যোগটী মহ্যাদিগের হিতার্থে স্বন্নং নারান্ত্রণ কর্ত্ত্বক কথিত হইন্যাছে।

উৎপলাদিচুর্বং।—
উৎপলঃ দাড়িমং ত্বক্ চ পদ্মকেশরমেব চ।
পিবেত্তগুলভোয়েন জ্বাতীসারনাশনম্॥
উৎপলাদিচুর্ব।

নীলোৎপল, দাড়িমের ছাল এবং পদাকেশর । এই দ্রব্যত্ত্রয় সমভাগে গ্রহণপূর্ব্বক তণ্ডুল জলসহ পেষণ করিয়া, সেবন করিলে সকলপ্রকার জ্বরা-তিসার নিবারিত হয়।

কুটজপুটপাকঃ।—
স্বিধ্বং ঘনং কুটজবল্কমঙ্গস্ত দধ্ধমাদায় তৎক্ষণমতীব চ প্রোক্তয়িত্বা।
জন্ম পলাশ পুটে তণ্ডুল তোয়সিক্তং,
বদ্ধং কুশেন চ বহির্ঘনপঞ্চলিপ্তম্॥

সুষিন্নমেতদবপীড়া রসং গৃহীত্বা, ক্ষৌদ্রেণ যুক্তমতিসারবতে বিদদ্যাৎ। ক্ষণাত্তিপুত্রমতপূজিত এষ যোগঃ, সর্ব্বাতীসার হরণে স্বয়মেব রাজা॥ স্বর্দ্বস্য গুরুত্বেন পুটপাকে পলং পিবেৎ। পুটপাকস্য পাকো২য়ং বহিরারক্তবর্ণতা॥

কুটজ পুটপাক।

শ্বিদ্ধ অথচ ঘন (স্থুল) কাঁচা এমত কিরৎপরিমাণে কুটজেরছাল গ্রহণপূর্বক্, তণ্ডুলজলের সহিত বাটিয়া, জামপত্রের বা পলাশপত্রের পুটমধ্যে পুরিবে। তদনন্তর কুশ দ্বারা উত্তমরূপে বন্ধনপূর্বক, সেই প্রথম বন্ধ পূটলীর বহির্দেশ কর্দ্ধন দ্বারা লিগু করিয়া অগ্লিসংযোগে সিদ্ধ করিবে। তৎপরে সেই শ্বিদ্ধ অর্থাৎ পাককরা প্রথকে পীড়নপূর্বক তাহা হইতে রস গ্রহণ করিয়া, সেই রস মধুর সহিত অতীসার রোগীকে পান করিতে দিবে। এই যোগটী কৃষ্ণ অতিপুত্র কর্তৃক পূজিত অর্থাৎ সাতিশয় য়ত্মসহকারে নিসন্দিক্ষরেপে অতীসার রোগনাশক রূপে কথিত হইয়াছে। এই প্রথম সকলপ্রকার অতীসার হরণে স্বর্বিশ্রেষ্ঠ।

পুটপাকে স্বর্মের গুৰুত্বহেতু স্বর্ম ঐষধ একপল (৮ তোলা) পরিমাণে দেবন করিবে। ঔষধ বদ্ধ এবং কর্দ্মাক্ত পুট অগ্নিসংযোগে দিদ্ধ করিতেই যখন দেখিবে যে, উহার বহির্ভাগটী ঈষৎ রক্তবর্গ (অম্পলাল) হইয়াছে; তখন পুটপাক সমাপ্ত হইয়াছে জানিয়া, দেই ঔষধবদ্ধ পুটটী অগ্নি হইতে উত্তোলন করিবে। এবং খুলিয়া তাহা হইতে ঔষধ গ্রহণ করিবে।

কুটজাবলেহঃ।—

কুটজ ত্বক্ পলণতং জলদোণে বিপাচয়েং।
তেন পাদাবশেষেণ শর্করা পলবিংশতিম্॥
দত্ত্বা পক্ত্বা লেছপাকে চুর্ণানীমানি নিক্ষিপেং।
পাঠা সমঙ্গাবিলৃঞ্চ ধাতকী মুস্তকং তথা॥
দাড়িমাতিবিষা লোগ্রং শালালীবেই সর্জ্জকং।
রসাঞ্জনং ধান্যকঞ্চ উশীরং বালকং তথা॥
প্রত্যেকমেষাং কর্ষাংশং নিক্ষিপেং পাকবিদ্ ভিষক্।
শীতে চ মধুনস্তত্ত্ব কুড়বার্জ্জং বিনিক্ষিপেং॥
সর্বরূপমতীসারং গ্রহণীং সর্বরূপশীং।
রক্তসতিং জ্বরং শোখং বিমার্শোগদং ভৃষাং॥

অন্নপিত্তং তথাশূলমগ্রিমান্দ্যং নিষচ্ছতি। অতীসারে গ্রহণ্যাঞ্চ অরং দৃষ্টফলঃ সদা॥ কটজাবলেহ।

(जान-०२ (मत्। भार्या-व्याकान्ती। ममन्त्रा-वतारकासा। मान्यनी-रवस्र-(मान्त्रम। मर्ब्बक-धूना)।

কুরুচিগূলের ছাল । । । সাড়ে বারসের ৬৪ সের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট । ৬ যোলসের মাত্র রাখিয়া নামাইবে, এবং বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া জলীয়াংশ কাথ গ্রহণ করিবে। এবং সেই কাথের সহিত /২। আড়াইসের ইকুটিনি মিপ্রিত করিয়া পুনর্কার পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে লেহ্বৎ ঘন হইয়া আসিয়াছে, তখন আফাদিগূল, বরাক্রান্তা, বেলহাঁঠ, ধাইফুল, মুথা, দাড়িমফলের ছাল, আতইচ, লোধ, মোল্রম, পুনা, রমাঞ্জন, ধনিয়া, বেণারগুল এবং বালা; এই দ্রব্য সম্মুদায়ের চূর্ণ এত্যেকে ২ দুইতোলা পরিমাণে তাছাতে প্রক্রেপ দিয়া চূলী হইতে নামাইবে। তৎপরে শীতল হইলে ২ পল (১৬ তোলা) মরু তৎসহ মিপ্রিত করিয়া, একটা স্বিদ্ধ ভাগুমধ্যে রাখিবে। ইহা ২ তোলা মাজার ছাগত্বর্ম বা তণ্ডুলজ্বলের সহিত সেবন করিলে, সকলপ্রকার অতীসার, গ্রহণী, রক্তপ্রাব, জর, শোহ্ম, বিম, অর্ণোবরাগ, ভৃষ্ণা, অঙ্লপিত, শূল, অগ্নিমান্ত্র প্রভৃতি নানাপ্রকার রোগ বিনম্ট হইয়া থাকে। এই উষ্ব্রিটী অতীসারে ও গ্রহণীরোগে প্রয়োগ করিয়া, অনেকবার বিশেষরূপ ফলপ্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে।

ব্যোষাদ্যং চূর্ণম্।—
ব্যোষং বৎসক্বীজঞ্চ নিম্ন ভূনিয় মার্কবম্।
চিত্রকং রোহিণী পাঠাং দার্কীমতিবিবাং সমাং॥
শ্লেকচুর্ণীকতান্ সর্বান্ ততুল্যং বৎসক্ত্রচং।
সর্বেমকত্র সংযুজ্য প্রপিবেততুলামুনা॥
সক্ষোদ্রা লিহেদেতৎ পাচনং আহি ভেষজং।
তৃঞ্চাঞ্চিপ্রশানং জ্বাতীসারনাশনম্॥
কামলা গ্রহণী দোষান্ গুল্মপ্রীহানমেবচ।
প্রমেহং পাতুরোগঞ্চ শ্বয়থ্রু বিনাশয়েৎ॥
সর্বাচূর্ণসাং কুটজবক্কলমূলচূর্ণং,
মিলি চুর্ণমন্ত্রপং চতুগুর্ণনে তওুল জলেন পিবেৎ।
অথবা বিশ্বনে মধুনা লিহেৎ॥
ব্যোষাদ্যন্ত্র।

(ব্যোষ—ত্রিকটু অর্থাৎ শুগাঁ, পিম্পালী ও মরিচ। বৎসকবীজ—ইন্দ্রয়ব। হবিষ—চিরতা। মার্কব—ভূদরাজ। চিত্রক—রক্তচিতারমূল। রোহিনী— কটুকী। পাঠা –আবনিধি। দাকী—দাক্রেন্তা। **অভিবিধান আতুর।** মুদ্দুর্গ—অভিস্কা গুড়া।কৌজ—মধু, মৌ।)

শুঠ, পিপুল, মরিচ, ইন্দ্রধন, নিমছাল, চিরভা, ভৃত্বরাঞ্জ, রক্তচিভারমূল, কট্কী, আক্নিধিমূল, দাকহরিদ্রা, আতইস , এই দ্রবাগুলির প্রত্যেকের চ্র্ল ২২ বারভোলা করিয়া গ্রহণপূর্বক একত্র মিশ্রিভ করিয়া স্থন্দররূপে পেষণ করিবে। এবং এই দ্রব্য সকলের সমান কুরচিমূলের ছাল চ্র্ন ভাহার সহিত মিশ্রণ করিয়া লইবে। এই চ্র্ল ঔষধ এক মাষা হইতে ৪ চারিমাষা পর্যান্ত চতুর্প্রণ তণুল জল অথবা দ্বিগুণ মধুসহ সেবন করিবে। এই ঔষধ পরিপাচক ও সংগ্রাহী। এবং ভৃষ্ণা, অভীসার, অক্রচি, জর, প্রমেহ, গ্রহণী, গুল্ম, প্রীহা, পাণ্ডুরোগা, কামলা এবং শোথ বিনষ্ট করিয়া থাকে।

মৃতসঞ্জীবনী বটী।—

মাগধী বংসনাভঞ্চ তয়োস্তল্যক হিন্ধুলং।
মৃতসঞ্জীবনী খ্যাতা জয়ীররসমন্দিতা॥
মূলকদ্য চ বীজানাং বটিকা তুল্যরূপিণী।
পানীয়া শীততোয়েন জ্ব্বাতিসারনাশিনী।
বিস্থাত্যাং সন্নিপাতে চ জ্বে চৈবাতিহ্নুরে॥
মৃত সঞ্জীবনীবটা।

(মাগধী—পিপুল। বৎসনাভ—কাঠবিষ। মূলক—মূলা)। পিপুল ১ এফভাগ, বিষ ১ ভাগ এবং হিন্তুল ২ ছইভাগ; এই দ্রব্য সমু-দায় জামীরের রগে মর্দন করিয়া, মূলকবীজের ন্থায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ শীতল জলসহ সেবন করিলে জ্বরাতিসার, বিস্থৃচিকা এবং সান্ধি-পাতিক দ্রস্তর বিষমজ্বর বিনষ্ট হয়।

আনন্দভৈরবোরসং।—
হিন্দুলক বিষং ব্যোষং টঙ্গণং গন্ধকং সনং।
জন্ধীররসসংযুক্তং মর্দ্ধয়েদ্ যামিকদ্বয়ং॥
কাস খাসাতিসারেয়ু এছণ্যাং সান্নিপাতিকে।
অপন্মারেংনিলে মেছেংপ্যজীর্ণে বহ্নিমান্যকে॥
গুঞ্জামাত্রঃ প্রদাতব্যোরস আনন্দভৈরবঃ॥
আনন্দভৈরবরস।

ছিপুল, বিষ, ত্রিকটু, সোহাগা, গন্ধক; এই দ্রব্য সকল তুল্যপরিমাণে লইরা জামীরের রসের সহিত ২ হুইপ্রহুর কাল মর্দন করিবে। পরে একরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করতঃ সেবন করিলে শ্বাস, কাস, অতীসার, প্রহুণী, সান্ধিপাতিকরোগ, অপশ্বার, বায়ুরোগ, মেহ, অজীর্ণ এবং মন্দাগ্নিতা বিন্তুত্বর।

অভ-বটিকা 1---

অথ শুদ্ধনা সূত্ৰন্য গন্ধকন্যাভ্ৰকন্য চ । প্রত্যেকং কর্ষনামন্ত আছং রসগুটনবিশা॥ উতঃ ক্জ্বলিকাং কৃত্বা ব্যোষচূর্ণং প্রদাপরেই। কেশরাজস্য ভৃত্নস্য নিগু গ্রাশিতত্রকস্য চ॥ আীয়াসুন্দরকদ্যাথ জয়ন্ত্র্যাঃ স্বরসং তথা। মণ্ডুকপর্ণাঃ স্বরসং তথা শক্রাশনস্য চা শ্বেতাপরাজিতায়াশ্চ স্বরসং পর্ণসম্ভবং । দাপয়েদ্রসতুল্যঞ্ বিধিজঃ কুশলো ভিষক্। রমতুলাং প্রদাতবাং চৃর্ণং মরিচসম্ভবং। দেরং রসার্দ্ধভাগঞ্চ চূবং ট্রুবসম্ভবং ॥ শুভে শিলাময়ে পাত্রে ঘর্ষণীয়ং প্রযন্তঃ। শুক্ষাতপদংযোগাদ্ বটীকাং কারয়েদ্ ভিষক্॥ কলায়পরিমাণাস্ত্র খাদয়েতান্ত্র যতুতঃ। দৃট্। বয়শ্চাগ্নিবলং যথাব্যাধ্যনুপানভঃ। হন্তি কাসং ক্ষরং খাসং বাতশ্লেন্তবং রুজং। পরং বাজীকরঃ শেুচো বলবর্ণাগ্নিবর্দ্ধকঃ॥ স্বরে তৈবাতিসারে চ সিদ্ধ এব প্রয়োগরাট্। নাতঃ পরতরঃ শেষ্ঠো বিদ্যতেহল্ররসায়নাৎ।। ভোজনে শয়নে পানে নাস্ত্যত্র নিয়মঃ কৃচিৎ। দ্ধি চাবশ্যকং ভক্ষ্যং প্রাহ নাগার্জ্জ, নো মুনিঃ॥ অভ্ৰবটীকা।

পারা, গন্ধক এবং অঁজ ; এই দ্রবা সমুদায় প্রত্যেকে ২ছুইতোলা পরিমাণে প্রহণ করিবে। অনন্তর পারা ও গন্ধক সমভাগে লইয়া কজ্জলীপ্রস্তুভ করিবে। এই কজ্জলীর সহিত অজ ও সমভাগ ত্রিকটুচ্ মিশ্রিত করিয়া লইবে। তৎপরে এই মিশ্রিত দ্রব্যের সহিত কেশরাজ, ভৃত্পরাজ, নিসিন্দা, চিতামূল, প্রীত্মন্থনরক (গিমেশাক), জয়ন্তী, থুলকুড়ী, দিদ্ধি (ভাঙ্), শ্বেত অপরাজ্ঞা, এবং পান ; এই সকলের প্রত্যেকের স্বরুস ২ ভোলা, মরিচচ্র্ণ ২ ভোলা, এবং গোহাগা ২ এক ভোলা একত্র মিশ্রণপূর্বক শিলাতে উত্তম-রূপে মর্দ্দন করিবে। তদনন্তর স্ব্যাত্রপে শুক্ষ করতঃ কলায় পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত্ত করিয়া, রোগীর বয়স, অগ্নি, বল ও ব্যাধি বিবেচনার পরিমাণ ও অম্পানের কম্পনাস্নারে রোগীকে দেবন করিতে দিবে। এই উম্বন্ধ

দেবন করিলে ক্ষরকাস, শ্বাস, বাতশ্রেমারোগ, জ্বর ও অতীসার নিবারিড হয়। শ্বরীরের বল, বর্ণ ও অগ্নির বর্দ্ধিত হয়। জ্বরাতিসারে এই ঔষধ হইতে শ্রেষ্ঠতর রসায়ন ঔষধ আর নাই। এই ঔষধ সেবন করিলে ভোজন, শয়ন ও পানাদিবিষয়ে কোনপ্রকার নিয়মবদ্ধ থাকিবার আবশ্যকতা নাই। ইহাতে দধি ভোজন একান্ত প্রয়োজন। স্বয়ং নাগার্জ্জুন মুনি এই ঔষধটী আবিষ্কার করিয়াছেন।

কনকস্থলরো রসঃ 1--

হিঙ্গুলং মরিচং গন্ধং টঙ্গণং পিপেলী বিষং। কনকন্ম চ বীজানি সমাংশং বিজয়া দ্রবৈং॥ মর্দ্দরেদ্ যামমাত্রস্তু চণমাত্রা বটী ক্রতা। ভক্ষণাদ্ গ্রহণীং হন্তি রসং কনকস্থন্দরং॥ অগ্নিমান্দ্যং জ্বং তীত্রমতীসারঞ্চ নাশ্বেৎ॥

কনকন্ত্ৰদ্রর্গ।

হিম্নুল, মরিচ, গন্ধক, সোহাগার খৈ, পিপ্পলী, বিষ ও ধুতুরার বীজ : এই সকল বস্তু সমানভাগে গ্রহণপূর্বক সিদ্ধিপতের রসে একপ্রহর কাল মর্দ্দিভ করিয়া, চণকপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ দেবন করিলে গ্রহণী, অগ্নিমান্য, জর ও জ্তীসার বিনষ্ট হয়।

কনকপ্রভা-বটী।—
স্বর্ণবীঙ্গং মরিচং মরালপাদং.
কণা টক্লণকং বিষঞ্চ।
গন্ধং জয়াদ্রিদিবসং বিষদ্ধা,
গুঞ্জাপ্রমাণাং বটিকাং বিদ্যাবে॥
এষাতিসার এছণীং জ্বাগ্রিমান্দাং নিছ্নাং কনকপ্রভেরং।
দধ্যোদনং ভোজ্যমনুষ্ণবানি,
মাংসং ভক্ষেভিত্তির লাবকানাং॥

কনকপ্রভাবটী। (স্বর্ণবীজ—ধৃন্তু, রবীজ। মরালপাদ—পুলকুড়ি)।

বৃত্রানীজ, মরিচ, খুলকুড়ি, পিপুল, সোহাগা, বিষ, গন্ধক; এই সকল দ্রেয় সমানভাগে লইর। সিদ্ধিপত্রের রসে একদিন মর্দিও করিয়া, এক রভি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে অতীসার, প্রহণী, জর ও অগ্নিমান্য নিবারিভ হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া দধিসহ জন্ম ভোজন; লাব, তিভির প্রভৃতি পক্ষীর মাণ্য প্রবং অত্যুক্ষ (ঈষত্রক) জল পান করিবে।

রহৎ কশকস্থলরো রসঃ !--শুদ্ধসূতং সমং গদ্ধং মরিচং টঙ্গণভাষা। वर्गतीकः मरः मर्द्धाः जार्गीकार्रवर्द्धनार्क्षकः॥ সূতত্বল্যং মৃতঞ্চাভ্রং রসঃ কনকস্থন্দরঃ। চাস্য গুঁঞ্জাদ্বয়ং হন্তি পিভাতিসারমু গ্রকং॥

व्रर्भ कनकश्चमत्त्रम।

পারা, গদ্ধক, মরিচ, সোহাগা ও ধুস্ত রবীজ ; এই দকল দ্রব্য তুল্য পরিমাণে গ্রহণপূর্বক বামনহাটীর স্বরদে ই ছইপ্রছর কাল মর্দ্দিত করিবে। তদৰস্তর উহার সহিত পারার সমান পরিমাণে অজ্র মিশ্রিত করিয়া ২ ছই-রতি প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে অতি উঞ্চতর পৈত্তিক অতীসার নিবারিত হয়।

প্রাণেশরো রসঃ।—

রসগন্ধকমত্রঞ্চ উঙ্গনং শতপুষ্পকং। यमानी जीतकाश्रक প্রত্যেকং কর্মন্ত্রকং॥ - কর্যাকং যবক্ষারং হিন্দুপট্টকপঞ্চং। বিড্রেন্দ্যবং সর্জ্জরসককারিসংজ্ঞিতং॥ মুষ্টা চ বটিকা কার্য্যা নামা প্রাণেশ্বরো রসঃ। জ্বমতীসারকাপি বিবিধং নাশ্বেদ্রোগং ॥ প্রাণেশ্বর্সঃ।

পারা, গন্ধক, অভ্র মোহাগার থৈ, শতপুষ্পক (শলুফা), যমানী এবং জীরা ; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৪ চারিতোলা এবং যবক্ষার, হিছু , পঞ্চলবণ, বিভূদ্ধ, ইন্দ্রবৰ্গ ধুনা ও চিতা ় এই সকল বস্তু প্রত্যেকে ২ হুইতোলা ; সমু-দায় দ্রব্যগুলি পৃথকু পৃথক্ উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া একত্র মন্ধন করতঃ ১ মাষা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত্ত,করিবে। এই বটিকা দেবলে জরাতিদার প্রভৃতি নানাবিধরোগ বিনষ্ট হয়।

য়ত্সঞ্জীবনো রসঃ।—

রসগন্ধে সমে আছে। স্তপাদং বিষং ক্ষিপেৎ। मर्क्वजूनाः भ्रुक्कान्तः मक्ताः भ्रुक्तु इरेकक्ट रेवः ॥ मुश्रीका के दिवशीयः क्याद्यनाथ जावद्य । ধাতক্যতিবিষা মুন্তং শুগ্ঠী জীরক বালকং॥ यमानी धानाकः विनः পाठा পथा कवाबिछः। কুটজস্য ভুচ্ছ বীঙ্গং কপিথং বালদাভিমং॥

প্রত্যেকং কর্ষাত্রং স্যাৎ কুণ্ঠিতং কাপরেজ্ঞালৈঃ ।
চতুগুণিং জলং দন্তা যাবৎ পাদাবশেষিতং ॥
অনেন ত্রিনিনং ভাবাং পূর্ব্বোক্তং মদ্দিতং রসং ।
ক্রদ্ধা তরালুকাযন্ত্রে ক্ষণং মৃদ্বনিনা পচেৎ ॥
মৃতসঞ্জীবনো নাম চাস্য গুঞ্জাচতুষ্টরং ।
দাতব্যমনুপানেন চাসাধ্যমপি সাধ্যেৎ ॥
যট্ প্রকারমতীসারং সাধ্যাসাধ্যং জয়েদ্ধুবং ॥
মৃত্যঞ্জীবনরম ।

(সর্পাক্ষী – রাস্মা। বালক—বালা। ধাত্মত্ব—ধনে। কপিথ—করেদ্বেল)। পারা ৪ চারিভোলা, গদ্ধক ৪ চারিভোলা, বিষ ২ একভোলা এবং অজ্ঞ ৯ নয়ভোলা; এই সকল জব্য ধুতুরার রুসে পেষণপুর্ব্ধক রাস্মার রুসে একপ্রহর কাল মর্দ্দন করিবে। এই প্রকারে ৭ সাতবার ভাবনা দিবে। তদনস্তর ধাইফুল, আতইস্, মুথা, শুগী, জীরা, বালা, যমানী, ধনিয়া, বেলশুঠ, আক্লাদি, হরীত্রকী, পিপ্পলী, কুরচির ছাল, ইক্সয়ব, কদবেল, দাড়িমছাল এবং বালা; এই সকল বস্তু প্রভাতে ২ ছুইভোলা পরিমাণে এছণপূর্ব্ধক চতুপ্রণ জলের সহিত পাক করিবে। ঐ জলের চতুর্ভাগ মাত্র অবশিষ্ট থাকিতে, সেই ক্লাথের সহিত প্র্বেক্তি দ্রবাসকল তিনদিবস ভাবনা দিয়া, বালুকায়ন্তে মুহু অগ্রিসংবাণে পাক করিবে। এই ঔষধ ৪ চারিরতি প্রমাণে রোগার অবস্থা বিবেচনা-পূর্ব্ধক অন্থপানবিশেষে সেবন করাইলে সাধ্য, অসাধ্য প্রভৃতি সকল প্রকার অতীদার বিনষ্ট হয়।

নাগরাদি-চূর্ণম্।—

নাগরাতিবিষা মুন্তং দেবদার কণা বচা।
যমানী বালকং ধানাং কুটজত্বক্ হরীতকী॥
ধাতকীক্রয়বো বিলৃং পাঠা মোচরসং সমং।
চূর্ণিতং মধুনা লেছ্মনুপানং সুখাবহং॥
অতীসারং জ্বং বাপি গ্রহণীং পাণ্ডুদোষ্ক।
ক্রিমীংশ্চ রক্তাতিসারং হন্তি চূর্ণমিদং পরং॥

নাগরাদিচূর্ণ।

শুঠী, আডইচ, মুখা, দেবদাৰু, পিপ্পালী, বচ, ষমানী, বালা, ধনিয়া, কুরচির ছাল, ছরীতকী, ধাইফুল, ইন্দ্রধব, বেলশুঠ, আক্লাদি এবং মোচরদ; এই সমস্ত দ্রব্য সমস্তাগে এইংগপুর্বাক উত্তমপ্রকারে চুর্গ করিয়া লইবে। এই চুর্গ কিঞ্চিৎ মধুর সহিত সেবন করিলে অতীসার, জর, এইণী, পাণ্ডুরোগ, কিমি এবং রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

কারণ্যসাগরো-রসঃ 1-

ভস্মস্তাদ্বিধাগন্ধং যথা বিত্যং মৃতাল্রকং।

দিনং সার্যপতৈলেন পিন্টা যামং বিপাচয়ে ॥
রিদর্মার্কবনূলোথেঃ পিন্টা যামং বিপাচয়ে ।

ক্রিকার পঞ্চলবন বিষব্যোষাগ্নিজীরকৈঃ ॥

সবিড়কৈস্তল্যভাগৈরয়ং কারুণ্যসাগরঃ।

মাষমাত্রং দদীতাক্ত ভিষক্ সর্বাতিসারকে ॥

সন্ধরে বিশ্বরে বাপি সশূলে শোণিতোদ্ভবে।

নিরামে শোথযুক্তে বা গ্রহণ্যাং সাল্লিপাতিকে ॥

অনুপানং বিনাপাষ কার্যাসিদ্ধিং করিষ্যতি ॥

কাঞ্গানাগররম।

১ একভাগ রসসিন্দুর, ২ ছুইভাগ গন্ধক এবং ৪ চারিভাগ ভাজ একজ্ঞ করিয়া ১ এক দিবস সরিষার তৈল দ্বারা মর্দন করিবে। তদনস্তর বালুকামত্ত্বে অথবা মুৎপাত্তে এক প্রহরকাল পাক করিয়া, পুনরায় ভূলরাজের রসে
একিন মর্দন করিয়া আবার পূর্ববিৎ এক প্রহরকাল পাক করিবে। পরে
যবক্ষার, সোহাগা, সাচিক্ষার, সৈন্ধবলবণ, উদ্ভিদলবণ, সামুদ্রলবণ, সচললবণ, বিট্লবণ, বিষ, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, চিভা, জীরা ও বিভূল; এই ম্বব্য
গুলি প্রভাবে এক এক ভাগ গ্রহণপূর্বক পূর্বোক্ত প্রথধ সহ মিলিত করিয়া,
উভ্রমরপে মর্দন পূর্বক এক মাষা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই
প্রধ্ব ২ মাষা মাত্রায় সেবন করিলে অতীসার, জর, শূল, শোথ, গ্রহণী এবং
সামিপাত্তিক রোগসমূহ নিবারিত হয়। অলুপান ব্যভিরেকেও এই প্রথধ সমধিক ফলোপধায়ক হয়।

দিদ্ধ প্রাণেশরো রসঃ।—
গম্মেশাল্রং পৃথ্যেদ ভাগমন্যচ্চ ভাগিকং।
সর্জি টক্ষ রবক্ষারাঃ প্রেক্ষব লবণানি চ॥
বরা ব্যোষেশ্রবীজানি দ্বিজীরাগ্নি ষমানিকা।
সৃহিন্দু বীজসারক্ষ শতপুষ্পা চ চূর্ণিতা॥
দিদ্ধপ্রাণেশরঃ স্তঃ প্রাণিনাং প্রাণদারকঃ।
মাবৈকং ভক্ষরেদ্ধা নাগবল্লীন লৈযু তং॥
উক্ষোদকানুপানক দদ্যাভত্ত পলদ্বরং।
জ্বরাতীসারে বিহিতং কেবলে বা স্ক্রেহপি চ॥
জ্বে ত্রিদোষজে ঘোরে এহণ্যামস্গাময়ে।
বাতরোগে তথা শুলে চাতীসারে ত্রিদোষজে।

সিদ্ধ প্রাণেশ্বর।

(গন্ধ--গন্ধক। ঈশ-পারদ। সর্জ্জি--সাচিক্ষার। যবক্ষার-- সোরা। বরা-- ত্রিফলা (হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া)। ব্যোষ-- ত্রিকটু (শুগ্ডী, মরিচ, পিপ্পলী)। ইন্দ্রবীজ-- ইন্দ্রযব। দ্বিজ্ঞীরা-(শ্বতজ্ঞীরা ও ক্রক্ষজীরা। বীজসার -- বিড়ন্ধ। শতপুপ্পা-- শলুফা। নাগবল্লা-- তামুললতা)।

গন্ধক চারিভাগ, পারা চারিভাগ, অভ্র চারিভাগ ও দাজিমাটী, দোহাগা, যবকার, দৈরবলবণ, দচললবণ, ইস্তিদলবণ, বিট্লবণ, দামুদ্রলবণ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, ওঠী, পিপ্পলী, মরিচ, ইন্দ্রয়ব, জীরা, কৃষ্ণজীরা, চিতা, যমানী, হিন্দুল, বিড়ঙ্গ, এবং শলুকা; এই সমুদার প্রভাকে এক একভাগ; এই সকল দ্রব্য পৃথক্ পৃথক উত্তমরূপে চুর্গ করিয়া, একত্র মিশ্রিত করিবে। এবং জ্বলাহ বাটিয়া একমাযা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বড়ী পানের রম ও দ্বিসহ দেবন করিলে জর, জ্বাতিদার, ত্রিদোযজ-জ্ব, এহণী, রক্তাতিদার, বক্তপিত্র, বাতরোগ, শূল ও ত্রেদেয়িক অতীদার রোগ নিবারিত হয়। এই ঔষধ দেবনান্তে দেড়পোয়া উষ্চ্জল পান করিছে দিবে। এই ঔষধটী জ্বাতিদার, অতীদার ও রক্তাতিদারে প্রয়োগ করিয়া অসংখ্যবার উপকার পাওয়া গিয়াছে।

অমুতার্পব-রসঃ।---

হিন্ধলোখে। রসো লৌহং গন্ধকং টক্ষং শঠা।
ধান্যকং বালকং মুন্তং পাঠা জীরং ঘুণপ্রিরা॥
প্রত্যেকং তোলকং চূর্ণং ছাগস্থান পেষিতং।
মাবৈকা বটিকা কার্যা রসো হয়ময়তার্ণবঃ॥
একৈকাং ভক্ষরেৎ প্রাত র্গহনানন্দভাবিতাম্।
ধান্যজীরকষ্বেণ বিজয়া সালবীজতঃ॥
মধুনা ছাগস্থানে মণ্ডেন শীতবারিণা।
কদলীমোচকরসৈঃ কঞ্চ দ্রবজেন বা॥
অতীসারং নিহন্তাগ্রমেকজং দ্বন্ধ জং তথা।
দোষত্তর-সমুদ্ধ ত মুপসর্গ সমন্বিতম্।
শূলম্মে বহ্জিজননো গ্রহণ্যশো বিকারজিৎ।
অম্লিভপ্রশমনঃ কাসাম্মে গুলুনাশনঃ॥

ইতি জ্বিরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো জ্বাতীসারাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি চতুর্বোহধ্যায়ঃ সমাপ্ত:।

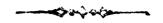
অমুতার্ণবর্ম।

(বুণপ্রিয়া—আওইচ। বিজয়া—ভাঙ্)।

হিন্দুলোখ পারদ, লৌহ, সোহাগা, গন্ধক, শঙ্গী, ধনিয়া, যালা, মুধা, আফাদি, জীরা, আতইন; এই সমস্ত দ্রব্য প্রভেকে ১ একভোলা মাত্রায় গ্রহণপূর্পক উত্তমপ্রকারে চূর্ন করিবে। পরে ঐ চূর্নিত বস্তু সমুদায় একত্র করিরা, ছাগছয় নহ পেয়ণ করভঃ একমাষা প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ধনিয়ার যুব, জীরার যুয, সিদ্ধি, শালবীজ, মধু, ছাগীছয়, মণ্ড, শীতলজল, কলামোচাররম অথবা কাচড়ার রমের সহিত সেবন করিলে সমস্ত উপস্তের মহিত একজ, দুদ্দুত্ব ও ত্রিদোষজ সকলপ্রকার অতীসার বিনক্ত হয়। এবং এই ঔষধ শূলয়, অগ্রিদীপক, গ্রহণী ও অর্শেবিকার নাশক, অমপিতের শান্তিকারী, কাসাপহারক ও গুলা-বিনাশক।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" প্রস্থে জ্বরাতিদার চিকিৎসা দমাপ্ত। চতুর্থ-অ্থাায় দমাপ্ত।

পঞ্মো ২ধ্যায়ঃ।



অথাতী দারা দিকারঃ।

ামপক ক্রমং হিত্বা নাতিসারে ক্রিয়া যতঃ।
অতঃ সর্ব্বাতিসারেষু জ্রেয়ং পক্রামলক্ষণম্॥
অতঃপর অতীসার-চিকিৎসা কথিত হইতেছে।

প্রথমতঃ অভীসার বোণের আম লক্ষণ ও পক্ষ লক্ষণ অবগত হওয়া উচিত। কারণ-যদি আমাতিদারে পক্ষাতিদারের ক্রিয়া অর্থাৎ ধারক প্রয-ধাদি প্রয়োগ করা যায়; অথবা পক্ষাতিদারে আমাতিদারের ক্রিয়া অর্থাৎ লক্ত্যন প্রভৃতি ব্যবস্থা করা যায়, ভাষা হইলে মছৎ অনিষ্ট ঘটিয়া থাকে। অভএব অভিদারে সর্বপ্রথমেই আম ও পক্ষ লক্ষণ জ্ঞাভ হইয়া, পশ্চাৎ ভদ্দারে চিকিৎসা করিতে প্রস্তু হইবে।

আমে বিলজ্জনং শস্তমাদৌ পাচনমেব বা।
কার্য্যসানশনসাত্তে প্রদ্রেবং লঘুভোজনং ।
লজ্জনমেকং নান্যদন্তীহ ভেষজং বলিনঃ।
সমুদীর্নং দোষচয়ং শময়তি তৎ পাচয়তাপি বা॥

অতীদার রোগের আমাবস্থায়, প্রথমত: বিশিষ্টরপে লঙ্গন ও পাচন শুষধ ব্যবস্থা করা উচিত। তদনন্তর লঙ্গনাস্তে মণ্ড, পেয়া, যবাগৃ প্রভৃতি প্রকৃষ্ট অথচ লঘুপাক দ্রব্যাকল ভোজন করান বিগেয়। অতীদার রোগে যে দকল দ্রব (তরল) পদার্থ ব্যবহার করিতে নিষেধ আছে। তাহা কেবলমাত্র দ্রমাদি অবিহিত অনিষ্টকর দ্রববস্তু সন্তম্বে নিষেধ জানিবে; অর্থাৎ পেয়া, যবাগু প্রভৃতি নিষিদ্ধ নহে।

বলবান রোগীর পক্ষে লঙ্ঘনের তুলা শ্রেষ্ঠতর অন্ত ঔষধ আর কিছুই নাই। যেহেতু লঙ্ঘন দারা দোষের শান্তি ও পরিপাক হইয়া থাকে।

হ্রীবের-শৃঙ্গবেরাভ্যাং মুস্ত পর্পটকেন বা।
মুস্তোদীচ্য শৃতং তোয়ং দেয়ং বাপি পিপাসবে॥
(হ্রীবের—বালা। শৃঙ্গবের—শুঠ। পর্পটক—ক্ষেৎপাপড়া। উদীচ্য—
বালা।)

নাবা ১ একভোলা, শুঠ ১ একভোলা কিমা মুখা ১ একভোলা, কেংশোপড়া ১ একভোলা অথবা মুখা ১ একভোলা ও বালা ১ একভোলা লইনা,
শর্জদের জলে দিদ্ধ করিরা, অবশিষ্ট অর্দ্ধপোরা থাকিতে নামাইবে। এবং
শক্ষিয়া দিটে বাদ দিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ পান করিলে অভীলার রোগুীর পিপাদা নিবারিত হয়।

যুক্তে হন্নকালে কুৎক্ষামং লঘুন্যন্নানি ভোজয়েৎ।
ঔষধ নিদ্ধ পেয়া-লাজানাং শক্তবোহপ্যতিসারহিতাঃ॥
বস্ত্র-প্রসূত মণ্ডঃ পেয়া চ মসুরযুষশ্চ॥
(লঘু অন্ন – মণ্ড, পেয়াদি। কুংক্ষাম — কুধার কীণ। লাজ — থৈ।)

নিয়মিতরপ লজ্মন দ্বারা রোগী ক্ষুধায় কাতর হইলে, ভাছাকে লঘু অন্ন ভোজন করাইবে। এবং ধান্তপঞ্চক বা পঞ্চকোলাদি সিদ্ধ পেয়া, খৈ চূর্ণের শক্ত (ছাতু), বস্ত্র পরিমুক্ত মণ্ড, বস্ত্র পরিমুক্ত পেয়া ও মস্থর্য । এই সকল পথা ব্যবস্থা করিয়া দিবে।

ন তু সংগ্রহণং দন্যাৎ পূর্ববর্ণামাতিসারিনে। 'দোষা হাদো রুধ্যমানা জনয়ন্ত্যাময়ান্ বহুন॥
. শোথ-পাণ্ডাময়প্লীছ-কুন্ঠ-গুল্মোদর জ্বান্।
দশুকালসকাপ্লানগ্রহণ্যশোগদাংস্তদা॥

আমাতিসার-রোগীকে প্রথমাবছায় কোনপ্রকার ধারক উষধ (যে উষধ দারা মল রোধ হয় অর্থাৎ উপস্থিত মল-ভেদ বন্ধ হইয়া থাকে) প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য নহে। যেহেতু ধারক ঔষধ দারা দোষসমূহ রুদ্ধ হইয়া শোথ, পাণ্ডু, প্রীহা, কুঠ, গুলা, উদর, জ্বর, দগুক, অলসক, আধ্যান, গ্রহণী ও অর্শ: প্রভৃতি নানাবিধ রোগ উৎপাদিত হয়।

স্তোকং তোকং বিবদ্ধং বা সশূলং যোহতিসার্যাতে। অভয়া পিপ্পলী কল্কৈঃ সুখোদৈন্তং বিপাচয়েৎ॥

ষদাপি অতীসার রোগীর বদ্ধ মল অন্প অন্প পরিমাণে নির্গত হয়, এবং উদরে শূলবিদ্ধবং বেদনা থাকে; তাহা হইলে হরীতকী ও পিপুল সমভাগে এহণপূর্ব্ধক ঈষদ্বফ জলের সহিত বাটিয়া রোগীকে সেবন করিক্তেদিরে। ইহাতে দোষের পরিপাক হইয়া থাকে।

গুর্নী পিণ্ডী ধরাভ্যর্থং লঘ্নী সৈব বিপর্যায়াৎ। শক্তৃনামাশু জীর্যোড মৃত্ত্বাদবলেছিকা॥

শইমের ঐ ড়া উষ্ণ জলে একণ (আলোড়নপূর্বক মর্দন) করিয়া, পিথাকার করতঃ অভীসার রোগীকে আহার করিতে দিবে। ঐ পিও বদাপি অভ্যস্ত কঠিন হয়, ভাহা হইলে উহা অভাধিক গুরুপাক হইয়া থাকে; এবং ভাহার বিপরীত অর্থাৎ মুদ্র হইলে লুমুপাক হয়। অভএব অবলেহনধোগ্য পিণ্ডিকা প্রস্তুত করিয়া, অতীসার-রোগীকে সেবন করিতে দিবে কারণ-কোমলতা নিবন্ধন উহা শীজ্ই পরিপাক ছইয়া থাকে।

यण्यभान्यभागिः।-

শালপণবিলাবিলৈঃ পৃশ্বিপর্ণাচ সাধিতা।
দাড়িমারা হিতা পেয়া পিভশ্নেষাতিসারিণাম্।
স্বল্পশালপর্ণাদি।

শালপানী, বেড়েলা, বেলশু ঠ ও চাকুলের সহিত সাধিত পেরা দাড়িমের রসের সহিত মিশ্রিত করিয়া, পিত্তশ্লেষ্মজনিত অতীসার-রোগীকে সেবন করিতে দিবে।

রহচ্ছালপর্ণ্যাদিঃ।—
শালপর্ণী পৃশ্লিপর্ণী রহতী কণ্টকারিকা।
বলাখদংক্র: বিল্যানি পাঠা নাগর ধান্যকং।
এতদাহারসংযোগে হিতঃ সর্ব্বাতিসারিণে॥

त्रश्ष्टान भग्रापि।

(শালপর্ণী – শালপাণী। পৃত্মিপর্ণী – চারুলে। বহুতী – ব্যারুড়। বলা — বেড়েলা। শ্বদ ক্রা—গোক্র। পাঠা—আক্নাদি। নাগর – শুঠ। ধা্ত্যক – থনে।)

শালপাণী, চাকুলে, রহতী, কন্টকারী, বেড়েলা, গোক্ষুর, বেলশুঠ, আক্-নাদি, শুঠ ও ধনিয়া; এই সমুদায় বস্তুর সহিত পাক করা মণ্ড, পেয়াদি অতীসার রোগীর পক্ষে অতীব হিতজনক।

> যবাগু মুপভুঞ্জানো ন তু ব্যঞ্জনমাচরে । শাক্ষাংসফলৈযু ক্তা যবাথোইয়াশ্চ ভুষ্করাঃ॥

অতীসার রোগীর পক্ষে একমাত্র যবাগৃই স্থপথ্য বলিয়া জানিবে। কিন্তু যবাগৃর সহিত কোনপ্রকার ব্যঞ্জনানি সেবন করা উচিত নছে। কারণ--শাক, মাংস এবং ফলযুক্ত যবাগৃ অস্লপাক ও ফুপাচ্য ইইয়া থাকে।

ধান্যপঞ্চ সংসিদ্ধো ধান্যবিশ্বক্তোইখবা।

, আহারো ভিষজা যোজ্যো বাতশ্লেম্মাতিসারিণাং॥ বাতপিত্তে পঞ্চল্যা ককে বা পঞ্চোলকৈঃ॥

বাতলেখাতিদার-পীড়িত ব্যক্তিকে পশ্চালিখিত ধামপঞ্চকের সহিত অথবা ধনিয়া ও শুঁঠের সহিত সংসাধিত পেয়া দেবন করিতে দিবে। আর বাতপিতাতিদার রোগে স্বন্পপঞ্চমূলী দ্বারা এবং শ্লেখাতিদার রোগে জ্বাধি-কারোক্ত পঞ্চ্চোলের সহ সাধিত পেয়া অতীব হিতজ্ঞনক বলিয়া জানিবেঃ

> ধান্যোদীচ্য-শৃতং তোরং তৃক্ষাদাহাতিসারনুৎ। জাভ্যামেব স্পাঠাভ্যাং সিদ্ধমাহারমাচরেৎ॥

ধনিয়া এবং বালা; এই উভয়ের সহিত সিদ্ধ করা জ্বলা পিপাসা, দাহ এ অতীসার বিনাশক। জ্বরে কথিত ষড়ঙ্গ পানীয়ের স্থায় এই জ্বল প্রস্তুত করিতে হয়। অপর ধনিয়া, বালা ও আক্লাদি; এই ৩ তিনটী বস্তুর সহিত্ত সংসাধিত পেয়াও অতিসার-রোগীর পক্ষে সাতিশর হিতকর।

দোষাঃ দুল্লিচিতা যদ্য বিদ্যাহারমূর্চ্চিতাঃ।

অতীদারায় কম্পান্তে ভুয়ন্তান্ সংপ্রবর্তয়েৎ॥

যে ব্যক্তির পূর্ব্ব সঞ্চিত দোষত্রর (বাত, পিত্ত ও কফ), আহারীর স্থক্ত অব্যের স্থিপ্পতাপ্রযুক্ত অতিশয় রুদ্ধিপ্রাপ্ত হইরা, অতীসার রোগ উৎপাদন করে, তাহার সেই দোষ স্বয়ং নির্গত হইলেও বিরেচক ঔষধ প্রয়োগ দ্বারা তাহা সম্বর নিঃসারিত করিয়া দেওয়া কর্ত্তব্য।

পকো২দর্দতীসারো এহণী-মার্দ্বাদ্ যদা।

প্রবর্ত্ততে তদা কার্যাঃ ক্ষিপ্রং সাংগ্রাহিকো বিধিঃ॥

প্রছণীর (অগ্নাধিষ্ঠান মাড়ীবিশেষের) মৃত্তাবশতঃ প্রকাতিয়ার রোগে যখন অবিরত পুরীষ (বিষ্ঠা বা মল) নির্গত হইতে থাকিবে। তৎকালে অতি শীস্ত্র ধারক ঔষধ প্ররোগ দ্বারা দেই মল রোধ করিবে। যেহেতু অধিক পরি-মাণে মল নির্গত হইলে, রোগী সাতিশয় ক্ষীণ হইয়া পড়ে। স্কুতরাং তদ্ধারা বিষম অনুর্থ ঘটিবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।

> বিল্চৃতান্থি-নির্যাহঃ গীতঃ সক্ষৌদ্র-শর্করঃ। নিহন্যাচ্ছদ্যিতীসারং বৈশ্বানর ইবাহুতিং॥

(বিল্ — বেলশুঠ। চ্তান্থি — আমের কচি আঁটি। নির্গৃহ — কাথ। ক্লোক্ত — মধু। বৈধানর — অগ্নি। আহুতি — হোমার্থে অগ্নিতে প্রদত্ত মৃতাদি বস্তু।)

একতোলা বেলশুঠ এবং একডোলা আত্রকেশী (আঁবের কদী) প্রছণপূর্ব্বক অর্দ্ধনের জলসই দিদ্ধ করিয়া, অর্ধপোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে;
এবং ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া কাথ প্রহণ করিবে। এই কাথ। দিকিডোলা
মধু ও। দিকিডোলা ইকুচিনি সহ মিশ্রিত করিয়া অতীসার রোগীকে সেবন
করিতে দিবে। যেমন অগ্নি ছোমকারীর প্রদত্ত আছতিকে প্রাপ্তিমাত্র উহা
প্রহণপূর্ব্বক ভস্মদাত্র করিয়া থাকে, সেইরূপ এই কাথ সেবনমাত্রেই রোগীর
বিমাণয়ক্ত অতীসার বিনাশপ্রাপ্ত হয়।

भटिंगिनिः।—

পটোল ষবধন্যাক কাণঃ পেয়ঃ সুনীতলঃ।

. " শর্করা মধুনংযুক্ত শহ্দ্যতিসারনাশনঃ॥

भटिंगनामि ।

পটোলপত্র (পল্তা), যব ও ধনে; এই জব্যত্তর মিলিড ২ তোলা মাত্র

এছণ পূর্ব্বক অর্কদের জল সহযোগে সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্কপোরি রাখিয়া নামাইবে। এবং ছাকিয়া কাথ এহণপূর্ব্বক তৎসহ ২ছইমাযা মধু ও ২ছইমাযা ইকুচিনি মিশ্রণ করিয়া, সেবন করিলে অতীসার ও বমি নিবারিত হইয়া থাকে।

জাতিফলাদি-লেহঃ।—

জাতীফলং ত্রিদশপুষ্পাসমন্বিতক, জীরক টঙ্গণযুতমুষিভিঃ প্রণীতং। এতানি মাক্ষিক সিতাসহিতানি লীট্বা, আমাতিসারমখিলং গুরুষাশু হস্তি॥

জাতিফলাদি লেহ।

(জাতীফল-জায়ফল। ত্রিদশপুষ্প--লবঙ্গ।)

জায়ফল, লবঙ্গ, জীরা এবং সোহাগার থৈ; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক চূর্ণ করতঃ একত্ত মিশ্রিত করিয়া, চিনি ও মধুর সহিত অবলেহ প্রস্তুতকরতঃ, প্রবল আমাতিসার রোগীকে লেহনপূর্বক সেবন করিতে দিলে, সকলপ্রকার আমাতিসার আশু নিবারিত হয়।

অহিফেনযোগঃ।--

গুঞ্জ:মিতমহিকেনং ছাগড়ুশ্বেন যুঞ্জানং।
অতিসারং বহুবেগং নিবায়ত্যাশু নিশ্চিতং॥
অহিকেনাতিযোগেন নাতিসারো নিবর্ততে।
কিন্তু স্য বহুভির্যোগৈর্না মতোহমূত এব সং॥
অহিকেন্যোগ।

> এক রতি অহিফেন (আফিঙ্) ছাগত্বন্ধে মিশ্রিত করিয়া রোগীকে সেবন করাইলে, বছবেগ সংযুক্ত সর্বপ্রকার অতীসার নিবারিত হয়। অহি-ফেন একবারে অধিক মাত্রায় প্রয়োগ করিলে, কোনপ্রকার উপকার হয় না; বরঞ্চ ভাছাতে অপকার হইবারই সম্ভাবনা। কিন্তু অভি অপ্পেমাত্রায় পুনঃপুনঃ (বারে বারে) প্রয়োগ করিলে বিশেষ উপকার হইয়া থাকে।

দাড়িমাদিঃ !-

কষারো মধুনা পীতস্ত্রচো দাড়িম বংসকাং। ' সদ্যো জয়েদতীসারং সদ্যোগিতং স্থলারুণং॥

माङ्गिनि।

কচি দাড়িমকলের ছাল ১ একভোলা এবং কুর্চিমূলেরছাল ১ একভোলা গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধসের জ্বলের দহিত সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপ্রের অর্দাইত থাকিতে লামাইবে। এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ গ্রহণ করিয়া, ভাহাতে মধু॥। ভোলা প্রকেপ দিয়া, দেই কাথ সেবন করিলে হর্নিবার রক্তাভিসার সম্বর শিষারিত হয়।

গুড়বিলুমৃ।—

গুড়েন খাদিতং বিলুং রক্তাতীসারনাশনং। আমশূল-বিবন্ধত্বং কুক্ষিরোগ-নিবারণম্॥ গুড়বিল্।

কিঞ্চিৎ গুড়ের সহিত কিছু পরিমাণে দগ্ধ বিলু (পোড়া বেল) ভক্ষণ করিলে রক্তাতিসার, আমশুল, বিবন্ধ ও কুক্ষিরোগ বিন্দ্র হয়।

ধান্যপঞ্চৎ ধান্যচতুক্ষঞ।---

ধান্যকং নাগরং মুন্তং বালকং বিলুমেব চ।
আমশূলং বিবদ্ধস্থং পাচনং বহ্নিদীপন্ম।
ইদং ধান্যচতুক্ষং স্যাৎ পৈতিকে নাগরং বিনা॥

ধাক্তপঞ্চক।

থনে, শুঁঠা মুখা, বালা ও বেলশুঠ; এই দ্রব্যসকল সমভাগে সমস্তে ২ হুইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /। তর্জনের জলের সহিত পাক করিয়া, অব-শিক্ট / এ তর্জপোয়া মাত্র থাকিতে নামাইবে, এবং ছাকিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথে ॥ তর্জভোলা মাত্র মধু প্রক্রেপ দিয়া দেবন করিলে, আমজনিত শূল ও বিবদ্ধ আম নক্ট হইয়া, দোষের পরিপাক ও অগ্নির দীপ্তি রদ্ধি পায়।

ধাক্তচতুষ্ট।

পূর্ব্বোক্ত ধান্তপঞ্চকের মধ্য হইতে শুগী বাদ দিয়া, অবশিষ্ট ৪ চারি দ্রবোর অর্থাৎ ধনে, মুথা, বালা ও বেলশু ঠের পূর্ববৎ পাচন প্রশ্নত করিয়া, রোগীকে দেবন করাইলে পৈত্তিক অতিসার বিনম্ভ হয়।

প্রমথ্যাঃ ৷—

িপেলীং নাগরং ধান্যং শুতিক্যভয়াং বচাম্।
হীবের ভদ্রমুন্তামি বিলুনাগর ধান্যকৈঃ॥
পৃশ্লীপর্ণী-স্বদংক্রা চ সমস্পা কণ্টকারিকা।
তিভ্রঃ প্রমথ্যা বিহিতাঃ শ্লোকার্দ্ধিরতিসারিণাম্॥
ককে পিত্তে চ বাতে চ ক্রমানেতাঃ প্রকীর্দ্ধিতাঃ।
সংজ্ঞাঃ প্রমথ্যা জ্ঞাতব্যা যোগে দীপনপাচনে॥
প্রমথ্যা।

(নাগর-শুগী। ধান্ত-ধনে। ভূতিক-যমানী। অভয়া-হরীতকী।)

১। পিপুল, শুঁঠ, ধনিয়া, যমানী, হরীতকী ও বচ; এই সকল দ্রব্য সমর্ভাগে ২ ভোলামাত্র এইণপূর্বক অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অর্জ-পোরা অবশিক্ট থাকিতে নামাইয়া, তাহার কাথ এহণ করিবে। এই কাথ সেবন করিলে কফল্প অতীসার নিবারিত হয়।

- ২। বালা, মুথা, বেলশু ঠ, শু ঠ ও ধনিয়া; সমভাগে সমতে **ওভোলা-**মাত্র এছণপূর্বক অর্কদের জলের সহিত সিদ্ধ করতঃ অর্ধপোয়া মাত্র শেষ থাকিতে ক্বাথ এছণ করিবে। এই ক্বাথ সেবন করিলে পৈত্তিক অতীসার নিবারিত হয়।
- ০। গোক্ষর চাকুলে, বরাহক্রান্তা এবং কণ্টকারী। এই সকল জবা সম-ভাগে সমস্তে ২ তুইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক ভার্ন্তার জলে সিদ্ধ করিয়া, অব-শিক্ট অর্দ্ধপোয়া মাত্র থাকিতে নামাইয়া, ছাকিয়া ক্রাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্রাথ বাভিকাতীসার রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

পূর্ব্বোক্ত ৩ তিনটী যোগ প্রমধ্যা বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকে। এই যোগত্রয় দোষের পরিপাচনে ও অগ্নুদ্দীপনে অতীব উপযুক্ত।

নাগরাদিঃ।-

নাগরাতিবিষামুইস্তর্থবা ধান্য নাগইরঃ।
তৃকা শূলাতিসারত্বং পাচনং দীপনং লঘু॥
নাগরাদি।

শুপ্ঠী, আতইন ও মুথা অথবা ধনিয়া ও শুপ্ঠী; সমভাগে সমন্তে ২ ছই-তোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /॥ অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট /১ অর্জপোয়া রাখিয়া নামাইবে। তদনন্তর ছাকিয়া নিটে বাদ দিয়া ক্লাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথ দোষের পরিপাচক, অগ্নিপ্রদীপক ও লঘু এবং ভ্যা, অতিসার ও শূলবৎ বেদনা বিনাশ কারক।

কঞ্চকাদিঃ।---

কঞ্চকজমুদাড়িম শৃঙ্গাটকপত্রবিলুহীবেরম্।
জলধর নাগরসহিতং গঙ্গামপি বেগিনীং রুদ্ধ্যাৎ॥
কঞ্চকাদি।

(কঞ্চক – কাঁচ্ডাদাম। জম্ম – জাম। শৃঙ্গাটক—পানীফল। ছীবের – বালা। জলধর – মুখা। নাগর – শুগী।)

কাঁচ্ড়া, জন্মুত্বক্, দাড়িমের ছাল, শৃঙ্গাটকপত্র, বেলশুঠ, বালা, মুথা এবং শুঠী; এই সকল বস্তু সমভাগে সমস্তে ২ হুইডোলা মাত্র এইণপূর্বক অর্ধ্ধ-সের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্ধ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া কাথ লইবে। এই কাথ সেবন করিলে অতীব ক্রতন্তোতাবাহিনী নদীর স্থায় শুভি প্রবল বেগবান্ অভীসারও নিবারিত হয়।

কুটজত্বগাদিঃ।—

কুটজত্বক্ ফলং মুস্তং কাথয়িত্বা জলং পিবেৎ। অতীসারং জয়েদাশু শর্করা মধুযোজিতঃ॥

कृष्टेख प्रगामि।

কুর্চিছাল, ইক্রমন এবং মুখা; এই দ্রন্যত্তর স্মভাগে সমস্তে ২ ছইতোলা দাত্র প্রহণপূর্বক অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিরা, অবশিষ্ট / ১ ০ অর্জ-পোরা থাকিতে নামাইরা কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ। ি সিকিতোলা মধু ও । ি সিকিতোলা ইকুচিনি সহ সেবন করিলে, প্রবল অভীসারও আশু নিবারিত হয়।

কুটজাদিঃ।—

কুটজাতিবিশামুন্তং হরিদ্রা পর্ণিনীম্বয়ম্। সন্দৌদ্রশর্করং শস্তং পিত্তশ্লেম্বাতিসারিণাম্॥ কুটজাদি।

কুটজছাল, আতইন, মুখা, ছরিদ্রা, শালপাণী এবং চাকুলে; এই সকল দ্রব্য সমান প্রিমাণে সমস্তে ২ হুইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /।• অদ্ধ্যের জল সহযোগে পাককরতঃ, অবশিষ্ট /১ হুইছটাক মাত্র রাখিয়া চুলী ছইতে নামাইবে। এই ক্লাথ।• সিকিভোলা মধু এবং।• সিকিভোলা ইকুচিনির সহিত্ত সেবন করিলে পিত্তরেম্মাতিসার শীক্তই নিবারিত হয়।

কুটঙ্গাফ্টকঃ।--

কুট জং দাড়িমং মুস্তং ধাতকী বিল্ বালকম্।
লোগ্র চন্দন পাঠাশ্চ কবায়ং মধুনা পিবেৎ ॥
সামে সশ্লে রক্তে চ পিছাজ্রাবে চ শস্তে।
কুটজাই ইতি খ্যাতঃ সর্বাতিসারনাশনঃ॥
কুটজাইক।

কুর্চিছাল, দাড়িমের ছাল, মুথা, ধাইফুল, কচিবেল, বালা, লোধ, রক্তচদ্দন এবং আক্নাদি; এই দকল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ হুই তোলা মাত্র এছণপূর্বক অর্ধদের জলৈর সহিত দিছ করিয়া, অবশিষ্ট অর্ধপোয়া মাত্র থাকিতে নামাইরে এবং একখানি পরিষ্কার দক্ষ বস্তুদ্বারা ছাকিয়া জলীয় ভাগ কাথ এছণ করিবে । এই কাথ । চারি আনা মধুসছ পান করিলে, শূল-বেদনা সংযুক্ত আমাতিসার, রক্তাতিসার এবং আদের পিচ্ছিলতা ও আব নিবারিত হয়। ইহাকে কুটজাইক বলা যায়। ইহা সকল প্রকার অভিসার-বিনাশক।

मयङ्गानिः।—

সমঙ্গাতিবিষা মুক্তং বিশ্বং ব্রীবের ধাতকী।

কুটজত্বক্ ফলং বিলৃং কাথঃ সর্বাতিসারমূৎ॥

সমজাদি।

वतारकाखा, जाउरेम, मूथा, ७०ी, वाला, बारेकूल, क्तिक हाल, रेख्यव

এবং বেলশুঠ; এই সকল জব্য সমান পরিমাণে এছণপুর্বক / চি অর্জনের জলের সহিত পাক করত: / ১ অর্জপোরামাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিরা কাথ এছণ করিবে। এই ক্লাথ পান করিলে, সকলপ্রকার অভীসার রোগ বিনষ্ট হয়।

দলোখঃ স্বরসঃ পীতো হিজ্জলস্য সমাক্ষিকম্। . জরন্ত্যামমতীসারং কাপে। বা কুটঙ্গবুচঃ॥

হিজ্ঞলপত্রের স্বর্য অথবা কুর্চি ছালের কাথ মধুসছ সেবন করিলে, সকলপ্রকার আমাতিসার নিবারিত হইয়া থাকে।

> বটারোহস্ত সংপিষ্য শ্লন্ধ তণ্ডুল-বারিণা। তং পিবেৎ তক্রসংযুক্ত মতীসার রুজাপহম্॥

বটের স্থান ক্ষান কুঁড়ি তণ্ডুলজলের সহিত বাটিয়া, তক্রসহ মিশ্রণপূর্বক সেবন করিলে, অতিমার এবং ভজ্জনিত বেদনা সমূহ নিবারিত হয়।

নাভি প্রলেপঃ।-

কৃত্বালবালং সুদৃঢ়ং পিষ্টেরামলকৈ ভিষক্।
আদ্রুক্স্য রদেশশু প্রয়েন্ নাভিমওলম্॥
নদীবেগসমং ঘোরষতীসারং নিবারয়েৎ॥
নাভিগলেপ।

অভীসার রোগীর নাভিমগুলের চতুর্দিকে আমলকী বাটিয়া তদ্ধারা রন্ত. কার আলবাল (আলি) দিবে এবং তাহার মধ্যভাগ আদার রস দারা পরি পূর্ব করিবে। ইহাতে নদীবেগসদৃশ অতি প্রবল বেগলীল অতিসারং বারিত হয়।

কুটজাবলেহঃ।—

শতং কুটজ মূলসা কুন্নং তোরার্মণে পচেৎ।
কাথে পাদাবলেষে ইস্মিন্ লেহং পূতে পুনঃ পচেৎ॥
সৌবর্চনে যবকার বিড়িলের পিপেলী।
ধাতকীন্দ্রযাজাজীচুর্নং দত্তা পলদ্বরম্॥
লিছাদ্বনরমাত্রন্ত শীতং ক্ষোড্রের্ণ সংযুতম্।
পকাপক মতীসারং নানাবর্ণং সবেদনম্॥
দূর্ব্বারং গ্রহণীরোগং জরেচ্চেব প্রবাহিকাম্॥
কুটজাবলেছ।

। ২। • সাড়েবারসের কুর্চিমূলের ছাল উত্তমরূপে কুটিত করতঃ ৬৪ চৌষটি সের জলের সহিত পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে জল শুষ সূহয়া চতুর্বাংশ অর্থান যোলসের মাত্র অবশিষ্ট আছে, তথন চূলী হইতে দামাইরা, অকথানি পরিকার বস্ত্রদ্বারা ছাকিরা সিটে গুলি বাদ দিরা, জলীর-ভাগ কাথ এহণ করিবে। অনন্তর সচললবণ, সোরা, বিটলবণ, সৈন্ধবলবণ, পিপুল, থাইফুল, ইস্ত্রধব ও কৃষ্ণজীরা; এই দ্রবাগুলি সমভাগে সমতে ১৬পল অর্থাৎ /২ ছইসের মাত্র লইয়া অতি স্ক্র্যুরপে চূর্নিত করিবে। পারে এই চূর্ন দ্রবাগুলি পূর্বপ্রসূত কাথের সহিত মৃত্র অগ্নিসংযোগে পাক করিতে থাকিবে, যখন দেখিবে হাতা দিরা ঘুটিতে ঘুটিতে লেহবং হইয়া আসিয়াছে তখন চূদ্রী হইতে নামাইবে। ইহাকে কুটজাবলেহ বলে। ইহা বদর (কুল) প্রমাণ মাত্রায় শীতল করিয়া সেবন করিতে হয়। এই উষধ সেবন করিলে, নানাবিধ বর্ণসংযুক্ত ও দাফণ বেদনা সমন্বিত প্রাতিসার, আমাতিসার, হ্বর্বার এহণীরোগ ও প্রবাহিকারোগ নিবারিত হয়।

শল্লকী বদরী জন্ম শিয়ালাআর্জ্জুনত্ব ১৪। পীতা হুয়োন মধ্রাচ্যাঃ পৃথক্ রক্ত-বিনাশনাঃ॥ (শল্লকী—সিমূল। বদরী—কুল।)

দিমূলমূলের ছাল, কুলছাল, জামের ছাল, পিয়াল রক্ষের ছাল, আঁবের ছাল, আর্জুনছাল; ইহাদের যে কোন একটী বাটিয়া হৃষ্ণ ও মধুর সহিত্ত ভক্ষণ করিলে, সকলপ্রকার রক্তাভিসার প্রশমিত হইয়া থাকে।

রসাঞ্জনাদি-চূর্ণম্। -

রসাঞ্জনং চাতিবিষং কুটজস্য ফলত্বু । ধাতকী শৃঙ্গবেরঞ্চ পিবেত্তপুলবারিণা॥ ক্ষৌদ্রযুক্তং প্রণুদতি রক্তাতিসারমুল্ণম্॥ রসাঞ্জনাদি চুর্ণ।

রসাঞ্জন, আতইস, ইন্দ্রয়বন, কুরচিমূলের ছাল, ধাইফুল এবং শুগী, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রন্থপূর্ব্বক চূর্ন করিয়া, ডণ্ডুলজ্বল ও মধুর সহিত সেবন করিলে, অতি প্রবল রক্তাতিসার শীত্রই নিবারিত হয়। হয়।

পীত্বা সশর্করং ক্ষোত্রং চন্দনং তণ্ডু লামুনা।
দাহং তৃষ্ণাং প্রমেহঞ্চ সদ্যো রক্তং বিনশ্যতি॥

ইকুচিনি, মধু ও রক্তচন্দন বাটা সমভাগে তণ্ডুলজলের সহিত সেবন করিলে, রক্তাভিসার, দাহ, তৃষ্ণা ও প্রমেহ সদাই নিবারিত হইয়া থাকে।

> মধুষ্তং নবনীতং লিহেদ্বা সিতরা সহ। নাগকেশর-মিলিতং রক্তসংগ্রহণং পরং। মধুপাদং সিতার্দ্ধাংশং নবনীতং চতুগুর্ণং॥

मर्। गिकिरडाला ७ रेक्ट्रिनि। गिकिरडाला २ इरे रडाला नवनीड मह

অথবা নাগেশ্বর ফুলের রেণু চূর্ণ ॥• অর্দ্ধভোলা ২ ভোলা নবনীভীন্ত সেবন করিলে, ব্লক্তভেদ নিবারিজ হয়।

পথ্যাদি-काशः।-

পথ্যাদারু বচা মুক্তৈর্নাগরাতিবিষান্থিতঃ। আমাতিসারনাশায় কাথমেভিঃ পিবেন্নরঃ॥

পথ্যাদিকাথ। (পথ্যা-ছরীতকী। দাক-দেবদাককাঠ।বচা-বচ।)

হরীতকী, দেবদাৰু, বচ, মুখা, শুণ্ঠী ও আতইচ ; এইসকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছই তোলা মাত্র প্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া কার্ধ এছণ করিবে। এই কাথ দেবন করিলে সকল প্রকার আমাতিসার নিবারিত হয়।

भाष्ट्रांकि हुर्गर। -

পাঠাহिक, जरमारनावा भक्रिकानाञ्चलः त्रजः। উক্ষায় পীতং সরুজং জয়ত্যামং সদৈশ্ববং॥ भागिमिहर्ग।

व्याकनापि, हिन्नू, वनयमानी वह এवः शक्षकान व्यर्थाय शिश्रुन-यूल, চই, চিতা ও শুগী; এই সকল ক্রব্য সমভাগে লইরা চূর্ণ করও:, সেই চূর্ণসহ সৈম্বলবণ মিশ্রণপূর্বক উষ্ণজ্বলের সহিত দেবন করিলে, বেদনা-সংযুক্ত আমাতিদার নিবারিত হয়।

হরীতক্যাদি-কল্কঃ।-হরীতকী সাতিবিষা হিন্ধু সৌবর্চ্চলং বচা।

সৈদ্ধবঞ্চাপি সংপিষ্য পায়য়েত্র্ফবারিণা॥ আমাতিদার হরো২য়ং পাচয়িত্বা চিকিৎসতি। আমাতিসার-রোগো হি ষদ্যেভেন ন শাম্যতি॥ ম তং যোগশতেনাপি চিকিৎসতি চিকিৎসকঃ।

হরীতক্যাদি কদক।

ह्यी छकी, आं छहेम, हिन्नू, मोवर्फललवर्ग, वह अदः मिन्नवलवर्ग ; अहे मकल বস্তু সমান পরিমাণে লইরা, উষ্ণ (গরম) জলের সহিত পেষণ করিয়া সেবন করিলে আমাতিসার বিনষ্ট হয়। এই বোগা (উষধ) দ্বারা যদি রোগীর আমা-তিসার রোগ নিবারিত না হয়, তবে শত শত যোগ ছারাও চিকিৎসা করি-লৈও দে রোগীর কিছুমাত্র ফল হইবে না।

वदमकां प्रि-का थशा -

় বৎসকাতিবিষা বিলৃৎ মুম্ভক বালকং শঠী। ্ অতীসারং জয়েৎ সামং চিরজং রক্ষপুলজিৎ॥

वरमकापि काथ।

ই প্রথব, আন্তইচ, বেল ওঁঠ, মুখা, বালা এবং শঠী; এই সকল দ্রব্য সম-ভাগে সমস্তে ২ হুইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্জপোয়া মাত্র রাখিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ সেবন করিলে শূলসংযুক্ত চিরকালোৎপন্ন আমাতিসার ও রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

লোগ্রাদি চূর্ণম্ ।—

ালোধ্রং ধাতকী বিলৃং মুস্তান্ত্রাস্থিকলিঙ্গকম্। পবেৎ মাহিষতক্রেণ পকাতিসংরনাশনং॥

লোঞাদি চূর্ণ।

লোধন ধাইফুল, বেলশু ঠন মুখা, আত্রের আগীর শাঁদ এবং ইব্রয়ব ; এই সকল দ্রব্য স্মৃমভাগে চূর্ণ করভঃ, মাহিষ ভক্র সহ দেবন করিলে পকাতিসার বিন্ত হয়।

গঙ্গাধর-চূর্ণম্। —

মোচরস মুস্তা নাগর পাঠারলু ধাতকীকুসুমৈঃ।
. চুর্নমথিতসমেতং রুণদ্ধি গঙ্গাপ্রবাহমপি সদ্যঃ॥
গঙ্গাধর চুর্ণ।

সোচরস, মুখা, শুঠী, আকনাদি, অরলু (শোণাছাল) এবং ধাইফুল; সমভাগে ইহাদের চূর্ন মথিত (তক্রভেদ অর্থাৎ নির্দ্ধল দথি বস্ত্র দ্বারা ছাকিরা লইলে যাহা হর, তাহা) সহ সেবন করিলে, জলবৎ মলভেদও আশু নিবা-রিত হর।

দ্বিতীয়-গঙ্গাধর-চূর্ণং।—

মুন্তা বৎদকবীজং মোচরসো বিল্ ধাতকী লোধ্রং।
ত তৃম্বিত সংপ্রযুক্তং গঙ্গামপি বেগবাহিনীং রুদ্ধ্যাৎ॥
ভিতীয় গঙ্গাধর চূর্ণ।

মুখা, ইন্দ্রথব, মোচরদা বেলশুঠ, ধাইফুল ও লোধ; এই ত্রব্য দকল সমভাগে চুর্ণ করভ: ইক্ষুগুড় ও মথিভের সহিত দেবন করিলে, জলের সার প্রবহ্মান মলভেদও নির্বত হইয়া থাকে।

রদ্ধ-গঙ্গাধর-চুর্ণং ।--

মুন্তারলুক শুঠীভি র্ধাতকী লোগ্রবালকৈঃ। বিলু মোচরসাভ্যাঞ্চ পাঠেন্দ্রয়ব বৎসকৈঃ॥ আন্তর্বীভং সমন্ধাতিবিষায়ুক্তেশ্চ চূর্ণিতৈঃ। মধু তথ্য লু পানীয়ং পীতং হক্তি প্রবাহিকাং॥

হব্তি সর্বানতিসারান্ এহণীং হক্তি বেগতঃ। রদ্ধং গঙ্গাধরং চূর্ণং রুদ্ধাৎ গীর্বাণবাহিনীং। রদ্ধ গঙ্গাধর চূর্ণ।

(मूख-मूथा। व्यत्तू-(भागाणाणा । वालक-वाला । विल्-(व्लक्ष्ठे । ममका-व्यवस्था ।)

মুথা, শোণাছাল, শু ঠ, ধাইফুল, লোধ, বালা, বেলশু ঠ, মোচরস, আক্নাদি, ইক্রঘব, কুর্চিছাল, আত্রের আটির শাস, বরাক্রান্ত এবং আডইচ।
এই সকল জবোর চূর্ণ মধু ও চাউলের জ্বলের সহিত সেবন করিলে
প্রবাহিকা, সকলপ্রকার অতীসার, গ্রহণী এবং জ্বলবং মলতেদ নিবারিত হইয়া
থাকে।

অক্ষোলমূলকল্ক শুণ্ডুলপয়সা সমাক্ষিকঃ পীতঃ। সেতৃরিব বারিবেগং ঝটিতি নিরুদ্ধাদতীসারং॥

আন্ধোল (আঁকড়) রক্ষের মূল পেষণ করিরা, চাউলের স্কর্ল ও মধুসছ সেবন করিলো, সেতু (বাঁধ) দ্বারা যেমন জলের বেগ নিবারিত হয়; তজ্ঞপ ইহাদারা অতীনার নিরত হইয়া থাকে।

> কল্কন্তিলানাং কৃষ্ণানাং শর্করা পঞ্চভাগিকঃ। আব্দেন পয়সা পীতঃ সদ্যোহতীসারনাশনঃ॥

১ একভাগ কৃষ্ণতিল এবং চারিভাগ ইকুচিনি একত্র মিশ্রণপূর্বক ছাগ-মুম্বের সহিত পান করিলে, সদ্যই রক্তাতিসার নির্ভ হইয়া থাকে।

> ক্ষম্পাধুকং লোধ্রং কৌটজং তণ্ডু লামুনা। পীত্রেকত্র সক্ষৌদ্রং রক্তসংগ্রাহণং পরং॥

ক্লফশ্ব জিকা, য**ডি**মধু, লোধ ও ইব্ৰেষৰ; সমভাগে চাউলের জলসহ ৰাটিয়া, মধুর সহিত সেবন করিলে রক্তাতীসার নিবারিত হয়।

কুটজকীরং।--

নিষ্কাণ্য মূলমমলং গিরিমল্লিকার্যাঃ,
সমাক্ পলদ্বিতয়মমু চত্ঃশরাবে।
তৎ পাদশেবং দলিলে খলু শোষণীয়ং,
ফীরে পলদ্বয়মিতে কুশলৈরজারাঃ।
প্রক্রিপা মাষকানটো মধুনন্তত্ত্ব শীতলে।
রক্তাভীসারী তৎ পীতা নৈরুজাং কিপ্রমাপ্র য়াৎ॥
কুটজানীর।

্ কুটজের মূলের ছাল উত্তমরূপে থৌত করিরা কুটিত করিবে। তদনস্তর /৪ চারিদের জ্বলের সহিত সিদ্ধ করিতে করিতে বখন দেখিবে চতুর্থাংশ অর্থাৎ 🗣 ১ একদের মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন উহার সহিত ছাগত্রগ্ধ ২ পল (२७ (डाना) मिनिष कतित्रा, शूनर्यात व्याधिमशुरात्य कान वित्रा इकार्यान के थाकिए नामारेत। পরে नीजन रहेल ৮ मावा मधूमित्रिक कतित्रा तकाजि-সার রোগীকে পান করিতে দিবে। ইছাতে রোগী নিশ্চয়ই আরোগা লাভ করিতে পারিবে।

শতাবরীকল্কো মৃতঞ্চ।---

পীত্বা শতাবরীকল্কং পয়সা ক্ষীরভুক্ জয়েৎ। রক্তাতিসারং পীত্বা বা তয়া সিদ্ধং দ্বতং বরং॥ শতাবরীকল্ক ও শতাবরীমত।

শতাবরীর কল্ক হুদ্ধ সহযোগে সেবন করিয়া হুদ্ধার ভোজন অথবা শত-মূলীর কল্ক ও স্বরম দারা ষ্ণানিয়মে স্বতপাক করিয়া দেবন করিলে রক্তাতীদার বিনষ্ট হয়।

চন্দ্ৰকল্কঃ।---

পীতং মধুসিতাযুক্তং চন্দনং তণ্ডুলামুনা। রক্তাতিসারজিজকপিভতৃড্দাহমেহনুৎ॥ **ठक्तकल्क** ।

মধু, চিনি এবং শ্বেতচন্দ্র সমভাগে পেষণপূর্ব্বক চাউলের জল সহ দেবন করিলে রক্তাতিমার, রক্তপিত, পিপাসা এবং দাহ নিবারিত হয়।

গুদল্রংশ চিকিৎসা।—

কোমল পদ্মিনীপত্রং যঃ খাদেচছর্করান্থিতং। পতন্নিশ্চিত্য নির্দিষ্টং ন তদ্য গুদ-নির্গমঃ॥ গুৰজংশ-চিকিৎসা।

পদ্মের নৃত্তন কোমলপত্র রৌজে শুষ্ক করিয়া চূর্ণ করওঃ, ইকুচিনির সহিত (मनन क्रिट्ल निभ्ठाई **अ**पर्जंश्म कार्द्वागा इत्र।

চব্যাদি-কাণঃ।—

চব্যং সাভিবিষা মুক্তং বালবিলৃং সনাগরং। ঁবৎসক ত্বক্ কলং পথ্যা ছদিপ্লেম্বাতিসারনুৎ॥

• চব্যাদিকাথ।

চই, আতইচ, মুথা, কচিবেল, শুঠ, কুর্চিছাল এবং হরীতকী; এই সকল वज्र मधान পরিমাণে সমত্তে ছইভোলা মাত্র এহণপূর্বক অর্দ্ধদের জলের দর্শ্বত পাক করিয়া, অর্ধপোয়া মাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া কাথ এহণ করিবে। এই কাথ পান করিলে বদি এবং শ্লেম্মজন্ত অভীদার নিবারিত হয়।

विद्रापि-हुर्गर ।-

হিন্দু সৌবর্চনং 'ব্যোষমভয়াতিবিষা বচা।
গীতমুকামুনা চুর্ণমেবাং শ্লেমাতিসারনুৎ।
হিন্দান্ত্র

হিন্ধ, সৌবর্চ্চললবণ, পিপুল, শুঠ, মরিচ, আডইস এাং বচ ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া চূর্ণ করিয়া, উষ্ণজ্বলের সহিত্ত সেবন করিলে কন্ষাভিসার নিবারিত হয়।

মুন্তাদি-ক্ষায়ঃ।---

মুন্তা চাতিবিষা মূর্ব্বা বচা চ কুটজ সমাঃ। এষাং ক্যায়ঃ সক্ষৌদ্রঃ পিত্তশ্লেম্বাতিসারনুৎ॥ মূস্তাদি ক্যায়।

মুখা, আডইস, মূর্বা (স্থচীমুখী), বচ এবং কুর্চিছাল; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমূদায়ে ২ ভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জ্বলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। তৎপরে শীতল হইলে, সেই কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে পিত্রশেশ্যক্তম্ব অতীসার বিনষ্ট হয়।

ক্রিমিশত্বাদিঃ। —
ক্রিমিশক্রবচাবিল্ব পাঠাধন্যাক কটফলং।
এষাং কাথং ভিষক্দন্যাদভীসারে দ্বিদোষজে॥
ক্রিমিশত্বাদি।

বিভঙ্গ, বচ, বেলশু ঠ, আকনাদি, ধনিয়া এবং কট্কল; এই সকল দ্রব্য সমানভাগে সমস্তে ২ ছইডোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্ধদের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্ধপোয়া থাকিতে নামাইবে এবং ছাকিয়া সিটেগুলি বাদ দিয়া জলীরাংশ কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ সেবন করিলে দিদোযজ্ঞ অর্ধান বাউগৈত্তিক, বাউলৈত্মিক ও পিউলৈত্মিক অতীসার নিবারিত হয়।

চিত্রকাদি কশারঃ।-

চিত্রকাতিবিধা মুস্তং বালবিলৃং সনাগরং। বংসকত্বক্ ফলং পথ্যা বাতলিভাতিসারনুৎ॥ চিত্রকাদিক্ষার।

চিতা, আত্ইস, মুথা, কচিবেল, শুঠ, কুর্চিছাল, ইন্দ্রয়ব এবং হরীতকী; এই সমুদর বস্তু সমান পরিমাণে লইরা, অর্কদের জ্বল সহয়েনো পাকপুর্বক অবশিক্ত অর্দ্ধপোরা মাত্র থাকিছে নামাইরা কাথ এহণ করিবে। এই কাথ দেবন করিলে বাতপৈত্তিক অতীসার বিনষ্ট হয়।

পूनर्वानि-काशः।-

পুনর্ণবেক্রয়বঃপাঠা ঞ্রীফলাতিবিষা ঘনাঃ। কথিতা সোষণাঃ পীতাঃ শোথাতিসারনাশনাঃ॥ পুনর্ণবাদিকাথ।

পুনর্গবা, ইন্দ্রায়ৰ, আকনাদি, বেলশুঠ, আতইচ এবং মুখা; এই সকল দ্রব্য সমানমাত্রায় সমস্তে ২ তোলা এহণপূর্বক অর্ধদের জলের সহিত সিদ্ধ করতঃ, অর্দ্ধপোরা থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া সিটেগুলি পরিত্যাগ-পূর্বক জলীয়ভাগ কাথ এহন করিবে। এই কাথ। চারি আনা মরিচ্চ্র্ণ সহযোগে সেবন করিলে, শোখাভিদার বিনম্ভ ইয়া থাকে।

विनामि-लक्श। -

বিল্ মোচরস লোপ্র ধাতকীপুষ্প চৃতফলবীজ সংযুতাং। ভক্ষরেদতিবিষাবলেহিকাং সিন্ধুবেগমপি হুর্দ্ধরং প্রুবং॥
বিল্যাদিলেহ।

বিল্, মোচরস, লোধ, ধাইফুল, আমবীজ এবং আতক্তি; এই সকল দ্রব্য দ্বারা অবলেহ প্রস্তুত করিয়া দেবন করিলে, অত্যন্ত ছ্লিবিগর অতিসারও নিবারিত হইয়া থাকে।

বৈলোক্যবিজয়ানি লৌহঃ।—
বৈলোক্যবিজয়া জাতীফলে তুল্যে কলিঙ্গকে।
গৃহীত্বা দ্বিগুণং শ্রেণ্ডো লৌহঃ সর্বাতিসারহৎ॥
বৈলোক্যবিজয়াদিলৌহ।

দিদ্ধি ও জাতীফলের তুল্য পরিমাণ ইক্সঘব এছণ করতঃ, তাহার দ্বিগুণ পরিমাণ লৌহ একত্র মিশ্রিত করিয়া দেবন করিলে, মর্ব্বপ্রকার অভীদার নিবারিত হয়।

विनामायलकः।-

বিল্পেষীগুড়ং লোধ্রং তৈলং মরিচ সংযুক্তং। লীড়া প্রবাহিকাক্রান্তঃ সত্ত্বরং স্থুখমাপু য়াৎ। বিলাদ্যবলেছ।

বেলশুঠ, পুরাতন গুড়, লোধ, তিলতৈল, এবং মরিচ; এই দকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া, পেষণপূর্বক লেহন করিয়া দেবন করিলে, প্রবাহিকা রোগাক্রান্ত ব্যক্তি নিশ্চয়ই রোগ হইতে নিষ্কৃতি লাভ করিতে পারে।

ষড়ঙ্গন্ধত্থ।---

বৎসক্ষা চ বীজানি দার্ব্যাশ্চ ত্ত উত্তমাঃ। পিপ্পলী শুঙ্গবেরঞ্চ লাক্ষা কটুক-রোহিণী॥

বড়ভি রেতৈপ্লতং সিদ্ধং পেরামপ্রাবচারিতম্। অতীসারং জয়েৎ শীঘ্রং ত্রিদোরমপি দারুণম্।

গবাস্থত /৪ চারিদের। কদ্বার্থ ইন্দ্রয়ব, দাঞ্চরিদ্রার ছাল (ছালের অভাবে কাষ্ঠ), পিপুল, শঠ, লাক্ষা এবং কট্কী, এই দ্রব্যগুলি সমস্তে একসের মাত্র লইয়া কুন্তিত করতঃ ঘতে প্রদান করিবে এবং ঘতের ৪ চারিগুণ অর্থাৎ ১৬ সের জল দিয়া পাক করিতে থাকিবে। পরে শেষ পাকের লক্ষণ সকল বিশেষরূপে লক্ষিত হইলে, চূলী হইতে নামাইয়া ছাকিয়া ঘত এহণ করিবে। এই ঘত উপযুক্ত মাত্রায় পেয়া বা মণ্ডের সহিত গেবন করিলে ত্রিদোষজ্ঞ নিভ অভীসার পর্যান্ত নিবারিত হয়। এই ঘৃত। একসিকি হইতে। অর্ধকোলা পর্যান্ত মাত্রায় বাবহার করা যাইতে পারে।

ক্ষীর-মৃতং।—
ক্ষীরি-ক্রমাভীরু রসে বিপ্রুং,
তক্তৈশ্ব কল্পিঃ প্রসা চ সর্পিঃ।
সিতা পলার্দ্ধং মধু পাদযুক্তং,
রক্তাতিসারং শ্ময়ন্ত্রাদীর্ণম্॥

ক্ষীরিয়ত।

শ্বত /৪ চারিদের। বট, অন্থা, যত্ত ভুমুর, পাকুড় ও বেতস (বা পারীশ); এই ৫ পাঁচটী রক্ষের ছাল অথবা এই পাঁচটীর যে কোন একটী রক্ষের ছাল /৮ ছাটদের পরিমানে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে কুট্রিত করিয়া, ৩২ বিশ্বেশার জলের সহিত দিদ্ধ করিয়া, চতুর্থাংশ অর্থাং /৮ আটদের মাত্র অবশিষ্ট থাকিছে নামাইবে; এবং ছাকিয়া সিটেগুলি পরিত্যাগপূর্বক দেই ক্লাথ (জলীয়াংশ) উক্ত /৪ চারিদের স্বত মধ্যে প্রদান করিবে; এবং শত্যুলীর রস /৪ চারিদের ও ত্বন্ধ /৪ চারিদের ভাল /১ একদের শ্বতমধ্যে নিক্ষেপ করিয়া, তাহাতে পূর্বোক্ত কাথ দিয়া পাক করিতে থাকিবে। পরে উহাতে শত্যুলীর রস, তদনন্তর হন্ধ দিয়া পাক করিতে থাকিবে। পরে ইত্ত হৈতে সিটেপ্রেলি ছাল রামা ক্রমে ক্রমে পাক করিতে থাকিবে। পরে স্বত হইতে সিটেপ্রেলি ছাকিয়া পরিত্যাগপূর্বক তাহাতে /২ ছুইদের ইক্ষ্টিনি মিশ্রিত করিয়া, পুনর্বার পাক করিবে। তদনন্তর স্বেহপাকোক্ত পাকসিদ্ধির লক্ষণ সকল লক্ষিত হইলে নামাইয়া, /১ একদের মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই মুডাও এক সিকি হইতে।। অর্ধতোলা মাত্রায় দেবন করিলে, অতিপ্রবল রক্তা-তিসার নিয়তি পাইয়া থাকে।

- জীরেহিমতোপমং কীরমতীসারে বিশেষতঃ। ছাগস্তুত্তেষকৈঃ সিদ্ধং পেয়ং বা বারিসাধিতম্॥ ্ৰহকালস্থায়ী পুরাতন অতীনার-রোগে ছাগত্তম অমৃতের স্থায় অতীন •উপকারী। বিশেষতঃ অতীসার নাশক ত্তযধের সৃহিত পাক করা, অথবা ৩ তিনগুণ জলসহ সিদ্ধ করা ছাগত্বয় অতীসারে মছোপকার সংসাধিত করে।

> বালং বিলৃং গুড়ং তৈলং নিপ্পলী বিশ্বভেষজম্। লিহাদ্বাতে প্ৰতিহতে সমূলে সপ্ৰবাহিকে॥

কৃচি পোড়াবেল ২ তোলা। ইকুগুড় > এক ডোলা, পিপুলচ্র্ন অর্ধ আনা, শুঠীচ্র্ন হুই আনা এবং কিঞ্চিং পরিমাণে তিল তৈল ; এই দ্রবা গুলি সমস্তই একসঙ্গে মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে, বিবদ্ধবাত এবং শূলবেদনা সমন্বিত প্রবাহিকা (আমাশয় রোগ) নিবারিত হয়।

> পয়দা পিপ্পলী-কল্কঃ পীতো বা মরিচোছ্কবঃ। ত্যাহান্নির্বাহিকাং হন্তি চিরকালানুবন্ধিনীমূ।

অর্দ্ধ পোরা ছাগত্রমের সহিত অর্দ্ধ ভোলা পিপুলের গুঁড়া, অথবা। দিকি ভরি মরিটের গুঁড়া দিবদে ১।১ বার করিয়া তিন দিবস পান করিলে, চিরকালব্যাপিনী প্রবাহিকাও (আমাশয় রোগ) নিবারিত হয়।

কল্কঃ স্যাদ্বালবিল্বানাং তিল-কল্কশ্চ তৎসমঃ।
দথ্নঃ সরাম্লম্বোচাঃ সদা হন্যাৎ প্রবাহিকাম্॥

কচি পোড়া বেলের শস্থ ১ এক ভোলা, তিলবাটা ১ এক ভোলা এবং দধির সর ১ এক ভোলা ; এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া সেবন করিলে, প্রবা-হিকার শান্তি হইয়া থাকে।

বিল্যেশং গুড়ং লোধং তৈলং লিহ্নাৎ প্রবাহনে॥

বেল ল ঠ, মরিচ এবং লোধকাষ্ঠ সমভাগ চূর্ণ করিয়া, উক্ত চূর্ণ। এক সিকি বা অর্দ্ধতোলা পরিমাণ ভিলভৈলের সহিত লেহনপূর্বক সেবন করিলে প্রবাদ হিকা নিবারিত হয় :

দগ্না সমারেণ সমাক্ষিকেন,
ভূঞ্জীত নিশ্চারক-পীড়িতস্তু।
স্থতপ্রকুণ্য কথিতেন বাপি,
ক্ষীরেণ শীতেন মুধুগ্লুতেন॥

(মাক্ষিক—মধু। নিশ্চারক—প্রবাহিকা বা আমাশায় রোগ। কুপা— 'লৌহ। নীত —নীতল।)

প্রবাহিকা দ্বারা পীড়িত ব্যক্তি মধুর সহিত সারযুক্ত দ্বিসেবন করিলে, রোগ.হহঁতে নিষ্কৃতিলাভ করিতে পারে। অথবা হন্ধমণো ক্তপ্ত লৌহ নিক্ষেপ করিয়া, সেই হন্ধ শীতল হইলে, উক্ত হন্ধের সহিত পূর্ব্বোক্ত বেলশু ঠ, মরিচ ও মধু প্রভৃতি বস্তু সহযোগে সেবন করিলেও প্রবাহিকা রোগ হইতে মুক্ত मीश्राधिर्मिन्न्र दीर्या यह मार्गाएं क्वनः नद्गः । म পিবেৎ ফাণিতং শুগ্री-मधि-তৈল পয়োগ্নতম ॥

প্রবাহিকারোগে যে ব্যক্তির অগ্নি প্রদীপ্ত হইয়াছে, অর্থচ ভালরপে মল নিঃসত হয় না, কিন্তু প্রছে বেদনা জন্মাইয়া মল নির্গত হইতে থাকে; তাহার পক্ষে ইক্ষুগুড়, শুঠ চূর্ন, সারযুক্ত দধি, তিলতৈল, হুগ্ধ এবং ঘৃত সমান পরি-মাণে একত্র আলোড়নপূর্বক মিশ্রিত করিয়া, সেবন করিলে মহোপকার সং-সাধিত হইয়া থাকে।

হরীতকাানি-চূর্ণং।—

জঙ্গীচূৰ্ণং স্বতভৃষ্টং সৰ্জ্ঞাকঞ্চ সিতাযুত্ম । সামে শ্লেহতিসারে চ গ্রহণ্যাং শন্তমৌষধম্ ॥ হরীতক্যাদি চুর্।

জাদ্দীহরীতকী এবং সর্জ্ঞক (ধূনা) দ্বতে ভর্জনপূর্ব্বক চূর্ণ করিয়া, ইক্ষু-চিনির সহিত মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে আমাতিসার, বেননাসংযুক্ত সকল প্রকার অতীমার এবং এহণী-রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

চান্ধেরী-মূতং।—

চাঙ্গেরী কোলদধ্যম্ল-ক্ষার-নাগর-সংযুত্থ।
মৃতং বিপক্ষং পাতব্যং গুদ্রভংশ-গদাপহ্যু॥
চাঙ্গেরী মৃত।

চাচ্ছেরী (আমকল) রম, বদরীর (কুলের) কাপ এবং অস্লদ্ধি (৪ চারি দিবসজাত মধুরতাহীন দধি) ।৬ যোলদের, যবক্ষার ও শুগুরীর কাপ /৪ চারি দের; এই মকল ত্রব্যসহ /৪ চারিদের গ্রায়ত যথানিয়মে পাক করিয়া পান করিলে, গুদভংশ-রোগ নিবারিত হয়।

চতুঃদমো মোদকঃ।—

অভয়া নাগরং মুন্তং গুড়েন সঁহ যোজিতং।
চতুঃসমেয়ং বটী স্যাৎ সর্ব্বাতিসার্নাশনং॥
আনাতিসারমানাহং স্বিবন্ধং বিস্থৃচিকাং।
ক্রমীনরোচকং হন্যাদ্দীপয়ত্যাশু চানলং॥

ठ्युः मगरम् ।

হরীতকী, শুঠী, মুথা এবং ইক্ষুগুড়, এই ৪ চারিট্রী দ্রব্য তুল্য পরি মানে; গ্রাহণপূর্বক শুটিকা (মোদক) প্রস্তুত করিবে। এই মোদক ঔষধ দেবন করিলে, দকল প্রকার অভিসার, আমাতিসার, বিবন্ধ, বিস্ফৃচিকা, জিমি এবং অফ্টি বিদ্যুট হইয়া থাকে। পরস্তু ইহা দ্বারা দত্ত্বই অগ্নি প্রদীপিত হয়।

অক্ষোঠ-বটকঃ ৷---

্পল্মকোটমূলস্য পাঠাং দাব্বীঞ্চ তৎসমাং।

পিষ্ট্ তপুল-তোয়েন বটকানক্ষসন্থিতান্।।
ছায়াশুক্ষাংশ্চ কুর্যাতেছেকং তপুলামুনা।
পেষয়িত্বা প্রালন্তং পানায় গদিনে ভিষক্॥
বাতপিভককোত্ত, তান্ দ্বন্দ্র জান্ সাল্লিপাতিকান্।
হন্যাৎ সর্বানতীসায়ান্ বটকোহয়ং প্রযোজিতঃ॥
ভাষোধনটক।

অন্দোঠ (আঁকড়) মূল, আক্নাদি ও দাকহরিদ্রা; এই তিন্টী দ্রব্য প্রত্যেকে ১ এক পল (৮ ভোলা) পরিমাণে প্রহণপূর্বক চাউলের জ্বলের সহিত পেয়া করিয়া (বাটিয়া), ২ ছই তোলা প্রমাণ বটিকা প্রক্তাত করিবে। তদনন্তর দেই বটী ছায়াতে শুক্ক করিয়া, ভাহার এক একটা বড়ী প্রতিদিবস চাউলের জ্বলের সহিত বাটিয়া রোগীকে গেবন করিতে দিবে। এই প্রথম দেবন করিলে বাভজ, পিত্তজ্ঞ, কফজ, বাউপৈত্তিক, বাউলৈয়িক, পিত্ত-লৈয়িক এবং দারিপাতিক প্রভৃতি সকলপ্রকার অতীসার নিবারিত হইয়া থাকে।

বিলুতৈলং ৷—

তুলাং সন্ধুড়া বিলুস্য পচেৎ পাদাবশেষিতং।
সক্ষীরং সাধরেতৈলং শ্বন্ধপিতৈ রিমৈঃ সমৈঃ॥
বিলুং সধাতকীকুষ্ঠং শুগীরামা পুনর্বা।
দেবলারু বচামুন্তং লোগ্র মোচরসান্থিতম্॥
এভি মুর্মিনা প্রুং এছণ্যশোহতিসারন্থ।
বিলুতেলমিতিখাতে মত্রিপুত্রেণ ভাষিতম্॥
গ্রহণ্দোহিধিকারে যে মেহাঃ সমুপদর্শিতাঃ।
প্রযোজ্যান্তেহতিসারেহপি ত্রয়াগাং তুল্যহেতুনা॥

विल्टेडल ।

তিলতৈল / ৪চারিসের। বিলৃ, ধাইফুল, কুড়, শুণ্ঠী, রাস্বা, পুনর্নরা, দেবদাক, বচ, মুথা, লোধ এবং ক্ষোচরম; ও'ত্যেক সমাভাগে মিলিত /১ একসের
মাত্র; এই বস্তুপ্তলি এই তৈলের কল্কার্থে প্রয়োজ্য। এবং কাথার্থ বেল । হাতি
সাড়ে বারসের, জল ১॥৪ একমণ চর্মিশ সের, শেষ ।৬ ষোলসের। এই তৈল
মুদ্র অগ্নিসন্তাপে পাক করিয়া সেবন করিলে, এছণী ও অভীসার রোগ বিনষ্ট
হয়। পরস্ত গ্রহণী ও অশ্রোগ অধিকারে যে সকল স্নেহ প্রদর্শিত হইবেক,
ভাহাও অভীসার রোগে ব্যবহার করিবে; যেহেতু অভীসার, গ্রহণী এবং
অর্থেরিগ; এই ভিনটী রোগ পুরস্পর সমান-ধ্রমী বলিয়া জানিবে।

व्यक्तिनानिवर्षिकां।-

অহিকেনং বচাকৈব বিষমুক্তিং সমাংশিকমৃ।
নির্জ্জলং পরিনিষ্পিষ্য বটিকা চনকোপমা॥
ভিষক্তা ধিমতা কার্যা সামে রক্তে সুনারুণে।
অতিশীত্রং রুজং হরি ভাক্ষর স্তিমিরং যথা॥
অহিকেন-বটকা।

অহিকেন, বচ, এবং বিষ; এই দ্রব্যত্তর প্রত্যেক মুটি (এক পল বা ৮ ভোলা) পরিমাণে এছণপূর্ব্বক একত্র মিশ্রিড করিরা, জল বিনা পেষণপূর্ব্বক চলক (বুট) প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। বুদ্ধিমান্ চিকিৎসকগণ এই ঔষধ আমাতিদার এবং স্থাঞ্চণ রক্তাতিদার রোগে প্রয়োগ করিবেন। এই ঔষধ স্থােদিয়ে অন্ধকার বিনাশের স্থায় অতিশীত্রই আমাতিদার ও বক্তাতিদার বিনাশ করে।

অতীসারবারণো-রদঃ।—

দরদং কৃত কপূরিং মুক্তেন্দ্রবসংযুক্তং।
সর্বাতিসারনাশনং খাখনীক্ষীরভাবিতম্॥
অতীদারবারণ রদ।

(सतम-हिन्नु । शांश्मीकीत-वान्तिन्तु निर्माम ।)

হিন্দুল, মুথা, কপূর্ব ও ইন্দ্রধব; এই দ্রব্য চতুষ্টয় সমানভাগে এইণপূর্ববিক আফিন্দের নির্যাদে (অভাবে আফিন্দের জলে) ভাবনা দিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে, সকলপ্রকার অভীসার রোগ নিবারিত ইইয়া থাকে।

পূর্ণচন্দ্রোর নাঃ ।—
শুদ্ধকং তালকং লৌহং গগনঞ্চ পলং পলং।
কপুরং পারদং গন্ধং প্রত্যেকং বটকোনিতং॥
জাতীকোষ মুরাপত্রং শসী তালীশকেশরং।
ব্যোষং চোচং কণামূলং লবল্পং পিচুসন্মিতং॥
ভক্ষয়েৎ প্রাতরুখায় গুরুদেবদ্বিজার্চকঃ।
নানারপমতীনারং গ্রহণীং সর্বরুদিণীং॥
অমুপিতং তথা শূলং শূলঞ্চ পরিণামজং।
রসারনবরশ্যায়ং বাজীকরণ উভমঃ॥

(ভালক – ছরিভাল। গগন—ছাজ। বটকোরিত – ১ ভোলা। মুরা— বুরামাংসী। পাত্র – ডেজপাত্র। কেশর – নাগশেশর। ব্যোব – ত্রিকটু। চোচ – বাক্চিনি। কণাবুল – পিপুলমূল। পিচুসন্মিত – ১ ছুই ভোলা প্রিমিত।)

र्गुर्गहरुक्षांत्र द्रम ।

বিশ্বন্ধ ইরিভাল, লৌহ, অজ; প্রভাবে > পল (৮ ভোলা), কপুরি পারা ও গদ্ধক প্রভাক > বটক (> ভোলা) এবং জ্বার্মী, জাভিকল, মুরা মাংসী, ভেজপত্র, শতী, ভালীশপত্র, নাগকেশর, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, দাস্ক চিনি, পিপুলম্ল ও লবন্ধ প্রভাকে পিচু (২ ভোলা) পরিমাণে এহণপূর্ব্বন সমুদায় ত্রব্য একত্র করিয়া, উত্তমরূপে পেষণ করতঃ জ্বলমহ বটকা প্রস্তুত্ব করিবে। প্রাতঃকৃলে শয়া হইতে গাত্রোখানপূর্ব্বক গুরু, দেবতা ও ব্রাহ্মণবে অর্জন্ম করিয়া এই উষধ সেবন করিলে, মানাপ্রকার অতীসার, সর্বপ্রকার এহনী, অল্লপিত, শুল ও পরিণাম শুল বিনম্ট হয়। এই উষধ সর্বোৎকৃষ্ট রসঃয়ন ও বলীকরণ বলিয়া জানিবে।

কগাদ্য-লৌহং।---

কণানাগরপাঠাভি স্ত্রিবর্গত্তিতয়েন চ।
বিল্চন্দন্দ্রীবেরৈঃ সর্ফাতিসারজিদ্ধবেৎ ॥
সর্কোপদ্রবসংযুক্তামপি হন্তি প্রবাহিকাং।
নালেন সদৃশং লৌহং বিদ্যাতে এহণীহরং॥

क्नामाटलोइ।

(কণা - পিপ্পলী। নাগর - শুণ্ঠী। পাঠা - আকান্দিল তা। ত্রিবর্গত্রিতর — শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ এই ত্রিকটু এবং হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া এই ত্রিকলা; আর ইহাদের মহিত ত্রিমদ অর্থাৎ রূথা, চিতা ও বিড়ন্স সংযুক্ত হইলে, ত্রিবর্গত্রিতর বলা যার। আর ত্রিকটু, ত্রিফলা ও ত্রিমদ; এই ৩ তিনটীর প্রত্যোকেও ত্রিবর্গ বলে। চন্দন – রক্তচন্দন। হ্রীবের – বালা।)

শিপুল, শুঠা, আক্নাদী, শুঠ, পিপুল, মরিচ, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, মুথা, চিডা, বিড়ঙ্গ, বেলগুঠ, রক্তচন্দন ও বালা; এই সকল দ্রবা সমভাগে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে পেষণ করিয়া, ভাহার সহিত সমস্ত দ্রব্যের সমান পরিমাণে লৌহ মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই উষধ প্রতিদিন উপযুক্ত পরিমাণে সেবন করিলে, সকলপ্রকার অতীসার, সর্ব্বোপদ্রবসংযুক্ত প্রবাহিকা (আমাশার) এবং গ্রহণীরোগ সকল নিবারিত হয়।

লোকনাথো-রসঃ।--

ভন্মস্তস্য ভাগৈকং চত্তারঃ শুদ্ধগন্ধকাৎ।
কিপ্তা বরাটিকাগণ্ড টন্ধণেন নিক্ষা চ॥
ভাণ্ডে ক্ষদ্ধা পুটে পাচাং স্বাঙ্গণীতং সমুদ্ধরেৎ।
লোকনাথর সঃ খ্যাতঃ ক্ষৌদৈও প্রাচত্ত্তরং॥
নাগরাতিবিষা মুন্তং দেবদাক বচান্বিতং।
ক্ষারমনুপানস্ত শর্কাতিসারনাশনঃ॥

(लोकमार्थ तम।

(ভস্মস্ত – রদিাদ র। বরাটিকা – কড়ি। টলন – দোহাগা। ক্লিড – মধু।)

রসদিন্দুর ১ একভাগ এবং বিশুদ্ধ গদ্ধক ৪ চারিভাগ । এই উভয় দ্রব্য একটা কড়ির মধ্যে পূরিয়া, সোহাগা দ্বারা দেই কীড়ির মুখ কদ্ধ করিয়া দিবে। তদনন্তর পুটপাক দ্বারা পাক করিয়া শীতল হইলে, ঐ ঔষধ ৪ চারি রুত্তি পরিমাণে কিঞ্চিং মধুর সহিত দেবন করিবে। এবং এই ঔষধ সেবনান্তে হাটী আতইস, মুখা, দেবদাক্ত ও বচ; ইহাদের ক্লাথ পান করিবে। ইহাদ্বারা সকল প্রকার অতীদার রোগ অতি শীত্রই নিবারিত হইয়া থাকে।

দ্বিতীয়াহিকেন-বটিকা :—
অহিকেনং সংৰ্জ্জুরং মৃষ্ট্বা গুল্পৈকমাত্রকং।
রক্তন্ত্রাবমতীসার মতিরদ্ধং বিনাশয়েৎ॥
দিতীয়াহিকেন-বটকা।

আহিকেন (আফিঙ্) এবং খর্জুর (পিণ্ডখর্জুর) মজ্জা; এই দুইটী দ্রবা সমানভাগে গ্রন্থপূর্বক উত্তমরূপে পেষণ করিয়া মর্দ্দন করিবে। এই ঔষধ ১ এক রতিপরিমাণে সেবন করিলে রক্তস্রাব ও প্রবলতর অতীদার রোগ অতিসম্বর বিনম্ট হইয়া থাকে।

সর্বাঙ্গস্থলরো রসঃ।—
রসগন্ধকরোঃ কর্ষং গ্রান্থনেকং সুশোধিতং।
ততঃ কজ্ঞলিকাং কৃত্বা পশ্চাদেয়ং সুচ্ণিতং॥
জাতীফলং তথাকোমং লবদ্ধারিষ্টপত্রকে।
সিন্ধুবারদলক্ষৈব এলাবীজং তথৈবচ॥
এষাং কর্ষৈকমাত্রেন তোয়েনাথ বিমর্দ্দয়েং।
গুপ্তাষট্প্রমাশেন প্রত্যহং ভক্ষয়েয়রঃ॥
জ্বল্পং দীপনক্ষৈব বলবর্গ-প্রসাধনং।
দূর্ববারং গ্রহণীরোগং জয়ত্যেব প্রবাহিকাং॥
স্থতিকাঞ্চ জয়েদেভদ্রক্তার্শের রক্তসম্ভবং।
সর্বাঙ্গস্থলরশ্চায়ং সর্বব্যাধি-নিস্কনঃ॥

(অরিউপত্র – নিম্বপত্র । সিদ্ধুবারদল – নিসিন্দাপত্র ।)

২ হৃইতোলা পারা এবং ২ হৃইতোলা গন্ধক উত্তমরূপে শোধন করিয়া, এক-ত্রিত করতঃ খলে করিয়া উত্তমরূপে মর্দ্দনপূর্বক কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তদ-নন্তর জাতিকল, জয়িজী, লবঙ্গ, নিম্নপাত্র, নিসিন্দাপত্র এবং ছোটএলাইচং; এই দ্রব্য সকলের চুর্ন প্রত্যেকে ২ চুই ভোলা করিয়া প্রহণপূর্বক পূর্ব্বোক্ত

मर्काष्ट्रयन्त रम।

কজ্ঞলী দ্রহ মিশ্রিত করিরা, জল দহ বাটিয়া ৬ হয় রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটী প্রত্যহ মুখার রস আদি অস্পান বিবেচনার দেবন করিলে, রোগীর জর নিবারিত হয়, জঠরায়ি প্রদীপিত হয়, বল ও বর্ণের প্রসন্ধতা জন্মে; এবং হুর্জার গ্রহণী রোগ, অতীসার, প্রবাহিকা, জ্রীদিগের স্থৃতিকারোগ, রক্তাতিসার ও রক্তজ্ঞ অর্শরোগ নিবারিত হয়। ইহার নাম সর্বাঙ্গস্থাকে। এই সর্বাঙ্গ-স্থানর রস সকল প্রকার ব্যাধি নিবারণ করিয়াপ্যাকে।

মহাগন্ধকং ৷—

দর্বাঙ্গস্থদরে রদে যদ ব্যং কথিতং পূর্ববৃ।
তাবৎ দর্বং মুক্তাগৃহে রক্ষিত্বা চ স্কুচ্ণিতম্ ॥
পুটপাকেন সংদিদ্ধং নামা তৎ মহাগন্ধকং।
এতঃ প্রোক্তমতিদারে বালকানাং মহৌষধং॥
রক্তাতিদারং গ্রহণীং নশ্যতি বালানাং ক্ষিপ্রং॥

ইত্যাতিদারাধিকারঃ দমাপ্তঃ।

্তি জ্বরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগ চিন্তামণাবতী-সারাধিকারে পঞ্চমো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

মহাগন্ধক।

পূর্ব্বে সর্বাঙ্গস্থনররেনে যে সকল ঔষধ কথিত হইয়াছে, দেই সকল দ্রব্য পূর্ব্বোক্ত পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া কিন্তুকের মধ্যে পুরিবে। তদনন্তর পুটপাকে পাক করিয়া শীতল হইলে, ২০ রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকে মহাগন্ধক বলে। ইহা বালকদিগের অতীসাররোগের মহৌষধ বলিয়া জানিবে। অর্থাৎ এই ঔষধ সেবন করিলে বালকদিগের রক্তাতিসার ও গ্রহণীরোগ অতিশীঘ্রই বিনম্ট হয়।

ইতি অতীদার-চিকিৎদা দমাপ্ত।

ইতি এরামমাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি গ্রন্থে অতীদারা-ধিকারে পঞ্চম-অধ্যায় দমাপ্ত।

यर्छ। ३४। ११।

ত্যু গ্রাহণ্যানিকারঃ।

আহণীয়াজিতং দোষগঙ্গীৰ্ণ কুপাচরে । অতীয়ারোক্তবিধিনা ত্যাগ্যক বিপাঃয়ে । অনুভ্র এহণী রোগের চিকিৎসা ক্থিত হইতেছে।

শ্রহণীরোগ ও অতীদার রোগের পরম্পর কার্য্য কারণরপ মহন্ধ আছে; এই নিমিত্র অর্তানার চিকিৎসার পরেই গ্রহণীরোগের চিকিৎসা, বর্ণিত হই-তেছে। শ্রহণী" শালের অর্থ অগ্রহিটান-নাড়ী। ঐ নাড়ীকে আশ্রয়পুরক ধেরোগের উৎপত্তি হর তাহাকেই গ্রহণীরোগ বলা যায়। অজীর্ণ দোষে যেমন প্রথমে বমন ও বিরেচন এবং তৎপরে দীপন ও পাচন উষধ প্রয়েগ দারা চিকিৎসা করিতে হয়; গ্রহণীরোগেও তজপ চিকিৎসা করিবে অর্থাৎ প্রথমে বমন ও বিরেচন এবং তদনতর দীপন ও পাচন উষধ প্রয়োগ করিবে। এবং তৎপরে অর্তাসারোক্ত বিধি অবলম্বন পূর্বক লক্ষ্মন ও ন্যু ভোজন প্রদান করিয়া, দোষের পরিপাক করিবে। (লক্ষ্মন ও ন্যুভোজন প্রয়োগ প্রণালী জর ও অতীয়ার রোগে জক্টবা।)

বিশেষ কথা—যে ব্যক্তির অতীসার রোগ প্রশাসত হইহাছে, অথচ অগ্নির বল সমাক্পকারে প্রকাশিত হয় নাই; অথবা যাহার ক্রেন্ড মাত্র অগ্নিমান্য জান্মাছে, এই উভয়বিধ অবস্থাপন ব্যক্তির 'অহিডাচরণে অগ্নিকতর অগ্নিমান্য উপস্থিত হইয়া "গ্রহণী" নাম্মী নাড়ীকে সন্দ্ যিত্ করে; স্করাং অভিবর্জিত বাহু, পিত্ত ও ক্ষম পৃথক্ পৃথক্ কপে অথবা মিলিত ত্রিদোষ, গ্রহণী নাড়ীকে দূষিত করিয়া থাকে। ইহাকেই গ্রহণীরোগ বলে।

শরীরাত্গতে সামে রসে লজ্জ্ব-পাচনম্। বিশুদ্ধামাশয়ায়ালৈ পঞ্কোলাদিভি যুতিম্॥ দদ্যাৎ পেরাদি-লম্বং পুনর্বোগাংশ্চ দীপনান্॥

শরীর অপর্কর্মে ব্যাপ্ত থাকিলে, আমাশর বিশুদ্ধ করিবার নিমিত্ত প্রথমতঃ
লক্ত্যন ও উক্ত আমর্মের পরিপাকার্থ পাচন ত্রযথ প্রয়োগ করিবে। এবপ্রাথম আমাশর সম্পূর্ণরূপে বিশুদ্ধ অর্থাৎ দূষিত আমর্ম-বিরহিত হইলে,
ভৃৎপরে রোগীকে জর চিকিৎসোক্ত পঞ্চকোল অর্থাৎ পিপুল্মূল, চই, রক্ত-

• চিতার মূল ও শুগী; এই পঞ্চ দ্রব্য সংযুক্ত পেরাদি লঘু তার পথ্য ব্যবস্থা করিয়া, পুনর্কার অগ্নির উদ্দীপক অন্তান্ত উব্ধ প্রেয়াগ করিবে।

> কপিত্থ-বিল্গাঙ্গেরী তক্র-দাড়িয় সাধিত।। পাচনী গ্রাহিণী পেয়া সবাতে পাঞ্চালিকী।

(किर्णिय-करान्दिल। विल्-टिल्डॅं)। हास्त्रती-आमकलमारः। माफ्रिम-माफ्रियक्तवा माफ्रियक्तव हाल।)

করেদ্বেলন বেলশুঠ, আমঞ্চলশাক এবং দাড়িমকল অথবা দাড়িমকলের খোনা; এই দকল ক্রবা মনুদারে ৮ তোলা গ্রহণপূর্বক তক্ব (ঘোল) দহযোগে পেয়া (যবাগূ) প্রস্তুত করিয়া, গ্রহণী-রে;গীকে দেবন করিতে দিবে।
এই প্রকার যবাগূ বাতলৈন্মিক গ্রহণী রোগেই অতীব হিতকর। আর বাতপ্রধান গ্রহণী-রোগে পঞ্চন্লী (স্বল্পপঞ্চন্ল) অর্থাৎ শালপানী, চাকুলে,
ব্যাকুড়, কন্টকরৌ ও গোকুর; এই মিলিত পঞ্চ দ্রন্যাহ যবাগূ প্রস্তুত করিয়া
প্ররোগ করিবে। উক্ত উভয়বিধ যবাগূই আমদোষের পরিপাত্ক ও মলদংরোধক।

বিশেষ কথা—উক্ত যবাগুতে এমত পরিমাণে তক্র দিতে হইবে যে, যদ্ধার। যবাগু উত্তমরূপে দিল্প হইতে পারে। কিন্তু রূদ্ধ বৈদ্যাণ বলেন যে, তক্রের রগত্ব ও গুরুত্বহেতুক তক্র ও জল এই উভর নমান পরিমাণে মিশ্রিত করিরা যবাগু পাক করা যাইতে পারে।

> তক্রস্য গুণ-কথনম্।— ব্রাহণী-লোবি শান্তক্রং দীপনং গ্রাহি লাখবাৎ। পথ্যং মধুরপাকিত্বান্ন চ পিত্ত-প্রকোপনম্॥ কষায়োক্তবিকাশিত্বাদ্রৌক্ষাক্তিব কফে হিতম্। বাতে স্বাদ্রসাক্রত্বাৎ সন্যক্ষমবিদাহি তৎ॥ ভক্রের গুণ।

ভক্রের অগ্নিদীপক শক্তি, ধারকতা শক্তি ও লঘু পাকিত্ব শক্তি বর্ত্তমান থাকার, উহা এহনীরোগীকে পথ্যরূপে প্রদান করিবে। উহাতে মধুরপাকিত্ব গুল থাকার, পিতের প্রকোপ না জন্মিরা, বরঞ্চ বায়, পিতে ও কক; এই তিন দোষেরই শান্তি করিয়া থাকে। এবং কষায়ত্ব, উষ্ণত্ব, বিকাশিত্ব (শারীরিক দোষাচ্চ্ন প্রোভ: সমূহের বিশেশ্বকত্ব) ও ক্লকতাহেতু ক্লপ্রধান এহনীরোগে হিতকর; আর স্বাহ্ন অলরসমূক্ত ও নিম্বতাহেতু বাতপ্রধান এহনী-রোগেও প্রশস্ত্ব।

বিরেষকথা—সর্বতি সদ্যোজাত তক্রই আহার করিবে। তক্র পয়ু যিত (বাদী) হইলে, অভ্যন্ত অমরদ সংযুক্ত হয়; স্মৃতরাং ডাহা পরিভাগে করিবে। যেহেতু পয়ু যিত তক্র অম গুণাধিকাহেতু পিত্তকে বর্জিত করিয়া থাকে।

७ श्रीकि-भाठनम् ।---

শুঠীং সমুস্তাতিবিষাং গুড় চীং, পিবেজ্ঞলেন কৃথিতাং সমাংশাম। মন্দানলত্ত্বে সভভামভায়া-মামানুবদ্ধে গ্রহণীগদে চ॥ अर्थापि-भावन ।

শুঁঠ, মুখা, আতইম, গুলঞ্চ; এই সকল দ্রব্য সমূদায়ে ২ ডোলা, পাকার্থ জল ৩২ জোলা এবং পাক শেষ ৮ তোলা। ইহাদের কাথ পান করিলে অগ্নিমান্য, আমপূর্ব কোষ্ঠতা ও আমসংযুক্ত এহণী রোগ বিনষ্ট হয়।

ধান্যকাদি-পাচন্য।-

ধান্যকাতিবিষোদীচ্যয়মানী মুস্ত নাগ্রম্। वनामियनी विनुक मम्यामीयन-याठनम्॥ ধান্তকাদি-পাচন।

ধনিয়া, আতইস, বালা, যমানী, মুখা, শুণ্ঠী, বেড়েলা, শালপাণী, চাকুলে এবং বেলশুঠ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, জল ৩২ তোলা এবং শেষ ৮ তোলা। এই ক্বার্থ পান করিলে, গ্রহণী রোগীর আমদোষের পরিপাক ও জঠরাগ্রির উদ্দীপন হইয়া থাকে।

নাগরাদি-ক্ষায়ঃ।--

নাগরঞ্চাতিবিষাচ মুস্তকন্ত সমৎ সমম্। কাথং কুত্রাং পিবেররঃ পরং স্যাদামপাচনমু॥ নাগরাদি-ক্ষার।

শুঠী, আতইন ও মুথা; এই ত্রব্যত্রর সম্ভাগে সমস্তে ২তোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্রিশ ভোলা, এবং শেষ ৮ ভোলা। এই ক্লাথ আম পরিপাকের সর্কোৎকৃষ্ট ঔষধ বলিয়া জানিবে।

मान भन्। कि ।-

শালপর্ণী বলা বিলু ধান্য শুগ্রী ক্বতঃ শৃতঃ। আধানশূলসহিতাং বাতজাং গ্রহণীং জয়েৎ॥ भाल भगामि।

শালপাণী, বেড়েলা, বেলশু ঠ, ধনে ও শুঠী, এই সকল দ্রব্য সমানাংশে সমুদায়ে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথু পান করিত্তে আধ্যান ও শূলবৎ বেদনা সমস্বিত বাডজ এছণী রোগ বিনষ্ট ইয় ১

অভয়াদি-কাথঃ।—

অভয়াং পিপেলীমূলং বচাং কটকরোহিণীম।

পাঠাং বংশকবীজানি চিত্রকং বিশ্বভেষজম্ ॥
পিবেল্লিকাপ্য কষায়ং সুস্তাভিলাষী নরঃ।
পিত্রেল্লাভিভূতায়াং গ্রহণ্যাং শূলান্বিতায়াম্ ॥
অভ্যাদি কাথ।

হরীতকী, পিপুলমূল, বচ, কট্কী, আকনাদি, ইন্দ্রয়বন, রক্তচিতার মূল এবং শুঠী; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা এবং পাকশেষ ৮ তোলা। এই ক্বাথ পান করিলে রোগীর শূলবৎ বেদনাসমন্ত্রিত পিত্তশৈল্পিক গ্রহণী রোগ বিনম্ভ ইইয়া স্বাস্থ্যলাভ ইইতে পারে।

मार्क्तानिः।--

দারু নাগর নিশা স্বাস্কাকুণ্ডলী মগধজা শটী ঘনমৃ।
রাম্মা সভাগী সরলাহ্বপুক্ষরং,
পাচনং ভবতি বাতিকগ্রহে॥
দার্ক্যাদি।

দেবদাক, শুঠী, ছরিক্রা, বাসক, গুলঞ্চ, পিপ্পলী, শঠী, মূথা, রাস্ক্রা, বামন ছাটী, সরলকাঠ ও পুছরমূল (অভাবে কুড়); এই সকল দ্রব্য সমান ভাগে সমস্তে ২ ডোলা, পাকার্থ জল ।।। অর্ক্রমের (৩২ ডোলা) এবং পাকাবশেষ ৮ ডোলা (/ ১) অর্ক্রপোয়া)। এই ক্রাথ পান করিলে বাভজ্জ এছণী রোগার আম পরিপাক পায়।

নলাদিপঞ্মূলী-কাথঃ।—

নলবেণুকুশানাঞ্চ কাশেক্ষুণাঞ্চ মূলকম্।
নিঃকাথ্য পানং হৈতং বাস্য পাচনং পৈতিকগ্ৰহে॥
. নলাদি-পঞ্মূলী-কাথ।

নল, বেণু, কুশ, কাশ ও ইক্ষ্ ; এই পঞ্চদ্রব্যের মূল সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ডোলা এবং পাকাবশেষ ৮ ভোলা মাত্র। এই কাথ পিত্তজন্ম এহণী রোগীর আম পরিপাচক।

ব্যান্ত্র্যাদি-কাথঃ।—

ব্যান্ত্রী এন্থিক চব্যং সরসা শুর্গী দাড়িমম্। রজনী ঘনচিত্রকমেবং হিক্কামথগ্রহণীককং ছন্তি॥ ব্যাক্তাদি কাথ।

क्लेकाती, शिश्रुलग्ल, हरे, खत्रमा ((यखजूलमी), खर्थी, माज्यिकलत्त्र हाल, रतिजा, गूथा, तककिषात ग्ल ; এर मकल खरा जूला शतिमारण मगूनारत २ प्रहेर्डाला, भाकार्य खल ०२ रिक्रम र्डाला এবং भिष ४ चारिर्डाला । এই কাথ দেবন করিলে শ্লেমজন্ত এহণীরোগ ও হিক্সা নিবারিত হয়।

দৈশ্বগণি-তক্রম।—

বাতে২মুং দৈশ্ববোপেতং পিতে স্বাদ্ম একরম্। পিবেৎ তক্রং কফে চাপি ক্ষার-ত্রিকট্ট-সংযুত্য ॥ দৈশ্ববাদি ভক্ত।

বাতাধিক্য প্রহণীরোগে অঙ্গরসযুক্ত তক্র দৈশ্বব সহযোগে সেবন করিবে। পিত্তাধিকো মধুর রসযুক্ত ভক্র চিনির সহিত সেবন করিবে। এবং শ্লেখাধিক্যে যবক্ষার ও ত্রিকটু (শুঠ, পিপুল, মরিত) সংযুক্ত তক্র দেবন করিবে।

হিলু 1 দি-ত ক্রম্। —

হিন্দু জীরযুতং ঘোলং দৈন্ধবেনাবধূলিতম । অহণ্যশোষতিসারত্বং ভবেদ্বাতহরং পর্য ॥ রোচকং পুষ্টিদং বলাং বন্তিশূলবিনাশ ।

হিজাদি তক।

হিন্তু, জীরা ও দৈশ্ববলবণ সহযোগে তক্র আলোড়নপূর্বক দেবন করিলে এছেণী, অর্শঃ, অতীসার, বায়ু ও বস্তিণুল বিনষ্ট হয়। পরস্ক আহারে রুটি এবং শরীরে পুষ্টি ও বল বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

নাগরালাং কীরম।—

নাগর।তিবিষা মুস্ত কল্কেন পাচিতং পরঃ। हा गः उमा इनीतारम अन्छिमिन सोस्थम ॥ नगगवानाकीत ।

শুঠী, আতইম ও মুখা; এই দ্রব্যবয় সমানাংশে সমুদায়ে ২তোলা, ছাগ-ত্বন্ধ / ১০ অর্দ্ধপোরা, জল / ১০ দেড় পোরা এবং শেব / ১০ অর্দ্ধপোরা। এই ভুগ্ধাবশিষ্ট ক্বাথ এছণী রোগের সর্কোৎকৃষ্ট ঔষধ।

বিলু কলকঃ ! —

🕮 ফলশলাটুমজ্জা নাগরচুর্নেন মিশ্রিতঃ সগুড়ঃ। গ্রহণীগদমত্যুগ্রং তক্ত্রজা শীলিতো জয়তি॥ विलकल्क।

কাঁচাবেলের শাস শুঠ চূর্ণ সহ মিশ্রিত করিয়া, দ্বিগুণ গুড় সহযোগে ভক্ষণ করিবে। এবং আহারার্থে ডক্র সেবন করিবে। ইহা দারা অত্যন্ত প্রবল ে এহণী-রোগও বিনষ্ট হইয়া থাকে।

চিত্ৰকাদি-বটিকা।---

চিত্ৰকং পিপ্পলীমূলং কারে। লবনপঞ্চম্।

বাবিং হিঙ্গুজ্মোদা চ চব্যকৈকত চ্বরে ।
 বটিকা মাতুলুঙ্গা রসৈবিং দাড়িষয়া চ।
 রুতা বিপাচয়ত্যামং দীপয়ত্যাশু চ:নলম্॥
 চিত্রকাদি বটকা।

রক্ত ভিতার মূল, পিপুলের মূল, যবক্ষার, পঞ্চলবণ (নৈশ্বন, বিট্ সামুদ্র, দৌবর্চন ও উদ্ভিদ এই পঞ্চলবণ), ও ঠ, পিপুল, মরিচ, হিঙ্, বন্যমানী এবং চই ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে একতে চুর্গ করিয়া। ছোলঙ্গলেবুর রম অথবা দাভি্মের রমদ্বারা মর্দ্দনপূর্বক বটকা প্রস্তুত করিয়া। মেবন করিলে জাম পরিপাত হয় : এবং জ্ঞাবায়ি উদ্দীপিত হইয়া থাকে।

लाशी हर्नश्

কর্ষং গন্ধকমন্ধ পারদমুভে কুর্যাচছ ভাং কজ্ঞলীম্।
দাদন্ত্বে তশ্চ পঞ্লবণং সার্দ্ধক কর্ষং পৃথক্।
ভৃত্যং হিন্ধুচ জীরকদ্বয়যুত্য সর্বাহ্বভন্ধান্তিম্।
খাদেৎ টক্ষমিতং প্রতিগদবাংতজেণ বিলেণ বা।
লাগীচ্ব।

২ তোলা গদ্ধক এবং ১ তোলা পারা একত্র মর্দ্দনপূর্বক কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। পরে ত্রিকটুচ্গ ৪ তোলা; দৈশ্বন, নিট্ দৌবর্চল, নায়ত্র ও উদ্ভেদ লবণ, এই পঞ্চলবণ চ্ প্রতিকে ০ তিন তোলা; ভাজা হিদ্ধুচ্গ ০ ভোলা এবং জীরাচ্ গ ও ক্ষজীরা চ্ গ ০ ভোলা, এবং এই মকল তাব্য যত, তাহার অর্দ্ধেক মিদ্ধি (ভাঙ্) চ্ গ, এই সমস্ত চ্ গ একত্র মিলিভ করিরা ভক্র অথবা বেলের সহিত্য। অর্দ্ধিভোলা মাত্রায় দেবন করিলে মল্ভেদ নিবারিভ হর।

জাতিফলাকি-চুর্ণম্।—

জাতিকলং লবলৈ লবতু ছুঁ নাগ্রিকশিরৈঃ।
কপুরিচন্দর্শতিল হুক্ ক্ষীরীতগরামলৈঃ॥
তালীশং পিপেলী পথ্যা স্থলজীরক চিত্রবিঃ।
শুগী বিভূপমরিটিঃ সমভাগং বিচুর্নিতিঃ॥
যাবন্তোতানি দর্বাণি দল্যান্তপ্লাঞ্চ ভাবতী মৃ।
সর্বচুর্নং সমং কৃত্বা প্রদেরা শুলেনরা॥
কর্মাত্রমিদং খাদেন্ মধুনা প্লাবিতং নরঃ।
নাশরেদ্ গ্রহণীং খাসং ক্ষরকাসমরোচক ম্॥
জাতিকলাদি চুর্ন।

জাতিফল, লবজ, এলাচি, তেজপত্র, দারুচিনি, নাগকেশর, কপূর, রক্ত-চন্দন, তিলের খোসা, বংশলোচন, তগরপাত্নকা, আমলকী, ডালীশপত্র, পিপুল, হরীতকী, সুলজীরা, রক্তচিতা, শুগ্দী, বিজ্ঞাও মরিচ; েই সকল প্রথম জব্য সমভাগে লইয়া চূর্য করিবে। তৎপরে এই চূর্ণ সমষ্টির সমান সিদ্ধিচ্ মিশ্রিত করিয়া যত পরিমাণে হইবে, তত পরিমাণে চিনি মিশ্রিত করিবে। এই চূর্য প্রথম ২ ভোলা মাজায় মধুর সহিত দেবন করিলে এহণী, শ্বাস, ক্ষয়, কাস ও অকচি বিনষ্ট হয়।

মুন্তকাদি চূর্ণম্:—

মুস্তকাতিবিষা বিলু কৌটজং স্থক্ষাচূর্ণিতম্।
মধুনা চ সমালী ঢ়ং গ্রহণীং সর্বেজাং জয়েৎ॥
মুস্তকাদি চুর্।

মুথা, আতইস, বেল ও ইন্দ্রয়ব ; এই দ্রাচতুষ্টার সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্মক চূর্ণ করিয়া, মধুর সহিত লেহনপূর্মক সেবন করিলে, সকলপ্রকার
গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়।

मर्ब्छतम- हूर्गम्। —

শেতো বা যদি বা রক্তঃ স্থপকো গ্রহণীগদঃ। গুড়েনাধিকসর্জ্জেণ ভক্ষিতেনাশু নশ্যতি॥ সর্জ্বসূচ্ব।

ধুনা চূর্গ করিয়া গুড়ের সহিত দেবন করিলে, অতি সত্ত্বর খেত অথবা রক্তবর্ণমল সমন্বিত গ্রহণী রোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

বাৰ্ত্তা भी-গুটিকা।---

চতৃঃপলং সুধাকাণ্ডাৎ ত্রিপলং লবণত্রয়াৎ। বার্ত্তাক্যাঃ কুড়বঞ্চার্কমূলাদ্বিলৃং তথানলাৎ॥ দগ্ধা দ্বেণ বাহাকো গুটিকা ভোজনান্তরে। ভুক্ত ভুক্তং পচন্ত্র্যাশু নাশয়েদ্গ্রহণীগদম্॥ কাসং খাসং তথাশাংসি বিস্কৃতীঞ্চ হৃদাধ্য়ম্॥ বার্ত্তাকীশুটিকা।

সিজের কাণ্ড ৪ পল, ত্রিলবণ (সৈশ্বন, বিট্ ও সৌবর্চন) মিলিত ১ পল, শুষ্ক বেগুণ ৪ পল, আকন্দের মূল ৮ পল এবং রক্তচিতার মূল ৮ পল। এই সকল দ্রব্য অন্তর্গুমে দক্ষ করিয়া ক্ষার প্রস্তুত করিবে। তৎপরে বার্তাকুর রস দ্বারা মর্দ্দিত করিয়া বড়ী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে গ্রহণী রোগ, কাস, খাস, অর্খঃ, বিস্থৃচিকা এবং হুজোগ বিন্ই হয়।

পঞ্চপল্লবম্।—
জমুনাড়িম শৃঙ্গাট পাঠা কঞ্টপল্লবৈঃ।
পক্থ প্রমূমিতং বালবিলুং সগুড় নাগ্রম্॥
হত্তি স্কানতিসারান্ এহণীমতি হুন্তরাম্॥

यर्छ-व्यक्षात्रः

পঞ্চপল্ল ।

জাম, দাড়িম, পাণিকল, আকনাদি ও কাঁচড়াণ; এই সকলের পত্রদারা একটি কাঁচা বেল উত্তম রূপে বেজনপূর্বক বন্ধন করিয়া, উপযুক্ত পরিমিড জল সহযোগে সিদ্ধ করিবে। পর দিবস ঐ সিদ্ধ করা বেল ২ ডোলা মাত্রার লইয়া, উপযুক্ত মাত্রায় শুঠচুর্ন ও বেলের সমান ইক্ষুগুড় একত্র মিজ্ঞিতকরতঃ: দেই সিদ্ধ, করা জল সহ ভক্ষণ করিবে। ইহা দ্বারা সর্ক্ষবিধ অভীসার ও অভি প্রবল গ্রহণীরোগ্য বিনষ্ট হইয়া থাকে।

শিবাদি চুর্ণম্ ।---

শিবা সৈদ্ধব মুন্তঞ্চ যমানী ধান্যকং তথা। শতপুষ্পা শুক্ষপত্ৰং ভোজনাদো প্ৰযোজয়েৎ। ছব্তি ত্ৰিদোষ-গ্ৰহণীং সামজাং বক্তজামপি।

শিবাদিচূর্ণ।

হরীতকী, দৈশ্ববলবণ, মুথা, যমানী, ধনিয়া, শলুকা এবং শুদ্ধ পাটপাতা (নাল্ডে); এই দকল দ্রব্য দমভাগে চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিড করিয়া লইবে। এই চূর্ণ।। অর্ধভোলা মাত্রায় ভোজন করিবার অব্যবহিত পূর্ব্বকালে দেবন করিলে, ত্রিদোধিক আম ও রক্ত সংযুক্ত গ্রহণীরোগ বিনষ্ট হয়।

यधालाञ्चीहृर्वम्।---

কর্ষং গদ্ধকমন্ধ পারদ্যিতং কুর্যাচছ ভাং কজ্জলীমৃ।
নিম্বং ক্রায়ণমেব পঞ্চলবণাৎ সার্দ্ধক কর্বং পৃথক্ ।
সার্দ্ধান্ধই দ্বিপলং বিচুর্ণা সকলং শক্রাশনান্মিশ্রিতম্।
খাদেচছাণ্যিত্যেইর কাঞ্জিকপলং মন্দায়ি-সন্দীপন্ম্ ॥
ব্যেছ-ভোজনতো রসায়ন্যিদং ঘূর্ণাদিকোপদ্রের।
পোরকাইত্র তু কাঞ্জিকং বদতি স লায়ী মহাযোগিনী ॥
হন্যান্বাতক্ষ পিত্তং কফবিফ্রতিমতীসায়রোগং গ্রহনীম্।
শাসং কাসক শূলং জ্বরমুদরক্রজো রাজ্যক্ষাণ্যুগ্রম্ ॥
প্রীহানকামবাতং ষড়পি গ্রদক্ষাণ্ কুষ্ঠরোগান্ সমন্তান্।
বাতাস্ক্ কর্ণরোগানিদম্প ক্ষিতং দীপনং জাঠরাগ্রেঃ॥
পৃথগিতি ত্রিকট্বাদীনাং সম্বধ্যতে। সার্দ্ধান্দেতিকর্ম্বর্যারয়ঃ।
তেনিসার্দ্ধ কর্যাধিকং দ্বিপলং ত্রিশাণং পঞ্চলবণং
প্রত্যেকং ক্রায়ণং পিচুরিত্যারভা ইন্দ্রাশনাদ্বিপলম্।
শাণ্তিভয়াধিক্যিব্যতে ইতি পাঠান্তর সংবাদাৎ ॥

मधालात्रीपृर्व ।

২ ভোলা গন্ধক ও > ভোলা পারদ একর মিশ্রণপূর্ব্বক উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে; তদনস্তর নিম্নপাত্ত, পঞ্চলবণ, শুঠ, পিপুল ও মরিচ; প্রভাকে ও তিনভোলা এবং ১৭ সপ্তদশ ভোলা সিদ্ধিচ্ন করতঃ, উক্তক্ষলী সহ মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চুর্ন ঔষধ ১ ভোলা মারায় দেবনপূর্বক তৎপরে কাঁজি সহযোগে অম্পথ্য করিবে। এই রসায়ন ঔয়ধ দেবন করিয়া ইচ্ছাচ্নারে ভোজনাদি করা যায়। এই ঔষধ দেবন দারা যূর্ন (জমি) আনি উপদ্রবন বাত, পিত্ত ও মেশ্র কর্তৃক বিকার, অতীদার, এইণী, শ্বাস, কাস, শূল, জর, উদর বেদনা, রাজ্যক্ষান, প্রীহা, আমবাত, ৬ প্রকার গুদরোগ, সর্ব্ববিধ কুর্চরোগ, বাতরক্ত ও ত্রণ রোগ বিন্ধী হয়; এবং ইহ। জঠরাগ্রির প্রদীপক।

মহালায়ীচুৰ্ণ্।—

চিত্রকং ত্রিফলা ব্যোষং বিভুল্প রজনীব্যম্। ভলাতকং যমানী চ হিন্দু লবণ পঞ্চম্॥ গৃহধৃমং বচাকুষ্ঠং ঘন মত্রঞ গন্ধকম্। क्षांत्रदशकाकरमाना शांत्रपः इस्तिशिशाली॥ যাবন্ত্যেতানি চূর্ণানি তাবচ্ছক্রাশনস্য চ । বিড়ালপদমাত্রস্ত্র দাপয়েদস্য গুওকম্॥ অভ্যৰ্ক্যনায়িকাং প্ৰাত হোগিনীং কালরূপিনীয়। ষন্দাগ্নিকাসত্র্ণাম প্লীহ-পাতু জ্বাপহঃ॥ শোপ প্রমেহবিউড সংগ্রহ গ্রহণী হরঃ। নানাবৰ্শভীসারং সর্বাশ্লনিস্দনম্॥ আমবাত-গদচ্ছেদী স্থতিকা-ভঙ্গনান্ম। বৈত্মিন্ ব্যাধ্য়ঃ সন্তি বাতশ্লেষ্য সমুদ্ধবঃঃ॥ ভন্মাণাদো সদাসেব্যো গুণ্ডকো লায়িকাক্তঃ। কাঞ্ছিকায়ং স্দাপথ্যং দম্মীনং তথাদ্ধি ii বীর্যাত্ত্বক ব্যবায়ক স্থানং পিনিতভোজনম্। কাষ্ঠমপুদেরে যস্য ভক্ষণাদ্যাতি জীর্ণতাম ॥ महालाशीहर्ग।

রক্তানিজার মূল, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুঁঠ, পিপুল, মরিছ, বিড়ন্ত্র, হরিদ্রা, নাকহরিদ্রা, শোধিত তেলার আঁটি, যগানী, হিসু, সৈম্বলবণ, দচল-লবণ, বিট্নবণ, সামুদ্রলবণ, উদ্ভিদলবণ, গৃহধূম, বচ, কুড়, মুখা, শোধিত আন্ত্র, শোধিতগ্যাক, বৰক্ষার, সাচিকার, বন্যমানী, শোধিতপার্ব এবং গ্রন্থ

The state of the second state of the second second

िर्भूल : और गर्कल खरगंद्र ममजागं हुई ७ और हुई समस्वित समान श्रीसिष्ट मिस्टिइई । अरे हुई उप र एजाला माजाय धर्मभूर्यक खाजःकारल कालक्ष्मिंगी स्थागिमीरक व्यक्तिनमूर्यक मिस्टिइई । अर्थ मिस्टिइई । अर्थ हुई उप र एजाला माजाय धर्मभूर्यक खाजःकारल कालक्ष्मिंगी स्थागिमीरक व्यक्तिनमूर्यक मिस्टिइ , मश्धर्थरगी, नानावर्ग व्यक्तिमांद्र , मर्यदिश्मूल, व्यामवाज, स्रुक्तिक्व मल्डि वर्ष वाज्ञामांद्र क्रिडेइ । अर्थ देश खाता वीद्या ख ग्राम्थिल वर्ष इस । अपन कि अरे अर्थ (मवन क्रिट्ल जेमब्र कार्ष श्रीख क्रीर्ग हरेशा थारक । ज्याम क्रियांद्र क्रिकेट भूर्यजारा अरे अर्थ (मवन क्रिट्ल जेमब्र कार्ष भिरास क्रियांद्र क्रिकेट भ्रांख क्रीर्ग हरेशा थारक । (ज्यक्त क्रियांद्र क्रिकेट भ्रांख खीर्ग हरेशा थारक । (ज्यक्त क्रियांद्र क्रिकेट भ्रांख खीर्ग हरेशा थारक । (ज्यक्त क्रियांद्र क्रिकेट भ्रांख क्रिकेट)

मधानवङ्गानिष्ट्राम् ।--

লবঙ্গাতিবিষা মুস্ত বিল্ পাঠা চ শালালী।
জীরকং ধাতকীপুল্পং লোদ্রেন্দ্রষব বালকম্।
ধান্যং সর্জ্ঞরসশৃঙ্গী পিপেলী বিশ্বভেষজম্।
সমন্ধ্য ধাবশ্কক দৈশ্ববক রসাঞ্জনম্।
এতানি সমভাগানি শ্লক্ষচুর্ণানি কারয়েং।
শেষয়েদিয়ান্দ্যক সংগ্রহগ্রহণীত্তথা।
নানাবর্ণ মতীসারং সশোগং পাও কামলাম্।
গ্রহণ্যানিগদান্ সর্বান্ কও পাও দিপীনসান্।
অগ্রিমান্দ্যেচ প্রশস্তমিদম্।
মধ্যলবন্ধাদিচুর্গ।

লবন্ধ, আডইস, মুথা, বেলশু ঠ, আকনানী, শিমুল আঠা, জীরা, ধাইফুল, লোধ, ইন্দ্রয়ব, বালা, ধনিয়া, ধুনা, কাঁকড়াশৃঙ্গী, পিপুল, শুঠী, বরাহজান্তা, যবক্ষার, সৈন্ধবলবণ ও রসাঞ্জন; এই সকল বন্ধ সমান পরিমাণে এছণপূর্বক উত্তমরূপে অতি স্ক্রম চুর্ণ করিয়া, একত্র মিশ্রিড করিবে। ইছা সেবন করিলে অগ্রিমন্দতা, কংগ্রহ এহণী, নানাবর্ণ সংযুক্ত অভীসার, শোখ, পার্ধু কামলা, এহণী আদি সর্বপ্রকার রোগ, কণ্ডু এবং পীনসাদি রোগ সকল নিবারিত হয়। এই উষধ অগ্রিমান্য রোগেও অভীব প্রশন্ত।

গঙ্গাধরতৃর্ণমৃ।—
বিলৃং শৃঙ্গাটিকা দলং দাড়িমীফলমেবচ।
মুস্তকাতিবিষাচৈব নাগরকাপি ধাডকী॥
মরিচং পিপেলী মিক্রং দাবী ভুনিষ বৎসকো।
জমুরসাঞ্জনকাপি কুটজস্য ফলস্তথা॥
পাঠাং সমন্ধাং হীবেরং শালালী-বেউমেব চ।

শক্তাশনং ভ্রন্থ তুর্থ দেয়ং সমং সমন্ ।
কুটজনা ভ্রুং চূর্ণং সর্কেষাং চূর্ণসঞ্চরঃ।
এতদাঙ্গাধরং নাম মহাচূর্ণং মহাফলম্ ॥
নানাবর্ণমতীনারং চিরজং বহুরূপিনম্।
ভূকারং গ্রহণীরোগং ভ্রুফাকাসং নিহন্তি চ॥
জরঞ্চ বিবিধং হন্যাৎ শোথকৈবাতি দারুণম্।
আঞ্চিং পাণ্ডুরোগঞ্চ হন্যাদেতর সংশ্রঃ॥
ছাগীভূদ্দেন মধুনা মণ্ডেন লেহ্য়েভ্রু তুৎ॥
গঙ্গাধ্বচূর্ন।

বিলুশুন্থী, পাণিফলপত্র, দাড়িমফল, মুখা, আতৈস, শুণ্ঠী, ধাইফুল মরিচ, পিপ্পলী, দিদ্ধি, দাঞ্ছরিজা, চিরতা, কুরচি, জামপাতা, রদাঞ্জন, ইন্দ্র যব, আকনাদি, বরাহক্রান্তা, বালা, মোচরস, সিদ্ধি ও ভীমরাজ; এইসকল জব্য সমানাংশে গ্রহণপূর্বক উত্তমরপে চূর্ণ করিবে এবং এই চূর্ণ সমস্কির সমান কুরচিছাল চূর্ণ করিয়া, সমুদার গুলি একত্র মিশ্রিড করিবে। এই চূর্ণ ঔষধ্ব ছাগীহৃত্ব, মধু ও মণ্ড দছ দেবন করিলে, নানাবর্ণ চিরকালীন বহুবিধ অতী-সার, ত্র্বার গ্রহণীরোগ, তৃঞা, কাস, বিবিধপ্রকার জর, দাঞ্চপ্রোথ, অক্ষাধি ও পাণ্ডু রোগ নিঃসংশয়ে আরোগ্য হইয়া থাকে।

রহচ্ছতাবরী মোদকঃ।
শতাবরী খাদংস্টা চ বলা চাতিবলা তথা।
মর্কটী ক্ষুরগন্ধাচ বিদারী কন্দজং রজঃ॥
এতানি সমভাগানি পলিকানি বিচুর্ণয়েৎ।
তন্মাচ্চত্বপ্ত বং কার্যং তৈলোক্যবিজয়ারজঃ॥
এতদেকীরুতং বা যন্তদর্জং মাহিষং পয়ঃ।
তাবনাত্তঃ প্রয়োক্তব্যঃ শতাবর্যারসঃ শুভঃ॥
বিদার্যাঃ প্ররমঃ প্রস্থঃ সিতাপলশতদ্বয়্য।
গোলমিত্বা সিতাচৈব পাত্রে তাদ্রময়ে দৃঢ়ে॥
বিপচেৎ পাকবিদ্বৈদ্যো মোদকার্থং পরং হিতম্।
আবণং ত্রিকলা শৃদ্ধী ত্রিজার্তং সৈন্ধবং শঠী॥
ধান্যকং বালকং মুন্তং দ্বিজীরং কুন্দুরুমুরা।
কাকোলী ক্ষীরকাকোলী কন্তারী গোন্তনীতুগা॥
জাতীকোষ কলং মাংসী পত্রং বারেক্র মান্থক্ষ্য।
শতপূক্ষা চবিকা চ দাক্ষ রাম্মালবঙ্গক্ষ্য়।

 मद्रमः देनमङ्किव कृष्टे क्मः मद्रयामिक्य् । কক্কোল কেশরং মেথীমধুকং দেকভাড়কম্।। মিবিন্তালীশপত্রক খর্চ্চ্র রং রসগন্ধকম্। তগরং চন্দনং টক্ষং প্রত্যেকং কোলসন্মিতম ॥ बिस्न मर्भाताला कर्भ त्त्र गांधियामत्त्र । ৰিবং সংপূজ্য সগ্ৰং ধন্ত ত্ত্ৰিম্থাপ্রম্॥ কোল-প্রমাণং ভোজবাং ক্ষীরঞ্চারু পিবেন্নরঃ। প্রাতর্ভোজন-কালে চ ভোক্তব্যন্তং নিনং প্রতি॥ প্রমনা-শতগাম তোর চ শুক্রক্ষরো ভবেৎ। न उमालिक्ररेमिथिलाः नह मामर्था-दैना ॥ তক্ল ানিক বালানাং ব্ৰামাক প্ৰশ্মতে। मोरेनक मूलरयारान ब्र्जाः इति विरम्ब छः॥ . পরং বাতান্ হরং বলাং শুক্রসঞ্জননং পরম্। क्षयरेकव महावाधिः পঞ্कामान् यूनाकृगान्॥ देपिक्काः काणि कक्षान् मः मृक्षान् मान्निपाठिकान् । হস্তাফাদশকুষ্ঠানি বাতরক্তানি যানিচ। প্রমেছং শ্লীপদং শোথং লক্ষীকান্তি বিবর্দ্ধনম্। সৰ্বানশোগদান্ হত্তি রক্ষমিক্রাণনির্থা। গৃধদী মথগুলাক ভগ্নকালি বেণং তথা। ব্যাধীন্ কোষ্ঠগতাং দ্বাপি জয়েদ্বিফুরিবাসুরান্॥ নাতঃ পরতরং শ্রেষ্ঠং বাজীকরণমূভ্যম্। ন্ত্ৰীশাকৈবানপত্যানাং তুৰ্বলাশক দেহিনাম । ফীণানামপ্পশুক্রানাং জীণানামপ্পরেভসাম্। ওজন্তেজকরকৈব আয়ুঃ পুক্তিবিবর্দ্ধনমূ॥ রহচ্ছতাবরী নামা মোদকো জগতাং হিডঃ। রোগাপহঃ শিবোমিত্যং বাসুদেবেন নির্দ্দিতঃ॥ व्याशृन तमवीशानि म क्रामनननानिह। পক্ত্ৰা পরনি সংশোষ্য চূর্ণয়েৎ পট্টবান্তঃ ॥

हरम्डजावदीरमान्क।

শভাবরী গোসুর, বেড়েলা, গোবক্ষাকুলে, আলমুগীবীক, শালপানী

ও ভূমিকুরাও; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৮ ডোলা করিয়া প্রস্থাপুর্বক श्रक्का हुन कतिद्वर अवर अहे हुन ममकित ठातिला मिक्कि अहन कतित्रा हुन করিয়া উক্তচূর্ণ মহ শিশ্রিত করিবে। এই দকল চূর্ণিত দ্রব্য, উহার অর্দ্ধ পরিমিত মাহিষত্বন্ধ ও শতাবরীর স্বরস, /৪ চারিসের ভূমিকুত্মাণ্ডের রস এবং ॥৫ পঁটিশদের চিনি ; এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিরা একটী দৃঢ় ভাত্রময় পারে করিয়া অগ্নিদংযোগে পাক করিতে থাকিবে, যখন জলীয়ভাগ প্রায় শুষ্ক হইরাছে দেখিবে, তখন উহা চূলী হইতে নামাইবে। তৎপরে শুঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কাঁকড়াশৃল্পী, দাকচিনি, এলাচি, ভেজপত্র, সৈন্ধবলবণ, শঠা, থনে, বালা, মুখা, জীরা, কুফজীরা, কুকুকখটী, मुतामाश्मी, कारकाली, कीतकारकाली, कश्चती आका, वश्मालावन, खांखीकल, দাৰু, রাম্মা, লবন্ধ, সরলকাষ্ঠ্য, শৈলজ্ঞ, কট্ফল্য যমানী, কাক্লা, মেথী,নাগ-কেশর, যক্তিমধু, দেবতাড়ক, মৌরী, তালীশপত্র, পিওথেজুর, শ্রোধিত পারা, শোধিত গন্ধক, তগরপাত্নকা, বক্তচন্দন এবং সোহাগার খৈ; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে ১ একতোলা এবং স্থান্ধার্থে আরও কিঞ্চিৎ পরিমাণে দাক্টিনি, ডেজ্বপত্র, এলাচি ও কপুরিচূর্ণ তৎসহ মিশ্রিত করিয়া আলো-ভূনপূর্বক মোদক প্রস্তুত করিবে। এই মোদক প্রতিদিন প্রাত্তঃকালে ভোজন সময়ে প্রমর্থগণসহ শিব ও ধন্বন্তরি আদি মহাত্মাদিগকে পূজা করিয়া, ত্বশ্ব অমুপান সহ প্রতিদিন ১ এক্তোলা মাত্রায় সেবন করিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে শত স্ত্রীসহ শৃঙ্গারেও বীর্যাক্ষয়, লিঙ্গের শিথিলতা ও সামর্থের হীনতা জ্বোনা। ইহা তৰুণবয়স্ক বালক ও ব্লদ্ধদিশের পক্ষে অতীব প্রশস্ত। এই ঔষধ এক মাস পর্যান্ত সেবন করিলে শারীরিক বল, শুক্র, লক্ষ্মী ও কান্তি বর্দ্ধিত হয় ; এবং ইন্দ্রের বক্তকর্তৃক আহত রক্ষসমূহ ধংসের স্থায় জ্বর, ৰাড, ক্ষয়, ৰাভিক, পৈত্তিক, লৈঘ্মিকাদি পঞ্চবিধ স্থদাৰুণ কাস, অষ্টা-দশ প্রকার কুষ্ঠ ও বাতরক্ত রোগ বিনষ্ট হয়; এবং বিষ্ণু কর্ত্তৃক অস্ত্রর সমূহ বিনষ্টের স্থায় প্রমেহ, স্লীপদ, শোথ, অর্শঃ, গৃপ্তসী, গুলা, ভগ্ন, ত্রণ ও কোষ্ঠগত রোগ সকল বিনাশ প্রাপ্ত হয়। এই ব্লছচ্ছতাবরীমোদক সর্কোৎ-কৃষ্ট বাজীকরণ ঔষধ এবং স্ত্রী, অপত্যহীন, হর্কল, ক্ষীণ, অপ্পরীর্যাশালী ও রদ্ধ ব্যক্তিদিগের ওজ:, তেজঃ, আয়ুঃ ও পুটিবর্দ্ধক। এই সর্ব্ধবিধ ব্যাধিনাশক শতাবরীনামক মোদক জগতের হিতের নিমিত্ত স্বয়ং মহাদেব কর্ত্ত্ব নির্মিত হইয়াছে। এই ঔষধে ব্যবহার্ঘ্য দিদ্ধির পত্রগুলি ছক্ষ দ্বারা পাকপুর্বক রৌত্রে শুষ্ক করিয়া, চূর্ণকরতঃ স্থা ব্যারা ছাঁকিয়া লইতে **स्ट्र**व।

অফপলং মৃতং।—

ক্রাষণ ত্রিফলাকল্কে বিলুমাত্রে গুড়াৎপলে। সর্পিষোষ্ট্রপলং প্রজ্বা মাত্রাং মন্দানলে পিবেৎ।

অইপলয়ত।

শুঠী, মরিচ, পিপুল, আমলকী, বছেড়া, হরীতকী; এই ছয়তী দ্রব্য সম-ভাগে মিলিত ৮ ভোলা এবং শুড় ৮ ভোলা, এই সকল কল্ফ দ্রবা সহ আর্ধ-পরিমিত জল সমন্বিত /> একদেব (৬৪ ভোলা) গব্যন্থত পাক করিবে। এই স্বত্ত বোগীব বল ও আগ্লি বিবেচনায় মাত্রা স্থিব কবিয়া প্রয়োগ করিলে, অটিমান্দ্য বিনন্ত হইয়া থাকে।

নাগরাধ্যং মৃত্যু।---

য়তং নাগর কল্কেন সিদ্ধং বাতানুলোমনম্। আহণী-পাণ্ডুরোগঘং প্লীছ কাস দ্বরাপছম্॥ নাগরাদায়ত।

উপয়ক্ত পরিমিত শুগীব কল্ক সহ চতুপ্ত'। জল সমস্বিত দ্বত পাক কবিবে। পালেব নিয়ম /৪ চারিদের গব্য দ্বত, বল্কার্থ কুট্টিত শুগী /১ এক সের। এই দ্বত পান কবিলে বায়র অন্তলোমন হয় এবং এফণী, পাণ্ডু, প্লীহা, কাস ও জর নিবাবিত হইয়া থাকে।

ভূনিয়ানি চূর্ণম্।—

ভূনিষ কটুকাব্যাষ মুস্তকে ক্রম্বান্ সমান্।
নী চিত্রকাদ্ বৎসকত্বগ্ ভাগান্ ষোড় ব চূর্ণয়ে ॥
ত ড শীতামুনা পীতং এছণীদোষ গুলারু ।
কামলা জ্বপাণ্ড ত্ব মেহারুচাতিসারকু ॥
ত ড়বোগাদ্ গুড়ামু স্যাদ্ গুড়বর্ণরসাধিতঃ॥
ভূনিষাদিচুর্ণ।

চিবতা, কট্ কী, ত্রিকটু, মুখা, ইস্রেয়ব, এই সকল দ্রব্য প্রান্ত্যেকে এক এক ভাগ, চিতাবদল ১ ডুই ভাগ এবং কুর্রচিছাল ১৬ যোল ভাগ; সমস্ত দ্রবাগুলি উত্তম প্রকাবে চূর্ণ করিবে। এই চূর্ণ ঔষধ ৯/০ আনা হইতে।০ চারি আনা পর্যান্ত মাত্রায় শীভল জল প্রযুক্ত মাত্রায় গুড় সহ মিশ্রিত করিয়া সেবন কবিবে। এমত পরিমাণে গুড দিতে হইবে যে, যদ্ধারা মধুব রসম্বক্ত প্র গুড়ের বর্ণ বিশিক্ত হয়। এই ঔষধ সেবন করিলে গ্রাহণী, গুকা, কামলা, জর, পাণু, মেহ, অ্কচি গু অতীসার রোগ নক্ত হয়।

নাগরান্য চূর্ব্।--

নাগরাতিবিষ। মুন্তং ধাতকী সরসাঞ্জনম্। বৎসকত্ত্বকৃষ্ণং বিলৃং প ঠাং কটুকরোহিণীমৃ॥ পিবেৎ সমাংশং তচ্চু বং সক্ষেত্রিং তণ্ডু লামুনা। গৈভিকে এহণীদোধে রক্ত যদ্গেপবেশ্যতে॥

অৰ্শংসাথ গুদেশূলং জয়েকৈব প্ৰবাহিকাম ৷ নাগরানামিনং চূর্বং ক্ষণত্তেরেণ পুঞ্চিতম্। नागतामाह्य ।

শুগী, আটভদ, মুখা, ধাইফুল, রদাঞ্জন, কুবচিছাল, ইন্দ্রঘৰ, বেল শুঠ, পাঠা ও কট্কা : এইদকল জবা সমভাগে এহণপূর্বক স্ক্রমচ্ত্রকরিয়া লইবে। এই চূণ ঔষধ। মধু সিকিতোলা এবং তণ্ডলোদক সহযোগে সেবন করিলে পৈত্তিক গ্রহণী, রক্তাভিসার, অর্ণঃ, গুদশুল এবং প্রবাহিকা বোগ বিনম্ব হয়। মহাস্থা কৃষ্ণাত্রের মুনি কর্তৃক ইহাব যথেষ্ট সমাদর প্রকাশিত হইয়াছে।

भाठाना हुर्नम् ।--

পাঠা বিল্বানল বোগৰ জন্মুনাড়িম ধাতকী। क ट्रेका डिविय। मुख मार्की छुन्यि वर्गटेक ॥ मर्टिक्दरत्रहेज्ह ममर हृन्द कोहे कर उधु लामूना। मको प्रक निरद्धि क्रां जिमात्रमूलेयान् ॥ ভৃত্বোষ গ্রহণীপাহারোচকানল সাদ্ধিৎ॥

शाठामः हुर्।।

আক্রণদি বেলভঠ, রক্তচিতার মূল, ভঠী, পিপ্পলী, মরিচ, জামের আঁটি, দাড়িমের বীজ, ধাইফুন, কট্কী, আতইস, মুখা, দাকহরিকা, চিবতা ও ইস্রেযব , এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে এবং এই সমস্ত দ্রব্যের সমান কুরচিছাল এছণপূর্বক সমুদায় দ্রব্য গুলি উত্তময়পে স্থক্ষ চূর্ণ করিবে। এই চূর্ণ ঔষধ । • দিকিভোল। মধু এবং ভণ্ণুলোদক সহ সেবন কবিলে ছদ্দি, खुत, जाजीमात, मूल. ज्या, मार, शर्गी, जारू हि ७ जाशिमान्ता निवादिज रत्र।

কপিখান্টক চূর্ণম্। —

যমানী পিপ্পলীমূল চাতুর্জাতক নাগরৈঃ। मतिवादि कलाकाकी थाना त्मीवर्क्टलः मटेमः॥ व्रकाञ्च धांडको क्रका दिन्दृषां एम जिन्दूरेक है। ত্রিগুণৈঃ ষড়্গুণসিতৈঃ কপিত্বাইগুণৈঃ ক্তঃ॥ हृत्रीरजीमात्र ग्रहणी कराखना शनामशान्। কাদং খাদারু 6 হক্কাং কপিথা উমিদং জয়ে ॥ কপিথাষ্টকচূণ।

यमानी, शिशूरलं यूल, माक्किन, अलाहि, उड्डिशंब, नागरकभंद, क्षेत्री, यतिष्ठ, त्रक्लिष्डिक्षंत्र यूल, वाला, कृष्णकीता, धनित्रा ও महललवन , এই मकल অব্যের চূর্ণ প্রভোকে এক এক ভাগ, অমবেডস, ধাইফুল, পিপুল, বিলুভঠী, साष्ट्रियमन अ गांव ; अहे गवरनत हुर्व क्षार्डारक ७ छाग, हिमि ७ इत्र छाग,

করেংকৌ চূর্ণ ৮ ভাগ ; এই দকল চূর্ণ একত্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে অতীসার, গ্রহণী, ক্লর, গুলা, গলবোগ, কাদ, খাদ, অক্চি ও হিন্ধারোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

দাভি়মাউক চূর্ণম্।—

কর্ষোঝিত। তুগাক্ষীরী চাতুর্জ্জাতং বিকার্ধিকম্।
যমানী ধান্যকাজাজী গ্রন্থিব্যোষং পলাংশিকম্।
পলানি দাড়িমানটো সিতায়াকৈকতঃ ক্বতঃ।
শুবৈঃ কপিখাউবচ্চু পোহয়ং দাড়িমাউকঃ॥

দাড়িমাস্টকচূর্ণ।

বংশলোচন ২ তোলা, দাকচিনি, তেজপত্র, এলাচি ও নাগকেশর; প্রত্যেকে ৪ চারতোলা; যদানী, ধনে, কৃষজীরা, পিপুলমূল, শুঠী, পিপুল ও মরিচ প্রত্যেকে ৮ তোলা; দাড়িমফল ৬৪ তোলা; এই সকল দ্রব্য উত্তম-রূপে চূর্ণ করিয়া, দেই চূর্ণ নহ ৬৪ তোলা চিনি মিশ্রিড করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ ছই আনা ছইতে। চারি আনা পর্যান্ত মাত্রায় সেবন করিলে, পূর্ব্বোক্ত কপিথান্টক চূর্ণের স্থায় উপকার হইয়া থাকে। অর্থাৎ ইহা দ্বারা অতীসার, এহণী, ক্ষয়, গুলা, গলাময় কাস, শ্বাস, অকচি ও হিকারোগ নিবারিত হয়।

দ্বিতীয় গঙ্গাধর-চূর্ণম্।—

মুস্ত দৈশ্ববশুগীভি ধাতকী লোধ্রবং সকৈঃ।
বিলুমোচর সাভ্যাঞ্চ পাঠে ক্রয়ব বালকৈঃ॥
চূত্বীজ মতিবিষা লজ্জা চেতি স্বচুর্ণিতম্।
ক্ষৌদ্রত গুলতোয় মভ্যাং জয়েৎ পীতা প্রবাহিকাম্॥
হান্তি সর্কানতীসারান্ সর্কাশূলনিস্থানন্।
সংগ্রহগ্রহণীং হান্তি স্থতিকাতক্ষমের চ॥
এতুদ্ গঙ্গাধরং চূর্ণং সরিদ্বেগাবরোধনম্॥

দিভীর গঙ্গাধরচূর্ণ।

यूथा, रिमहत्तवर्ग, श्रेष्ठी, धार्रफ्न, लाध, क्रुतिह्हान, दन्तश्रं के, साहत्रम, व्याक्तामि, रेख्यव, वाना, व्याख्यत वांकित भीम, व्याख्रेह अवर वताहकाला; अरे मुक्न प्रवा ममजारा धहार्ग्वर्किक हूर्ग क्रिया नहेर्दा। अरे हूर्ग क्षेय्य ॥ व्याहिका, व्याहिका, मक्त्र व्याहिका, प्राह्म व्याहिका, मक्त्र व्य

রহদ্ গঙ্গাধর-চুর্ণ্।—
বিল্বং মোচরসং পাঠা ধাতকী ধানামের চ।
সমন্ধা নাগরং মুক্তং তথৈবাতিবিয়া সমম্॥
অহিকেনং লোধ্রকঞ্চ লাড়িমং কুটজং তথা।
পারদং গন্ধকঞ্চৈব সমভাগং হি চুর্ণয়েৎ॥
তক্রেণ সেবয়েৎ প্রাতশ্চুর্ণং গঙ্গাধরং মহৎ।
জ্বরমন্টবিধং হন্যাদতীসারং সুত্তরম্॥
তাহণীং বিবিধক্তৈব কোঠব্যাধিহরং প্রম্॥
রহদ্যালাধ্রচ্ণ

বেলশুঠ, মোচরস, পাঠা, ধাইফুল, ধনে, বরাহক্রান্তা, শুগুরী, মুথা, আডইচ, আফিঙ্ল, লোধ, দাড়িমফল, কুরচিছাল, পারদ ও গন্ধক; এই সকল দ্রব্য সমভাগে প্রহণপূর্বক উত্তমরূপে স্থক্ষা চূর্ন করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ ১।৪ রতি পরিমাণে তক্র সহ সেবন করিলে অফবিধ জর, ত্রস্তর অতীসার, বিবিধ-প্রকার প্রহণীরোগ এবং অন্যান্য কোষ্ঠাপ্রিত রোগ সমূহ বিনম্ভ হয়।

यथा लवङ्गानि- हुर्गम्। —

লবঙ্গং জীরকং কৌন্তী দৈশ্ববং ত্রিসুগন্ধিকম্। অঙ্গদো যমানী চ মুস্তকং সকটুত্রম্॥ ত্তিকলা শতপুষ্পা চ পাঠা ভূনিষ গোক্ষুরম্। जां जीरकाय करल मार्की बलमः ठन्मनः मूता ॥ भठी मधुतिका मधी छेन्ननः कुरुको तकम्। ক্ষারদ্বয়ং বালকঞ্চ বিলৃং পৌন্ধরকং তথা॥ চিত্রকং পিপ্পলীমূলং বিড়ঙ্গং সধান্যকঞ্চ। রসাভ্রগন্ধকং লৌ**হং সমং সর্বং** বিচুর্ণিভম্॥ উফোদকারুপানেন মন্দাগ্রেদীপনং প্রম্। শীততোয়ানুপাবৈৰ্বা জ্ঞাত্বা দোষগতিং ভিষক্ 🛦 আমাতিসারগ্রহণীং চিরকালোখিতামপি। শূলং বিউন্তমানাহং বিস্থৃতীং শোপকামলে । ছলীমকং পাণ্ডুরোগং হন্তি কাদং বিশেষতঃ। লবঙ্গাদ্য যিনং চুৰ্বং শর্করা সহিতং পিবেৎ ॥ আধানং শময়েচ্ছীন্ত্রং লবঙ্গানরপানতঃ। অখিত্যাং নির্দাতং ছেতলোকানুগ্রহহেতবে ॥

मधालवनामिह्नं।

লবন্ধ, জীরা, রেণুকা, সৈদ্ধবলবণ, দাকচিনি, তেজপত্র, এলাচি, বন্ধ্যানী, যথানী, মুথা, শুগুী, পিপালী, মরিচ, আমলকী, বহেড়া, হরীতকী, শালুকা, আকনাদী, চিরভা, গোকুর, জারফল, জৈত্রী, দাকহরিদ্রা, বেণারমূল, রজ্জচন্দন, মুরামাণুসী, শাঁঠা, মোরী, মেখী, সোহাগার থৈ, কুঞ্জারা, যবক্ষার, সাচিক্ষার, বালা, বেলশুঠ, পুজরমূল (অভাবে কুড়কান্ঠ), রক্তচিভার মূল, পিপুলমূল, বিড়ঙ্গ, ধনে, পারদ, অভ্র, গদ্ধক, এবং লোহ, এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় লইয়া উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া লইবে। এই ঔষধ দোষের অবস্থা বিবেচনাপূর্বক লীভল বা উষ্ণ জলের সহিত যথামাত্রায় প্রয়োগ করিলে মন্দামি, আমাত্রীসার, এহণী, শূল, বিক্তন্ত্র, আনাহ, বিস্কৃতী, শোথ, কামলা, হলীমক, পাণ্ডু ও কাদরোগ বিনক্ত হয়। ইহা শর্করাসহ সেবন করিলে শীত্রই আধ্যান নিবারিত হয়। পুরাকালে লোকদিগের প্রতি অন্থ্যাহী হইয়া, অবিনীকুমারধারএই ঔষধ প্রকাশ করিয়াছেন।

মহলবঙ্গাদ্য-চূর্ণম্।—

লবঙ্গাতিবিষা মুন্তং পিপ্পলী মরিচানি চ। বৈদ্ধবং হরুষা ধান্যং কট্ফলং পুক্তরং তথা। জাতীকোষফলাজাজী সৌবর্চ্চলং রসাঞ্জনমূ। ধাতকী যোচকং পাঠা পত্র তালীশকেশরমু॥ **ठि** जिक्क विष्टिकेव षुश्रुक्रविन्दाये ह । जुरभना निश्ननीयृन यज्ञरमाना यमानिक।॥ ममझा वदमकः छर्छी नाष्ट्रियः यावमृकः। নিষং সর্জ্জরসং কারং সামুদ্রং টঙ্গণং তথা। হ্রীবেরং কুট,ঙ্গকৈব জম্বাত্রং কটুরোহিণীমৃ। অভ্ৰকং পুটিভং লৌহং শুদ্ধগন্ধকপারদম্ ॥ এতানি সমভাগানি স্কাচৃণানি কারয়েৎ। मधूना वा लिट्डक्रू नेश् शिरवे उखु नवातिना॥ नर्करनायद्वर्रक्षय अर्थीः द्वि द्वरुद्धाम् । বাতিকীং পৈত্তিকীকৈৰ শ্লৈষ্মিকীং সান্নিপাতিকীং ॥ পকাপক্ষতীসারং মানাবর্ণ সবেদনমৃ। কৃষ্ণারুণঞ্চ পীতঞ্চ মাংসধাবনসন্নিভয় ॥ জরারোচক মন্দাগ্নিং কাসং খাসং বনিং ভথা।

অন্ত্রপিন্তং তথা হিক্কাং প্রমেহক হলীমকম্ ॥
পাণ্ডু গদক বিউদ্ধ মর্শাংসি বিবিধানি চ ।
প্রীহত্তল্যোদরানাহ শোথাতীসার পীনসান্ ॥
আমবাতং তথাজীর্ণং সংগ্রহ গ্রহণীং জয়েৎ ।
উদরং প্রদর্কৈব লবজান্যমিদং শুভম্ ॥

मरल रक्षामार्ग ।

লবঙ্গ, আতইচ, মুথা, পিপুল, মরিচ, দৈদ্ধবলবণ, হবুয়া, ধনে, কট্ফল, পুদ্ধব্যল (অভাবে কুড়), জয়িত্রী, জায়ফল, ক্লফজীরা, সচললবণ, রসাঞ্জন, ধাইফুল, মোচরস, আক্নাদি, তেজপাতা, তালীশপত্র, নাগকেশর, রক্তচিতার যুল,বিট্লবণ, তিক্তলাউ, বেলস্তুঠ, দাজিদকল, যবক্ষার, নিমছাল, ধুনা, সাচিক্ষার, সামুদ্রলবণ, সোহাগার খৈ, বালা, কুরচিছাল, জমুছাল, আদ্রছাল, কট্কী, অভ্র, লৌহ, গদ্ধক ও পারদ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক চ্র্ণ করিয়া লইবে। এই চ্র্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও তণ্ডুলোদক সহ সেবন করিলে বাতিক, পৈত্রিক, লৈখিক ও সাদ্ধিপাতিক প্রভৃতি দ্বন্তর গ্রহণী, নানাবর্ণ বেদনা সংযুক্ত কৃষ্ণ, অভণ বা পীতবর্ণ মাংসধীত জলের ক্লায় পক্ষ ও অপক্ষ অতীসার, জ্বর অকচি, মন্দাশ্লি, কাস, শ্বাস, বিদ্য জলপিত্র, হিক্লা, প্রমেহ, হলীমক, পাণ্ডুরোগ, বিইন্ত, বিবিধপ্রকার অর্শঃ, প্লীহা, গুল্মোদর, আনাহ, শোথ সংযুক্ত অতীসার, পীনস, আমবাত, অজীর্ন, সংগ্রহণী, উদর ও প্রদর প্রভৃতি নানাপ্রকার রোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

গ্রহণীগজেক্ত-চূর্ণম্।—

রসগন্ধক লৌহাল্রং হিন্ধুর্লবণপঞ্চক্য ।
হরিদ্রে পাকলকৈব বচা মুস্ত বিভূক্ষকম্ ॥
ত্রিকটু ত্রিকলা চিত্র মজমোদা যমানিকা।
গঙ্গোপকুল্যা ক্ষারাণি তথৈব গৃহধূমকম্ ॥
ত্রেবাং কার্ষিকং চুর্ণং বিজয়াচুর্গকং সমস্ ।
মাষদ্বয়মিদং চুর্ণং শালিতগুলবারিণা ॥
ভক্ষরেৎ প্রাভক্ষণায় গ্রহণীগদনাশনম্ ।
বহ্নিক কুরুতে দীপ্তং বড়বানলসন্নিভম্ ॥
সর্বাভীসার শমনং ভৃষ্ণাজ্বর বিনাশনম্ ।
পকাপক্ষতীসারং নানাবর্ণ সবেদনম্ ॥
আমাতীসারম্বিলং বিশেষাৎ শ্রপুং জ্বেৎ ।

পাধাং এছণীং হস্তি পাওুপ্লীছ চিরক্সান্ । এছণীগজেব্রুচূর্ণং সর্বরোগকুলাস্তক্তং । এছণীগজেব্রুচ্গ।

পারা, গন্ধক, লোহ, অজ, হিন্তুল, দৈশ্ববলবণ, সচললবণ, বিট্লুবণ, সামুজলবণ, ঔষ্টিপলবণ, হরিজা, দাকহরিজা, কুড়, বচ, মুথা, বিড়ঙ্গ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, আমলকী, বহেড়া, হরীডকী, রক্তচিতার মূল, বনধোয়ান, যোয়ান, গজপিপুল, যবকার, সাচিক্ষার, সোহাগার থৈ ও গৃহধুম; এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে ২ তোলা এবং সর্কা সমফির সমান পরিমাণে সিদ্ধি লইয়া, সমস্ত দ্রবাপ্রতিল উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ ২ মাষা পরিমাণে তণ্ডুলাদক সহ প্রাতঃকালে দেবন করিলে গ্রহণী, অগ্নিমান্দা, সর্কবিধ মলভেদ, ড্যান, জর, নানাবর্ণ বেদনা সংযুক্ত পক্ক ও অপক্ষ সকল প্রকার অভীসার, বিশেষতঃ আমাতীসার, শোথ, অসাধ্য গ্রহণীরোগ, পাণ্ডু, প্লীহা, চিরজ্বর প্রভৃতি নানাপ্রকার ব্যাধি নই হইয়া থাকে।

वैद्यगानि **वृ**र्वम् ।—

টঙ্গণং জীরকং মুস্তং পাঠা বিলৃং সধান্যকম্।
বালকং শতপূজা চ দাড়িমং কুটজং তথা ॥
সমন্ত্রা ধাতকীপুজাং ব্যোষধ্যেব ত্রিজাতকম্।
মোচরমঃ কলিঙ্গ ব্যোমগন্ধক পারদম্ ॥
যাবস্ত্রোতানি চূর্ণানি তাবজ্জাতীফলানি চ।
এতথ প্রাশিতমাত্রেণ গ্রহণীং ভুন্তরাং জয়েও ॥
অতীসারং নিছন্ত্যান্ত সামং নামাবিধং তথা।
কামলাং পাওুরোগক মন্দাগ্রিক বিশেষতঃ ॥
টঙ্গণাদ্যেত্রিচূর্ণ মগস্ত্যেন প্রভাষিতম্ ॥

छेष्णभीमिष्ट्र्ण ।

সোহাগার খৈ, জীরা, মুথা, আকনাদী, বেলশু ঠ, ধনে, বালা, শালুকা, দাড়িমকল, কুরচি, বরাহকান্তা, ধাইফুল, শুঁ ঠ, পিপুল, মরিচ, দাকচিনি, এলাচি, ডেজপত্র, মেচরস, ইক্রয়ব, অজ্ঞ, পারদ,ও গন্ধক; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে লইয়া চূর্ণ করিবে; এবং এই চূর্ণ সমন্তির তুল্য মাত্রায়ু জাতীফল এহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া পূর্ব্বোক্ত চূর্ণ সহ মিশ্রিজ করিয়া লইবে। এই চূর্ণ প্রথম প্রত্যহ ।• সিকিতোলা মাত্রায় সেবন করিলে হস্তর এহণী, নানাবর্ণ অতীসার, কামলা, পাগুরোগ, বিশেষতঃ মন্দাগ্রি সত্বর দুরীভূত হইয়া থাকে। এই টঙ্গণাদিচূর্ণ অগত্যে শ্বিকর্তৃক কথিত হইয়াছে।

विकृतानि-पृर्वम् ।---

হিন্দুলং গন্ধকং শুদ্ধ স্তঞ্চ টক্ষণং তথা।
বােষ্য জাতীফলকৈব লবক্ষং তেজপত্ৰকম্ ॥
এলাবীজং চিত্ৰকঞ্চ মুস্তকং গঙ্গ শিপপলী।
নাগরং সন্তলকাল্রং ধাতক্যাতিবিষা তথা।
শিগুজং শালুলীকৈবমহিফেনং পলাংশকম্।
এতানি সমানাংশানি শ্লক্ষ্ণানি কারয়েৎ॥
খাদেদস্থাৎ প্রতিদিনং মাষকং সিতয়া সহ।
সংগ্রহগ্রহণীং হন্তি মন্দাগ্রিঞ্চ বিনাশয়েৎ॥
ধাত্রদ্ধিং বয়ােরদ্ধিং বলপুষ্টিং করোত্যপি।
হিন্দুলাদি চুণিমিদং মহাদেবেন নির্মিতম্॥

श्चिलामिहर्ग।

শোধিত হিলুল, গন্ধক, পারদ, সোহাগার খৈ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, জাতী-ফল, লবন্ধ, তেজপত্র, এলাচির বীজ, রক্তচিতার মূল, মুথা, গজপিপুল, শুঠী, বালা, অন্ধ, ধাইফুল, আতইন, মজিনার বীজ, মোচরন এবং অহি-ফেন; এই সকল জব্য প্রত্যেকে ২ একপল (৮ তোলা) করিয়া চূর্ণ করতঃ উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ প্রথ প্রতিদিন ২ একমাযা করিয়া কিঞ্চিৎ ইকুটিন নহ দেবন করিলে, সংগ্রহথাহণী ও মন্দ্যাগ্নি নিবারিত হয়। এবং ইহা ছাব্রা, ধাতুর্দ্ধি, বন্ধোর্দ্ধি, বল ও পুটি বর্ধিত হইয়া থাকে। এই হিলুলাদি চূর্ণ প্রথধ স্বয়ং মহাদেব কর্জ্ব নির্মিত হইয়াছে।

কঞ্চাবলেহঃ।---

প্রত্থে পচেৎ কঞ্চ তালমূলোঃ,
সিত দ্বিপ্তং শৃতপান শেষে।
ততোহক্ষাত্রাণি সমানি দদ্যাৎ,
চূর্ণানি সুধীর্বিধিবৎ তদেষামৃ॥
সমন্ধা ধাতকী পাঠা বিলুং মুন্তাথ পিপপলী।
শক্রকাতিবিষাক্ষার সৌবর্চল রসাঞ্জনমৃ॥
শালালীবেউককৈব সর্বং সিদ্ধে নিধাপয়েৎ।
শীতেচ মধুমশ্চাত্র কুড়বার্দ্ধং বিনিক্ষিপেৎ॥
অস্য মাত্রাং প্রযুঞ্জীত ষ্থাকালং প্রমাণতঃ।
সর্বাতিসারং শ্ময়েৎ সংগ্রহগ্রহণীং তথা॥

🗪 মুপিভক্তং দোষমুদরং সর্ব্বরূপিণম্। विकातान कार्छ जान् इस्टि इनाष्ट्र नगरता 5 कम्।

কঞ্চাবলেছ।

कै। क्षानाम / १ इरेस्न ७ जानमूनी / १ इरेस्न ३ और कांत्रिस उपना । ७ वालमের खल मह পাক করিয়া ∕৪ চারিদের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া ক্লাথ এহণ করিবে। তদনন্তর উক্ত ক্লাথ সহ /১ একদের ইক্স্চিনি পাক করতঃ, চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে, ভাহাতে-বরাহকান্তা, ধাইফুল, আকনাদি, বেলশুঠ, মুখা, পিপুল, দিদ্ধিরপাতা, আডইচ, যবক্ষার, সচল-লবণু, রুশাঞ্জন ও মোচরুদ; এই দকল দ্রব্যের চুর্ণ প্রত্যেকে ২ ভোলা করিয়া निक्कि कितिर ; शांत शांक ममाक्ष इहेल हुन्नी इहेर नामाहरव। শীতল হইলে উহাতে 🖊 । একপোয়া মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। দোষ, বল, ও কালাদি বিবেচনাপূর্বক মাত্রা নির্ণয় করিয়া, এই ঔষধ দেবন করিলে, সকলপ্রকার অতীসার, সংগ্রহগ্রহণী, জল্লপিত্ত, সর্ব্ববিধ উদর্বোগ, কোষ্ঠ জ্বাত বিকারসমূহ, শূল এবং অঞ্চ নিবারিত হয়।

मनभूनी ७ एः।---

দশমূলী পলৰতং জলদ্ৰোণে বিপাচয়েৎ। তেন পাদাবশেষেণ পচেদ্ গুড়ভুলাং ভিষক্॥ ত্ত আদ্র কি স্বর্গপ্রস্থং দত্তা মুদ্বগ্নিনা ততঃ। লেহী ভূতে প্রদাতবাং চূর্ণমেষাং পলং পলম্॥ পিপালী পিপালীমূলং মরিচং বিশ্বভেষজম্। হিন্দু ভল্লাভককৈব বিড্স্মজমোদকম্॥ (व) कारते ठिलकर् ठवार भरेक्व नवनानि ठ। দত্ত্বা সুমথিতং কৃত্বা স্নিধ্যে ভাঙে নিধাপয়েৎ॥ কোলমাত্রং উতঃ খাদেৎ প্রাতঃ প্রাতর্বিচক্ষণঃ। হত্তি মন্দানলং শোথমামজাং গ্রহণীমপি॥ ্জাঁমং সর্বভবং শূলং প্লীহানমুদরং তথা। মন্দানলভবং রোগং বিষ্টম্ভং গুদঙ্গানি চ ॥ জ্বং চিরন্তনং হন্তি তমিস্রং ভানুষানিব॥ मणमूली छड़।

র্বেল, শোণা, গাস্তারী, পাকল, গণিয়ারী, শালপাণী, চাকুলে, গোস্থর, ব্যাকুড় ও কন্টকারী; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে।২।।• সাড়ে বারসের, शाकार्य कल आह होय कित्रत्र बन्ध शाकाराम्य । धानामत्र । बरे कार्य ।২।।• সাড়েবারসের গুড় ও /৪ চারিসের আদার রস যিশ্রিত কর্প্তঃ, একত্র
মৃত্ অর্নজাপে পাক করিতে করিতে লেহবং যন হইয়া আসিলে ; পিপুল, '
পিপুলমূল, মরিচ, শুঠী, হিন্দু, শোধিত ভেলার আঠি, বিড়ক্স, বন্যমানী, যবকার, সাচিক্ষার, রক্তচিভারমূল, চই, সৈত্বলবণ, গৌবর্চ্চলবণ, বিট্লবণ,
সামুক্রলবণ ও প্রস্তিব্লবণ, ইহাবের প্রভাকের ৮ ভোলা করিয়া চুর্গ ভং
সহ মিশ্রিত করিয়া, উত্তমকপে আলোড়নপূর্বক একটী স্বিজভাণ্ডের মধ্যে
রাখিয়া দিবে। এই প্রথম প্রতিদিবস ২ একভোলা মাত্রার দেশন করিলে
মন্দায়ি, আমজ্ঞাহণী, সর্ববিধ আমাশররোগ, সর্বপ্রকার শূল, শোধ, প্লীহা,
উদর, মন্দায়িসন্ত ত রোগ সকল, বিক্তম্ব, গুনজ্বোগ সমূহ এবং বন্তকালছায়ী জ্ব, স্ব্রোদ্বরে অক্কার বিনাশের স্থার সম্বর বিনক্ত হইয়া থাকে।

কল্যাণগুড়ঃ।—

প্রস্করেণামলকীরস্কা শুদ্ধস্য দত্তার্নিতুলাং গুড়স্য।
চূর্ণীকৃতি এন্থিক জীরচব্য ব্যোষেভক্ক স্থা স্ব্র্যাঙ্গমোলৈঃ ॥
বিড়ঙ্গসিন্ধুত্রিকলা ষমানী পাঠাগ্রিধানৈগ্রুক পলপ্রমাণে ।
দত্তা ত্রিক্চুর্ণপলানিচাফাবফৌ চ তৈলক পচেদ্যথাবং ॥
তং ভক্ষরেদক্ষল প্রমাণং যথেউচেউং ত্রিসুগন্ধিযুক্তম্।
জানেন সর্ব্যহণীবিকারাঃ স্থাসকাস্থরভেদ শোথাঃ ॥
শাম্যন্তি চারং চিরমন্তর্যাগ্রহ্তিস্য পুংস্থাস্য চ র্দ্ধিহেতুঃ।
স্ত্রীণাঞ্চ বন্ধ্যামরনাশনোহয়ং কল্যাণকো নাম গুড়ঃ প্রদিন্টঃ।
কল্যাণগুড়।

আমলকীর রস। ২ বারসের এবং পুরাতন গুড় /১। ছয়সের একপোয়া; এই ছইটী দ্রব্য একত্রিত করিয়া অয়িসংযোগে পাক করিবে। পাক করিতে করিতে লেছবৎ ঘন হইলে পিপুল মূল, জীরা, চই, শুঠ, পিপুল, মরিচ, গজপিপুল, হবুষা, বনষমানী, বিড়ল্প, সৈন্ধবলবণ, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, যমানী, আকনাদী, রক্তচিতার মূল ও ধনে; এই সকল দ্রব্যের প্রত্যেকের চূর্য ও ভিলতৈল ৮ পল (১৪ ভোলা) এবং এলাচি, দাকচিনি ও ভেলপত্রের মিলিভ চূর্ব ও ভোলা ভাহাতে নিক্ষেপ করিয়া লইবে। এই ঔষধ ১ একভোলা মাত্রায় দেবন করিলে গ্রহণী, খ্রাম, কাম, স্বরভেদ, শোখ, অয়িমান্দ্য ও জ্রীদিগের বন্ধারোগ বিনই হয়; এবং পুক্ষগণের পুংস্কৃশক্তি (বহু শুলারে সক্ষমতা) সাভিশ্য বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

কুষাওগুড়কল্যাণকঃ।—

কুষাওকানাং রঢ়ানাং স্থসিরং নিক্লপ্রচায়। সপিঃ প্রস্থে পলশতং ভাত্রপাত্তে শলৈঃ পচেৎ॥

পূপলী পিপালীমূল চিত্তকো হস্তিপিপালী। ধান্যকানি বিভূঙ্গানি যমানী মরিচানিচ॥ विक्ना biजयाताठ कलिझाकाकी रेमस्रवम्। একৈক্সা পলকৈব ত্রিরুদেষ্টপলং ভবেৎ ॥ তৈল্যাত প্লানাষ্টো গুড়পঞ্চানদেব তু। প্রতিহিত্তিঃ সমেতস্ত রস্স্যামলক্স্য চ। ষদা দার্ক্তী প্রলেপস্ত তদৈনমবভাচরেৎ। যথাপক্তি গুড়ীং কুৰ্য্যাৎ কৰ্ষকৰ্মাধ্বমানতঃ॥ অনেন বিধিনা 6ৈব প্রযুক্তস্ত জরেণিমান্। ত্রুরারান্ স্বহণীরোগান্ কুষ্ঠান্যর্শোভগন্দরান্॥ জ্বরত্বাম ক্রদোগ গুল্যোদর বিস্তৃচিকাঃ। কামনাং পাওুরোগক প্রমেহাংকৈব বিংশতিম্. শ্লীহানং বাতর ক্রঞ্চ দক্রচর্মহলীমকান্। কফপিভানিলান্ সর্কান্ প্ররুচাংশ্চ ব্যপোহতি॥ वाधिकीन। वरशकीनाः खीत्रकीनाक स नताः। তেশাং রুষ্যশ্চ বল্যশ্চ বয়ঃস্থাপন এব চ খডুকুঝাওকোনাম বন্ধানাং গর্ভনঃ পরঃ॥ কুত্বা গুগুড কল্যাণক।

মুর্দ্ধিত সুপক বে দ্রে শুকীকৃত কুমাণ্ডেবশাস ।>।। সাডে বাবসের পরিমাণে গ্রহণপূর্বক / ৪ চাবিসের গাবাঘত সহ মিশ্রিত কবিষা, একটা তামপাত্রে
কবিয়া পাক ববিনে। অল্প পাক কবা হইলে, তাহাতে পিপুল, পিপুলয়ল,
রক্ততিতার মূল, গজপিপুল, ধনে, বিড়ন্দ, যমানী, মরিচ, আমলকী, হরীতকী,
বহেড়া, বনয়মানী, ইন্দ্রয়ব, কৃষ্ণজীরা ও সৈন্ধবলবণ, এই সমস্ত দ্রব্যের চূর্ণ
৮ পল, তিলতৈল ৮পলং পুরাতনগুড় ৫০ পঞ্চাশপল এবং আমলকীর রম।
বারসেব মিশ্রিতকরতঃ যথাবিধি পাক কবিয়া, ঘন হইয়া আদিলে নামাইবে।
এই ত্রম্ব দ্রেম, বল ও কালাদি বিবেচনাপূর্বক ২ তোলা বা ২ এক তোলা
মাত্রায় দেবন করিলে হ্রবার গ্রহণী, কুট, অর্শ্ব, তান্দর, জর, হন্তোগা, গুলা,
উদর, বিস্তৃতিকা, কামলা, পাণ্ডুরেলা, বিংশতিপ্রকার প্রমেহ, প্লীহা, বাতরক্ত,
দক্ত, চর্মরোগা, হলীমক, কফজ, পৈত্রিক ও বাতজ প্রভৃতি সকলপ্রকার রোগ
নিবারিত হয়। এই ত্রম্ব ব্যাধিক্ষীণ, বয়োক্ষীণ ও সর্ব্বদা স্ত্রীসন্তোগতে গুলীণ
ব্যক্তিদিণের পক্ষে র্ম্য, বলজনক ওবয়:স্থাপক এবং বদ্ধানারীগণের গর্ভপ্রদ।
ত্রিফ্রলান্য মোদকঃ।—

ত্রিকলা ত্রিকটু চিত্রং লবঙ্গং জীরকত্বরম্।

ষ্মান্যে ছে মধুরিকা নাগবলীদলং তথা।

শতপূজা বরীধানাং চাতুর্জাতং তথা তুগা।

মেথী জাতীকলং গ্রাহ্থ প্রত্যেকং কর্মস্মিতম্।

মধুকং ষট্পলং দেয়ং সিতা চ ছিগুণা মতা।

শহণীং হন্তাতীসারং মন্দাগ্নিত্মরোচকম্ ॥

অজীর্নমানদোষক বিস্ফীমপি দারুণাম্।

পুষ্টিং দেহত জনয়েদ্ বলবর্ণাগ্রিহিদ্ধিরুৎ ॥

বলীপলিতদৌর্বল্যং নাশয়েৎ রুশতামপি॥

তিফলাদ্যোদক।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুঠ, পিপুল, মরিচ, রক্তচিতারমূল, লবঙ্গ, জীরা, ক্বঞ্জীরা, যমানী, বন্যমানী, মৌরী, পর্ণপত্র, শলুকা, শতমূলী, ধনে, এলাচি, দাফচিনি, নাগকেশর, তেজপাতা, বংশলোচন, মেখী ও জায়ফল; এই সকলের প্রত্যেকের চূর্ণ ২ ছুইতোলা, মধু ৪৮ তোলা এবং এই সকল দ্রব্য সমষ্টির দ্বিগুণ চিনি একত্র মিশ্রিত করিয়া, যথানিয়মে পাক করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ॥• অর্ধতোলা মাত্রায় সেবন করিলে গ্রহণী, অতীসার, মন্দাশ্লি, অফ্রচি, অজীর্ণ, আমদোষ ও বিস্থৃচিকা রোগ এবং বলি-পলিত, দৌর্বলা ও ক্বশতা নক্ষ হইয়া, দেছের পুঞ্জি, বল, বর্ণ ও অগ্নিবর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

অগ্নিকুমার-মোদকঃ।—

উশীরং বালকং মুন্তং ত্বক্পত্রং নাগকেশরম্।
জীরদ্বরঞ্চ শৃঙ্গী চ কট্ ফলং পুক্ষরং শঠী॥
এলাবীজং জটামাংসী রাম্মা তগরপাত্তকম্।
ক্রিকটু বিল্কং ধানাং জাতীফল লবঙ্গকম্॥
বৈলজং কান্তলোহঞ্চ কপূরিং বংশলোচনং।
সমন্ধাতিবলা চাল্রং মুরা বন্ধং তথৈব চ॥
অসা চূর্ব সমা মেথী চূর্বার্দ্ধং বিজয়ারজঃ।
শর্করা মধু সংযুক্তং মোদকং পরিকল্পয়েৎ॥
কর্ধমেকং প্রমাণস্ত ভক্ষয়েৎ প্রাতক্ষণিতঃ।
শীততোয়ানুপানেন ছাগেন প্রসাথবা॥
বাহণীং ভৃত্তরাং হন্তি খাসং কাসমতীব চ।
ভামবাতমগ্রিমান্যং জীর্ণঞ্চ বিষমং জ্বরম্॥
বিবন্ধানাহশুলঞ্চ যক্ষৎ-প্লীছোদরাণি চ।

২ গুডাদশকুষ্ঠানি গ্রহণীদোষনাশনম্ ॥ উদাবর্ত্ত গুলোুাদরাময়-বিনাশনম্ পরম্॥ অগ্রিক্যারমোদক।

বেণাবমূল, বালা, মুখা, দাফচিনি, ভেজ্পত্র, নাগকেশর, জীরা, কুঞজীবা, কাঁকডাশৃঙ্গী, কট্ ফল, পুক্রবমূল (অভাবে কুড়), শসী, এলাচিবীজ, জটান্দানী, রাস্না, ভগরপাত্রকা, শুঠ, পিপুন, মবিচ, বেলশুঠ, ধনে, জাভীকল, লবঙ্গ, শৈলজ, কাস্তলোহ, কপুর, বংশলোচন, ববাহক্রাস্তা, গোবক্ষচান্তলে, অজ্র, মূরামাংশী ও বঙ্গ; এইসকল দ্রব্যের প্রভাকের সমভাগ চূর্ণ, সকল চূর্ণ সম্প্রির ভুলা মেখী চূর্ণ, অর্জেক সিদ্ধি চূর্ণ এবং দ্বিগুণ চিনি লইয়া মিশ্রিভ কবিয়া, মথাবিধি পাকপুর্বক মধু মিশ্রিভ কবতঃ মোদক প্রস্তুত করিবে। এই মোদক প্রভিদিন প্রাভঃকালে শীতলজল বা ছার্যাহ্রন্ধ সহযোগে ২ ভোলা মাত্রায সেবন করিলে হন্তর এইলী, শ্বাস, কাস, আমবাত, অগ্রিমান্দা, প্রাভন ও বিষমজর, বিবন্ধ, আনাহ, শূল, যক্রৎ, প্লীহা, উদব, অস্টাদশ প্রকার কুঠ, এইলীদোষ, উদাবর্ভ এবং গুল্ম ও উদ্যাদয় বিন্তী হয়।

क्रेशनि-स्थानकः।-

कुर्छर छर्छ है जीतकर क्रमजीतक भिर्णाली। মরিচং ত্রিফলা ত্বক্চ পত্রমেলা চ কেশরম্ ॥ . লবঙ্গং শৈলেরং শুভা চন্দনং শ্বেভচন্দনম। কাকোলী ক্ষীরকাকোলী জাতীকোষ ফলে তথা ম যঞ্চি মধুরিকা মাংসী মুক্তং সচলকং শঠী। ধন্যাকং দেবভাড়ঞ্চ মুব্র। দ্রোক্ষা নখী ভপা॥ শতপুষ্পা পদ্মকঞ্চ মেথী চ স্থরদারু চ। म्जनः गंनुकरेकव रमस्वः ग्राम्भिश्ननी ॥ কপূরিং বনিতা চৈব কুন্দধোটী সমাংশিকম্। লৌহমত্রকবঙ্গানাং দ্বিভাগং তত্ত্ব দাপয়েৎ॥ ঞ্তানি সমভাগানি শ্লক্ষ্ণানি কারয়েৎ। সর্বভূর্ণ সমং দেয়ং ক্রক্জীরকচুর্কমৃ॥ নিতা বিশুণিতা দেয়া মোদকং পরিকপ্পয়েৎ। স্থতেন মধুনা শিশ্রং মোদকঞ্চ ভিষগ্বরঃ॥ ভক্ষয়েৎ প্রাতরুত্থায় ষ্ণাদোষ্বলাবলম । গবাং সন্ধর্ব হরুপানং প্রযোজয়ে ॥ অশীতিং বাতজানু রোগাংশ্চত্তারিংশচ্চ পৈত্তিকান। স্ববিংস্তান্ নাশরত্যাশু রক্ষমিন্দ্রাশনির্থা ।
নানাবর্ণমতীদারং বিশেষাদামদন্তবম্ ।
শূলমন্তবিধং হন্তি অর্শোরোগং চিরোন্তবম্ ॥
জীর্ণজ্বক সভতং বিষমজ্বমেবচ ।
জীর্ণাকৈবানপত্যানাং তুর্বলানাক দেহিনাম্ ॥
পুষ্পারুং পুত্রক্তিব বলবর্ণকরং পরম্ ।
পুষ্পারুং পুত্রক্তিব বলবর্ণকরং পরম্ ।
পুষ্পারুং পুত্রক্তিব বলবর্ণকরং পরম্ ।
শূলিকালে মন্ত্রাশু সুর্গান্তম ইবোনিতঃ ।
দাহং সর্ব্যাক্তিকবিধ্ব বাভিপিত্যোধিতক য় ।
জারং সর্ব্রোগ্চেত্নী কুঠ্যানিকো হি মোনকং॥

कूर्णातिसमानक।

कूड़, भेंठे, कीत्र, क्रक्कीत, शिश्रुल, मतिष्ठ, इतीक्की, भागलकी, न(इड'. मोक्टिनि, এलाठि, তেজপাতে नागत्कभंत, लवक, रेबल्झ, व॰भ्रालाहन, वक्रम्न, भुक्तम्न, कार्काली, कीवकारकाली, खां शेकन खशिबी, यखिमदु, (मोत्री, क्षां) मान्मी, मूथा, महललवन, मंत्री, धत्न- (मवलाफ, मूवांमाश्मी, किम्-भिम, नशी, भाजुका, शद्याकार्फ, रमशी, रमवताक, वाला, नालूका, रेमकवलवन, গজপিপুল, কপূর্ব, প্রিয়ঙ্গু ও কুন্দুবখোটী ; ইহাদেব প্রত্যেকের চূর্ণ ১ এক ভাগ: লৌহ, জন ও বজা, প্রতে চেণ্ড়েই ভাগ, এই সমুদায় চুর্লম-किंद ममान कोवाहर्ग अनः ममछ जराव ममान विनि अहर कतिरा। প্রথমে চিনি পাক করিয়া, যথাসময়ে চুণগুলি তাহ'তে নিক্ষেপ পুর্বক নামাইবে। পরে শীতল হইলে ছত ও মধু মিশ্রণ পূর্বক মোদক এছত করিরা লইবে। ইহা প্রাভংকালে দোষ ও বলাবল বিবেচনাপুর্বক গবাহুন্ধ ও চিনি সহযোগে সেবন করিলে, ৮০প্রকাব ব'ভজ্ঞরোগ ও ৪০প্রকার পৈত্তিক রোগ সকল ইম্মদেবের বজ্রদার। রক্ষ বিনাশের ভায় নিশ্চয় বিনষ্ট হইয়া ণাকে। এবং ইহা দ্বারা নানাবর্ণ জতীমার, বিশেষত' আমাতিমার, অক্টবিধ-শূল, চিরোন্ড ত অর্শরোগ্য জীর্ণজ্ব, সততকবিষমজ্ব, অত্যুগ্রস্থতিকারোগ্য, প্রাদ্ধ সর্বাদ্ধিক বায় ও পিত্তজনিত দাহাদিরোগসমূহ বিন্ট দয়। আর এই ওমধ বন্ধানারীগণের আর্ত্তব ও পুত্রোৎপাদক এবং ভুর্বল দেছিদিগেব বল ও বর্ণপ্রসাদক। এমন কি এই কুঠাদিমোদক সর্ব্বপ্রকার ব্যাধিনাশক।

জীরকাদি মোদকঃ।—

পলাইকমিতং জীরং প্লক্ষচূর্ণীক্তং শুভম্। তদর্জং বিজয়াবীজং ভর্জ্জিতং বস্ত্রপৃতকম্॥ তর্মচূর্ণং তথা বঙ্গমজ্ঞকং কর্মানতঃ।

মর্রিকা চ তালীশং জাতীকোষ ফলে তথা। ধান্যকং ত্রিফলাটের চাতুর্জতেলবঁপক্ষ। रेनलाइर हन्पनर एवं ह यारमी जाका नहीं उसी। টঙ্গণং কুদ্দুরির্ঘষ্টি তুগা কক্ষোলবালকমৃ। গাঙ্গের স্থিক টুলেক ধাতকী বিল্ম আর্ভিন্ম ॥ শতপুষ্পা দেবদার কণুরং সপ্রিয়ন্ত্রকম্। कौत्रकः भानानिरेश्व करूका शमनानटक॥ এষাং কর্ষমং চূর্ণং গৃহ্নীয়াৎ কুশলো ভিষক্। শর্করা মধুনাজ্যেন মোনকঞ্চ বিনির্দ্মিতম ॥ খাদেৎ কর্মদমং তদা প্রত্যহং প্রাতক্ষথিতঃ ৷ শীততোয়ারুপানেন সর্ব্বগ্রহণিকাং হ'রৎ॥ আমদোষারতে পিত্তে বহ্নিমান্দ্যে তথিব চ। রক্তাতিদারে২তিদারে প্রযোজ্যং বিষম্ভরে॥ সশবং গদ্ভীরং ঘোরং দদ্যে হত্তি ন সংশয়ঃ। অমুপিভক্তং নোষমুদরং সর্বরূপিণমূ॥ সর্বাতীসারশমনং সংগ্রহগ্রহণীং জয়েৎ। এক জং দ্বন্দ্ব সং হৈব দোষত্রয়ক্বতং তথা॥ বিকারং কোষ্ঠ ছবৈত হত্তি শূলমরোচকম্।

জীরকাদিমোদক।

৮ পল জীরাচ্ণু; ভর্জিত বস্ত্রপৃত সিদ্ধিচ্ণ ও পল; লৌহ, বঙ্গ, অজ, মৌরী, লেলীশপত্র, জাতীকল, কৈত্রী, ধনে, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, নাগকেশর, এলাচি, শাক্ষচিনি, ডেজপাতো, লবঙ্গ, শৈলজ, রক্তচন্দন, শ্বেড-চন্দন, জটামাংসী, দ্রাক্ষা, শঠা, টঙ্গণ, কুন্দুরখটী, যন্তিমধু, বংশলোচন, কাঁক্লা, বালা, গোরক্ষচাকুলে, শুঠ, পিপুল, মরিচ, ধাইফুল, বেলশুঠ, অর্জ্বুন, শলুফা, দেবদাফ, কপুর, প্রিরঙ্গু, জীরা, মোচরদ, কট্ কী ও পদ্মের টাটা; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ ৯ জেলা ও এই সমন্তের দ্বিগুণ চিনি লইয়া, প্রথমে চিনিপাক করিয়া, তাহাতে উক্তচুর্ণগুলি নিক্ষেপপূর্বক পাক করিবে। ওই প্রয়েধ প্রতিদিন হলে মধু ও মৃত্ত দিয়া মোদক প্রস্তুত্ত করিবে। এই প্রয়েধ প্রতিদিন হলে মর্ববিধ প্রহণী, জামদোষসংখুক্ত পিত্তাতিদার, সশব্দ রক্তাতীদার, অতীদার, গঞ্জীর ঘোরতর বিষমজ্ব, অঙ্গণিত্তরোগ, দর্কবিধ উদ্বরোগ, সংপ্রহণ্ডনী, একজা, দৃদ্ধুজ্ব ও বিরদোধিক কারিকারসমূহ, শূল ও অক্চচিরোগ নিবারিত হয়।

কদপ্-যোদকঃ।--

ক্রিলোক্য বিপ্রয়াপত্রং সবীঙ্গং মুভভব্জিতমু । সমে শিলাতলে পশ্চাচ্চ শ্রেদভিচিক্কণম্ ॥ विक्र विक्ला गृङी कूछ शानाक रेगस्वम्। শঠী তালীশপত্রক কট্ফলং নাগকেশরমূ 🕯 जज्ञाना यमानीह यस्त्रिमधूकरमदह। মেথী জীরকযুগাঞ্চ গৃহীত্বা স্থামচূর্ণিত্র্॥ यावरत्वाजानि हृगीनि जावरनव जेरनीवसम्। তাবদেব দিতা দেয়া যাবদায়।তি বন্ধনম । ঘুতেন মধুনা মিশ্রং মোনকং পরিকম্পায়েৎ। ত্রিসুগন্ধি সমাযুক্তং কপুরেণাধিবাসয়েৎ ॥ স্থাপয়েদ মুভভাতে চ এমৎকন্দর্পমাদকম্। ভক্ষরেৎ প্রাতরুখায় বাতশ্লেষ্ববিনাশনম্॥ কাসভ্য সর্বভালভ্রমামবাতবিনাশনম্। সর্ববোগহরো হেষ সংগ্রহগ্রহণীহরঃ॥ এত্যা সত্তাভাগোদ রুদ্ধোহণি তরুণায়তে I বেদ্বণঃ প্রমুখাৎ শ্রুত্বা বাসুদেবে জগৎপতে।। এষ কামবিরদ্ধার্থং নারদৈঃ প্রতিপাদিতঃ। তেন লক্ষ্য বরস্ত্রীণাং রেমে স ষত্রনন্দনঃ । কন্দর্পদোদক।

হৃদ্দিদ্ধ ও ঘৃতভর্জিত দিদ্ধিচ্ণ ২১ তোলা; শুণ্ঠী, পিপ্পলী, মরিচ, কাঁকড়াপুন্দী, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কুড়, ধনে, সৈদ্ধৰলবণ, শটী, ভালীশপত্র, তেজপত্র, কট্ফল, নাগকেশর, বন্ধমানী, ধমানী, ধফিমধু, মেখী, জীরা ও কৃষজীরা; এই সকল জব্যের প্রত্যেকের চূর্ণ ১ ভোলা অর্থাৎ সমুদারে ২১ ভোলা এবং সমস্ত চূর্ণের ভূল্যপরিমাণ অর্থাৎ ৪২ ভোলা চিনিলইবে। প্রথমে চিনির সহিত উপযুক্ত মাত্রার জল মিপ্রিত করিরা অম্পক্ষণ পাক করিয়া লইবে, তৎপরে ভাহাতে উল্লিখিত চূর্ণ পদার্থগুলি নিক্ষেপ করিয়া ঘন হইলে চূলী হইতে নামাইবে। তদনস্তর ঐলহ্বৎ পদার্থে দাক্চিনি, এলাচি ও তেজপত্র চূর্ণ প্রত্যেকে কিঞ্চিৎ পরিমাণে ও অম্পমাত্রার কপুর এবং ঘৃত ও মধু ধ্রধামাত্রার নিক্ষেপ করতঃ, উত্তমঙ্গণে দিল্লিত মরিয়া লইবে। এবং ১ ভোলা মাত্রায় মোদক প্রস্তুত্ত করিয়া একটি মৃতভাগু মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই মোদক মাত্রা বিবেচনার প্রাত্তঃকালে সেবন করিলে বাড্বস্থারোগা, কান, সর্ক্রিগ্রশুল, আম্বাড, সংগ্রহ্থইণী প্রভৃত্তি সকলপ্রকার

রোগ किনট হয়। এমনকি এই উষধ রছ ব্যক্তি নিয়ত ব্যবহার করিলে, সম্বর উত্তণত্ব লাভ করিতে পারে। নারদাদি মহর্ষিগণ ব্রহ্মার প্রমুখাৎ এই উষধের প্রাণর বিষয় প্রবণ করিয়া, কাম রছির জন্ত জ্বগৎপতি বাসুদেবের প্রতি এই উষধ প্রয়োগ করেন; এই নিমিডই যহনন্দন কৃষ্ণ লক্ষ বয়ন্ত্রীকে রমণ কবিতে সক্ষম হইরাছিলেন।

महाकारमध्य-त्मापकः।---

সমাঙ্গারিতমভ্রকং কট্ ফল কুঠাখগন্ধায়তা-মেথী মোচরসো বিনারী মূদলী গোকুরকঞেকুরঃ। রম্ভা কন্দশতাবরীত্বজমুদা মাংসী তিলা ধান্যকম্-भी नागवला कडूत मननः जाउँकलः रेमस्रवम् । ভার্গী কর্কটশৃঙ্গকং ত্রিকটুকং জীরদ্বয়ং চিত্রকং-চাতৃর্জাত পুনর্মবা গজকণা দ্রাক্ষা শাসী বালকম্। শাল্যাল্যজ্জি ফলত্রিকং কপিভবং বীজং সর্বাং চূর্ণয়েৎ-চুণাংশা বিজয়া সিভা দ্বিগুণিভা মধ্বাজ্যয়োঃ শিণ্ডিভম্ ॥ ক্ষাংশা গুড়িকাৰ্দ্ধকৰ্ষমথবা দেব্যা সদা কাসিভিঃ-নেবাং ক্ষীর্মিতং সুবীর্যাকরণং শুদ্তে২পায়ং কাসিনাম। বামাবশ্যকরঃ সুথাতিসুখদো বহুঙ্গনাদ্রাবণঃ-ক্ষীণে পুষ্টিকরঃ ক্ষতক্ষয়হরে। হন্যাচ্চ সর্ব্বাময়ান্॥ কাসখাস মহতৌসারশমনঃ কামাগ্রিসন্দীপনো-द्वर्गाम ग्रह्मी প্রমেরনিবহ শ্লেষাতিরেক প্রবুৎ। নিত্যানন্দকরে৷ বিশেষকবিতা বাচাং বিনালোচ্ছবং-ধতে সর্বাঞ্চনং মহান্তিরমতে বালো নিতান্তোৎসবঃ॥ অভ্যাদেন নিহুত্তি মৃত্যুপলিতং কামেশ্বরো বৎসরাৎ-সর্বেষাং হিত্রকারিণা নিগনিতঃ এনিত্যনাথেন সঃ। इक्षांनार मनटनानशहशकतः ८ श्रीहाक्रमामक्राम-সিংহোহয়ং সমদৃষ্টি প্রভারকরো ভূপৈঃ সমাসেব্যভাষ্॥ महाकाटमथ्रत्यानक।

সম্যক্ষারিত অজ কট্ফল, কুড়, অশ্বগন্ধা, গুলঞ্চ, মেথী, মোচরস, ভূমি-কুমাণ্ড, তালমূলী, গোক্ষর, কোকিলাক্ষ, রস্তাকন্দ, শতাবরী, বনষ্মানী, জ্ঞামণিসী, তিল, ধনে, শতা, গোরক্ষচাকুলে, মদনফল, জ্ঞাতিফল, সৈম্ববলক্ষা, বামনহাতী, কাকড়াশৃগী, শুঠী, পিপুল, মরিচ, জীরা, কুঞ্জীরা, রক্তনিতা, এলাচি, নাগবেশর, তেজপত্র, দাক্চিনি, পুন্ববা, গজ্পপুল, বিস্বা

মিদ, শঠা, বালা, দিমূলমূল, আমলকী, হরীতকী, বছেড়া, এবং অনেক্দীবীজ; এই দকল দ্রব্যের সম্ভাগ চূণ; ইহাদের সমান দিদ্ধিচুণ এবং দকলের
দ্বিগুণ চিনি লইরা, ষ্থানিয়মে পাক করিরা স্থত ও মধু মিশ্রণপূর্বক মোদক
প্রেন্তত করিবে। এই মোদক রোগান্ত্রসারে বিবেচনাপূর্বক হেণোলা বা হতোলা
পরিমাণে দেবন করিবে। ইহা স্বীর্যাকারী, কামুকদিগের বীর্যান্তন্তর,
বামাবশ্রকর, অভান্তন্ত্রপ্রপ্রদ, বহু অঙ্গনাদ্রাবক, ক্ষীণব্যক্তির পুর্ফিজনক, কত,
ক্ষার, কাস, শাস ও অভীসাররোগনাশক, কাম ও অগ্নি উদ্দীপক, অর্শঃ,
গ্রহণী, প্রমেহসমূহ ও শেশ্যাধিক্যারোগ বিনাশক, নিত্যানন্দকর, কবিতাশক্তি ও বিলাস উৎপাদক, বালকগণের দ্বির্মাতিত্ব প্রদারক, রদ্ধাণের
মদনোদরকারী এবং সাক্ষাৎ প্রোঢ়াঙ্গনাসন্থমে সিংহ্ম্বরূপ। অভএব ইহা ভূপগণের নিয়ত সেবনীয়। এই পরমহিতৈ্যী মহা কামেশ্বর মোদক শ্রীনিত্যনাথ কর্ত্বক অভিহিত হইয়াছে।

দ্বিতীয় কামেশ্বর-মোদকঃ।—

ধাত্রী দৈশ্বব কুষ্ঠ কট্ ফল কণাশুগ্রী যমানী দ্বয়ং-যম্ভি জীরকযুগ্মধান্যক শঠা শৃঙ্গী বচাকেশরম। তালীশং ত্রিত্বগদ্ধিকং সমরিচং পথ্যাক্ষমেতিঃ সমং-চুৰ্ণীক্নত্য মনাক্ সবীঙ্গ সহিতং ভৃষ্টা তু শক্ৰাশনম্। সর্বেষাং দ্বিগুণাং সিতাং স্থবিমলাং ষত্নাৎ ভিষ্ড নিক্ষিপেৎ-को प्रकाणि इंडः श्रम्छि निवरम क्राष्ट्र छान् सानकान्। কপ্ রৈরচ্ণিতানপিহিতান্ দত্বা তিলান্ ভজ্জিতান্-গোপ্যোয়ং কিতিমগুলে মিত্ধিয়াং পাষ্ডিনামগ্রতঃ। আধিব্যাধিহরঃ ক্ষয়হরঃ কুলাপছো বুংহণঃ-স্ত্রীণাং তোষকরে। মুখদ্যতিকরঃ শুক্রাগ্নির্ন্নপ্রদঃ। কাদখাদবলাশ রোগনিচয় প্রপ্রংদনঃ প্রার্থিনাং-প্রোক্তো ত্রদাসুতেন সর্ব্বস্থদঃ কামেখরোঃ মোদকঃ। স্ত্রীগণপরিছীণঃ সর্বেশাস্ত্র প্রবীণঃ-কলিডবিমলকীর্ভিঃ প্রাপ্তকন্দর্পমূর্ভিঃ। বিগত সকলভীতিগীতবাদ্যাঙ্গনীতি-র্ভৰতি ভূবি সদেবে। যেন ভক্তঃ প্রয়ত্তাৎ। রজি যুবভিখেলা সম্পুটাকর্যর্যাদ্-গমরতি যুবতীনাং কেলিকৌতুহলেন। যদি কথমণি ভুক্তো ভোজনাদাবখান্তে-

· সুরতরভদমুদ্রৈ নফিকামং প্রকামম্।

যম্মান্ব্য রহস্পতিগুনুধিয়া যমাৎ দদা বীর্যবান্
যম্মাত্র্মদ দাক্ষিণাত্য যুবত দন্তোগ কৌতুহলী।

যমাৎ কাব্যকুত্বলং সুকবিতা দং দায়তে লীলয়া
শ্রীমন্তিঃ প্রতিবাদরং ক্ষিতিতলে সংদেব্যতাং মোদকঃ॥

ছিতীয় কামেশ্বরমোদক।

णामलकी, रमन्नवलवन, कूड़, कछेकल, शिल्लानी, खश्री, यमानी, वनयमानी, যক্তিমধু, জীরা, ক্ঞজীরা, শসি, কাক্ডাশৃঙ্গী, বচ, নাগকেশর, তালীশপত্ত, তেজপত্র, দাকচিনি, এলাচি ও মরিচ; এই সকল দ্রব্যের প্রত্যেকের চূর্ণ ২ ভোলা, ভৰ্জিত সবীজ সিদ্ধিচূৰ্ণ পূৰ্ব্বোক্ত দ্ৰব্যসমূহের সমান ও সকল দ্ৰব্যের দ্বিগুণ চিনি লইমা, যথানিয়মে পাক করিয়া দ্বত ও মধু এবং কিঞ্চিৎ কপুর ও কৃঞ্জিলচ্ণ মিশ্রণপূর্বক প্রশন্তদিবদে মোদক প্রস্তুত করিবে।. বুদ্ধিমান্ वाक्तिगंग এই छेयथं भाष छिमिरगंत मसूच इहेरज गोंभरन ताथिरवन। अहे (मामक आधि (मानमिकद्वांग) ও न्याधि नामक, क्षत्र ७ क्षेद्वांग-निनामी, ব্রংহণ, স্ত্রীদিগের মন্তোষ ও মুখছাতিজনক, শুক্র ও অগ্নি র্দ্ধিকারক, কাস, খাদ ও কফরোগদমূহ নিবারক, এমন কি দক্ষরাজা কর্তৃক কথিত হইয়াছে ্যে, ইহা সর্ব্যবিধ সুখপ্রদায়ী। যে ব্যক্তি ইহা অত্যন্ত ভক্তি ও যুদু সহকারে ভোজনের পূর্বের বা অন্তে দেবন করে, তাহার ছফ্ট এছ নফ্ট হয়, সর্বেশাস্ত্রে প্রবীণতা জন্মে, বিমল কীর্ত্তি বিঘোষিত হয়, কন্দর্পের স্থায় স্থন্দর মূর্ত্তি হয়, সর্ববিধ ভয় দূর হয়, গাঁত, বাদ্য ও নীতিবিষয়ে পারগতা জ্বাে, নিরতিশন্ত আনন্দ ও কেলি কৌতূহল সহকারে মুবতীগণসহ স্থরতক্রীয়ায় অভিলাষ জন্মে এবং স্থরতপ্রসঙ্গে নউকামের উদ্দীপন করে। যখন এই মোদক দেবন দার। মব্য রহস্পতির ম্ঞায় তীক্ষু বুদ্ধি, অতি বীর্যারদ্ধি, যুবতীসস্ভোগে কৌতু-হল, কাব্যকৌতুহল এবং সুক্ৰিতা জন্মে; তখন ইহা প্ৰতিদিন ক্ষিতিতলে মানবগণের দেবন করা অভীব উপযুক্ত।

সম্পচ্কন্।—
যক্ষাদি শুটো ভাণ্ডে সগুড়ক্দৌদ্রকাঞ্জিকন্।
ধান্যরাশো ত্রিরাত্রস্থ শুক্তং চুক্রং ভত্ত্ত্যতে॥
দ্বিশুণং গুড়ঁমধ্বারণাল মস্কক্রমাদিস্।
পীতেনৈতেন নশ্যতি বাতশ্বেষ্মগ্রহণ্যাদীন্॥
স্বম্পচ্ক।

দ্বির মাত ৮ ভাগ, ইক্ গুড় ১ ভাগ, মধু ২ ভাগ এবং ৪ ভাগ কাঁজি; এই ত্রুব্য চতুষ্টর এইণপূর্বক একত্র মিশ্রিভ করিয়া, একটা বিশুদ্ধ ভাওমধ্যে রাখিয়া তিন দিন অহোরাত্র থাক্তরাশির মধ্যে সংস্থাপন করিবে। ভদ্রন্তর তিন দিন পরে তাহা ধান্তরাশি হইতে উঠাইয়া লইবে। এই তরল পদার্থকৈই ই শুক্ত বা চুক্ত বলে। ইহা দ্বারা বাতজ, কফজ, গ্রহণী আদি বিবিধরোগ বিনষ্ট হয়।

রহচ্চুক্রম্।—

প্রস্থার তেওঁ লভায়তন্ত্রমজলাৎ প্রস্থার চামতঃ।
প্রস্থার দিবিতোহমুলক পলানাকৌ গুড়ামানিকে॥
মানো শোধিতশৃঙ্গবেরশকলাৎ দ্বে সিন্ধু জাজ্যাঃ পলে।
বে ক্ষোবণয়োনিশাপলযুগং নিক্ষিপ্য ভাণ্ডে দৃঢ়ে॥
মিথে ধান্যবানিরাশিনিহিতং তীন্ বাসরান্ স্থাপয়েৎ।
তীয়ে তোরধরাতায়ে চ চতুরো বহায় পুষ্পাগমে॥
মট্শীতেইটদিনান্তঃ পরমিদং বিস্পাব্য সঞ্প্রেৎ।
চাত্রজ্জাতপলেন সংহিত্মিদং শুক্তক চুক্রক তৎ।
হন্যান্তক্ষামদোষজনিতান্নানাবিধানাম্যান্।
দুর্মানিলগুলাুশ্লজ্টরান্ হত্যানলং দীপয়েৎ॥

রহচ্জু ক্র

তণুলোদক /৪ চারি দের, তুমজল (অভাবে কাঁজি)।২ বার দের (তুমের দহিত যব জলে ভিজাইয়া, তুমজল গুন্তুত করিতে হয়), অঙ্গ দ্ধি /২ ছই দের, তলমূলক (কাঁজির নিম্নন্থ বস্তুবিশেষ) /১ এক দের, ইফু গুড় /২ ছই দের, অক্বর্জিত আদার খণ্ড /২ ছই দের, কৈর্বলবণ ৮ ভোলা (/১ অর্দ্ধ পোয়া), কৃষ্ণজীরা /১ অর্দ্ধ পোয়া, পিপুল /১ অর্দ্ধ পোয়া, মরিচ /১ অর্দ্ধ পোয়া ও হরিদ্রা /। এক পোয়া, পিপুল /১ অর্দ্ধ পোয়া, মরিচ /১ অর্দ্ধ পোয়া ও হরিদ্রা /। এক পোয়া; এই সকল দ্রব্য লইয়া একত্র মিশ্রণপূর্বক, একটী স্বদৃঢ় বিশুদ্ধ ভাণ্ডমধ্যে রাখিবে। ভৎপরে ঐ ভাণ্ড ধাস্তরাশি বা যবরাশির মধ্যে প্রীম্মকালে ও শর্ৎকালে তিন দিন, বর্ষাকালে চারি দিন, বসন্তকালে ছয় দিন অথবা শীতিকালে রাখিতে হইলে আট দিবস রাখিয়া, পরে ঐ ভাণ্ড ধাস্তরাশি বা যবরাশির মধ্য হইতে উত্তোলনপূর্বক একখানি পরিষ্কার বস্তু দ্বারা ছাকিয়া, সিটে বাদ দিয়া জলীয় ভাগা প্রহণ করিবে। এই পদার্থকেই রহচ্ছুক্ত বা রহচ্ছক্র বলা যায়। এবং উহাতে দাফ্টিনি, ভেজপত্র, এলাচি ও নাগকেসর; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ ২ জোলা দিয়া পান করিলে বাত, কফ, আমদোষজনিত বিবিধরোগা, আর্শঃ বাতজগুলা ও শূলরোগান নট হইয়া উদরিক আর্ম প্রনীপ্ত হয়।

তক্রারিষ্টম্।—

ষ্মানাগ্লকং পথ্যা মরিচং ত্রিপলাংশকম্। লবণানি পলাংশানি পঞ্চ চৈকত্র চুর্ণয়েং॥

ভক্রকং সাস্থতং জাতং ভক্রারিষ্টং পিবেররঃ। দীপনং শোথগুল্যার্শঃ ক্রিমিমেহোররাপহম্।

यमानी, आमलकी, रवीजकी, मित्र ; अहमकल स्वय श्राट्याक अलेल अर्थाप २६ (जाना कतिया, भक्षनवर्ग व्यर्थाय रिम्हतनवर्ग, (मीवर्फननवर्ग, विवृत्तवर्ग, সামুদ্রলবুণ ও প্রস্তিশলবণ, এই সকল প্রত্যেক ১ পল (৮ তোলা) অর্থাৎ মিলিত ৪- তোলা এহণপূর্ব্বক, উত্তমরূপে চূর্ণ করত: একটা ভাণ্ডে।১ যোল দের তক্রের মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া, অল না ছওয়া পর্যান্ত সেই ভাওটীর মুখ কদ্ধ করিয়া রাখিবে। পরে উত্তমরূপ অমরুদ ভাষাপন্ন হইলে, উক্ত ভাগ্তের ় মুখ খুলিয়া ১ একখানি পরিষ্কার বস্তু দ্বারা ছাঁকিয়া সিটে বাদ দিয়া, জ্বলীয় ভাগ এহণ করিবে। এই পদার্থকেই তক্রারিষ্ট বলা যায়। ইহা উপযুক্ত মাত্রায় পান করিলে, অগ্নির উদ্দীপন হয়; এবং শোথ, গুলা, অর্ণঃ, কুমি, মেছ এবং উদরাদার প্রভৃতি নানাপ্রকার ব্যাধি বিধ্বংসিত হইয়া থাকে।

মরিচাদ্য-মূত্যু ৷---

মরিচং পিপ্পলীমূলং নাগরং পিপ্পলী তথা। ভল্লাতকং যমানীত বিডঙ্গং হন্তিপিপালী। हिन्दु मोवर्कनरिक्व विख्रामस्य हवाथ। সামুদ্রং স্ববক্ষারং চিত্রকো বচয়া সহ॥ ' এতৈরর্দ্ধপলৈভাগৈয় তপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। দশমূলী রসে দিদ্ধং প্রসা দ্বিগুণেন চ।। মন্দাগ্নীনাং হিতং সিদ্ধং গ্রহণীদোষনাশনম । বিউন্তমামং দৌর্বল্যং প্লীছানমপকর্ষতি ॥ কানং খাৰং ক্ষ়ঞ্বৈ দ্ৰনাৰ নভগন্তম্। কফজান্ হন্তি রোগাংশ্চ বাতজান্ ক্রিমিসম্ভবান্ ॥ তান সৰ্কান নাশয়ত্যাশু শুক্ষং দাৰ্কনলো যথা।

মরিচাদ্যন্ত।

প্রথমত: পারা মৃত /ও সের, দ্বিগুণ অর্থাৎ /৮ আট সের জল এবং মরিচ, পিপুলমূল, ভাঁ ঠী, পিপুল, শোধিতভেলার আট্রি, বিড়ল, যমানী, গজ-পিপুল, হিন্দু, সৌবর্চলত্ত্রবণ, বিট্লবণ, দৈশ্বৰূৰণ, চই, সামুদ্রলবণ, যবক্ষার, রক্তচিতার মূল এবং বচ ; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৪চারিভোলা করিয়া প্রহণ-পূর্বক উত্তমরূপে কুট্রিত করিয়া, কুল্লরূপে প্রদানপূর্বক পাক করিবে। পরে অপে পরিমাণে জল থাকিছে দামাইরা কক্ষণ্ডলি ছাকিয়া, পুনর্বার 🖊 আটদের দশমূলীর কাথ সহ পাক কর্ত্তা, শেষ পাকের লক্ষণগুলি প্রকা-भिष्ठ हरेला, हुनी हरेएक बामाहेशा र**खन्**क कतिया शक लहेता। এই हुक

উপযুক্ত মাত্রার পান করিলে মন্দায়ি, এইণীলোম, বিউন্ত, ক্রামদোম, দৌর্বলা, প্লীহা, কান, খান, ক্ষয়, অর্শঃ, তগন্দর, ককজরোগ, বাডজরোগ, এবং ক্রিমিনস্ত ত্যাধি সকল বিন্ট হয়। অগ্নি যেমন শুক্ষকার্ত্তনার্ভনিক্র দক্ষ করে, ডক্রপ এই নরিচান্য-মৃত সমস্ত রোগকে ধংস করে।

মহাষ্ট্ৰপলকং-মুত্ৰু।-

সৌবর্জনং পঞ্চকোলং সৈদ্ধবং হরুষাং বঁচাং।
অজমোদাং যবক্ষারং হিন্দু জীরকমৌন্তিদম্॥
ক্ষকাজাজী সভুতীকং কল্কীকৃত্য পলার্দ্ধকম্।
আদ্রুকিন্স রসং চুক্রং কীরং মস্ত্র্যুক্ষাঞ্জিকম্॥
দশ্যুলকষারেণ স্বতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
ভক্তেন সহ দাতব্যং নির্ভক্তং বা বিচক্ষণৈঃ॥
ক্রিমিপ্লীহোদরাজীণ জ্বকুষ্ঠপ্রবাহিকাম্।

বাতরোগান্ কফবাধিন্ হন্যাচছুলমরোচকম্।
পাণ্ডুরোগং ক্ষয়ং কাসং দৌর্বল্যং গ্রহণীগদম্।
মহাষট্পলকং নাম রক্ষমিন্দাশনির্থা॥

মহাষট্পলকম্বত।

প্রথমতঃ গব্যন্থত /৪ চারিদের : এবং তৎ সহ ফল্কার্থ সচললবণ ৪ চারি-তোলা, পঞ্চকোল (পিপুল, পিপুলসূল, চই, রক্তচিতারমূল ও শুগী) মিলিত ৪ তোলা, দৈশ্ববলবণ ৪ তোলা, হবুয় ৪ তোলা, বচ ৪ তোলা, বনয়মানী ৪ তোলা, যবকার ৪ তোলা, হিন্তু ৪ তোলা, জীরা ৪ তোলা, উদ্ভিদলবণ ৪ তোলা, কৃষ্ণজীরা ৪ তোলা এবং যুমানী ৪ তোলা ; এই সকল দ্রব্য ও জল /৮সের মিশ্রিত করিয়া পাককরতঃ, অল্প জল থাকিতে নামাইয়া, কল্কগুলি ছাকিয়া ফেলিবে। তদনন্তর আদাররস /৪ চারিদের, চুক্র /৪ চারিদের, হন্ধ /৪ চারিদের, দিরা পাক করিয়া, শেষ পাকের লক্ষণ দৃষ্ট ইইলে, চুল্লী ইইতে নামাইবে। এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিলা মৃত গ্রহণ করিবে। এই মুত্ত উপযুক্ত মাত্রায় অন্তের সহিত অথবা হুদ্ধের সহিত পান করিলে, ক্রিমি, প্লীহা, উদর, অজ্ঞীর্ণ, জর, কুন্ঠ, প্রবাহিকা, বাতরোগ, শ্লেম্বরোগ, শূল, অক্সচি, পাণ্ডু-রোগ, ক্ষর, কাস, দৌর্বল্য, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনা, ক্ষর, কাস, দৌর্বল্য, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনা, ক্ষর, কাস, দৌর্বল্য, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনা, ক্ষর, কাস, দৌর্বল্য, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনা, ক্ষর, কাস, দৌর্বল্য, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনার হক্ষ সকল বিন্তী হয়, তন্ত্রপ এই মহাঘট্ পলক মৃত দ্বারা সমস্ত রোগ ধংস প্রাপ্ত হয়।

বিল্বাদি-য়তম্।— বিল্বাগ্নি চ্ব্যাক্র ক শৃঙ্কবের কাথেন কল্কেন চ নিদ্ধমাজ্যম্।

সচ্ছাগত্ত্বং এছণীগলৈ থ-শোথানিমান্দ্যাক চিত্রন্থরিষ্ঠঃ । বিলাদিয়ত।

গণ্য স্থাত /ও চারিদের , কল্কার্থ বেলশু ঠ, চই, আদা, রক্ত চিতা ও শৃঙ্গ বের (শুষ্ক শুগুরি স্থায় বস্তু); এই সকল বস্তু সমুদায়ে /১ একদের ; উত্ত বেল্পু ঠ প্রভৃতির কাথ। ২ বারদের এবং ছাগছ্য /৪ চারিদের। এই সকল দ্রব্যের মহিত যথা নিয়মাল্লারে স্থাত পাক করিলা লাইবে। এই স্থাত উপযুক্ত মাত্রায় দ্ব্যাহ দেবন করিলে গ্রহণীরোগসস্ভুত শোথ, অগ্নিমান্দ্য ও অক্তিরোগ বিন্ত হইয়া থাকে।

চাঙ্গেরী-মৃত্যু ৷----

নাগরং পিপপলীমূলং চিত্রকো হস্তিপিপপলী।
শ্বংক্রী পিপপলী ধান্যং বিলৃং পাঠা ষমানিকা॥
চাঙ্গেরী স্বরদে সর্পিঃ কল্কেরেতৈ বিপাচয়েৎ।
চতৃগুণোন দগ্গা চ তদ্ স্বতং কফবাতনুৎ॥
অশাংসি গ্রহণীদোষং মূত্রকুচছুং প্রবাহিকাম্।
শুদল্রংশার্তিমানাহং স্বত্যেতদ্যুপোহতি॥

চাঙ্গেরীঘৃত।

গব্য স্থত /৪ চারিসের; কল্কার্থ শুগ্রী, পিপুলমূল, রক্তচিতার মূল; হস্তিপিপ্পলী (চই), গোক্ষর, পিপুল, ধনে, বেলশুঁঠ, আকনাদি ও যমানী; এই দকল দ্রব্য মিলিড /১ একদের, আমকলশাকের রদ।৬ যোলদের এবং দিধি।৬ যোলদের। এই দকল দ্রব্যের দহিত যথা নিয়মে স্থত পাক করিয়া, উপযুক্ত মাত্রায় দ্রদ্ধদহ দেবন করিলে কফ, বাত, অর্শঃ, গ্রহণী, মূত্রকৃচ্ছ্র প্রবাহিকা, গুদভংশ (হালীশ) ও আনাহরোগ নই হয়।

• চিত্রক স্বতম্।—

চিত্রককাথকলকাভ্যাং গ্রহণীমং শৃতং হবিঃ। গুলুবেশাথোদরপ্লীহ শূলার্শোম্বং প্রদীপনম্॥ চিত্রকন্থত।

গব্যন্থত /৪ চারিসের; কল্কার্থ রক্তচিতারমূল /১ একদের এবং রক্ত চিতার কাথ ।৬ বোলসের; এই সকল দ্রুত্য সহবোগে দ্বত পাকপূর্বক উপমুক্ত মাত্রায় হৃদ্ধ সহ পান করিলে গুলা, শোথ, উদর, প্লীহা, শূল এ অর্শেরোগ নিবারিত ছইয়া থাকে।

বিল্গর্ড মৃতম্।—
মন্ত্রন্য কষায়েণ বিল্গর্ভং পচেদ্ মৃতম্।
হন্তি কুক্যাময়ান্ সর্বান্ এহণীপাণ্ডু কামলাঃ॥

थान-विद्यापनिः।

বিলগর্ভয়ত।

গবাছত /৪ চারিসের, মস্বের কাথ ।৬ বোলসের এবং কল্কার্থ বেলশুঠি । /১ একসের , এই সকল দ্রবাসহ স্থতপাকপূর্বাক উপযুক্ত পরিমাণে ত্বন্ধ নহ-বোগে পান করিলে, কুন্মিগত সর্বপ্রকার রোগ, বিশেষতঃ এইনী, পাতু ও কামলারোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

মস্বের কাথ প্রস্তুত প্রণালী – মস্ব দাইল ১ একখণ্ড বস্ত্র দারা পুট্লী-রূপে বাঁধিয়া, ঐ পুটলীদ্বিত মস্ব দাইল সিদ্ধ করতঃ কাথ প্রস্তুত করিয়া লইবে।

छ थे ने- श्र ठम् ─

বিখোষগদ্য গর্ভেণ দশমূলজলে শৃতম্।

মৃতং নিহন্যাচছ্য়পুং গ্রহণীং সামতায়াম্।

ক্ষীন্ত।

গবান্বত /৪ চারিদের, কল্কার্থ কুট্টিতশুঠী /> একদের, এবং বেল, শোণা, গাস্তারী, গোক্ষর, পারুল, গনিয়ারী, চাকুলে, ব্যাকুড়, কন্টকারী ও শালপানী; এই সকল দ্রব্যের কার্থ।৬ যোলদের; এই সমস্ত দ্রুব্য সহযোগে স্বত্ত পাকপূর্বক উপযুক্ত মাত্রায় কিঞ্চিৎ পরিমিত হ্রম্বাহ সেবন করিলে, শোধ এবং গ্রহণী নাড়ীর আশ্রিত আমনোষ সকল বিনম্ট হইরা থাকে।

বিলু-তৈলম্।—

তুলার্নিং শুক্ষবিলুস্য তুলার্ন্নিং দশমূলতঃ।
জলদোণে বিপক্তবাং চতুর্ভাগাবশেষিতম্।
আদ্রু ক্যা রস প্রস্থ মারণালং তথৈব চ।
তৈলপ্রস্থং সমাদায় ক্ষীরপ্রস্থং তথৈব চ॥
মাতকী বিলুশুঠী ক শঠী রাস্মা পুনর্নবা।
ত্রিকটু পিপেলীমূলং চিত্রকং গজণিপেলী ॥
দেবদারু বচা কুঠং মোচকং কটুরোহিণী,।
তেজপত্রাজমোদে চ জীবনীয়গণস্তথা ॥
এবামর্ন্ধপলান্ ভাগান্ পাচয়েমূল্লনায়্নমা।
এতদ্বি বিল্বাং হান্তি ছতিসারমরোচকম্ণ।
সংগ্রহাহণীং হান্তি চার্লারানিং বিনাশয়েৎ।
ক্ষবাতোদ্রবং শোথং জ্রমান্ত ব্যপোহতি॥
কাসং খাসক গুলুক পাতুরোগবিনাশনম্।

মক্রশ্লশমনং স্তিকাতক্ষনাশ্নম্ ॥
মূচ্গর্ভে চ দাত্র্য মূচ্বাতার্লামনম্ ।
শিরোরোগহরকৈব স্ত্রীণাং গদনিস্দন্ম্ ॥
রঙ্গোদুন্টাশ্চ বা নংগ্যো রেতোদুন্টাশ্চ যে নরাঃ ।
তে২পি তারুণ্যশুক্রাচ্যা ভবিষ্যন্তি মহাবলাঃ ॥
বন্ধাপি লভতে পুত্রং শূরং পণ্ডিত্যেব চ ।
বিল্তৈল্মিতিখ্যাত্মাত্রেয়েণ বিনির্মিত্ম্ ॥
বিল্তৈল্য

তিলতৈ ল /৪ চাবিদের; কাথার্থ বেলশু ঠ /৬।• ছয়দের একপোয়। ও দশ্যল মিলিত /৬।• ছয়দেব একপোয়া, পাকার্থ জল ১।।৪ একমণ চিকাশ্রের, শোষ ৯ ধালদের, আদাররস /৪ চারিদের, কাঁজি /৪ চারিদের ও ছয় /৪ চারিদের এবং কল্কার্থ ধাইফুল, বেলশু ঠ, শটী, রায়া, পুনর্বরা, তিকট, পিপুল্যুল, বক্ত চিতারমূল, গাজপিপুল, দেবদাক, বচ, কুড়, মোচরস, কট্ কী, ভেজপত্র, বন্যমানী, জীবক, ঋষভক, মেদ, মছামেদ, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, রদ্ধি এবং ঋদ্ধি; এই সকল দ্রব্য ওতেকে ৪ চারিভোলা; এই সমস্ত দ্রব্যপ্তলি দ্বারা মূছ অগ্নিসংযোগে তৈল পাক করিয়া লইবে। এই তৈল গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে মন্দাগ্নি, বিবিধপ্রকার প্রহণী, অতীসার, অক্চি, সংগ্রহ্মাহণী, অর্শা, বিবিধপ্রকার স্লীপদ, অন্তর্মদ্ধি, কফ-বাতজ্যভূত শোখ্য, জ্ব, কাস, খাস, গুলা, পাণ্ডু, মক্কলশূল, স্থতিকারোগা, মূঢ়গর্ভ, মূঢ়বাড, শিবোরোগ প্রস্তীরোগ বিনম্ভ হয়। এই তৈল ব্যবহার দ্বারা নারীগণের ছমিত আর্ত্বব বিশোধিত হয়, পুক্ষগণের দ্বিত শুক্র সংশোধিত হইয়া শ্রের, পিণ্ডভুল্য পুরু উৎপন্ন হয়। এই রিল্ভৈল আত্রের ঋষি দ্বারা নির্ম্বিত হইয়াছে।

দাভিমান্য-তৈলম্।—

দাভিমত্বগ্র্জলং ধান্যং বৎসকস্যত্ত্বত্তথা।
প্রত্যেকমানকং প্রান্থং জলদ্রোণে পচেদ্রিষক্ ॥
চত্ত্রিগাবশিষ্টন্ত তক্রমানকস্মিত্ম্।
পচেত্রেলানকে ধীমান্ গর্ভং দত্ত্বা ভিষণ্বরং॥
বিকটু বিফলা মুস্ত চব্য জীরক সৈম্ববম্।
চাত্র্জ্জাতং মধুরিকা মাংসী চ নেবপুস্পকম্॥
জাতীকোষফলে ধান্যং ষমান্যো বালকং তথা।
কঞ্চীতিবিষা ভেকী শৃঙ্কাটং ব্রহতীদ্রম্॥
আন্ত্রশ্ব্রহঃ পর্ণো) সমঙ্গেন্দ্রযুব্বেরী বরী।

ধাতকী বিল্মোচক মূদলী বংশকং বলা।
শ্বদংক্রী লোপ্রণাঠান্চ কান্তং খাদিরমেবচ।
অমূতা শালুলীত্বক্চ সর্বমন্ধপলোমিতম্।
পিন্তু ততুলতোরেন সাধ্যে মূত্রণায়িনা।
গ্রহণীং হবি তুর্বারাং প্রমেহান্পি বিংশতিম্।
অর্লাংসি বড় বিধানোর নাশ্রেরাত্ত সংশ্রঃ।

माডियानारे उल ।

ভিলতৈল /৪ চারিদের। কাথার্থ দাডিমফলের ছাল /৮ দের, পাকার্থ জল ১॥৪ একমণ চব্দিশ্যের, শেষ। ৮ যোলদের; বালা /৮ আট্রদের, পাক-নিমিত্ত জল ১।। ৪ একমণ চব্বিশদের, শেষ। ৬ ষোলদের ; ধনে 🗸 চ আট্রসের. পাকার্য জল ২।।৪ একমণ চরিকশদের, শেষ।৬ যোলদের; কুর্মনের ছাল 🗸৮ আটিসের, পাকনিমিত্ত জল ১।।৪ একমণ চিকাশদের, শেষ।১ ষোলদের এবং তক্র/৮আটনের। কল্কার্থ শুগুী, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেডা, মুখা, চই, জীরা, দৈশ্ববলবণ, নাগবেশর, দাঞ্চিনি, তেজপত্র, এলাচি, দৌরী, क्कोमाश्मी, लक्क, टेक्कबी, यात्रकल, श्राम, यमानी, वनयमानी, वाला, काँ एका-দাম, আতইচ, থুলকুড়ী, পাণীফল, ব্যাকুড়, কণ্টকারী, আমের ছাল, জ্বামের ছাল, শালপানী, চাকুলে, বরাহক্রাস্তা, ইক্রযব, শতমূলী, ধাইফুল, বেলশুঠ, মোচরস, ভালগুলী, কুরচি, বেড়েলা, গোক্সুর, লোধ, আকনাদি, খদিরকাষ্ঠ, গুলঞ্চ এবং সীমূলছাল; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৪ চারিভোল। করিয়া প্রহণপূর্ব্বক তণ্ডুলোদক সহ কৃটিয়া লইতে হইবে। এই সকল দ্রব্য সহযোগে যথানিয়মে তৈল পাক করিয়া, গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে ছর্ব্বারগ্রহণী, বিংশতি 🔁 ২০) প্রকার প্রমেছ এবং ষড় বিধ (৬ প্রকার) আশরোগ নিশ্চয়ই বিনস্ট ছইয়া থাকে।

এহণীমিহির-তৈলম্।—

ধন্যাকং ধাতকী লোদ্রং সমঙ্গাতিবিষা শিবা।
উণীরং মুস্তককৈব জল মোচং রসাঞ্জনম্।
বিলৃং নীলোৎপলং পত্রং কেশরং পদ্যকেশরম্।
তড় চীক্রযবশ্যামা পদ্যকং কটুরোহিণী।
তগরং জটিলা ভূঙ্গং কেশরাজং পুনর্ণবা।
আত্র জয়ু কদয়ানাং ত্বচঃ কুটঙ্গ-বল্কলম্।
যমানী জীরককৈবাং কার্যকাণি প্রকলপয়েৎ।
তলপ্রস্থং পচেৎ সমাক্ তক্রেণানাতমেন বা।

কুন্বা লোষগতিং তদ্বভধা স্বৌষধবারিণা।

এতদ্রসায়নং তৈলং বলীপলিতনাশনম্।

হন্তি সর্বানতীসারান্ গ্রহনীং সর্বরূপিনীম্।

হ্বরং তৃকাং তথা শ্বাসং কাসং হিক্কাং বিষং ভ্রমিম্।

কোপদ্রবং কোর্ডরুক্তং নাশরেৎ সদ্য এব হি।

কর্মাংসি কামলাং মেহং শ্বরপুং শূলমূল্বংম্।

এতদ্বি রংহবং রুষাং সর্বরোগ নিবর্হণম্।

বশীকরামেতদ্বি প্রারোগবিলাতিম্।

বীরু সংরং প্রযোজবাং প্রত্বেরাক সংসদি॥

বিবাহানিয়ু মাললাং বিবাদে বিক্রপ্রপ্রদ্

श्रह्गी भिष्ति देखन ।

তলতৈল 🗸ও চারিদের : কল্কার্থ ধনে, ধাইফুন, লোধ, বরাহক্রান্তা, ইচ, হরীতকী, বীরণমূল, মুখা, বালা, মোচরদ, রমাঞ্জন, বেলশুঠ, াৎপল, তেজপত্র, নাগকেশর, পদ্মকেশর, গুলঞ্চ, ইন্দ্রযব, খ্যামালতা, ু পদ্মকার্চ, কট্কী, তগরপাত্তকা, জটামাংদী, দাকচিনি, কেশুরিয়া, পুনর্নবা, আম্রভাল, অনুভাল, কদস্ভাল, কুরচিছাল, যমানী এবং জীরা, এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে ২ ভোলা ; স্বাধার্থ কুরচিছাল ।২॥० সাড়েবার্সের, জল ২॥৪ (৬s) চৌষ ট্রিনের শেষ।৬ (১৬) যোলসের, অথবা তক্র। ৬ যোলসের। কিন্তা দোষান্ত্রসারে অ্ক্র কোনপ্রকার গ্রহণীনাশক দ্রব্যের কাথ।৬ যোলদের। এই সকল দ্রব্য সহযোগে তৈল পাক করিয়া লইবে। অথবা রোগের প্রকৃতি-অন্মারে কেবল তক্র ক্রিয়া ধনিয়াদি যে কোন একটার ক্রাথ সহকারে তৈল পাককরতঃ, শেষপাকের লক্ষণ সকল লক্ষিত হইলে চল্লী হইতে নামাইয়া, বস্ত্রপৃত করিয়া সিটে বাদ দিয়া তৈল গ্রহণ করিবে। এই তৈল সর্ব্বোত্তম ব্রমারন। ইহা গাত্রে মর্দ্দন করিলে বলিপলিত, সর্ব্ববিধ অতীমার, সকলপ্রকার গ্রহণী, জুর, ভৃষ্ণা, কাস, খাস, বৃদ্ধি, ভ্রমি, হিকা, উপদ্রেব সংযুক্ত কুঠবোগ, অর্শঃ, কামলা, মেছ, শৌেথ, সর্ব্ববিধ কষ্টপ্রদ শূল প্রভৃতি সকলপ্রকার রোগ বিনষ্ট হয়। ইহা রংহণ, র্যা ও বশীকরণ বলিয়া জানিবে। এই তৈল প্যা-নক্ষত্রের যোগ সময়ে পাক করিতে হইবে। এই গ্রহণীমিহিরতৈল সায়ংকালে মর্দন দারা আত্যন্তিক স্থাখের মহিত স্ত্রীসম্ভোগ, প্রত্যুবে ব্যবহার করিলে রাজ-সভায় সম্ভ্রম, মানদিক অভিলাষাদি পূর্ণ, বিবাহাদিতে প্রয়োগ করিলে মঙ্গল এবং বিবাদে প্রয়োগ করিলে জয়লাভ হয়। চলিত গর্ভাবস্থায় গর্ভিণীর প্রতি

প্রয়োগ করিলে গর্ভ ছিরতা প্রাপ্ত হয় ; এবং গর্ভারম্ভকালে গর্ভিত্রীকে মর্দ্দন করাইলে, গর্ভ বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। অর্থাৎ এই এছণীমিছির তৈল ভুবনের সকলপ্রকার মঙ্গলসাধক।

রহদ্ গ্রহণীমিহির তৈলম্।— ভৈলং প্রস্থমিতং আছং ভক্রং দল্যাচ্চতুর্গু ।মৃ। কুটজবৈধব ধান্যকং আহ্নং পলশতং পৃথক্॥ তয়োঃ কাথং পচেদে। নে নীর পানাবশেষিতম্। একীক্বত্য পচেইৰদাঃ কল্কং কর্ষমিতং পৃথক্॥ ধান্যকং ধাত্তকী লোধ্রং সমস্লাতিবিষা শিব।। नवद्रः वानकटेकव भृष्यांद्रेक तमाञ्चनम्॥ নাগপুত্রং পলকঞ্চ ৬ড়ু চীক্রবং তথা। প্রিয়ঙ্গু কটুকী পদ্মকেশরং তগরং তথা। শরমূলং ভূঙ্গরাজঃ কেশরাজঃ পুনর্গবা। আত্রজম্বনদয়ানাং বল্কলানি চ দাপয়েৎ॥ এহণীং হন্তি তচ্ছীদ্রং বলিপলিতনাশনমৃ। হন্তি সর্বানতীদারান্ গ্রহণীং সর্বরূপিণীম্॥ জ্বং তৃক্ষাং তথা খাসং কাসং হিক্কাং বিমং ভ্রমিষ্ । मा भारत कार्क का ना ना स्व मा व दि॥ বশীকরণমেত্রদ্ধি পুষাযোগেন পাচয়েৎ। গ্রহণীমিহিরং নাম তৈলং ভবনমঙ্গলম।

রহদ্ শ্রহণীমহির তৈল।
তিলতৈল /৪ চারিসের, তক্র।৬ যোলসের; কাথার্থ কুরচিছাল।২।।•
সাডেবারসের, পাকজন্ম জল ১।।৪ একমণ চল্মিশসের, শেষ।৬ যোলসের; ধনিয়া।২।। সাডেবারসের, পাকনিমিত্ত জল ১।।৪ একমণ চল্মিশসের, শেষ।৬ যোলসের; এই সকল দ্রব্য এবং নিম্নলিখিত কল্ক দ্রব্যসমূহ সহযোগে তৈল পাক করিয়া, মর্দ্দনাদিতে ব্যবহার করিলে গ্রহণী, বলিপালত, সর্ব্ববিধ অতীনার, জ্বর, তৃষ্ণা, শ্বাস, কাস, হিক্রা, বিম, ভ্রমি এবং উপদ্রবসংযুক্ত কোষ্ঠগত-বাত-বেদনাসমূহ বিনষ্ট হয়। এই তৈল পুয়াযোগে পাক করিবে। ইহা শ্রেষ্ঠ রসায়ন। এই রহদ্ গ্রহণীমহির তৈল ভূবনের সর্ব্ববিধ মঙ্গলসাধক বলিয়া জানিবে। কল্কদ্রব্য—ধনে, ধাইফুল, লোধ, বরাহকান্তা, আতইচ, হরীতক্রী, লবঙ্গ, বালা, পাণীফল, রসাঞ্জন, নাগেশ্বর, পদ্মকান্ঠ, গুলঞ্চ, ইন্ত্রযন্ত্র, কট্কী, পদ্মকেশর, তগরপাত্রকা, শরমুল, ভূটমরাজ, কেশুরিয়া, পুনর্বা, আ্যের ছাল, জামের ছাল এবং কদন্বের ছাল—এই সকল দ্রব্য কুটিত প্রত্তেক ১ কর্ষ অর্থান্ত তোলা।

কনকস্থদরো-রসঃ।—
হিন্দুলং মরিচং গন্ধং পিপপলীটক্ষণং বিষম্।
কনকস্থ চ বীজানি সমাংশ বিজয়াদ্রবিঃ॥
মর্দিয়েদ্ যামমাত্রস্ত বটিকা চণকোপমা।
ভক্ষণাদ্ গ্রহণীং হন্তি রসঃ কনকস্থদরঃ॥
ভগ্নিমান্দাজ্বং তীত্রমতীসারঞ্চ নাশ্রেৎ।
দধ্যরং দাপ্রেৎ পথাং যদ্ধা তক্রৌদনং ভবেৎ॥
গ্রহণীদোষিনাং তক্রং দীপ্নং গ্রাহি লাঘ্বাৎ।
পথাং মধুরপাকিত্বান্ন চ পিত্ত-প্রকোপনম্॥
কনকস্থনররস।

হিন্দুল, মরিচ, গদ্ধক, পিপুল, সোহাগার খৈ, বিষ এবং কনকপুতুরার বীজ; এই দকল দ্রব্য দমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া, ১ এক প্রহর্রকাল দিদ্ধির পাতার রুদে মর্দ্দন করিয়া, চণকপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিয়া লইবে। এই বটা প্রত্যহ এক একটা অল্পপান বিবেচনায় দেবন করিলে প্রহণী, অগ্নিমান্দা, জব্ন এবং তীব্রতর অতীদার রোগ বিনম্ভ হয়। এই উষধ্ব দেবন করিয়া দধি বা তক্রের সহিত অন্ন পথা করিবে। গ্রহণী রোগিগণের পক্ষে তক্র লখুগুণপ্রযুক্ত অগ্নিপ্রদীপক ও মলগ্রাহী এবং মধুরপাকিত্ব হেতু অপথা বা পিত্রপ্রকোপক নহে।

গ্রহণী-কবাটঃ।---

রদগন্ধকয়ে শৈতব জাতীকলবিড়ঙ্গকম্।
প্রত্যেকং শাণমাত্রস্ত শ্লন্ধতূর্ণানি কারয়ে ॥
স্থাবর্তরদৈবিল্ পুত্রজৈশ্ব রদৈন্তথা।
শৃঙ্গাটকদ্য পভোইথরদৈঃ প্রত্যেকশঃ শনৈঃ ॥
চণ্ডাতপেন সংশোষ্য বটিকাং কারয়েডিষক্।
বিল্পত্রদেবনব ভক্ষয়েডিজকাদ্বয়ম্ ॥
দগ্না চ ভোজনীয়ঞ্চ এহণী রোগনাশনম্।
পায়ুরোগমভিদারং ঝোথং দুর্ণামকানি চ ॥
এহণীকপাটনামোহয়ং কবাট-ঘটনাদ্ যথা ॥
এহণীকবাট।

শোষিত পারা, শোষিত গদ্ধক, জাতীফল ও বিভৃষ্ণ; এই দ্রব্য চতুষ্টর প্রত্যেকে ॥ ত অর্ধডোলা মাত্রায় এছণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ, স্থ্যাবর্তের (মুশ্টার) রুমে, বেলপাতার রুমে ও পাণীফলের পাতার রুমে ক্রমান্তরে ভাবনা দিয়া, খর্ডর স্থ্যাতপে শুদ্ধ করিয়া, ২ মুইর্ডি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিয়া লইবে। এই বটী প্রতিদিন এক একটী বেলপাতার রম অন্থ-পান মহ দেবন করিবে। এবং তৎপরে দধির সহিত অন্ধ পথা করিবে। ইহা দ্বারা প্রহণী, পায়রোগ, অতীমার শোথ ও অর্শরোগ নিবারিত হয়। যেমন কবাট (দ্বার) কদ্ধ করিলে, গৃহাদির ভিতরে প্রবেশ করা যায় না, তদ্ধপ এই প্রহণী কবাট উষধ দেবন দ্বারা অতিবেগবান্, প্রহণী, অতিমারাদির মলবেগ সংকদ্ধ হইয়া থাকে।

গ্ৰহণী-গজেন-বটিকা।--

রমগন্ধক লৌহানি শহ্ব টঙ্কণরাম্চং।
শঠী তালীশ মুস্তানি ধানাভীরকলৈদ্ধবাঃ॥
ধাতকাতিবিষা শুন্তী গৃহধূমং হরীতকী।
তারং তেজপত্রণ জাতীকল লবলকে॥
হুগোলা বালকং বিলুং মেপী শক্রাশনং কমং।
ছালী দুদ্দেন বটিকাং পিন্টা বৈদ্যেন কর্মেং ।
গহনানন্দর্শাধন ভাষিতেরং রসারলে।
গ্রহণীগজেল্র-বটিকা জীমতা লোকরকণে॥
গ্রহণীগজেল্র-বটিকা জীমতা লোকরকণে॥
গ্রহণীং বিবিধাং হন্তি জ্বাতীসার-নাশিনী।
শূল শুলালিভিনি কামলাঞ্চ হলীমকম্॥
বলবর্ণানিজননী মেবিভা চ রিরান্ত্রশী।
কণ্ডুং কুঠং বিসর্পক গ্রন-লংশং ক্রন্তং ক্রেং॥
মাষদ্বয়ং বিনিং খাদেছে। গিল্পান্থান্তঃ।
ব্রোহনিবলমাবীক্য যুক্ত্যা সেব্যাগ্লি-বর্দ্ধিনী॥

প্রহণীগতে ভাষ্টিকা।

পারা, গদ্ধক, লৌহ শুগু, সোহাগার খৈ, হিঙ্ ; * দী, তালীশপত্র, মুথা, থনে, জীরা, দৈদ্ধবলবণ, ধাইদুল, আতইচ, শুঠ, গৃহধূম, হরীতকী, তগর-পাছকা, তেজপত্র, জাতিফল, লবজ, দাফচিনি, এলাচি, বালা, বেলশুঠ, মেথী ও দিদ্ধি; এই দকল দ্রব্য গ্রেতিক সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তম-দ্রপে চূর্ণ করিয়া, ছাগছগ্ধ সহ মর্দ্দনপূর্বক হ মায় প্রমুগ বটকা প্রস্তুত করিয়া লাইবে। প্রিমান গহনানন্দনাথ কর্ত্বক এই গ্রহণীগজ্ঞের বটকা লোক রক্ষণার্থে রামায়ন বিষয়ে কথিত হইয়াছে। ইহার এক এক বটী ছাগছগ্র অমুপান সহ সেবন করিলে বিবিধপ্রকার গ্রহণী, জুর, অতীসার, শূল, গুলা, জুলা, জুলাপিত্র, কামলা, হলীমক, বাত, কুঠ, যিসপ্ত গুদ্দভংশ রোগ সত্তর বিন্ত হয়। এবং এই উষধ বয়ঃ, আগ্র ও বলাধল বিবেচনাপূর্বক সেবন করিলে বল, বর্ণ, আগ্রি ও আগ্রং বিদ্ধিত হইয়া থাকে।

অগ্নিকুমারঃ।—

রসং গন্ধং বিষং বোষং টক্ষণং লোহভস্মকম্।
অজনোদাহিফেনঞ্চ সর্বভুলাং মৃতাভ্রকম্।
ভিত্রকৃত্বক্যায়েন মর্দ্দরেদ্যাম্মাত্রকম্।
মরিচাভাং বলিং খাদেনজীর্ণং গ্রহণীত্রপা॥
নাশরেল্লাক্র সন্দেহো গুল্পাত্তিকিৎসিত্র্॥
অগ্নিকুমার।

্রান গন্ধক, বিষ, ত্রিকটু, সোহাগার খৈ, লোহভস্ম অজমোদা (বন্যমানী)
ও অহিদেন; এই দকল জন্য দমভাগে এবং ইহাদের দকলের দমান মাত্রায়
মারিত অজ এহণপূর্কক চূর্নকরতঃ, রক্তচিভার ছালের কাথে এক প্রহরকাল
দর্দনপূর্বক, মরিতের আর আকৃতিবিশিক্ট ইটিক। প্রস্তুত করিয়া লইবে।
অন্ত্রপান বিবেচনার ইহার একটা করিয়া বটীকা প্রতিদিবদ দেবন করিলে,
অজীন ও গ্রহণীরোগ নিঃদন্দেহে আরোগ্য হয়।

হিরণ্যগর্ভপোট্রলী।—

धकाश्यमा तुगतां जमा जारहो यो हाउकमा ह। মুক্তাফলদা চতারোভাগাঃ ষড় দীংনিঃস্বনাৎ॥ विश्मदलवं ताहेगां क हेन्द्रत्य तम्भाषिकः। পক্ষতিন্দুকভোয়েন সর্ব্যেকত্র মর্দ্রয়েৎ॥ मूर्यामर्था नारम् कल्कः छमा वक्तः निरद्रांधरहर । গর্তে বহ্নিপ্রমাণে ত পুটেদ্ধি ত্রিবনোপলৈঃ॥ স্বাস্থ্য শীতলতাং জ্ঞাত্ত্ব রদং মূষোদরোদ্ধরেৎ। ততঃ খলোদনর মদাং সুধারূপং সমুদ্ধরেৎ॥ এতস্যামূতরূপমা দদ্যাদ গুঞ্জাচতুষ্ট্রম্। ক্বতমধ্বাজ্য সংযুক্ত মেকোনত্রিংশদৃষ্ঠি।। মন্দাগ্নৌ রোগরাজে চ আহণাাং বিষমজ্বে। গুলান্ধরে মহাশূলে পীনসে খাসকাসয়োঃ॥ অতীদারে গ্রহণ্যাঞ্চ রক্তপিত্তে তথা কফে। অফাদশস্থ কুষ্ঠেয়ু যক্ত্র প্লীহোদরেয়ু চ। দদ্যাৎ সর্বেষু রোগেষু শ্রেষ্ঠমেতদ্রদায়নম্॥ হিরণাগর্ভ পোট্টলী।

পারা ১ একভাগ, স্বর্ণ ২ ছুইভাগ, মুক্তা ৪ চারিভাগ, কাঁদা ৬ ছয়ভাগ ান্ধক ২০ বিংশতিভাগ, কড়িভস্ম ২০ বিংশতিভাগ এবং দোহাগার খৈ পার

সংগ্ৰহণ্ডব্দী কৰ্টেঃ।—

মুক্তা সুবৰ্ণং রস গন্ধ টক্ষ মন্ত্ৰং কপদ্ধী সূত-তুল্যভাপঃ।
সাকৈঃ সমং শশ্বক চুৰ্ণমিউং খলে চ ভাব্যোহতিবিদা-দ্ৰেন ॥
গোলঞ্চ কৃত্বাভ্তসংপুটে তু ভাওে তু সংপাচা দিনাৰ্দ্ধক ।
সম্বাঙ্গণীতোরস এয় ভাব্যো ধৃস্তুরবহ্নো মূৰলী দ্ৰবিশ্চ ॥
লোহস্য পাত্রে পরিভাবিতশ্চ সিদ্ধোভবেৎ সংগ্রহণীকবাটঃ।
বাতোত্তরায়াং মরিচান্ত্যযুক্তঃ পিভোত্তরায়াং মধুপিপেলীভিঃ॥
ককোত্তরায়াং বিজয়ারসেন কটুত্রয়েণান্ত্যযুত্তা গ্রহণ্যাম্।
কায়ে জ্বে চার্শসি ষট্প্রকারে মান্যাতীসারেপ্যতিগীনসেচ॥
মেহে চ কুচ্ছে চ গদধাতু রদ্ধে গুঞ্জান্বয়ঞ্চাপি মহানুভাবম্॥
সংগ্রহণ্যকবাট।

মুক্তা, স্বৰ্ণ, রদ, গন্ধক, দোছাগার খৈ, কড়িভস্ম ও অভ ; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে দমভাগে এবং দর্মনমন্তির দমান পরিমাণে শঞ্চ প্রহণপূর্বক চূর্ণ করিয়া, আভইচের রদের দহিত খলে করিয়া দর্দনপূর্বক পিঞাকৃতি করিবে। তৎপরে পুটপাকে অর্দ্ধনিন পর্যান্ত পাক করিয়া লইবে। পরে শীতল হইলে উষধগুলি গ্রহণপূর্বক ধৃতুরাপাতার রদে, রক্তচিতার রদে ও তালমূলীর রদে ক্রমান্তরে লৌহপাত্রে মর্দনপূর্বক ২০ রতিপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক একটী বটী বাতাধিকরোগে মরিচচূর্ণ ও মৃত দহ, পৈত্তিকরোগে মধু ও পিপুলচূর্ণ সহ, ককাধিক রোগে সিদ্ধিপাতার রদের দহিত এবং ত্রিকটু চূর্ণ ও মৃতদহ গ্রহণীরোগে দেবন করিবে। এবং যথাযোগ্য অমুপান বিবেচনার প্রয়োগ করিলে ক্ষয়, জ্বর, ৬ প্রকার অর্শঃ, অগ্রিমান্য্য, অতীসার, অভি শীন্স, মেহ, মৃত্রকুল্প, ধাতুরোগ এবং রদ্ধিরোগাদি নিবারিভ হয়।

यर्ग-भन्भ ही।---

রসোভযং পলং শুদ্ধং হেম তোলক সংযুত্য ।

यर्क-व्यशांतः।

শিলায়াং মর্দ্ধরেন্তাবদ্যাবদেকত্বাগতম্ ।
গন্ধকদ্য প্লকৈকময়ঃ-পাত্তে ততে। দৃঢ়ে ।
মর্দ্ধরেদ্ ঢ়পাণিভ্যাং যাবৎকজ্জলতাং ভবেৎ ॥
ততঃ পাকবিধানজ্ঞঃ পশ্প টীং কার্য়েৎ সুধীঃ।
রক্তিকানি ক্রেন্থেব যোজ্যেদনুপানতঃ॥
গ্রহণীং বিবিধাং হত্তি ষক্ষ্মাণক বিশেষতঃ।
শ্লমন্টবিধং হত্তি র্ষ্যা দর্বক্ষাপহা॥

স্বর্ণপঞ্চ ।

বিশুদ্ধ পারদ ৮ তোলা ও স্বর্ণ ২ তোলা; এই চুইনী দ্রব্য শিলার করিয়া মিশ্রিত না হওরা পর্যন্ত মর্দ্দন করিবে। তৎপরে তৎসহ ৮ তোলা গন্ধক মিশ্রিতকরতঃ একটী দৃঢ় লৌহমর খলে উত্তমরূপে মর্দ্দিত করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। পরে পপ্পানীর বিধানামূলারে পাক করিবে। ইহ। অন্ত্রুত করিবে। পরে পপ্পানীর বিধানামূলারে পাক করিবে। ইহ। অন্ত্রুণান বিবেচনার ১ এক রতি হইতে ক্রমান্তরে রন্ধি করিয়া রোগীকে দেবল করাইলে, বিবিধ প্রকার প্রহণী, বিশেষতঃ বক্ষমারোগ, অন্টবিধ শূল প্রভৃতি সর্বপ্রকার ব্যাধি বিন্দুই হইয়া থাকে; এবং ইহা অতীব বলকারক।

পঞ্চায়ত-পপ্স ।--

্তাফৌ গন্ধক মাষকা রসদল লৌহং তদন্ধিং শুভং।
লৌহার্দ্ধং বরাজকং স্থবিমলং তান্দ্রস্যা মাষত্রম্ ॥
পাত্রে লৌহময়েচ মর্দ্দনবিধে চুণীকৃতকৈকতোদার্ব্যা বাদরবহ্নিনা চ মৃত্রুনা পাকং বিদিত্বা দলে।
রস্তায়ালম্বুটালয়েৎ পটুরিয়ং পঞ্চায়তপপ্প টী ॥
খ্যাতা ক্ষোন্দরতারিতা প্রতিদিনং শুঞ্জাদ্বয়ং রন্ধিতঃ।
লৌহে মর্দ্দনযোগতঃ স্থবিমলং ভক্ষক্রিয়া লৌহবৎ ॥
শুঞ্জান্টাবিমলাধিকং দিশুণিতং সপ্তাহমেবং ভজেৎ।
নাভাবর্ণ গ্রহণ্যামক্রচিসমুদয়ে দ্রন্টভুণামকেইপি ॥
ছর্দ্যাং দীর্ঘাতীসারে জ্বরভবকলিতে বক্তপিতে ক্রয়ে চ।
র্ষ্যাণাং র্যায়াজী বলিপলিতহরা নেত্রোলগকহন্ত্রী ॥
তুর্ণনীপ্রস্থিরগমিংপুনরপিযুবকং রোগিদেহং করোতি ।
তুর্ণনীপ্রস্থিরগমিংপুনরপিযুবকং রোগিদেহং করোতি ।
তালসন্ধকমাষকাইতি পাশ্চাত্যাঃ। কিন্তু ভান্দ্রন্দ্রিরাস্যু বৈয়াত্যমেব । রসদলমিত্যত্র রস্প্রামিত পঠিন্তা। যে তু রসপলমিচ্ছন্ত্রো-

গদ্ধকদান্তিমাষকত্মাহুত্তমতে চুৰ্বান্থলাৎ পপ্পটোৰ ন স্থানিতি তেন গদ্ধকদাাটো-মাসকাঃ। দলমৰ্দ্ধমাৰ চত্তিয়ং গ্ৰহণ্যাং তাম-কাধান্যান্যাৰত্ৰয়ং বহুলং নিশ্চ ক্ৰকম্॥ পঞ্চায়ত্ৰপপ্ৰতি।

বিশুদ্ধ গদ্ধক ৮ মাযা, পারদ ৪ মাযা, লৌহ ৪ মায়া, অন্ত ২ মায়া এবং তাম ১ মায়া। এই সকল দ্রব্য একতিত করিয়া চূর্ণকরতঃ, একটী লৌহময় পারে মর্দ্দিত করিবে। পরে কুলকাষ্ঠের জ্যাত্রিতে পাক করিয়া, কদলীপত্রে চালিয়া পর্প্পাটী প্রস্তুত করিবে। এই পর্প্পাটী ২ রতি পরিমাণে, ক্রমান্ধয়ে ছাপ্প ছাপ্প ইদ্ধিকরতঃ প্রতিদিন মেবন করিবে। ইহা ৮ রতি পর্যান্ত বর্দ্ধিত করিয়া মেবন করা যায়। এই উষধ মর্দ্দেশে লৌহের যোগ থাকায় লৌহবৎ ক্রিয়া সেবন করা যায়। এই উষধ মর্দ্দেশে লৌহের যোগ থাকায় লৌহবৎ ক্রিয়া প্রকাশ করে। ইহা ৭ দিবস মাত্র শেবন করিলে নানাবর্ণ অতীসার, গ্রহণী, অঞ্চি, ছার্দি, জ্বর রক্তপিত্র, ক্রয়, নেত্ররোগ এবং বলিপলিত বিনম্ভ হয়। ইহা রুষা উষ্ণের মধ্যে সর্ব্বশ্রেষ্ঠ রুসায়ন। এমন কি জরাজীণ বৃদ্ধ ব্যক্তি এই উষধ দেবন করিলে, পুনরায় নব যৌবনপ্রাপ্ত হইতে পারে।

রম-পর্পটী।—

গন্ধকং ক্ষুদ্রিতং ঘর্ষে ভাবাং ভূমরদেন তু। সপ্তধ। ত্রিবিপ: বাপি পশ্চাচছু ক্ষং বিচ্পয়েৎ॥ চুণরিত্বারদপাতে রুত্বা বহ্নিগতং সুধীঃ। ক্রতং ভূমরসে কিপ্তং পশ্চাতুদ্ধৃত্য যত্নতঃ॥ लाइপाट्य ममतमः मिक्टः कड्डालीकृतम्। বদরাঙ্গারবহ্নিন্থে লোহপাত্রে দ্রবীক্বতে॥ ময়্রচন্দ্রিকাক র: লিজয়া যদি দৃশ্যতে। তত্রসিদ্ধিং বিজানীয়াৎ সবৈদ্যোনাত্রসংশয়ঃ॥ শীঘ্রং গোময়-বিন্যন্ত-কদলীপত্রপাতনাৎ। কুর্য্যাৎপর্গটিকাক র ং তথৈবোপরি যদ্ভিভাম ॥ পাক্স্য ত্রিবিধাঃ প্রোক্ত। মৃত্রুমধ্যঃ খরস্তপা। আদ্যয়োদৃ শ্যতে সূতঃ খরপাকে ন দুগ্যতে । म्राको न ममाग् छङ्गः मान्याया छङ्गा क्रियावर । খরে।লবু ভবেদ্তঙ্গ রুক্ষসুক্ষারুণচছবিঃ। मृद्भारको ज्यांशाताो श्रतखारकावित्यां भम् । জ্ববাব্যাধিশতৈজীনং বিশ্বং দৃষ্টা পুরাহরঃ॥

চকার পপ্প টিমেনাং যথা নারায়ণঃ স্থাঃ। আদৌ শক্ষরমভ্যর্ক্য দ্বিজাতীন্ প্রণিপত্য চ। প্রভাতে ভক্ষেদেনাং রক্তিকাদ্বয়সন্মিতাম ৷ त्रिक का निक्र का मानिक का का देन व मरमा भारत ॥ আরোগ্য দর্শনং যাবৎ কুর্যাদ্রাদং ভতঃপরম্। অ জীর্ণে ভোজনঞ্চ ন পথ্যকালবাছিক্রমঃ ॥ য়ত দৈশ্বব ধন্যাক হিন্দু জীরক নাগরৈঃ। শশুতে বাঞ্জনং দিদ্ধং পিত্তে বাস্তুক মান্ধিকমু॥ ক্রশ্যৎস্যেন মুদেশন মাংসেন জাঙ্গলেন চ। জাঙ্গলেষু পশহাগোমৎসারোহিতমদাুরো॥ भटोलगा कनः भवः क्रक्षवां के कालिकान्।. मङ्क्रवाहमी भाष्ठा विशेषधुकभर्गीका ॥ স্থানপ্গৈন্তামুলৈলাভেকপুরসংযুকৈঃ। ক্ষুধাকালে ব্যতিক্রান্তে যদি বায়ুঃ প্রকুপ্যতি॥ विशिविशिनितः मृलः विरत्नरका वमन कुरतो। তৃষ্ণায়াঞ্চাধিকে পিত্তে নারীকেলায়ুনির্ভয়ম্॥ नातीरकन भश्रःभागः निर्छकः वीकारमवह। স্প্রাদ্বীর্যাচ্যতৌ ক্ষীরং চম্পকং কদলীফলম্ । বৰ্জ্জং নিষাদিকং তিও্তং শাকাখ্যং কাঞ্জিকং সুরামু। সর্কমিক্ষুবিকারাংশ্চ দ্ধিতৈলঞ্চ সার্ধপম্॥ স্থানমাতপমগ্রিঞ্ ব্যাখ্যানঞ্চাপি চিন্তুনম্। ক্রোধং শোকং দিবাস্বপ্নং ব্যায়ামৎ জাগরং নিশি॥ कननी कनপতाष्ट्रि जिश्रानातुककी। কুরাওং কারবেল্লঞ্চ কন্দং দীর্ঘপটোলিকাং॥ বল্লুরং পিউকং বিষী মাধকর্কন্দুকং যবম্। नर्भार्य न र्रम्भारमाटाइर खित्र भीविजिमाइ ि॥ ্যদ্যৌষধেঃ স্থ্রিয়ংগচ্ছেৎ কর্ত্তর্যা সা প্রতিক্রিয়া। তুর্বশ্বরং গ্রহণীং হন্তি ভূঃদাধ্যাং বহুবার্ষিকীমৃ॥ আমশূলমতীসারং সামক্ষৈব সমারুতম্। অগ্নিদাদং বড়শাংদি যক্ষাণং সপ্রিগ্রহমৃ ॥

শোপককামলাং পাও প্লীহণ্ডলা জলোদরম্।
পক্তিশূলমন্পিতং রক্তপিতং বিষমস্করম্।
অন্তানশবিধং কুঠং প্রমেহং বিষমস্করম্।
বাতপিতকফোথাশ্য জ্বরান্ হনাথে স্থবারুশান্ ॥
জীর্নোপি পপ্পাতীং কুর্বন্ বপুষানির্মলঃসুধীঃ।
জীবের্বশতং শ্রীমান্ বলী-প্রত-বিজ্ঞ্জিতঃ
প্রাতঃকরোতি নিয়তং সততং বিগুঞ্জং
স্থান্থলাং কুসুমান্ন্র্বা।
আনুশ্চ দীর্ঘনসোবপুষঃ হ্রিজ্
ভানি বলীপলিতয়োরভূলং বলক ॥
রমপপ্পাতী।

পপ্রা প্রস্তুত করিতে হইলে, প্রথমে পারদের মলদোষ, অগ্নিদোষ ও বিষদোষ সংশোধন করিয়া লইতে হয়। তাহার নিয়ম যথা;—৮তোলা পারদ মুতকুমারীর রুদে মর্দ্দন করিলে পারদের মলদোষ, ত্রিফলাচূর্ণের সহিত মর্দ্দন कतिरल अधिरमाय ७ हिजाशाजाततरम मर्फन कतिरल वियरमाय निवाति इत । ভদনন্তর যথাক্রমে ঐ পারদ জয়ম্ভীপত্র, ভেরেণ্ডাপত্র, আদা ও কাক্মাচীপত্রের রুদে আপ্ল'ত করিয়া, মর্দ্দনপূর্ব্বক রৌদ্রে শুক্ষ করিয়া লইতে হয়। এই পারাই পপ্প'নিতে স্থব্যবহার্য। এই পারদের সহিতই গন্ধক মিশ্রিত করিতে হয়। যে গন্ধক শুকপক্ষীর পুচ্ছ সদৃশ কান্তিশালী, নবনীতের স্থায় দীপ্তিবিশিষ্ট, চিক্লণ, কঠিন ও স্থিম, তাহাই শ্রেষ্ঠ ও নর্কোত্তম গন্ধক বলিয়া জ্বানিবে। এই প্রকার গন্ধক ৮তোলা লইয়া ক্ষুদ্রু করিয়া ভূকরাজের রুসে ৭ সাতবার ভাবনা নিয়া, স্থ্যাতপে শুষ্ক করিয়া অতি স্থান চূর্ণ করিয়া লইবে। পরে ঐ গন্ধক লৌহ-পাতে স্থাপনপূর্ব্বক কুলকাঠের অগ্নিতে গর্লাইয়া শীঘ্রই ভীমরাজের রুদে নিমগ্র করিবে। নিমজ্ঞন করামাত্রেই গদ্ধক কঠিন হইবে। তথন তাহা তুলিয়া সমান পরিমাণে পারদের সহিত একটা লৌহময় খলে মর্দ্দনপূর্বক কজ্জলী এস্তুত করিবে। পরে এ কজ্জলী একটা লৌছপাত্রে স্থাপনপূর্ব্বক, উত্তমরূপে প্রজ্ঞলিত নিধূম কুলকাঠের অগ্নিতে গলাইয়া, গোমঃরাশির উপরি একখানি কচি কলাপাত৷ রাখিয়া এবং অন্ত আর এক্খানি কলাপাতার মধ্যে গোময় পুরিয়া পুটলীকরতঃ, দেই দ্রবীভূত কজ্জলী উক্ত কদলী পত্রোপরি ঢালিয়া. সুটলীবদ্ধ কদলীপত্র দ্বারা তৎক্ষণাৎ চাপিবে। ইহাতে পপ্প' টী এক্সত হই-বেক। পপ্প'টী ময়র পুচ্ছের চঞ্জিকার ক্যায় হইলে, উত্তমরূপে এক্তত হই-রাছে জানিবে। এই পাপা তীর পাক ৩ প্রকার ; যথা – মুহুপাক, মধ্যপাক ও খরপাক। ইহার মধ্যে আদি হুইটা অর্থীৎ মৃত্বপাক ও মধ্যপাক ব্যবহার্য্য এবং খর পাক পরিত্যজা। যেছেতু পপ্প'টা মুহ পাকে মদ্যক্ প্রকার ভ দ হর न,

মধাপাত্রে রৌপ্যবৎ ভালিয়া থাকে। কিন্তু খরপাকে অত্যন্ত লঘু হয় এবং ম্বৰ্ণ সদৃশ ভাঙ্গিয়া স্থাম অৰুণবৰ্ণ ছবি দেখা যায়; একারণ মৃত্ন ও মধ্যপাক আছরণীয় ও খরপাক পরিত্যজ্ঞা। পুরাকালে মহাদেব সমস্ত বিশ্বজ্ঞগতের প্রাণিগণকে জরা ও অসংখ্য ব্যাধি কর্তৃক জীর্ণ দেখিয়া, নারায়ণ ধেমন স্থা স্জন করিয়াছিলেন, ভজপ ভিনিত এই পপ্প টীর স্জন করেন। রোগী প্রতিদিন প্রাতঃকালে প্রথমতঃ শিবকে অভার্চনাপুর্বক দ্বিজাতি (ব্রাহ্মণ) দিগকে প্রণিপাত করতঃ এই পপ্প'টি ২ রতি পরিমাণে দেবন করিবে এবং প্রতিদিন ১ এক রতি করিয়া রদ্ধি করতঃ ১০ দশরতি পর্যন্ত বাড়াইবে। পরে আরোগ্য লক্ষিত হইলে ক্রমে ক্রমে ২ রতি পরিমাণে খ্রাস করিয়া আনিবে। পপ্প টী দেবনপূর্ব্বক অজীর্ণ হইতে পারে, এমতভাবে ভোজন করিবৈ না, এবং প্রথ্যকালের ব্যতিক্রম করিবে না। রোগীকে সর্ববদা ছত, দৈশ্বৰ, জীৱা, শুণ্ঠী এবং ধনিয়া বাটনা দিয়া ব্যঞ্জন প্রস্তুতপুর্বক দেবন করিতে দিবে। পিতাধিক্যে বাস্ত কশাক ও মাজিক (মিখুখীশাক) সহ-যোগে কৃষ্ণবৰ্গ মথ্য, মুদ্ধা ও জাঙ্গল মাংসের ব্যঞ্জনাদি প্রস্তুত করিয়া দেবন করিতে দিবে। জাঙ্গল মাংদের মধ্যে শশক মাংস ও ছাগমাংস; মৎস্থের মধ্যে রোহিত মংস্থ ও মাগুর মংস্থা: এবং পটোলফল, পলতা, কালবেগুন, বিংকে, ভৃত্মরাজ, কাকমাচী, আকনাদী, বিষীশাক, ফুলকুড়ি, চূর্ণীকৃত সুপারী এবং কপূর্বসংযুক্ত পান; এই সকল দ্রব্য পপ্পর্টীদেধীর পক্ষে নর্বাদা সুপথ্য জানিবে। এই ঔষধ দেবনকারীর অভ্যন্ত কুধার উদ্রেক ছইলে ভৎক্ষণাথ আহার প্রদান কর। কর্ত্তব্য। কারণ ক্ষধাকালের ব্যতিক্রম ঘটিলে, বায়ু অত্যন্ত প্রকুপিত হয়, মন্তক বিান্ বিান্ করে এবং শূলবৎ বেদনা, বিরেচন, বমি ও জুর হইবার উপক্রম ঘটিয়া থাকে। স্থভরাং ভাহাতে রোগীর অনিষ্ট করিবার বিশেষ সম্ভাবন।। অতএব কোন মতে কুধার সময়ে আহার বন্ধ রাখিবে না ; কিন্তু অন্তবিধ আছার না দিয়া অধিক পরিমাণে ভ্রন্ধই পান করিতে দিবে। পিতাধিক্যবশতঃ অধিক পরিমাণে তৃষ্ণা উপস্থিত হইলে. নির্ভয়ে নারিকেলের জল পান-করিতে দেওয়া যাইতে পারে। কিন্তু কীটাদি-ভক্ষিত দ্রব্য কর্দাচ দেবন করিতে দিবে না। নিদ্রাবস্থায় ত্রুস্থপ্প প্রযুক্ত বীর্ষ্য শ্বলিত হইলে রোগীকে ছুম্ম ও চাঁপাকলা ভক্ষণ করিতে দিবে। নিম্বাদি তিক্ত দ্রব্য, তিক্তশাক, কাঁজি, সুরা, নর্বপ্রকার ইক্লুবিকারজাতদ্রব্য, দ্বি, নর্বপ্-তৈল, স্নান, আতপাত পদেবন, অগ্নিদেবন, অস্থাদির ব্যাখ্যাকরণ, চিন্তা, ক্রোধ, শোক দিবানিদ্রা, ব্যায়াম (কুন্তিকরা), রাত্রিজ্ঞাগরণ, কদলীফল, কদলীপত্র, कन्नीगृन, काना उडेड़ी, धनाव, कांकूड़, कूगूड़ा, कतना डेटच्ह, कह, मनानि कम्मखना, मीर्वशटोलिका ((र्धार्माल) कल, एकमाश्म, शिक्क, विश्वीकल, माय-কলাই, ক্লল ও যব; এই দকল জব্য রোগীকে কদাচ ভক্ষণ করিতে দিবে না। এই ঔষধ দেবনকারী কদাচিত ও স্ত্রীসহবাস করিবে না, এমন কি স্ত্রীলোককে দর্শন ও স্পর্শন পর্যান্তও করিবে না। যদ্যপি ইছা দেবনপূর্ব্বক রোগী কখন জ্বীগদন করে, তবে তৎক্ষণাৎ ভাষার প্রতিকার করিবে; নচেৎ রোগীর বিষদ

অনর্থ ঘটিবার বিশেষ সম্ভাবদা। এই পশ্প টি দেবন দ্বারা হ্রুবারু হাসাধ্য বছকালস্থায়ী গ্রহণীরোম, আমশুল, অভিসার, আমাভিসার, পিভাভিসার, মন্দাগ্নি, ৬ ছয় প্রকার অর্শঃ বেদনাসংয়ক্ত যক্ষমারোগ শোথ, কামলা, পাণ্ডু, প্রীহা, গুল্ম, জলোদর, পরিণামশূল, অঙ্গপিত, রক্তপিত, বিমি ক্রিমিরোগ, অস্টাদশ প্রকার কৃষ্ঠ, প্রমেহ, বিষমজ্বর, স্থলারুণ বাতিক, পৈত্তিক ও লৈত্মিক জ্বর প্রভৃতি বিবিধ প্রকার রোগ আরোগ্য হয়। এমন বি ইহা দ্বারা জীর্ণ ব্যক্তির নির্মালশারীর, বুদ্ধিমত্তা, শতবংসর আয়ুং, শ্রী, বলিপলিত নাশ, স্বাস্থ্য, কন্দর্পের স্থায় কান্তিবিশিষ্ট শ্রীর, দীর্ঘায়ুঃ, মনঃ ও শ্রীরের স্থিরতা এবং অতুল বলাদি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। এই রসপপ্র্প টি প্রথমতঃ ২ রতি মাত্রার অধিক দেবন অবিধেয় জানিবে।

বিজয়পপটি ৷—

হাটকং রজতং তাভ্রং যদত্ত পরিদীয়তে। বিজয়াখ্যা তু সা জ্ঞেয়া সর্বরোগ-নিস্দ্দনী॥ বিজয়পপর্ণী।

উল্লিখিত রদপশ্প টীর পারা ও পদ্ধক মহ মোণা, রৌপ্য ও তাম্র মিশ্রণ পূর্বক পশ্প টী প্রস্তুত করিলে, তাহাকে নিজয়পশ্প টী বলা যায়। ইহা দেবন করিলে সর্বপ্রকার রোগ নিশ্চর দূরীভূত হইয়া থাকে।

কণাদি-লৌহম্।--

কণানাগর পাঠাভিদ্রিবর্গ দ্বিতয়েন চ।
বিলু চন্দন ব্রীবেরৈয়ু ক্রোতিসারনুত্তবেৎ ॥
সর্বোপদ্রবসংযুক্তামপিছন্তি প্রবাহিকাম্।
ন চানেন সমং লৌহং বিদ্যাৎ গ্রহণীগ্রন ॥
কণাদিলোহ।

পিপুল, শুণ্ঠী, আকনিদি, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, মুথা, চিতা, বিড়ঙ্গ, বেলশুঠ, রক্তচন্দন ও বালা; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক চূর্ণ করিবে; এবং এই চূর্ণ সমষ্টির সমান লোহচূর্ণ মিশ্রিত করিয়া উত্তমরূপে পেষণ করিয়া লইবে। এই ঔষধ ২০০ রভি পরিমাণে প্রত্যহ প্রাত্যকালে লেবন করিলে, সকলপ্রকার রক্তাতিসার, উপদ্রেব সংযুক্ত প্রবাহিকা ও গ্রহণীরোগ নিবারিত হইয়া খাকে।

্লবঙ্গাদি-বটী ।—

লবন্ধ জাতীফল জীরক দ্বে ফলত্রিকং ক্র্যুষণ কুষ্ঠধান্যম্। এলাত্ত্বং টস্কবরাট মুস্তং বচাজমোদাবিকৃদৈদ্ধবং সমষ্॥ তদৰ্দ্ধকং পারদ গদ্ধকাজং লৌহং পৃথক্ ভুল্যবিমৰ্দ্য সর্বম্। তন্ত্বাগবলী দলতোয় পিষ্টা ত্রিবলুমানবটিকা বিধেয়া॥ প্রভাতরিদধ্যান্নিশিশেষতে হৈরিয়ং দি হন্যাদ্ গ্রহণীবিকারম্।
আমানুবন্ধং সরুজং এবাহং জ্বরং ফথা শ্লেয়ভবং সশূলম্।
কুষ্ঠান্নপিত্তং প্রবলং সমীরং কুদ্রোধনং কোষ্ঠগতঞ্চবাতম্।
বটীলবঙ্গাদ্যবস্থাীতা তথামবাতং বিনিহন্তি শীঘ্রং।
লবঙ্গাদ্যবিধী।

লবন্ধ, জায়ফল, জীরক, কৃষ্জীরা, আমলকী, হরীতকী, বছেড়া, শুণ্ঠী, পিপ্পলী, মরিচ, কুড় ধনিয়া, এলাচি, দাঞ্চিনি, সোহাগার খৈ, কড়িভস্ম, মুখা, বচ, বনষমানী, বিট্লবণ ও সৈদ্ধনলবণ; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে ষত হইবেক, তাহার অর্দ্ধেক তুলাভাগে মিলিত পারদ, গন্ধক, অদ্র ও লৌহ; এই সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিয়া চুর্গ করতঃ উত্তমরূপে পেষণ করিবে; তৎপরে পানের রুদে মর্দ্দনপূর্বক ৬ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটীকা প্রাতঃকালে অথবা রাত্রিতে উষ্ণজল সহ সেবন করিলে থাহণীবিকার, আমান্তবদ্ধ বেদনাসংযুক্ত প্রবাহিকা, শূলযুক্ত মৈল্লিক জ্বর, কুঠ, তদ্মপিত, প্রবল বায়ুরোগ, আমবাত এবং কোঠগত সমস্ত রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। এবং ইহা দ্বারা শন্ধীরের গ্রানি নষ্ট হইয়া, বিশেষরূপে কুধার উদ্রেক ক্ষা। এই লবঙ্গাদ্যবঁটা বস্থানে কর্ত্বক প্রণীত হইয়াছে।

জাতিফলাদি বটী।—

জাতিফলং টঙ্গণমভ্রকক, ধূস্ত রবীজং সমভাগচূর্ণম্।
ভাগদ্বং স্যাদহিকেণকসা, গন্ধালিকাপত্তরসেন মদ্দাম্॥
চণপ্রমাণা বটিকা বিধেয়া, যত্নাদ্বিদ্যাদ্ গ্রহণীগদেয়ু।
সামেয়ু রক্তেয়ু সশ্লকেয়ু, পকেষপকেয়ু গুলাময়েয়ু॥
রোপেয়ু দদ্যাদনুপানভেশান্, ময়ুপ্রযুক্তা গ্রহণীগদেয়ু।
পথ্যং সদধ্যোদনমত্তহেয়ং, রসোভ্রমোইয়ং গ্রহণীকবাটঃ॥
জাতীফলাদি বটা।

জায়ফল, সোহাগার থৈ, অজ ও ধৃতুরার বীজ; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক একভাগ এবং অহিফেণ ২ভাগ প্রাহণপূর্বক গন্ধভাদালিয়ার পাতার রদে মর্দ্দনপূর্বক চণক প্রমাণ বট্লীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটী অন্থপান বিবেচনায় দেবন করিলে আম্মাংযুক্ত, রক্তমংযুক্ত, শূলসংযুক্ত পক্ষ অভীদার, প্রহণী প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়। এবং ইহা মধুসহ দেবন করিলে নিশ্চরই গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। এই জাভীফলাদি বটী ঔষধ দেবনপূর্বক দ্র্থিসহ অন্ধ পথ্য করিবে।

গ্রহণীকবাটো-রসঃ।— ১৯ শক্ষারগন্ধাশ্ম রসং জাতীফলন্তথা। বিলৃং খদিরসারঞ্চ জীরকঞ্চ মধুলিকা॥ কশিষ্ডকবীজঞ্চ তথা চোরকপুষ্পাকম্।

এষাং শাণং সমালায় শ্লাক্ষচূর্ণক কারয়েছে ॥

বিল্পুপাত্রক কার্পাসফলং শালিক ভূমিকা।

শালিকমূলং কটুজং তথা কক্ষটপত্রকম্ ॥

সর্বেষাং সরসেনৈব বটিকাং কারয়েছিষক্।
রক্তিকৈকপ্রমাণেন খাদয়েদিবসত্রয়ম্ ॥

দিধিমন্ত ততঃ পেয়ং পলমাত্র প্রমাণতঃ।

অপিযোগশতাক্রান্তাং গ্রহণীমুদ্ধতাং জয়েছ ॥

আমশূলং ক্বরং কাসং খাসকৈব প্রবাহিকাম্।
রক্তন্তাবকরং দ্রবাং কার্যং নৈবাত্র যুক্তিতঃ ॥

কৃষ্ণবার্ত্তাকু মৎস্যঞ্চ দ্পিতক্রক শস্যতে।

ভ্রাত্বা বায়োঃ কৃতিং তত্র তৈলং বারিপ্রদাপয়েছ ॥

अशीकवाष्ट्रिम।

দোহাগার থৈ, গন্ধক, মনংশিলা, পারদ, জাতীফল, বেলশুঠ, খদিরসার, জীরা, স্চীমুখীমূল, আলকুশীরবীজ এবং চোরপুপ্পী; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে অর্ধতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চুর্ন করিবে। তদনন্তর বেলপাতা, কার্পাসফল, শালিঞ্চ (শান্তিশাক), ফীক্টই, শালিঞ্চের মূল, কুরচি ও কাঁচড়ানাম; ইহাদের প্রত্যেকের স্বর্নে উত্তমরূপে মর্দ্দিত করিয়া ১ এক রতি প্রমাণ বঁটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক একটা বঁটী তিন দিবস পর্যান্ত দেবন করিবে; এবং দধির মাত ৮ তোলা অহ্পান করিবে। শত উ্যধেও আরোগ্য হয় নাই, এমত ত্রংসাধ্য গ্রহণীরোগ্র ইহা দ্বারা প্রশমিত হয়; এবং আমশূল, জ্বর, কাস, খাস ও প্রবাহিকা রোগ বিনম্ট হইয়া থাকে। এই উ্যধ্ব সেবন করিয়া কদাচ রক্ত প্রাবকর কার্য্য করিবে না। কলিবেগুন, কৃষ্ণবর্ণ মৎস্তে, দধি ও তক্ত; এই সকল ইহাতে স্পথ্য জানিবে। ইহা সেবন, দ্বারা বায়ুর আধিক্য লক্ষিত হইলে, রোগীকে তৈল ও জল ব্যবহার করিতে দিবে।

পূৰ্ণকলা-বটী।--

রসং গদ্ধং ঘনং লৌহং ধাতকীপুষ্পবিল্কম্।
বিষং কুটজবীজঞ্চ পাঠা জীরক ধান্যকদ্।
রসাঞ্জনং টক্ষণঞ্চ শিলাজভু ফলস্তথা।
অভ্যাংশঞ্চলং আহ্বং প্রত্যেকং ভোলকত্রম্।
ভেক শর্ণী পঞ্চলী বলা কঞ্চদাড়িমম্।
শৃঙ্গাটং কেশরং জন্মু দধিমস্ত জন্মস্তিকা॥

কেশরাজং ভৃত্পরাজং প্রত্যেকং ভোলকদ্বয়ম্।
দ্বিমাষা বটিকা কার্ন্যা তক্রেণ পরিষেবিতা ॥
ইয়ং পূর্ণকলা নাম গ্রহণীগদলাশিনী।
শূলদ্বী দাহশমনী বহ্নিশা জ্বনাশিনী॥
ভ্রমিচ্ছর্দিচেছদকরী সংগ্রহশ্রহণীং জয়েৎ॥
পূর্ণকলাবটা।

পারা, গদ্ধক, মুখা, লোহ, ধাইফুল, বেলশু ঠ বিষ, ইন্দ্রয়ব, আক্নাদি, জীরা, ধনে, রসাঞ্জন, সোহাগার খৈ, শিলাজতু, জাতীফল ও অভ্র; এইসকল দ্রুয়া প্রত্যেকে ২ দুই তোলা; আমলকী, হরীতকী ও বহেড়া প্রত্যেকে ২ তোলা এবং আলকুনী, থানকুনী, চাকুলে, বেড়েলা, গোলুর, ব্যাকুড়, কন্ট-কারী, কাঁচড়াদাম, দাড়িমফল, পানীফল, কেশুরিয়া, জামের ছাল, জয়ন্তী, নাগকেশর ও ভুঙ্গরাজ; এই সকল প্রত্যেকে ২ তোলা; সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিয়া দ্বির মাৎমহ মর্দ্দনপূর্বক ২ মাষা পরিমাণে বঁটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রত্যহ ইহার এক একটি বটীকা তক্র অমুপান্সহ দেবন করিলে গ্রহণী, শূল, দাহ, অগ্রিমান্দ্য, জ্বর, ভ্রম, ছর্দ্দি ও সংগ্রহগ্রহণী রোগ নম্ট হয়।

বজ্রকপাটো-রসঃ।---

পারদং গন্ধককৈব ক্ষহিফেণং সমোচকম্।

ক্রিকটু ত্রিফলকৈব সমমেকত্র কারয়েৎ ॥
ভঙ্গভঙ্গদ্রবৈশ্চৈতদ্ ভাবয়েচ্চ পুনংপুনঃ।
রক্তিত্রয়ং ভতশ্চাস্য মধুনা সহ ভক্ষয়েৎ ॥
ভ্রমাধাং গ্রহণীং হন্তি রসো বক্তকপাটকঃ॥
বক্তবগাটরস।

পারা, গন্ধক, অন্ধিকেন, মোচরস, শুণ্ঠী, পিপপলী, মরিচ, আমলকী, বছেড়া ও হরীতকী; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্ধক উত্তমরূপে চুর্গ করিবে। তদনন্তর দিদ্ধিপত্র ও ভৃত্পরাজের রসে ও বার করিয়া ভাবনা দিয়া রেণিদ্রে শুক্ষকরতঃ, ২ চুই রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটা প্রতিদিন মধুসহ সেবন করিলে, অসাধ্য গ্রহণীরোগও আংরোগ্য হয়।

জাতীফলো-রসঃ।---

পারদাভ্রকসিন্দুরং গন্ধং জাতীফলং সমস্। কুটজস্য ফলকৈব ধূর্ত্তবীজানি টঙ্গণং॥ ব্যোষং মুস্তাভয়াঠেব চূত্রবীতং তথৈব চ। বিলুকং সর্জ্ঞবী জ্ব দাড়িমী ফলবলক লম্॥

এতানি সমভাগানি নিক্ষিপেৎ খল্লমধাতঃ।

বিজয়া হরসেনৈর মর্দ্দ্রেৎ শ্লক্ষ্চ্নিতং।

গুঞ্জাফল প্রমাণাস্ত্র বটীকাং কার্য়েন্দ্রিক্।

এবাং কুট জনুল ত্বক্-কষায়েন প্রয়োজয়েও॥
আনাতিসারং হরতে কুরুতে বহ্নি পনং।

মরুনা বিলুগুঠেন রক্ত গ্রহণিকাং জয়েও॥

শুঠী গানাক্ষোগেন চাতিসারং নিহন্তাসো।
জাতীকলরসোহেব গ্রহণীগদনাননং॥

জাতীফল রম।

পারা, অভ্র, রদিন্দ্র, গন্ধক, জাতীফল, ইন্দ্রবন, ধৃতুরাবীজ, দোহাগার খৈ, ভঠা, পিপুল, মরিচ, মুথা, হয়ীতকী, আঁবের আঁঠির শাস, বেলর্ভ্রঠ, সর্জ্ঞবীজ ও দাড়িম ফলের ছাল; এই সকল দ্রব্য দ্যান পরিমাণে গ্রহণপুর্বাক খল মধ্যে নিক্ষেপ করতঃ সিদ্ধির স্বর্মে মর্দ্দিত করিয়া, ১ এক রবি পরিমাণে বঁটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ কুর্চিমূলের ছালের হাখনং দেবন করিলে আমাতিমার নই হয়; এবং অগ্রির উদ্দীপন হয়; মধু ও বেল শুঠ সহ দেবন করিলে রক্তসংযুক্ত গ্রহণীরোগ এবং শুঠা ও ধনের হাথ অম্ব্রুপানসহ সেবন করিলে অভীসার ও গ্রহণীরোগ বিনষ্ট হয়।

পীযুষবল্লী-রসঃ।—

स्वमलः गमकः वातः लोशः महेन्नग् ।
तमाञ्चनः माकिकः नागरमः पृथक पृथक् ॥
लवनः हन्मनः मूखः भाषा जीतक धान्यक् ।
ममन्नाविविधा लाखः कूहेर जल्मवः वृह्ण् ॥
कावीकः विधिविन् कनकः माह्मिष्ठिनः ।
ममन्ना धावकी कूछः প্রত্যেকः तममिष्णः ॥
ভাবয়ে मर्वस्मकः कमता प्रतिनः भूनः ।
हनका विधि कार्या हागे द्वस्म (भिष्ठा ॥
खनुभानः প্রদাতবাং দয়्यिन् ममः छुटेः ।
इति मर्वामविमातान् शहनीः मर्वनामि ॥
खाममः भाहनः ममाश्रस्तित्विकत्रस्था ।
क्रियमक्षित्वाः ममाश्रस्त

'পায্যবলীরদ।

পারা, অজ, রেপা, লৌহ, টক্লা, রসাঞ্জন ও অর্থমাক্ষিক; এই সকল জব্য প্রত্যেকে॥ অর্ধতোলা এবং লবক্ব, রক্তচন্দন, মুখা, আকণাদি, জীরা, ধনে, বরাহক্রান্তা, আতইচ, লোধ, কুরচিছাল, ইস্তায়ব, দাকটিনি, জারফল, শুগী, বেলশুঠ, ধুতুরাবীজ, দাড়িম কলের ছাল, মঞ্জিষ্ঠা, ধাইফুল ও কুড়; এই সকল জব্য প্রত্যেকে॥ অর্ধতোলা করিয়া গ্রহণপূর্বক ৭ সাতবার কেশু-রিয়ার রসে ভাবনা দিয়া, ছাগত্রমাহ পেষণপূর্বক চণক প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই বড়া প্রতিদিন এক একটী করিয়া সমান গুড়সহিত পোড়াবেল অন্তপান সহযোগে সেবন করিবে। ইহা দারা সর্ব্যবিধ অভিসার ও সর্ব্ব-প্রকার গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। অধিকন্ত ইহা আম-পরিপাচক ও অ্মি-র্দ্ধিকর।

মহণীশার্দ্ লো-রসং।—
রসগন্ধকয়োশ্চাপি কয়মকং সুশোধিতং।
দ্বােঃ কজ্জলিকাং কৃত্বা হাটকং ষাড়শাংশতঃ॥
লবঙ্গং নিয়পত্রক জাতীকোষকলে তথা।
এতেষাং কয়চুর্দেন সুক্রেলাং সহ মেলয়েৎ॥
মুক্তাগৃহেন সংস্থাপ্য পুটপাকেন সাধয়েৎ।
অঞ্জাপকপ্রমাণেন প্রত্যহং ভক্ষয়েয়য়ঃ॥
স্তিকাং গ্রহণীরোগং হয়ত্যেষ সুনিশ্চিতং।
জর্শোল্লা দীপনশৈচব বলপুষ্টিপ্রসাদনঃ॥
কাসশাসাতীসারয়ো বলবীয়কয়ঃ পয়ঃ।
দ্বারং গ্রহণীরোগকামশূলক নাশয়েৎ॥
সংসারলোকরক্ষার্থং পুরা রুদ্দেণ ভাষিতঃ॥
গংসারলোকরক্ষার্থং পুরা রুদ্দেণ ভাষিতঃ॥

পারদ ১ একতোলা, গন্ধক ১ একভোলা, স্বর্ণভস্ম ৮০ চুই আদা, লবক্ষ ২ ভোলা, নিমপাতা ২ তোলা, জায়কল ২ তোলা, জৈত্রী ২ তোলা ও ছোট এলাচি ২তোলা; এইদকল দ্রব্য একত্রে মিশ্রিত করিয়া, একটী ঝিহুকের মধ্যে সংস্থাপনপূর্ব্বক পুটপাকে পাক কুরিয়া লইবে। এবং ৫ পাঁচর্জি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটী প্রত্যাহ দেবন করিলে স্থাতিকা, গ্রহণী, অর্শা; শ্বাদ, কাদ, অতীদার ও আমশুল নিবারিত হয়। এবং ইহা আচি, বল, পুষ্টি ও বীহ্য বর্দ্ধন করিয়া থাকে। সাংশারিক লোক রক্ষার্থে পুর্ব্বকালে মহাদেব কর্ত্বক এই গ্রহণীশান্তুলিরদ উষধ্যী কথিত হইয়াছে।

देवनानाथ-विग ।---

तमक मानः मःगृच् काञ्चिरकम जू माधरत्र ।

চিত্রকদা রদেশপি ত্রিকলারাশ্চ বুদ্ধিমানু॥
রদার্কং গন্ধকং শুদ্ধং ভৃঙ্গরাজরদেন বা।
দ্বাভাগং সংমূচ্ছনং ফুত্বা স্বরদৈঃ শাণসন্মিতিঃ॥
খন্নয়েজু শিলাখণ্ডে ক্রমশো বক্ষামানিকঃ।
শিক্ত প্রীমন্ত্রকার শ্রীরামুদারৈঃ॥
ভৃঙ্গান্তরেশরা ছেশ্চ তথাচেন্দ্রাশনোৎকটিঃ।
সর্বপাভাং বটীং কৃত্বা দদ্যাভাং গ্রহণীগদে॥
সামবাতেইগ্রিমান্দ্যেচ জ্বে প্লীহোদরেষু চ।
বাতপ্লেম্ববিকারেষু তথা শ্লেষ্মগদেষু চ॥
জন্ম ভক্রাদি দেবাঞ্চ কুর্বীত স্বেচ্ছ্য়া বহু।
শ্রীমভা বৈদ্যনাথেন লোকানুগ্রহকারিণা॥
স্বপ্লান্তে ব্রাহ্মণয়েং ভাষিতা লিখিতেন ভু॥

टेवमानाथन ।

অর্ক্তোলা পারা লইরা কাঁজি, রক্তচিতার রম ও ত্রিফলার রমে শোধন করিরা লইবে। এবং । সিকিতোলা শুদ্ধান্ধক লইরা ভৃত্মরাজের রমে মর্দ্দন করিবে। তৎপরে প্র পারা ও গন্ধক একত্র মিশ্রিত করিয়া উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া কজলী করিবে। তদনন্তর উহা নিসিন্দা, মধুকপুষ্পা, আতইম, তুলসী, প্রীত্মন্দর (কুদেন্থনী), ভৃত্মরাজ, কেশুরিয়া, সিদ্ধি ও তেজপত্রের রমে ক্রমান্ধয়ে মৃচ্ছিত করিয়া মর্ধপপ্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ঐ বটী প্রতিদিন এক একটী সেবন করিলে গ্রহণী, আমবাত অগ্রিমান্দ্য, জ্বর, স্লীহা, উদর, বাতস্থে-বিকার ও ককজরোগ সকল বিন্ধী হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া রোগী ইচ্ছান্দারে অয়, তক্রাদি সেবন করিতে পারে। শ্রীমন্ধৈদ্যনাথ কর্ত্বক লোকান্থাহ হেতু ব্রাহ্মণের স্থান্তে এই ঔষধ ক্রথিত হইয়াছে।

অগ্নিকুমারো-রসং।---

শুদ্ধসূতং সমং গদ্ধং ত্রিকটু পটুপঞ্চম্।
দশকং তুল্যতুল্যক বিজয়া সর্বসন্মিতা।
ভাবয়েচিত ভুলোথৈ স্থিগাচ বিজয়াদ্রবিঃ।
দীপ্রায়িনা তু যানৈকং বালুকাযন্ত্রগে পচেৎ॥
সক্রা চাদ্র কদ্রবৈভাবয়িত্বা চ ভক্ষয়েৎ।
মধুনা শাণমানস্ত রসোহায়িকুমারকঃ॥
ভিত্তিকিকার্ড ক্রিয়ালাগ্রন্থাকঃ।

অগ্রিকুশাররস।

শোষিত পারদ, গন্ধক, শুগুী, পিপুল, মরিচ, নৈদ্ধবলবণ, সৌবর্চললবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ ও উন্তিললবণ; এই সকল দ্রবা প্রতাকে এক এক ভাগ এবং সমস্ত দ্রবার সমান পরিমাণে কিছি গ্রুনপূর্বক উত্তনকণে চুর্ব করিয়া লইবে। তদনস্তর চিতা, ভ্রুরাজ ও সিদ্ধির হকে একগার করিয়া ভাবনা দিরা, প্রজ্জালিত অগ্নিসংখোগে বালু ন্যাবন্তে পাতকর ৬ঃ চুর্ব করিয়া আদার রসে মর্কনপূর্বক ॥• অগ্নভোলা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা প্রতিদিব্দ মধুদহ সেবন করিলে আমসংযুক্ত গ্রহণীরোগ বিন্তী হয়; এবং অগ্নির দীপ্তি প্রবিদ্ধিত হইয়া থাকে।

গ্রহণীকপাটো-রসঃ।---

গিরিজাভববীজ কজ্জলী পরিষ্ণাদ্রিদেন শোধিতা।
কুটজন্য তু ভস্মনা পুনর্দিগুণেনাথ বিষ্ণা মিপ্রিতা।
মর্দ্দিরিতা প্রদাতবা মন্য গুঞাচতুষ্টয়ং।
অজাক্ষীরেণ দাতবাং কাথেন কুটজন্য বা॥
যুষং দেয়ং মন্থরন্য বারিভক্তক শীতলং।
দল্লা সহ পুনর্দেরং প্রানাদে রক্তিকাদ্বয়ং॥
বর্দ্ধিদ্দশপর্যান্তং স্থানয়েৎ ক্রমশন্তথা।
নহিন্তি গ্রহণীং দর্বাং বিশেষাৎ কুক্ষিমার্দ্দিবং
গ্রহণীকপাট্রন।

পারদ ও গন্ধক সমভাগে গ্রহণপূর্বক কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তৎপরে উহার দহিত কুটজের ভস্ম মিশ্রিত করিয়া আদার রদের দহিত মর্দ্ধিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৪ রাত পরিমাণে ছাগছ্ম অল্পান দহ অথবা কুরচির কাথের সহিত্ব দেবন করিবে। এবং মন্থরের যুষ দহ অন্ধ ও লীতল জল পথ্য করিবে। এই ঔষধ আহারকালে জলের প্রথমে দ্ধি দহ ২ রতি করিয়া দেবন করিবে এবং ১০ রতি পর্যন্ত বাড়াইয়া পরে হ্রাস করিয়া আনিবে। ইহা দ্বারা সকল প্রকার শ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। বিশেষতঃ ইহা দ্বারা কুক্ষির মৃত্তা জ্বো।

বিজয়া-বটিকা।—

হাটকং রজতং তাত্রং যদত্ত পরিদীয়তে। বিজয়াখ্যা তু সা জ্ঞেয়া সর্বরোগনিস্পনী॥ বিজয়াবটীকা।

ুর্ব্বাক্ত এইণীকপাটরেসে কথিত রস ও গন্ধক সহ স্বর্গ, রৌপ্য ও তামা মঞ্জিত করিয়া লইলে, তাহাকে বিজয়াবটীকা বলা যায়। ইছান্বারা সর্ব-প্রকার রোগ বিদ্যু হয়।

বড়বামুখো-রসঃ।---

শুদ্ধ বৃষ্ঠ নাং গদ্ধং মৃততান্ত্রভিদ্ধং !

সামুদ্র বৃষ্ঠ বিষ্ঠাং সন্তির্ভা সন্তর্গার বিষ্ঠাং পলাশবরুণ সাচ ।
প্রত্যেকং সূতত্লাং স্যাদম্যোগেন মর্দ্রহে ।
হাতত তীদ্রেবিশ্বারো মর্দ্রহির পুটেলঘু ।
মান্মাত্র প্রদাতব্যা রসোহহং বড়বামুখঃ ॥
গ্রহণীং বিবিধাং হন্তি সংগ্রহণ ।
বড়বামুখরদ।

পারদ, গন্ধক, তাত্র, অন্ত্র, টঙ্গণ, করকচলবণ, যবক্ষার, দর্জিকক্ষার, দৈশ্বব-লবণ, শুণ্ঠী, অপামার্গের ক্ষার, পলাশক্ষার ও বরুণছালের ক্ষার; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে প্রহণপূর্বক কাঁজি ও হাতিশুঁড়ের রদে মর্দ্দনপূর্বক অগ্নিসংযোগে পুটপাকে পাক করিয়া লইবে। এবং ২ মাষা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা প্রতিদিন এক একটা সেবন করিলে বিবিধপ্রকার প্রহণী, সংগ্রহগ্রহণী ও জর আরোগ্য হয়।

शहरीक भर्द्रा हिली।-

কপর্দত্বলাং রসকন্ত গন্ধকং,
লৌহং মৃতং টঙ্গণকঞ্চ তুলাং।
জয়ারসেইনকদিনং বিমর্দ্ধা,
চূর্ণেন সংবেষ্টা পুটেচ্চ ভাত্তে।
দদীত ভৎ পোট্রলিকাভিধানং,
বাতপ্রধানাং গ্রহণীং নিরভে।
গ্রহণীকপর্দপোট্রলী।

কড়িভন্ম, পারদ, গদ্ধক, লোহ ও সোহাগা। এই সকল দ্রব্য সমান পরি-মাণে গ্রহণপূর্বক সিদ্ধির রসে মর্দন করিয়া, একটা ভাগুমধ্যে পুরিবে, তৎপরে সেই ভাগুটী চূর্ণ দ্বারা লেপনকরতঃ পুটপাকে পাক করিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে বাতপ্রধান গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়।

इश्मरभाद्वेनी।-

দগ্ধকপৰ্দ্দকান্ পিকৃ। ত্যুষণং টঙ্গণং বিষং। গন্ধকং শুদ্ধস্তক তুলাং জন্ধীরজৈত্র বৈঃ॥ মৰ্দ্দয়েদ্ ভক্ষয়েশ্বাষং মরিচার্ত্রং লিছেদমু। নিক্ষরি গ্রহণীরোগং পথাং তক্ত্রৌদনং হিডং॥

रःम(भाष्ट्रेनी।

কড়িভন্ম, শুগী, পিপুল, মরিচ, টঙ্গণ, বিষ্ণু, গন্ধক ও পারদ; এই সকল জব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক জন্বীরের রসে মর্দ্দনকরতঃ, পুটপাকদারা পাক করিয়া, ১ মাষা মাত্রায় বটিকা গুদ্ধত করিবে। এই উষধ মরিচচ্ ও আদার রস সহ সেবন করিলে সর্ববিধ গ্রহণীরোগ বিন্দী হয়। এই উষধ সেবনকারি-ব্যক্তিকে তক্র সহ অন্ন পথ্য দিবে।

শয়ুকাদি বটী। -

দগ্ধশমুকসিস্কৃত্থঃ তুল্যং ক্ষোড়েণ মৰ্দ্দরে । নিকৈকেন নিহন্ত্রণশু বাতসংগ্রহণীগদং॥ শস্কাদিবটী।

াাযুকভন্ম এবং দৈশ্ববলবণ সমানপরিমাণে গ্রন্থপূর্বক মধু সহ মর্দিভ ু করিয়া ॥• অর্দ্ধভোলা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে বাভজগ্রহণী-রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

অহণীকবাটঃ।-

রসাভাগন্ধান্ ক্রমর্জিযুক্তান্,
জঞ্চারসেন ত্রিদিনং বিমর্দ্য।
জয়ন্তিকা ভঙ্গ কলম্বীনীরৈদিনং যবক্ষারং সটঙ্গাঞ্চ ॥
কিপ্তবা ভু গন্ধস্য চ ভুল্যভাগং,
বাতারিতৈলেন যুতং পুটিত্বা।
গুড় কিল-শালালিকা-রসেন,
জয়ারসেনাপি বিমর্দ্য শান্থ॥
মরিচসার্জং মধুনা সমেতং,
দিনীত পথাং দ্বিভক্তকঞ্চা।
গ্রহণীক্রাট।

পার্নি ১ একভাগ, অভ্র ২ ভাগ এবং গদ্ধক ৩ তিনভাগ গ্রহণপূর্বক কাকজন্তবার রুগে ৩ তিন দিবস এবং জঃস্তী, ভ্রন্থাজ ও কলমীরসে ১ একদিন
মর্দ্দন করিয়া, গদ্ধকের সমান যবক্ষার ও সোহাগা ভাছাতে ক্ষেপণকরতঃ,
এর ওতৈলসহ মিশ্রিত করিয়া, পুটপাক দ্বারা পাক করিয়া লইবে। ভদনস্তর
গুলঞ্চ, সিমুল ও সিদ্ধি; এই সমস্তের রুসে মর্দ্ধিত করিয়া ॥• অর্ধভোলা
মাত্রান্ন বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটা প্রস্তুত্ব মরিচ চূর্ণ্ ও মধ্
সহ সেবন করিলে সর্বপ্রকার গ্রহণীরোগ বিনস্ত হয়। এই ঔষধ সেবনকারিব্যক্তিকে ভক্ষ ও দ্বি সহ অন্ধ পথা দিবে।

আহণীবজ্ঞকবাটঃ।-

সূতং গন্ধং যবকারং জয়ন্তাগ্রাল্রটঙ্গণং!
জয়ন্তী ভূঙ্গ জয়ীরদ্রবিঃ পিফুা দিনত্রহং ॥
যামার্ক্রং গোলকং স্বেদাং মন্দেন পাবকেন চ।
শীতে জয়া রসসমং শালালী বিজয়াদ্রবিঃ ॥
ভাবয়েৎ সপ্তথা বক্তকবাটঃ স্যাদ্রসোভমঃ।
মাষদ্বয়ং ত্রয়ং বাসো মরুনা গ্রহনীং জয়েৎ॥
গ্রহণীংক্তকবাট।

পারা, গদ্ধক, ষবক্ষার, জয়স্তীপত্র, অল্ল ও দোহাগা; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রহণপূর্ব্যক ৩ তিনিবেস ক্রমান্তরে জয়ন্তী, ভূক্ষরাজ ও জন্মীরের রসে মর্দ্দনপূর্ব্যক পিণ্ডাকৃতি করিয়া অর্দ্ধপ্রহর পর্যান্ত মৃত্র অগ্নিদার। স্বেদ প্রদান করিবে। তৎপরে শীতল হইলে, পারদের সমান সিদ্ধিচ্ব তাহাতে মিশ্রিত করিয়া সিমূল ও সিদ্ধির রসে ৭ সাত্রবার ভাবনা দিয়া ২ মাষা বা ৩ মাষা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক একটী বটী প্রতি দিবস মধু সহ সেবন করিলে, সকলপ্রকার গ্রহণীরোগ আরোগ্য হয়।

রসাত্র-বটা। -

ভদ্ধস্তস্য কর্বৈকং কর্বিকং গদ্ধক্যা চ।
দ্বরোধ কজ্জলিকাং কৃত্বা তুলাং বোম প্রদাপয়েৎ ॥
কেশরাজস্য ভ্রুস্য নিপ্ত গ্রান্টিক্রক্যা চ।
গ্রীয়াসুন্দরমপ্তৃকী জয়ন্তীন্দ্রাশনস্য চ॥
শ্বেতাপরাজিতায়ান্ট স্বরুগং পর্ণসম্ভবং।
রসত্লাং প্রদাতব্যং চুর্ণঞ্চ মরিচোৎন্তুবং॥
দেয়ং রসার্দ্ধভাগেন চুর্ণং টঙ্গণসম্ভবং।
সংমদ্য বটিকাং কুর্যাৎ কলায়সদৃশীং বুগধ॥
ছন্তি কাসং ক্ষয়ং শ্বাসং বাতশ্লেষ্মভবং কৃত্বং।
জ্বের চৈবাতিসারে চ সিদ্ধ এব প্রয়োগরাট্॥
চাতুর্থকে জ্বের শ্বেপ্তো গ্রহণ্যাভঙ্কনাশনধ।
দিধি চাবশ্বকং দেয়ং প্রাহ্ নাগার্চ্জনো মুনিঃ॥

পারা ২ ভোলা, গন্ধক ২ ভোলা এবং অজ ৪ চারিভোলা, মরিচচুর্ণ ২ ভোলা এবং দোহাগার খৈ ২ ভোলা ; এই সমস্ত জব্যগুলি গ্রহণপূর্বক একত্র শিজিত করিয়া উত্তমরূপে পেবণ করিয়া লইবে। তদ্দশুর ক্রমান্তরে ২ভোলা কেশুরিয়ার রস, ২ ভোলা ভীমরাজের রস, ২ ভোলা নিসিন্দাপাভার রস, ২ ভোলা রক্তিভার মূলের রস, ২ ভোলা গুমার রস, ২ ভোলা থানকুনীর রস, ২ ভোলা জহন্তীপত্রের রস, ২ ভোলা সিদ্ধিপাভার রস, ২ ভোলা খেত অপরাজিভার রস এবং ২ ভোলা পানের রস দ্বারা উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া কলায় প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই বটী প্রভিদিন এক একটী করিয়া সেবন করিলে কাস, ক্ষয়, শ্বাস, বাভলেশ্বরোগ, জর, অভীসার, চাতুর্থক জর এবং এহণীরোগ বিনক্ত হয়। এই উষধ সেবন করাইয়া রোগীকে দ্বি ও দাইলের যুব পথা দিবে। পুরাকালে নাগার্জ্জ্ন মূনি এই রসাজ-বটী ঔষধ্টী প্রকাশ করিয়াছিলেন।

নৃপবল্লভঃ।-

জাতীফল লবঙ্কাব্দ ত্বগেলা টঙ্গরামট্র । জীরকং তেজপত্রক ম্মানী বিশ্ববৈদ্ধবাঃ ॥ লৌহমত্রং রসোগন্ধ স্তাত্রং প্রত্যেকশঃ পলং। মরিচং দ্বিপলং দত্তা ছাগীকীরেণ পেষয়েৎ॥ ধাত্রীরদেন বা পেষাং বটিক: কুরু যতুতঃ। শ্রীমকাহননাথেন বিচিত্তা পরিনির্শ্বিতঃ॥ সূর্যাবভেঙ্গদা চায়ং রদোহি নূপবল্লভঃ। অষ্টাদশ বটীং খাদেৎ পবিত্তঃ সূর্যাদর্শকঃ॥ হত্তি মন্দানলং সর্ব্ব মামদোষং বিস্তৃচিকাং। প্লীহন্ডল্যোদরাপ্তীলা যক্ত পাণ্ডুত্র কামলাং॥ সর্বাবেব গদানু হত্তি চণ্ডাংশুরিব পাপহা। वनवर्गकरेता छना आग्रुरमा वैर्गिवर्ह्मनः॥ পরং বাজীকুরঃ শ্রেষ্ঠঃ পটুলো মন্ত্রদিদ্ধিদঃ। অরোগী দীর্গজীবী স্যাদ্রোগী রোগাদ্বিমুগতে॥ রস্দ্যাদ্য প্রসাদেন বুদ্ধিমান জায়তে নরঃ। বদরান্থি শ্রমাণেন বটিকাং কারয়েন্দ্রিক ॥ ইপ্রমন্ত।

জাতীকল, লবল, মুথা, দাক্ষচিনি, এলাচি, সোহাগার খৈ, হিঙ, জীরা, তেজপুণতা, যমানী, শুঠ, দৈদ্ধবলবণ, লৌছ, অজ, রস, গদ্ধক এবং ডাত্র; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৮ ডোলা এবং মরিচচুর্ণ ১৬ ডোলা; সমস্ত দ্রব্যগুলি গ্রহণপূর্বক ছাগাইন্ধ অথবা আমলকীর রসে পেষণ করিয়া কুলপ্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। জীমান্ গ্রহননাথ কর্ত্বক বছচিস্তায় এই উষধ্বী আবিষ্কৃত ছইয়াছে। এই ন্সপ্রায়ক্ষেক্ষ স্বার্হীয়ে লাইন ক্ষেক্ষাংক্ষ্ণানা প্রশালিক্ষা विषे कित्रशा, हेशत २४ कि विषे एंग्वन कितिए एक शिवि अदः स्वामम्भ का कि कित्र । हेशबादा मन्गाधि, मर्काविश्व आमरामार, विस्कृते (करानदा, अलाउँहा), भीश, अला, उपत, अछीला, यक्, शाधु, कामला अवः अञ्चान्न मकलश्रकात वाश्वि, स्वा कर्कृत शाश्वि विनास्भत जात्र, विनाम श्रीष्ठ हत्र । अवः हेश वल अवंक्षनक, कारा, आग्रया, वीदावर्षक, (श्रष्ठतमात्रन, श्रष्ट्रेष अवः मञ्जिषिक्षनक; अमन कि हेशत श्रमार करतारी पीर्वक्षीयी हत्र, (तागी निक्त ताग हरेरा मुक्क हत्र अवः निर्द्धाध वाक्षिक अञीव वृद्धिमान हरेना थारक।

রহন্পবলভঃ।—
রদান্ধকলোহালং নাগং চিত্রং ত্রির্থ সমং।
টঙ্গং জাতীফলং হিন্দু তুগোলাকা লবঙ্ককং।
ভেজপত্রমজাজীচ যমানী বিশ্বসৈদ্ধবং।
প্রত্যেকং তোলকং চৃণ্থ মরিচ তারয়োদ্রপা॥
নিরুত্বকং মৃতং হেম তথা দ্বানশরক্তিকং।
আদ্রুক্তি প্রদাতবাে মাষদ্ধরপ্রমাণভঃ।
ভক্ষেৎে প্রাতরুত্বায় পথাং ভক্ষেমথেপিসতং॥
আমিনিদ্যমজীপি তুর্ণামং এছণীং জয়েও।
আমাজীপি-প্রশমনঃ সর্বরাগা-নিস্থনঃ॥
নাশয়েত্রদরান্ রোগান্ বিফুচক্রমিবাসুরান্॥

इरम् भरहा छ ।

পারা, গদ্ধক, লৌহ, অভ্র, দীদক, রক্তচিতার মূল, তেউড়ী, দোহাগার থৈ, জাতীফল, হিন্ধু, দাকচিনি, এলাচি, মুথা, লবন্ধ, তেজপাতা, কুঞ্জীরা, যমানী, শুঠী, দৈন্ধব, মরিচ ও রৌপা; এইদকল দ্রব্য শুভোকে > একভোলা এবং স্থাণভস্ম > ছানেশরভি; দমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রণপূর্বক আদার রদে ও আমলকীর রদে মর্দ্ধন করিয়া ২ মাষা পরিমাণে ২টীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী ২টী প্রতিদিন প্রাতঃকালে দেখন করিলে ভ্রমান্দা, অজীর্ণ, হুর্ণাম (অর্শ্য:), গ্রহণী, আমাজীর্ণ এবং অক্সান্ত সকল ব্যাধি, বিক্ষুর চক্রদার। অস্থ্র বিনাশের স্থায় বিনক্ট হয়।

রাজবল্লভঃ। —
জাতীকল লবলাক ত্বগোলা টলরামঠং।
জীরকং তেজপত্রক বযানী বিশ্বলৈশ্ববং॥
লোহযত্রং সতাত্রক রসগন্ধকমেবচ।

ষাত্রীরদে বটীং কুর্যাৎ দ্বিগুঞ্জাকলমামতঃ।
হিন্তি শূলং তথা গুলা মামবাতং সুদারণে ।
কচ্ছালং পার্যশূলক চক্ষুঃশূলং হলীমকং।
শিরঃশূলং কটীশূল মানাহমন্তশূলকং ॥
ক্রিমিকুষ্ঠানি দন্দ্রণি বাতরক্তং ভগদরং।
উপদংশ মতীসারং গ্রহণ্যশঃ প্রবাহিকাং ॥
নূপবল্লভরাজোইয়ং মহেশেম প্রকাশিতঃ॥
রাজবলত।

যাতিকল, লবন্ধ, মুখা, দাকচিনি, এলাচি, সোহাগা, হিঙ্, জীরা, তেজ-পাতা, যমানী, শুণ্ঠী, সৈদ্ধবলবণ, লৌহ, অজ, তাজ, রন, গদ্ধক, মরিচ, তেউড়ীমূল ও রূপা। এই সকল জবা প্রত্যেকে ১৬ যোল তোলা পরিমাণে প্রহণপূর্বক আফলকীর রুদে মর্দ্দনকরতঃ, ৩ তিনরতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রভাই ইহার এক একটী বটী দেবন করিলে শূল, গুলা, স্থাকণ আমবাত, হুদয়শূল, পার্থশূল, চহ্মঃশূল, হলীমক, শিরঃশূল, কটীশূল, জানাহ, অইবিধ শূলরোগ, কুণ্ঠ, ক্রিমি, দক্র, বাতরক্তা, ভগন্দর, উপদংশ্দ অভীসার, গ্রহণী, অর্শঃ ও প্রবাহিকা রোগ বিন্দ্র হয়। এই রাজবল্পভ বটী স্থাং মহাদেব কর্ত্বক প্রকাশিত হইয়াছে।

মহারাজ-নৃপবল্লভঃ।—

মাকিকং লৌহমন্রক বঙ্গং রঞ্জভহাটকং।

গ্রান্থি-যমানিকা-চোচং তাত্রং নাগরটঙ্গণং।

গৈন্ধবং বালকং মুন্তং ধন্যাকং গন্ধকং রসং।

শৃঙ্গী কপূরককৈব প্রত্যেকং মাধকোমিতং।

মাধরয়ং রামঠং স্যান্মরিচানাং চতুষ্টয়ং।
জাতীকোষং লবঙ্গঞ্চ পত্রক ভোলকোনিতং।

নাভিশঙ্খং বিভঙ্গক শাণং মাধরয়ং বিষং।
কর্ষষ্টকং সত্তিমাষং স্থান্মলানাং ততঃ কিপেৎ।

বিভৃং কর্ষদ্বয়ং সর্বং ছাগীকীরেণ পেষ্যেই।

চতুক্ত জ্লামিতং খাদেই সানাহগ্রহণীং জ্যেই।

শাস্ত্রনা নির্দিতো স্থেম পূর্ববদ্ গুণকারকঃ।

নামা মহারাজপূর্বো নূপবল্লভ উচ্যতে।

মহারাজ-স্থাবলভ। অর্থনান্দিক, লৌহ, অজ, টঙ্গণ, রৌপ্যা, স্বর্ণ, পিপুল্যুল, যুমানী, দাক্চিনি, ভাত্র, শুঠী, সোহাগার থৈ, সৈষবলবণ, বালা, মুখা, ধনিরা, গাঁহক, পারন, কাঁকড়াগুলী ও কপুর; এই সকল দ্রন্য প্রভাবেক ২ এক ২ এক মাধা; হিন্তু ২ মাধা, মরিচ ৪ চারিমাধা, জাতীফল ২ তোলা, জৈতী ২ তোলা, লবল ২ ভোলা, তেজপত্র ২ তোলা, শাখানাভি॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিষ ২ মাধা, ছোটএলাচি ২২ বারভোলা ৬ ছয়আনা এবং বিট্লবণ ৪ চারিভোলা; এই সকল দ্রব্য গ্রহণপূর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া ছাগাত্বধানহ বাটিয়া ৪ চারিরভি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতাহ ইহার একটী করিয়া বটীকা দেবন করিলে, সত্ত্র আনাহসংযুক্ত গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। এই সর্ব্বোৎকৃষ্ট গুণকারক ঔষধ "মহারাজ ন্থাবজ্বত" রস পূর্বকালে স্বয়ং মহাদেব কর্ত্বক নির্মিত ও কথিত হইয়াছে।

মহারাজ নৃপতিবল্লভো রদঃ।—
কর্ষত্রহং মৃতং কান্তং মৃতাভ্রং মৃততাত্রকং।
মৃতং তারং মান্দিকঞ্চ কর্যং কর্যং প্রদাপরেছ॥
মৃতং স্বর্ণং মৃতং তারং টঙ্গণং শৃঙ্গদেব চ।
বিদরং দন্তীমূলঞ্চ মরিচং তেজপত্রকং॥
যমানী বালকং মুন্তং শুঠকঞ্চ সধান্যকং।
দিন্ধুন্তবং সকপূরং বিভূঙ্গং চিত্রকং বিষং॥
পারদং গন্ধককৈব তোলমানং প্রদাপরেছ।
ভোলদ্বয়ং ত্রিরচ্চুর্ণং লবঙ্গং তচ্চতুপ্তর্ণং।
ভাতীকোষকলকৈব বরাঙ্গকন্ত তহসমং।
সর্বেরমান্ধভাগন্ত বিভূকং তত্র মিশ্ররেছ॥
সর্বেরমান্ধভাগন্ত বিভূকং তত্র মিশ্ররেছ॥
সর্বেরমান্ধভাগন্ত বিভূকং তত্র মিশ্ররেছ॥
মাত্রশুঙ্গরিচং পশ্চাদ্ ভাবরেছ সপ্তর্বারকং।
ভারাশুন্তাং বটীং কৃত্বা ভক্ষরেদ্ধন্রক্তিকাং॥
মাত্রশুন্তরীং কৃত্বা ভক্ষরেদ্ধন্রক্তিকাং॥

মন্দানলং সংগ্রহণীং প্রবন্ধা মামানুবন্ধীং ক্রিমিপাণ্ড রোগং।
ছর্দ্ধান্ত্রিশিন্তং হলয়াময়ঞ্চ, গুলোলরপ্লীহভগন্দরঞ্চ ॥
আশাংদি বৈ পিভক্রতানশেষান্, সোমং সশ্লাইকমেব হন্তি।
সাজীণবিইজবিদর্পলাহং, বিলম্বিকাঞ্চাপ্যলসং প্রমেহং ॥
কুষ্ঠান্যশেষাণি চ কাস-শোষং, হন্যাৎ সশোধং জ্বরমূত্র্কচছুং।
মতান্ত্রে সর্বতোভত্রো নাম, মহেশ্বেইণব বিভাষিতোহয়ং॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণে গ্রন্থে গ্রহণাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

মহারাজ-হুপতিবলভ।

কান্তলোহ ৬ ছনতোলা, অভ ২ হুইতোলা, তাত্র ২ হুইতোলা, মুক্তা ২ प्रदेखाला, खर्गमाकिक २ प्रदेखाला, खर्ग > खाला, (दोशा > खाला, मार्श-গার খৈ ১ তোলা, কাঁকড়াশৃঙ্গী ১ তোলা, গজপিপুল ১ ডোলা, দন্তীমূল ১ ভোলা, মরিচ ১ ভোলা, তেজপাতা ১ ভোলা, যমানী ১ ভোলা, বালা ১ তোলা, 'মুখ। ১ তোলা, শুগী ১ তোলা, ধনিয়া ১ তোলা, দৈৰবলবণ ১ ভোলা, কপুর ১ ভোলা, বিড়ঙ্ক ১ ভোলা, রক্তচিডারমূল ১ ভোলা, বিষ ১ ভোলা, পারদ > ভোলা, গন্ধক > ভোলা, ভেউড়ীচূর্গ ই ছইভোলা, লবঙ্গ ৪ চারিতোলা, জাতীফল ৫ চারিতোলা, জৈত্রী ৪ চারিতোলা ও দাকচিনি ৪ চারিতোলা, এই সমস্ত চূর্ণের অর্দ্ধেক বিটুলবণ এবং সমস্ত দ্রব্যের সমান পরিমাণে ছোটএলাটি; এই সকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া পেষণপুর্বক ৭ সাতবার ছাগত্রমে এবং ৭ সাতবার ছোলঙ্গলেবুর রুসে ভাবনা দিয়া ছায়ায় শুষ্করতঃ, ১০ দশ রতি প্রমাণ বঢ়ীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটাকা দেবন করিলে মন্দাগ্নি, আমাত্রবন্ধ গ্রহণীরোগ, ক্রিমি-রোগ, পাণ্ডুরোগ, ছর্দ্দি, তম্পত্তি, ছন্দ্রোগ, দোমরোগ, শূলরোগ, বিষ্টস্ত, विस्वाकी है, विमर्श, माह, विलिषिका, ज्ञालमक, श्राप्तह, मर्व्यश्रकांत्र कूर्छ, काम, শোষ, শোথযুক্ত ত্বর এবং মূত্রকৃচ্ছু প্রভৃতি বিবিধপ্রকার বোগ বিনষ্ট হয়। এই "মহারাজ নুপতিবলভ' রদকে মভান্তরে 'সর্বতোভদ্র' বলির। থাকে। স্ববং মহেগুর কর্ত্তক এই ঔষধ প্রকাশিত হইরাছে।

> देखि ध्राप्तां विश्व विषय अहती-अधिकांत्र ममाथ । देखि वर्ष-अधारा ममाथ ।

म श्रुरमा ३ श्रामः

তাথার্শোহবিকারঃ।

ত্ব্রণায়াং সাধনোপায়শ্চভূর্যা পরিকীর্ত্তিতঃ। ভেষজক্ষার শস্ত্রাগ্রিসাধ্যত্বাদাদ্য উচ্যতে॥
অভঃপর অশ্বেরোগের চিকিৎদা কথিত হইভেছে।

ত্তমধ্য ক্ষারকর্মা, অস্ত্রপ্রয়োগ এবং অগ্নিকর্মা। এই চারিপ্রকারে অর্শো-রোগের চিকিৎসা বলা যাইতে পারে। উহাদের মধ্যে স্থখসাধ্য ছেতু ঔষধ-চিকিৎসা প্রথমে কথিত হইতেছে।

> যদ্বায়োরনুলোমাায় যদগ্রিবলয়দ্ধয়ে। অনুপানৌষধদ্রব্যং তৎসর্বং নিত্যমর্শসৈঃ॥

যে সকল ঔষধ, অন্পান ও আহারীয় দ্রব্য সেবন করিলে, বায়ু প্রশামিত হইয়া অধ্যোদিকে গমন করে; এবং অগ্নি ও বল বর্দ্ধিত হয়; অর্শোরোগীর ভাহাই নিত্য ব্যবহার করা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য।

শুকার্শনাং প্রলেপাদিক্রিয়া তীক্ষা বিধীয়তে। আবিণাং রক্তমালোক্য ক্রিয়া কার্য্যাঅপৈতিকী॥ শুক্ক আর্দ্ধ প্রশমনার্থে প্রলেপাদি তীক্ষ্ণক্রিয়া করিবে। এবং যে আর্শো-রোগে বক্তস্রাব হয়, তাহাতে রক্তপিত্রোগের চিকিৎসা করিবে।

> স্বুক্ কীরং রজনীযুক্তং লেপাদ্দুর্মনাশনম্। কোষাতকীরজোঘর্ষান্নিপাতন্তি ওদোদ্ভবাঃ॥

মনসাসিজের আঠার সহিত কিয়ৎপরিমাণে হরিজাচূর্ণ মিশ্রিত করিয়া, আর্শের বলির মুখে বিন্দুমাত্র প্রদান করিলে; অথবা,ঘোষাফলের চূর্ণ বলিতে ছর্মণ করিলে উহা নিশ্চয় পতিত হয়।

> অর্কনীরং সুহীক্ষীরং তিক্ততুষ্যাশ্চ পলবাঃ। করঞ্জোবস্তমূত্রক লেপনং শ্রেষ্ঠমর্শসাম্॥

আকন্দের আঠা, মনসাসিজের আঠা, তিত্লাউরের পাতা এবং ডছর করঞ্জের ছাল সমানভাগে এছণপূর্বক, ওদ্বারা তর্শের বলির উপরি ওলেপ

অর্শোল্পী চ গুদাবর্তিও ড্লোষাফলোত্তবা ।

পুরাত্তনগুড় জলে গুলিয়া ঘোষাফলের চূণ প্রদানপূর্বক পাককরতঃ বর্তি (বাতি) প্রস্তুত করিবে। ঐ বর্তি গুছে প্রবেশ করাইলে অর্শের বলি পতিত হয়।

তিশভল্লাতকং পথ্যা-গুড়ে চেতি সমাংশকম্। তুর্ণামশ্বাসকাসম্বং প্লীহপাণ্ডু জ্বরাপহম্॥ তিল, ভেলার আঠি, হ্রীতকী ও পুরাতন গুড় সমভাগে বাটিয়া সেবদ করিলে অর্ণঃ, শ্বাস, কাস, প্লীহা, পাণ্ডু ও জ্বর বিনম্ভ হয়।

অঙ্গুরীগঠনম্।—

তৃথচুনং ভবেভোলং জয়ৢৢরদ্রবসংযুতম্।
দ্রনপ্রমাণমুদ্দিটং তন্মাদেউগুণং হি তম্॥
লৌহপাতে ক্ষিপেভতু ভাবয়েচ্চ বিশেষতঃ।
আনেন গঠিতাঙ্কুর্যাচার্শোলং মহতুলুনম্॥
ধৌতং জলকরেভাবদ্ যাবদর্শঃ ক্ষয়োভবেৎ।
সন্দেহো নাত্র কর্তব্যঃ সন্দ্রিক্তকং ভিষ্থুরৈঃ॥
অঙ্গুরীগঠনে কালে তাত্রং ন প্রবতে যদি।
তদা পাদতলং চর্ম ক্ষিপেভত্র বিচক্ষণঃ॥

অঙ্গুরীগঠন।

একভোলা তুঁতেচ্ণ ৮ গুণ জলসহযোগে একটা লৌহপাতে রাখিয়া স্থ্যাতপে ভাবনা দিয়া, অপ্প গাঢ় থাকিতে ভদ্ধারা অসুরী গঠন করিবে। ভংশরে ঐ অসুরী অর্শের বাহু বলিতে লাগাইয়া দিবে। এবং অর্শাকুর ক্ষয় না হওয়া পর্যান্ত ভত্নপরি জলসেচন করিতে থাকিবে। ইছা দ্বারা নিশ্চয়ই অর্শঃ বিনক্ট খর। ব্যাপি অসুরি গঠনকালে তুঁতের জলে ভাত্র প্লাবিত না হয়, তবে তাহাতে কিঞ্চিং মাত্রায় পাদতলের চর্মা প্রদান করিবে।

কুটজাদ্যং স্বতম্।--

কুটজফলবল্কলকেশর নীলোৎপল লোগ্র ধাতকীকলৈকঃ। সিদ্ধং য়তং বিধেয়ং শূলে রক্তার্শসাং ভিষজা॥ কুটজান্য য়ত।

কুরচিছাল, ইন্দ্রয়ব, নাগকেশর, নীলোৎপল, লোধ ও ধাইফুল; এই সকল কল্কদ্রব্য সমানভাগে কুটিত /১ একদের, গব্যস্থত /৪ চারিসের এবং জল /৪ চারিসের। এই স্বত পাকপূর্বক সেবন করিলে শূল ও রক্তার্শঃ নিবা-

ষট্পলকং মৃতম্।— সক্ষারৈঃ পঞ্চকোলৈশ্চ পলিকৈন্ত্রিগুণোদকৈঃ। সমং ক্ষীরং মৃতপ্রস্থ জুরার্শঃ প্লীহকাসমুৎ॥

যট্পলক মৃত।

গবান্বত /৪ চারিসের; যবক্ষার, পিপ্পালী, পিপ্পালীমূল, চই, চিতা ও শুঠা; এই সকল কল্ক দ্রব্য কুটিত প্রতেকে ৮ তোলা, জল। ২ বারসের এবং দুয়া /৪ চারিসের। এই দ্বত যথানিয়মে পাক করিয়া সেবন করিলে জ্বর, আর্শ:, প্রীহা ও কাস নম্ট হয়।

ব্যোষাদ্যং মৃত্যু ।—
ব্যোষগর্ভং পলাশদ্য ভিত্তণে ভন্মবারিণি।
সাধিতং পিবতঃ সর্পিঃ পতন্ত্যেশাংস্যাসংশ্রুষ্ ।
ব্যোষাদ্য মৃত।

গব্যন্থত /৪ চারিসের ; কল্কার্থ শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ সমানভাগে চূর্বিত /১ একদের এবং পলাশরক্ষের ছাল অন্তর্ধু মে দক্ষ করিয়া যথাবিধি নিয়মা-স্থারে প্রস্তুত ক্ষারজল।২ বারসের। এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে অংশরে বলি নিশ্চয়ই পতিত হয়।

সমশর্কর-চূর্ণম্। —
শুপ্তী কণা মরিচ নাগদল অংগলং,
চূর্ণীকতং ক্রমবিবদ্ধিতমূদ্ধ্যন্ত্যাৎ।
খাদেদিদং সম্পিতং গুদ্জামিমান্দ্যে,
কাসাক্ষচি শ্বসন্কণ্ঠহ্নদাময়েয়ু॥
সমশর্কর চূর্ণ।

শুগীচূর্ণ ৭ ভাগ, পিপুলচ্ণ ৬ ভাগ, মরিচচ্ণ ৫ ভাগ, মাগকেশর চ্ণ ৪ ভাগ, তেজপত্র ৩ ভাগ, দাকচিনি ২ ভাগ এবং এলাচি ১ ভাগ; আর ইহা-দের সর্ব্ব সমষ্টির সমান মাত্রায় শর্করা লইয়া উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ মিশ্রিড করিয়া লইবে। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে অর্শঃ, অ্রিমান্দা কাস, অকচি, খাস, কঠরোগ ও ছাদ্রোগ বিনষ্ট হয়।

প্রাণদাগুড়িকা। -

ত্তিপলং শৃঙ্কবেরদ্য চতুর্থং মরিচদ্য চ। পিপ্পল্যাঃ কুড়বার্দ্ধক চব্যাশ্চ পল্মেব চ॥ ডালীশপত্তদ্য পলং পলার্দ্ধং কেশরদ্য চ। ত্ত্বপলে পিপ্পলীমূলাদর্দ্ধকর্মক পত্তকাৎ॥ গুড়াৎপলানি ত্রিংশচ্চ চূর্ণমেকত্র কারয়েৎ। অক্সপ্রমাণা গুড়িকাপ্রাণদৈতি চ সা স্মৃতা। পূৰ্বং ভক্ষেত্ৰ পশ্চাচ ভোজনস্য ষথাবলম্ ॥ মন্যং মাংসরসং যুষং ক্ষীরং তোয়ং পিবেত্তথা। इनामिन्दिम मर्वानि महजामहजानाि ॥ বাতপিতকফোখানি সন্নিপাতোদ্ধেবানি চ। পানভাষে মূত্রকচেছ বাভরোগে গলগ্রহে ॥ विषमज्जदत मन्नादशो शाखुदतारम उरेशवह। ক্রিমি-হন্দে।গিনাকৈব গুল্বা-শ্লার্ক্তিনাং তথা ॥ यामकाम পরীভাপে टेव्योमग्रामप्रटालया। শুর্থাঃ স্থানে ২ভয়াদেয়া বিড্তাহে পিতপায়ুজে॥ প্রাণদেরং দিতাং দত্ব চূর্ণমানাচ্চতুর্ত্ত গা। অমুপিতাগ্নিমন্দানে প্রযোজ্যা গুদজাতুরে॥ অনুপানং প্রযোক্তবাং ব্যাধে শ্লেক্সভবে পলম্। পলদ্বয়ন্ত্র নিলজে পিততে তু পলত্রম্। প্রাণদা-শুডিকা।

শুঠী ০ পল, মরিচ ৪ পল, পিপুল ১৬ তোলা, চই ১ পল, তালীশপত্ত ১ পল, নাগকেশর ৪ তোলা, পিপুলমূল ২ পল, তেজপাতা ১ তোলা, ছোট-এলাচি ২ (ভালা, দাঞ্চিনি ২ ভোলা, বেণারমূল ২ ভোলা; এই সকল জবের চূর্ণ এবং ৩০ পল গুড় একত্র করিয়া ২ তোলা মাত্রায় গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম প্রাণদা গুড়িকা। এই ঔষধ ভোজনের অব্যবহিত পূর্বের বা পশ্চাৎ দেবনীয়। এই ঔষধ দেবনান্তে বাত-ককজ অর্ণোরোগী মদ্য, বাতজার্ণো-্রাগী মাংসরস, পিত্তজ অর্ণোরোগী ছগ্ধ, কক্ষজ অর্ণোরোগী মুগের যুষ এবং পিত্তলৈত্মিক অংশিরোগী উঞ্জল পান করিবে। ইছা দ্বারা সহজ বাতক্স, পিত্তজ্ঞ, কফজ ও সন্নিপাতজ্ঞ প্রভৃতি সর্ব্বপ্রকার তর্শোরোগ এবং পানাত্যক্ষ, মৃত্রকৃচ্ছ, বাতরোগ, গলরোগ, কৃমি, হুদোগ, গুলা ও শুলরোগ বিনম্ট হয়। এই গুড়িকা শ্বাদ ও কাদরোগীর পক্ষে অমৃত তুল্য। অর্শরোগীর মলবদ্ধতা থাকিলে শুঠীর স্থানে হরীতকী প্রদান করিবে। পিতজনিত **তর্ণো**-রোগে সমুদায় চূর্ণের চতুগুণ শর্কর। মিশ্রিত করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। অর্শরোগীর অমপিত্ত ও মন্দাগ্নি উপস্থিত হইলে, এই গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। অর্শঃ প্রভৃতি রোগ শ্লৈত্মিক হইলে মদ্য, মাংস রসাদি অহুপান जन ৮ (डाल। माजान, नाडक रहेल ३७ (डाला माजान अनः शिखक रहेल ২৪ ডোলা পরিমাণে রোগীকে দেবন করিছে দিবে।

इष्ट्रह्रुत्रगरमान्कः। -

ষোড়শঃ শুরণভাগাবহ্নেরটো মহোমধন্যাতঃ। অর্দ্ধেনভাগযুক্তির্মরিচনা ততোহপি চার্দ্ধেণ॥ ত্রিফলা কণাসমূল। তালীশারুকর ক্রিমিম্বনোম্। ভাগা মহৌষণ সমা দহনাংশা তালফুলী চা ভাগঃ শূরণতুল্যে। দাতবাো রদ্ধনারকস্যাশি। ভ্দ্পেলে মরিচাংশে সর্বান্যেকত্র কারয়েচ্চূর্ণম্॥ विश्वरान श्वर एन यूण्ड मिरवारियः योनक अने भवरेन । গুরুর্ষ্য ভোজারহিতেখিতরেযুপদ্রবং কুর্যাাৎ ॥ ভন্মকমলেন জনিতং পূর্ববিষগন্ত্যস্য যোগরাপেন। ভীমন্য মারুতেরপি যেন মহাশনো জাতো॥ অগ্নিবলঃদ্ধিহেতু র্ন কেবলং শূরণোমহংবীগ্যঃ। প্রভবতি শস্তকারাগ্নিভির্বিনাপ্যর্শসামেষঃ॥ শ্বরপুশ্লীপদজিদ্ গ্রহণীঞ্চ কফানিলোন্দ্, ভাষ্। মাশয়ন্তি বলীপলিতং মেধাং কুরুতে রুষাত্বগ ॥ হিক্কাং শ্বাসং কাসং সরাজ্যক্ষা প্রমেহাংশ্চ। প্লীহানকাপ্যথো গ্রহ হত্তি চ রদায়নং পুংদাং॥ রহচ্ছুরণ মোদক।

শ্রণ (ওল) ১৬ ভাগ, বিরু (রক্তচিতার মূল) ৮ ভাগ, শুঠী ৪ ভাগ, মরিচ ২ ভাগ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, পিপুল, পিপুলমূল, ভালীশগক, অকষ্কর (ভেলা) এবং ক্রিমিয় (বিভাল) — এই সকল প্রভাতে ৪ ভাগ, ভালমূলী ৮ ভাগ, রিদ্ধারক (বিন্তাড়ক) ১৬ ভাগ, দাকাচনি ২ ভাগ এবং এলাচি ২ ভাগ; ইহাদের চূর্ণ এবং ইহাদের সর্ব্ব-সমন্টির দ্বিগুণ শুড় একত্র মিশ্রিত করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। এই প্রথম উপযুক্ত মাজায় সেবনপূর্বক শুক্ত এ বলকারক দ্রব্য ভক্ষণ করিবে। কারণ— এই প্রযম্ব অতীব অগ্নিবর্দ্ধক হেতু শুক্ত এ বলকারক দ্রব্য সেবন না করিলে রোগীর বিশেষ অপনিষ্ট ঘটিনার সম্ভাবনা; এবং ভাহাতে নানাবিধ রোগ জ্বাত্তি পারে। বিশেষভঃ উপযুক্ত আহার অভাবে উৎকট উৎকট ব্যামি জ্বাত্ম রোগীর জ্বীবন নম্ভ করিতে পারে। জ্বাস্তামূনি কর্তৃক কথিত এই রোগরাজ "রহচ্ছুরণ মোদক" সেবন দ্বার আহারীয় ভুক্ত দ্রব্য অনায়াসে অপ্পকালের মধ্যে পরিপাক প্রাপ্ত হইয়া থাকে। অধিক কি এই প্রথ সেবন করিয়া পূর্বকালে ভীমের ও হয়্মানের জ্বঠরাগ্রি ভীষণমূর্ত্তি ধারণ করিয়াছিল; অর্থাৎ অভ্যন্ত আহার-শক্তি বর্ধিত হইয়াছিল। এই রহচ্ছুরণ মোদক সেবন করিলে যে কেবলমা জ

অবির বল বর্জিত হর এমত নহে, ইহা ছারা বল ও বৃদ্ধি পরিন্তও হাছ হইরা থাকে। শস্ত্র ও কার চিকিৎসা ব্যতিরেকে অর্থারোপে এমন নহৌ যথি অতি তুর্লভ। এই মোদক দেবন ছারা শোথ, দ্বীপদ, বাতিক ও পৈত্তিক গ্রহণী, হিন্দা, স্বাসন কাসন রাজ্যক্ষ্মান প্রীহা ও প্রমেহরোপ বিন্ধ হইরা, বোগীর মেধা ও বল রদ্ধি পার। ইহা অতীব শ্রেষ্ঠ রসারন উরধ।

नागार्क्क नश्रातागः।—

ত্তিফলা পঞ্চলবর্ণং কুষ্ঠকটুকরোহিণী। **मिवनां क्र विज्ञां वि वि**ष्ठ्यक्षिक्वां वि वना ठां जिवनारे हव इतिएक एवं यूवर्कना। এতৎসম্ভ ত-সম্ভারং করঞ্জব্ব মদেন তু 🛭 পিষ্টা তু শুড়িকাং কৃত্বা বদরান্থিসমাং বুধঃ। একৈকাং তাং সমূদ্ধতা রোগে রোগে পৃথক্ ॥ উফেণ বারিণা পীতা শান্তমগ্রিং প্রদীপয়েৎ। অৰ্শাংসি হন্তি তক্তেণ গুলাুমমেন নিৰ্হরেৎ ॥ জন্তুদক্তক তোয়েন ত্রুদেন্যই খদিরাঘুনা। মূত্রকৃচ্ছ ক তোয়েন ক্র্রোগং তৈলসংযুতা। इन्मयत्रम-मःयुक्ता मक्बब्र-विश्वानी। माज्लुङ्गतरमनाथ महाभूलहती खुठा॥ কপিখ-তিন্দুকানাস্তু রসেন সহ মিশ্রিতা। বিষাণি হন্দি সর্কাণি পানাশন-প্রয়োগতঃ॥ গোশকৃদ্রসমংযুক্তা হন্যাৎ কুষ্ঠানি সর্বলঃ। শ্যামাকষায় সহিত্য জলোদর-বিনাশিনী। ভক্তছন্দং জনয়তি ভুক্তস্যোপরিভক্ষিতা। অক্সিরোগেঁবু সর্কেরু মধুনান্নম্য চাপ্তরেৎ ॥ লেহমাত্রেণ নারীণাং সদ্যঃ প্রদরনাশিনী। ব্যবহারে তথা দূয়তে সংগ্রাদে মুগ্রাদিয়ু॥ নমালভ্য নুরো২পেরনাং ক্ষিপ্রং বিজয়মাপ্র রাৎ 🛚 नागार्ज्युनध्यदत्राग ।

হুরীতকী, আমলকী, বহেড়া, দৈশ্ববলবণ, বিটুলবণ, করকচলবণ, গ্রন্থিন-লবণ, সৌবর্চ্চললবণ, কুড়, কট্কী, দেবদাফ, বিড়ন্দ, নিম্দল, বেড়েলা, গোরক্ষাকুলে, হরিড্রা, দাকহরিড্রা ও তুলদী; এই দকল দ্রব্য প্রভিত্ত সমান দালার প্রহণপূর্কক করঞ্জের রস মারা মর্দিড ক্রিঞ্লা, স্কুলের আটির

সমান বটাকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিধিন ইহার এক একটা বটা ভিন্ন ভিন্ন ष्यक्षणान महत्यात्म जिब्र जिब्र (द्वारम त्यान कदित्य। सथा ;— उँक कल्मह त्तवन कवित्न यन्याधि मसुरेशिङ इयः छक्रमह (मन्दन कर्याद्वाग, काञ्चित महिछ (मन्दान श्रन्यद्वांग, जांग्न (खल) मह (मन्दान इन्डिकापि मः भनक्विष्ठ বিষদোষ, খদিরকাঠের কাষ্যাহ দেখনে চর্মরোগ্য জলের সহিত সেবন করিলে মূত্রকৃত্র, ভিলতৈল মহ মেবন করিলে হুমোগ, রফীর জলের সহিত সেবন করিলে মর্ব্যপ্রকার জর, ছোলক্ষলেবুর রসসহ সেবনে শূলরোগ্য কয়ে ভূবেলের রুদ অথবা গাবের রুদের সহিত দেখন করিলে বিষ্ণোষ, গোময়বুদ সহযোগে দেবন করিলে এব্ধ একার কুষ্ঠরোগ, শ্রামালভার ক্লাথের সহিত দেবন করিলে জলোদর, ভোজনের অল্লাইভ কালগরেই সেবনে অফচি, এবং মধুসহ মিশ্রিত করিয়া চকুতে অঞ্জন দিলে চকুরোগ ও মধুসহ লেহনপূর্বক পান করিলে নারীদিগের প্রদররোগ বিনষ্ট হয়। এবং ইছা জলসহ পেষণপূর্বক খাতে লেপন করিলে দ্যুতক্রীড়া, সংগ্রাম ও মুগয়াদিতে জন্মলাভ ছইয়া থা কে

নিত্যোনিতোরসঃ।—

মুতস্তাল্র লোহার্ক বিষং গন্ধং সমং সমম। সর্ববৃল্যাংশ ভল্লাভকলমেকত্র চুর্ণয়েৎ। **ज्**टेव भूताकरनाटेथः थरन् मन्तर निम्बस् । मायमाजः निरङ्गारेका त्ररमङ्ग्नाःनि नागरा ॥ রসে: নিত্যোদিতো নাম গুলোন্তবকুলাভকুৎ !

নিভ্যোদিত রস।

রসসিন্দ্র লেই, তাঅ, বিষ ও গন্ধক; এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে সমান ভাগে এবং উছাদের সর্বাসমষ্টির সমান মাত্রায় শোধিত ভেলাবীজ গ্রহণপূর্বাক চুর্ণ করতঃ একত্র মিশ্রিত করিয়া খলমধ্যে শুরণকচুর (ওলের) রুসে ক্রমাগত ভিন্দিবল পর্যান্ত মান্দিভ করিয়া। লেছবৎ করিয়া ১ মাষ। পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইছার একটী করিয়া, স্বতসহযোগে সেবন করিলে, সর্প্রবিধ অর্ণোরোগ এবং বিবিধ গুরজ রোগসমূহ বিন্ত হয়।

চন্দ্রপ্রভা-গুড়িকা।---

ক্রিমিরিপু দহন ব্যোধং ত্রিফল।২মরদারচবাভূনিয়ম্। मांगरीयृल्थ यूख्य मन्त्री वहां शाङ्गाकिकरेकव ॥ লবণক্ষার নিশাযুগ কুস্তমুরু গজকণাতিবিনা ছ। কার্বাংশিকান্যের সমানি কুর্যাৎ পলাইকঞ্চাশাজতোর্বিদ্যাৎ। निष्पबरुकमां भूतमा श्रीमाम् भनवतः लोहतज्ञरूरेथव । 🔌 ি সিতাচভুক্ত পলমাত্রবাংখা নিকুম্ভকুম্ভ তিস্থানিযুক্তম্॥

ভাগদারং পাণ্ডুছলীমকঞ্চ বিন্টবন্ডেঃ কুরুতে চ দীপ্তিম্ 🛭 হন্ত্যাময়ানু পিত্তকফানিলোখান্ নাড়ীগতে মর্মগতে ত্রেণে চ। অন্থ্যব্দ বিদ্রধি-রাজযক্ষ-মেহে ভগ্নাখ্যে প্রবলে চ যোজা। শুকুক্ষরে চাশারিমূত্র ক্চছে শুকুপ্রবাহে২পুদেরাময়ে চ। ভক্তনা পূৰ্বং নততং প্ৰযোজাং তক্ৰানুপানন্তুপ মন্ত্ৰপানম্ ॥ আজোরদো জাঙ্গলজো রদো বা পয়ে।২থবা শীতজ্ঞলারু শান্ম। বলেন নাগন্তরগোজবেণ দৃষ্ট্যান্ত্রপর্ণঃ প্রবণে বরাছঃ।

কান্তা রতীশো ধীৰণশ্চ বুদ্ধা।॥ বলীপলিত নির্ম্যক্তো রদ্ধোহপি তরুণায়তে। শুক্রনোধান নিহন্তাফৌ বলীপলিতনাশনং।। ন চারুপানে পরিহার্যায়ন্তি ন শীতবাভাতপ্রৈথুনেষু। শস্তুং সমভার্চ্য কৃত প্রসাদাৎ প্রাপ্তান্তিটী চক্রমস প্রয়ত্তাৎ 🛭 ভকং द्रवा यथायुक्ति यादमायहजूरोशः। ত্রিরদন্তী তিজাতানাং কর্মাণং পৃথক্ পৃথক্॥ इष-दिवागियानर्गन भनार्षः तमगन्नकः। •কেবলং মূর্চ্ছিতং বাপি পলং বা দাপয়েক্রসং॥ অভ্ৰকণ ক্ষিপেৎ কশ্চিৎ পলমানং ভিষগ্ৰরঃ। मः मद्दा मधुमर्लि ज्ञामारनो त्रक्ति हजू छेन्नम् ॥

চন্দ্রপ্রভা গুড়িকা।

ক্রিমিরিপু (বিড়ন্স্), দহন (রক্তচিতা), ব্যোষ (শু ঠ, পিপুল ও মরিচ), रदी छकी, तरहण, व्यामलकी, व्याप्रताक (तिवनाक), वह, विद्राजा, मागधी (পিপুল) মূল, মুথা, শহী, বচ, ধাতুমাক্ষিক (স্বৰ্ণমাক্ষিক), সৈদ্ধবল্পবণ, যব-ক্ষার, হরিজা, দারুহরিজা, ধনিয়া, গজপিপুল ও আতইচ প্রত্যেকে ২তোলা, অশাজতু (শিলাজতু) ৮ পল, নিপাত্র বিশুদ্ধ গুগুপুল ১৬ ভোলা, লৌছচুর্ণ ১৬ জোলা, টিনি ৩২ ভোলা, বাংশী (বংশলোচন) ৮ জোলা এবং দম্ভা, ভেউড়ী, मार्कानि, ছোটএলাচি, ভে্জপত ও নাগ্কেশর প্রভেকে ১ পল ; এইনকল দ্রব্য চূর্ণকরতঃ পৈষণপূর্বক উত্তর্গরূপে মিল্লিড করিয়া গুটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ভোজনের অব্যবহিত কাল পূর্বের উপযুক্ত মাত্রায় তক্র, मन्त, क्रांगिनाश्त्मत त्रम, कष्क्रभाषि खाकल माश्तमत तम, प्रस अथवा नीखल জন্ম অমুপান নহ সেবন করিলে ৬ প্রকার অর্শা, ভগন্দর, পাতু, হলীমক, অগ্নিমান্দ্য, পৈত্তিকরোগ, ককজরোগ, বাডজরোগ, নাড়ীরণ, মর্ম্মগতরণ, অছি, অর্কুন, বিত্রধি, রাজবন্ধনা, মেহ, ভয়, শুক্রন্সয়, অশারী, মৃত্রকৃত্তু, শুক্র- স্থার বল, অব্দের স্থার গতি, কুরুরের স্থার দর্শনাকান, বরাহের স্থার ভ্রমণশক্তি, কন্দর্গের সদৃশ বিদলকান্তি এবং ধীবণের (রহস্পতির) স্থার বুদ্ধিশক্তি
ক্রিন্থিয়া থাকে। এবং ইহাহার। বলীপলিত নই হইরা হ্রম্ম ব্যক্তিও তরুণতা
লাভ করিয়া থাকে। এই উয়ধ সেবনে কদাচ অন্থপান পরিত্যাগ করিবে
না। এবং শীতল বায়ু, আতপ ও মৈখুন পরিভাগে করিবে। এই "চন্দ্রপ্রভা গুড়িকা" উমধ মহাদেবকে পূজা করিয়া, তাঁহার প্রসাদে চন্দ্রের প্রথড়ে
প্রাপ্ত হওয়া যায়। রুদ্ধ বৈদ্যের উপদেশমতে ইহাতে পারা ও গন্ধক উভয়ে
প্রত্যেকে অর্ক্রপল অথবা কেবলমাত পারাই ১ পল প্রদাতব্য। কেহ কেহ
উহাতে ১ পল মাত্রায় তত্র দিবার উপদেশও দিয়া থাকেন। এবং ভেউড়ী,
দন্তী, দাক্রচিনি, ছোটএলাচি ও ভেজপত্র প্রত্যেকে হতোলা মাত্রায় দাতব্য।
এই উমধ মধু ও মৃত্যাহ মর্দ্দিত করিয়া ৪ র্ডি পরিমাণ হইতে ৪ মারা মাত্রা
পর্যান্ত সেবন করা যাইতে পারে।

তীক্ষমুখোরসং।

মৃতস্তার্ক হৈমাত্র তীক্ষং মুন্তঞ্চ গন্ধকং।
মণ্ডুরঞ্চ সমং তালং মর্দ্দাং কন্যাদ্রবৈর্দিনম্ ॥
অন্ধমূষাগতং পশ্চাৎ ত্রিদিনস্ত তুষাগ্রিনা।
চূর্ণিতং সমিতাক্ষোদ্রং খাদেৎ পৈতিককীলহা॥
রসো তীক্ষোমুখো নাম অসাধ্যমপি সাধ্য়েৎ॥
তীক্ষ্মুখ্রম।

রসসিন্দ্র, তাত্র, স্থা, অজ, লৌহ, মুথা, গন্ধক, মণ্ডুর এবং ছরিভাল; এই সকল জব্য সমান মাজায় এহণপূর্বক স্থতকুদারীর রসে মর্দিত করিয়া, একটা অন্ধ্যার মধ্যে পূরিয়া, দৃঢ়রূপে বদ্ধ করিয়া তুষাগ্রিতে তিনদিন পরিস্ত পাক করিবে। তৎপরে চূর্ণিত ক্রিয়া ষথামাজায় শর্করা ও মধুসহ সেবন করিলে, পৈত্তিকরোগ ও গুনকীল (অর্শং) রোগ নিবারিত হয়। এই তীক্ষমুখরুগ ঔষধ দার। অসাধ্য রোগও সাধ্য হইয়া থাকে।

পঞ্চাননোরসঃ।--

মৃতস্তান্ত লোহানি স্তার্ক গন্ধকৈঃ সহ।
সর্বাণি সমভাগানি ভল্লাতং সর্বতুলাকম্ ॥
পলমেকং সমালায় দ্রবিঃ শ্রণকন্দকৈঃ।
ফর্দুরেদিনমেকঞ্চ মাষমাত্রং পিবেদ্যুতিঃ॥
ভক্ষণাদ্ধন্তি সর্বাণি অশাংসি চ নসংশয়ঃ।
অসাধ্যস্যাপি কর্ত্ব্যা চিকিৎসা শক্ষরোদিতা॥

गर्थम-जवानः ।

অত্তৈব বিষয়োগাদ্ গুদজান্তকসঙ্গতোদাবিষার্ক ইত্যাদি পাঠঃ॥

পঞ্চানদর্ম।

রসনিন্দ্র, অজ্ঞা, লৌহ, পারদ, ভাত্র ও গন্ধক; এই সকল দ্রব্য সমা।
পরিমাণে এবং সর্ব্যমন্টির সমান শোধিত ভেলাবীজ গ্রহণপূর্বক চুর্নকরত
একত্র মিশ্রিত করিয়া, ১ ভোলা ওলের রসে মর্দ্দন করিয়া ১ মাধা মাত্রা
বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন প্রাতে এই উষধের একএকটা বটীকা স্বতুত্ত সেবন করিলে সর্ব্যবিধ অর্শোরোগ বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ স্বয়ং মহাদে
কর্ত্বক কথিত হইয়াছে। ইহাদ্বারা অসাধ্য রোগও আরোগ্য হয়। এমন বি
ইহার দ্বারা সর্ক্ষবিধ কুঠ ও মুমূর্দিগের মৃত্যুরোগ পর্বান্তও নিবারিত হয়।

জাতিফলাদি-বটিকা।---

জাতীফলং টঙ্কণনিষ্ধ শুর্প ধৃস্তরবীজং দরদং লবঙ্গম্। কণায়তং জয়ীরমর্দিতং স্যাদর্শোহগ্রিমান্দ্যক্রমেহহারী॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো গ্রন্থে হর্ণোহধিকারঃ। ইতি নপ্রমোহধ্যায়ঃ নমাপ্তঃ।

खां जिंकनामि वर्षे ।

জাতীফল, দোহাগার থৈ, সৈত্ববলবণ, জৈত্রী, শুগুরার বীজ, দর (হিন্দুল), লবঙ্গ, পিপুল ও বিষ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্বকরতঃ জন্ম রের রসে মর্দ্দন করিয়া ২।০ রতি পরিমাণে বচীক ও শুভ করিবে। প্রতিদিব ইহার এক এক গা বচীকা সেবন করিলে আর্শঃ, অগ্নিমান্দ্য, জ্বর ও মেহরো নিবারিত হয়।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "ঐরোগচিন্তামণি" এছে

** • "আশাধিকারে সপ্তম-অধ্যায় সমাপ্ত।

অফ্টমো২ধ্যায়ঃ।



অথাগিনান্দ্যাধিকারঃ।

সমস্য রক্ষণং কার্যাং বিষমে বাতনিগ্রহঃ।
তীক্ষে পিত্তপ্রতীকারো মন্দে শ্লোত্মবিশোধনম্॥
অনস্তর অগ্লিমান্য চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

অগ্নিমান্দ্য চিকিৎসায় অগ্নির সমতা রক্ষা, বিষম অগ্নিতে বায়ুর প্রশামন, ভীক্ষাগ্নিতে পিত্তের প্রতীকার এবং মন্দাগ্নিতে শ্লেম্মার বিশোধন করা কর্ত্তব্য বলিয়া জানিবে।

ষড় ৰণ-যোগঃ।—

বিশ্বাভরা গুড়ু চীনাং কষায়েণ ষড়ুষণম্।
পিবেৎ শ্লেয়াণি মন্দাগ্নৌ ত্বক্পত্ৰ-স্থ্যভীক্তম্।
পাককোলং মরিচক ষড়ুষণমুদাস্বতম্।

ষড় যণযোগ।

ষড় যাথিয়া।
শুগী, হরীতকী ও গুলঞ্চ : এই ত্রবাত্রর সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা,
পাকার্থ জল ৩২ তোলা এবং অবশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথ সহযোগে
ষড় যণ, দাকচিনি ও ডেজপত্রচ্ণ উপযুক্ত মাত্রার সেবন করিলে, লেখজনিত
সন্দায়ি প্রশমিত হইরা থাকে। পঞ্চলোল অর্থাৎ পিপুল, পিপুলমূল, শুগী,
চই, চিতা এবং মরিচ; এই ৬টী ত্রব্য একত্রিত ইইলে যড়-যুশিবলা যায়।

হরীতকীচূর্ণং।—

হরীতকী জক্ষানা নাগরেণ গুড়েন বা। সৈদ্ধবেন হিতা বাপি সাতত্যেনাগ্রিদীপনী॥ •হরীতকীচূর্ণ।

উপযুক্ত মাত্রায় হরীতকীচুর্ন শুণ্ঠ চির্নের সহিত, ইক্ষুগুড় সহ অথবা সৈম্বলবণ চূর্ণ সূর্যোগে সেবন করিলে মন্দায়ি সন্দীপিত হইয়া থাকে ৷

ভাক্ষরলবণমূ।---

পিপেলী পিপেলীমূলং ধন্যাকং কৃষ্ণজীরকৃষ্। সৈম্বক বিভূকৈৰ পত্তং তালীশকেশর্ম।

এষাং বিপলিকান ভাগান পঞ্চ দৌবর্চ্চলস্য চ। मितिहा जो की खर्शनारमरेककमा 'भन्द भन्म ॥ ত্বগেলেচার্দ্ধভাগে চ সামুদ্রাৎ কুডুবদ্বয়ম। দাড়িমাৎ কুড়বকৈব দ্বেপলে চাম্লবেভসাৎ। এতচ্চু ৰ্ণীকৃতং প্লক্ষ্ণং গন্ধাচামমূতোপমম্। লবর্ণং ভাক্ষরং নাম ভাক্ষরেণ বিনির্মিতম ॥ জগতন্ত হিতার্থায় বাতশ্রেদ্বাময়াপহম। বাতগুলানি হন্তাভ বাতশুলানিযানি চা তক্রমন্ত্র সুরাসীধু শুক্তকাঞ্জিকযোজিতম। জাজলানাক মাংসেন রদেন বিবিধেন 6 ॥ মন্দ্রবেশ্বর প্রেক্তির দান্ধের পাবকঃ। অশাংসি গ্রহণীলোব কুষ্ঠামরং ভগন্দরানু॥ হুদোগ্যামরোগাংশ্চ বিবস্ধান্তদরে স্থিতান। भी शानमधाती रिक्त शामकारमानत किमीन ॥ বিশেষতঃ শর্করাদীন রোগালানাবিধাংস্তথা। পাওুরোগাংশ্চ বিবিধানাশয়ত্যাশু নিশিচ্ডমু॥

छ ऋत्लवन ।

পিপুল, পিপুলমূল, ধনিয়া, কৃষ্ণজীরা, সৈশ্বৰলবণ, বিট্লবণ, ডেজ-পাডা, তালীশপত্র ও নাগকেশর; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২পল, সৌবর্চললবণ ৫ পল, মরিচ, জীরা ও শুণ্ঠী এই দ্রব্যত্তর প্রত্যেকে ২ এক ১ এক পল, দারুচিনি ৪ তোলা, এলাচি অর্দ্ধপল, সামুদ্রলবণ ২ কুড়ব অর্থাৎ /১এক-সের, দাড়িম ফলের ছাল /॥॰ অর্দ্ধসের এবং তমবেতস (থৈকল) ২ ছই-পল; এই সমস্ত দ্রব্য উত্তমরূপে স্ক্রম চুর্ণ করিয়া উত্তমপ্রকারে মিল্লিভ করিয়া লইবে। এই স্থান্ধি অমৃত্যেপম "ভাঙ্করলবণ" চুর্ণ ক্রয়ং ভাঙ্কর (স্র্ব্য) দেব কর্ত্বক জগতের হিত্তের নিমিত্ত বিনির্ম্মিত হইয়াছে। এই প্রথম সেবন করিলে বাতল্লেম্মরেরণ, বাতজগুলা এবং বাতিক শূল রোগ নিবারিত হয়। এই প্রথম ভক্র (যোল), মস্ত্র (দরিরমাত্র), স্বরা (মদ্য), মীরু, শুক্তর, কাঞ্জিক এবং বিবিধ প্রকার জাজল মাংসের রুমের সহিত সেবন করিবে। ইহা দ্বারা মন্দায়ি ব্যক্তির অভিসত্তর অথি প্রদীপ্ত হয়। এবং তর্লা, এইলা, কুটরোগ, ভগন্দর, হুদোগ, আমরোগ, বিবন্ধ, উদরিক রোগ সকল, মীহা, অখ্যরী, শ্বাস, কাস, উদর, ক্রিমি, শর্করাদি প্রমেহজাতীর বিবিধ্বোগ এবং দর্কবিধ পাণ্ডুরোগ নিক্রমই আরোগ্য হইরা থাকে।

পথ্যাত্রম্ ।--

भशामिल्लनीमःयुक्तः हृनः मीवकनिल्लातः। মস্তনোকোদকেনাথ বুদ্ধা দোৰগতিং ভিষক্। **ठ ज्**रिदेशमञ्जीर्गक मन्त्राननम्थातः विम्। আথান বাতশ্লক গুলাকান্ত নিষচ্ছতি।

हती करी, शिश्रुल छ (शीवर्कललदर्ग) अहे अवाजत ममछारा अहर्गभूर्वक ছূর্ণ করিয়া, দেই চূর্ণ উপাযুক্ত শাত্রায় দধির মাত্ অথবা উন্দোদক সহযোগে क्ष्मवन कविटल, म्यूर्किश अलीर्ग (आभाक्षीर्ग, विक्काक्षीर्ग, विषक्षाक्षीर्ग अ तम-শেষাজীর্ণ; এই চারি প্রকার অজীর্ণ) রোগা, মন্দাগ্লি, অঞ্চি, আধানা, বাত-শুল এবং গুলবোগ আও নিবারিত হয়।

চত্রগম্।--

नीপाकः देमञ्जवः পशानागतक**ठ**ङ्गश्रमम्। नानाविधमञीर्गक क्रिमिक्छेक नामादार ॥

यमानी, रेमक्रवलवन, इदीछकी ७ एछी; अरे 8 ठादिनी स्वा मयलाग এছণপূর্বক চূর্বিত করিয়া, উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে নানাবিধ অজীর্ণ-ৰোগ, ক্ৰিমি ও কৃষ্ঠরোগ বিনষ্ট হয়।

हिन्द्र खेकः हुर्गम्।—

ত্রিকটুকমজমোনা দৈদ্ধবং জীরকে ছে-সমধরণরতানামউমোহিঙ্গুভাগঃ। প্রথমকবলভুক্তং সর্পিষাচুর্নমেতৎ জনয়তি জঠরাগ্রিং বাতরোগাংশ্চ হত্তি।

हिन्नु स्टेक्ट्र्ग ।

শুপা, পিপুল, মরিচ, যমানী, সৈদ্ধবলবণ, জীরা, ক্রম্ডজীরা (সাজীরা) এবং হিস্কু; এই সকল দ্রব্য প্রভাবে ধরণ অর্থাৎ ॥• অর্দ্ধভোলা মাত্রার এংগপুরুক উত্তমরূপে শ্লন্ধচূর্ণ করিয়া লইবে। এই ছিন্ধু উক চূর্ণ। ি সিকি-ভোলা মাত্রায় কিঞ্চিং পরিমিত গ্রাম্বত সহযোগে সেবন করিলে, অগ্নি-मन्नजा निवादिक इदेश कठेताथि अमेल इस । এवर ममुमात्र वाल्द्रांग विनक रहेका थाइक । .

> অগ্নিপ্লতম্।— পিপুলীপিপুলী খুলং চিত্ৰকো হতিপিপুলী। वित्र ह्याक्रामाना शर्किय नवगानि है।

বৌকারে হরুষ। তৈব দদ্যাদর্দ্ধ পলোমিতান্।
দধিকাঞ্জিকশুক্তানি স্নেহমাত্রাসমীনি চ।
আর্দ্র কম্বরসপ্রস্থ মৃতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
এতদগ্লিম্নতং নাম মন্দাগ্লিনাং প্রশাসতে।
অর্শ্রের্দাপচীকাস কফমেদোহস্ঠীলামপি।
নাশয়েদ্রাহনীদোষং শ্রয়পুং সভসন্দরম্।
যে চ বস্তিগতারোগা যে চ কুক্ষিসমাজিতাঃ॥
সর্বাংস্তান্নাশয়ত্যাশু স্ব্যস্তমোহরোদিতঃ।
অগ্রিম্নত।

পিপুল, পিপুলমূল, রক্তচিভার মূল, গজপিপুল, হিঙ্, চই, বন্যমানী, সৈশ্বৰলবণ, করকচলবণ, বিট্লবণ, সচললবণ, উদ্ভিদলবণ, যরক্ষার, সাচিক্ষার ও হবুষা; এই সকল কল্ক দ্রব্য কুটিভ প্রভ্যেকে ৪ চারিভোলা, দ্রি /৪ চারিসের, শুক্ত /৪ চারিসের, আদার স্বরুস /৪ চারিসের, আদার স্বরুস /৪ চারিসের এবং উৎকৃষ্ট গব্যস্থত /৪ চারিসের; যথানিয়েম এই মৃত্ত পাক করিয়া সেবন করিলে মন্দাগ্রি, অর্ণ্ড, কুঠ, গুল্ম, উদর, প্রস্থি, অর্ণ্ড়, অপ্টী, কাস, ককরোগ, মেদোরোগ, অন্ঠালা, প্রহণী, শোধা, ভগন্দর, বস্তিরোগ এবং কুক্ষিরোগসকল, স্বর্থাদরে অন্ধকার বিনাশের স্থায়, সম্বর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পথ্যাদিকং চুর্ণম্ ।—

পথ্যাভয়াহিসু:কলিপ্রগুঞ্সোবর্চলৈঃ সাতিবিবৈশ্চ চুর্ণম্। সুখামুপীতং বিনিহন্তি জীর্ণং শূলং বিস্ফীমরুচিঞ্চ সদ্য । পথ্যাদিকচুর্ণ।

হরীতকী, কুড, হিল্পু, ইন্দ্রখব, গুঞ্জা, দৌবর্চ্চলবণ এবং আতইন; এই সকল ত্রব্য সমানাংশু এহণপূর্বক উত্তমরূপে মক্ষ্ণচূর্ণ করিয়া মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই পথ্যাদিক চূর্ণ উপযুক্ত পরিমাণে স্থাম্ব (উষ্ণজ্বল) সহযোগে সেবন করিলে সদাই অজীর্ণ, শূল, বিস্চী ও অঞ্চি নই হয়।

রহদ্বানলচূর্ণ্।—

ক্রিকটু তিফলাচিত্র চবিকাস্তরদার:

পিপেলীমূলৈঃ পিটেশ্চিরবিল্রসপ্লাইতর্বক্ষঃ॥
বড়বানলচূর্ণমেতদ্ধিমধুকোফসলিলাবিজ্যশচ।
চূর্ণং শূলং জয়ত্যাশু মন্দ্র্যাগ্রেশ্চ দীপনম্॥
রহদ্র্বানলচূর্।

শুণ্ঠী, শিপুল, ষরিচ, আমলকী, বহেড়া, ছরীড়কী, রক্তচিভার মূল, চই,

দেশনাক ও পিপুলম্ল; এই সকল জবা সমান পরিমাণে এইণপৃত্তক উত্তমরূপে মান্ধ চূণ করিবে। এই-চূণ জবাগুলি উপযুক্ত মাজার চিরবিল (করঞ্জ)
রস সহ মিজিত করিরা রৌত্তে শুক্ত করিরা লইবে। পুন: পুন: এক্প্রাকারে
ভাবনা দিয়া চূণ করিরা উবধ প্রজ্ঞত করিবে। এই চূণ ঔষধ উপযুক্ত মাজার
এইণপূর্বক দ্বি (দই), মধু, ঈষত্বকজ্ঞল অথবা ঘৃত সহ্যোগে সেবন করিলে,
শূলরোগ ও মন্দায়ি নিবারিত ইইরা, জঠরায়ি উদ্দীপ্ত ইইরা থাকে।

রাঙ্গবলভোরসঃ —

রসনিক্ষং গদ্ধকৈকং নিক্ষাত্রং প্রদীপনঃ।
সার্দ্ধং পলং প্রদাতবাং চুল্লিকালবণন্ততঃ।
খলে রসমর্দ্ধিয়েত্ত্র স্ক্ষাবস্থেণ গালয়েৎ।
মাষমাত্রং প্রদাতবাং ভুক্তমাংসাদি-জারকঃ॥
অজীর্ণেরু ত্রিদোসেরু দেয়োহরং রাজবল্লভঃ॥
বাজবল্লভবদ।

পারা॥• অর্দ্ধতোলা, গদ্ধক॥• অর্দ্ধতোলা, প্রদীপন (বিষ)॥• অর্দ্ধ-ভোলা এবং চুল্লিকালবণ ২২ ভোলা; এই সকল দ্রব্য এইণপূর্বক খলে করিয়া মর্দ্দিত করতঃ, স্ক্ষাবস্ত্র দ্বারা গালিত করিয়া লইবে। তদনস্তর জল সহ বাটিয়া ২ মাষা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটীকা প্রতিদিন প্রাত্তঃকালে সেবন করিলে ভুক্তমাংসাদি জীর্ণ হয়। এবং এই রাজ-বন্ধব বটীকা সেবন দ্বারা ত্রৈদোষিক অজীর্ণরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

রহদ্বাড়বানলঃ।---

স্বর্জিকারং ধবক্ষারং পারদং গন্ধকন্তথা।
সৈন্ধবং সৌবর্জলং হিন্দু জুনেনং বিষমেব চ॥
রক্তবং লৌহচূর্ণক শঙ্খচূর্ব চতুর্থ গাঃ।
এতদেকীক্তবং সর্ববং ভাবয়েরিমুনীরতঃ॥
একবিংশতিবারেণ জন্ধীরৈবটিকাং কৃতাম্।
খাদরেন্তোজনাদর্যে জলমুক্তং পিবেদরু॥
বহ্নিদান্থ নিহন্তি চ কেশরী করিণং যথা।
অজীর্বং নাশরেদান্ত তীক্ষোহ্যিশ্চ প্রজারতে॥
গ্রহণীং বিবিধাং হন্তি অশাংসি প্রিনাশয়েৎ॥

त्रस्वाज्यायल ।

শাচিকার; যবকার, পারদ, গন্ধক, সৈন্ধবলবণ, সৌবর্চললবণ, ছিলু, শুঠী, পিপুল, মরিচ, বিষ, রৌপ্য ও লৌছ ; এই সকল জ্রব্যের চূর্ণ প্রভাকে ১ এক ৯ এক ভাগ এবং শুখুচুর্ণ উহাদের সর্বসমন্তির চতুর্গুণ মাত্রার গ্রহণ

The Contract of Section 18 has a factor

পূর্ব্বক উত্তর্গরণে মিজিড করিয়া লইবে। তৎপরে জ্বীরলেবুর রস ঘারা ২১ একবিংশভিবার ভাবনা দিয়া ০।৪ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ব্রথ উক্ষজ্ঞল অন্থপান সহ ভোজনের অব্যবহিত পূর্ব্বকালে সেবন করিলে পরিমান্যা, অজীর্ন, বিবিধ্বপ্রকার গ্রহণীরোগ এবং অর্পোরোগ সমুদর বিন্ত হয়; এবং ইহাঘারা অতীব তীক্ষায়ি সমুৎপন্ন হইয়া থাকে।

অঙ্গীৰ্ণকণ্টকঃ।-

শুদ্ধসূতং বিষং গদ্ধং সমং সর্বাধ বিচুণ্য়েৎ।
মরিচং সর্বাত্ল্যাংশং কণ্টকার্যাঃ ফলদ্রবৈঃ॥
মর্দ্ধয়েন্তাবয়েৎ সর্বানেকবিংশতিবারকম্।
বটীগুঞ্জাত্রয়ং খাদেৎ সর্বাজীপপ্রশান্তয়ে॥
অজীপ্রকণ্টকঃ সোহরং রসো হন্তি বিস্টিকাং॥
অজীপ্রকণ্টক।

পারা, বিষ, গন্ধক; এই দ্রব্যত্তর প্রত্যেকে সমান পরিমাণে এবং সকলের সমান মরিচ গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ, কন্টকারীক্ষলের রুসে মর্দ্দিত করিয়া ২১ বার ভাবনা দিরা ৩ রুতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা সেবন দ্বারা সর্ব্ববিধ অজ্ঞীর্ণ ও বিস্থৃচিকারোগ বিশ্বস্কৃত্র প্রাক্তিক।

অপরাজীর্ণকণ্টকঃ :---

विकृ विकला लोह किछानामि कार्यक्ष ।
कर्याद्धः जय्रभानमा वीजः छद्धः विवृत्द्यः ॥
छङ्गाः अत्रत्मदेन्य भिक्षेषेठ्य भूमः भूमः ।
छक्षीकृषाक्षं कमार्थ अत्रतम त्रीलकीकृष्ण् ॥
छक्षाद्य श्रीमात्म छक्षामानः क्रजाक्षणी ।
नामाजीन-श्रामनः छल् श्रीह्मान्तक्ष्यः ॥
ज्यानमाः नामाञ्चीनिक्षेत्रः ॥
ज्यानमाः नामानः ॥
व्यानाकीनिक्षेत्रः ।

শুণ্ঠী, পিপালী, মরিচু, আমলকী, বহেড়া, হরীত্কী ও লোহ; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ছইডোলা এবং শুদ্ধ জয়পালবীজ ১ ডোলা গ্রন্থণপূর্বক প্রথমতঃ গুল্ঞারস দ্বারা পুনঃ পুনঃ পেষণপূর্বক স্থ্যাতপে শুদ্ধ করিয়া লইবে। তদনন্তর আদার স্বরস দ্বারা মর্দ্দিত করিয়া ২ রভি পরিমাণে বটীকা প্রশ্বত করিবে। প্রভাহ ইহার এক একটা বটিকা সেবল করিলে নাদাবিশ্ব অজীণ, গুলা, দীহা, উদর, অর্দ্য, পাণ্ডু, শোথ এবং জীণ জন্ন নিবারিত হয়। এই অজীণ্কটক উষধ সর্ব্যাধি বিদাশক কলিয়া বিখ্যাত।

ক্রব্যাপরসঃ ।--

পদং রদস্য দ্বিপলং বলেঃ স্যাচ্ছু লায়সী চার্দ্ধপল প্রমাণে।
সঞ্চুণ্য সর্বাং ক্রতমন্নিযোগানের ওপত্তে বিনিবেশনীয়ম্।
পিষ্টাথ তাং পর্পটিকাং বিধায় লৌহেষু পাত্তেদিব পৃতমন্মিন্।
জমীরজং কন্দুরসং পলানি শতং তলেইস্যান্নিমথাপেমপ্রাম্।
জীনেরসে ভাবিতমেতদেতিঃ স্থপঞ্চ কোলোদাববারিপ্রিঃ।
সবেতসামেঃ শতমত্তযোজ্যং সমংরক্ত ইঙ্গণজং স্বভৃষ্টম্।
বিভৃং তদর্দ্ধং মরিচং সমঞ্চ তৎসপ্রবারং চণকাম্লবারা।
ক্রব্যাদনামা ভবতি প্রসিদ্ধো রসন্ত মন্থানক ভৈরবোক্তঃ॥
মাষদ্বয়ং সৈদ্ধব তক্রপীত মেতস্য ধান্যঃ রসভোজ্যান্তে।
গুরুণি মাংসানি প্রাংসি মিইকুতানি সেব্যানি কলানি যোগাৎ॥
মাত্রাতিরিক্তান্যপি সেবিতানি যামদ্বয়াজ্ঞারয়তি প্রসিদ্ধঃ।

कार्णारशैलानिवर्राः गत्रवत्रमामार्खि निर्नामनः। গুল্বাপ্লীছনিস্থনং গ্ৰহণিকা বিজ্ঞানং ভাংসনম্॥ বাতশ্বেদ্মনিবহণং অমহরং শূলার্তি মূলাপহম। বাতব্যাধি মহোদরাপহরণং ক্রব্যাদনামারসঃ॥ অত্র পলপ্রমাণইতি কেচিৎ। পাঠান্তরে জয়ীর-রসস্যপাত্রমান্তঃ। রামরাজে তু শতং এতচ্চ ন্যুন-পরিমাণ নিরাসার্থমিত্যান্তঃ। পঞ্চেলেনামুবেত-দেন চ প্রত্যেকে পঞ্চাশন্তাবনা। ভাবনা তত্ত দাতব্যা পঞ্চাশতপ্রমিতাপৃথকু ইতি পাঠান্তর-সম্বাদাৎ। সমং টক্ষণচূর্ণং পরিমিত লোঁহাদি তুল্যং চতুঃপলমিত্যর্থঃ। ভাবনা ভাগরদ্ধে চ ভাবাং পূর্ববিষতং মতম্। অন্যথা ভাবনা দ্রব্যগ্রহণমঁপি ভাবনাধিক প্রিমিতদ্রব্যাপেক্ষকং স্যাৎ। ভাব-নাত্র শিলাজতু বিধানেনৈব তদর্দ্ধমিতি টক্ষণার্দ্ধং মরিচ সমমিতি পাঠান্তরে। সর্ববতুল্যমিতি সর্বক শব্দগ্য সক্ষোচরত্যা অনুপদনিগণিত টক্ষণলবণ-সম্মিত্যর্থঃ। পূর্বেজে ভেষজমানস্য ব্যবহিত-্ত্রাৎ সমপ্রদায় ব্যবহারভ্রেবম্॥

क्रवामद्रम ।

পারদ > পাল, গন্ধক ২ পাল, ভাত্র অর্জপাল এবং লৌছ অর্জপাল; এই
সকল দ্রব্য প্রহণপূর্বক অগ্নিতে পাক করিয়া গালাইবে। এবং ভেরেণ্ডার
প্রোপরি চালিবে। তৎপরে চূর্ণ করিয়া লোহপাত্রে ১০০ শতপাল জানীরের
রসসহযোগে মৃত্র অগ্নিসন্তাপে জ্বাল দিয়া শুষ্ক করিয়া লইবে। তদনন্তর পঞ্চকোল, ছোলঙ্গলের ও অন্নবেতদের রস দ্বারা ১০০ শতবার ভাবনা দিয়া, তৎসহ সোহাগার খৈ ১একপল (৮ ভোলা), বিট্লবণ অর্জভোলা এবং মরিচ্চূর্ণ
অর্জপল (৪ ভোলা) মিশ্রিত করিয়া; চণকের (বুটের) কাঁজি দ্বারা ৭ সাতবার
ভাবনা দিয়া লইবে। এবং ২ মাষা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন
ইহার এক একটা বটীকা সৈশ্ববলবণ ও কাঁজির সহিত সেবন করিয়া, গুরু
দ্রবা, মাংস, তুল্প ও মিউক্ত দ্রব্য অভিরিক্ত পরিমাণে সেবন করিলেও ত্রই
প্রহর মধ্যেই তৎসমস্ত জীর্ণ ইইয়া যায়। এবং এই প্রয়ধ সেবন দ্বারা কার্শ্য,
ছোল্য, গরন্ধান, আমদোষ, গুল্ম, প্লীহা, গ্রহণী, বাতন্ধেন্মা, প্রান্তি, শূল,
বাতব্যাধি এবং উদরাদি বিবিধ রোগ সমূহ বিনই হয়।

শঙ্খবটী।---

সাদ্ধি কর্ষং রসেন্দ্রস্য গদ্ধক্স্য তথৈব চ।
বিষং কর্ষত্রন্দ্রদাৎ সর্বতৃল্যং মরিচকম্ ॥
দক্ষণতাক ততুল্যং পঞ্চকর্যানি নাগরম্।
স্বর্জিকা রাম্য কণা সিন্ধু সৌবর্জলং বিড়ম্ ॥
সামুদ্র মৌন্ডিদক্ষেতি প্রত্যেকং নিম্নুকর্দেবৈঃ।
বটী গ্রহণ্যাম্লপিত শূলত্বী বহ্নিদীপনী ॥
বহ্নিমান্দ্য ক্রতানোগান্ সামদোষ্ঠ্ঞ নাশ্রেৎ ॥
শক্ষবিটী।

পারদ ৩ ভোলা, গন্ধক ও ভোলা, বিষ ৬ ভোলা, মরিচ ১২ ভোলা, দগ্ধশন্ধচূর্ণ ২৪ ভোলা, শুণ্ঠী, ১০ ভোলা এবং সাচিক্ষার, হিন্দু, পিপুল, সৈন্ধবলবণ, সৌবর্চ্চললবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ ও উদ্ভিদলবণ প্রভাৱে ১০
ভোলা; সমস্ত দ্রবাগুলি গ্রহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া নিম্বুকের (নেবুর)
রসে মন্দ্রন করিয়া ১মাষা মাত্রার বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রভিদিন ইহার এক
একটী বটীকা সেবন করিলে অন্ধপিত, শূল, অগ্নিমান্দ্যজ্ঞনিত রোগ সমূহ
এবং আমদোষ বিনষ্ট হয়। এবং ইহালারা মন্দাগ্রি সন্দীপিত হইয়া থাকে।

মহাশঙ্খবটা।---

চিঞ্চান্দারং নিখিল লবণং নিমূতোরেন মুফ্বী তপ্তং শঙ্খং নিন্দিপেৎ সপ্তবারাম্। তন্মিন্ শঙ্খো ভবতি গলিতো মর্দ্য়েভেন সার্ধং হিন্ধু ব্যোষং পাদমানেন দদ্যাৎ॥
তুর্যাংশরসবলিবিষং মর্দ্দরিত্বা প্রযত্নাৎ
গোলং কৃত্বা বাদরান্ধি প্রমাণম্।
বক্ষে মন্দ্যেইপ্যক্রচিসহিতে পাক্তিশূলেচ
শুল্মে খাদেদেকামমধোগেন নিত্যম্॥
মর্দ্দরিত্বাত্রতোরৈতি কেচিৎ। পাঠান্তরে হিন্ধুব্যোষপলমিতি বচনাদত্র পাদমানেনেতি। হিন্ধুব্যোষণাং প্রত্যেকং চতুর্ণাং পাদিকত্বম্॥ চিঞ্চালার পটুব্রন্ধপলং নিমুরসৈঃ কল্কিতং ত্রিন্
শঙ্খপলং প্রতপ্তমশক্ত নির্বাপ্যশীর্ণাবিধি। হিন্ধুব্যোষপলং রসাম্বলীন্ নিক্ষিপ্য নিক্ষাংশিক্ষাং
বদ্ধা শঙ্খবটী ক্ষরগ্রহণিকাক্রক্পক্তি শূলাদিয়ু॥
মহাশঙ্খবটী।

তেঁতুলের বল্কলভন্ম, সৈশ্ববলবণ, সচললবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, প্রিস্থিলবণ ও শুপ্তভন্মচূর্ণ প্রভাবেক এক একভাগ, হিন্তু ২॥ দেড়ভাগ, ত্রিকটু প্রভাবেক । কিকভাগ, পারদ, গন্ধক এবং বিষ প্রভাবেক উহাদের । কিকভাগ; এই সকল দ্রব্য প্রহণপূর্ত্বক চূর্ণ করিয়া কাগুজীলেবুর রূপে ৭ সাত্বার ভাবনা দিয়া স্থ্যাতপে শুদ্ধ করিয়া, জলসহ মর্দ্দিতকরতঃ কুলপ্রমাণ ব্রীকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক একটা বটকা প্রভিদিন কাঁজির সহিত সেবন করিলে অগ্নিমান্দ্য, অকচি, পজিশুল ও গুলুরোগ আরোগ্য হয়।

অগ্নিকুমারকঃ।—

রসেক্র গদ্ধে সহটক্ষণেন সমবিষং যোজ্যমিহ ত্রিভাগম্। কপর্দ শধ্যবিহনেত্রভাগো মরিচমত্রাইগুণং প্রদেরম্॥ সুশক জয়ীররসেন মুইঃ সিদ্ধে। ভবেদগ্রিকুমাধ্ন এষঃ। বিস্ফিকা জীর্ণসমীরণার্ডে দদ্যাদ্বিক্রং গ্রহণীগদেরু॥

অগ্রিকুশারক।

পারদ, গন্ধক, সোহাগা, বিষ, কড়িভস্ম এবং শন্ধক্তসা; ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ০ ভাগ এবং দরিচচূর্ণ ৮ ভাগ একর্ত্ত মিপ্রিড করিয়া স্থাক জন্বীর-লেবুর রসে মর্দ্দনকরতঃ ২ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা দ্বেবন করিলে বিস্থৃচিকা, জ্বীর্ণজ্বর, বায়ুরোগ ও প্রহণীরোগ বিনষ্ট হয়।

রহণগ্রিকুমারঃ।— শুদ্ধকৃষ্ণ পদং বিকারং পটুপঞ্চম্। তুলাং দশক তুল্যাংশা ভর্জিতা বিজয়াপি চ।।
দশানাং তুলভোগানামন্ধলিগুক্মূলজম্।
তংসবাং বিজয়াদ্রাবৈং লিগুনিভাদ্র ভূপতেঃ ॥
দ্রোবৈদিনদ্বয়ং মদিংং ক্রদ্ধুং ভাতে পুটে লঘু।
ক্রমাগ্রিনান্তু যামৈকং শুক্তং পাচ্যং সমুদ্ধরেৎ ॥
সপ্তধাচাদ্র কি দ্রোবৈ শিচভকৈর্ভাবয়েদথ।
দীপকোগ্রিকুমারোয়ং নিক্ষেকং মধুনা লিহেৎ॥
শুড্শুঠানুপানেন রসঃ স্যাদ্গ্রিদীপনঃ॥

রহদগ্রিকুমার।

পারদ, গ্দ্রক, যবন্ধার, সাচিকার, সোহাগা, সৈশ্ববন্ধা, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, প্রস্তিদ্রলবণ ও ভৃষ্টসিদ্ধি; এই সকল দ্রুয়া প্রস্তিত্তকে ১ এক ১ এক ভাগ এবং সজিনামূল সমুদারের অর্জেক; সমুদার দ্রব্যগুলি এছণ-পূর্বক ২ ছই দিন পর্যান্ত ক্রমান্থরে সিদ্ধি, সজিনা, রক্তচিতা, আদা ও ভৃত্ব-রাজের রদে মর্দ্রিত করিরা, প্রয়প্তলি একটা ভাণ্ডের মধ্যে ক্রম্ককরতঃ পুট-পাকে দৃত্ব অগ্নিসংঘোগে পাক করিবে। তদনন্তর উক্ত পুটপাককৃত প্রয়প্তলি ৭ সাতবার আদা ও চিতার রদে মর্দ্রন করিরা।। অর্জতোলা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটী মধু, গুড় অথবা শুগুটি সহযোগে দেবদ করিলে মন্দাগ্নি দুরীভৃত হয়, এবং ইহাদারা অতি সম্ব্র জ্বাগ্রি প্রদীপ্ত হয়।

ভক্তপাকবটী।—

মাক্ষিকং-রসগদ্ধে চৈ হরিতালং মনঃশিলা।
ত্রদ্ধীবারিবাহং চিত্রকঞ্চ মহৌষধম্ ॥
পিপেলীমার্নিং পথ্যা ষমানী ক্ষজনীরকম্।
রামঠ কটুকাকানি সৈন্ধবং গজকেশরম্ ॥
জাতীকলং যবকারং সমভাগং বিচুর্নয়ে ।
আংদ্রেকিয়া রুসেনাশি নিগু গ্রাঃ স্বরুসেন চ ॥
স্থ্যাবর্ত্রসেনাশি জ্যোতিয়্ত্যারসেন চ ।

• আতপে ভাবয়েরেন্যঃ কুর্যান্গুঞ্জানিভাং বটীম্॥ ভক্ষয়েভাং বটীং প্রাজ্ঞো লবঙ্গেন ঘোজিভাম্। ভজোভরীয়ে বহুভোজনে চ আমানুবন্ধে চিরবহ্মিন্দ্য। বিভি. এহে বাতকফানুবন্ধে শোণোনরামাহগদেহপ্যজীর্ণে॥ শূলে ত্রিদোষ প্রভবে ক্রে প্রশস্তা বটী ভুক্তবিপাকসজ্ঞা।
জন্ম বিপচত্যাশু নরস্য কোঠং মুক্তর্কাঞ্চতি ভোজনানি॥

ইতি জ্বীরাম্মাণিকা দেন বির্**চিতে প্রয়োগ্চিন্তাম্**ণা-ব্যামান্যাধিকারঃ।

ইতি অন্তমো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ

ভক্তপাকৰটী।

ষর্ণমাক্ষিক, পারদ, গন্ধক, ছরিভাল, মনঃশিলা, ভেউড়ীমূল, দন্তীমূল, বারিবাছ (মুথা) রক্তিভার মূল, মহৌষধ (শুণ্ঠী), পিপুল, মরিচ, পথ্যা (ছরীভকী), যমানী, কঞ্জীর', ছিল্পু, কট্কী, অন্ধ (মুথা), সৈন্ধবলবণ, গজিপিপুল, নাগকেশর, জায়ফল, জৈত্রী, যবক্ষার : এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমভাগে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণিভ করিয়া, ক্রমান্বয়ে আদা, নিসিন্দা, স্ব্যাভিপে বিশুদ্ধ করিয়া > এন রভি পরিমাণে ব্রীকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রভিদিন ইছার এক একটী বটী লবক্ষচ্র্নসহ সেবন করিলে আমাহ্লবন্ধ অগ্রিমান্দা, মলবদ্ধভা, বাভজ ও কফজশোধ, উদর, আনাহ, অজীর্ণ, তৈদোষিক শূল, প্রবলজর প্রভৃতি বহুবিধ রোগ বিনম্ট হয়। ইছা সেবন দ্বারা ভুক্তার লীড্রই পরিপাক প্রাপ্ত হয় এবং পুনঃপুনং ভোজনে ইচ্ছা জ্বিয়া থাকে।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এত্থে অগ্লি-মান্দ্য-অধিকার।

ইতি অফুম-অধ্যায় সমাপ্ত।

नवरगार्थ्यायः।

অথ ক্রিম্যধিকারঃ।

গুড়-যমানী।—
পারাদীর-যমানিকা পীতা পর্যুষিতা বারিণাপ্রাতঃ।
গুড়পূর্ব্বা ক্রিমিজাতং কৌষ্ঠগতং পাতরত্যাশু॥
অভঃপর ক্রিমিরোগের চিকিৎদা বলা ধাইতেছে।

श्रृ-यमानी।

পারসিক যমানী ২ তোলা কুটিত করিয়া, রাত্রিতে জলে ভিজাইরা রাখিবে। পর দিবদ প্রাতঃকালে উহা ছাঁকিয়া দিটে বাদ দিয়া, উক্ত বাদী শীত ক্ষায় গুড় দহযোগে পান করিলে, কোষ্ঠগত ক্রিমি দকল পতিত ছইয়া বায়।

পারিভক্রকপত্র-স্বর্সঃ ।—
পারিভক্রক-পত্রোখং রসং ক্ষৌদ্রযুতং পিবেৎ ।
পারিভক্রপত্র-স্বর্ম।

পালিদাদাদারের পাভার রস মধু সহযোগে সেবন করিলে ক্রিমি সকল বিনাষ্ট হয়।

বিভ্ঈ-চূর্ণমৃ।—
লিহাৎ কৌদ্রেণ বৈভ্জং চূর্ণং ক্রিমিহরং পরমৃ॥
বিভ্রন্তন।

বিড়ঙ্গচূপ মধুসহ মিশ্রিত করিয়া লেছনপূর্ব্বক সেবন করিলে, ক্রিমি সকল নুষ্ট হয়।

পলাশ-যোগ।—

পলাশবীজ স্বরসং পিবেদ্বা ক্ষৌদ্র-সংযুত্ম। পিবেতদ্বীজচুর্ণয়া তক্রেণ ক্রিমিনাশনম্॥ পলাশযোগ।

প্লাশবীজের স্বরস মধুসহবোগে অথবা পলাশবীজচূর্ণ তক্তেম্ব সহিত সেবন করিলে কোঠজাত ক্রিমিসমূহ অভিসত্তর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

[ot]

বিভূঙ্গন্তমৃ ৷---

ত্রিকলায়াক্রয়ংপ্রস্থাবিতৃঙ্গপ্রস্থ এব চ।
দ্বিপলং দশমূলক লাভতঃ সমুপাচরেৎ ॥
পাদশেবে জলদ্যোগে শৃতে সপির্বিপাচয়েং।
প্রস্থোন্তিং সিমুযুতং তৎপরং ক্রিমিনাশনম্॥
বিভূত্বয়তমেতচ্চ লিছাৎ শর্করয়া সহ।
সর্বান্ ক্রিমীন্ প্রপুদতি বজ্রং মুক্তমিবাসুরান্॥
বিভূত্বত।

হরীতকী /২ ছুইদের, আমলকী /২ ছুইদের, বহেড়া /২ ছুইদের, বিড়ঙ্গ /২ ছুইদের এবং বেল, শোণা, গান্তীর, পাকল, গণিয়ারি, গোক্ষুর, ব্যাকুড়, কন্টকারী, শালপাণী ও চাকুলে ; এই ১০ দশ্টী দ্রন্য প্রভ্যেকে ২ পল অর্ধাৎ যোলভোলা ; সমুদায় দ্রব্যগুলি কুট্টিত করিয়া ৬৪ চৌষট্টিদের জল সহ-যোগে পাক করিয়া, চতুর্পাংশ অর্ধাৎ ১৬ যোলদের অবশিষ্ট থাকিতে নামা-ইবে। এই ক্লাথসহ /৪ চারিদের গব্যন্থত যথানিয়মে পাক করিয়া /২ ছুই-দের সৈন্ধবলবণ চূর্ণ প্রক্রেপ দিবে। ইহার নাম বিড়ঙ্গন্থত। এই ন্থত উপযুক্ত মাত্রার সেবন করিলে ক্রিমি সকল বিনষ্ট হয়। ইহা শার্করা সহযোগে পান করিলে, ইন্দ্র দেব কর্ত্বক নিক্ষিপ্ত বক্র দ্বারা অন্তর সমূহ বিনষ্টের ক্রায়, সকল্প-প্রকার ক্রিমি বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ত্রিফলামূতম্।—
ত্রিফলা ত্রিইতা দন্তী বচা কাম্পিল্লকং তথা।
সিদ্ধমেতি র্গবাং মূত্রে সর্পিঃ ক্রিমিবিনাশনম্॥
ত্রিফলামূত।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, তেউড়ী, দম্ভী, বচ, কমলাগুঁড়ি; এই সকল কল্জন্তব্য সমভাগে সমস্তে /২ ছুইসের, গোমূত্র ।৬ যোলসের এবং গব্যয়ত /৪ চারিসের; যথানিরমে এই ছত পাক করিয়া, প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রার দেবন করিলে ক্রিমি সমূহ বিনম্ভ হইরা থাকে।

বিড়ঙ্গতৈলম্ ৷—

বিড়ঙ্গগন্ধকশিল। দিদ্ধং সুরভী কলেন কটুতিলং। আজন্ম নয়তি নাশং লিখ্যাসহিতান্ত যুকান্ত॥ বিড়ঙ্গতৈল।

বিড়ন্ত, গন্ধক, মন: শিলা ; এই দ্রব্যত্তর কল্কস্বরূপ কুটিত সমান পরি-মাণে সমুদারে /১ একদের, স্থরভীজল (গোমূত্র)।৬ বোলসের, কটুতৈল-(সর্বণতৈল) /৪ চারিদের ; যথানিয়মে এই ভৈল পাককরতঃ, মস্তকে মর্দ্ধন করিলে, যুক (উকন) ও লিখ্যা (ডেঙ্গর) ক্রিমি সকল মুভ হইয়া পত্তিত হইয়া যায়।

ধৃস্তরতৈলম্।—
ধৃস্তরপত্রকল্কেন তদ্রদেনচ সাধিতং।
তৈলমভাঙ্গমাত্রেণ যুকাং নাশয়তি ধ্রুবম্॥
ধ্রু রভৈল।

ধৃস্ত রতৈল।
উত্তমরূপে কৃটিত ধৃতুরার পাতা কলকদ্বরূপ /১ একদের, ধৃতুরাপাতার রস /১ একদের এবং কটুতৈল /৪ চারিদের; যথানিয়মে এই তৈল পাক করিয়া, মর্দন করিলে মস্তকের যুক ক্রিমি নকল অতি সত্বর মৃত হইয়। পতিত হইয়া যায়।

ক্রিমিমুদ্গারঃ।—

ক্রেণে রদ্ধিং রসগন্ধকা জমোদাবিড়ক্ষং বিষমুষ্টিকা চ।
পলাশবীজঞ্চ বিচূর্ণমন্ত নিক্ষপ্রমাণং মধুনাবলী চুম্ ॥
পিবেৎক্ষায়ং ঘনজং তদূর্দ্ধং রসোহয়মুক্তঃ ক্রিমিমুদারাখ্যঃ।
ক্রিমীরিহন্তি ক্রিমিজাংশ্চ রোগান্ সন্দীপরত্যয়িময়ং তিরাতাৎ॥
ক্রিমিমুদার।

পারদ ২ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, বন্ধমানী ৩ ভাগ, বিড্লু ৪ ভাগ, বিষ্
মৃষ্টিকা (বিষদোড়ী বা কুচিলা) ৫ ভাগ এবং পলাশবীজ্ঞ ৬ ভাগ; এই ৬টী
দ্রব্য গ্রহণপূর্বক উত্তমপ্রকারে চুর্ণিত করিয়া, জ্বল সহযোগে মর্দ্দিত করিয়া
৪ মাধা মাজায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা খটিকা
মধুসহ সেবন করিবে; এবং তৎপরেই মুথার কাথ পান করিবে। ইহা দ্বারা
৩ রাত্তি মধ্যেই ক্রিমি সকল ও ক্রিমিজ রোগ সমূহ বিনক্ত হয়; এবং ইহাদারা
অভ্যন্ত অগ্নি সন্দীপিত হইয়া থাকেঃ।

ক্রিমিরিপুরসঃ।—

শুদ্ধস্তমিক্রষর্বই চাজমোদা মনঃশিলা।
পলাশবীজং গন্ধক দেবদান্যা দ্রবৈদ্দিনং ॥
সংমদ্দী ভক্ষয়েরিতাং মুদাপণীরিসৈঃ সহ।
সিতাযুক্তং পিবেচারু ক্রিমিপাতো ভবতালম্ ॥
কিমিরিপুরন।

পারদ, গুন্ধক, ইন্দ্রযাব, বনষমানী, মনঃশিলা ও পলাশবীজ; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক চুর্নিড করিয়া, দেবদানী (ছন্ডিছোষার) রস দ্বারা মর্দ্দনপূর্বক ২ মাষা মাত্রার বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রভাছ ইহার একটা করিয়া বড়ী চিনিসংযুক্ত মুগানীর রস সহযোগে সেবন করিলে, কোঠজ ক্রিমি সকল নির্গত হইয়া যায়।

की हे भटकी तम ।--

শুদ্ধসূত শুদ্ধগন্ধ মজমোদা বিভূপকং।
বিষমুষ্টি ব্ৰহ্মদণ্ডী যথাক্ৰম গুণোভৱম্॥
চুণয়েন্ মধুনা মিশ্ৰং নিকৈকং ক্ৰিমিজিন্তবেৎ।
কীটমৰ্দ্দো রসো নাম মুম্ভাকাথং পিবেদনু॥

ইতি এরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণে। ক্রিম্যধিকারঃ।

ইতি ন্বমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

की वेगर्मद्रम्।

শোধিত পারন > একভাগ, শোধিতগন্ধক ২ গ্রইভাগ, বন্যমানী ৩ তিন্
ভাগ, বিড্লা ৪ চারিভাগ, বিষমুক্তি (কুচিলা) ৫ পাঁচভাগ এবং বামনহাট্ট
৬ ছয়ভাগ; এই সকল অব্যগুলি চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করতঃ জলসা
মর্দ্দনপূর্বক নিষ্ক অর্থাৎ ॥•অর্দ্ধতোলা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতি
দিন ইহার একটী করিয়া বটীকা মধুসহ সেবন করিবে। এবং পশ্চাৎ মুখা
ক্বাথ পান করিবে। ইহাতে কোষ্ঠগত ক্রিমি সকল নম্ট হুইয়া যায়।

ইতি জ্ঞীরামদাণিক্য দেন চিরচিত্ত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এস্থে ক্রিমি-অধিকারে নবম-অধ্যায় সমাপ্ত।

मगरगार्थाग्रः।

অথ পাঞ্ছ-কামলা-হলীমকাধিকারঃ।

পাণ্ডুরোগ-চিকিৎসা।—

সাধ্যম্প্র পাণ্ড্রাময়িনং সমীক্ষা স্নিগ্ধং স্থতেনোর্দ্ধমধশ্চ শুদ্ধম্ । সম্পাদক্ষেৎ ক্ষোদ্রসূত প্রগাট্ট র্হরীতকীচুর্গময়ৈঃ প্রয়োটগঃ॥ অতঃপর পাণ্ডু, কামলা ও হলীমক রোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে। পাণ্ডুরোগ-চিকিৎসা।

স্থসাধ্য পাণ্ডুরোগীকে, চিকিৎসার মধ্যে প্রথমতঃ পঞ্চতিজ্ঞানি ম্বত সেবন, বমন ও বিরেচন করাইয়া তৎপরে মৃত ও মধুসহযোগে হরীতকীচূর্ন প্রভৃতি সেবন করিতে দিবে।

দোষভেদেন-চিকিৎসা-বিধিঃ।—
বিধিঃ স্নিগ্ধস্ত বাতোপে ভিক্তঃ শীভস্ত পৈভিকে।
শৈল্পিকে কটুরুকোক্ষঃ কার্য্যো মিশ্রস্ত মিশ্রকে॥
বাতাদি দোষভেদে পাণ্ডুরোগের চিকিৎসা।

বাতজ পাণ্ডুরোগে স্নিঞ্চক্রিরা, পৈত্তিক পাণ্ডুরোগে তিক্ত অথচ শীতল ক্রিয়া, সৈত্মিক পাণ্ডুরোগে কটু, কক্ষ ও উষ্ণ ক্রিয়া এবং বাতপিতাদি মিশ্রিড দ্বন্ধ বা সন্নিপাতিকাদি পাণ্ডুরোগে মিশ্রক্রিয়া অর্থাৎ বাতপিতাদি উভ্যের বা ত্রিদোষের মিশ্রিত ক্রিয়া করিবে।

ন্বত প্রয়োগঃ।—

পিবেদ্রতয়া রজনী বিপকং যত্তৈকলং তৈন্দুকমেব বাপি। বিরেচনদ্রব্যক্তং পিবেদ্বা যোগাংশ্চ বৈরেচনিকান্ স্থতেন ॥ পাণুরোগে মৃত-প্রোগ।

পাণ্ডুরোগীকে হরিদ্রার কাথ ও কল্ক সহযোগে সিদ্ধন্ত, ত্রিকলার কাথ ও কল্কসিদ্ধন্ত, বিরেচক দ্রব্য সহ পক্ষন্ত, বাডরোগাধিকারোক্ত ভৈন্দুক-দ্বত অথবা মৃত্যোগে বিরেচক দ্রব্য সেবন করিতে দিবে।

> পৈত্তিক-পাণ্ডুরোগদ্য-চিকিৎদা।— দ্বিশর্করং ত্রিরচ্চূর্ণং পলার্দ্ধং পৈত্তিকে পিবেৎ।

পৈত্তিক পাণ্ডুরোগের চিকিৎসা।

২ ভাগ ইন্কু চিনি ও ২ ভাগ ডেউড়ীচূর্ন; এই উভন্ন দ্রব্য মিলিড ৪ ভোলা মাজার পৈত্তিক পাণ্ডুরোগীকে দেবন করিতে দিবে।

ক্লৈক্মিক-পাত্ররোগস্য-চিকিৎসা।—

ককপাও স্তু গোমূত্রযুক্তাং ক্লিরাং হরীতকীমৃ॥ মাগরং লৌহচূর্ণমা ক্লফাপথ্যা মণাশাজমৃ। গুণ্তলং বাথ মূত্রেণ ককপাও নময়ী পিবেৎ॥

লৈঘিক পাওুরোগের চিকিৎদা।

ক্ষজ পাণ্ডুরোগীকে পোষুত্রে সিদ্ধ হরীতকী প্রতিদিন > ভোলা মাত্রায় নাবন করিতে দিবে। অথবা শুগীচূর্ণ লৌহচূর্ণ, পিপুলচূর্ণ, হুরীতকীচূর্ণ, শিলাজতুচূর্ণ বা গুণ্ গুলুচূর্ণ; এই করেকটী দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রাহণপূর্বক গোমুত্র সহযোগে কক্ষপণগুরোগীকে সেবন করিতে দিবে।

মণ্ডুর-প্রয়োগঃ।—

সপ্তরাত্তং গ্রাং মূত্রৈ ভাবিতয়াপায়োরজঃ। পাণ্ডুরোগ-প্রশান্ত্যর্থং প্রসাথ পিবেল্লরঃ। মণ্ডুর-প্রয়োগ।

লৌহ মণ্ডুর ৭ সাভরাত্রি পর্যান্ত গোমুত্র হারা ভাবনা দিয়া, চূর্ণকরত: হন্ধ সহ সেবন করিলে, সকলঞ্জকার পাণ্ডুরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

ত্রিফলাদি-কাথঃ।---

কলত্তিকায়তাবাসাতিক্তা ভূনিম্ব নিম্বজঃ। কাথঃ কৌদ্রেয়ুতো হন্যাৎ পাণ্ডুরোগ্রং সকামলম্॥ ত্রিকলাদিকাথ।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, গুলঞ্চ, বাকস, কট্কী, চিরতা ও নিমছাল । এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ডোলা, পাকার্থজ্ঞল ১২ ডোলা এবং নাকাবশিষ্ট ক্লাথ ৮ ডোলা। এই ক্লাথ পান করিলে, পাণ্ডু ও কামলারোগও

হরীতকী-প্রয়োগঃ।—
পাণ্ডুরোগে সদা সেব্যা সগুড়া চ হরীতকী ॥
হরীতকীপ্রমোগ।
শুড় সহযোগে হরীতকীচ্ণ সেবন করিলে, সর্কবিধ পাণ্ডুরোগ বিনস্ট হয়।
মণ্ডুর-যোগ।

অরোমলম্ভ সম্ভপ্তং ভূরো গোমূত্র শোধিতং।

অরোমল (মণ্ডুর) তপ্ত করিয়া ক্রমান্বরে পুনঃ পুনঃ (অর্থাৎ ৭ সার্ত-বারু) গোমুলে মগ্ন করিয়া লইবে। পরে ভাছা চূর্ণ করিয়া মধু ও ছত সহ-যোগে অন্নের সহিত মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে, অত্যন্ত অগ্নি প্রদীপ্ত হয় এবং শোধ ও পাণ্ডুরোগ বিন্ধী হইয়া থাকে।

কামলা-চিকিৎসা।---

রেচনং কামলার্কশ্র স্লিগ্ধন্যদে প্রযোজয়ে । ততঃ প্রশমনী কার্যা ক্রিয়া বৈদ্যেন জানতা॥ কামলারোগণ্চিকিৎসা।

কামলা রোগীকে অথ্যে স্নেছ পান করাইয়া বিরেচন ঔষ্ধ দিবে; এবং তৎপরে প্রশমন ক্রিয়া করিবে।

ত্রিফলাদীমাং স্বর্যাঃ।—

ত্রিফলায়া গুড়ু চ্যা বা দার্ব্যা নিম্বস্থ বা রসঃ। প্রাত্ম।ক্ষিক সংযুক্তঃ শীলিতঃ কামলাপহং॥ তিফলাদির স্বর্সসমূহ।

হিফলা, গুলঞ্চ, দাৰুছরিন্দা অথবা নিমছালের রস মধুসহ প্রাতঃকালে দেবন করিলে, কামলারোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য ছইয়া থাকে।

ত্রিভণ্ডাদি-চুর্বং।—

সশর্করাং কৃষিলিনাং ত্রিভণ্ডী হিতা গ্রাকী সপ্তড়া চ শুঠী॥
• ত্রিভণ্ডাদি চুর্ণ।

ত্রিভণ্ডী (ভেড়িড়ী) মূলচূর্ণ অথবা গ্রাক্ষী (গোরক্ষচাকুলে) চূর্ণ ইকুচিনির সহিত কিম্বা শুঠীচুর্গ গুড় সহযোগে সেবন করিলে, কামলারোগ প্রশ্মিত হইয়া থাকে।

ম ত্র-প্রোগং।—

দগ্ধাক্ষকাষ্টেমল্মায়সন্তু, গোমূত্র নির্বাপিত মন্টবারান্। বিচুর্ণলীড়ং মধুনা চিরেন, কুম্ভান্তরং পাণ্ডুগদং নিহন্তি॥ মণ্ডুর অয়োগ।

মণ্ডুর প্রয়োগ।
বহেড়কাঠের অগ্নিদারা মণ্ডুর দক্ষ করিয়া, ক্রমান্তর ৮ আটবার গোমুত্র
নথা নিক্ষি করিয়া, উহার চূর্ণ মধু সহযোগে সেবন করিলে, কুন্তকামলা
সন্থা বিনষ্ট হইয়া থাকে।

অঞ্জন-প্রয়োগঃ।—

অঞ্জনং কামলার্জন্ম দ্রোণপুষ্পীরসঃ স্মতঃ।
নিশা গৈরিক ধাত্রীণাং চূর্ণং বা সংপ্রলেপয়েৎ॥
অঞ্জন-প্রয়োগ।

দ্রোণপুষ্পীর রস অথবা হরিদ্রা, গেরীমাটী ও আমলকী চূর্ণ মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া চক্ষতে অঞ্জন দিলে, পাণ্ডুরোগীর চক্ষুর বিবর্ণতা নম্ট হয়।

নশ্বপ্রাগঃ।—

নস্থং কক্ষোটমূলয়া য্রেয়ং বা জালিনীফলং॥ নস্ক-প্রয়োগ।

কাঁকরোল মূলের রস অথবা ঘোষাকলের নস্থা প্রদান করিলে, পাণ্ডু, এবং কামলা ও হলীমকরোগও শীড়াই আরোগ্য হইয়া থাকে।

হলীমক-6িকিৎসা।-

পাগুরোগ-ক্রিয়াং সর্ববাং যোজয়েচচ হলীমকে। কামলায়াঞ্চ যা দৃষ্টা সাপি কার্য্যা ভিষশ্বরৈঃ॥ হলীমক-চিকিৎনা।

পাণুরোণে ও কামলারোণে যে সকল ঔষধাদি ছিতকর বিবেচনায় প্রায়েগ করিবার বিধান করা ছইয়াছে, সেই সমস্ত ঔষধই হলীমকরোণে প্রয়োজ্য বলিয়া জানিবে।

অয়ন্তিলাদি-মোদকঃ ৷—

আয়ন্তিল ত্র্যণকোলভাগৈঃ সর্বৈঃ সমং মান্দিকধাতচুর্ণম্ । তৈর্মোদকঃ ক্ষৌদ্রযুতোহন্নতক্রং পাঞ্বাময়ে দূরগতেহপি শস্তম্॥ অয়ন্তিলাদি মোদক।

লৌহ, তিল, শুগ্ঠী, পিপুল ও দরিচ; ইহাদের চূর্ণ প্রাক্তোকে ২ তোলা এবং স্বর্ণ দাক্ষিকচূর্ণ ২০ তোলা লইরা উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া মধুদহ মোদক ক্রেন্তে করিবে। এই মোদক তক্রসংযুক্ত অন্ন দহ দেবন করিলে, বহুকালের পাপুরোগও বিনম্ভ হইরা থাকে।

শবারসচূর্ণম্।—

ক্রাধণ ত্রিফলামুস্ত বিড়ঙ্গ িত্রকাঃ সমাঃ।

নবারো রজসো ভাগান্তচ্চূর্ণং মধুসর্পিষা ॥
ভক্ষরেৎপাণ্ডু হচোগে কুষ্ঠার্শঃ কামলাপহঃ॥

নবায়সচূর্ণ।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুঠী, পিপুল, মরিচ, মুখা, বিড়ক্ষ ও রক্ত-চিডা; এই সকল জবোর চূর্ণ প্রভোকে সমান মাত্রায় এবং উহাদের সর্ব্ধ- সমষ্টির তুর্ব, লৌহচ্প গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে মিগ্রিত করিয়া, জ্বল সহ পেষণপূর্বক ৩।৪ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিলে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা। • সিকি তোলা মধু ও। • সিকিতোলা স্বত্ত সহযোগে সেবন করিলে পাণ্ডু, ছন্দ্রোগ, কুঠ, অর্শঃ ও কামলা রোগ নিশ্চয়ই বিনক্ত হইয়া থাকে।

পুনর্বামপ্রম্।—

পুনর্বাত্তিরচছু গ্রী পিপ্পলীমরিচানি চ।

িতৃঙ্গং দেবকার্চঞ্চ চিত্রকং পুক্ষরাহ্বয়ম্ ॥

তিফলা দ্বে হরিদে চ দন্তী চ চবিকা তথা।
কুটঙ্গত ফলং তিক্তা পিপ্পলীমূলমুন্তকম্ ॥

এতানি সমভাগানি মণ্ডুরং দ্বিগুণন্তভঃ।

গোমূত্রেইউগুনে পাক্ত্বা স্থাপয়েৎ স্লিশ্বভাজনে ॥

পাণ্ডু শোথোদরানাহ শ্লার্শঃ ক্রিমিশূলরুৎ ॥

পুনর্বাশগুর।

৪০ তোলা মণ্ড্র /৫পাঁচনের গোমুত্র মহ পাক করিয়া,পাক সমাপ্তিকালে পুনর্বা, তেউড়ী, গুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, বিড়ঙ্গ, দেবদারু, রক্তচিতা, পুষ্করমূল, ছরাতকী, আমলকী, বহেড়া, ছরিজা, দারুহরিজা, দন্তী, চই, ইক্সয়ব, কটুকী, পিপুলগুল এবং মুথা; ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ১ ভোলা পরিমাণে ভৎসহ মিশ্রিত করিয়া, আলোড়ন করতঃ একটী স্থিমভাগু মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই পুনর্বা মণ্ডুর প্রতিদিন ১ মাষা হইতে ৪ চারিমাষা মাত্রায় দেবন করিলে পাণ্ডু, শোখ, উদর, আনাহ, শুল, আর্দঃ ও ক্রিমিশুল নিবারিত হইয়া থাকে।

মণ্ডু-রবজ্রবটকঃ।---

পঞ্চোলং মরিচঞ্চ দেবদার ফলত্রিকম্।
বিড়ঙ্গং মুস্তযুক্তাশ্চ ভাগান্ত্রিপল সন্মিতাঃ॥
যাবস্ত্যোনি চূর্ণানি মণ্ডুরং দ্বিগুণস্ততঃ।
পক্তবাইগুণে মূত্রে ঘনীভূতে তহুদ্ধরেৎ॥
ততোহক্ষমাত্রান্ গুড়িকান্ পিবেন্তক্রেণ তক্রভুক্।
পাণ্ডুরোগং জয়ত্যেষ মন্দাগ্রিত্বমরোচকম্॥
অর্পাংসি গ্রহণীদোষমুক্ষস্তম্ভমথাপি চ।
ক্রিমিং প্লীহানমুদরং গলরোগঞ্চ নাশ্রেৎ॥
মণ্ডুরবক্সনামায়ং রোগানীক বিনাশনঃ॥
[৩৬]

্ম গুরু বক্তর টক।

৬ পল মণ্ডুর /৬ছয়েনের গোম্ত্র পাক করিয়া, পাক সমাপ্তিকালে পিপুল, পিপুলমূল, শুঠী, চই, রক্ত িতা, মরিচ, দেবদাঞ্চ, ছরীতকী, বছেড়া, জামলকী, বিড়ঙ্গ এবং মূখা; এই সকল ক্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে ১ তোলা পরিমাণে ভাছাভে নিশ্চেপ করিয়া, উত্তমরূপে মিপ্রিত করিয়া লইবে। প্রতিদিন ইছা ২ তোলা মাত্রায় তক্ত অলুপান সহ দেবন করিবে। এবং তক্তমহ জন্ম ভক্ষণ করিবে। ইছা দ্বারা পাপুরোগ, মন্দান্ত্রি, জরোচক, অর্পঃ, গ্রহণীদোষ, উক্ত-জন্ত, ক্রিমিরোগ, মীহা, উদর এবং গলবোগ বিন্তু হয়। এই মণ্ডুর বজ্রবটক অন্যান্ত সর্বপ্রবার রোগ বিনাশ করিয়া থাকে।

পাত্রস্থার নঃ।—

রসং গন্ধং মৃতং তাত্রিং জরপালক গুণ্ওলুম্।
সমাংশমাজ্যসংযুক্তাং গুড়িকাং কারয়েনিতাম্॥
একৈকাং খাদয়েনিত্যং পাণ্ডুশোথোপনুভয়ে।
শীতলক জলকামং বর্জ্জয়েৎ পাণ্ডুস্দনে॥
পাণ্ডুস্দনরস।

পারা, গন্ধক, ভাষ্ম, জয়পালবীজ এবং গুগুগুলু; এই স্কুকল দ্রবা সম-ভাগে গ্রহণপূর্ব্ধক ঘৃতসহ মর্দ্দনপূর্ব্ধক ২ রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটিকা সেবন করিলে পাণ্ডু ও শোধ-রোগ জারোগ্য হয়। এই উষধ সেবন করিয়া আদে) শীতল জল বা তাম সেবন করিবে না।

হিরণ্যগর্ভলৌহঃ।—

পলং লোহত কিট্রত্য পলং গব্যক্ত সর্পিষঃ।

দিতায়াক পলকৈব ক্ষেট্রিছাপি পলং তথা॥ '
তোলকং কান্তলোহত ত্রিকত্রয়ং সূভাবিতম্।
ততঃ পাত্রে নিধাতব্যং রৌক্রেহথ শিশিরেহথবা॥
ভাবিতং মধুসর্পির্ভ্যাং লৌহে বা মুগ্ময়ে তথা।
ভোজনাত্রে তথা মধ্যে চাত্তে চৈব প্রযোজয়েৎ॥
অনুপানং প্রদাতব্যং বুদ্ধা দোষাসুরপকম্।
কামলাপাণ্ড রোগঞ্চ শ্বয়প্রক স্থাক্তন্ম্।

হিরণ্যগর্ভকং লৌহং ক্নকাত্তেয়-বিনির্মিতম্ । মর্ত্ত্যানাং কারদিদ্ধার্থমুক্তঃ সর্বাঙ্গপুন্দরঃ॥

ইতি জ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো পাণ্ডু কামলাহলীমকরোগাধিকারঃ।

ইতি দশমোহধ্যায়ঃ স্যাপ্তঃ।

হিরণাগর্ভলোই।

লৌহমল, গব্যন্বত, চিনি ও মধু প্রত্যেকে ৮ তোলা, কান্তলৌহ, দাফচিনি, বিভৃন্ধ, মৃথা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুঠী, পিপুল ও মরিচ ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ব > তোলা; সমস্ত দ্রবাগুলি গ্রহণপূর্বক একটী লৌহপাত্তে
বা মুগ্রমণাত্রে স্থাপনপূর্বক মধু ও মৃতদ্বারা রৌদ্রে বা শিশিরে রাখিয়া ভাবনা
দিয়া লইবে। এই ঔষধ প্রতিদিন দোষান্তরূপ অম্পান বিবেচনাপূর্বক উপযুক্ত মাত্রায় ভোজনের অব্যবহিত পূর্বে, পরে বা ভোজনের মধ্যকালে পান
করিলে কামলা, পাণ্ডুরোগ ও স্থলাকণ শোধ নিবারিত হইয়া থাকে। এই
হিরণ্যগর্ভ লৌহ ক্রগতের ঋষি কর্তৃক আবিষ্কৃত হইয়াছে। ইহা সেবন দ্বারা
মানবগণের অভিশন্ত উচ্ছল কান্তি হইয়া থাকে।

ইতি এরামমাণিক্য মেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এদ্থে পাণ্ডু, কামলা ও হলীমকরোগাধিকারে দশম-অধ্যায় সমাপ্ত।

একাদশোঽধ্যায়ঃ।

অথ রক্তপিতাধিকারঃ।

বাদৌষধম্।—

বাসায়াং বিদ্যমানায়ামাশায়াং জীবিতস্ত চ। রক্তপিতী ক্ষয়ী কাদী নিরর্থমবসীদতি॥ বাদৌষধ।

এই পৃথিবীতে বাদক বিদ্যমান থাকাসত্ত্বে বক্তপিত্রোগী, ক্ষয় (যক্ষমা বা শোষ) রোগী এবং কাদরোগীর রোগ হইতে মুক্ত হইবার কিছুমাত্র আশঙ্কা নাই। অর্থাৎ বক্তপিত্ত, ক্ষয় ও কাদরোগের পক্ষে বাদক এমত উপকারী যে, অনাবিধ ঔষধ দেবন না করিয়া, কেবলমাত্র উহার (বাদকের) পত্র, মূল ও ত্বক্; উহাদের যে কোন একটীর স্বরদ বা কাথাদি দেনন করিল প্রোক্ত বক্তপিত্তাদি রোগত্রয় বিনম্ভ হইয়া থাকে।

ফল্পফলোদ্ধব রসঃ I—
সমাক্ষিকঃ ফল্পফলোদ্ধবো বা
পীতো রসঃ শোণিতমাশু হন্তি।
ফল্পলোম্ভ া

যজ্ঞ চুমুর ফলের রস মধুর সহিত সেবন ক্রিলে, রক্তপিত নিবারিত হুইয়া থাকে।

মনংযন্ত্যজ্ঞি জ-কাথঃ।—
মদয়ন্ত্যজ্ঞি জঃ কাথ শুদ্ধশৈরঃ॥
মদংযন্তাজিক্জ-কাথ।

মঙ্গিকা হক্ষের মূল ২ ভোলা, পার্কার্থ জ্বল /॥• অর্ধদের, পাকাবশিষ্ট কাথ /এ• অর্ধপোয়া। এই কাথ উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও শর্করা সহ সেবন করিলে রক্তপিত্ত রোগ প্রশমিত হয়।

নীলোৎপলাদি-চূর্ণম্ ।—
নীলোৎপল দিতা কৌদ্রং তুল্যাংশং পদ্মকেণরম্।
ক্রুলেক্ত্রিক্রানেন রক্তুপিত্তহরং পরম্।

नीतां भनामिष्ट्री।

নীলোৎপল চূর্ণ, মধু, শর্করা ও পদ্মকেশর ; এই সকল জব্য সমান পরি-মাণে তণ্ডুলোদক সহ সেবন করিলে, রক্তপিত্তরোগ নিবারিত হইর। থাকে।

উড়ুম্বরাদি চূর্ণানি।—
পকোড়ুম্বরকাশার্য-পথ্যা-খর্জ্জুবগোন্তনা।
মধুনা হন্তি সংলীচু। রক্তাপিতং পৃথক্ পৃথক্॥
উড়ুম্বরাদি চূর্ণানি।

পাকা যজ্ঞ সুমুর, গাস্তারী, হরী তকী, পি গুখেজুর ও গোন্তনী (দ্রাক্ষা) ইহাদের যে কোন একটার চূর্ন মধুসহ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে, রক্ত-পিত্ত রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

বাসাখণ্ডকুরাওঃ ৷—

পঞ্চিশচ্চপলং স্বিন্নং কুর্যাণ্ডাৎ প্রস্থা জ্যাতঃ।

আহং পলশতং খণ্ডং বাসাকাথাচকে পচেছ ॥

মুন্তধাত্তীশুভাভার্গী ত্রিস্থাবৈশ্বন্দ কার্মিকঃ।

ঐলেয়বিশ্বধন্যাকং মরিটেশ্চ পলাংশিকৈঃ॥

শিপ্পলী কুড়বকৈব মধুমানী প্রদাপয়েও।

কাসং খাসং ক্ষয়ং হিক্কাং রক্তাপিতং হলীমকম্॥

হাজোগ্যম্প্রান্ডিক গীনসক ব্যপোহতি॥

বাদাখণ্ড কুত্মাণ্ড।

পঞ্চাশপল কুত্মান্ত /৪ চারিদের দ্বতে ভাজিয়া মধুর সদৃশ বর্ণবিশিষ্ট হইলে তৎসহ, বাসকমূলের ছাল ৬৪ পল, ৬৪ দের জলের সহিত পাক করিয়া, ১৬ যোলদের থাকিতে নামাইয়া, এই ক্লাথ এবং ।২।।• সাড়েবারদের চিনি মিশ্রিত করিয়া মুত্র অগ্লিসংযোগে পাক করিবে। পাকসমান্তিকালে মুথা, আমলকী, কংশলোচন, বামনহাটী, দাকচিনি, তেজপত্র; এলাইচ; ইহা-দের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ ভোলা এবং ঐলেয় (এলবালুকা), শুঠী, ধনে ও মরিচ-চূর্ণ প্রত্যেকে ৮ ভোলা আর পিপুলচূর্ণ ৪ পল ভাহাতে নিক্ষেপ করিয়া উত্তম-রূপে আলোড়নপূর্ব্বক চূলী হইতে নামাইবে। পরে শীতল হইলে ভাহাতে /১ একসের মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। ইহা দেবন করিলে কাস, খাস, ক্লয়্ম, হিক্কা, রক্তপিত্ত, হলীমক, ছয়োগ, অমপিত্ত ও পীনসরোগ বিনষ্ট হয়।

সমশর্করং লৌহমৃ।—
লৌহাচতত্ত্ত বিং ক্ষীরমাজ্যদ্বিগুণ মুন্তমমৃ।
চূর্ণপাদস্ক বৈড়ঙ্গং দদ্যামধুদিতে সমে।
তাত্রপাত্তে শুভে পক্তা স্থাপয়েদ্ স্বতভাজনে।

মাষকাদি ক্রমেণৈব ভক্ষরেদ্বিধিপূর্বকম্ ॥ অনুপানং প্রযুঞ্জীত নারিকেলোদকাদিকম্ । রক্তপিতং জয়েতীত্র মন্লপিতং ক্ষতক্ষয়ম্ ॥ প্রকৃষ্টকান্তিজননমায়ুষাং র্ষামূভ্যম্ ॥ সমশ্বর লৌহ।

লৌহ ৪ তোলা, ছাগাইশ্ব ১৬ তোলা, মৃত ৮ তোলা এবং চিনি ৪ তোলা, এই নকল দ্রব্য একটী তামপাত্রে পাক করিয়া, পাক সমাপনকালে ১ তোলা বিভূঙ্গচূর্ণ তাহাতে প্রক্রেপ দিবে; এবং শীতল হইলে ৪ তোলা মধু মিশ্রিত করিয়া একটী মৃতাক্ত ভাজনে (পাত্রে) রাখিয়া দিবে। এই ঔষধ ১ মাষাদি পরিমাণে ক্রমান্বয়ে মাত্রা রৃদ্ধি করিয়া বিধিপূর্ব্বক সেবন করিবে; এবং নারি-কেলের জলাদি অম্পান করিবে। ইহাদারা তীব্রতর রক্তপিত্ত, অমপিত্ত ও ক্ষতক্ষর রোগ আরোগ্য হয়। অপিচ ইহা প্রকৃষ্ট কান্তিজনক এবং বল ও বীর্ষা দি-সংবর্দ্ধক।

হূর্ন-প্রলেপঃ।—

নাসা প্রব্তং রুধিরং স্বভভৃতং প্লক্ষপি উমামলকম্। দেতুরিব ভোরবেগং রুণদ্ধি মূর্দ্ধি প্রলেপেন॥ মূর্দ্ধ-প্রলেপ।

ন্বত্তমহ ভর্জিত আমলকী পেষণপূর্ব্বক রক্তপিত রোগীর মন্তকে প্রলেপ দিলে, দেতু কর্ত্বক ৰুদ্ধ জলবেগের স্থায়, নাসিকা দিয়া পরিসূত রক্ত নিবা-রিত হয়।

আমলান্যং লৌহং।-

আমলাপিপেলীমূলং তুলারা সিতরা সহ।
রক্তপিতং জয়েতীত্ত মুমপিত্রকতক্ষরম্॥
রক্তপিতহরো লৌহো যোগরাড়িতিবিশ্রুতঃ।
র্য্যোহগ্লিপিনো বল্যো মহাম্লপিত্তনাশনঃ॥
পিতোখান্ বাতপিতোখাত্মিছন্তি বিবিধান্ গদান্।

व्यागनामादनी है।

লৌহ > ভোলা, আমলকীচূর্ণ > ভোলা, পিপুল্যুল্চূর্ণ > ভোলা এবং চিনি ৩ ভোলা; সমস্ত দেবগুলি একত্রিত করিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মৃাত্রায় দেবন করিলে অতিতীব্রভর রক্তপিত্ত, অমপিত্ত এবং ক্ষতক্ষয় রোগ নিবা-রিত হয়। এই রক্তপিত্তনাশক আমলাদালৌহ যোগরাট্ বলিয়া বিখ্যাত আছে। ইহা রয়া, অগ্নিদীপক, বলকর, প্রবল অমপিত্তনাশক এবং পৈত্তিক, বাতপৈত্তিকাদি বিবিধ রোগ বিনাশ করে।

অর্কেশরোরসঃ।

মৃতং তালং মৃতং বঙ্গং মৃতাভ্রঞ্চ সমাধ্যিকম্।
অমৃতাস্বরেদ ভাবাং ত্রিসপ্তকপুটে র্ভিষক্॥
বাদাকীরবিদারীভ্যাং দেরং গুঞ্জাচতুষ্টরম্।
রক্তপিভং নিহন্ত্যাশু চন্যোপদেব-সংযুত্ম্॥
ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো
রক্তপিভাবিকারঃ।

ইতি একাদশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

অর্কেপ্তর রস।

হরিতাল লক্ষ, অন্ত ও স্বর্ণমাক্ষিক; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রার গ্রহণ করিয়া চূর্ণ করতঃ ১১ বার গুলঞ্চের রদে ভাবনা দিয়া, মৃত্ব অগ্নিমন্তাপে পুট-পাকে পাক করিয়া লইবে। ৪ রতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত্ত করিয়া, প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা বাসকপাতার রদ ও ভূমিকুস্মাণ্ডের রদের সহিত্য দেবন করিলে, বিবিধ উপদ্রব সংযুক্ত রক্তপিত্তরোগ বিন্দ্ট হয়।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" গ্রন্থে রক্তপিতাধিকারে একাদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

দুগদশো>ধ্যায়ঃ।

অথ রাজ্যক্মাধিকারঃ।

ব্রহদ্বাসাবলেহঃ।---

তুলামানায়বাসায়া জলদ্রোণে বিপাচয়েৎ। পাদশেষে রদে তিমান খণ্ডদ্য চ শতং ন্যাদেৎ ॥ শনৈমুদ্বিনা সমাক্ সিদ্ধে তত্ত প্রদাপয়েৎ। ত্রিকটু স্থ্রিস্থান্ধিশ্চ কট্ফলং মুস্তমেবচ॥ কুন্তং কম্পিল্লকং শ্বেভজীরকঞ্চ বিশেষভঃ। ত্রিব্রতা পিপ্পলীমূলং চবাং কটুকরোহিণী॥ শিবা তালীশধন্যাকং প্রত্যেকণ্ঠ দ্বিকার্হিকম্। চ্ণয়িত্ব। ক্রিপেস্কত্র শীতে মধুপলাস্টকম্। অসা মাত্রান্ততো লীচাং ভোয়মুক্তং পিবেদরু। সর্বকাসবিকারের স্থরভঙ্গে বিশেষতঃ I রাজযক্ষণি বাতাঢ়ো বাতশ্লেষ্যাপ্রয়ে তথা! আনাহে চারিমান্দ্যেচ ছদ্রোগে চ ক্ষতক্ষয়ে ॥ মূত্রকুচেছ্র চ দাহে চ শস্তো২য়ং লেহ উত্তমঃ॥ অনম্ভর রাজ্যক্ষারোগের চিকিৎসা কথিত হইতেছে।

त्रकामानल्य ।

वामकगृत्नद्र हान > २॥ । मार्एवाद्रस्तत्र, खन ७८'(नद्र, भिष ३७ (यान-দের, এই ক্লাথ এবং ১২। - সাড়েবারসের চিনি একত্রিড করিয়া পাক করিতে থাকিবে। যখন পাক সমাপ্তপ্রায় হইবে, তখন উহাতে 💖 ীু, পিপুল, মরিচ, দাক্চিনি, এলাচি, ভেজপত্র, কট্ফল, মুথা, কুড়, কমলাগুঁড়ি, শ্বেড-জীরা, ভেউড়ী, পিপুলমূল, চই, কট্কী, হরীভকী, ভালীশপত্র ও ধনে ; ইহা-দের প্রত্যেকের চূর্ণ ৪ চারিতোলা পরিমাণে প্রকেপ দিয়া আলোড়নপূর্ব্বক নামাইবে। পরে শীতল হইলে উহাতে /১ একদের মধু মিশ্রিত করিয়া लहें(व। এই छेवध প্রতিদিবদ ২ তোল। মাত্রায় উফজল অমুপান সহ দেবন করিলে, সর্ব্ধবিধ কাস, স্বরভঙ্গ, বাতল্লেম্বা, আচ্যবাত (উক্স্তন্ত), বাত--লৈখিকরোগ, আনাহ, অগ্নিমান্দ্য, হুদ্রোগ, ক্ষডক্ষয়, মূত্রকুচ্ছু ও স্নাহরোগ विनश्रे इहेन्ना थातः।

त्रह्रकमनामारेज्यम् ।—

চন্দনাগুরুতালীশ নখমঞ্জিষ্ঠপদ্দকাঃ।
মুস্তকঞ্চ শাসী লাক্ষা হরিদ্রে রক্তচন্দনম্ ॥
এষাং প্রতি পলৈঃ কল্কৈ স্তৈলার্দ্ধপাত্রকং পচেৎ।
ভাগী বাদাকটকারীবাট্যালকগুড় চিকাঃ ॥
এষাং পলশত কাথে দমভাগে জড়ীকতে।
পক্ত্বা তৈলং প্রদাতব্যং যক্ষ্মকাদনিবারণম্ ॥
কাদম্মং গরদোষদ্মং বলবর্ণাগ্রিবর্দ্ধনং।
পাপালক্ষীপ্রশামনং গ্রহদোষবিনাশনম্ ॥

त्रहळनामाटेखन ।

ভিলতৈল /৮ দের; কাথার্থ শ্বেডচন্দন, অগুরুকার্চ, তালীশপত্র, মঞ্জিন্তা, নখী, পার্কার্চ, মুখা, সদী, লাক্ষা, হরিন্দা, দাকহরিন্দা ও রক্তচন্দন; এই সকল দ্রব্য কৃটিত প্রত্যেকে ৮ ভোলা; কাথার্থ বামনহাটী, বাসকছাল, কন্ট-কারী, বেড়েলা ও গুলঞ্চ; সমভাগে সমস্তে [1211- সাড়ে বারসের, কাথার্থ জ্বল ৬৪ চৌষটিসের, পাকাবশিষ্ট ৷৬ বোলসের; এই সমস্ত দ্রব্য সহযোগে তৈলপাক করিরা, শেষপাকের লক্ষণ লক্ষিত হইলে চুন্নী হইতে নামাইবে। এই তৈল গাবে মর্দন করিলে যক্ষ্মা, কাস, গরদোব, পাপ, অলক্ষ্মী ও গ্রহ-বোষ ক্রিষ্ট হয়। এবং ইহা দারা বল, বর্ণ ও অগ্রি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

লবঙ্গাদ্যচূর্পম্।—

লবন্ধ ককোলমুশীর চন্দনং নতং সনীলোৎপলন্ধীরকং সমস্।
ক্রটিঃ সক্ষণগুরুভ্ন্ধকেশরং কণাসবিশ্বানলদং সহায়ুদম্॥
অহীক্রনাতীকলবংশলোচুরাসিতাইভাগং সমস্ক্রচ্ণিত্রম্।
স্থরোচনং তর্পনমনিদীপনং বলপ্রদং রয়তমং ত্রিদোষকুৎ॥
উরোবিবন্ধ তমকং গলগ্রহং সকাসহিক্রারুচিযক্ষ্মপীনসম্।
গ্রহণ্যতীসারভগন্বার্ক্র দং প্রমেহগুল্যাংশ্চ নিহন্তি সত্ত্রম্॥
লবন্ধান্ত্রণ।

লবন্ধ, কাঁকলা, বেণারমূল, রজ্ব্রুচন্দন, নত (তগরপাত্নকা), মীলোৎপল ও জীরা; ইহাদের প্রত্যৈকে এক একভাগ এবং ক্রটি (ছোট এলাচি), কৃষ্ণাগুৰু, ভূল (দাক্রচিনি), নাগকেশর, পিপুল, শুণ্ঠী, জ্বটামাংদী, মূখা, অনন্তমূল, জায়কল, বংশলোচন ও চিনি; ইহাদের প্রত্যেকে ৮ ভাগ; এই দমন্ত ক্রব্যগুলি এহণপূর্বক উত্তমরূপে স্থামচূর্ণ করিয়া মিশ্রিত করিয়া লইবে: এই চূর্ণ উষধ প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রায় অহ্পান বিবেচনাপূর্বক দেবন করিবে। ইহা ক্রিকর, তর্পণ, অয়িদীপক, বল্পান, র্যাত্র ও ত্রিদোব- নাশক। পরস্ত ইহা ছারা উরোবিবন্ধ, তমক শ্বাস, গলঞাছ, ফাস, ছিকা, , , অকচি, বক্ষা, পীনস, গ্রহণী, অতীসার, ভগন্দর, অর্ন্ধুন, প্রমেছ ও ওল্পরোগ সত্ত্ব নিবারিত হয়।

তালীশাদ্যোমোদকঃ।---

তালীশপত্রং মরিচং নাগরং পিপেলীশুলা।
যথোত্তরং ভাগরদ্ধা ত্রগেলে চার্দ্ধভাগিকে ॥
পিপেলাইগুণা চাত্র প্রদেয়া সিতাশর্করা।
খাসকাসাক্রচিহরং তচ্চুর্গং দীপনং পরম্ ॥
হুৎপাও গ্রহণীরোগ প্লীহশোষদ্ধরাপহম্।
ছর্দ্যতীসাররোগন্ধং মূচবাতানুলোমনম্ ॥
কম্পয়েদ্ গুড়িকাকৈব চুর্গং পজ্বাসিতোপলাম্।
গুড়িকা হুরিসংযোগাচ্চুর্পালপুতরা স্মৃতা ॥
বৈশেষণং হি পিপেলা। অন্যত্র পৈতিকাচ্ছু ভা ॥
ভালীশাদ্যমাদক।

ভালীশপত্র চূর্ণ ২ ভোলা, মরিচ্চ্র্ণ ২ ভোলা, শুগুট্র ০ ভোলা, পিপুল চূর্ণ ৪ ভোলা, বংশলোচন ৫ ভোলা, দাঞ্চিনি চূর্ণ । অর্জভোলা, এলাচি চূর্ণ ॥ অর্জভোলা এবং চিনি /॥ অর্জদের। সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রিভ করিয়া যথানিয়মে মোদক প্রস্তুভ করিবে। পাক-প্রণালী—চিনি, চিনির সমান জ্বল এবং পূর্ব্বোক্ত দ্রব্য সমুদায়ের চূর্ণ সকল যথাবিধানে পাক করিয়া গুড়িকা প্রস্তুভ করিবে। এই গুড়িকা অর্থান মোদক অগ্রিসংযোগ হেডু চূর্ণ অপেক্টা লখু হয় জ্ঞানিবে। ইহা সেবন করিলে, খাস, কাস, অক্টি, অগ্রি-মান্দ্য, হন্দ্রোগ, পাণ্ডুরোগ, প্রীহা, শোষ, ক্ষর, ছর্দ্দি ও অভীসার বিনম্ট হয় এবং ইহা দ্বারা মূঢ্বাহুর অন্থলোমন ছইয়া থাকে।

কেছ কেছ মূলের "পিপ্পালীশুভা" এই স্থানে বলেন যে, পৈত্তিক কাসে শুভাশব্দে "বংশলোচন" বুঝিতে হইবেক; কিন্তু অন্তত্ত ঐ "শুভা" শব্দ "পিপ্পালী" শব্দের বিশেষণস্বরূপ বুঝিরা লইতে হইবে।

মহামুগাকো-রসঃ।---

নিরুপং ভদাদীবর্ণং দ্বিগুণং ভদাস্তক্ষ্।
ত্রিগুণং ভদামুক্তোপং শুকপুচছং চতুগুণ্ম।
মৃতকাপ্যক পকাংশং তারভদা চতুগুণম্।
সপ্তভাগং প্রবালক রসত্লাক টদ্শম্।
সর্ববেকত সংঘদ্য ত্রিদিনং শুদ্ধবারিণা।

তং উতো গোলবৎকৃত্বা শোষরিত্বা খরাতপে।
ক্ষীরিদণ্ডেন লবলৈঃ পঞ্চভিঃ পরিপূর্ণ কৈঃ॥
আকণ্ঠ ঘটমাপূর্য্য তমধ্যে গোলকং ক্ষিপেৎ।
তমুখঞ্চ মনা রুদ্ধা পচেল্যাম-চতুইয়ম্॥
আরুষ্য চূর্নিতং শুদ্ধং প্রদেরং পূর্বভাগিকং।
বজ্রণ তদভাবে তু বৈক্রান্তং তৎসমাংশকং॥
মহামুগাঙ্কঃ খলু এষ সিদ্ধঃ জ্রীনন্দনাথ প্রকটীকৃতোহয়ম্।
বল্লেন তুল্যোমরিচাজামিশ্রঃ দেব্যোহধবা পিপ্পালকাসমেতঃ॥
তত্রোপচারঃ কর্তব্যাঃ সহক্ষ্যগদোদিতাঃ।
বল্যং রুষ্যঞ্চ ভোক্তব্যং তাজেৎশুরবিরোধিবৎ॥
ঘক্ষাণং বহরপিণং জ্রগণং গুল্যুং তথা বিদ্রেধিং।
মন্দাগ্রিং স্বরভঙ্গকাসমরুচিং বাজীশ্চ মূর্চ্ছাং ভ্রমিম্॥
অন্টাবেব মহাগদান্ গদ্যানান্ পাণ্ডাময়ান্ কাম্লাম্।
পিতার্থন্ সকলগ্রহান্ বহুবিধানন্যান্যাং শুথা নাশ্বেৎ॥

মহাযুগাস্ব্দ।

স্বৰ্ণভস্ম ১ ভাগা, রদদিন্দুর ২ ভাগা, যুক্তাভস্ম ৩ ভাগা, শুকপুচ্ছু (গন্ধক) ৪ ভাগ; স্বৰ্ণমাক্ষিক ৫ ভাগ, রৌপ্য ৪ ভাগ, প্রবাল ডস্ম ৭ ভাগ এবং দোহাগার থৈ ২ ভাগ ; এই দকল বস্ত গ্রহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চুর্নিত করতঃ ৩ দিবস পর্য্যন্ত টাবালেবুর রসে মর্দ্দন করিয়া গোলাকার করিবে। তৎপরে ঐ গোলক ১ প্রহর হুর্যাতপে শুদ্ধ করিয়া মুখা মধ্যে ৪ প্রহর কাল লবণ ষল্পে পাক করিয়া লইবে। তদভন্তর শীতল হইলে, ঔষধ গ্রহণপূর্বক ভাহার দহিত 🔊 ভাগ হীরক অথবা হীরকের অভাবে বৈক্রান্ত মিঞ্জিভ করিয়া উভ্যত্তপে জল মহ পেষণপূর্বক ১ রতি মাতার বটীকা গুস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী করিয়া বটীকা মরিচ্চূর্ণ অথবা পিপুলচূর্ণ মিজিত মৃত সহ-যোগে দেবন করিবে। এই ঔষধ দেবনপূর্বক ছড়াদি বলকর জব্য আহার করা ও ক্ষয়রোগোক্ত বিধি অন্নুদারে চলা কর্ত্তব্য। এবং শুরবিয়েখি কার্য্য সকল অর্থাৎ ব্যায়াম, মৈথুনাদি পরিত্যাগ করিবে। ইহা দ্বারা বছবিধ মক্ষা, জর, গুলা, বিদ্রধি, মন্দায়ি, স্বরভঙ্গ, কাস, অঞ্চি, বমি, মুচ্ছা, ভ্রমি, জাই-ध्यकांत्र महानाशि वार्थाव जेनाम, कूर्छ, ताख्यक्या, श्वाम, मधूरमह, जगन्द्र, जिन्त ও অশ্বরী-এই অইবিধা পাণ্ডু, কামলা, পিত্তরোগ, মলবদ্ধতা এবং অস্তাত্ত विविध द्वांग विवर्धे हत्र । এই महासूगी इत्रम नामक छेवधी भूताकारण जैनन्त-ৰাথ কৰ্ত্বক প্ৰকাশিত হইয়াছে।

(वागिवानित्नोदम्।--

ব্যোষং শতাবরীধাত্রী ত্রিফলা দ্বে বলে তথা।
সর্বাময়হরে: যোগঃ সোহয়ং লৌহরজোহম্বিতঃ ॥
তেতদক্ষদ্বাং হত্তি কণ্ঠজাং বিবিধরকাশ্।
রাজযক্ষাণ্যত্তাং বাতস্তন্ত্রমথাদিত্য্॥
ব্যোষাদি-লৌছ।

শুণী, পিপুল, মরিচ, শতাবরী, বহেড়া, হরীতকী, বেড়েলা ও গোরক্ষচাক্লে; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ সমান পরিমানে, আমলকী ২ ভাগ, এবং সর্ব্ব সমষ্টির সমান লৌহ চূর্ণ একত্র মিশ্রিত করিয়া, জল সহ বাটিয়া ৪ ডোলা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার একটী করিয়া বটীকা দেবন করিলে, বহুবিধ কুষ্ঠরোগ, রাজ্যকা, বাতশুস্ত ও অর্দিত রোগ আরোগ্য হয়। এমন কি এই ব্যোষাদি লৌহ সকলপ্রকার রোগনাশক বলিয়া জানিবে।

ক্ষরকেশরী।---

ত্রিকটুত্রিফলৈলাভির্জাতিফল লবঙ্গকৈঃ।
নবভাগোত্মিতং তুল্যং লৌহং পারদ-সিন্দুরম্॥
মধুনা ক্ষররোগানাং হন্তায়ং ক্ষরকেশরী॥
ক্ষয়কেশরী।

শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, ছোট এলাচি, জাতি-ফল এবং লবঙ্গ , এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ১ ভাগ এবং লোহ ও রসদিন্দুর প্রত্যেকে ১ভাগ ; সমস্তদ্রব্য গুলি গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া জলসহ পেষণপূর্বক ৩।৪ রভি পরিমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী বটীকা মধুর সহিত সেবন করিলে, ক্ষয়রোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে। এই ক্ষয়কেশরী বটীকা ক্ষয়রোগর (ফ্রমার) পাক্ষে মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

রহৎকনকমুন্দরঃ।--

রসভসাচতুর্থাংশং হেমভসাপ্রকলপারে ।
তালকং রসকং তুথাং মান্দিকং গন্ধকং শিলা॥
রসসমানি যুঞ্জীত বিষণারদটঙ্গণম্।
দিনৈকং ক্রমেণেব তু তৎসর্বাং মর্দ্রেদ্ দৃঢ়ম্॥
অর্কন্দীরং জয়ন্তী চ ভঙ্গবাসা চ লাঙ্গলী।
অগন্তিচিত্রকং পাঠা মর্দ্যমেষাং দ্রেবিঃ পৃথক্॥
অনৃত্থ গোলকং কৃত্যা স্বেদয়েচ্চ মুগান্ধবং।
ক্ষয়ং হন্তি মহাতীব্রং রসঃ ক্রক্তম্মারঃ॥

সরিপাতে ২প্যয়ং দেয়া দ্রুকসার সৈত্তথা।
বাতগুলো চ শূলে চ মুত্বিলেন যোজিতঃ॥
চদ্দনং মধুকং ক্টীর পীতং ক্রধির-বান্তিজিৎ।
তৃঙ্গরাজসা পত্তন্ত চূর্নিতং মধুনা সহ॥
গোলকং ধার্য়ে দক্তে কাসারি উপ্রশান্তয়ে।
পিবেদ্বান্তি প্রশান্ত্যেণং ক্ষেত্রি ভিন্ন ক্রহার সম্॥

ইতি জ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো রাজযক্ষ্মাধিকারঃ।

ইতি দ্বাদশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

রুহৎ কনকস্পর।

প্রবিভন্ম। • সিকিভাগ, হরিতাল, খর্পর, তুঁতে, স্বর্ণমান্ধিক, গান্ধক, মনঃশিলা, বিব, পারদ ও সোহাগার থৈ প্রত্যেকে ১ একভাগ; সমস্ত দ্রবাগুলি
উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া, এ : দিন ক্রমান্থরে আকন্দের আঠা, জরস্তী, ভূদ্ধরান্ত,
রাসক, বিষলাঙ্গলিয়া, বকফুলের পাতা, রক্তচিতা ও আকনাদি ইহাদের
রসহারা মর্দনপূর্বাক গোলক করিয়া, অন্ধ্যুয়ামধ্যে রাখিয়া মুগান্ধরেশের ক্রায়
অগ্নিসংযোগে পুটপাক দিবে। তৎপরে শীতল হইলে, ঔষধ গ্রহণ করিয়া
পেষণপূর্বাক ৪ রতি মাত্রায় বটীক। প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক
একটী বটীকা আদার রুদের সহিত সেবন করিলে সাগ্নিপাতিকরোগ, মৃত ও
বেলশুঠসহ সেবনে বাতগুল্ম ও শূলরোগ, রক্তচন্দন, যক্তিমধু ও হৃদ্ধ অম্পূণান সহ সেবন করিলে রক্তব্যন, ভূদ্ধরাজের পত্রচ্ব ও মধুসহ মিশ্রিত
করত: গোলক করিয়া মুখে ধারণ করিলে কাসরোগ এবং মধু ও গুলক্ষের
রস সহ সেবন করিলে বিশ্রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বির্টিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এত্থে বাজ্যক্ষমাধিকারে দ্বাদশ অধ্যার সমাপ্ত।

ত্রোদশোঽধ্যায়ঃ।

তাথ কাসাধিকারঃ।

দশমূলী-কষায়।—
কাসখাস প্রশমনঃ পাশ্বস্তুলনাশনঃ।
দশমূলীকষায়স্ত্র পুক্ষরেণাবচুর্নিতঃ।
অন্তর কাসরোগের চিকিৎসা ক্থিত হইতেছে।

দশমূলী-কষায়।

দশমূলী অর্থাৎ, বেল, শোণা, গান্তারী, পাঞ্চল, গণিয়ারী, গোক্ষুর, চাকুলে, বাাকুড়, কন্টকারী ও শালপানি; এই সমস্ত দ্রব্য কুট্রিড সমভাগে নমস্তে ২ হৃইতোলা, পাকার্থ জল /॥০ অর্ধদের এবং পাকাবশিন্ট রুগথ //০ এর্দ্রপোয়া। এই রুগথ প্রতিদিন প্রাত্তকালে ।• সিকিতোলা পুষ্ণরমূল চূর্ণ এবং অ্থবা অভাবে কুড়চূর্গ সহ পান করিলে কাস, শ্বাস,পার্শ্বলু এবং হ্লাঞ্জানুল থিনন্ট হইয়া থাকে।

বাসাবলেহঃ।---

বাসকন্ম রসপ্রস্থে মানিকা সিতশর্করা।
পিপেলী দ্বিপলকৈব দত্ত্বা মুদ্ধানা পচেৎ ॥
লেহীভূতে ততঃ পশ্চাচ্ছীতে কৌদ্রপলাইকম্।
দত্ত্বাবতারয়েদৈনো মাত্রয়া লেহ উভ্নঃ ॥
নিহন্তি রাজযক্ষাণং কাসং শ্বাসঞ্চ দার্রন্ম্।
পার্শন্লং হচ্চু লঞ্চ রক্তপিভদ্ধরন্ত্র্থা॥
বাসাবলেহ।

বাসকছাল /২হুইসের, পার্কার্থজল ।৬ বোলসের এবং অবশিষ্ট কাথ /৪ গারিসের। এই কাথ ছাকিয়া লইরা, তাহার সহিত মানিকা অর্থাৎ /১ এক-সের চিনি মিশ্রিত করিরা, মৃত্র অগ্নিসংযোগে পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে লেহবৎ গাঁচ হইয়াছে, তখন উহাতে ২ পল পিপুলচ্র্ণ প্রক্ষেপ দিয়া উত্তমরূপে মিশ্রণপূর্বক নামাইবে। তদনস্তর শীতল হইলে, উহাতে /১ এক-শের মধু মিশ্রিত করিরা লইবে। এই বাসাবলেহ উপযুক্ত মাত্রায় প্রতিদিন সেবন করিলে রাজ্যক্ষা, কাস, খাস, পার্খনূল, ছদরশূল, রক্তপিত ও অর আবোগ্য হয়।

চন্দৰাদ্যতৈলম্।---

চন্দনাম্বনথং বাপাং যন্তিলৈলেরপদাকম্।
মঞ্জিষ্ঠাসরলং দারু শটোলাপৃতিকেশরম্॥
পিত্রং তৈলং মুরামাংশী কক্ষোলং বনিতামুদম্।
হরিদ্রে শারিবে তিক্তা লবঙ্গাগুরুকুঙ্গুমম্॥
ত্বগ্রেণুনলিকাভিস্ত তৈলং মস্ত চতুর্গুণম্।
লাক্ষারসসমং ফিদ্রং গ্রহম্বং বলবর্ণকুৎ॥
অপস্থারজ্বোমাদক্ত্যালক্ষ্মীবিনাশন্ম্।
ভায়ুঃ পৃষ্টিকরকৈব বশীকরণমুভ্যম্॥

ठन्मनामारे उला।

ভিলতৈল /৪ চারিসের, লাক্ষারদ /৪ চারিসের, দথিরমাত ।৬ যোলদের: কল্কার্থ রক্তচন্দন, বালা, নখী, বাপ্য (কুড়), যষ্টিমধু, শৈলজ, পদ্দকার্চ, মঞ্জিচা, সরলকার্চ, দেবদাককার্চ, সটী, পৃত্তি (গন্ধভাদালিয়া), নাগকেশর, ভেজপত্র, ভৈল (শিলারম), মুরামাংসী, জটামাংসী, কাঁকলা, বলিভা
(প্রিয়কু), মুথা, ছরিদ্রা, দাক্ষহরিদ্রা, অনস্তমূল, শ্ঠামালতা, কট্কী, লবদ্ধ,
অগুককার্চ, কুছুম, দাক্ষ্চিনি, রেণুকা ও নালুকা; সমভাগে সমস্তে /১ একদের। এই সকল দ্রব্য সহযোগে ভৈল পাক করিবে। এই চন্দনাদ্যভৈল
গাত্রে মর্দন করিলে এইদোম, অপস্মার রোগ, জ্বর ও উন্মাদাদি রোগ বিনষ্ট
হয়। পরস্ত ইহা বল, বর্গ, আয়ুঃ ও পুষ্টি বর্জক এবং উত্তম বশীকরণ ইয়ধ।

. মরিচাদ্যচূর্ণম্।—

কংঃ কংগ্রেমথোপলং পলদ্বয়মথার্দ্ধকংক।
মরিচ্সাপিপেলীনাং দাড়িমগুড়্যাবশ্কানাং॥
সাকৌষধৈরসাধ্যা যে কাসাঃ সক্বৈবদ্যবিনিমুক্তাঃ।
অপিপূরং ছর্দ্দয়তামপি তেবামিদমৌষধং পথ্যম্॥

মরিচাদ্যচূর্।

মরিচচ্ণ ২ তোলা, পিপুলচ্র্ল ১ তোলা, দাড়িমফলের খোদা চ্র্ল ৮ ডোলা, গুড় ৪ চারিভোলা এবং যবক্ষার চ্র্প ১ তোলা; সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রিক করিয়া, উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে, অফ্রবিধ উবধ সমূহে বিমক্ট হয় নাই, এমত অসাধ্য কাসরোগ পর্যান্ত নিশ্রেই প্রশমিত হয়। পরস্ত ইহাছারা রক্তব্যন অভিসন্থরই নিবারিত হইয়া থাকে।

সম্পর্করচুর্বম্ ৷—

लवक्रका डीकन भिल्लानी मार जो गान् धकल्ला कम या न मी या मू পলার্দ্ধকেং মরিচশু দদ্যাৎ পলানি চত্তারি মহৌষধশু॥ দিতা সমং চুর্ণমিদং প্রদন্ধ রোগানিমানাশু বলালিহন্যাৎ। কাগজ্বারোচকদেহ গুলা খাসারিমান্য গ্রহণী প্রদোশান্॥ শ সমশকরচ্ণ।

लवक, खाछीकल, भिभूल इंशामत हुन श्राखातक २ (छाला, मित्रहर्न ৪ চারিভোলা, শুঠীচূর্ণ ৩২ ভোলা এবং সমস্ত চূর্ণ সমষ্টির সমান চিমি এছণ-পুর্বাক সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করত: উত্তমরূপে মিপ্রিত করিয়া লইবে। **ब**ई हुर्न डेयध डेशयुक्त मोजाय (मरन कतित्त काम, खत, खताहक, त्मह, खन्य, श्वाम, व्यक्षिमान्ता ও अश्नीद्वाग विनश्चे इत्र ।

এলানিচূর্ণম্।— এলাত্তনোনাগপুষ্পং মরিচং টঙ্গপঙ্কণা। যথোত্তরং ভাগর্দ্ধা চুর্পস্ত দিত্যাসমম্॥ গ্রহণ্যশেষক্ষণ্ডল্ম রক্তশিত্তকফাপহম্। কণ্ঠরোগারতিহরং প্রীহরোগহরং পর্য ॥ এলাদিচূর্ণ।

ছোটএলাচি চূর্ণ > ভোলা, দাঞ্চিনি চূর্ণ ২ ভোলা, নাগকেশর ৩ ভোলা, मतिक्रृन, 8 कार्ति जाना, माद्यागात्र देथ ६ (खाना, शिशन कृत ७ (जाना अवः চিনি ২১ তোলা, সমস্ত দ্রগগুলি এইণপুর্বক উত্তমরূপে চুর্ণকরতঃ মিঞ্জিত क्रिया लहेरत। এই এलापिहूर्ण छैया उर्शयुक्त माठाय (मरन क्रिल अरगी, অর্ণঃ, যক্ষাং, গুলা, রক্তপিত্ত, কফ, কণ্ঠরোগ, অরুচি ও প্লীহারোগ আরোগ্য **更**羽 |

রাজমুগাকঃ !--

রসভন্মত্রয়োভাগা ভাগৈকং হেমভন্মকম্। মৃতভাত্মত ভাগৈকং শিলা গ্ৰুগন্ধকভালম্॥ প্রতিভাগদ্বয়ং দিদ্ধমেকীক্লভাবিচূর্ণয়েং। বরাটীংপুরয়েতেন অজাক্ষীরেণ উঙ্গণুম্॥ পিষ্টা তেন মুখং রুদ্ধা মৃদ্রাণ্ডোপরি রোধয়েৎ। শুকং গজপুটে পাচ্যং চুর্ণয়েৎ স্বাঙ্গণীতলম্॥ রদোরাজমুগাকো২য়ং চতুত গ্রঃ ক্ষয়াপহঃ। मगिकः निश्ननीटकोटेकर्यतिरेहरकामविश्मणा॥ সন্নতৈর্দাপরেদ্বাত-পীত্তশ্লোভবে করে।

রাজযুগাব।

বর।টিকা-প্রভেদঃ।—
পীতাভা এন্থিলা পৃষ্ঠে দীর্ঘন্তা বরাটিকা।
দার্দ্ধনিকভবা শ্রেষ্ঠা নিকভবা চ মধ্যমা।
পাদোননিকভাবাচ কনিষ্ঠা পরিকীর্তিত।।
মানানুক্তৌবিশুদ্ধঃ স্থাৎগ্রাহ্যাঃ সুয়ং পুরাণোচিতাঃ॥
বরাটিকা (কড়ি) প্রভেদ।

যে বরাটিকা অর্থাৎ কড়ি পীতবর্গ, এন্থিবিশিষ্ট এবং পৃষ্ঠদেশে দীর্বন্ধশালী : তাছা পরিমাণে ৬ মাষা ছইলে, শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ বড় বলিয়া জানিবে ;
পরিমাণে ৪ মাষা ছইলে মধ্যম এবং ০ মাষা ছইলে কনিষ্ঠ অর্থাৎ হীন বলিয়া
জানিবে । যে স্থলে বরাটিকার এহণ বিধি আছে, অথচ ভাছার পরিমাণ
লিখিত নাই, যে স্থলে শ্রেষ্ঠ বরাটিকাই এহণ করিবে ।

· শান্তরীবটী ৷---

কিতবানস্যোকী জং নাগবঙ্গক হরীতকী।
আদ্র কির সেনৈব গুটিকা কাথ্যা কলায়বং॥
আদ্র কি করসৈভু ক্ত্বা পীত্মা চ শীতলং পরঃ।
কাসং শাসং ককং হন্তি তথৈব সান্নিপাতিকম্॥
অঙ্গানাং বর্দ্ধনং হ্বরাং বালানাক স্থাবহম্।
গুড়িকা শান্তরী নাম শন্তুনা পরিকীর্তিতা॥

শান্তরীবটী।

ধৃতুরার বীজ, জীরক্বীজ, নীসা, বন্ধ ও হরীতকী; এই নকল মাধ্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ, আনার রুসের সহিত সর্ক্ষিত করিয়া কলায় প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটী আবার রদের সহিত দেবন করিয়া পশ্চাৎ শীতলজল অন্তপান করিবে। ইহা দারা কাস, খাস, কফ ও সারিপাতিক রোগ সকল বিনই হয়। পরস্ত এই ঔষধ বালকদিগকে দেবন করাইলে, তাহাদের অঙ্গ বর্দ্ধিত (দেহ পুই) হইয়া খাকে। এই শান্তরীবটিক। পুরাকালে স্বায়ং শস্তু কর্ত্বক কথিত হইয়াছে।

পুরকরবটী।—

সুত্রকান্দ্রিগুণং গদ্ধং একধা কজ্জলীক্তম্।
ত্রিকটু ত্রিফলাচূর্ণং প্রত্যেকং সুত্রসন্মিতম্।
অজাগনীরে সমে ভাবাং বটিকাংকর্য়েন্ত্রিযক্।
আদ্রকেন সমং ভাবাং শীতং তোরং শিবেদরু॥
কাসশ্বানপ্রনমনী বিশেষাদ্যাবর্দ্ধনী।
ইয়ং যদি সদা সেব্যা তদা আদ্যোগসাধনী।
হন্দোহশি তরুণঃ শক্তঃ জীশতেষু র্ষায়তে॥
পর্জর্বটী।

পার। ১ ভাগ এবং গদ্ধক ২ ভাগ একত্রকরতঃ মর্দ্দনপূর্বক কজ্ঞলী প্রস্তুত করিবে। পরে তৎসহ শুঠা, পিপুল, মরিচ, ছরীতকা, আমলকা, বছেড়া; ইহাদের প্রত্যেকের ১ একভাগ করিয়া মিশ্রিত করতঃ, ৭ মাতবার ছাগত্বরে ও ৭ মাতবার আদাররুসে ভাবনা দিয়া কলায় প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটী প্রতিদিন আদার রুসের সহিত গেবন করিয়া, পাশ্রাৎ শীতলজ্জ অনুপান করিবে। ইহা দ্বারা কাস ও শ্বাসরোগ নই হয় এবং জঠরাগ্রি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। এই পুরন্দরবটা নিয়ত গেবন করিলে রন্ধ্ব ব্যক্তিও তঞ্কণ, অতীব দূব শ্রীরবিশিক্ট ও শত শত প্রত্তীসহ সম্বাদে সক্ষম হইয়া থাকে।

কাসসংহারতিরবঃ।—
রসগন্ধকতান্ত্রাণি শছ্টপ্রণলোহক্য।
মরিতং কুঠভালীশং জাতীফললবসক্য॥
কার্ষিকং চুর্নানায় দওষন্ত্র বিভাবনা।
ভেকপর্ণী কেশরাজ নিগু তী কাক্মান্তিকা॥
দ্রোণপুজ্পী চ শালিফী মীয়াসুনর এব চু।
ভাগী হরীভকী বাসা কার্ষিকঃ পত্রজঃ রসৈঃ॥
বাটিকাং কার্যেবৈদাঃ পঞ্চঞ্জা-প্রমাণক্য।
পিত্রজং বাতজং কাসং শ্লেম্বজং নিরকালজম্॥
শ্রীমান্ত্রনাথেন কাসসংহারতৈরবঃ।
রসোহ্যং নির্মিতে। যন্ত্রাশ্লোকরক্ষণ্ছেতবে।

• বাসা শুষ্ঠীকণ্টকারীকাথেন পারয়েদুশঃ। কাসনাশনবজ্ঞোহয়ং রসঃ স খাসপাও জিৎ॥ কাদদংহার ভৈরব।

পারদ, গন্ধক, তাত্র, শশ্বভম্ম, টঙ্গণ, লৌহ, মরিচ, কুড়, তালীশপত্র, জাতীফল ও ল্বস ; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ব ২ তোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক একগ্র মিশ্রিত্ করিয়া থানকুণী, কেন্দ্ররিয়া, নিসিন্দা, কাকমানী, হল্কসা, भानिकी, गिमा, वामनहाँी, हती उनी अ वाकम , हेशापत श्राटकत र (जाना পরিমাণে পত্রের রস হারা এক এক বার ভাবনা দিয়া ৫ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবদ ইহার একটা করিয়া বটাকা বাদক, শুঠা ও কতকারী; এই ৩ টীর যে কোন এক ীর কাথ মহ মেবন করিলেন পৈতিকানি সর্ব্যবিধ বহু কালজাত কাদরোগ দত্তর আরোগ্য হর। জীমকাহনানন্দণাথ কর্ত্ত্বক পুরাকালে এই "কাসসংহার ভৈরব রস" যোগটী জগতের হিতের নিমিত্ত নির্দ্মিতী হইয়াছে। ইহা কাদ, খাদ ও পাণ্ডুরোগের পক্ষেও বজ্রস্বরূপ জ্বানিবে।

শৃদারাজং।— শুদার জিং কুফাজচুর্ণং দ্বিপলপরিমিতং শাণমানং যদন্যৎ। কপুরিং জাতিকোষং সঙলমিভকণাতেজপত্রং লবঙ্গং॥ মাংসী ভালীশচোচে গ্রুকুমুমগ্রং ধাতকীচেতি ভুল্যং। পথ্য ধাত্রী বিভীতং ত্রিকটুরশি পৃথক্ চার্দ্ধশাণং বিশাণং ॥ এলাজাত ফলাখাং কিতিতলবিধিন। শুদ্ধানম্যাকোলং। কোলার্ছ্য পারদক্ষ প্রতিপদবিহিতং সর্ক্রমেকত্ত মিশ্রম্ ॥ পানীয়েনৈব কার্যাঃ পরিণতচণকস্বিত্নতুল্যাশ্চ বটাঃ। প্রাতঃ খাদ্যাশত আ স্তদরুকিল কিরৎ শৃন্ধবেরং সপর্বা পাণীরং পীতমত্ত্রে জ্রুবমপনয়তি ক্ষিপ্রমেতান্ বিকারান্। কোষ্ঠে হুনীয়িজাতান্ জ্বমুদরক্জো রাজযক্ষ্যকরঞ্চ॥ কাসং খাসং সশোথং নয়নপরিভবং মেহমেদোবিকারানু। इक्टिः भूनाम्निष्टः रजक्रियमस्मानाजानः विभानः॥ পাওুত্বং ক্ফপিতং গারলভবগদং পীন্দং প্লীহরোগং। হন্যানাশয়োথান্ কফপবনক্ষতান্ পাঞুরোগানবিশেষান্॥ •বল্যো র্ষ্যশ্চ যোগন্তরুণতরকরঃ সর্বরোগে প্রশন্তং। পথাং মাংসৈশ্চ যুবৈদ্ব তপরিলুমিতৈ প্রাহ্রবৈশ্চ ভুরঃ॥ ভোজ্যং মিউং যথেউং ললিতললনয়া দীয়মানং সুখায়। ্রশৃঙ্গারাত্ত্রেণ কামীয়ুবতিজনশতাভোগযোগাদভুটঃ॥

বৰ্জ্জাং শাকামুমানে দিনকতিপয়চিৎ স্বেচ্ছয়া ভোজামন্যৎ । কান্ত্যায়ুঃকামমূৰ্তিঃ হতবলিপলিতো মানবে ২দ্য প্ৰসাদাৎ ॥

ইতি জ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো কাদাধিকারঃ দমাপ্তঃ।

ইতি ত্রোদশোহধাায়ঃ সমাপ্তঃ।

শৃকারাভ।

অভ্ৰভন্ম ২ পল (১৬ ভোলা), কপুর, জৈত্রী, বালা, গজপিপুল, ভেজ-পত্ৰ, লবন্ধ, জট্ৰাংগী, ভালীশপত্ৰ, চোচ (দাকচিনি), গজকুত্ম (নাগে-খুর), গদ (কু্) এবং ধাইফুল প্রত্যেকে 1০ অর্দ্ধতোলা, হরীতকী, আম-লকী, বছেড়া, ওঠা, পিপ্পলী ও মরিচ প্রতাকে। • সিকিতোলা, এলাচি ও জাতীফল।।• অর্দ্ধতোলা, শোধিতগন্ধক > তোলা এবং নিশুদ্ধ পারদ।।• অর্দ্ধতোলা; এই সমস্ত দ্রব্যগুলি গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া, জলসহ মর্দ্দনকরতঃ চণকপ্রনাণ খটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটী আগার রস ও পানের রসের সহিত সেবনপূর্ব্বক পশ্চাৎ কিঞ্চিৎ জল পান করিবে। ইহা দারা মন্দায়ি, জুর, উদর্রোগ, রাজ্যক্ষা, ক্ষয়, কাস, খান, শোধ, চন্ধুরোগ, মেহ, মেদোরোগ, ছর্দ্দি, শুল, অন্নপিত্ত, অকচি, গুল্ম, পাতু, কফ, পিত্র, গরলজনিত রোগ, পীনদ, প্লীছা, কফজ ও বাতজ আমা-শন্ন রোগ এবং পৈত্তিক ব্যাধি সকল বিনষ্ট হয়। পরন্ত ইহা বলকর, রুষ্য, ভাৰণাবিধায়ক ও অন্তান্ত দৰ্ববোগে প্ৰশস্ত। ইহা দেবনকারি-রোগীকে ছত-अश्युक्त भाश्मापित तम, गुक्तापित एष अवश शंवाछ्य शांन कहिएक पिरंद। এই ঔষধ দেবনপুর্ব্বক রোগী ইচ্ছার্ন্থায়ী পান, ভোজন ও স্ত্রীদহ সম্ভোগ করিতে পারে। তবে কতিপয় দিবদ পর্যান্ত শাক, অল ও অম্ববিধ দ্রব্য ভোজনে বিরত থাকিবে। এমন কি এই ঔষধ দেবন করিয়া শত যুবতীর সহ সঙ্গম করিলেও শ্রীরের অপচয় সংঘটিত হয় না। যে ব্যক্তি এই "শৃদ্ধারাত্র" নামক মহোষধি দেবন করে. ⁸দে অভিদত্বর নিশ্চয়ই স্থকান্তি, আয়ুং, কাম (ভক) ও স্মার মূর্তিবিশিষ্ট এবং জ্বাজনিত বলিপলিত হইতে নিমুক্তি थादक ।

ইতি জীরামমাণিক্য সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" অস্থে কাসরোগাধিকারে ত্রোদশ-অধ্যয় সম্প্র ।

চতুৰ্দশো২ধ্যায়ঃ।

অথ হিক্কাশ্বাদাধিকারঃ।

निशिश्रुष्णानिः।

হিক্কাং হরতি প্রবলাং খাসমতি প্রভূতং নিবারয়তি। শিধিপুচ্ছিভূতিপিপালীচুর্ণং মধুমিশ্রিতং লীচুম্॥ অভঃপর হিক্কা ও খাসরোগের চিকিৎসা বলা বাইতেছৈ। শিখিপুচ্ছাাদি।

মর্বপুচ্ছ ভন্ম ও পিপুলচ্ণ সমান পরিমাণে এছণপুর্বক মণুস্ছ মিলিড করিরা লেছনপুর্বক সেবন করিলে, অভীব প্রবল ছিক। ও স্থাকণ শাসরোগ নিবারিড ছয়।

কলিফলচুৰ্বম্।

কর্ষং কলিফলচুর্ণলী চং চাত্যন্তমিশ্রিতং মধুনা। অিরাদ্ধরতিখাসং প্রবলামূর্দ্ধহিক্কাকৈব॥ কলিফলচুর্ব।

দ্বিশুণ মধুসহ ইন্দ্রযুক্ত মিশ্রণপূর্বক সেবন করিলে, অচিরাৎ খাস ও প্রবল উদ্ধিণত হিন্ধা প্রশাস ক্ষয়া থাকে।

মুখেধারণম্।

নার কৈলত পুজাণি খেতচন্দন্মেব চ। হিক্কাঞ্চ প্রবলাং হন্তি ধারণান্তু ন সংশয়ঃ॥ মুখেধারণ।

জ্বলসহ খেতচন্দন ঘদিয়া, তৎসহ নারিকেলের পুষ্পা চূর্ণ মিভিড করিয়া' মুখে ধারণ করিলে অতিপ্রবল হিন্ধা নিবারিত হইয়া থাকে।

তিলাদি-প্রলেপঃ।

সতিলং খেতধৃপক শতপুষ্পং পয়ঃসরঃ। বল্পীক বাসা যক্তাংগ্রি পয়সা পরিপেষিতঃ॥ তালুমূলপ্রলেপেন হিক্কাখাসনিবারণম্॥

जिलानि शालाभ।

ভিল, গেডধুনা, শলুফা, ছদ্ধের সর, বল্মীক (উ রের মাটী), বাসক ও ষষ্টি-মধুর মূল; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রহণপূর্বক জল সহ পেষণ করিয়া, মস্তকের তালুদেশে প্রলেপ দিলে, হিন্ধা ও শাসরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

শাসকুঠারঃ।---

টঙ্গণং পারদং গদ্ধং ত্রিকটু গরলং শিলা।
নিচ্গিয়্য বটিকাঃ কার্য্যা বাণগুঞ্জা প্রমাণতঃ॥
উফ্যোদকং পিবেচ্চানু ক্ষুদ্রা-কাথমথাপি বা।
কাসং পঞ্চবিধং হন্তি শ্বাসং শ্লেবাভবন্তথা॥
শিরোরোগং নিহন্ত্যাশু রক্ষমিন্রাশনির্যথা॥

ইতি জ্রামমাণিক্য দেন বির্ভিতে প্রয়োগটি ন্তামণো হিক্কাশালাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি চতুর্দ্ধ:শাহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

শ্বাসকুঠার।

সোহাগার থৈ, পারদ, গন্ধক, শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, বিষ ও মনঃশিলা। এই সমস্ত দ্রবা চূর্বকরতঃ জলসহ পেষণপূর্বক ৫ রতি প্রমাণ বঢ়ীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটা বটাকা সেবন করিবে; এবং পশ্চাৎ উষ্ণ জল অথবা কন্টকারীর ক্লাথ পান করিবে। ইহারারা পঞ্চবিধ কাস, শ্বাস, শ্বোদ্যজরোগ ও শিরোরোগ সমূহ বিনষ্ট হয়।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এন্থে হিন্ধা ও শ্বাসাধিকারে চতুর্দ্ধশু-অধ্যার সমাপ্ত।

পঞ্চশোইধ্যায়ঃ।

অথ কফ-আহবাধিকারঃ।

সৌরেশ্বরং মৃত্য ।---

পুরাগংশচত্রকং মাংমী মুরাবেদরবদীপ্রকম্। ব্রহত্যে) জীরকে দ্বে চ হুক্ষামুং সরলন্ত্রথা॥ জাতীকোষং বলাগুঞ্জা ত্রিরতাপারিভদ্রকম্। मामताकी कशस्त्रक ठानीनसमूत्रस्था। পাটনাপিপেলী মূলং পাঠা চ স্বৃহীমূলকম্। সিদ্ধার্থং শঙ্গপুষ্পী চ দন্তীরাম্বাসমন্বিতা॥ দশমূলীশতকৈব শূর।স্থ শতভ্রা। প্রাস্থ্যে বি দ্বিষণ্ডত্ত কাঞ্জিকতাপি তৎসমে ॥ য়ত প্রংস্থা বিপক্তব্যো কল্কং দত্যাক্ষসন্মিত্য। শ্লীপদং কফবাতোত্বং শ্বাসং রক্তাশ্রিতঞ্চ য় ॥। মেদঃ-প্রিত্র শুক্রস্থ চিরোখমপি দারুণম্। বাতিকং পৈতিকঞাপি তথৈব সান্নিপাতিকমু॥ অপতী গণ্ডমালাক অনুহন্তিং গুদক্ষীনু। অর্কা দং গ্রহণীরোগং শ্রয়ং বিষমন্ত্রম ॥ পর্মগ্রিকরংস্বরাং বাতরক্তবিমাশনম্। হন্তপাদাশ্রিতং রক্তং রক্তশিতহলীমুকমু॥ কাসং পঞ্চবিধং খাসং কোষর্দ্ধিং জ্বল্তথা। র্গুল্পুরিহোদরানাহভগন্দরাক্ষিকর্ণরোগান্॥ প্রমেহান্ কামলাং পাঙুং নাড়ী হুষ্ট**ত্রণার্শনাম্।** হিতং সৌরেশ্বরং নাম স্বতমেতন্মহৎস্মতম ॥ শ্লীপদে গলগণ্ডে চ কুক্তে হি বিশেষভঃ।

অনন্তর কক-আহব-চিকিৎসা বলা বাইতেছে।

সে:বেশ্বর ছত।

উৎকৃষ্ট গ্রায়ত /৮ আটদের দ্বির মান্ত /৮ আটদের, কাঞ্জিক /৮ আটদের ; দশ্যূলী অর্থাৎ বেল, শোগা, পাঞ্চল, গণিয়ারি, গোস্থুর, কউকারী, বাকিছ, শালপাণী, চাকুলে ও গান্তারী; সমতাগে সমত্তে ।২।।• সাড়ে वात्रामतः भाकार्थ खल ७८ होयप्रिमत (भय /৮ जाहित्मतः एल ।२॥• সাতে বার্মের, জল ১৪ চৌহটিনের এবং অবশিষ্ট কাপ /৮ আট্রের। कल्कार्थ श्रुष्तागभूष्म, तळाविषात गूल, क्रोचाशमी, एतामाशमी, रेमक्रवलवन, यमानी, नारकूड, कर्ने काती, (युडकोता, कु एकोता, जासद्वडम, मत्नकार्क, क्राडी-कल, (राष्ट्रला, श्रञ्जाकल, एउडेड़ीयूल, शालिमामामात, रंगामताखी, कत्रशी, गूथा, जालीमाशक, धनिया, शावली, विश्वलगूल, जाकनाती, मनमामिएकवगून, খেতসর্থপ, শঞ্চপুষ্পী, দন্তীমূল ও রাম্ম: ; এই মকল দ্রব্য কৃটিত প্রত্যেকে ২ তোলা; এই সকল দ্রবা সহবোগে খত পাকপূর্ব্বক শেষপাকের লক্ষণ लिक्क इरेल, नामारेश बस्तु प्रांता छाकिया प्रत अर्ग कतित्व। देश प्रांता বাউলৈম্বিক দ্লীপদ, রক্তদংযুক্ত, মেনোযুক্ত, শুক্রস্থ, কাতিক, পৈত্তিক এ मान्निपां उकानि मर्व्यविध बङ्कालीत शामद्वार्ग, जपानी, गछमाना, जञ्जत्रिक्ष, গুছরোগ, ক্রিমিরোগ, অর্ব্রুদ, এহণী, শোগ, বিষমজ্জর, বাতরক্তন, হত্ত-পদাম্রিত রক্তনোষ, রক্তপিত্ত, হলীমক, পঞ্চবিধ কাস, কোষর্দ্ধি, জ্বর, গুলা, श्लीहा, उत्तत, जानाह, छशन्तत, जाकिरताश, कर्गरताश, श्रामह, कामला, शाकु, নাডীব্রণ, দুইব্রণ ও অর্শরোগ বিন্ধ হয়, বিশেষতঃ শ্লীপদ ও গলগওরোগে এই দৌরেশুর দ্বত অতীব প্রশস্ত। পরস্ত ইহা অত্যস্ত অগ্নিকুদ্ধিকর ও হদয়ের তৃপ্তিজনক।

महारमोरतचत्रः घ्रञ्ग्। —

সুরসানাং পলণতং পদমূলীদ্বরশ্ব চ।
শতং সংগ্রাহ্ব সংক্ষা জলদোণে বিপাচরে ।
তেন পাদাবশেষেণ মতপ্রস্থং বিপাচরে ।
ধানাযুগক মওক দগ্নঃ প্রস্থচতুস্ট্রম্ ॥
কক্ষানোতানি দেয়ানি ত্রিকট্ ত্রিকলা তথা।
নিশু ভীচিত্রককৈব দেবদারু স্বাধীকম্ ॥
পকৈব লবণানাত্র ঘবক্ষারক পিপেলী।
চবিকা হরুষাদাকীগুণ্গলুরদ্ধদারকম্ ॥
শঠীবচাবিভৃঙ্গানি পাঠাভারাভকত্তথা।
পিচুভাগং প্রদারের পক্তব্যং সুস্থাহিতেঃ॥

বৈশ্বেণ গালিতং কুর্যাভিড়ালপদকদ্বর্য ।
ইনং হি বিবিধানোগান কফবাতাভিতানপি ॥
শ্লীপদান বিবিধান ঘোরান নেত্রকণোন্দ্রবানপি ।
ব্রেরদ্ধিগদাংশৈতব মেদোমাং দালিভান পি ॥
রক্তাভিতান গ্লান হন্তি রক্ষমিন্দ্রাশনির্যথা ।
নাড়ীব্রণান্ দর্শেথাংশ্চ গ্রমালাঞ্চ দারুণাম্ ॥
বিদ্রধিধার্ব্রদ্বৈব বিবিধান্দরন্থিতান্ ।
নাতঃপরতরং শ্রেষ্ঠং বিদ্যুতে শ্লীপদে গদে ॥
একজং দ্বন্দ্রক্বিব চিরক্তন্ত্র্থা ।
প্রোক্তং হারীতমুনিনা মহাদৌরেশ্বং মৃত্য্ ॥

মহাদৌরেশ্র মৃতঃ

গবাছত /৮ সের, ।১।। নাড়ে বারমের তুলমী এবং বেল, শোণা, পাঞ্চল, গণিয়ারি, গোকুর, কন্টকারী, গাস্তারী, শালপাণী, চাকুলে ও ব্যাকুড় মমান ভাগে দমস্তে ৷২৷৷৽ দাড়ে বারদের গ্রহণপূর্বক একজ্যোণ অর্থাৎ ৸২ বতিশ-দের জলসহ পাকপূর্বক 🛊 অর্থাৎ 🖊৮ আটদের থাকিতে নামাইয়া ক্লাথ গ্রাহণ করিবে। এই 👉 আটদের কাথ, ধনিয়ার কাথ /৮ আটদের, দ্ধির মাত 🗡 আটদের এবং ভঠী, পিপুল, মরিচ হরীতকী, আমলকা, বহেড়া, নিদিন্দা, রক্তচিতার মূল, দেবনাঞ্, যঞ্চিমধু, সৈন্ধবলবণ, বিটলবণ, ঔদ্ভিদ-लवंग, मामू जलवंग, महललवंग, यवकात, शिश्रूल, हरू, श्रूषः, माकश्तिजा, ख्रा-श्रुल, त्रम्नारात्रक, मंगी, वह, विष्ठ्रम, आकनामी ও ভেলার আঁটी: এই मकल কুটিত প্রত্যেকে ২ তোলা। সমস্ত দ্রব্য গুলি একত্রিত করিয়া যথানিয়মে দ্বত পাক করিবে। এবং পদ্র দারা ছাকিয়া দ্বত গ্রহণ করিবে। এই দ্বত প্রতিদিবস ।। অর্দ্ধতোলা মাত্রায় সেবন করিলে কফ ও বাভাগ্রিভ বিবিধ-রোগ. এবং মেদোগভ, মাংদগত ও রক্তাত্মিত নানাবিধ রোগ, ইল্লদেবের বক্ত কর্তৃক রক্ষ বিনাশের স্থায় ধংস প্রাপ্ত হয়। পরস্ত ইহা দ্বারা শ্লীপদ, নেত্র-(तार्ग, कर्नहतार्ग, अक्षरतार्ग, इष्किरतार्ग, नाष्ड्रीखन, खनत्माथ, त्माथ, श्रष्टमाना, বিদ্রাধি, অর্বুদ ও উদরাদি রোগ ম্মৃছ বিনস্ট হয়। বিশেষতঃ এই ঔষধ শ্লীপদরোগের মহৌষধ বলিয়া জানিবে। এই মহাসৌরেশ্বর শ্বত পুরাগালে মহাত্মভব হারীতমুনি কর্তৃক কথিত হইয়াছে।

বৈশোক্যবিজয়তৈলম্।—

প্রস্থং সর্বপতৈলক্ত ভৃঙ্গীরসবিপাচিতম্। তত্তিলাভ্যঞ্জনাদেব মহাস্বেদঃ প্রশাম্যতি॥

সন্নিপাতহরকৈব সতাং প্রতায়কারকম্। অস্ত মাহাত্মামতুলং কো ভিষ্প্জাত্মহতি॥

ৈলোক্যথিতায় তৈল।

16 ষোলদের ভূররাজের রস সহ /৪ চাহিদের সর্বপ তৈল পাক করিঃ।, গাতাদিতে মর্দন করিলে, অভিসত্ত্ব কফস্রাব নিবারিভ হয়। এবং ইহা ধারা সার্দ্ধিপাতিক রোগ বিনাই হইয়া থাকে। এই ত্রৈলোক্যভিজয় তৈল এতা-দৃশ গুণশালী যে, কোন্ বিজ্ঞ ভিষক্ ইছার গুণ অহুভব করিতে অক্ষম হইয়া থাকেন ? অর্থান চিকিৎসক মাত্রই ইছার সর্বে রোগনাশক স্থমহৎ গুণ জবগত্ত জাছেন।

(यागदाज्य ।

শক্রায়তাভণ্ডিবিশুক্ষপত্রং নিশু ণ্ডিকাবাদকমূলযুক্তম্।

এবাং স্বাংশং যবচূর্ণং যুক্তং নিয়ন্ত ভাবন্দিভিং সুগদ্ধি॥
করার্জমেতৎ সতত প্রয়েজাং প্রাতঃ সুখোক্ষং সলিলক পেরম্।
শীতোদক্ষাপি সুখৈঃ প্রপেন্তং যথেন্টমাহারমিহানুকুলম্॥
করোতি বহিং বিনিহন্তি বাতমামং সভ্রন্ম সকোঠরোগম্।
বিমৃত্তসঙ্গং গলিতক কুঠং পিতং কৃষণং হন্তি বিচ্চীকপুম্॥
নিহন্তি যক্ষাণমতিপ্রমুখ করোতি রদ্ধং নব্ধৌবনস্থ্।

যে বাতপিভক্ষরজাগদাস্ত নিহন্তি ভানেব তিরাধির্জান্॥
দিন্দেন ধল্মরিণা কিলায়ং প্রকীর্তিভঃ স্ববহিতায় যোগঃ।
করোতি তেজঃ শুভকাক্ষমভিং গতিং ত্রঙ্গল বলং গ্লানাম্॥
দৃষ্টিং দ্বিজেক্রন্থমিত প্রয়ন্ধাং জ্যেদশেষেণ ক্ষ্বাভরোগান্॥
যোগরাজ।

সিদ্ধি, গুলঞ্চ ও মঞ্জিতার শুক্ষণত্র চূর্ণ, নিসিদ্ধার পত্রচূর্ণ, বাসকমূল চূর্ধ ও যান্ত্রণ প্রেডাকে এক একভাগ, এবং সর্ব্বেমাটির তুল্যা নিষপত্রচূর্ণ একত্র মিশ্রিত করিবে। এবং তংগাহ কিঞ্চিৎ পরিমাণে দাফ্চিনি, এলাচি ও ডেজ্বলত্র চূর্ণ মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ প্রতিদিন প্রাতঃক'লে উপযুক্ত মাত্রায় অন্থপান বিবেচনাপূর্বক সেবন করিবে। এবং পশ্চাৎ অবস্থান্ত্রসারে উক্ষজল বা শীতলজ্ঞল পান করিবে। এই ঔষধ সেবন করিয়া ইক্ছান্ত্রযায়ী আছার বিহার করা যায়। ইহা দ্বারা বায়ু, আমদোয, অর্থা, কোঠবোগ, মলবাধ, মূত্ররোধ, গালিতক্ষ্ঠ, পিত্ত, কক্ষ, বিচ্চিন, কণ্ডু, যক্ষ্মা, বাতজন্ত রোগা, পৈত্তিক রোগ এবং ধাতুক্ষয়জ্ঞানিত রোগ নমূহ বিনক্ট ইইয়া থাকে। এবং ইহা দ্বারা বৃদ্ধ ব্যক্তি পুনর্বেশিন প্রাপ্ত হয়। পুরাকালে ব্যাং ধ্রম্বন্তির কর্তৃক এই সর্ব্বোৎকৃষ্ট যোগানী ক্ষিত্র ইহাছে। পরস্ত ইহা দ্বারা কাঞ্চনসমূল

শরীরের ১ডজ ও বর্ণ, ঘোটকের সদৃশ গতি। হন্তীর স্থার বলবন্তা এবং পক্ষি-রাজের স্থায় অতীব ডীক্ষ দর্শনশক্তি জম্মিয়া থাকে।

বীরভদ্রসঃ।—

জ্যবাং পঞ্চলবাং শতপুষ্পা দ্বিজীরকম্।
কারদ্বঃ সমাংশেন চূর্নমেষাং পল্প্রেম্ ।
ভারস্কং মৃতঞ্চাল্রং গদ্ধকন্দ্র পলং পলম্।
আদ্রু কিন্দ্র বল্পান্থ নিন্দের ।
বিরভ্রেরসঃ খ্যাতো মাধৈকং স্নিপাত্তি ।
চিত্রকাদ্র কিনিদ্ধ প্রমনুপানং জলেন তু॥
পথাং ক্ষীরোদনং দেয়ং দ্বিবার্থ রসে হিতম্ ॥
বীবভ্রার বদ।

শুঠী, পিপুল, মরিচ, সৈশ্ববলবণ, সৌবর্চ্চললবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, ইন্তিদলবণ, শলুকা, শেওজীরা, কৃষ্ণজীরা, যবক্ষার ও সাচিক্ষার; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ সমান মাত্রায় সমস্তে ও পল; পারদ, অল্প ও গন্ধক প্রত্যেকে ১ পল। সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিরা, খলমধ্যে করিয়া ১ একদিন আদার রসের সহিত মর্দ্দন করিবে। এবং ১ মাষা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। রক্তচিতার রস, আদার রস অথবা সৈশ্ববলবণ সমন্তিত জল অভ্পানসহ প্রতিদিবস ইহার এক একটী বটীকা সেবন করিলে, সন্ধিপাত রোগসকল বিনক্ত হয়। এই উষধ প্রত্যহ ২ ছইবার করিয়া সেবন করিবে; এবং ভ্রশ্ধ সহ-ধ্যোগে অন্ধ পথা করিবে।

রামবাণঃ।—

বিশুদ্ধং গগৰং আহং তৎসমং গরশস্ত্রথ।
দয়োস্থল্য যোড়াগুলুবং বীজন্ত কনকাহ্বয়ম্।
শুভে শিলাময়ে পাত্রে হেমপত্রেসেন বা।
শুড়িকান্ধার্যেকৈনো শুক্তিকা তু প্রমাণতঃ।
অসাধ্যে শ্লৈলিকে রোগে আমবাতে সুদারুপে।
শিরোরোগে সন্নিপাতে আহবে পীনসেইকটো।
এতান্ সর্বান্ধিইন্ত্যাশু রক্ষমিন্দ্রশনির্যথা।

রামবাণ।

আন্দর্ধ তোলা, বিষ ৮ তোলা এবং ধুতুরার বীজ ১৬ তোলা; এই সমস্ত দ্রুগ গুলি এহণপূর্বক চূর্ণ করিয়া, ধুতুরা পাতার রস দিয়া শিলামর খলে মর্দন করিয়া, ১ একরতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান বিবে-ার প্রতিদিন ইহার এক একটী বটীকা সেবন করিলে অসাধ্য সৈত্মিকরোন, স্থাকণ আমবাত, শিরোরোগ, দল্লিপাতরোগ, পীনসরোগ ও অঞ্চি প্রস্থৃতি রোগসমূহ বিনম্ভ হয়।

শ্বেরকালানলোরসঃ।—
হিঙ্গুলসম্ভবস্তং গন্ধকায়ততান্ত্রকম্।
তুথং মনোহনা তালক কট্ফলং ধূর্ত্তবীজকম্।
হিঙ্গুলং মান্দিকং কুঠং ত্রিরদন্তীকটুত্তিকম্।
ব্যাধিঘাতফলং বঙ্গং টঙ্গনং সমভাগকম্।
স্মুহীক্ষীরেণ বটিকাং কারয়েৎ কুশলো ভিষক্।
বিজ্ঞায় দেশং কালক দাপয়েদ্রক্তিকাক্রমাৎ।
বাতশ্বেরণি মন্দেহগ্রো পিভশ্নেয়োল্নেহপি চ।
স্তন্ধান্তে কলীশূলে চ দেয়ং স্থৌল্যাপকর্ষণম্।।
প্রীহোদরে চ শ্বর্থো সন্নিপাতাত্মকে জ্বরে।
বলাশপ্রবলং ত্যক্ত্রা ধাতৃ বাতো্থতাং নরঃ।।
সেবনাৎ সর্ব্বোগ্রহ শ্লেল্কালান্লো রসঃ।

শ্লেত্মকালানল রম।

হিন্দুলোথ পারদ গন্ধক, বিষ, তাম, তুঁতে, মনঃশিলা, হরিতাল, কট্রফল, ধূতুরাবীজ, হিন্দুল, স্বর্ণমান্ধিক, কুড়, তেউড়ীমূল, দন্তীমূল, শুড়ী,
পিপুল, মরিচ, সোদালফল, বল্ল ও দোছাগার থৈ: এই সকল দ্রব্য সমান
মানাঃ গ্রহণপুরুক উত্তমরপে চূর্ণ করিল। মনসামীজের আঠা দারা মাদ্রনপূর্বক ১ বতি বা বহুকি পারিমাণে টোকা গুস্তুত করিবে। এই ওয়ধ দেশ,
কাল ও গেগের অবস্থা বিবেচনাপূর্বক যুগোপয়ক্ত অভূপান বিবেচনার
রোগীলে সেবন করাইলে বাভ্লোত্মা, মন্দাগ্নি, পিত্তলেগ্যোল্গরোগ, স্তর্মান্ধন
াত, দীল স্থেলা, প্লীহা উদর, শোথ, সামিপাতিক জর ও কফাধিক
রোগসমূহ বিদ্যু হয়। এই ল্লেম্মকালানল রস ঔষধ লেশাকে নই করিয়া
বায়ু বর্জন করে; এবং ইহা স্ক্রোগম্ম বলিয়া গ্রামিক আছে।

লক্ষীবিলাদো রুসঃ।—

পলং ক্ষণাভচুপস্থ তদর্শ্বে রসগন্ধকে।
তদর্জং চন্দ্রসংজ্ঞন্ধ জাতীকোবফলে তথা।
রদ্ধদারকবীজঞ্চ বীজমুন্মতকস্য চ।
তৈলোক্যবিজয়াবীজং বিদারীকদ্দমেব চ।
নারায়ণী তথা নাগবলা চাতিবলা তথা।
বীজং গোক্ষুরকস্যাপি হৈজ্ঞলং বীজ্যেব চ।

1

ু এতেষাং কার্ষিকঞ্পং গ্রাহীত্বা বারিণা পুনঃ। নিষ্পিষ্য বটিকা কার্যণ ত্রিগুঞ্জাফলমাণতঃ॥ বটিকাং প্রাতরেবৈকাং খাদ্রিতাং যথাবলম। অনুপানমিহ প্রোক্তং মাংসং পিন্তং পয়োদধি॥ বারিভক্তং সুরাসীধু সেবলৎ কামরূপধুক্। নিইত্তি সরিপাতোখান গ্লান্ ঘোরান্ সুদারণান্॥ বাতোখান পৈত্তিকাং কৈব কফোখান্ সান্নিপাতিকান্। কুঠমন্টাদশাখ্যক প্রমেহানু বিংশতিত্তথা॥ নাডীত্রণং ত্রণং খোরং গুদাময়ভগন্দরম্। শ্লীপদং কফবাতোখং চিরঙ্গং কুলসম্ভবম ॥ গলগ্ওমন্ত্রদ্ধি মতীসারং সুদার । কাস পীনস যক্ষাৰ্শঃ স্থোল্যদৌর্গস্কামের চ ॥ আমবাতং সর্বরূপং কিহ্বাস্তম্ভং গল গ্রহম। উদরং কর্ণনাসাক্ষি মুখবৈজাড্যমেব চ॥ সর্বকুলং শিরঃশূলং স্ত্রীণাং গদনিস্থদনম। রদ্বোহপি তরুণস্পদ্ধী ন চ শুক্রস্য সংক্ষয়ঃ॥ ৰচ লিজ্যা শৈথিলাং ৰচ সামৰ্থাহীনতা। নিত্যং শতং স্ত্রিয়ং গচ্ছেন্মত্তবারণবিক্রমঃ । দ্বিলক্ষযোজনীদৃষ্টি জায়তে পৌর্টিকঃ পরঃ। প্রোক্তঃ প্রয়োগরাজো২য়ং নারদেন মহাতান।। রদো লক্ষীবিলানোহয়ং বাস্থদেবো জগৎপতি। অস্য প্রয়োগান্তগবান্ লক্ষনারীয়ু বল্লভঃ॥ ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণৌ কক-আহবাধিকারঃ সমাপ্তঃ। ইতি পঞ্চশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

লক্ষীবিলাস রস্থ

ভুমাজ ৮ ভোলা, পারদ ৪ ভোলা, গন্ধক ৪ ভোলা, কপূর ২ ভোলা, জাতীফল ২ ভোলা, জৈত্রী ২ ভোলা, রদ্ধারকবীজ, ধূতুরাবীজ, সিদ্ধিবীজ, ভূমিক্ষাণ্ড, নারায়ণী (শতমূলী), গোরক্ষচাকুলে, বেড়েলা, গোকুরবীজ ও হিজলবীজ প্রভোকে ২ ভোলা; সমস্ত দ্রব্যগুলি প্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণিড করিয়া জলসহ পেষণপূর্বক ও র্মিড পরিষাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিনিষ্
ন ইছার একটী করিয়া বটীকা সেবন করিবে। এবং শশ্চাৎ রোগ
বিবেচনার মাংসরম, পিউক, তুজ্জ দ্বি, জল, জল, স্থরা, ও সীধু আদি জলপান করিবে। ইছা দ্বারা ঘোরতর সমিপাতরোগ, বাতজ্ঞরোগ, পিতরোগ,
সৈশ্বিকরোগ, ১৮ প্রকার কৃতরোগ, ২০ প্রকার প্রমেষরোগ, নাড়ীব্রণ, ভ্রইত্রণ, গুল্রোগ, ভগলর, কফগডোড় ত অথবা কুলক্রমাগত চিরকালীন
লীপদরোগ, গলগণ্ড, অন্তর্হি, অতীয়ার, কাম, পীনস, যক্ষ্মা, আর্ল্য, ছৌলা,
দৌর্গরা, সর্ক্ষবিধ আমবাত, জিল্লান্তম্ভ, গলগ্রহ, উদর্রোগ, কর্রোগ, নেত্ররোগ, মুখের জড়তা, সর্ক্ষবিধ শূল, শিরংশুল ও ক্রীরোগ সকল বিন্তই ছইলা
থাকে। পরন্ত ইছা গেবন দ্বারা কাম ও রূপ বদ্ধিত হল; রুদ্ধ কান্তি ঘৌরনপ্রাপ্ত হল; বহু স্ত্রী সক্ষমেও শুক্রকর, লিজের শৈপিলা ও সামর্থাছীনতা হল
না; নিতা শত শত স্ত্রীসহবাসে সক্ষমতা জল্মে এবং শ্রীরের সম্থিক পুর্বি সংসাধিত
হইরা থাকে। পুরাকালে মহান্তা নারদ মহার্ঘ কর্ত্বন এই যোগরাজ ক্ষিত্ত
হইরাছাতে। এই লক্ষ্মীবিলাস উষধের প্রসাদে জগৎপতি বাসুদেব কুনঃলক্ষ্
নারীর বন্ধত হইতে সক্ষম হইরাছিলেন।

ইতি জ্ঞারামমাণিক্য দেন বিরচিত শপ্রয়োগ-চিন্তামণি প্রস্থে কফ-আছবাধিকারে পঞ্চদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

(स्पाद्राप्ति भागाति ।

অথ সুরভেদাধিকারঃ।

কলিতরফলাদিঃ।—
কলিতরফলাসিরুকণাচূর্ণ তক্তেণ লীচ্মপহরতি।
স্বরভেদং গোপায়সা পীত্রখামলকচুর্বঞ্চ।
ভাষার স্বরভেদ চিকিৎসা বলা যাইভেছে।
কলিতকফলাদি।

বছেড়া ফলের শাঁশ, দৈশ্ববলবণ ও পিপুলচ্র্ণ সমান পরিমাণে এছণ-পূর্বক তক্রসহ অথবং আমলকীচ্র্ল গোড়গ্ধসহ মিশ্রিত করিয়া লেহনপূর্বক সেবন করিলে, স্বরভেদ রোগ অচিরাৎ বিদ্ধী হইয়া থাকে।

বদরীপত্রকক্ষম্ ।---

বদরীপত্রকল্কয়। মৃতভৃষ্টং দদৈশ্বয়। স্বরোপঘাতে কাদে চ লেহমেত্ত প্রয়োজয়েও ॥ বদরীপত্রক্ষ।

কুলপাত। বাটিয়া সমান পরিমাণ সৈশ্ববলবণ চূর্ণসন্থ প্রায়ুতে ভর্জন-পূর্ব্বক লেহন করিয়া দেবন করিলে, হুরোপঘাত ও কাসরোগ আরোগ্য হয়।

मधुत-इक्षम्।---

শর্কিরা মর্মিশ্রাণি শৃতানি মধুরৈঃ সহ। পিবেৎ প্রাংনি যদ্যোক্তৈর্দতোহপিছতঃ স্বরঃ॥

मबुद्र-इक्षा

মৃগালী, মাধাণী, যফিমধু, জীবন্তী, জীবক, ঋষভক, মেদ, মহামেদ, ঋদ্ধি, রিদ্ধি, কাকোলী ও ক্ষীরকাকোলী ; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে হজোলা, পাকার্য জল /।এ০ দেড়পোয়া ও হন্ধ /৯০ অর্দ্ধপোয়া, হন্ধাবশিষ্ট রাখিয়া কাথ এহণ করিবে। এই হন্ধকাথ। সিকিডোলা শর্দরা ও । সিকিডোলা মর্ মি. এত করিয়া সেবন করিলে, উল্লেখ্যরে কথোপকথনজনিত অর্ভেদও নিবারিত হয়।

मात्रज्ञ इष्टम्।---क्रिमिमक्त्रवाभाग्नी निग्रम्बिक्टिकः। পথ্যা পর্ণী দহা ব্যোষ ব্রহ্মীভার্গী রবৈঃ দমৈঃ॥ গিপিঃ দিদ্ধম লাকীরৈর্জ্জাদাদনাশনম্।
আলমোদাং নিশাং ধাত্রীং ক্ষারং বহিং বিচুর্ণ্য চ॥
মধুসর্পিয় তংলী দৃশ স্বরভেদং ব্যপোহতি॥
সারস্বত-মৃত।

বিশুদ্ধ গণ্যন্থত /৪ চারিদের, ছাগছ্যন ।৬ ষোলদের, বল্কার্থ – বিভূক্ষ, বচ, আকনাদী, দজিনাছাল দৈশ্ববলবণ, রক্তচিভার মূল, হরীতকী, পণীঁ (ইন্দুরকণ্ণী), সহা (মৃতকুমারী), শুগী, পিপুলা, মরিচ, ব্রাহ্মীশাক, বামনহাটী ও বাসকছাল; এই সকল দ্রুখা কুটিত প্রত্যেক সমান ভাগে সমস্তে /১ একদের। এই সমস্ত দ্রুখা সহযোগে মৃত পাক করিয়া, আদল পাককালে বন্যমানী, হরিদ্রা আমলকী, যবক্ষার ও রক্তচিভার মূল চূর্ণ সমস্তে ৮ ভোলা মাত্র প্রক্রেপ দিয়া নামাইয়া, বন্ধ দারা ছাকিয়া মৃত প্রহণ করিবে। এই মৃত উপল্পুক্ত মাত্রায় মধুসহ মিশ্রণপূর্বক লেহন করিয়া সেবন করিলে, ভাতি সত্তর স্বর্ভেদ নিবারিত হইয়া থাকে।

कलानांवरलकः।--

সহরিদ্র বচাকুষ্ঠং পিপেলীবিশ্বভেষজম্।
অজাজী চাজমোদা চ যকীমধুকদৈশ্ববম্ ॥
এতানি সমভাগানি শ্লক্ষচুর্ণানি কারহেৎ।
তচ্চুর্ণং সর্পিষালোডাং প্রত্যহং ভক্ষয়েররঃ॥
একবিংশতিরাত্তেণ ভবেৎ প্রত্তিধরে। নরঃ।
মেঘতুন্বভিনির্ঘোষা মতকোকিলনিস্তনঃ॥
জড্গদাদমূকত্বং লেহকল্যাণকো জয়েৎ॥

कलाभिव्दल ।

ছরিন্তা, বচ, কুড়, পিপুল, শুঠী, মরিচ, বন্যমানী, যষ্টিমধু এ সৈশ্ধবলবণ ; ইহাদের ওতেতকের চূর্ণ সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক স্থতসহ আলোড়নপূর্বক প্রতাহ সেবন করিলে ২১ একবিংশতি রাজির মধ্যে মহ্য্য ত্রুতিধর, মেঘছুন্দুভি নির্ঘোষ সদৃশ স্থরবিশিষ্ট ও মত্তকোকিলের স্থায় স্থমধুর স্থর সংযুক্ত
হর। এই কল্যাণাবলেছ কংশর জড়তা, গদাদতা ও মুকত্ব নিবারক বলিয়া জানিবে।

যোগবাহকো রদঃ !---

े তাত্রাৎ পঞ্চগুণং স্থতং মর্দ্দয়েজিদিনং ভিষক্ । বস্ত্রে রুদ্ধা হুণ্ডিকায়াং তুল্যগদ্ধেন পাচয়েৎ॥ এরও ষড়গুণং কার্যাং গন্ধকং তৎ সমুদ্ধরেৎ।
পাষাণভেদী মৎস্যাক্ষী দ্রবৈঃ পিউস্তু মর্দ্ধরেৎ।
তদ্যোলং লেপয়েদ্বাহে কলৈকঃ পাষাণভেদকৈঃ।
মৎস্যাক্ষ্যান্চ দ্রবৈর্ম্দ্যিং লেপাং দত্ত্বা পাতালযন্ত্রকে।
স্বেদয়েদয়ামমাত্রস্ত রসোহয়ং য়োগবাহকঃ।
শুপ্তাছয়ং প্রদাতব্যং হিক্কা বৈস্বর্যকাসজিৎ।
দশমূলৈঃ পিবেচচাত্র কুলপ্থেন্চ ক্ষায়কৈঃ।
ইতি জীরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো
স্বরভেদাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

• ইতি ষোড়শো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

যোগবাহক রম।

> ভাগ ভাস, ৫ ভাগ পারদ এবং ১ ভাগ গন্ধক একত্র করিয়া ভিন দিবস পর্যন্ত মর্ক্রনপূর্বক, ভৎসহ ১ গুণ এর ওতৈল মিশ্রণপূর্বক একটী হাঁড়ীর মধ্যে পূরিয়া অগ্নিসন্তাপে পাক করিবে। তদনত্তর শীভল হইলে, ঐ ঔষধ পাষাণ-ভেদীর রস ও মংস্থাকীর (ব্রাহ্মীশাকের) রস সহ মর্ক্রিভ করিয়া, একটী মূষা মধ্যে পূরিবে। পরে ঐ মূষাটী পাষাণভেদীর কল্ক সহ ব্রাহ্মীশাকের রস দারা লেপনপূর্বক পাতাল যন্ত্রে ১ এক প্রহরকাল অগ্নিসংযোগে পাক করিয়া, ২ রভি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ব্রাহ্মীশাকের রস সহ ইহার একটী করিয়া বটীকা দেবন করিবে, এবং পশ্চাৎ দশমুলের ক্রাথ বা কুল্থিকলাইয়ের ক্রাথ দেবন করিবে; ইহা দ্বারা হিক্রা, বিস্বর্তা ও কাসরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

ইতি জীরামনাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" গ্রস্থে স্বর্ভনাধিকারে যোড়শ-অধ্যায় সমাপ্ত।

সপ্তদশোঽধ্যায়ঃ।

অথারোচকাধিকারঃ।

অমিকাদিঃ।

অদ্লিকাগুড়তোরঞ্চ ত্রগেলামরিচান্থিতম্।
অভক্তচ্ছন্দরোগেয়ু শস্তং কবলধারণম্।
অনস্তর অরোচক (অঞ্চি) রোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।
অদ্লিকাদি।

অঙ্কিকার (আমকলের রস), ইকুগুড়, দাকচিনি চূর্ণ, ছোটএলাচি চূর্ণ ও মরিচ্চুর্ণ; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রহণপূর্ব্বক জলসহ মিশ্রিত করতঃ ভদ্ধারা কবলধারণ (কুলি) করিলে অকচিরোগ নিবারিত হয়।

কারব্যানিঃ।

কারবাজাজীমরি হং দ্রাক্ষার রক্ষার দাড়িমম্। দৌবর্চ্চল গুড়কৌদ্রং সর্বারোচকনাশনম্। কারবাদি।

কারবী (মোরী), অজাজী (ক্ষংজীরা), মরিচ, ত্রাক্ষা, রক্ষান্ন (আম-কল) রম, দাড়িমরম, সৌবর্চচললবণ, ইক্ষুপ্তদ ও মধু; এই সকল ত্রব্য সমান পরিমাণে এছণপূর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে, অরোচক রোগ নম্ব হয়।

বিট চূর্ণানিঃ।

বিট্চূর্ণসমধুযুক্তো রসে) দাড়িমসন্তবঃ। অসাধ্যমপি সংহন্যাদরুচিং বক্ত্-বারিতঃ॥

ি বিট্চুর্ণাদি।

বিট্লবণ চূর্ণ মধু ও দাড়িমের রুস সহ সেবন করিলে, অসাধ্য অঞ্চিরোগ পর্যান্ত আরোগ্য হইয়া থাকে।

> অমৃতস্থলরোরসঃ।— রসগদ্ধো সমো শুদ্ধো দন্তীকাথেন ভাবয়েৎ। জমীরস্বরসেনিব আদ্রুকিন্স রসেন বা॥

পশ্চাবিশোষ্য সর্বাংশং টক্ষণকাবতারয়ে ।
দেবপুষ্পং বাণমিতং রসপাদং তথা মদম্ ॥
মাৰমাত্ৰক তৎসেব্যং নাগরেণ গুড়েন বা ।
সর্বারোচকশূলার্তিমামবাতবিনাশনম্ ॥
বিস্কীয়গ্রিমান্যক ভক্তদেষক দারুণম্ ।
রসোশনবারয়ত্যাক্ত কেশরীকরিণং যথা ॥

ইতি জ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তা-মণাবরোচকাধিকারঃ সমাপ্তঃ। ইতি সপ্তদশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

অমৃতস্থদররস।

পারদ ও গন্ধণ সমান ২ ভাগ এছণপূর্বক দস্তমূলীর ক্বাপ, জন্বীরদেবুর শ্বরস ও আদার শ্বরস দিয়া ক্রমান্থরে এক একবার ভাবনা দিয়া লইবে। পরে তৎসহ ২ ভাগ সোহাগার থৈ, ৫ ভাগ লবক্রচ্ণ ও সিকিভাগ কন্তরী মিশ্রণপূর্বক জলসহ পেষণ করিয়া, ১ মাষা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী বটীকা শুগুট্ণ অথবা ইক্কুড় সহযোগে সেবন করিবে। এই অমৃতস্কর রস সর্ববিধ অরোচক, শূলবেদনা, আমবাভ, বিস্থাচিকা, অগ্নিমান্দা, ভক্তাঞ্চি, কেশরী (সিংহ) হন্তীকে যে প্রকার বিনাশ করে, তৈদ্রপ সত্তর বিনাম্ট করিয়া থাকে।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি প্রস্থে অরোচক রোগের চিকিৎসা সমাপ্ত। ইতি সপ্তদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

অফীদশো২ধ্যায়ঃ।

অথ ছদ্যধিকারঃ।

পূৰ্পটকাথঃ।— প্ৰীতঃ সক্ষোদঃ চক্ৰি

কাথঃ পর্পটিজঃ পীতঃ সক্ষেত্রিঃ ছর্দ্দিনাশনঃ। অনন্তর ছর্দ্দি (বিদি) রোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে। পর্পটি কাথ।

ক্ষেত্রপাপ্ড়া ২ তোলা, পাকার্থ জল /॥• অর্দ্ধরের, শেষ কার্থ / ৯০ ছইছটাক। এই কাথ।• সিকিতোলা মধু প্রক্রেপ দিয়া দেবন করিলে, অভি-সত্ত্বর ছর্দ্ধি (বমন) রোগ নিবারিত হয়।

গুড়্চ্যাদিঃ। —

গুড়্চী ত্রিফলারিউপটোলৈঃ কথিতং পিবে । কৌদ্রযুক্তং নিহন্তাশু ছর্দিং পিতামসম্ভবাম্॥

গুড় চাদি।
গুলঞ্চ, আমলকী, হরীতকী, বছেড়া, নিমছাল ও পলতা: এই সকল
দ্রব্য সমভাগে সমস্তে > ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, অবশিষ্ট কাথ
৮ ভোলা। এই কাথ সিকিভোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে, অচিরাৎ
পিত্ত ও অন্নদোষ জনিত ছার্দ্দিশোগ নিবারিস্ত ছয়।

জাতীধাত্ৰী।—

জাতীরসং কশিখন্ত শিপ্পলী-মরিচান্বিতঃ। ক্ষোদ্রেণ যুক্তঃ শময়েৎ লেহো২য়ং ছর্কিমুল্ণাং॥ জাতীধাত্রী।

আমলকীর রস, কয়েদবেল, পিপুলচ্ণ, মরিচচ্ণ এবং মধু; এই কয়েকটী দ্রব্য একত্রিভ করিয়া লেছবং করভঃ সেবন করিলে, অভ্যন্ত প্রবল ছর্দ্দি (বমি) রোগও নিবারিভ ছইয়া থাকে।

> এলানিচূর্ণম্।— এলালবঙ্গ গজকেশর কোলমজ্জ-লাজাপ্রিয়ন্থ্ ঘনচন্দম পিপালীনাং।

চুৰ্ণানি মান্ধিক-সিভাসহিভানি লীচ্ছা-ছৰ্দিনিহন্তি কক-মান্তত-পিত্তসাম্ভ 🛙

এलामिष्ट्रन ।

এলাচি, লবন্ধ, গজপিপুল, নাগকেশর, কুলের আর্ঠির শাঁস, খৈ, প্রিয়স্থ, মুথা, ব্রক্তচন্দন ও পিপুল; এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে সমভাগে প্রহণ-পূর্ব্বক চ্ব করিয়া, তৎসন্থ চিনি ও মধু মিশ্রিত করত: উপযুক্ত মাত্রায় লেছন-পূর্ব্বক দেবন করিলে কফজ, পিত্তজ্ব ও বাতজ্ব তিবিধ ছর্দিরোগ বিন্তী হইয়া থাকে।

অশ্থবলকল-ক্ষারঃ ।----

অশ্বর্থবন্দলং শুক্ষং দক্ষ্ম নির্ব্বাপিতং জলে।
তভারঃপান্মাত্রেণ ছদ্মিং জয়তি ত্রুরাং ॥
অধ্বর্থবন্দলকার।

অশ্বথ রক্ষের ছাল শুষ্ক করিয়া অগ্নিতে দক্ষ করিবে, পারে ঐ দক্ষ অঙ্গার জলে নিক্ষেপ করিয়া, দেই জল পান করিলে তৎক্ষণাৎ অসাধ্য ছর্দ্দিরোগও বিনম্ট হইয়া থাকে।

পদ্মকান্যন্তম্ ৷---

পদ্মকামতনিয়ানাং ধান্যচন্দ্ৰয়োঃপচেছ। কল্কে কাথে চ ছবিষঃ প্ৰস্থং ছদ্দিনিবারণম্। তৃফাক্তি-প্ৰশামনং দাছজ্বাহরং পরং।
পদ্মকাদ্যস্ত।

উৎকৃষ্ট গাব্যস্থান্ত /৪ চারিদের ; কল্ফার্থ পদ্মকার্চ, গুলঞ্চ, নিমছাল, ধনে গুরক্তচন্দন সমান পরিমাণে সমস্থে কৃটিত /১ একসের এবং কাথার্থ পূর্বোক্ত পদ্মকার্চ, গুল্প, নিমছাল, ধনে গুরক্তচন্দন সমভাগে সমস্তে ১৬ বোলদের, জল ৬৪ চৌষটিদের এবং শেষ।৬ বোলদের ; এই ক্লাথ গুকল্ফ সহ যথানিয়নে স্থৃত পাক করিবে। এই স্থৃত উপযুক্ত মাত্রায় প্রতিদিন দেবন করিলে ছর্দ্দি, ত্যা, অফচি, দাহ এখং জ্বর ধ্বংসিত হইয়া থাকে।

ছদিহরচুণম্।—

অঙ্গান্ধান্য পথ্যাভিঃ সক্ষুদ্রাভিঃ কটুত্রিকৈঃ।
এভিঃ সার্দ্ধং ভক্ষস্থতঃ সেব্যো বান্তিপ্রশান্তয়ে॥
ইতি জ্রীরাম্মাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণে ছর্দ্ধ্যবিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি অফাদশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

क्ष्मिरत हुन ।

কৃষ্ণজীরা, ধনে, হরীতকী, কণ্টকারী, শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ; প্রত্যেক ১ এক এক তোলা এবং রুসসিন্দুর ।। সাড়ে ভিনতোলা; সমস্ত দ্রবাগুলি চুর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চুর্ণ ঔষধ প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রায় পটোলের রুস, তুর্কার রুস প্রভৃতি অন্পান সহ সেবন করিলে, নিশ্চয়ই ছর্দ্দিরোগ আরোগ্য হয়।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিত শ্রেমোগ-চিন্তামণি" এছে ছর্দ্দি-অধিকার সমাপ্ত। ইতি অক্টাদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

ঊনবিংশো২ধ্যায়ঃ।

ভূষ্ণাধিকারঃ।

বাতিকতৃষ্ণায়াশ্চিকিৎসা।
তৃষ্ণায়াং পবনোত্থায়াং সগুড়ং দধি শক্তে।
রসাশ্চ রংহণাঃ শীতা গুড়ুচ্যা রস এব চ॥
অনন্তর ভ্ঞারোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছো
ৰাতিকভ্ষার চিকিৎসা।

সমভাগ গুড় সহ দধি, মাংসরস, মূগ দাইলের যুষ অথবা গুলঞ্চের রস পান করিলে, বাতজনিত তৃষ্ণা নিবারিত হইয়া থাকে।

রৈ ব্যিক ভৃষণ য়াশ্চিকিৎসা।

পিভজারাঞ্চ কৃষ্ণারাং পক্ষোড়ু ম্বরজো রসঃ।
তৎক্ষাথো বা হিমন্তদ্বৎ সারিবাদিগণামুনা।
ফ্রৈন্মিকড্ফার চিকিৎসা।

পাকা যজ্ঞভূমুরের রম, কাথ এবং শীতকষায় অথবা বাণ্ভটোক্ত সারি-চাদিগাণ অর্থাৎ গোজিয়াশাক, যফিম্বু, রক্তচন্দন, শ্বেতচন্দন, পদ্মকার্চ, গাস্তারীফল, পদ্ম এবং ধর্জ্জুর : ইহাদের শীত ক্ষায় পান করিলে পিত্তজন্ত ভৃঞারোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

' লাজোদকাদিঃ।

লাজোদকং মধুযুতং শীতং শুড়বিমর্দ্দিতং। ঝাশাগ্যশর্করাযুক্তং পিবেৎ তৃষ্ণাদ্দিতোমরঃ॥ লাজোদকাদি।

খৈ চূর্নের শীত কঁষায় প্রস্তুত করিয়া, মধু, গুড়, গাস্তারীফল চূর্ন ও চিনি মিপ্রিত করিয়া দেবন করিলে, দর্ব্ব প্রকার তৃষ্ণারোগ প্রশমিত চ্ইয়া থাকে।

> গোন্তনাদিঃ। গোন্তনেক্ষুরস ক্ষীর য**ন্টি**মধুমধুৎপলৈঃ। নিয়তং নন্ততঃ পীতৈন্ত,কা শাম্যতি দারুণা॥

্গোন্তনাদি।

जाका, रेक्ट्रा, इक्ष, रिकिय्, मधु ७ उँ० भल ; रेराएय कार्य नामिका हाता পান করিলে, ত্বরায় স্থারণ তৃষ্ণা প্রশমিত হয়।

कौरतक्तमानिः।

कौरतकुतम याञ्चीक क्लोजमोधु ७८ जानरेकः। রক্ষামান্ত্র গণ্ডালুশোষনিবারণঃ॥ कौद्रक्त्रमामि।

प्रक्ष, हेक्क्रुत्रम, ज्ञांका, मधू, मीधू, (मनाविर्णय), छड़, छेनक ए त्रकाल (মহাদা); এই দকল দ্রব্যের গণ্ডুয করিলে ভালুশোষ নিবারিত হইয়া থাকে।

আফ্রাদিকষায়ঃ।

আত্র দ্বসুকষায়য়। পিবেনাক্ষিকসংযুত্র । ছর্দিং দর্কাং প্রণুদতি তৃক্যবৈশ্বাপকর্যতি॥ `আশ্রাদিক্যায়।

আত্রপল্লৰ অথবা জামপল্লৰ ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা; এই ক্লাথ মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সর্বাপ্রকার তৃষ্ণা ও ছর্দিরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

বটশুঙ্গানিঃ।

विष्णेक्र निভालांध् नाष्ट्रियः मधुकः मधु । পিবেৎ ভণ্ডুলভোয়েন চছর্মিতৃকা নিবারণং 🛚 বটশুঙ্গাদি।

বটের ঝুরি, শর্করা, লোধ, দাড়িম, যফিমধু ও মধু ; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক তণ্ডুলোদক সহ সেবন করিলে, ছর্দ্দি ও ভৃষ্ণারোগ প্রশমিত হইয়, থাকে।

কবল গ্ৰহণ্য।

কেশরং মাতুলুঙ্গু সক্ষোদ্রং দাড়িমীযুতং। ক্ষামাত্রেণ হ্রবারাং ভৃকাং কবলতো জয়েৎ। কবল |

ছোলজনেবুর কেশর মধুও দাড়িমের রদ সহ মিশ্রিত করিয়া কবল (কুলি) করিলে, ক্ষণমাত্রেই দুর্ব্বার তৃষ্ণা প্রশমিত হইয়া থাকে।

गञ्बधात्रगः।

দাহতৃক্ষা প্ৰশমনং মধুগণ্ডু যথারণং ॥

গণ্ড যথারণ। মধু ছারা গণ্ডু যথারণ করিলে, দাহ ও ভৃষ্ণা রোগ নিবারিড হয়।

বারিমধু।

বারিশীত মতিহিতমাকণ্ঠমধুসংযুতম্। পারয়েদ্বাময়েচ্চাপি তৃষ্ণা প্রশাম্যতি শীঘ্রম্॥ বারিমধু।

মধু সংযুক্ত শীতল জল আকণ্ঠ পান করিয়া বমন করিলে, শীত্রই তৃষ্ণা প্রশমিত হ≵য়া থাকে।

আন্ত্রাদিকষায়ঃ।
সক্ষ্টে মান্ত্রজয়ু খং পিবেৎ ক্রাথং রসান্থিতং।
সতৃক্ষা মধুনা কুর্যাৎ গণ্ডু ষান্ শীতলেন্থিতাঃ॥
আন্ত্রাদিকদায়।

তামহাল অথবা জামহাল ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, অবশিষ্ট ৮ তোলা; এই কাথের সহিত রস (রসসিন্দ্র) মিশ্রিত করিয়া সেবন করিয়া, শীতল শ্যায় শ্য়ন উপবেশনাদি করিয়া থাকিলে; অথবা মধুর গণ্ড য এহণ করিলে সত্তর ত্ঞারোগ নিবারিত হইয়া থাতে।

র্শ শব্দেশ্য ব্যবহারঃ !

য**ৈত্রব কেবলো** রস স্তক্ত ভস্মসূতে। বোধাঃ॥ রস শব্দের ব্যবহার।

• যে যোগের (ঔষধের) মধ্যে গন্ধকের উল্লেখ নাই, অর্থচ রদ শব্দের উল্লেখ আছে, সে ছলে রস শব্দে রস্সিন্দূর বুঝিতে হইবেক।

শীতল জলং।

মূচ্ছাচ্ছৰ্দি তৃষানাহস্ত্ৰীমন্য ভূশকৰ্ষিতাঃ। পিবেয়ুঃ শীতলং তোরং রক্তপিত মদাত্যয়ে॥

• ••• শীতল জল।

মূর্চ্চা, ছর্দ্দি, ত্^{ম্বা}, দাহ, স্ত্রীসঙ্গম ও মদ্য ; এই সকল দ্বারা অত্যন্ত ক্ষীণ হইলে, শীতল জল পান করা কর্ত্তব্য । এবং রক্ত পিত্ত ও মদাতায় রোগেও শীতল জল পান যিধেয় বলিয়া জানিবে।

জল-প্রয়োজনং 1

মূচ্ছ মিয়াতুরঃ সন্ধানিস্ফার্দিতো জলং যা চন্।
লভতে ন চেভদায়ং মরণং প্রাপ্নোতি দীর্ঘবেগং বা ॥
ত্ষিতো মোহমায়াতি মোহাৎ প্রাণান্ বিমুক্তি।
তন্মাৎ সর্বাশ্ববস্থায় ন কচিদ্বারি বার্যতে।
অন্নোপি বিনা জন্তঃ প্রাণান্ ধারয়তে চিরং।
তোয়াভাবে পিপাদার্তঃ ক্ষণাৎ প্রাণৈ বিমুচ্যতে॥

कल थ्राजन।

যে মূর্চ্ছারোগী ভৃষ্ণায় অন্থির হইয়া পুন: পুন: জল প্রার্থনা করে, তৎ-কালে ভাষাকে জল না দিলে ভাষার মূর্চ্ছা দীর্ঘকাল স্থায়িনী হয়, অথবা ভাষার মৃত্যু পর্যান্তও ঘটিভে পারে।

অভান্ত কল্ল ছইলে স্প্রিক্ত পারে এবং যখন দেই মৃচ্ছাতেই মৃত্যু পর্যায় এটা ও প্রায়ে তেওঁ কলে কর্মাতেই জল নিষেধ রাখা উচ্ছিত নছে। ব্যাহার কলাক্ষাত পরি সামত জাবন রক্ষা হইতে পারে, কিন্তু ত্থার নমধ্যে জল না পার্থলে ক্ষণকালের মধ্যেই মৃত্যু হইবার নিশ্চিত সম্ভাবনা।

অতি জলপানশ্ব দোষঃ।
অত্যমুপানাৎ প্রভবন্তি রোগা
নিরমুপানাচ্চ তএব দোষাঃ।
তন্মাদ্বুধঃ প্রাণ-বিবর্দ্ধনার্থং।
মুহর্মু হুর্বারি পিবেদভূরি॥
অতি জলপানের দোষ।

জলাভাবে মৃত্যু হয় বলিয়া, অধিক জল পান করাও উচিত নহে, কারণ অতিরিক্ত জল পান করিলে নানাপ্রকার রোগ জ্বাতে পারে। আবার ভৃষ্ণার অস্পযুক্ত অপ্প পরিমাণে জল পান করিলেও বিবিধ পীড়া উপস্থিত হইয়া থাকে। অতএব মধ্যে মধ্যে অপ্প পরিমাণে জল পান করাই ব্যবস্থেয়।

মহোদধিরদঃ !-

তাঅকৈব বঙ্গলৈব সূতং তালং সত্থকং। বটাস্কুররসৈর্ভাব্যং তৃষ্ণাহদ্বল্মাত্রতঃ॥ মহোদধিরস।

ভাস, বন্ধ, পারদ, হরিতাল এবং তুঁতে; এই প্রঞ্চ দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপুর্বক উত্তমরূপে চূর্ন করিবে। তদনস্তর বটের ঝুরির রুদে ১ এক দিবস ভাবনা দিয়া ০ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা অল্পান বিবেচনায় দেবন করিলে, দর্বপ্রকার ভৃষ্ণারোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কুমুদেখরোরসঃ।--

মৃততান্ত্রক্ত ভাগৌদ্বো ভাগৈকং বন্ধভন্মকং।
বাষ্টিমধুরদৈর্ভাব্যং শুক্তং মাধার্দ্ধকং শুভং ॥
দৈবাকৈবানুপানেন বক্ষামাণেন বুদ্ধিমান্।
চন্দনং সারিবামুক্তং কুদ্রৈলা নাগকেশরং।
সর্বভ্রল্যা তথালাকা পচেৎ বোড়শিকৈ জঁলৈঃ॥

অর্ধশেষং হরেৎ কাথং দিতাক্ষেত্রিযুত্ত তথ।
ছিদিং তৃষ্ণাং নিহন্ত্রাশু রসোইরং কুমুদেশ্বরঃ॥
ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো তৃক্যাধিকারঃ সমাপ্তঃ।
ইতি উনবিংশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

কুমুদেশ্বর রস।

ভাষ ২ ভাগ এবং বঙ্গভন্ম ২ ভাগ গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া । বৃষ্টিনধুর কাথে ৭ সাভবার ভাবনা দিয়া অর্দ্ধাষা (৩ রভি) পরিমাণে বিটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রভিদিন ইহার এক এক দী বটিকা সেবন করিবে, এবং পশ্চাৎ রক্তদদন, অনন্তমূল, মূখা, ছোটএলাটি ও নাগকেশার , এই পঞ্চ দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্য জ্বল ৩২ বিরশভোলা, অবশিষ্ট ২৬ ষোলভোলা। একখানি পরিষ্কার ব্স্তদ্ধারা ছার্কিয়া সিটে বাদ দিয়া এই কায় গ্রহণ করিবে, ভরপরে ভাহাতে শক্রা ও মর্ মিশ্রেত করিয়া পান করিবে। এই কুমূদেশ্বর রগ নিশ্চয়ই ছর্দ্দি ও ভ্ষা রোগ বিনাশ করিয়া থাকে।

ইতি জীরামমাণিক্য সেন বির্**চিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এছে** ভৃষ্ণাধিকার সমাপ্ত। ইতি উনবিংশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

বিংশতিত্যোহধ্যায়ঃ

অথ মূচ্ছ বিধিকারঃ।

মূর্চ্ছায়াঃ সাধারণ চিকিৎসা।—
সেকাবগাছো মণয়ঃ মহারাঃ
শীতাঃপ্রদেহা ব্যজনানিলাশ্চ।
শীতানি পানানি চ গন্ধবন্তি
সর্বাস্থ মূচ্ছ স্থিনিবারিতানি ॥
অনন্তর মূচ্ছারেন্যের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।
মূচ্ছার সাধারণ চিকিৎসা।

শীতল জলাভিষেক, অবগাহন (পুষ্করিণী, তড়াগাদি জলাশয়ের জলমধ্যে মগ্ন হইনা স্নানকরণ), পদ্মরাগাদি মণি শ্রথিত হার ধারণ, বেণারমূল,
চন্দনাদি ঘর্ষণপূর্বেক গাত্তে লেপন, তালরস্তাদি ব্যজন (পাখা) দ্বারা বায়ুদেবন এবং কপূরাদি স্থগন্ধি দ্রুব্য দ্বারা স্ব্রাসিত পানীয় পান; এই সকল
স্ক্রবিধ মুর্চ্ছারোগীর পক্ষে অভীব উপকারী বলিয়া জানিবে।

রক্তজ-মন্যজ-বিষজ-মূর্চ্ছানাং চিকিৎসা।—
রক্তজারাল্প মূচ্ছারাং হিতঃ শীতক্রিরাবিধিঃ।
মন্যজারাং বমেন্সনাং নিদ্রোং সেবেৎ যথাস্থাং।
বিষজারাং বিষদ্বানি ভেষজানি প্রযোজয়েৎ॥
রক্তজ, মদ্যজ ও বিষজ্যুচ্ছার চিকিৎসা।

রক্তদর্শন জন্ম মৃচ্ছারোগে শীতল ক্রিয়া করা কর্ত্তব্য। অধিক পরিমাণে মদ্যপান হেতু মৃচ্ছা উপস্থিত হইলে, ঔষধ দ্বারা রোগীর উদরস্থ মদ্য বমন করাইয়া, রোগীকে নিদ্রিত করিবার চেষ্টা করিবে। এবং বিষপান জন্ম মুচ্ছা জিমিলে, মুচ্ছিত ব্যক্তিকে বিষয় ঔষধ সেবন করাইবে।

কোলমজ্জাদিঃ।---

কোল মক্জোষণোশীরকেশরং শীতবারিণা। পীতং মুস্ছাং জয়েলীঢ়া কৃষ্ণায়া মধুসংযুতাং॥

(कालमञ्जापि।

কুলের আঁঠির শাঁস, পিপুল, বেণার মূল এবং নাগকেশর; এই সকল দ্রব্য শীতল জলে মর্দ্দন করিয়। সেবন করিলে, অথবা পিপুলচ্ণ ও মধু একত্ত্বিত করিয়া লেহনপূর্বক সেবন কারিলে মূর্চ্ছারোগ নিশ্চয়ই বিন্ত ইইয়া থাকে।

ত্বরালভাকাথানিঃ।—

পিবেদুরালভাকাথং সন্নতং ভ্রমশান্তরে। ত্রিফলায়াঃ প্রয়োগো বা প্রয়োগো পয়সোহপি বা । রসায়নানাং কৌন্তব্য সর্পিবো বা প্রশক্তবে॥ ছরালভাকাথাদি।

২ হুই ভোলা হুরালভা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা; এই কাথ ছাকিয়া।। অর্দ্ধভোলা মধুসহ দেবন করিলে; তিফলাচূর্ণ মধুর সহিত দেবন করিলে এবং হুদ্ধ পান অথবা কোন্ত (১০০ একশত রৎসরের পুরাতন) ছত গাত্রাদিতে মর্দ্ধন করিলে, ভ্রমরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

অঞ্জনাদিঃ ৷---

অঞ্জনান্যবপীড়শ্চ ধুমঃপ্রধমনানি চ।
স্থাভিস্তোদনং শস্তং দাহঃ পীড়া নখান্তরে।
: লুঞ্চনং কেশলোয়াঞ্চ দবৈন্ত্রদিংশনমেব চ।
আত্মগুরাবঘর্ষণচ হিতন্তস্যাববোধনে॥

অঞ্জনাদি।

অপস্মার রোগে কথিত অঞ্জন সকল প্ররোগ, রন্থন, আদা প্রভৃতির রস ঘারা নস্থ প্রদান, ধৃমপ্ররোগ, প্রথমন (মরিচ, পিপুল-আদির চূর্ণ দারা নস্থ প্রদান), স্থাটি দারা অঙ্গাদি স্থেম, উন্থ (সন্তপ্ত) লৌহশলাকাদি দারা নখের অভান্তরে পীড়ন, কেশ লোমাদি আকর্ষণ, দন্তদারা গাত্রাদি দংশন এবং গাত্রে আলক্ষী ঘর্ষণ; এই সকল ক্রিয়া করিলে সংস্থাসাদি রোগে মুর্চ্ছাপ্রাপ্ত ব্যক্তির সংজ্ঞা লাভ হইয়া থাকে।

অশ্বগন্ধারিষ্টঃ।—

তুলার্দ্ধং চাশ্বগন্ধায়া মূশল্যাঃ পলবিংশতিঃ।
মঞ্জিষ্ঠায়া হরীতক্যা রজন্যোর্দ্ধক্রন্য চ।
রাম্মা বিদারী পার্থানাং মুস্তকত্তিরতোরপি।
ভাগান্ দশপলান্ দদ্যাদনন্তাশ্যাময়োস্তথা।
চন্দনদ্বিতয়স্যাপি বচায়াশ্চিত্রকক্ষ চ।
ভাগান্টপলান্ কুরান্টজোণে২ন্তুসঃ পচেৎ।

ধাতক্যাঃ ষোভূশপলং মান্দিক্স্য ভুলাত্রয়ং।
বোষস্য দ্বিপল্ঞাশি ত্রিজাতক চতুঃপলং।
চতুঃপলং প্রিয়ঙ্গোশ্চ দ্বিপলং নাগকেশরং।
মাসাদূর্দ্ধং পিবেদেনং পলার্দ্ধং পরিমাণতঃ।
মূর্চ্ছায়াপস্মতী শোষমুম্মাদমপিদারুণং।
কার্শ্যমর্শাংসি মন্ত্র্মগ্রেক্বাতভ্বান্ গদান্।
অশ্যান্ধারিষ্টোছ্যং পীতে। হন্যাদসংশয়ং॥

অশ্বগন্ধারিষ্ট।

অশ্বপদ্ধা ৫০ পঞ্চাশপল, তালমূলী ২০ কুড়িপল, মঞ্জিঠা, হরীতকী, ছরিক্রা, দাক্স্বরিক্রা, যফিমধু, রাস্না, ভূমিকৃত্মাণ্ড, অর্জ্জুনছাল, মূথা ও ভেউড়ী মুল ; প্রত্যেকে ১০দশপল, অনন্তমূল, খ্যামালতা, শ্বেডচন্দন, বক্তচন্দন, বচ ও রক্তিরি মূল; প্রত্যেকে ৮ আটপল; এই সকল দ্রব্য অপ্প কুট্টিত করিরা, ৫১২ পাঁচশত বারদের জলে পাক করিয়া ৬৪ চৌষট্টিদের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। তংপরে শীতল হইলে বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া জলীয় ভাগ কাথ গ্রহণ করিবে। তদনস্তর ধাইফুল চূর্ণ ১৬ যোল পল, মধু ৩৭॥ - সাড়ে সাইত্রিপল, মরিচচুর্ণ ও শুগুটুর্ণ প্রত্যেকে ২ পল, দাঞ্জ-চিনি, ভেজপত্র, এলাইচ ও প্রিয়ন্ত্র ইহাদের চূর্ণ প্রভ্যেকে ৪ পল, না্গকেমর চূর্ণ ২পল ; এই সকল চূর্ণ উক্ত কাথে নিকেপ করত: একটী রছৎ মৃত্তিকার পাত্র মধ্যে পুরিয়া, সেই পাত্তের মুখকদ্ধ করিয়া ১ এক মাদ পর্যন্ত রাখিয়া দিবে। পরে ১ এক মাস অন্তে বস্তু দ্বারা ছাকিয়া জ্বলীয় ভাগ অরিষ্ট এছণ করিবে। ইহা বৃদ্ধি ক্রমান্স্নারে ১ এক ভোলা হইতে ৪ চারিভোলা মাত্রায় পর্য্যন্ত প্রতিদিন দেবন করিলে, মূর্চ্ছা, অপস্মার, শোষ, উন্মাদ, কার্ণা, অর্শ:, অগ্নিমান্দ্য এবং বাতজনিত রোগ সকল বিস্ট হইয়া থাকে। এই অশ্বগদ্ধারিষ্ট শেবন ছারা মুর্চ্চা, অপস্থার প্রভৃতি ব্যাধি সমূহ্ বিন্তী হৈইবে, ভংপক্ষে বিন্দুমাত্ৰও সন্দেহ নাই।

সুধানিধিরসঃ।

কণা মধু যুতং সূতং মূচ্ছারামনুশীলয়েৎ।
শীতদেকাবগাহাদি সর্বং বা শীতলং ভজেৎ।
স্থানিধিরদো নাম মদমূচ্ছা বিনাশনঃ॥৭
ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বির্ভিতে প্রয়োগচিন্তামণো মূচ্ছাধিকারঃ সমাপ্তঃ।
ইতি বিংশতিতমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

পিপুলচ্র্ণ ও রদসিন্দ্র সমভাগে এছণপূর্ব্বক চূর্ণ করিয়া মধুর শহিত দেবন করিবে এবং গাড়াদিতে শীতলজ্জল সেচন, শীতল জ্বলে অবগাছন (স্নান) ও শীতল দ্রব্য পথ্য করিবে। এই সুধানিধিরস ঐষধ দেবন ছারা মূচর্ছা ও মদ (মদাভায়) রোগ নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

> ইতি শ্রীক্লামশাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" গ্রন্থে মূর্চ্ছাধিকার সমাপ্ত। ইতি বিংশতিতম-অধাার সমাপ্ত।

একবিংশতিত্যোইধ্যায়ঃ।

অথ পানাত্যয়াধিকারঃ।

বন্যকরীষাদি !--

বন্যকরীষড্রাণাজ্জলপানাল্লবণভক্ষণারাপি।
শাম্যতি পূগমদশ্চুর্ণরুজা শ্বর্করাকবলাৎ॥
অতঃপর পানাত্যয়রোগের চিকিৎদা বলা যাইতেছে।
বন্যকরীয়াদি।

বক্সকরীষ (শুষ্ক গোমর অর্থাৎ ঘুঁটে) আড্রাণ করিলে, জলপান করিলে অথবা লবণ ভক্ষণ করিলে, স্থপারী ভক্ষণ জনিত মন্ততা নিবারিত হইয়া থাকে। এবং চিনির কবল করিলে চূর্ণ (চূর্ণ) ভক্ষণ নিমিত্তক মদাত্য হ পীড়ার শান্তি হয়।

শশুচুর্ণম্।—

শঙ্খ চুর্ণরজোম্রাণং স্বর্ল্পং মনমপোহতি॥ শঙ্খচূর্ণ।

নাদিকা দারা শঞ্চূর্ণ আত্রাণ করিবে অপ্প মন্ততা নিবারিত হয়।

কুষা ওরদঃ।—

কুয়াওরসঃ সগুড়ঃ শময়তি মদমাশু মদনকোদ্রবজম্॥
কুয়াওরস। • .

কুম্মাণ্ডের রম গুড় মহ মিশ্রিত করিয়া মেবন করিলে, মদনফর ও কোদ্রব (কোদোধান্ত) ভক্ষণ জনিত মত্ততা নিবারিত হয়।

শর্করাত্র্ধ্বম্।—

धृखृतकः द्वाः मनर्कतः भानत्यारगन ॥

শর্করাছম।

ইকুচিনির সহিত হ্রম পান করিলে, ধুতুরা ভক্ষণ হেতুক মত্ত। নিরাকৃত হইয়া থাকে।

রদায়তম্।—

মাতুলুঙ্গদ্রবৈঃ স্থতঃ ভাবিতো বাদরাবধি।

গদ্ধকদ্য পলানাটো নাগং তৎপান সংযুতং।

একীক্ত্যাথ সংভাবাং ইন্তিশুন্তী রহৈনজিধা।

যুমসবৈস্তাহং ভাবাং রামঠেন ভাহং তাহ্য।

শুদ্ধং কাচ্ঘটে ন্যা যামানটো প্রদীপয়েৎ।

সিক্ত্যুখ্যেন রদ্ধেণ বৈদ্যো বিদ্যাবিশারনঃ।

রক্তিকাদ্বিভাগং যোজ্যং মদাত্যয়নিক্ত্রে।

মধুনামলকৈন্নি তাং রাজার্ম্প্র রসায়তম্॥

ইতি শ্রামমাপিক্য দেন বিরচিতে প্রোগচিন্তামণ্যে

পান্তায়াধিকারঃ সমাপ্রঃ।

ইতি একবিংশতিত্যোহধারঃ স্মাপ্রঃ।

রদায়ত।

একদিবস মাতুলুঙ্গ (ছোলজ) লেবুর রদে ভাবিভ ৮ পলা পারদ, শোধিত গন্ধক ৮ পলা এবং শোধিত বঙ্গ ২ পলা; এই দ্রব্যত্তর একত্রিভ করতঃ ক্রমাণুরে হাজিশ ড়া গাছের পাতার রসে, ধূমদবের (মুথার) রসে ও রামঠের (ধলা আঁকড়ার) রসে ৩ ভিনদিবস করিয়া ভাবনা দিবে। উত্তমরূপে ভঙ্ক হইলে, পরে উহা একটা কাচকুপীর মধ্যে রাখিয়া, বালুকাযন্ত্রে৮ প্রহর পাক করিয়া লইবে। বিদ্যাবিশারদ বৈদ্য এই উমধ্ব ২ রভি পরিষাণে মধূ ও আমলকীচ্ ত অহুপান সহ মদাত্যয়রোগীকে সেবন করিতে দিবেন। এই ব্রমায়ভা উমধ্ব রাজার ব্যবহার্ঘ্য বলিয়া জানিবে।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এস্থে পানাত্যয়া। ধিকারে একবিংশতিতম-অধ্যায় সমাপ্ত।

দাবিৎশতিতমোইধ্যায়ঃ।

তাথ দাহাধিকারঃ।

দাহ্য্য সাধারণ চিকিৎসা।

ক্ষীরেঃ ক্ষীরিকষারৈশ্চস্থশীতৈশ্চন্দনান্বিতঃ। অন্তর্দাহং শময়েদেতৈশ্চাব্যশ্চ শীতলৈঃ॥

ু অবস্তুর দাহরোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

দাহরোগের সাধারণ চিকিৎসা।

রক্তচন্দন সংযুক্ত শীতল ত্রমা অথবা বটাদি ক্ষীরিরক্ষের কাথ এবং অস্থান্ত শীতল দ্রারা অন্তর্দাহ নিবারিত হয়। কাথ প্রস্তুত করিতে হইলে ক্ষীরিরক্ষের স্বক্ সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল /॥॰ অর্দ্ধসের, শেষ কাথ / / • অর্দ্ধপোয়া জানিবে।

ধনা কজলম ।—

বু।ষিতং ধন্যাকজলং প্রাতঃ পীতং দশর্করং পুংদাং। অন্তর্দাহং শময়ত। চিরাদ্র প্রকৃষপি॥

ইতি জ্বান্যমাণিক্য দেন বিন্চিতে প্রয়োগ-চিন্তামণো দাহাধিকারঃ সমাপ্তঃ। ইতি দ্বাবিংশতিতমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

थकां कल ।

রাত্রিতে ২ ভোলা ধনিয়া উত্তমরূপে কুটিত করতঃ ৮ ভোলা জলে ভিকাইয়া রাখিবে। পরদিবদ প্রাভঃকালে বস্তু দ্রারা দেই জল ছাঁকিয়া, । তোলা চিনি মিশ্রিত করিয়া পান করিলে, বছকালস্থায়ী অন্তর্দাহও নিবারিত হইয়া থাকে।

ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগ চিস্তামণি এস্থে দাহা-ধিকারে দ্বাবিংশভিতম-অধ্যায় সমাপ্ত।

ত্রাবিংশতিত্যো২ধ্যায়ঃ।

অথোমাদাধিকারঃ।

শেতোমভ পায়সঃ।—

খেতোমতোত্তরদিঙ্ মূলসিদ্ধস্ত পারসঃ।

গুড়াজ্যসহিতোহন্তি সর্কোমাদাংশ্চ সর্কজান্।
অনন্তর উন্নাদরোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

খেতোশতপায়সঃ।

শ্বেতধৃতুরা রক্ষের উত্তরদিণের মূল > পদা, তণ্ডুল ৪ পলা এবং ছফ্ক / ৪ চারিদের; ইহাতে উপযুক্ত পরিমাণে চিনি প্রভৃতি প্রদান পূর্বক পামন প্রস্তুত করিবে। এই পায়স মৃত ও গুড় সহ ভক্ষণ করিলে উন্মানরোগ নিনারিত হইয়া থাকে।

বিশেষ কথা—ধুতুরামূলের যে পরিমাণ নির্দিষ্ট হইল, উক্ত পরিমাণে এক্ষণে ব্যবহার হইতে পারে না; স্থতরাং অতি দাবধান হইয়া এই দকলের মাত্রা ছির করিয়া লওয়া একাস্ত আবশ্যক। যেহেতু, অধিক মাত্রায় ব্যবহৃত হইলে, উহা দ্বারা বিপরীত ফল ঘটিয়া থাকে। অধিক কি উহাদ্বারা মৃত্যু পর্যান্তও ঘটিতে পারে, কার্ণু ধুতুরা এক প্রকার বিযাক্ত ক্রব্য জানিবে।

তালশাখনরসঃ।---

উন্মানে সমগ্র পেরঃ শুদ্ধো বা তালশাখজঃ। তালশাখজরস।

তলিশাখার রুগ মধুর সহিত অথবা কেবল তালশাখার রুগ সেবন করিলে উত্থানরোগ বিষ্ট হট্টয়া থাকে।

নস্যাভ্যঞ্জন।—

রসে নস্যোহভাঞ্জনে চ সার্ধপং তৈলমিষ্যতে ॥ নস্য ও অভ্যঞ্জন।

দর্বপ ভৈল দার। নস্য এছণ করিলে অথবা দর্বপ ভৈল অঙ্গে মর্দ্ধন করিলেও উন্মানরোশ্র নিবারিত ছইমা থাকে।

ठ छेकी भारमकी तर ।—

অপরুচটকী গীর পিভোনানবিনানিনী। বদ্ধং সার্থপতৈলাক্তমুন্তানকাতপে ন্যসেৎ॥ চটকামাংসগীর।

উন্থাদ রোগীকে শিশু চটকীর (চড়াই পাফীর শাবকের) মাংস পেষণ র্বক ছপ্তের সহিত পান করাইয়া, রোগীকে সর্বাঙ্গে সরিষার তৈলে মাখা-বা রৌজে উত্তানভাবে (ভিৎ করাইয়া) শায়িত করত: আৰদ্ধ করিয়া খিবে। উহাতে নিশ্চরই উন্থাদরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে।

পানীয়কলাগে की तकलाग्रा ।--

বিশালা ত্রিফলা কৌন্তী দেবদার্কেলবালুকং। স্থিরা নতং রজন্যে দে শারিবে দে প্রিয়সুকাঃ। भीतार भरेननाम क्षिष्ठी मही माजिम कमातः। তালীশপত্রং ব্রহতী মালত্যাঃ কুসুমং নবং। বিভুঙ্গং পৃশ্বিপর্নী চ কুঠং চন্দনপদ্মকো। অষ্টাবিংশতিভিঃ কল্কৈরেতৈরক্ষ সমন্বিতঃ। চতুপ্ত বিং জলং দত্ত্বা মৃতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। অপসারে দ্বরে কানে শোবে মনানলেক্ষয়ে। বাতরক্তে প্রতিশ্বায়ে তৃতীয়ক চাতুর্থকে। ছর্দ্ধারশোমূলকডেছু চ বিদর্পোপহতেষু চ। क ७ भा ७ । गरशाचारन विवरमङ भरतयू ह । দোষোপহত চিভানাং গদাদানামুরেতসাং। শতং স্ত্ৰীণাক বন্ধানান্দায়ুৰ্বৰ্ণ বলপ্ৰদং। व्यवक्षी भागतिकाष्ट्र मक्त ग्रहित भागरे। কলাণাকমিনং সর্পিঃ শ্রেষ্ঠং পুংসবনেযুচ। অনুক্ত লক্ষণামূলং ক্ষিপন্ত্যত্ৰ চিকিৎসকাঃ। विजनः महजू कीतः कीतकनानं कि पुर ॥ পানীয় কল্যাণ মুত।

রাখালশশার মূল, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কোন্তী (রেংকা),
দাক, এলবালুকা, স্থিরা (শালপাণী), নত (তগরপাত্নকা), হরিজা,
হরিজা, অনন্তমূল, খ্যামালতা, প্রিয়স্কু, নীলোৎপল, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা,
নীমূল, মাড়িমছাল, নাগকেশর, তালীশপত্র, ব্যাকুড়, হুডন মালতী ফুল,
ভুদ্ব, চাকুলে, কুড়, রক্তচন্দন ও পদ্মকাষ্ঠ; এই ২৮ অফ্টাবিংশতি এব্য কল্ডার্থ

উত্তমরূপে কৃতিত করত: চতুপ্রণ অর্ধাৎ ১৯ ষোলদের জলসহ এবং /৪ চারিদের উৎকৃত গাবা ছত যথানিয়মে পাক করিবে। এই ছত প্রতিদিন উপযুক্ত মারায় অহপান বিবেচনা পূর্বক দেবন করিলে অপস্মার, জর, কাস, শোষ, মন্দামি, ক্ষয়, বাতরক্ত, প্রতিশ্বার, তৃতীরকজ্বর, চাতুর্থকজ্বর, বিমি, অর্শঃ, মূত্রকৃচ্ছু, বিদর্প, কণ্ডু, পাণ্ডু, উন্মাদ, বিষদোয়, প্রমেহ ও গরদোষ রোগ সত্তর বিনক্ত হয়। এই ছত পান করিলে ভ্তোপহত্তিত ব্যক্তির-চিত্ত প্রাহার বাক্য অপরিক্ষৃতি, তাহার বাক্যের জড়তা বিনক্ত করে; এবং ইহা হর্মলে ব্যক্তি ও বন্ধ্যানারীগণের পক্ষে অভীব উপকারী। বিশেষতঃ ইহা আয়ুঃ, বর্ণ ও বলবর্দ্ধক; অলক্ষী, পাপরক্ষঃ ও সর্বপ্রকার এহ বিনাশক। এই পাণীয় কল্যাণক ছত পুংসবন অর্থাৎ পুত্রাদি সন্তানোৎ-পাদক হেতু সর্বপ্রেষ্ঠ যোগ বলিয়া জানিবে।

कौदकनार्ग पृष्ठ।

রাখালশশা বা মামালাড়, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, রেণুকা, দেবদাক, এলবালুকা, শালপানা, (ছালানী), তপরপাছকা, ছরিছা, দাক্তছরিদ্রা, জনন্তমূল, শ্রামালভা, প্রিয়ন্ত্র, নীলোৎপল, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা, দন্তীমূল, দাড়িম, নাগকেশর, তালীশপত্র, ব্যাক্ড, নবমালভীফুল, বিড়ন্ত্র,
চাকুলে (পীঠানী), কুড়, রক্তানন্দ, ও পদ্মকাষ্ঠ; এই আটাইশটী দ্রব্য
সমানভাগে সমস্তে /১ একদের মাত্র গ্রহণকরতঃ কুটিত করিয়া কল্কার্থ গ্রহণ
করিবে; এবং /৮ আটদের জল ও ৬ যোলদের গোড়ম্ম সহ /৪ চারিদের
গব্য স্থত পাকের নিয়মান্ত্র্যারে পাক করিবে। এই মন্ত পূর্ব্বোক্ত পানীয়
কল্যাণক ছতের ন্যায় গুণবিশিষ্ট; অর্থাৎ এই ক্ষীরকল্যাণক স্থত দ্বারাও
অপস্মার, জর, কাস, শোষ, অগ্রিমান্দ্য, ক্ষয়, বাতরক্ত, প্রতিশ্যায়, তৃতীয়ক
জ্বর, চাতুর্থকজ্বর, বিম, অর্লঃ, মূত্রকুজু, কগু, পাণ্ডু, উন্মাদ, বিষদোষ, প্রমেহ
ও গরদোষ বিনম্বী হয় ক্ষেত্র ইছা ভূতোপহতচিত্ত ব্যক্তি, গদাদভাষী,
অপ্পেচেতঃ নীল ব্যক্তি এবং বন্ধ্যান্ত্রীগণের পক্ষে হিতকর অর্থাৎ উন্থাদিগের
আয়ুঃ, বর্ণ ও বল বর্ধিত করে; অলক্ষমী, পাপ-রক্ষঃ ও সর্বপ্রকার গ্রহনাশক এবং পুংসন্দে (সন্তানোৎপাদনে) সর্বজ্যেষ্ঠ বলিয়া জানিবে।

চৈতসং দ্বতম্।—

পঞ্মূলাবকাশ্যর্যা রীক্ষৈরওতির্ব্বলা।
মূর্বা শতাবরী চেতি কাথ্যৈদ্ধি পলিকৈরিম।
কল্যানকন্ম গাঙ্গেন তদ্যুতং চৈতসং স্মৃতম্।
সর্বচেতোবিকারাণাং শমনং প্রমং মতম্।
স্থতপ্রেহতপক্তব্যঃ কাথো দ্যোণান্তসা স্থতাং।
চতুত্তিবাহত সম্পাদ্যঃ কল্কঃ কল্যাণ্ডেরিজঃ

চৈত্তসন্থত।

বেলছাল, দোণাছাল, গণিয়ারীছাল, পাঞ্চলছাল, শালপাণী (ছালানী), চাকুলে (পীঠানি), কন্টকারী, গোকুর, বাাকুড়, রাল্লা, এরগুমূল, তেউড়ীমূল, বেড়েলা, মূর্বা। (স্বচমূখী) ও শভাবরী; এই সকল দ্রব্য প্রভাতে
২ পল মাত্রায় গ্রহণপূর্বক ৬৪ চৌষটি সের জল সহ সিদ্ধ 'কৃরিয়া।৬ বোলসের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া জলীয়ভাগ কাথ গ্রহণ করিবে।
এই ১৬ বোলসের কাথ, এবং কল্কার্থ পানীয় কল্যাণক ঘতোক্ত দ্রবাসমূছ
অর্ধান রাখালশা বা মামালাড়্র মূল, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী,
রেণুকা, দেবদাঞ্চ, এলবালুকা, শালপাণী, তগরপাছকা, হরিদ্রা, দাকহরিট্রা,
আনন্তমূল, শ্যামালতা, প্রিয়্মুন, নীলোৎপল, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা, দন্তীমূল,
দাড়িমফলের ছাল, নাগকেশর, তালীশপত্র, রহতী (ব্যাকুড়), মালতীর
নবপুষ্পা, বিড়ঙ্গ, চাকুলে (পীঠানী), কুড়, রক্তচন্দন ত পদ্মকার্য এই
সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমস্তে /১ এবসের পরিমাণে লইয়া,
ভৎসহ /৪ চারিসের গব্য ম্বত যথানিয়মে পাক করতঃ উপযুক্ত মাত্রায়
প্রতিদিন সেবন করিলে সকল প্রকার চিত্তবিকার বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

শিবাপ্নতম্।—

শিবারাস্ত স্থপ্তায়াঃ পলাৎ পঞ্চশতং পলং। পঞ্চ পঞ্চ সমানায় পঞ্চমূলযুগাৎ পৃথক্। কুট্রারিত্বা চতুঃষষ্টি শরাবৈরম্ভদাথ পচেৎ। পক্তা পানাবশিষ্টেন তেন ক্বাথোনকেন চ। ক্ষীরস্যান্টাভিরাজ্যস্থ শরাবানাকতৃষ্টয়ং। मधुर्याष्ट्रिक मिक्षिष्ठी कूर्छ हन्मनशृह्यदेकः। বিভীতক শিৰা ধাত্ৰী ব্ৰহতী তগৰপাদিকৈঃ। বিভূপং দাড়িমং দন্তী দেবদারু হরেণুভিঃ। তালীশং কেশরং শ্রামা বিশালাশালপ-গীভিঃ। প্রিয়ন্ত্র মালতীপুষ্প কাকোলী যুগলোৎপলৈঃ গ হরিদ্রা যুগলানন্তা মেদৈলাহরিবালুকং। সপুশ্বিপর্ণি কৈরেভিঃ কল্কৈরক্ষ সমন্বিতঃ। निकार मण्य प्रवर्ष यु जात्म निगनिजः भृत्। দেবাসুর আহএতৈ মানুবৈরাক্ষেত্র। গন্ধৰ্মাকৰিতে চৈব পিতৃগ্ৰন্থনিপীড়িতে। ভৃতৈরপ্যভিভূতেচ পিশাকৈঃ পরিপ্রপ্নতে।

ভূজন্বমগৃহীতেন তথাজান্ধলভক্তিতে।

যকৈরপি পরিক্তিতে ভরৈরপ্যদ্ভিতে ভূশং।

শাগতে সর্ববাতেরু সর্ববাপমার এবচ।

শোবে শোথে ক্ষয়েকালে পীনসেচ মদাত্যয়ে।

মেহে.মূত্রগদে চৈব জ্বরে চৈব প্রশাতে।

প্রস্থেহে শূলরোগে চ যুজ্যতে বিষমন্তরে।

রষ্যং বর্ণকরং স্কন্যং বন্ধ্যানামপি পুত্রদং।

জায়ুর্বেদার্থতভ্বিজ্ঞঃ সিদ্ধিদং সমুদীরিতং।

শিবাল্পত মিদং নামা শিবয়োমাদিনাং সদা।

শিবায়ত।

উৎকৃষ্ট गञ्जञ्च /८ गांत्रिरमत, इक्ष /৮ আটদের; काथार्थ भूगालिর শাংস ৫ - পঞ্চাশ পল , পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ যোলদের ও বেল, भागा, गिनशाती, भाकन, गाञ्चाती, भानभागी, ठाकूल, बाकूछ, कर्णेकाती ও গোকুর প্রত্যেকে ৫ পাঁচ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ যোলদের এবং কল্কার্থ যফ্টিমধু, মঞ্জিষ্ঠা, কুড়, চন্দন, পদ্মকাষ্ঠ, বহেড়া, হরীতকী, আমলকী, तृह्छी, তগরপাছকা, বিড়ঙ্গ, पाড়িমফলের ছাল, पञ्जीगूल, (प्रव-দাৰু, রেণুকা, তালীশপত্র, নাগকেশর, স্থামালতা, রাখালশশার মূল, শাল-भागी, श्रिशक, मानजीपूष्प, कारकानी, क्यीदकारकानी, नीरनादशन, इतिसा, দাকহরিদ্রা, অনন্তমূল, মেদ, মহামেদ, ছোটএলাচি, এলবালুকা ও চাকুলে এই সকল কুটিভ দ্রব্য প্রভাকে ২ ভোলা পরিমাণে প্রহণপূর্বক মৃত্যধ্যে নিক্ষেপ করিবে। এই ছক যথানিয়মে পাক করিয়া প্রতি দিবস উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে ; দেব, অস্থর, এহ, ছম্ট মহ্মা, রাক্ষম, গন্ধর্ব্য, পিতৃ-গ্রাহ, ভুত্ত, পিশার, ভুজক্ত্রভুক্ত জাকল জন্ত ও যক্ষ প্রভৃতি কর্তৃক গৃহীত বা উহাদের ভয়ে সমাচ্ছর অপস্মার রোগী নিশ্চয়ই স্বাস্থ্যলাভ করিতে পারে। এই ঘুত সর্ব্যবিধ বার্তব্যাধি, সকলপ্রকার অপস্মার রোগ, শোষ, শোখ, ক্ষয়, কাস, পীনস, মদাতায়, প্রমেহ, বহুমূছ, জ্বর, শূলরোগ ও বিষম জ্বে অভীৰ প্ৰশন্ত ৰলিয়া জানিবে। অধিকন্ত ইহা র্যা, বর্ণকর, হৃদ্য ও ৰক্ষা নারীগণের পুরদ। আয়ুর্বেদার্থজ্ঞ চিকিৎসক্সণ বলিয়াছেন যে, এই শিবা-মৃত সর্ববিধ সিদ্ধিপ্রম্ভ এবং উন্নাদরোগীর নিঃসন্দেহ মঙ্গলজনক অর্থাৎ ইহা द्याता निक्ठत्रहे खेळात्रद्वागं विनश्चे हहेत्रा थादक ।

মহানারায়ণং তৈলম্।—

বিল্যাশগন্ধা রহতীশনংক্রী শোণাক বাট্যালক পারিভদ্রং।
কুদ্রাকট্সাতিবলায়িমন্থং মূলানী হৈনাং শরণীযুভানাং।

মূলং বিনধানৰ পাটলীনাং দপানপ্ৰস্থ বিধিনোদ্বতানাং। দ্রোটারপামফভিরেব পক্ত্রা পানাবশেষেণ রদেন তেন। देवनाएका छार मगरमवद्यामां जः विनन्तान थवानि गवाः। একত্র সম্যক্বিপচেৎ সুবুদ্ধিদ্দ্যাদ্রদক্ষিব শতাবরীণাং। তৈলেন তুলাং পুনরেব পত্র রাম্বাথগদ্ধানিষিদারু কুষ্ঠং। পর্নী চতুক্ষাগুরুকেশরাণি সিদ্ধু খ মাংসী র জনী দ্বরঞ। टेनलেয়कः ठन्मन পুক্ষরাণি এলাতুষষ্টি তগরাকপতাং। ज्ञां के वर्गामुवन भना नः रुप्ती क रेप्स्तायक त्रांत्रकां थाः। **ब्रेटिंड मर्गेर्डिम् भिन्थिगोरिंग त्रार्लिंडा मर्द्ध विधिनांविभक्ट ।** নারায়ণং নাম মহচ্চ তৈলং কপূরিকাশীর মুগাওজানাং। দত্বা স্থান্ধায় বদন্তি কেচিৎ প্রয়োগ-দৌর্গন্ধ-নিবারণায়। চুর্ণীকৃতানাং দ্বিপলপ্রমাণং সর্বৈঃ প্রকারেবিধিবৎ প্রযোজ্যং। আখেব পুংসাং প্রনার্দিতানাং মেকাঙ্গ শুক্ষার্দিত রেপনানাং। ষে পদ্ধবঃ পীঠবিদর্পিনশ্চ বাধিষ্যগুক্রক্ষয় পীড়িতাশ্চ। মন্যাহমুন্তন্ত শিরোগদার্তা মুঞ্জাময়াত্তে বলবর্ণ যুক্তাঃ। সংসেব্য তৈলং সহসাভবন্তি বন্ধা চ নারী লভতে চ পুল্রং। वीता भार मर्द्धा भारत भारत के विकास विकास विकास विकास । না তঃপরং তৈলবরং দদাত্তে বাযুঃ প্রকর্ষং প্রমদাপ্রিয়ত্বং। প্রাপ্নোতি লক্ষ্মীং বিজয়ঞ্চ নিত্যং রক্ষাংসি পাপানি নিহন্তি নৃনং জিহ্বানিলে দন্তগতে চ বাতে রদ্ধৌ বিধেয়ং প্রনাদ্দিতানাং। শাখাগতে কোষ্ঠগতে চ বাতে বাতা পৃহং তৈলমিদং বদন্তি। विভर्कि क्र निर्योगनानाः देज्या भर्यात्मन नरकानृज्ञ । বাতাময়ে বৈদ্যবরেণ যুক্ত মুন্মান কৌব্রানি বিকর্ষিতে চ॥ মহানারারণ তৈল।

উংকৃষ্ট তিলতৈল ৷৬ সের, ছাগত্বন্ধ বা গৰাত্বন্ধ ৷৬ ষোলসের, শতাবরীর রস ৷৬ যোলসের ; কাথার্থ বেলমূলের ছাল, অন্থগন্ধার মূল, রহতী, গোক্ষর, স্থোণাছাল, বেড়েলা, পালিথামাদারের ছাল, কন্টকানী, শোণাল, গোর-ক্ষাকুলে, গণিয়ারী, গন্ধভাদালিয়া ও পাক্লল; এই সকল প্রত্যেকে /২॥ আড়াইশের, পাকার্থ জল ৮ আট্রোণ, শেষ ২ জোণ এবং কল্কার্থ রাহ্মা, অশ্বগন্ধা, মোরী, দেবদাক, কুড়, শালপানী, চাকুলে, মুগাণী, মাষাণা, অগুক্তকার, নাগকেশর, দৈন্ধবলবণ, জটামাংসী, হরিজা, দাক্হরিজা, শৈলেয়, রক্তচ্নন, পুষ্রমূল, এলাচি, যঞ্চিম্ব, ভগরপাত্নকা, মুথা, তেজ্বপত্র, দাক্ত

विनि, अधिवर्ग (जीवक, श्रयक्रक, तमन, महारमन, श्रवि, द्रवि, कारकाली **अ** ১ ক্ষীরকীকোলী), বালা, বচ, পলাশরক্ষেরছাল, শুণ্ঠী, স্থৈনেয়ক, (গেঁঠেলা) ও চোরক নামক গদ্ধদ্রব্য ; এই সকল বন্ধু কুট্টিত প্রত্যেকে ১৬ ভোলা পরি-মাণে গ্রহণপূর্ব্বক ভৈলমধ্যে নিক্ষেপ করতঃ যথানিছমে ভৈল পাক করিবে। এই নারায়ণ তৈল অতি মহৎ বলিয়া জানিবে। কেছং ইহার তুর্গন্ধ নম্ট করিরা স্থান্তি করিবার নিমিত্ত কপূরি, কাশ্মীর (ক্রুম) ও ম্বাণগুজ (কন্ত রী) প্রত্যৈকে ২ পল মাত্রায় দিতে বলিয়া থাকেন। এই তৈল অঙ্গানিতে মর্দন করিলে বায়ুরোগ পীড়িত, পক্ষাঘাতাক্রান্ত, কম্পিত, পঙ্গু, বধিরতা, শুক্রক্ষয়, মন্যাস্তম্ভ, হনুস্তম্ভ ও শিরোরোগাক্রান্ত ব্যক্তি রোগ হইতে मुक्त इरेबा महमारे वल ७ जून्पत वर्गश्री रहा । रेराधाता वक्तानाती वीरवाशम, মর্ব্বগুণবিশিষ্ট, স্থমেধাযুক্ত, 🖻 ও বিনয়াম্বিত পুত্র লাভ করিতে পারে। এই নারায়ণ তৈল অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ তৈল অতি চল্লভ। ইহা দ্বারা শরীরের বর্ণ, স্ত্রীসঙ্গমে সক্ষমতা, লক্ষ্মী ও বিজয় নিত;ই প্রাপ্ত হওয়া যায় এবং ইহাদারা রক্ষঃ 🕭 পাপ দূরীভূত হয়। বায়ুরোগীর বায়ু অত্যন্ত বর্দ্ধিত হইয়া জিহ্বা, দত্ত, শাখা, (হস্ত পদাদি) ও কোষ্ঠ প্রভৃতি আত্রর করিলে, তদ্-বস্থার এই তৈল দ্বারা বিশেষ উপকার প্রাপ্ত হওয়া যায়। অধিকন্ত এই ভৈল ব্যবহার দার। নব্যুবার ভায় রূপ ও শরীর সাভিশয় দৃঢ়তর হইয়া থাকে। স্থবিজ্ঞ বৈদ্য কর্ত্ত এই ভৈদ বাতকর্ত্ত উদাদ ও কৌব্র এভু-ভিতে ব্যবহার্য্য বলিয়া নির্দ্ধিষ্ট হইরাছে।

ভূতভৈরবে। রস।---

মৃতস্তার্কলীহক তালং গন্ধং মনঃশিলা।
স্রোতোহঞ্জনক তুল্যাংশং নরমূত্রেণ মর্দ্নরেৎ।
তত্ত্বাদ্বিগুণং গন্ধং লৌহপাত্রে ক্ষণং পচেৎ।
পক্তপ্রেমিতং প্রাদেদপন্মারহরং ছতিঃ।
হিন্ধু সৌবর্কলং ব্যোধং নরমূত্রেণ সর্পিষা।
কর্ষমাত্রং পিবেচ্চানু রসোহরং ভূতভৈরবঃ॥

ভূতভৈরব রম।

মৃতপ্ত (রদিন্দ্র), অর্ক (তাত্র), লৌহ, শিলা (মনঃপিলা), গদ্ধক, ভাল (হরিতাল) এবং ত্রোভাঞ্জন; এই দকল দ্রব্য দমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্নিত করতঃ নরমূত্র (মন্থ্যের মৃত্র) সহ পেষণ করিয়া পিণ্ডাকৃতি করিবে এবং উহা দ্বিশুণ গদ্ধক সহযোগে লৌহময় পাত্রে রাখিয়া অগ্রি সংযোগে কিছুকাল পাক করিবে। তদনস্তর শীতল হইলে, জলসহ পেষণ করিয়া ৫ পাঁচরতি প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতি দিবস ইহার এক একটা বটীকা দেবনপূর্বক পশ্চাৎ হিঙ্
্ সৌবর্চ্চল (সচল),লবণ,

শুঠী, পিপুল ও মরিচ নমান মাত্রায় লইয়া নরমূত্র ও গ্রায়্ত সহ পেষণ পূর্বক ২ হুই তোলা পরিমাণে দেবন করিবে। এই "ভূতভৈরব রুস্ট ঔষধ ? দেবন দ্বারা নিশ্চয়ই অপান্দ্রার রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

উন্মাদাঙ্কু শোরসঃ।—

ক্রিদিনং কনকদ্রাবৈর্মহারাষ্ট্রাদাবৈঃ পুনঃ।

বিষমুক্তিজলৈঃ স্তুং সমুখাপ্যাথ চটিকাং।

ক্রুত্বা তপ্তাং সগন্ধাং তাং যুক্ত্যা বন্ধনমাচরেৎ।

তৎসমং কানকং বীজমভ্রকং গন্ধকং বিষং।

মর্দ্ধরেৎ ত্রিদিনং সর্বাং বল্লমাত্রং প্রযোজয়েৎ।

ইতি উন্মানাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

দোষোনানং ক্রতং হন্তি ভূতোনানং বিশেষতঃ॥

উমাদাকুশরম।

১ একভোলা পারদ ধুতুরার রদে ৩ তিনদিবস, মহারাফ্রীর (জলপিপুলের) রদে ৩ দিন এবং বিষমৃষ্টির (কুচিলার) রদে ৩ তিনদিন ভাবনা দিয়া,
দেই পারদসহ সমানভাগ বিশুদ্ধ গন্ধক মিশ্রিত করতঃ যথানিয়মে পাক
করিয়া বন্ধন করিবে। তদনস্তর তৎসহ ধুতুরাবীর, অভ্র, গন্ধক ও বিষ
প্রত্যেকে ১ এক ১ এক ভোলা মিশ্রিত করতঃ ৩ তিনদিবস মর্দ্দিত করিয়া
৩ তিনরতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী
বটী অন্প্রণান বিবেচনায় দেবন করিলে বাতপিতাদি দোষজ্ঞ উন্মাদ এবং
ভুতাদিশ্রহ জন্ম উন্মাদরোগ অতি দত্তর নিবারিত হইয়া থাকে।

ইতি উত্থাদরোগাধিকার সমাপ্ত।

অথাপস্মারাধিকারঃ।

নকুলোলুক মার্জ্জার গৃপ্তকীটাহি কাক জৈঃ।
তুঠিওঃ পর্কিঃ পুরীবৈশ্চ ধূপনং কারয়েন্তিষক্।
পুষ্যোদ্ধৃতং শুনঃ পিত্রমপ্যারত্ব মঞ্জনং।
তদেব সর্পিষা যুক্তং ধূপনং প্রমং মতঃ।
রবেদিলং সমাপেষ্য নাসারন্ধং প্রপ্রয়েৎ।
তৎক্ষণাৎ পরিসন্তপ্য কীটঃ প্ততি হুঃসহঃ॥

নকুল (বেজী), উলুক (হুতুমপেঁচা), মার্ক্সার (বিড়াল), গৃগ্র (হাড়গিলা পক্ষী), কীট, অহি (দর্প) এবং কাকপন্মী; এই নকল জন্তর মন্তক, (মুও), পক্ষদেশ অথবা বিষ্ঠা দারা ধূপ প্রয়োগ করিলে অপস্থাররোগ প্রশমিত হয়। ক্রুরের পিত্ত পুষ্যানক্ষতে গ্রহণপূর্বক ভদ্বারা চক্ষতে অঞ্জন অথবা দ্বতমহ ধূপ প্রয়োগ করিলে অপস্মাররোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

আকন্দের পাতা পেষণপূর্বক তদ্ধারা নাসিকার ছিদ্রদ্বর মধ্যে প্রবেশ করাইয়া দিলে, তৎক্ষণাৎ নাসিকা হইতে কীট পতিত হইয়া কীট জন্ম অপন্মাররোগ্ন (যাহাকে সাধারণে মুগীরেগ্ন বলিয়া থাকে) বিনম্ভ হয়।

কুমাওকন্বতং।—

কুয়াওক রসে সর্পিরফীদশগুণে পচেৎ।

যক্ত্যাহ্বকল্কং তৎপান মপস্থার বিনাশনং॥

কুষাওকন্নত।

উৎকৃষ্ট গাব্যস্থত /৪ চারিদের; কুমাণ্ডের (কুমুড়ার) রদ ছতের ১৮ অফাদশ গুণ অর্থাৎ ১৮২ একমণ বত্রিশদের এবং কল্কার্থ কুটিত যফ্টিমধু /১ একদের। এই সকল জব্য সহযোগে যথানিয়মে ছত পাক করিবে। এই মৃত প্রতিদিবদ উপযুক্ত মাত্রায় অহ্পান বিবেচনাপূর্বক দেবন করিলে নিশ্চয়ই অপান্ধার্রোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

পলক্ষধান্যং তৈলং।—

পলস্কযা বচা পথা। রশ্চীকাল্যর্ক সর্যপিঃ।
জটিলাপ্তনাকেশী লাঙ্গলী হিন্ধু চোরকৈঃ।
লক্ষনাতিরসাচিত্রা কুঠেকিড় ভিশ্চ পক্ষিণাং।
মাংসাশিনাং যথালাভং বস্তমূত্রে চতুগু পে।
সিদ্ধমভ্যঞ্জনে তৈল মপস্থার বিনাশনং॥
• ্প্রাৰুক্ষান্য জৈল।

উৎকৃষ্ট ভিলতৈল /৪ চারিদের; পলস্ক্ষা (গুণ্গুলু), বচ, হরীছকী, রুশ্টীকালী (বিছাডী, 'আকল্পমূল, শ্বেডসর্ধপ, জটিলা (জটামাংসী), পৃতনাকেশী (ভূকেশী), লাকলী (ইশলান্ধলিয়া), হিসু, চোরপুন্সী, লকুন, অভিরুষা (যক্তিমধু), চিত্রা (দন্তীমূল), কুড় এবং মাংসাশীপক্ষীর বিট (বিষ্ঠা); এই সকল দ্রব্য কৃত্তিত কল্কার্থ সমান পরিমাণে সমন্তে /১ একদের এবং ছাগ্মুত্র।৬ যোলদের। এই সকল দ্রব্য সহযোগে ভৈল-পাকের বিশ্বি অহ্লসারে ভৈল পাক করিবে। এই ভৈল প্রভান্থ গাত্রাদিতে অভ্যঞ্জন, (মর্দ্দন) করিলে সর্বপ্রকার অপন্মার রোগ নিশ্চয়ই বিনাশপ্রাপ্ত হইরা থাকে।

हेन्द्रकीवि ।-

মৃত স্থতাভ্রকং তীক্ষং তারং তাপ্যং বিষং সমং।

পদ্দকেশরসংযুক্তঃ দিনৈকং মর্দ্রেদ্র্বৈঃ।
স্থানিকিব্যেরও বচা নিজ্ঞাব শ্রণৈঃ।
নিগু জ্যাশ্চ দ্রবিমর্দ্যং তদেগালং পাচয়েৎ পুনঃ।
কঙ্গুলীসর্মপোথেন তৈলেন গন্ধসংযুক্তং।
ততঃ পক্ত্রা সমুদ্ধ্ তা চণ্মাত্রা বটী কতা।
ইন্দ্রেদ্মবটী নাম ভক্ষয়েদাদ্র কদ্রবৈঃ।
দশ্মূলকষায়ঞ্চ কণাযুক্তং পিবেদনু।
অপসারং জয়ত্যাশু যথা সুর্যোদয়ে তমঃ॥

ইতি অপস্থারাধিকারঃ সমাপ্তঃ। ইতি ত্রয়োবিংশতিতমোহধারঃ সমাপ্তঃ।

ইক্সবন্ধনী।

মৃতস্ত (রদিন্দ্র), অজ, তীন্ধ (লৌহ), তার (রুপা), তাপা (স্বর্ণমাক্ষিক), বিষ এবং পদাকেশর; এই দকল দ্রব্য তুলা পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক চ্র্ন করিয়া স্মূ হী (মনসাসীজ), অগ্নি (রক্তচিতা), বিজয়া (ভাঙ্), এরও (ভেরেগুা), বচ, নিম্পাব (সীম), শূরণ (গুল) ও নিপ্ত তী (নিমিন্দা); ইহাদের প্রত্যেকের রুদে একদিবস করিয়া ভাবনা দিয়া পিগুাকুতি করিয়া, পুটপাক দ্বারা পাক করিবে। তৎপরে শীতল হইলে পুনর্বার তৎসহ সমান পরিমিত গন্ধক মিশ্রিত করতঃ কলুলী (কাওন) তৈল ও সর্বপতৈল সহ পাক করিয়া চণক প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার একটী করিয়া বটীকা আদার রুদের মহিত সেবন করিয়া, পশ্চাৎ দশ্যুলের ক্রাথ পিপুলচ্ব সহ সেবন করিলে সর্বপ্রকার রোগ বিন্ধী হয়। ইহাকে ইন্দ্রেক্সী বটী বলে।

ইতি অপস্মারাধিকার সমাপ্ত। \
ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিরটিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" গ্রস্থে
ত্রোবিংশতিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুৰিং শতিতমো২ধ্যায়ঃ।

ত্রথ বাতব্যাধ্যধিকারঃ।

বাতরোগস্থ চিকিৎসা-স্তুম্।— স্বাৰ্মনাবণ স্থিমৈ রাহারৈর্বাতরোগিনঃ। অভ্যঙ্গস্থেহ বস্তাপদ্যঃ সর্বানেবোপপানয়েও॥

অনস্তর বাতব্যাধির চিকিৎসা বলা যাইতেছে। বাতরোগের চিকিৎসা স্থত্ত।

স্বাহ্ন (মধুর), অন্ন ও লবণ রুগান্থিত স্নিগ্ধ আছার, অঙ্গ প্রভৃতিতে তৈলাদি মর্দ্দন, মুভাদি স্লেহদ্রব্য দেবন এবং বস্তিশোধন ইত্যাদি ক্রিয়াদ্বারা বাত্ত্যাধির চিকিৎসা করিবে।

বাতরোগন্ত চিকিৎসা।—
সর্পি স্তৈল বসা মজ্জা পানাভ্যঞ্জন বস্তরঃ।
স্বেদাঃ স্নিগ্ধা নিবাতক স্থানং প্রাবরণানি চ।
রংহণং যচ্চ তৎসর্বং প্রশন্তং বাতরোগিনাং॥

• ব্যান্তরোগের চিকিৎসা।

মৃত, তৈল, বসা, মজ্জা প্রভৃতি পান, অভ্যঞ্জন (অঙ্গাদিতে মর্দ্দন) ও বস্তিরপে প্রয়োগ এবং স্থিমবেদ ; এই সকল দ্বারা বাতরোগীকে চিকিৎসা করিবে এবং নির্বাভ স্থানে (যেখানে আদৌ বায়ুর সঞ্চালন নাই এমত স্থানে) বস্ত্রাদি দ্বারা আরত করিয়া রাখিবে। আর যে সকল রংহণ (যাহাদ্বারা বল, বীর্ঘ্য, তেজ্ঞঃ, ওজঃ প্রভৃতি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে) ঔষধ পূর্ব্বে কথিত হইয়াছে ও পশ্চাৎ কথিত হইবাছে বাতরোগীর পক্ষে অতীব প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

নিরাম বাতস্ত চিকিৎসা।
নিরামং কেবলং বাত মাদো স্নেইরুপাচরেৎ।
যবৈথা ম্যামুজামূপে রসৈকা স্নেহসংস্কৃতিঃ।
কুশরা পায়সাশ্যানিঃ স্থাবিন্নঃ স্বেদয়েভতঃ।

5

বিশ্বস্য চ প্রশামনিত্ত রজান্তত্ত গ্রহাদয়ঃ।
স্বেহঃ পুফাতি সংশুকান ধাতুন পুত্তিবলপ্রদঃ।
অতঃ পুনঃপুনঃ স্নেহঃ স্বেদেশ্চাপুপেপানয়েৎ।
অতোহপ্যশাস্থো মৃত্তভিঃ সমৈহৈত্তং বিরেচয়েৎ॥
নিরাম বায়য় চিকিৎসা।

প্রথমত: কেবলমাত্র স্বেছ্ প্রয়োগ দ্বারাই নিরাম বায়ুর চিকিৎসা করিবে। তৎপরে প্রামা (চ্বাগাদি) জন্ত, অন্মুক্ত (কচ্চ্পাদি) জন্ত এবং আন্পূপ (বরাহাদি) জন্ত; এই সকল জন্তর স্বেছ সংস্কৃত মাংসরস, ক্বশরা (থিচুড়ী), শারস ও রক্তশালি প্রভৃতি তণ্ডুলের স্থাসিদ্ধ অন্ন দ্বারা পঞ্চাৎ স্বিদ্ধ স্বেদ প্রয়োগ করিবে। এবস্প্রকার-স্বেদ-প্রদক্তনিরাম-বায়ুরোগ-যুক্ত ব্যক্তির স্তম্ভ ও বেদনা সমন্বিত নিরাম বায়ুরোগ নিবারিত হয় এবং স্বেছ ঈদৃশ রোগীর সংশুদ্ধ ধাতুর পোষণ করে ও শরীরের উপচয় ও বলপ্রদান করিয়া থাকে। এইরূপে রোগীকে পুনঃ পুনঃ স্বেছ ও স্বেদ প্রয়োগ করিবে। যদ্যপি ইহাতেও রোগের (নিরাম বায়ুর) উপশম না হয়, তবে রোগীকে ক্বেছ বস্তু দ্বারা মৃত্র বিরেচন প্ররোগ করিবে।

বিরেচক দ্রব্যম্ ॥—
পত্রমেরগু তৈল মাপার্য়েদ্যোষশোধনং ॥
বিরেচক দ্রব্য ।

এর গুণত্ত এর গু তৈলসছ পেষণপূর্বক সেবন করিলে বাডরোগীর দান্ত ছইয়া কোষ্ঠ বিশুদ্ধ ছইয়া থাকে।

যুষাঃ ৷—

পটোলফলকৈ যুবি রুষো বাতহরো লঘুঃ।
বাট্যালক কতে। যুবো পরং বাত্তিকার নুথ।
অভয়াত্তৈব যুবার্থং কুলখান বাপি চ ভিপেথ।
মুদোন বাট্যালক যুবস্ত মাষচণকাঢ়াঃ প্রচরতি।
মতেন বিভ্জ্জা সৈম্ববসনুরূপং দেয়ং।
সহমাষর্ভিকেন যুবঃ প্রচরতি।
মতেন বিভ্জ্জা সৈম্বব মনুরূপং দেয়ং।
প্রমন্তাপি যুবরসাদে।।

य्यथात्राग ।

হরীতকী বা কুলখকলাই নহ পটোলফলের বা বেড়েলার যুষ অথবা মুগ, মাযকলায় বা বুটের দাইলের সহিত বেড়েলার যুষ প্রস্তুত পূর্বক ছডে সমলন করিয়া, ভাছাতে যথোপযুক্ত মাজার বৈশ্বব লবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান The second of the second of

মাংসরসাঃ।---

বলায়। পঞ্চমূলসা দশমূলসা বা রসে।
আঙ্গাণীধামূজামূপ ক্রবাদে পিশিতৈঃ পৃথক্।
সাধয়িত্বা রসান্ স্নিধান্ দধাস্ল বোষ সংযুতান্।
ভোজয়েঘাতরোগার্তং তৈর্ব্যক্তলক্ষণৈর্বরং।
আয়ুজাঃ কুর্মানয়ঃ আরুপা বরাহানয়ঃ।
ক্রবাদা বাাস্রশ্যেনগ্রাদয়ঃ।
রস প্রয়োগ।

বেড়েলা, পর্ফমূলী ও দশমূলী (বেল, শ্রোণা, গাস্তারী ইত্যাদি), ইহাদের প্রত্যেকের কাথে ছাগমন্তক, কচ্ছপাদি জলজজ্জর মাংস, মহিষণ বরাহ, হংস প্রভৃতি আনুপদেশবাসী পশুপক্ষীর মাংস অথবা ব্যান্ত, শ্রেন, গুপ্ত প্রভৃতি মাংসালী পশু বা পক্ষীর মাংস পৃথক্ পৃথক্ সিদ্ধ করিয়া মাংস-রস প্রস্তুত করিবে। দোষ বিবেচনাপুর্বেক উক্ত মাংসরসসমূহের যেকোন একটী মাংসরস স্থেহ (তৈলাদি), অস্ত্রদাধি এবং ব্যাষ (শুগী, পিপুল ও মরিচ) সহ সংকৃত করিয়া, ঘাক্তলক্ষণ সংযুক্ত বাতরোগীকে সেবন করিতে দিকে।

মাধাদিপয়। ---

মাষকলার, শুকশিষী, এরওমুল ও বেড়েলা সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, দ্বন্ধ / ১০ দুইছটাক এবং জল / ১০, দেড়পোরা; দ্বন্ধাৰশিক্ট রাখিয়া নামাইয়া ছাঁকিয়া লইবে। এই দ্বন্ধ হিন্দু ও সৈশ্ববলবণ সহ সেবন করিলে পক্ষাব্যান্ত বাত্রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

यायवलानिः।--

মাষবলা শুকশিষী কভূণ রাস্নাশ্বগদ্ধারুবুকানাং। কাথো নস্যনিপীতো রামঠ লবণাশ্বিতঃ বোক্ঃ। অপহরতি পক্ষবাত মন্যান্তম্ভ সকর্ণরুজং। ভুৰ্জ্জা মৃদ্ধিতবাতং সপ্তাহাজ্জায়তি চাবশ্যং॥

মাষ্বলাদি পাচন।

মাষকলায়, বেড়েলা, শুকুশিষী, গদ্ধণ, রাম্না, অশ্বগদ্ধা ও এর গুমূল র এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল /। অর্দ্ধনের এবং শেষ /১ অর্দ্ধপোয়া। এই কাথে হিন্তু ও সৈদ্ধবলবণ ওক্ষেপ দিয়া, ঈষভ্রঞ অবস্থায় নাসিকা দ্বারা সপ্তাহ পর্যান্ত ভোজনান্তে সায়ংকালে পান করিলে পক্ষাঘাত, মন্তান্তম্ভ, কর্ননাদ, কর্নবেদনা এবং ভ্রুত্তর অর্দ্ধিভ্রোগ নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

प्रभाष्ट्री कार्यः ।—

দশমূলস্য নির্যুহে হিঙ্গু পৌষ্ণর সংযুতঃ।
শময়েৎ পরিপীতস্তু বাতং ঝিঞ্জিনি সংজ্ঞকং॥
দশমূলীকাথ।

বেলছাল, শ্বোণাছাল, পাঞ্চলছাল, গণিয়ারীছাল, গান্তীরছাল, শাল-পানী, চাকুলে, বৃহতী, কন্টকারী ও গোক্ষুর, এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল /॥• অর্দ্ধার, শেষ /৯/• তুইছটাক। এই কাথ হিচ্দু ও পুষ্করমূল (অভাবে কুড়) চুর্গ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সিন্সিনি নামক বায়ুরোগ নিবারিত হয়।

স্বলপরদোশপিওঃ।—

পলমদ্ধপলমপি রসোনস্য সুকুটিতং।
হিন্দু জীরক সিন্ধূ খৈঃ সৌবর্চন কটুত্রিকৈঃ।
চূর্ণিতৈর্বাধকোন্মানৈ রবচুর্ণা বিলোড়িতং।
যথাগ্রিভক্ষিতং প্রাতঃ রুবুরুগথানুপানতঃ।
বিনে দিনে প্রয়োজবাং মাষ মেকং নিরন্তরং।
বার্রোগান্নিহন্ত্যাশু চার্দ্দিতং সাপুতন্ত্রকং।
একাঙ্গরোগিনে চৈব তথা সর্বাঙ্গরোগিনে।
উরুত্তন্তে চ গৃধ্রম্যাং ক্রিমিদোবে বিশেন্তঃ।
কটীপৃষ্ঠাময়ং হন্যান্ত্রনক বিশেষতঃ।
বার্গকেন সার্দ্ধলিমিতার্থঃ॥

স্বন্দানপিও।

ভঙ্ক কুটিত রহান ১২ তোলা এবং ছিলু, জীরক, দৈশ্ববলবণ, দৌবর্চ্চল-লবণ, শুগুী, পিপুল ও মরিচ প্রত্যেকে ১ এক মাষা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যগুলি চূর্ণ করিয়া উত্তম প্রকারে একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ অগ্নি, বলাদি বিবেচনা করিয়া প্রতিদিন ৮ মাষা বা দশমাষা মাত্রায় এরণ্ডের কাথ অনুপান সহ সেবন করিবে। এইরুপে ১ একমাস

ভশাসমায়তং।—

অশ্বসন্ধা ক্যায়ে চ কল্কে ক্ষীরচতুগুণিং। প্রস্তু বাতস্থং র্ষ্যং স্কৃতং মাংস বিবর্দ্ধনং । অশ্বসন্ধায়ত।

উৎকৃষ্ট গ্রাঘ্ত /ও চারিদের, অশ্বনদ্ধার কাথ। ধোলসের, কল্কার্থ কুটিত অপ্যক্ষা /> একদের এবং গ্রাহ্রন্ধ। ৬ ষোলসের। যথানিয়মে এই ঘৃত পাকপূর্বক প্রতি দিবস উপত্বক্ত মাত্রায় দেবন করিবে। এই অশ্বনদ্ধা ঘৃত সক্ষবিধ বাতবাধি নাশক, রুষা এবং শরীরের মাংস বর্ধক অর্থাৎ অভান্ত পুটিকর বলিয়া জানিবে।

महाक्रांगलाना वृज्ः।—

ছাগমাংসং তুলা গ্ৰাহং দশমূলাাঃ শতন্ত্ৰী। অশ্বন্ধা পলশতং বাট্যালক শতন্ত্রথা। শ্বভাদকং পচেভোৱৈশ্চত্বৰ্ভাগাবশেষি**তৈঃ।** ক্ষীরং ক্ষেহসমং দত্ত্বা শতাব্ধ্যা রসন্তথ্য। তাত্রপাত্তে দুঢ়ে চৈব শবৈ মুদ্বগ্নিনাপচেৎ। অসা সমাগ্ বিশুদ্ধসা কলকং শুক্তি সমন্বিতং। জীবন্তী মধুকং দ্রোক্ষা কাকোলো। নীলমুৎপলং मुख्य महन्मनय तांका शर्मिनी बत्र मातिरव। भारत प्र ह ज्था कूछें की वक्ष जरतो भारी। দাৰ্কী প্ৰিয়ন্ধু/ত্ৰিফলা নতং তালীশপদ্মকো। এলাপত্রং বর্নীনাগং জাতী কুসুম ধান্যকং। मिक्षिष्ठी नोष्ट्रियः नोतः त्रिश्व तरेकन्यानुकः । বিশুঙ্গং জীরককৈব পেষয়িত্ব বিনিক্ষপেৎ। বস্ত্রপৃতে চ শীতে চ শর্করা প্রস্থসন্মিতং। নিধাপয়েৎ নিশ্বপাতে আদে বা ভালনে দা अरन्त्रोयसम् मिक्स मृत् वीर्या मजः निक् দেবনেবং নমস্কৃত্য সংপূজ্য চ বিভায় ভক্ত পাণিভলং আহং পিচেৎ কীন্ত্ৰিক্ত

গোমানে পকাগতে চ আগানে কোষ্ঠবিএইে। কর্ণরোগে শিরোরোগে বাধির্য্যে সাপত্রতক। ক্রোইশীর্ষে তথাখঞ্জে কুজে চ গুধ্রদীগদে। অপতানে মিঝিনে চ রক্তপিত্তে তথোর্দ্ধণে। जानाः इश्रमीविकारत्व का वर्षक सरत्व ह । হনু গ্ৰহে তথা শোষে ক্ষীণে হৈবাৰবাহুকে। দ্রাপতানকে ভঙ্গে দাহে চাক্ষেপকে তথা। জীর্ণজ্বরে বিষে কুষ্ঠে শেকস্তজ্ঞে জড়ে ভ্রমে। ক্ষীণে ক্রিয়ে নইন্ডক্রে শুক্র-িংসরণে তথা। অর্দ্ধাঙ্গভেদকে চৈব তিমিরে বাক্যসঙ্গকে। মক্তান্ত্ৰ।২শ্ৰুনিপাতে চ তথা ক্ষিস্পন্ন হপি চ। স্নীণাংবাতহতে রক্তে প্রদরে সর্বসম্ভবে। যোনিমধ্যগতে বাতে যোনিশূলে চ শস্যতে। ক্ষণগর্ভে নম্বন্ধকে মূচগর্ভে বিশেষতঃ। একাপ্সম্পাননে চৈব তথা সর্কাপ্সম্পাননে। নগানিপতিতে চৈব স্ত্রীণামপ্রাপ্তিহেতুকে। আভিগরিকদেশ্যেরু ধনসন্তাপসম্ভবে। যে বাত্মন্ত্রবা রোগা যে চান্যে পিত্সন্ত্রবাঃ। নিরোমধাণতা যে চ জজ্বাপারে ১ সংস্থিতাঃ। মাত্র এহাভিত্তাশ্চ শিশুর্যাঃ পরিশুষাতি। खनार खवाजि यमान्य यमान्यनार न निक्षि । মুতেনানেন দিধাত্তি বজ্রমুটি রিবা ুরান্।

রসারণে বহ্নিবল প্রদশ্চ বপুঃপ্রকর্ম বিদ্যাতি রূপং।
রসারণে বহ্নিবল প্রদশ্চ বপুঃপ্রকর্ম বিদ্যাতি রূপং।
প্রীনাং শতং গচ্ছতি সাতিবেগং ন যাতি তৃপ্তিং সবলং সমাতঃ।
গজেন মতেন সমানতে জাঃ চিরায়ুষং পুত্রশতং করোতি।
গতান্যবংশা মৃতপুত্রিকা চ অপুত্রিনী পুত্রশৃতন্ধরোতি।
মহস্তুতং নাম হি ছাগলানাং বিনির্মিতং বাতনিস্থানক।
শিবং শুভং রোগভয়াপহক চকার হারীতমুনির্কিশিকাঃ॥

মহাছাগলাল ছত। উৎকৃষ্ট গ্ৰু ছক ।৬ যোলদের; কাথার্থ ছাগমাংস। ২॥• সাড়ে বারুসের,

खन ७८ (मत, भिष ।७ (योल(मत ; मनगूल ममजारा ममर्ख ।२॥ । मार्फ वांत्र-ি'দের, জল ১৪ সৈর, শেষ।৬ যোলদের ; অশ্বশন্ধা।।।।• সাড়ে বারদের, জল ী৬৪ সের, শেষ।৬ ষোলদের ; বেড়েলা।২।।• সাড়ে হার্ক্সের, পাকার্থ জল ২।।৪ এক মণ চব্বিশদের, শেষ। ৬ ষোলদের। গব্যছমা । ১ ষোলদের এবং শতা-বরীর স্বরম।৬ যোলদের। এবং কল্কার্থ জীবন্তী, যফিমধু, দ্রাক্ষা, কাকোলী, 🗢 क्लोबकारकाली, नीरलायर्गल, गूथा, बक्कठव्यन, ब्राह्मा, गूगागी, मांवागी, व्यनस-ন্ল, শ্রামালতা, মেন, মহামেন, কুড়, জীবক, ঋষভক, শটী, দাকহরিদ্রা-প্রিয়সু, হরীতক্রী, আমলক্ষা বহেড়া, তগরপাত্নকা, তালীশপত্র, পদ্মকাষ্ঠ, এলাচি, তেজপত্র, শতাবরী, নাগকেশর, জাতীফুল, ধনিয়া, মঞ্জিচা, দাড়িম ় ফলের ছাল, দেবদাক, রেণুকা, এল গালুকা, বিড়ঙ্গ এবং জীরক এই সকল কুট্টিত দ্রব্য প্রত্যেক ও চারিভোল। মাত্রায় গ্রহণপূর্ব্যক এই দ্বতসহ দৃঢ় তাজ-পাত্রে রাখিয়া মৃত্র অগ্নিদন্তাপে পাক করিবে। এবং বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া শীতল হইলে, তাহাতে /২ হুইদের ইকুটিনি মিশ্রিত করতঃ একটা স্লিগ্ধ বা আর্দ্র-ভাও মধ্যে রাখির। দিনে। ইহা প্রতিদিন প্রাতঃকালে মহাদেবকে নমস্কার পুর্বাক কার্ত্তিকেয়কে পূজা করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় ছ্ম্ম অহপান সৃহ সেবন করিলে উন্থান, পাকাঘাত, আগ্রান, কোষ্ঠবেদনা, কর্নরোগ, শিরোরোগ, বধি-রতা, অপতন্ত্রক, ভূতোহাদ, গৃপ্রদী, উদ্ধার, তল্পতিত, পার্যণূল, কাদ, পাণ্ডু-রোগ, হলীমক, পাদকতক, হডোগ, মূত্রকুছ্, পল্প, ক্রোস্ট শীর্ষ, খঞ্জ, কুব্জ, অপতানক, মিশ্মিন, উর্দ্ধণ রক্তপিত্ত, আনাহ, অর্প, চাতুর্থক জ্বর, হনুগ্রহ, শোষ, ক্ষীণ, অববাতক, দণ্ডাপভানক, ভঙ্গ, আক্ষেপক, জীর্ণজ্বর বিষ, কুন্ঠ, শেকস্তম্ভ, (হজভত্প), জড়, ভ্রম, ক্ষীণেন্দ্রিয়তা, শুক্রকার, শুক্রনিঃসরণ, অদ্ধান্তত্ত্বক, তিমির, বাকরোধ, রাত্র্যন্ত্রা, অশ্রুনিপাত (চকু দিয়া জল পড়া) ও অক্ষিম্পন্দন রোগ বিনষ্ট হয়। অধিকন্ত ইহা স্ত্রীলোকে দেবন করিলে ভাহাদিশের বায়ু কর্তৃক রক্তবন্ধ, সর্কবিধ প্রদররোগ, যোনি মধাগভ বায়ু-, রোগ, যোনিশুল, ক্ষণগর্ভতা, নম্ট শুক্রতা, মূচুগর্ভ, একাঙ্গম্পান্দন, সর্ববান্ধ-ম্পান্দন এবং পর্বাভাদি হইতে পুতুর, ইউবস্তুর অপ্রাপ্তি, আভিচারিক দোষ ও ধনাদি অপহরণ জনিতঃ বাতজ ও পিত্তজ্ব রোগ সকল, শিরোমধাগত রোগ এবং জজ্ঞা ও পার্যগত রোগ সমূহ বিনষ্ট হইয়া থাকে। যে শিশু মাত্রহাভিত্ত ও প্রস্তির শুষ্ঠ হওয়ায় শুন হন্ধ পান করিতে না পাইয়া অতীব শৃষ্ক অর্থাৎ কৃশ হইতে থাকে, তাহাকে ও প্রস্থৃতিকে এই মৃত পান করাইলে স্তনে হুগ্নের সঞ্চার ও বালকের কুশতা দূরীভূত হয়। এই দৃত শ্রেষ্ঠ রদায়ন এবং অগ্নি ও ললপ্রদ। ইহা দারা শরীরের প্রকর্ষ ও ্উভ্জ্ল রূপ হইয়াথাকে। এবং শ্রীর এতাকৃশ পবল ও সমাক হয় যে, শতস্ত্রীসন্তোগ করিলেও বীর্ঘাক্ষয় হেতু কোনপ্রকার অনিস্ক ঘটে না। পরস্ক ইহা দেবনে মত্ত হস্তীর সমান তেজঃসম্পান হইর। শত পুত্র উৎপাদনে সক্ষ-, মতা জ্বো এবং ইছা দ্বারা মৃতবংসা ও অপুত্তিনী নারীরও শত পুত্র উৎপন্ধ

হইয়া থাকে। এই বাতব্যাধি বিনাশক, মঙ্গলজনক, সর্কবিধরোগ ভয়া-পহারক "মহাছাগলান্য ছত্ত" মহামতি হারীত মূনি কর্ত্ত্বক কথিত হই-

হংসাদি মৃতং।---

হংসমেকং সমাদায় পচেভোয়াচকে ভিষক্। চতুর্ভাগাবশেষস্তু মৃতদ্য পলমটকং। মৃত্তুল্যং বিদধ্যাতৃ তৈলদেরগুদন্তবং। ষ্ঠবিব দশমূলস্য প্রত্যেকং কর্ষমন্টকং। **জলে চাউগুনে পাচ্যং তৃতীয়াংশাবশেষিতং।** ত্রিকট ত্রিফলা মুন্তং পিপেলীমূল পদাকং। বর্দ্ধানস্য মূলং সাধনপি চ পরিকীর্ভিতং। শুক্ষমূলং কদয়ক শ্কশিধী পুনর্বা। ভালমূলী বিদারীচ দাব্বী সিন্ধূ অনাগরং। প্রত্যেকং কর্মভাগং স্যান্ত্রাগঞ্চাপি ত্রিকাষিকং। নিশারদোন চিত্রাণাং কলকং দত্তা পচেৎ স্থবীঃ। পাদশেষ্য পরিস্রাব্য কর্মার্ক্মাত্রকং কিপেৎ ! যথায়ি ভক্ষণং কার্যাং সর্ববাতবিকারিণাং। জড়ে মূকে তথা খঞ্জে পাঙ্গুলো চাববাহকে। কালে খালে তথা শোষে কয়ে চ বিষমানলে। হস্তকম্পে শিরঃকম্পে তথা সর্কাঙ্গকম্পনে। গুধ্রদাণং কুব্রুকে নিতাং স্থারে জীর্ণে বিশেষতঃ॥

হংসাদি য়ত :

উৎকৃষ্ট গৰাম্বত /২ ছুইদের। এরও তৈল /২ গের। ক্লাথার্থ একটা হংদ পদ্দীর মাংসা জল।৬ যোলদের, শেষ /৪ চারিংসর; বেলা, দোণা, গান্তীর, পাক্লা, গানিয়ারী, শালপাণী, চাকুলে, রহতী, কন্টকারী ও গোক্ষর ইহাদের প্রত্যেকে ২২তোলা, পাকার্থ জল উহাদের সর্বাসমিক্তির ৮গুণ, শেষ ভৃতীয়াংশ (কেহং চতুর্পাংশ বলিয়া থাকেন) এবং কল্কার্থ শুণ্ঠী, পিপুল, মারচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মুখা, পিপুলমূল, পদ্মের মূল, এর গুল্ল, শুক্ষগুলা, কদম্মূল, শুক্শিম্বী, পুনর্নবা, তালমূলী, ভূমিকুত্মাগু, দাকহরিদ্রা, দৈরবলবণ ও শুণ্ঠী, প্রত্যেকে ২ তোলা এবং হরিদ্রা, রসোন ও রক্তচিতারমূল প্রশ্যেকে ৬ ছয় ভোলা পরিমাণে এহণ পূর্বাক ম্বত্ত মধ্যে নিক্ষেপ করিবে। এই মৃত যথানিয়্মে পাক করিয়া, তায়ির বলাছ্লারে যথোপমুক্ত মাতায় দেবন করিকে

সর্কবিধ বায়ুবিকার, জড়তা, মূকতা, শঞ্জতা, পাসুল্য, অবথাছক, কাস, শ্বাস, ক্ষয়, শৌষ, বিষমাগ্নি, হস্তকম্পা, শিরংকম্পা, সর্কাঙ্গকম্পা, গৃগুসী, কুজতা, নিত্যজ্বর, বিশেষতঃ জীণজ্বর নিশ্চরই আবোগাঁ ইইয়া থাকে।

মাষ্ঠিলং।—

মাংদপ্রস্থং সমারোপ্য পচেৎ সম্যক্ জলাতকে।
পানুদেশের রসে তিমান্ ক্ষীরং দদ্যাক্ষত্ত পং।
প্রস্থা তিলতৈলস্য কলকং দত্যাক্ষসন্মিতং।
জীবনীয়ানি যান্যটো শতপুজ্পাং সদৈন্ধবাং।
রাম্মাত্তিপ্তা মধুকং বলাব্যােষ ত্রিকণ্টকং।
পক্ষাঘাতার্দিতে বাতে কর্ণশূলে চ দারুণে।
মন্দ্র্রাতে চাগ্রবণে তিমিরে চ ত্রিদােষজে।
হস্তক্ত্যে শিরংকম্পে বিস্থচ্যা মববাহকে।
শত্তং কলায়খঞ্জে চ পানাভ্যঞ্জন বস্তিষু।
মাবতৈল মিদং গ্রেষ্ঠ মূর্দ্ধজ্ঞানাপহং।
মাবতৈল নিদং গ্রেষ্ঠ মূর্দ্ধজ্ঞানাপহং।
মাবতৈল।

উৎকৃষ্ট ভিলতৈল /৪ চারিদের। কাথার্থ ছাগমাংস /২ ছুইদের, পাক
নিশিত্ত জল ।৬ যোলদের, শেষ /৪ চারিদের, ছয় ।৬ যোলদের। এবং
কল্কার্থ ঋদ্ধি রদ্ধি, মেদ, মহামেদ, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, ঋষভক,
জীবক, শলুফা, সৈশ্ববলবণ, রাস্থা, শূকশিষী, যফিম্বু, বেড়েলা, শুঠ, পিপুল,
মরিচ ও গোক্ষর। যথানিরমে এই ভৈল পাক করিয়া পান ও অভ্যঞ্জন
প্রোগ করিলে পক্ষাঘাত, অর্দ্ধিতবাত, দাফণ কর্গশূল, অপ্পশ্রবণ, বধিরতা,
তৈদোবিক তিমির রোগ, হস্তকম্পা, শির:কম্পা, বিস্কৃচী, অববাত্তক, কলায়খঞ্জ এবং জক্রর উদ্ধিগত ব্যুৱা সমূহ নিবারিত হয়।

অশ্বগন্ধ। তৈলং।--

শতং পক্ত্বাশ্বগন্ধায়া দলটোণে হংশশেষিতং।
, বিস্থাব্য বিপচেতিলং ক্ষীরং দত্ত্বাচত্ত্ত গং।
কল্কৈয় গাল শালুক বিসকিঞ্জক মালতী।
পুল্পৈর্জীবের মধুকৈঃ শারিবা পদ্মকেশরৈঃ।
দেদা পুনর্নবা দ্রোকা রহতীদ্বয়মেবচ।
এলৈলবালু ত্রিফলা মুস্তচন্দন পদ্মকৈঃ।
প্রং রক্তাশ্রিতং বাতং রক্তাশিত্বস্যুদ্রং।

হন্যাৎ পুঞীবলন্ধু থ্যাৎ ক্ষশানাং মাংসবর্দ্ধনং। রেতোযোনিবিক্যরন্থং ত্রেণনোধাপকর্ষণং। ষ্টানপির্যান্ কুর্যাৎ পানাভ্যঙ্গানুসেবনাৎ॥ অখ্যক্ষা ভৈল।

তিল তৈল /৪ গরিসের। কাথার্থ অশ্বন্ধা। বাড়েবারসের, জল ৬৪ দের এবং শেষ।৬ যোলসের, দুগ্ধ।৬ যোলসের। কাল্পার্থ স্থলমূণাল, শালুক, ক্ষুদ্রমূণাল, পদ্মবীজ্ঞ, মালতীপুষ্প, বালা, যফিমপু তানন্ত্র্যল, পদ্ম-কেশর, মেন, পুনর্নবা, কিসমিদ, ব্যাকুড়, কন্টবারী এলাচি, এলবালুক, হরী-তকী, আমলকী, বহেড়া, মুথা, রক্তচন্দন ও পর্যাক এই দকল বুটিতজন্য সমভাগে সমস্তে /১ একদের শ্রহণ পুর্বক তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া যথানিরমে পাক সমাপ্ত করিয়া লইবে। এই অশ্বনকা তৈল যথানিরমে পান. অভাঙ্গ ও অন্ত্রেবন করিলে রক্তান্ত্রিভ বাতব্যাধি, রক্তিপিত, প্রদর রেভঃও যোনিবিকার এবং ব্রান্দোম নিবারিভ হয়। ইহা অভীব পুষ্টি ও বলপ্রদ এবং ক্রশ ব্যক্তির মাংস বর্দ্ধক। এমন কি এই অশ্বনদ্ধ। তৈল ব্যবহার দ্বারা যও (নপুংসক) দিগেরও শুক্ত বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

বিষ্ণুতৈলং।— শালপণী পৃশ্বিপণী বলাচ বহুপুত্রিকা। এরওদ্য চ মূলানি রহত্যোঃ পুতিকদ্য চ। প্ৰেধুক্স্য মূলানি তথা সহচরস্য চ। এষান্ত্র পলিকৈর্ভাগৈ ক্তৈলপ্রহং বিপাচয়েৎ। আজম্বা যদি বা গব্যং শীরন্দ্রণাচ্চতুত্ত ৭ং। অস্য তৈলম্ম শিদ্ধস্য শুণু বীর্য্য মতঃপরং। অশানাং বাতভগ্নানাং কুঞ্জরাণাঞ্চ দেহিনাং। আয়ুত্মাংশ্চনরঃ পীত্রা নিশ্চয়েন'নুল্নে ভূবেৎ। ষচ্ছ লে পার্যশূলে চ তথৈবাদ্ধাঙ্গভেদকে। कामना পाञ्चतारा ह नर्कताश्वतिरक्षय ह। ক্ষীণেক্রিয়া নরা যে চ জরয়া জরিতা কুতাঃ। ষেষাকাপি ক্ষয়োব্যাধি রন্ত্রবৃদ্ধিত দারুণ।। অর্দ্ধিতং গলগগুরু বাতলোগিত্রমৈবচ। স্ত্রিয়ো যা ন প্রসূয়ন্তে তাদাকৈব প্রযোজয়েৎ। গর্ভমশ্বরীবিন্দ্যাৎ কিং পুনর্শানুষী তথা। এতদঙ্গবরং তৈলং বিষ্ণুনা পরিকীর্ত্তিতং

বিষ্ণু তৈল।

জিল জৈল /৪ চারিদের। ছাগত্বন্ধ বা গর্লপ্রনা ৬ বোলদের। কল্কার্থ শালপাণী, চাকুলে, বেড়েলা, বহুপুত্রিকা (শতমূলী), এরওমূল, বাাক্ড, কন্টকারী, পৃতিকরঞ্জমূল, গবেধুক (গোরক্ষ চাকুলে) এবং সহচর (ঝিন্টী); এই দ্রন্য সকল কৃটিত প্রত্যেকে ৮ ভোলা পরিমাণে প্রহণপূর্বক তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া ধ্রানিয়মে পাক করিবে। এই তৈল উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে বাতভ্রা, অখ, হস্তী ও মহযোর রোগ দুরীভূত হইয়া নিশ্চমই উহাদের শরীর দৃঢ় হয়। এবং ইহাদ্বারা হচ্ছুল, পার্খশূল, অর্জাঙ্গভেদক, কামলা, পাণুরোগ, শক্রা, ক্ষীণেশ্রিয়ভা, জর, ক্ষারোগ, দাকণ অন্তর্মনি, জর্দিত বাতরোগ, শলগও ও বাতরক্তরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হয়। এবং ইহাদ্বারা অপ্রস্থতা নারীদিগেরও সন্তান উৎপন্ন হয়। অধিক কি মাহ্যীর কথা দুরে থাক্, ইহা দ্বারা অপ্রভরী পর্যান্ত গর্ভধারণ করিয়া থাকে। এই তৈল স্বয়ং বিফু কর্ত্বিপ্রকাশিত বলিয়া ইহার নাম "বিফুতৈল" ইইয়াছে।

কুজ প্রসারণী তৈলং।

প্রানারণী শতং কুরং পচেন্ডোরার্মণে শুভে।
পানশেষে সমং তৈলং দধি দ্যাৎ সকাঞ্জিকং।
দ্বিশুণক প্রোনত্বা কলকান্ দ্বিপলিকান্ ক্লিপেৎ।
চিত্রকং পিপেলীচূলং মধুকং সৈদ্ধবং বচাং।
শতপুজাং দেবদারুং রাম্বাং বারণপিপেলীং।
প্রসারণ্যাশ্চ মূলানি মাংশী ভল্যতকানি চ।
পচেমুদ্বরিনা তৈলং বাতশ্বেম্বাময়ান্ জয়েৎ।
ভানীতি, নরনারীস্থান্ বাতরোগান্ ব্যপোহতি।
কুল্রন্ডিমিত পর্মুত্বং গৃপ্তমী খুড়কার্দ্বিতং।
হৃৎপৃষ্ঠ শিরোগ্রীবাস্তম্ভকাশু নিষ্কৃত্বতি॥

কুজপ্রসারিণী তৈল।

ভিশ তৈল ।৬ ষোলসের। কাথার্থ গন্ধভাদালিরা ।২॥• সাড়ে বারসের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ,।৬ যোলদের। দধি ।৬ যোলসের, কাঁলি ।৬ দের এবং গব্যন্থম ৸২ বতিশনের। কল্কার্থ-রক্তচিভার মূল, পিপুলমূল, যফিম্বু, সৈন্ধবলবণ, বচ শলুকা, দেবদাফ, রাস্মা, গজপিপুল, গাঁধাইলের মূল, জটামাংসী এবং শোধিত ভেলাবীজ প্রভ্যেকে ১৬ ভোলা মাত্রায় প্রহণপূর্বক মৃত্ব অগ্নিসংযোগে পাক করিয়া লইবে। এই ক্জপ্রসারিণী ভৈল ব্রথানিরমে অল্লাদিতে মর্দ্দন করিলে বাভিকরোগ, কৈন্দ্রিকরোগ, অশীতি- প্রকার বাতব্যাধি, কুজতা, তিমিরতা, পক্স্থ, গৃপ্রদী, খুড়করোগ, অর্দিড, বাতব্যাধি, হনুস্তম্ভ, পৃষ্ঠস্তাট্ট, শিরস্তম্ভ ও শ্রীবাস্তম্ভরোগ আশু নিবারিড ছইরা থাকে।

সিদ্ধার্থ তৈলং।—

শতাৰ রী রস প্রস্থায়মেব সমাহরেৎ I रिज्लमा ह शहर अच्हः कीतः मनाक्रपुर्श नः। ততন্ত্ৰ তৎ পচেদ্ধিমান শবৈমুদ্ধিনা দুঢ়ং। অফুধা চ ভতোভাগং দাপয়েৎ কর্মাত্রকং। मञ्जूष्म (नवनांक गांश्मीरेमलांक व्यव्हा চন্দনং তগরং কুঠং এলাচাংশুমতীনিশাং। রাহ্মাতুরগগন্ধা চ সমঙ্গা মরিচানি চ। পৃশ্নিপর্ণী বলা চৈব তথা গম্বর্ক হস্তিনী। সৈন্ধবং রদমাধার্যাং বিশভেষজ মুস্তকং। এভি স্তৈলং বিপক্তবাং দত্বা দ্রবাণনি চৈকতঃ। কুজা াং বামনানাঞ্চ পঙ্গুনাঞ্চ জড়াত্মনাং। মহাবাতেন ভগ্নানাং পীড়কানাং ভবৈথবচ। সক্ষোচে চ গলগ্ৰীবাবাতভগ্না চ দাৰুণাঃ। জরেষু সন্নিপাতেষু শ্লেযাগ্রন্থের দাপয়েৎ। বাতগুলানি ভগানি কুজানাং দারুণেয় চ। কুক্ষিশূলেয়ু সামঞ্চ কর্ণশূলঞ্চ নাশয়েৎ। হনুস্তন্তেয়ু বাতেয়ু সর্ব্বমেতদ্বাপ্যেহতি। একাঙ্গং শোষ্যতে যেষাং বিহ্বলা চৈব যে নরা। , কিণে ক্রিয়া শ্চ যে মর্ত্তার জরয়া জর্জ্তরী কৃতাং। ভুক্তং নজীর্যাতে যদ্য চাতুর্দ্ধিশ্চ দারুণা। ষা চ বন্ধা ভবেরারী কাকবন্ধা চ যা ভবেৎ। ভগ্নযোনিশ্চ যা কেচিৎ যা চ গৰ্ভং ন বিন্দতি ! অপচীং গ্রেমালাঞ্চ বাতশোণিতমেব চ। कुष्टर विविद्यिको त्रांगर मक्तिभाग विलिधिको । নিহন্তি সকলানু রোগানু তথাহি সাল্লিপাতিকানু। কুরমন্টবিধং হস্তি সর্ব্যমেভদ্বাপোহতি॥

সিদ্ধার্থ তৈল।

ভিল ভৈল /৪ চারিসের; শভাবরীর রম /৮ আট্রের এবং শব্যহ্ম।৬ বোলদের। কল্কার্থ শলুফা, দেবদাক, জটামাংসী, শৈলজ, দাকচিনি, রক্ত-চন্দন, তগরপাহ্নকা, কুড়, এলাচি, শালপানী, হরিদ্রা, রাস্কা, অস্বগন্ধা, মঞ্জিষ্ঠা, মরিচ, চাকুলে, বেড়েলা, এর গুমূল, হস্তিনী নামক গন্ধপ্রব্য, সৈন্ধবলবণ, রমা-ঞ্জন, শুঠী এবং মুখা; এই সকল কুটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা মাত্রায় গ্রহণ-পূর্ব্যক যথানিয়মে ভৈল পাক করিবে। এই ভৈল উপযুক্ত নিয়মে অঙ্গাদিতে মর্দন করিলে কুজতা, বামনতা, পঙ্গুতা, জাডা, বায়ু কর্তৃক ভয়, পীড়কা, সঙ্গোচ, গল ও শ্রীবার ভগ্নভা, সর্ব্যবিধ সান্নিপাতিকজ্বর, স্লেশ্বরোগ, শ্রম্থিননা, বাতজ্ঞলা, আমজনিত কুফিশূল, কর্ণশূল, হনুস্তম্ভ, একাঙ্গ-শুদ্ধতা, ক্রিকলতা, ক্ষীণেন্দ্রিয়তা, জরা, অজীর্ন, দাক্রণ অস্তর্বন্ধি, বন্ধ্যাত্ব, কাকবন্ধ্যাত্ব। (যে স্ত্রীর একটী মাত্র সন্তান হইয়া আর হয় না, ভাছাকে কাকবন্ধ্যা নারী বল্লা যায়), গর্ভহীনতা, অপচী, গগুমালা, যাত্রক্ত, কুষ্ঠ, বিচর্চ্চিকা, পামা, দক্র, বিলম্বিকা, সান্নিপাতিক রোগ সকল এবং অস্ট্রবিধ জ্বরোগ বিন্তী ইইয়া থাকে।

রহৎ সিদ্ধার্থ তৈলং ।—
প্রসারণ্যাশ্চ কল্কানি কল্কানি শতকন্ম চ।
তাভ্যাং সিদ্ধস্ত যতৈলং রহত্তৎ পরিকীর্ত্তিতং।
রহৎ সিদ্ধার্থ তৈল।

পূর্ব্বোক্ত সিদ্ধার্থ তৈলে কল্করপে প্রসারণী (গাঁদাইল) ও শলুফা প্রদান করিলে "রহৎ সিদ্ধার্থ তৈল" বলা যায়।

রহচছতপুষ্পানি তৈলং।—

দ্বিভাগং শতপুষ্পক্ষ বচানৈদ্ধবয়োন্তথা।
ভাগৈকং চিত্রকক্ষৈব পিপেলীমূল মেবচ।
ক্রুমূলং নেবনাক্র রাক্ষাং মধুককুষ্ঠকং।
প্রামারণান্তির মাংশী চ ভল্লাতং করিপিপেলী।
এবাং কল্কং সমাদায় পচেৎ তৈলং ভিষম্বরঃ।
জলং চতুন্তাণং দত্বা বাতরোগ নিবর্হণং।
অসাধ্যে কাহুমূলে চঁ তথা চার্দ্ধান্ত প্রবং॥
রহছত্তপুষ্পাদি তৈল।

তিল তৈল /৪ চারিদের, জল ।৬ ষোলদের এবং কল্কার্থ শালুফা, বচ ও দৈশ্ববলবণ প্রত্যেকে ২ ভাগ ; রক্তচিতার মূল, পিপুলমূল, এরগুমূল, দেব- দাক রাস্তা, ষষ্টিমধু, কৃড, গন্ধভাদালিয়ার মূল, জটামাংসী, শেধ্বিত ভল্পা-ভকবীত ও গজপিপুল প্রত্যুকে > ভাগ ; এই সকল মোট /> একসের মাত্র গ্রাহণপূর্বক ভৈলমধ্যে নিক্ষিপ্ত করিয়া যথানিয়মে ভৈল প্রস্তুত করিবে। এই ভৈল দ্বারা অভ্যন্ত ও বন্তিপ্রয়োগ করিলে বাহুমূলগভ অর্দ্ধান্তদক বাত-সংধি বিনক্ট হয়।

মহাবিষ্ণু তৈলং।—

শতাবরীচাংশুমতী পৃশ্নিপর্ণী শচীবলা । এরওন্স চ মূলানি রহতোগঃ পুতিকন্স চ। গবেধুকশ্য মূলানি তথা সহচরশ্য চ। এষাং দশপলান্ ভাগান্ জলদ্রোণে বিপাচয়েৎ। পুনর্বা বচাদার শতাহ্বা চন্দরাগুরু। শৈলেয়ং তগরং কুষ্ঠ মেলামাংসী স্থিরা বলা। অশ্বনন্ধা দৈন্ধবঞ্চ পলার্দ্ধানি প্রপেষয়েৎ। গবাৰ জপয়দোঃ প্ৰস্থে দ্বো দ্বাবত প্ৰযোজয়ে । শতাবরী রসপ্রস্থং তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। অশ্ব তৈলদ্য পরুদা শৃণুবীগ্য মতঃপরং। অশানাং বাতভগ্নানাং কুঞ্জরাণাং নৃণাং তথা। তৈল মেতৎ প্রয়োক্তব্যং সর্ববাত বিকারিণং i আয়ুত্মাংশ্চ নরঃ পীত্রা নিশ্চয়েন দুঢ়োভবেৎ। গর্ভমশ্বতরী বিন্দ্যাৎ কিং পুনর্শানুধী তথা। হচ্ছুলং পাশ্বশূলঞ্চ তথৈবাদ্ধান্সভেদকং। অপঠীং গওমালাঞ্বাতরক্তং, হন্গ্ৰং । কামলাং পাণ্ডুরোগক অশারীক বিনাশয়েৎ। অপতানকাপস্মারে) নাশয়েত্তৎ ক্ষণাদপি। মহাবিফু মনং শ্রেষ্ঠং বিফুনা পরিকীর্ত্তিতং॥ মহাবিফুটভল।

বিশুদ্ধ তিল তৈল /৪ চারিসের, শত্মূলীর রস /৪ চারিসের, গব্যত্বন্ধ /৮ আটদের এবং ছাগত্ত্ব /৮ আটদের। কাথার্থ শতাবরী, শালপানী, চাকুলে, শটী, বেড়েলা, এরগুগ্ল, ব্যাকুড়, কণ্টকারী, ডহর করঞ্জের মুলের ছাল, রাখাল শশার মূল ও নিন্দী; এই সকল কুটিত দ্রব্য প্রভ্যেকে ১০ পল (৮০ তোলা), পাকার্থ জ্বল ৬৪ সের, শেষ।৬ সের এবং কল্কার্থ পুনর্নবা, বচ, দেবদাক, শলুফা, রক্তন্দন, শৈল্জ, ভগরপাত্ত্বা, অগ্রন্থক কাঠ, কুড়, এলাটি, জটামাংদী, শালপানী, বেড়েলা, অশ্বগৰা ও দৈৰবলবণ; এই দকল কৃটিত প্রত্যেকে অর্ধপল অর্ধাৎ চারিতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিরা যথানিয়মে তৈল পাক করিবে। এই তৈল যথাবিধানে অঙ্গাদিতে মর্দন করিলে অগ্ন, হস্তী ও মহযের বাতকর্ত্ক ভগ্নতা ও দর্ববিধ বাতবিকার বিনষ্ট হয়। মহ্য্য ইহা পান করিলে দীর্ঘায়ুঃ এবং দৃঢ় শরীরবিশিষ্ট হয়। জ্রীলোকের কথা দূরে থাকুক, এই তৈলু ব্যবহার দ্বারা অশ্বতরী পর্যন্ত গর্ভ ধারণে দক্ষমা হয়। পরস্ক ইহা দ্বারা হৃদয়শূল, পার্শ্বশূল, অর্দ্ধান্ধভেদক, অপচী, গণ্ডমালা, বাতবক্ত, হ্র্গহ, কামলা, পাণ্ডুরোগ, অশ্বরী, অপতানক ও অপস্মাররোগ অতি দত্তর নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে। এই মহাবিষ্ণুত্তল স্বয়ং বিষ্ণুক্ত প্রকাশিত হইয়াছে।

মধ্যনারায়ণ তৈলং।-

বিলাগ্রিমন্থে শ্যোণাকঃ পাটলা পারিভদ্রকঃ। প্রসারণ্যখগদ্ধা চ ব্রহতী কণ্টকারিকা। বলাচাতিবলা চৈব শ্বদংক্রী সপুনর্বা। এষাং দশপলান্ ভাগান্ চতুদ্রে বিষয়সঃ পচেৎ। পাদশেষং পরিস্রাব্য তৈল পাত্রং প্রদাপয়েৎ। শতপুষ্পা দেবদারু মাংদী শৈলেয়কং বলা। ठनमनः তগরং कुर्छ स्मनाभनी ठजुरुसः। क्रांचा जुक्रगंगक्कां ह रिमक्कारः मधूनर्नारः। এষাং দ্বিপলিকান্ ভাগানু পেষয়িত্বা বিনিক্ষিপেৎ। শতাবরী রসকৈব তৈলতুল্যং প্রদাপয়েৎ। আজয়া যদিবাগবাং ক্ষীরং দদ্যাচ্চতুগু বং। পানে বক্তৌ তথাভ্যাঙ্গে ভোজনে চৈব শক্ততে। অখো বা বাতভগ্নো বা গজো বা যদি পীড়িতঃ। পঙ্গুলঃ পীঠদর্শীত তৈলেনানেন দিধাতি। অধোভাগে চ যে যাতা শিরোমধ্যগভাশ্চ যে। দত্তশূলে হরুন্তন্তে মন্যান্তন্তে গলএহে। • তম্ম শুষ্যতি চৈকাঙ্গং গতিষ্যম্য চ বিহ্বলা। ক্ষীণেক্রিয়া নইওক্রা জ্বক্ষীণাক্ষ্য যে নরা। বধিরা ললজিহবা চ মন্দ্রেধ্স এব চ।

মন্দ প্রজা চ যা নারী যা চ গর্ভং ন বিন্দৃতি।
বাতার্ত্তো রহণো যেষা মন্ত্রহৃদ্ধিন্দ দারুণা।
এতবৈলবরং তেষাং মধ্যনারারণং স্মৃতং।
তগরং নতমাত্রস্যাদভাবে শীরলীছোপড়ঃ॥
মধ্যনারারণ তৈল।

তিল তৈল।৬ ষোলদের : শতাবরীর রম।৬ ষোলদের, গ্রান্ত্র অথবা ছাগভন্ধ ৬৪ দের। কাথার্থ বেলমলের ছাল গণিয়ারীছাল, শোণাছাল, পাকলছাল, পালিথামাদারের ছাল, সন্ধভাদালিয়া, অনুসন্ধা, বৃহতী, কন্ট-কারী, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, গোক্ষুর এবং পুনর্বা; এই সকল দ্রবা কুট্টিভ প্রত্যেকে ২০ পল (৮০ তোলা), পাক নিমিত্ত জ্বল ৪ চারিম্রোণ অর্থাৎ ৮৫৬ মের, শেষ ১৪ সের। কলকার্থ শলুফা, দেবদাক, জটামাংদী, শৈলজা, বচ, बुक्क कम्बन, जगद्र भाष्ट्रका, कुछ, अलाहि, भाष्ट्रभाषी, काकुरल, गुगाबी, यायावी, রাম্ব', অম্বন্ধান দৈয়বলবণ ও পুনর্না; এই সকল কুটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ পল অর্থাৎ-১৬ ভোলা মাত্রায় গ্রহণপূর্বকে তৈল মধ্যে নিকেপ করিয়া যথাবিধানে তৈল প্রাক করিবে। এই তিল পান, বস্তিপ্রয়োগ, অভান্ধ ও আছারীয় বন্ধর মহিত মেবন করিলে বাতাকান্ত অশ্ব, হন্তী ও মন্ত্রয় নিশ্চরই আরোগ্য লাভ করিতে পারে। পঙ্গু ও কুক্ত ব্যক্তি এই তৈল মর্দন করিয়া রোগ হইতে নিষ্কৃতি লাভ করিতে পারে। শরীরের অধোভাগ-সংস্থিত ও শিরোগত বাতরোগ এবং মন্থান্তম্ভ, হল্লম্ভ, গল**এ**ছ এবং যাহার একান্ধ অথবা সর্বান্ধ শুষ্ক হইয়াছে কিম্বা যে সকল ব্যক্তি ভগ্ন-গতি, বিকলেন্দ্রিয়, নমুশুক্র, ছীনবল, জুরক্ষীণ, বধির, লোলজিহন, অপ্প-মেধানী অথবা যে নারী একটী মাত্র সন্তান প্রস্নাব করিয়াছে কিন্তা যে নারীর আদে পর্ভদঞ্চার হয় না, তাহাদিগের পক্ষেও অতীব হিতজনক বলিয়া জানিবে। বিশেষতঃ বাতার্ত্রষণ ও অন্তর্মদ্ধ রোগাক্রান্ত ব্যক্তির পক্ষে এই মধানারায়ণ তৈল অত্যন্ত উপকারী।

বিশেষ কথা,—নত শব্দে তগরপাত্নকা বলিয়া জ্বানিবে, এই তগর পাত্নকার অভাবে শিয়লীছোপড় ব্যবহার হইয়া থাকে।

মহাগাষ তৈলং।—

মাষদ্যাদ্ধান্তকং দত্তা তুলাদ্ধং দশমূলতঃ।
পলানি ছাগমাংসদ্য ত্তিংশদ্ধোণেইস্তদঃ পতে ।
পুতে শীতে কষায়ৈ চ চতুর্থাংশাবভারিতে।
প্রস্থা ভিলতৈলদ্য পয়ো দত্তা চতুর্গুণং।
আত্তপ্রোক্তব্কশ্চ শভাহ্বা লবণত্তাং।
জীবনীয়ানি মঞ্জিষ্ঠা চব্যচিত্রক কট্ফলং।

স্বোধং পিপ্পলীমূলং রাস্না মধুক সৈম্বং।
দেবদার্বয়তারুষ্ঠং বাজীগন্ধা বচা শ্রী।
এতৈরক্ষসমৈঃ কল্কিঃ দাধয়েৎ মৃত্নায়িনা।
পক্ষাঘাতার্দ্ধিতে বাতে ছর্দ্দিতে হনুদংগ্রহে।
কর্ণ মন্যা শিরঃশূলে তিমিরে চ ত্রিদোষঙ্গে।
পানিপ্রান শিরোগ্রীবা ভ্রমণে মন্চংক্রমে।
কলায়্রখপ্ত পাঙ্গুল্য গৃপ্তস্যা মববাহুকে।
পানে বস্তৌ তথাভ্যঙ্গে নস্য কর্ণাক্ষিপ্রণে।
তৈলমেতৎ প্রশংসন্তি সর্ববাত রুজাপহং।

মহামাষ তৈল।

তিল তৈল / ৪ চারিসের; গব্যহুদ্ধ ।৬ যোলসের। ক্রাথার্থ মাষকলায় /৪ চারিসের; বেল, শোণা, পাঞ্চল, গণিয়ারী, ব্যাকুড়, কণ্টকারী, গোক্ষুর, গাস্তারী, শালপাণী ও চাকুলে এই দশমূল সমভাগে সমস্তে /৬।০ সোয়া ছয়সের এবং ছাগমাংস ৩০ তিশপল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ।৬ যোল-সের। কল্কার্থ শুকশিষী, এরওমূল, শলুফা, সৈন্ধবলবণ, সচললবণ, বিট্লবণ, জ্ঞীবক, ঋযভক, মেন, মহামেন, ঋদ্ধি, রদ্ধি, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, মঞ্জিষ্ঠা, চই, রক্তচিতার মূল, কট্ফল, শুঠী, পিপুল, পিপুলমূল, মরিচ, রাস্মা, যফিম্মু, সৈন্ধবলবণ, দেবদাঞ্জ, গুলঞ্চ, কড়, অশ্বগন্ধা, বচ, ওশটী; এই সকল কুটিও দেব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া মৃত্ন অগ্নি সংযোগে তৈল পাক সমাপ্ত করিবে। এই তৈল পান, বস্তিপ্রস্রাা, অভাঙ্গ, নস্ম, কর্ণপূরণ ও অক্ষিপ্রণ রূপে প্রয়োগ করিলে পক্ষাঘাত, অদ্ধিতবাত, বমি, হন্তুগ্রহ, কর্ণশূল, মন্ত্যাশূল, শিরংশূল, তৈদোঘিক তিমির-রোগ, হস্তকম্পন, পাদকম্পা, শোরংকম্পা, গ্রীবাকম্পা, মন্দগতি, কলায়পঞ্জ, পাঙ্গুলা, গুরুদী ও অববাহুব্বরাশী নিশ্চয়ই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। এই মহামায তৈল সর্বপ্রকার বাডুব্যাহি নাশক বলিয়া উক্ত হইয়াছে।

হিমসাগর তৈলং।—
শতাবরী বিদারী চ কুয়াওং শাল্মলীরসঃ।
ধাত্রী গোক্ষুরক রুবুকদলী মূলকং শঠী।
কেতকীমূল মেতেষাং প্রত্যেকস্য রুসাঢ়কে।
তৈলাঢ়কং পচেদ্ধীমান্ নারীকেল জলাঢ়কে।
লবঙ্গাগুরু কক্ষোল চন্দনং তগরং মুরা।
মাংসী শৈলেয়কং কুষ্ঠং মঞ্জিষ্ঠা শরলা বলা।

পুতিকা পত্রয়ম্ভাগ্রে নেবলার নিশাদ্বয়ং। পীতিকাকুন্দুরু লোধ্রং নীলিকা হিমবালুকা। রোচনা জাতিকোষক মুক্তং মধুরিকা শঠী। জাতীফলং পদ্মকাষ্ঠ খেতচন্দনশিল্কং। গ্রন্থিপর্ণং নখং রামা কুন্ধুমং নাগকেশরং। ত্রেষাং পলিকৈর্ডাগৈ ভৈলত্ল্যেন মন্ত্রনঃ। আজেন প্রস্বাপি গ্রেটেন্ব বিধান্তঃ। সুনিদ্ধনাগদ্যতৈলদ্য শুণু বীধ্য মতঃপরং। উলৈৰিপততাং নৃণাং গতো বা বাজিনন্তথা। একান্ধ রোগিণাকৈব তথা সর্ববান্ধ রোগিনাং। পক্ষাঘাতার্দ্দিতাকেপ হনুস্তম্ভ প্রকম্পিনাই। দুঃমাধ্য বাতরোগেন পীড়িতানাঞ্চ শূলিনাং। ক্ষতানাং ক্ষীণশুকুানা মতান্ত দুৰ্কলাজ্বাং। महाद्वां विकातां गां छन्तां मा नाहरमहिनाः। এত ভৈলবরং শ্রেষ্ঠং হিম্সাগর সংক্ষিতং। মানবানাং হিতাপায় দভাত্রয়েণ ভাষিতং। অস্য সম্যগ্গুণান্ বক্তুং কঃ সমর্থো ধরাতলে । যে বাতপ্রভাবারোগা যে চ পিত সমুদ্রবাঃ। তে সর্ব্বে প্রশম্থ যান্তি তৈলস্যাস্য প্রসাদতঃ॥

ছিমসাগর তৈল।

উৎকৃষ্ট তিল তৈল ।৬ সের। দধিরমাৎ ।৬ সের, ছাগছ্ম বা গব্যছ্ম ।৬ যোলসের, শতাবরী, ভূমিকুত্মাণ্ড, কুত্মাণ্ড, শ্নিসূল্যাল, আমলকী, গোকুর, এরগুমূল, কদলীমূল, শানী ও কেতকীমূল ইহাদের প্রত্যেকের স্বরম ।৬ যোলসের এবং নারিকেল জল ।৬ যোলসের। কল্কার্থ লবন্ধ, অগুককার্থ, কাক্লা, রক্তচন্দন, তপরপাহ্রকা, মূরামাংসী, জটামাংসী শৈলজ, রুড, মঞ্জির্ফা, দেবদারু, বেড়েলা, পুতিকরঞ্জ, তেজ্বপত্র, যক্তিমধু, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, সরলকার্চ, পীতশাল, কুন্দুক্রখোর্টী, লোধ, নীলবুহুা, হিম্বালুকা (কর্পূর), রোচনা (গোরোচনা), জাতিফল, জৈত্রী, মুখা, মৌরী, শানী, পানকার্চ, শেতচন্দন, শিলারস, গোঠেলা, নখী, রাম্বা, কুন্দুম এবং নাগকেশর; এই সকল কুন্তিত দ্রব্য প্রত্যেকে ৮ ভোলা পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক তৈল পাক করিবে। এই তৈল অঙ্গাদিতে মর্দ্ধনাদি করিলে উচ্ছান অথবা হন্তী প্রভৃতি হইতে পভনজনিত ভয়তা, একাঙ্গরোগ, সর্বাদ্বোগ, পকাহাতি, আর্দ্ধিত, আক্ষেপ,

হনুভন্ত কল্ডা, নর্ববিধ ত্রংদাধ্য বাতরোগ, শূল, ক্ষত, ক্ষীণশ্রীকিটা, নিনিন্দ্রী, দহারোগ (উন্মান, কুণ্ঠ, রাজ্যক্ষনা, শ্বাস, মধুমেহ, ভগুন্দর ও উদর এই অফবিধ রোগকে মহারোগ বা মহাব্যাধি বলে), গুলা, অর্থ্য, দাহ ও মেহরোগ নিশ্চনই বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এই সর্বস্রেণ্ঠ "হিমসাগর" নামক ভৈল মানবগণের হিতের নিমিত্ত দত্তাত্রের ঋষি কর্ত্ত্ক কথিত হইয়াছে। এই হিমসাগর ভৈল এভাদৃশ গুণশালী যে, তাহা বলিয়া উঠা যায় না। ইহা দ্বারা সর্বপ্রকার বাতিক ও পৈত্তিক রোগ নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

হরীতক্যাদি চূর্ণং ।—
হরীতকী বচা রাস্থা সৈদ্ধবং সাম্লবেতসং ।
স্থতমাত্র সমাযুক্ত মপতন্ত্রক নাশনং ॥
হরীতক্যাদি চূর্ণ।

হরীতকী, বচ, রাশ্বা, দৈশ্ববলবণ ও অল্লবেড্স; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ সমভাগে গ্রহণপূর্ব্বক ঘৃত সহ মিশ্রিভ করতঃ লেছন করিলে অপতন্ত্রক বাত-রোগ বিন্দ্ত হইরা থাকে।

বিভীতক্যাদি চূৰ্ণং ৷—

বিভীতাতিবিষামুন্তং শুণ্ঠী ভার্গী চ পিপেলী।
ক্বত্বা চুর্ণানি বৈন্যেন পীতানুম্ফোনকেন বা।
নাশয়তি নৃণাং শীদ্রং কাদখাদাপভন্তকং।
বিভীতক্যাদি চুর্ন।

বিভীত (বহেড়া), আতইস, মুথা, শুগুী, বামনহাটী ও পিপুল এই দকল দ্রব্যের সমতাগ চূর্ন উষ্ণজ্ঞল সহ সেবন করিলে অতি সত্ত্বর কাস, শাস ও অপতন্ত্রক বাতব্যাধি বিন্ধী হয়।

রাস্বাগুগুলুঃ।—
রাস্বায়াস্ত প্লক্ষেক্ই কর্মান্ পঞ্চ চ গুগুগুলোঃ।
স্পিরা বটিকাং ক্লুলা খাদেন্দ্রন্তি চ গুগুমীং॥

্রাসাপ্তগ্রাক্ত চন্ত্র রাসাপ্তগ্রাক্তন

রাম্মা ৮ তোলা এবং শোষিত গুণ্গুল ৫ তোলা লইয়া দ্বত সহ পেষণ পূর্ব্বক উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতি দিবস ইহার একটী করিয়া বটী দেবন করিলে গুগ্রমী নাতরোগ বিনষ্ট হয়।

ত্রোদশাঙ্গ গুণ্গুলুঃ।—

আহাশ্বসন্ধা হরুষা গুড়ু চী শতাব্রী গোক্ষুর রদ্ধদারকং। শতাহ্বা স শঠী যমানী স নাগরা চেতি সমৈশ্চচুর্ণং। তুল্যং ভবেৎ কৌশিক মত্রমধ্যে দেয়ং তথাসর্পি রথার্দ্ধভাগং।

অদ্ধান্দমাত্রং ত্বওত প্রয়োগাৎ কৃত্বানুপানং সুরয়াথ যুধৈঃ। यानानवा कांक जातन वानि कीरतन वा मारमतामन वानि। কলী এতে গৃধ্রণী বাহুপৃষ্ঠে হন্ গ্রহে জানু নিপান মুখে। সন্ধিস্থিতে বাস্থিগতে চ বাতে মজ্জাগ্রিতে স্নায়ুগতে চ কুষ্ঠে। রোগাঞ্রেদ্বাতককানুবন্ধান্ বাতেরিতান্ হুদেগ্রহযোনিদোষান্। ভগ্নান্থি বিদ্বেষু চ খঞ্জবাতে ত্রোদশাঙ্গং প্রবদন্তি রদ্ধাঃ॥

व्यापनाष खग्रल् ।

আহ (বণিক্ দ্রব্য বিশেষ), অশ্বগদ্ধা, হবুষা, গুলঞ্চ, শভাবরী, গোক্ষুর, विखाएक, अनुका, अधि, यमानी ७ एथी, এই मकल जरवात हुन প্রত্যেকে সমান ভাগ, সর্ব্ব সমষ্টির সমান গুগুগুলু এবং গুগুগুলুর অর্দ্বেক মৃত গ্রহণ পূর্বাক সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষং দোষ বিবেচনার স্থরা, মূল্যাদির যুষ, মদ্য, উঞ্জল, ত্লম অথবা মাংস রস সহ সেৰন করিলে কটী গ্রহ, গ্রদী, বাতু, পৃষ্ঠ ও হনুগ্রহ, জাতু, পাদ, সন্ধি, অস্থি, মজ্জা ও স্নায়ুগত বাতরোগ, কুঠ, কফাত্রবন্ধরোগ দকল, হৃদ্ এই, যোনিদোষ, ভগ্ন, অন্থিবিদ্ধত। ও খঞ্জবাতরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়। থাকে।

বাতারিরসঃ।—

ক্রমোভরগুণং শুদ্ধং রদগন্ধং ফলত্রিকং। চিত্রকং গুগগুলুং পঞ্চমদ্যমেরওতৈলকৈঃ। পুরাগরহতী যুগাদেবদার চ চূর্ণিতং। ७७९ शूरतोषि मभः मन्दामगाममाज्ञकः। কর্যং খাদেৎ পিবেৎ কাথং নাগরৈরও মূলকৈঃ। मर्करेनत्र ७ टेन्टिन शृष्टि स्वातः कातरार । বিরেচনং ভবেতেন স্নিগ্ধমুক্তঞ্চ ভোজনং। রুসোবাতবিনাশোহয়ং সর্ববাতহরঃ পরঃ। পঞ্চেতি সংখ্যাকরণা ত্রিফলা ত্রিকভাগতঃ॥

বাভারি রুম।

শোধিত পারদ ১ ভাগ, শোধিত গন্ধক ২ ভাগ, ত্রিফলা ৩ ভাগ, রক্ত-চিডার মূল ৪ ভাগ এবং গুগুগুলু ৫ ভাগ, পুলাগপুষ্প ৫ ভাগ, ব্যাকুড় ৫ ভাগ, ফন্টকারী ৫ ভাগ এবং দেবদাক কাষ্ঠ ৫ ভাগ; প্রথমে পারা ও গন্ধক একত্র মর্দন পূর্ব্বক কজ্জলী প্রস্তুত করিবে, ডৎপরে অন্সাস্ত দ্রব্য সকল চূর্ণ করিয়া जाश कर्जनी मह अकथहत काल मर्किंड कतिया २ जाला माजाय विका প্রস্তুত করিকে। এই ঐয়ধ দেবন করাইর। রোগীকে শুগ্ঠী ও এরও মূলের কার্থ পান এবং ভাহার পূর্তদেশ এরও ভৈল দার। মর্দ্দন করিবে। ইহাতে রোগীর বিরেচন হইরা থাকে। এই বাভারি রদ ঔষধ দেবন কারি রোগীকে স্লিম্ব ও উষ্ণ দ্রব্য ভোজন করিতে দিবে। এই বাভারি রদ দর্বপ্রকার বাতনাশক বলিয়া জানিবে।

বিশেষ কথা—মূলে "পঞ্চ" এই সখ্যা নির্দ্ধিট থাকার ত্রিফলা মিলিভ ৩ তিন ভাগ অর্থাৎ হরীতকী, আ্মলকী ও বহেড়া প্রত্যেকে ১ এক এক ভাগ বলিয়া জানিতে ছইবেক।

বাতগজান্ধু শঃ।—

মৃত্যন্ত তীক্ষতাম্রঞ্গ হুততালক সন্ধকং। ভাগীশুগুী বলাধানাং কট্ফলঞ্চাভয়াবিষং। মন্দ্যঞ্চ চপলা দ্রোধৈনি কৈকাং ভক্ষয়েদ্বটিং। বাতশ্রেমহারো খেষ রসো বাতগজান্ধুশঃ॥

বাতগজাকুশ !

অজ, লৌহ, তাম, পারদ, হরিতাল, গন্ধক, বামনহাটী, শুণ্ঠী, বেড়েলা, ধনিয়া, কট্ ফল, হরীতকী ও মিঠাবিষ, এই সকল জব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া পিপ্পলী কাথে মর্দ্ধন করিয়া ৪ চারিরতি মত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। অস্তু-পান বিবেচনা পুর্বাক প্রতিদিন ইহার এক একটী বটী সেবন করিবে। এই বাত্যজাঙ্কুশ উথধ বাতমেন্মনাশক বলিয়া জানিবে।

রহদ্ বাতগজান্ধুশঃ।---

মৃতং সূতং মৃতং লৌহং গদ্ধং তালক মান্দিকে।
পথা শৃদ্ধী বিষং ব্যোষ মগ্নিমন্থক টক্ষনং।
তুল্যং খলে দিনং মর্দ্ধাং মুগুী নিগু গুকা দ্ববৈঃ।
দ্বিগুঞ্জাং বটিকাং খনৈৎ সর্ববাত প্রশান্তয়ে।
সাধ্যাসাধ্যং নিহন্ত্যাশু রসো বাতগজান্ধু শঃ॥

রহদাতগজাকুশ।

রসনিন্দুর, লৌহ, গান্ধক, ইরিভাল, স্বর্ণমান্দিক, হরীভকী, কাঁক্ডাশৃঙ্গী, বিষ, শুণ্ঠী, পিপ্পলী, মরিচ, গনিয়ারী ও সোহাগার খৈ, এই সকল
দ্রব্য সমাম পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক মুগুরীর রসে ও নিসিন্দাপাভার রসে

এক দিবস মর্দ্দন পূর্বক ২ ছই রভি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান

বিবেচনার প্রতিদিন ইহার এক একটা বটীকা সেবন করিলে সাধ্য, অসাধ্য
সকল প্রকার বাতরোগ আশু বিনষ্ট হইয়া থাকে।

(অম্পর্শবাতে)—তালকেশরো রসঃ ।—
রামায়তা দেবদারু শুঠীবাতারিজং শৃতং।
সঞ্চগ্ডলুং পিবেৎ কাথ মনুপানং সুখাবহং।
একভাগো রসমাতঃ শুদ্ধ তালৈক ভাগতঃ।
তাঠীয়া বিজ্যায়াম গুড়িকাসুড়তক্ষরেও।
এককাং ভক্ষরেও প্রাতঃ ছায়ায়া মুপবেশয়েও।
তালকেশরো নামোহয়ং যোগোহস্পর্শ বিনাশনঃ॥
অম্পর্শবাতরোগে—তালকেশ্বর রস।

রম সিন্দুর ১ ভাগ: ছরিতাল ১ ভাগ, সিদ্ধি ৮ ভাগ এবং গুড় ১০ ভাগ, প্রথমতঃ রসসিন্দুর, হরিতাল ও সিদ্ধি চূর্ণ করতঃ তৎপরে গুড় সহ মিশ্রিত করিয়া ১ ভোলা মাত্রায় গুড়িকা এস্থত করিবে। প্রতিদিন প্রাভঃকালে ইহার একটা করিয়া ২টীকঃ দেবন করিবে এবং রাস্থা, গুণাঞ্চ, দেবদাক, শুঠী, এর গু মূল ও গুগ্গুলু ইহাদের কাথ পান করিবে এবং রোজবিহীন স্থানে অর্থাৎ ছায়ায় উপবেশন করিবে। এই তালকেশ্বর রস সেবন করিলে অস্পর্শবিতা রোগ অর্থাৎ অঙ্গের স্পর্শহীনতা নিবারিত হইয়া থাকে।

(স্টীবাতে) — তালতৈরবী। —
তালগন্ধ রসাহীন্দ টকব্যোবং সহিন্ধূলং।
পিন্ট্যান্দ্র স্বর্গান্দ্র টিকাং মুদ্যামানতঃ।
সানেবতাং নিহন্ত্যান্ড বাতশ্লেয়ভবান্ গদান্।
তাহণী বহ্নিমান্দ্যার্শঃ স্টীবাতং সনৈত্যকং।
স্কটিখাতে—তালতেরবী।

হরিতাল, গদ্ধক, অহিফেন, সোহাগার খৈ, শুগী, পিপুল, মরিচ ও হিদ্ধুল; এই দকল দ্রব্য দমান পরিমাণে প্রুহণ পূর্বেক উত্তম রূপে চূর্ণ করিয়া আদার রুদে মর্দন পূর্বেক মূগপ্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা দেবন করিলে বাজপ্রেছ জনিত রোগ, প্রহণী, অগ্নিমান্দ্য, অর্দঃ, স্ফুটীবাড (যে বায়ু দারা রোগীর অঙ্গ একেবার অসাড় হয়, স্ফুটীদারা বিদ্ধ করিলেও রোগীর সাড় হয় না ভাছাকে স্ফুটীবাত বলে) এবং শৈত্য (শরীর বা অঙ্গাদি হিম হওয়া) নিবারিত হয়।

(বাতশ্লেয়নি)—আনন্দতিরবৃঃ।—
পারদং গন্ধকং লৌহ মত্রকং বিষমেবচ।
সমাংশং মরিচঞ্চাফৌ টক্ষণঞ্চ চতুপ্ত নিং।
ভূঙ্গরাজ রসৈঃ সপ্ত ভাবনাশ্চামনাড়িমেঃ।
গুঞ্জাদ্বয়ং পর্ণখণ্ডঃ খাদেৎ সোহরং নিহন্তামূন্।

বাভাগেয়োদ্ভবং রোগং মন্দাগ্রিং গ্রহণী ব্রান্। ष्ट्रकृष्टीः भाषु जारेकव (भरमाजः ना बरत्रम् अवः॥ বাতল্পেত্ম রোগে—আনন্দ ভৈরব।

পারদ, গন্ধক, লৌহ, অজ ও বিষ, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে একএক ভাগ, ্রমরিচ ৮ ভাগ এবং দোহাগার খৈ ৪ ভাগ, এই দ্রব্য গুলি চূর্ণ করিয়া ৭ বার ভুষরাজের রুদে এবং ৭ দাতবার অস্লু দাড়িমের রুদে ভাবনা দিয়া ২ রুতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইছার একটী করিয়া ষটী পানের রদের সহিত্ত দেবন করিলে পঞ্চবিধ বাত, বাতলেখ্যোত্তব রোগ সকল, মন্দাগ্নি, এহণী, সর্ব্যপ্রকার জর, অফ্চি, পাণ্ডুরোগ এবং মেদোলরোগ সমুদায় নিশ্চ-ग्रहे विनष्टे हहेगा थात्क।

(শীতে) — শীতারির मঃ।—

त्रामनगन्नः विखनः अगृश পूनर्नना वङ्गितरेमर्किভावाः। পকার্ক পত্রস্থ রদেন যত্নাদ্ বিপাচয়েদইগুণেন পশ্চাৎ। রসার্দ্ধভাগেন বিষঞ্চ দত্ত্বা বিপাচয়েদ্বহ্নিজলে ক্ষণন্ততঃ। শীতারিদংভে হি রসায়ণশ্চ বল্তস্তদর্ধং মরিচার্দ্র কেন। মরিচচ্রেন ম্বতেন বাপি দেবেত মাংদং সম্বতঞ্চ পথ্যং॥ শীতবাতে—শীতারিরস।

পারদ > ভাগ ও গন্ধক ২ ভাগ লইয়া পুনর্নবা ও রক্তচিভার মূলের রদে এক দিবস ভাবনা দিয়া, পরু আকন্দ পাতার ৮ গুণ রুমে পাক করিয়া, তৎ-সহ পারদের অদ্ধাংশ বিষ মিশ্রিত করিবে। পরে তাহা রক্তচিতার মূলের রুদে কিছুকাল পাক করিয়া ৩ রতি এমাণে ব্দীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধের নাম "শীতারিরদ", ইহা শ্রেষ্ঠ রদায়ণ ঔষধ বলিয়া জানিবে। এই ঔষধ মরিচ চূর্ণ ও আদার রস অথবা মরিচ চূর্ণ ও মৃত অ**স্থপান সহ** সেবন করিয়া ছভসংযুক্ত মাংসরস পুথ্য ক্রুরিবে।

· গীতবাতত্ত লক্ষণং I—

হিময়ন্তি চ গাত্রাণি বোমাঞ্চফ্র রিভানি চ। শীরো২ফি বেদশলম্বং শীতবাতম্ম লক্ষণং॥ ইতি প্রয়োগচিত্তামণো বাতরোগাধিকারঃ।

শীতবাতের লক্ষণ।

সর্বাদ্ধ হিম, রোমাঞ্চ, অঙ্গস্ফ রণ এবং আলম্ম ; এই দকল শীতবাতের লক্ষণ বলিয়া জানিবে।

> ইতি জ্ঞীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রচোগ-চিন্তামণি এছে বাতবাধির চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ বাতরক্তাধিকারঃ।

বৎসাদনী কাথঃ।—

বংশানন্যন্তবং কাথঃ পীতে। গুণ্গুলুসংযুতঃ।
সমীরণ সমাযুক্তং শোণিতং সংপ্রসাধয়েও॥
অতঃপর বাতরোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।
বৎসাদনী কাথ।

গুলাঞ্চ হ তোলা, পাকার্থ জল /॥• আর্দ্ধনের এবং শেষ / ৯/• অর্দ্ধপোরা। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় গুণ্গুলু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতরক্ত রোগের প্রশমন হইয়া থাকে।

বাদানি কাথঃ।--

বাসাগুড় চী চত্ত্রজুলানামেরগু তৈলেন পিরেৎ ক্ষায়ং। ক্রমেণ, সর্বাঙ্গ জমপ্যশেষং জয়েদস্থাতভবং বিকারং॥ বাসাদিকাথ।

বাসক, গুলঞ্চ ও সোণালু ফল, এই সকল দ্রব্য সমভাগো সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে এরও ভৈল গুল্পেপ দিয়া পান করিলে সর্বাঙ্গান্ত বাতরক্ত জনিত বিকার বিনম্ভ হইয়া থাকে।

মুগুতিকাচূর্ণং।—

লীচৃ। মুওতিকা চূর্ণং মধুসর্পিঃ সমন্বিতং । ছিন্নাকাথং পিবন্ হক্তি বাতরক্তং পুত্তরং॥ মুওতিকা চুর্ন।

মুগুরী চূর্ণ মধু ও ছত্তমহ মিশ্রিত করতঃ লেহন করিয়া, পশ্চাৎ গুলঞ্চ কাথ পান করিলে সূত্ত্তর বাতরক্ত বিন্ত হয়।

গুড়হরী তকী ।-- ,

তিব্যোহথবা পঞ্চ গুড়েন পথ। জগ্ধা থিখেচিছন্ন কহারং। তদ্বাতরক্তং শময়ত্বাদীর্ণ মধোজানুসন্তবমপি হ্বশ্যং। গুড়হরীতকী।

তিনটী অথবা পাঁচটী হরীতকী পেষণপূর্বক সমভাগ গুড়ের সাহত সেবন করিয়া পশ্চাৎ গুলঞ্চের ক্বাথ পান করিলে আজাল্প্যুটিত অভ্যুগ্র বাতরক্ত রোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

গুড় চাাঃ কাথঃ।—

স্থাতেন বাতং সগুড়ং বিবদ্ধং পিতং সিতাট্যা মধুনা কফঞ। বাতাত্রমুগ্রং করুতৈলমিশ্রং শুঠ্যামবাতং শ্ময়েদ্গুড় চীঃ॥

क्वृर्सिः मध्यित्राधिकात्रिः।

छड़् होकाथ।

শুলঞ্চের কাথ মৃত্যুহ পান করিলে বাডরোগ, গুড়সং সেবন করিলে বিবন, চিনির সহিত সেবন করিলে পৈত্তিক রোগ, মধুর সহিত সেবন করিলে কফ, এরও তৈলসহ পান করিলে বাতরক্ত এবং শুঠীচূর্ণ সহ পান করিলে আমবাত রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ওড়ু চ্যাঃ স্বরদানয় ।—

গুড়ু চ্যাঃ স্বরসং কল্কং চূর্ণহা কাথমেব বা। প্রভূত কালমাদেব্য মুচ্যতে বাতশোণিতাৎ॥ গুলঞ্চের স্বর্মাদি।

গুলঞ্চের স্বরস, কল্ক, চূর্ণ অথবা কাথ ইহার যে কোন একটী অনেক দিন পর্যান্ত সেবন করিলে নিশ্চয়ই বাডরক্ত রোগ ছইতে মুক্ত ছওয়া যায়।

পটোলাদিঃ।---

পটোলকটুকী ভীরু ত্রিফলামুত সাধিতং।
কাথং পীত্রা জয়েজ্জন্তঃ সদাহং বাতশোণিতং॥
পটোলাদি।

পল্তা, কটকী, শতমূলী, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া ও গুলঞ্চ ; ইহাদের কাথ পান করিলে দাহ ও বাতরক্ত রোগ বিনস্ত হইয়া থাকে।

लि थरमरको।--

গোপুমচূর্ণাজপয়ে। মৃতঞ্চ সচ্ছাগতুঞা রুবুবীজ কলকঃ। লেপে বিধেয়ং শতথোত সপিঃ সেকে পরশ্চাবিকমেব শস্তং॥ লেপ ও দেক।

গোধুমচূর্ণ ও ছাগ ছম্ব, অথবা ছাগশ্বত বা ছাগছ্ম ও এরও বীজের কল্ক অথবা শতধোত মৃত, ইঞ্দের দ্বারা প্রলেপ দিলে অথবা ছাগ ছ্ম্ম দ্বারা দেচন করিলে বাতরক্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

প্রলেপঃ।-

লেপঃ পিঠান্তিলান্তদ্বদ্ভ্টাঃ পয়সিনিধূ তাঃ॥ প্রলেপ।

হশ্বসহ তিল পেষণ করিয়া তাহা ভর্জন করিবে, পুনরায় তৎসহ হ্র্ম মিশ্রিত করতঃ প্রলেশ দিলে বাতরক্ত নিবারিত হয়।

কটুকাদি কল্কঃ।—

কটুকামত ষট্যাহ্ব শুগ্ঠী কল্কং সমাক্ষিকং। গোমূত্র পীতং জয়তি সককং বাতশোণিতং ॥

কটুকাদি কল্ক।

কট্কী, গুলঞ্চ, যফিমধু ও শুগী; এই দকল ত্রব্য দমান মাত্রায় প্রহণ-পূর্বক গোমুত্র সহ পেষণ করিয়া মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে কফদংযুক্ত বাভরক্ত রোগ নিশ্চরই আরোগ্য হয়।

ওড়ু চীয়তং।—

গুড় চী কাথ কলকাভ্যাং সপয়ক্ষং শৃতং গ্লুতং। হন্তি বাতং তথারক্তং কুষ্ঠং জয়তি ভ্রুতরং। গুড় চী গ্লু।

উৎকৃষ্ট গব্য ঘৃত্ত /৪ চারি সের ; কাথার্থ কুটিত গুলঞ্চ /৮ সের, পাকার্য জল ৬৪ সের, শেষ।৬ যোল সের এবং কল্কার্থ কুটিত গুলঞ্চ /> সের এবং গবাহুদ্ধ /৪ চারি সের। যথানিয়মে এই ঘৃত পাক করিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় সেৰন করিলে বাতরক্ত ও হুস্তর কুষ্ঠরোগ বিন্দী হয়।

অমূভানাং মূভং ৷—

অমৃতা মধুকং দ্রোকা ত্রিফলা নাগরং বলা। বাদারগ্বরুশ্টীর দেবদারু ত্রিকণ্টকাঃ। কটুকা স্বরীক্ষাকাশ্র্যাক্ত ফলানি চ। রাম্বা গোম্বর গম্বর্ব রদ্ধদার ঘনে ৭ পলৈঃ। কল্কৈরেভিঃ সমৈঃ দ্বা সর্পিঃপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। ধাত্রীরসং সমং দত্ম বারি ত্রিগুণ সংযুতং। সমাক সিদ্ধন্ত বিজ্ঞায় ভোজ্যে পানে চ শশুতে। বহুদোষান্বিতং বাতং রক্তেন সহ মূর্চ্ছিতং। উত্তানঞ্চাপি গম্ভীরং ত্রিকজক্ষ্যোরজানুকং.। কোন্ট্ৰীৰ্ষে মহাশূলে চামবাতে স্থলারূলে। বাতরোগোপসৃষ্টত বেদনা মলি ত্রন্তরাং। মূত্রকৃচ্ছ মুদাবর্ত্তং প্রমেহং বিষমন্ত্রং। এতান্ সর্কান্ নিহন্ত্যাশু বাতপিত কফোখিতান্ ৷ সর্বকালো প্রোগেন বলবর্ণাগ্রিবর্দ্ধনঃ। অশ্বিভ্যাং নির্শ্বিতং শ্রেষ্ঠং স্থতমেতন্মহে ত্রিমং॥ অমৃতাদ্য মত।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত / ৪ চারিসের, আমলকীর রস / ৪ চারিসের, জল । ৬ যোল সের। কল্কার্থ গুলঞ্চ, যফিমধু, কিন্মিন, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া, শুগী, বেড়েলা, রাহ্মা, সোণালু ফল, শ্বে হপুনর্শবা, দেবদাক, গোকুর, কট কী, শতা- বরী, পিপুরা, গাস্তারী কল, এর গুমূল, বিশুাড়ক বীজা, মুখা ও নীলোৎপল ; এই মুকল কুটিত দ্রবা সমভাগে সমস্তে /১ এক্সের পরিমাণে এইণপূর্বক যথানিরমে মৃত পাক করিবে। এই মৃত পানীর ও ভোজাবন্তর সহিত প্রোগ করা কর্তব্য। এই অমৃতাদ্য মৃত দ্বারা বলদোয় সমস্বিত উত্তান, গাস্ত্রীর, ক্রিকদেশ, জজ্বা, উক ও জাত্মগংশ্রিত বাতরক্ত, ক্রোইটু শীর্ঘ, মহাশূল, স্থাকণ আমবাত, বাতরোগোপস্ফ দাকণ বেদনা, মূত্রকুচ্ছ, উদাবর্ত্ত, প্রমেহ, বিষম জার এবং বাত, পিত্ত ও কফজনিত রোগ সকল নিশ্চরই বিনম্ট হয়। এই মৃত নিত্তা সেবন করিলে শারীরের বল, বর্ণ এবং আয়ু বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

দশপাক বলাতৈলং।—

বলা কষায় কল্কাভ্যাং তৈলং ক্ষীর চতুগুণং।
দশপাকৃং ভবেদেতদ্বাতাস্থাতপিত্তজিৎ।
ধন্যং পুংসাং বলঠেখন মরাণাং শুক্রবর্দ্ধনং।
রক্তযোনি বিকারত্ব মেতদ্বাতবিকারণুৎ॥

দশপাকবলাতৈল।

উৎকৃষ্ট তিল তৈল /৪ চারিসের। কাথার্থ বেড়েলা /৮ সের, পাক নিমিত্তক জল ৬৪ সের এবং শেষ ।৬ যোলসের। কন্কার্থ বেড়েলা কুটিভ /১ এক
সের এবং গবাল্লয়।৬ যোলসের। যথানিয়মে এই তৈল পাক করিয়া লইবে।
পাক সমাপ্ত হইলে পুনর্বার ঐ তৈলে।৬ সের হল্প এবং।৬ সের বেড়েলার
কাথ প্রদান করিয়া দিভীয়বার পাক করিবে। এই প্রকার ১০ দশবার পাক
করিয়া, ছাকিয়া তৈল এছণ করিবে। ইহাদ্বারা বাতরক্তা, বাতিকরোগ ও
পৈত্তিকরোগ সকল বিন্তু হয় এবং ইহা পুরুষদিগের বলজনক, শুক্রবর্দ্ধক
এবং স্ত্রীদিগের রক্ত ও যোনিবিকার নাশক ও সর্ব্ববিধ বাতবিকার বিনাশক
বলিয়া জানিবে। এই বল্পতৈশা দশবার পাক করিয়া লইতে হয় বলিয়া
ইহাকে "দশপাক বলাতৈল" বলে।

পিওতৈলং।—

ু সমধুচ্ছিস্ট মঞ্জিষ্ঠং সমর্জ্জরস শারিবং। পিওতৈলং তদভাঙ্গাদ্বাতরক্তরুজাপহং॥

পিগুতৈল।

জিল তৈল /৪ চারিসের; জল। ৬ যোলসের। কল্কার্থ মধূচ্ছিষ্ট (মোম), ধুনা ও মঞ্জিষ্ঠা এবং অনন্তমূল সমভাগে সমস্তে /১ একসের। যথানিরমে এই তৈল পাক করিয়া অঙ্গাণিতে মর্দ্দন করিলে নিশ্চয়ই বাভরক্তরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

৫ড়ু চীতৈলং।—

গুড়ু চী ৰুণথ কল্কাভ্যাং তৈলং নিদ্ধং তিলোদ্ভবং । था फूँ ही कल्क मश्यूकः छमा वीराः मृत् शृथक्। বাতিকং পৈত্তিককৈব শ্লৈগ্ৰিকং गান্নিপাতিকং। গদমূর্চ্ছাং জয়ত্যেষ গুড়্চী তৈল সংজ্ঞকঃ। অসাধা বাতরক্তে চ তথা হুষ্টব্রণেষু চ। অামবাতেয়ু গুধ্রস্যাহ ত্মেনাষে চাববাহুকে। বাতরক্ত গদানাশু হন্ত্যাদেব ন সংশয়ঃ। এষ তৈলবরঃ শ্রেষ্ঠো বাতরক্ত নিস্থানঃ।

গুড়ু চীতৈল। মূচ্ছিত তিল তৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ গুলঞ্চ /৮ মের, পাক নিমিত জল ৬৪ দের, শেষ।৬ যোলদের। কল্কার্থ গুলঞ্চ কুটিত ৴> একদের। যথা-বিধানে এই তৈল পাক করিবে। এই গুড়ু চী তৈল গাত্রাদিতে মর্দন করিলে বাতিকরোগ, পৈত্তিকরোগ, ল্লৈন্মিকরোগ, দান্নিপাতিকরোগ, মুর্চ্চারোগ, অসাধ্য বাতরক্ত, দ্রম্বরণ, আমবাত, গুপ্রদী, ত্বনোষ ও অববাছক বাত-ব্যাধি নিশ্চয়ই বিন্তী হয়।

> মহাপিওতৈলং শারিবাদ্যতৈলয়।— শারিবারিষ্ট কুমাও পোতকী ভস্মকা ঘনা। শুড় চী কাথ ত্র্যাভ্যাং কর্মরঙ্গরদেন চ। পচেত্রৈলঞ্চ তিলজং দত্ত্বিতানি ভিষগ্বরং। कारकारला। जीतरकरमरम भाजास्वा क्लीतिगीयूरेजः। जिन्नीमिक्थां प्रजानना गर्ब्स रमस्य वसरेनः। হন্যাদ্বাতাসুজং ঘোরং ক্ষাটিতং গলিতন্ত্রথা। **ठर्भननक भागानीन् जुग्रनावक विभागिकः।** कूर्रानानीशिम मर्कानि जन्माथ जनमतः। নাসাক্ষি বাতরক্তস্য বিকারৈর্যোহভিবর্দ্ধিতঃ। যর হন্যাৎ প্রদক্ষেত পিওতৈলং মহৎ স্মতং। মহাপিওতৈল্পেত্ৎ কেচিনালঃ শারিবানাং॥ মহাপিওতৈল বা শারিবাদা তৈল।

উৎকৃষ্ট ভিল ভৈল /৪ চারিদের; গব্যহৃত্ধ ৷৬ যোলদের ও কামরাঙ্গার-রম। ১ বোলদের। কাথার্থ অনস্তম্ল, নিমছাল, কুত্মাণ্ড, পোতকী (পুঁই-শাক), ভস্মকা (বিড়ঙ্গ), ঘনা (মাষাণী) এবং গুলঞ্চ; এই সকল কুট্টিত

खना ममजार ममर्ख / ज्ञानिस्त, शांकार्थ ज्ञान ७८ स्तर. (भय कार्थ । ध्राचारम्त । कन्कार्थ कारकाली, कीर्यकारकाली, जीरा, कुरुजीरा, रमप, महा-रमप, मल्या, किर्दिशी (इत्रालगाइ), ज्ञिमी (मिक्किन), मिक्थ (साम), ज्ञानस्मिन, कुना, रेमक्रवलन्त अ तुल्लकम्म ; এই मवल खना ममर्ख /> स्त्र व्यवश्यक केर्निस्ता कृषि क किर्दिश रेजनारम निर्माण किर्दिश स्थानिधारम -रेजन शांक किर्दिश । এই जिल्ल केश्वल निर्माण किर्माण किर्तिश स्मान किर्तिल स्वाचित्र केर्निक, एपिक क्रिया स्थानिका, कुर्फ, मक्तिय ज्ञान, द्वारा क्रिया क्रया क्रिया क

বাতরক্তান্তকোরসঃ।—

বর্মহিব লে'চন্যেদর সন্নিভবদ্নস্য গুণ্ঞলোঃ প্রস্থং প্রক্রিপা ভোয়রাপে ত্রিফলাঞ্চ মধোক্ত পরিমাণং। বংত্রিংশচিছরকৃহাপলানি দেয়ানি যতেন। াঁবপচেতদপ্রমতে দবর্ব্যাসংঘট্টয়মুভূর্ঘ ভঃ। ় অদ্ধক্ষয়িতং তোয়জাতং দ্বলন্য্য সম্পাকাৎ। জবতার্য্য বন্ত্রপৃতং পুনরপি সম্পান্ত্রেৎ পাত্তে। সাক্রীভূতে তিমারবভার্যাহিমোপলপ্রখ্যে। ত্তিকলা চূর্ণার্কপলং ত্রিকটুচূর্ণং ষড়ক্ষমাণং। किभितिপूष्ट्रभिद्धभनः करंश करंश जित्रकृत्छा । পলমেকং গুড়ু গ্রাপী দত্বা সংমূদ্য যত্ত্বে । উপযুজ্যদারুপানং মূবং তোয়ং সুগন্ধিদলিক। ইচ্ছাগর বিহারীভৈষজ্য মুপযুজ্যসর্ককালমিদং। ু তনুবেধিবাতশোণিত মেকজমথ দ্বন্দ্বজিকরোখিতঞ। জয়তিসূতং পরিশুক্ং ক্ষুটিতঞ্চাজানুজ্ঞাপি। जनकाम कूठेर खनामश्यूनत्रभा ७ (मश्राक्त । মন্দাগ্লিক বিবদ্ধং প্রমেই পীড়কাংই নাশয়ভাগশু। সতত্ত্বিতা সেব্যমানঃ কলাবসাধ্যৎ নিহন্তায়ং॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো বাতরক্তাধিকারঃ।

বাতর্ক্তান্তক রস।

প্রথমতঃ মহিষের চক্ষুর ন্যায় বর্ণ বিশিষ্ট গুগ্ গুল্ /২ তুইদের, ক্রিফলা সমভাগে সমস্তে /২ তুইদের এবং গুলঞ্চ /৪ চারিদের পরিমাণে প্রহণ পূর্বক ৬৪ দের জল মহ দিদ্ধ করিয়া অর্জাবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া কাথ প্রহণ করিবে। অনন্তর উক্ত কাথ পাক করিয়া ঘন হইলে পশ্চাৎ নিম্নলিখিত দ্রব্য গুলির চুর্ণ দিয়া উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। চুর্নিত দ্রব্য—ক্রিফলা চুর্ন সমভাগে সমস্তে ৪ চারি ভোলা, শুঠী চুর্ন ২ ভোলা, পিপুল চুর্ন ২ ভোলা, মরিচ চুর্ন ২ ভোলা, বিড়ঙ্গ চুর্ন ৪ চারি ভোলা, তেউড়ী চুর্ন ২ ভোলা, দস্তীমূল চুর্ন ২ ভোলা এবং গুড় চী চুর্ন ৮ ভোলা (কেহ কেছ "গুড় চী চুর্ন" না দিলেও হয় বলিয়া থাকেন)। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবন পূর্ব্বক স্থান্তিল জল অন্থান করিবে। পরস্ক এই ঔষধ দেবন করিয়া ইচ্ছান্থারে আহার বিহার করা যায়। ইহা ঘারা আবযুক্ত পরিশুক্ষ জান্ত্রপর্যন্ত ক্র্টুত একজ, দল্বজ ও চিরকালোখিত বাতরক্ত, ত্রণ, কাস, কুর্চ, গুল্ম, শোখ, উদর, পাণ্ডু, মেহ, মন্দান্ধি, বিবদ্ধ, প্রমেহ পীড়কা এবং কলিকালে যে সমস্ত রোগ অসাধ্য বলিয়া পরিগানিত ভাহাও নিশ্চয়ই বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

ইতি জীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এছে বাতরক্ত রোগের চিকিৎদ। সমাপ্ত।

লথ উক্তম্ভাধিকারঃ।

উরুত্তভ্রম্য সাধারণ চিকিৎসা।—

উরুত্ততে বিধির্যোন বাতকোপীকফাপহঃ।

যুক্ত্যাজিত্বা কফং রক্তৈঃ পশ্চারাতং জয়েন্তিষক্॥

অতঃপর উৰুত্তত্ত রোগের চিকি-সা বলা, যাইতেছে।

উৰুত্তত্ত্বের সাধারণ চিকিৎসা।

যে প্রকার চিকিৎসা করিলে বায়ু কুপিত না হয় অথচ শ্লেম্বার নিবারণ হয়, উক্তস্ত রোগে দেই প্রকার চিকিৎসাই করিবে। অর্থাৎ বুদ্ধি সহকারে অতি সাবধানে প্রথমে কফকে নিবারণ করিয়া, পশ্চাৎ বায়ু নিবারণের চেষ্টা করিবে।

উক্তত্তে সুপথ্যানি।—

পুরাণশালিশ্যামাক যবকোদ্রের ভোজনং। অন্নতৈজ্জাঙ্গলৈ রসৈঃ শাকৈশ্চ লবনৈহিতিং। বাস্তৃকং বায়সীনিয় বেতাগ্র কুলকাদিভিঃ॥

উক্তম্ভরোগের স্থপথ্য দ্রব্য।

পুরাতৃন শালি বা খ্যামাক ধান্যের অন্ন, যব, কোন্সের (কোদোধাখ),
দ্বত বিহীন জাঙ্গল মাংসের রস, শাক, লবণ, বাস্তৃক (বেতো) শাক, বান্নমী
(কাকমাচী) শাক, নিম্নপত্র, বেত্রাঞা (বেতাঙ্) ও কুলক (পটোলক্লা);
এই সকল উৰুভন্তরোগে স্থাপ্য বলিয়া জানিবে।

. উরুত্তন্তে ককান্তকক্রিয়া।—

শুকমূল কষায়েন পটোলন্ত রসেন বা।
কফক্ষয়ার্থং ব্যায়ামঃস্ঠীবনং শক্যেষু যোজয়েৎ।
শান্যাক্রাময়েৎ প্রাতঃ প্রতিক্রোতোনদীন্তরেৎ।
উফস্তরে কফ নাশক ক্রিয়া।

উফস্তম্ভ রোগীর কফ নাশার্থ রোগীকে শুদ্ধ মূলার ক্বাথ বা পটোলের রস দ্বারা জীবন, ব্যায়ার্ম, প্রাতঃকালে উচ্চস্থানাক্রমণ অর্থাৎ উচ্চস্থান ছইতে লঙ্খন এবং স্রোতোবাহিনী নদীর প্রতিকূলে সম্ভরণ করিতে দিবে।

শিলা জতুনাং প্রয়োগঃ।—

শিলাজতুং গুগ্গুলুম্বা পিপেলীয়াথ নাগরং। উক্তন্তে পিবেন্ট্রের্দ্ধমূলীরসেন বা॥ শিলাজতু প্রভৃতির প্ররোগ।

শিলাজতু, গুণ্গুলু, পিপুল অথবা শুণ্ঠী; ইছাদের যে কোন একটীর চুর্ন উপযুক্ত মাত্রায় গোমূত্র সহ অথবা দশমূলের রমের (অভাবে ক্লাথমছ)। শহিত উক্তস্ত রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

ভন্নাতকাদিঃ।—

ভল্যতকামতাগুণ্ঠী দারুপথ্যা পুনর্বা। পঞ্চমূলীদ্বয়োশিশা উরুত্তত্ত নিবর্হণাঃ॥
ভলাওকাদি।

শোধিত ভেলার আঠি, গুলঞ্চ, শুঠী, দেবদাৰু, হরীতকী, পুনর্বা এবং শেদ্ল (বেল, দোণা, পাৰুল, গাস্তারী, গণিয়ারী, শালপানী, চাকুলে, বৃহতী, কন্টকারী ও গোক্ষুর), এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে: ভোলা, পাক নিমিত্ত জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই ক্লাথ পান ক্রিলে উক্তস্ত রোগ বিনম্ট হইয়া থাকে।

পিপ্পল্যাদিঃ।---

পিপ্পলী পিপ্পলীমূল ভল্গতকাথ এব বা। কল্কো বা সমগুর্দেয় উরুস্তম্ভ বিনাশনঃ॥

शिश्शलामि।

পিপুল, পিপুল মূল এবং শোধিত ভেলার আঠি সমভাগে সমন্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ক্বাথ ৮ তোলা। এই ক্বাথ মধুসহ পান করিলে; অথবা পূর্ব্বোক্ত ত্রব্য ত্রেরে সমভাগ কল্ক পেষণ পূর্ব্বক মধুর সহিত দেবন করিলে উক্তস্তর্গো বিনষ্ট হয়।

যোগতয়ম্।—

দারুচব্যাজ্য্ পথানাং কল্কন্ধ মধুনা লিছেৎ। ত্রিফলা চব্য কটুকং এন্থিকং মধুনা লিছেৎ। উরুত্তত্ত বিনাশায় পুরং মূত্রেণ বা পিবেৎ॥

যোগতর।

দেবদাঞ্চ, চইয়ের মূল ও হরীতকী অথবা হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, চই, কট্কী ও পিপুল মূল জলদহ পেবণ পূর্বক মধুদহ,লেহন করিয়া দেবন করিলে। কৈয়া শোধিত গুণ্গুলু গোমুত্র দহ দেবন করিলে উক্তস্তরোগ নিবারিত হয়।

চবাপিকলকঃ।—

চব্যাভয়ান্নি দারুলাং সমপ্তঃ স্থানূরুগ্রহে॥ চ্যাদি কল্ক।

চই, হরীতকী, রক্তচিতার মূল এবং দেবদাক ইহাদের সমভাগ-কল্ক মর্ ... সহ সেবন করিলে উক্তাহ নিবারিত হয়।

প্রলেপঃ।—

কল্কোদিহেচ্চ মূত্রালৈঃ করঞ্জল সর্যপিঃ।
কৌদ্র সর্যপবল্মীক মৃত্তিকা সংযুত্ঃ ভিষক্।
গাত্রোৎসাদনং কুর্যাদূরুন্তক্ষে প্রলেপনং॥
গালেপ।

ডহর করঞ্জল ও দর্ধপ গোগুর দহ পের্যণ করিয়া ভদ্ধার। প্রলেপ দিলে; অথবা দর্বপ ও বল্লীক মৃত্তিকা (উ হের মাটি) বাটিয়া মধুদহ মিপ্রিত করতঃ গাঢ়রপে মর্দন করিলে বা পুরু করিয়। প্রলেপ দিলে উ্কন্তন্তরোপ নিবারিত হয়।

• कूर्छानाः रेजनः।—

কুষ্ঠশ্রীবেউকোনীগ্য শরলং দারু কেশরং। অজগন্ধাধান্ধা চ তৈলজ্ঞৈ সার্যপং পচেৎ। সক্ষৌদ্রং মাত্রয়া তন্মাদূরুগুড়ার্দিতঃ পিবেৎ।

कुर्शामा देखना।

া সাধপ তৈল /ও চারিসের, জল ।৬ যোলসের। কল্কার্থ কুড়, এবেইক (লোকান অর্থাৎ নবনীত খোটী), বালা, সরল কান্ঠ, দেবদাক, নাগকেশর, যমানী ও অধ্যান্ধা, এই সকল দ্রব্য কুটিত সমভাগ সমস্তে /১ একসের তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া যথারীতি তৈল পাক করিয়া লইবে। এই তৈল উপ-যুক্ত মাত্রায় মধুসুহ পান করিলে উক্তপ্তর্যোগ বিন্ত ইইয়া থাকে।

কৈন্ধবাদ্যং তৈলাদি।—

দৈন্ধবাদ্যং হিতং তৈলং বর্ষাভয়তগুগুলুঃ॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণাবুরুতভাধিকারঃ।

দৈন্ধবাদ্য তৈলাদি।

সার্ষণ তৈল /৪ চারিসের, কাঁজি ৸২ বিজেশসের। কল্কার্থ সৈশ্ববলবণ ২ ছইপল, শুড়ী ৫ পাঁচপল, পিপুল মূল ও রক্তচিতার মূল প্রত্যেকে ২ ছইপল এবং শোধিত ভেলার আঠি ২০ বিংশতি সংখ্যক। যথানিরমে এই তৈল পাক করিবে। ইহাকেই সৈশ্ববাদ্য তৈল বলা যায়। উক্তস্ত রোগী এই সৈশ্ববাদ্য তৈল, পুনর্ম বা গুণুগুলু ও অমৃতাপ্তণ্ গুলু সেবন করিলে নিশ্চন ইই রোগ হইতে মুক্ত হইতে পারে। উক্ত সেশ্ববাদ্য তৈল বাতব্যাধি রোগে এবং পুনর্মবাশ্য ও অমৃতাপ্তণ্ বাতরক্তাধিকারে উক্ত আছে জানিবে।

ইতি জীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্ররোগ চিন্তামণি এম্থে উক্তস্তাধিকার সমাপ্ত।

অথামবাতাধিকারঃ

লজ্মনং স্বেদনং তিক্তং দীপনং কটুকানি চ।
রেচনং স্লেহুপাৰক বস্তয়শ্চামমাকতে।
সৈন্ধকান্যেনানুবাক কারবস্তিঃ প্রশক্তে॥
অনন্তর আমবাভরোগের চিকিৎদা বলা যাইতেছে।
আমবাভরোগের চিকিৎদা।

লৈ জ্বন, স্বেদ, তিক্তদ্রব্য, অগ্নিদীপক ও কটু দ্রব্য, বিরেচন, স্বেছপান ও বল্ডিশোধন এবং সৈশ্ববাদি, তৈলের অন্থ্যসন প্রয়োগ; এই সমস্ত দ্বারা আমবাত রোগীর চিকিৎসা করিবে।

পঞ্চকোলাদিঃ ।---

আমবাতে পঞ্চোলসিদ্ধঃ পানান্নমিষ্যতে। রুক্তস্থেলে বিধাতব্যো বালুকাপুঢ়কৈত্তথা॥

পঞ্চকোলাদি।

আমবাতরোগে পঞ্চকোল অর্থাৎ পিপুল, পিপুলমূল, চই, রক্তাটিভারমূল ও শুঠী; এই সকল দ্রব্যসহ পাক করা জল বা অন্ন এবং বালুকার পুটলী দ্বারা ক্রক্ষক্ষেদ প্ররোগ করিবে।

রামাদশমূলং ৷—

দশমূলামূতৈরও রামা নাগরদাকভিঃ।
কাথে কুবুকতৈলেন সামং হন্তানিলং গুরুং॥
বামা দশমূল।

দশমূল অর্থাৎ বেল, শোণ' পাঞ্চল, গনিয়ারী, গাস্তারী, শালপানী, চাক্লে বছতী, কন্টকারী ও গোকুর গুলঞ্চ, এর গুমূল, রাস্থা, শুগুী ও দেবদাক্ত; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষকাথ ৮ ভোলা। এই কাথে এর গু তৈল প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে আমবাতরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

রামাপঞ্চকং।---

রান্ধা গুড় চী মের গুং দেবদারু মহৌষধং।
পিবেৎ সর্বাঙ্গকে বাতে সামে সন্ধ্যন্তিমজ্জগে॥
রান্ধাপঞ্চন।

রাস্না, গুলঞ্চ, এর গুমূল, দেবদাক ও শুগুী; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছুইভোলা, পাক নিমিত্ত জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ পান করিলে সর্ব্বাঙ্গ, সন্ধি, অন্থি ও মজ্জাগত আমবাতরোগ বিন্দুইয়া থাকে।

নাগরং দ্বতং।—

নাগরকাথ কল্কাভ্যাং স্বতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
চতুগুর্ পেন তেনাথ কেবলেনোনকেন বা।
বাতশ্রের প্রশমনমগ্রিসন্দীপনং পরং।
নাগরং স্বতমিত্যুক্তং কট্যামশূল নাশনং॥
নাগর স্বত।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিসের। কাথার্থ কুটিত শুগী /৮ আটসের, পাকার্থ বল ৬৪ সের,শেষ কাথ ।৬ যোল্সের এবং কল্কার্থ কুটিত শুগী /১একসের। খানিরমে এই মৃত পাক করিবে। অথবা /৪ চারিসের মৃত, ।৬ যোলসের বল ও /১ একসের কুটিত শুগী সহ যথাবিধানে মৃত পাক করিবে। এই গার মৃত প্রতিদিন উপযুক্ত পরিমাণে দেবন করিলে বাতমেশ্ম ও কটী-দশের আমশ্ল বিনষ্ট হয়, এবং ইহা অগ্নির উদ্বিপক বলিয়া কানিবে। রহৎ সৈশ্ববাদ্য তৈলং ।—

কৈন্ধবং শ্রেয়সীং রাশ্বাং শতপুষ্পাং ষমানিকাং।
দক্তিকাং মরিচং কুষ্ঠং শুঠীং সৌবর্চলং বিড়ং।
বচা জমোদা লবণং পৌকরং মধুকং কণা।
এতানর্দ্ধেণলাংশানি শ্লাক্ষপিন্তানি দাপয়েৎ।
প্রস্থানেরওতৈলক্ষ প্রস্থানুতপুষ্পাজং।
কাঞ্জিকং বিশুণং দন্তা মস্ত চ বিশুণন্তথা।
এতৎ সন্তৃতসন্তারং শনৈম্ বিনিনা পচেৎ।
সিদ্ধা মেতৎ প্রয়োক্তব্য মামবাতহরং পরং।
পানাভাঞ্জন বস্তো চ কুরতেইগ্রিবলং ভূশং।
বাতার্ত,বঙ্কাণে শস্তং কটীজানুকসন্ধিজে।
শূলে হৎপাশ্বেজরুচেছু হন্তাশারি নিপীড়িতে।
বাহায়ামেইর্দিতে মেহে হন্তরন্ধি নিপীড়িতে।
অন্যাংশচানিলজানোগান্ধানয়েদাশু দেহিনাং॥
রহৎ দৈশ্ববাদ্য তৈল।

মুচ্ছিত এরও তৈল /৪ চারিসের; কাঁজি /৮ আটসের, দধিরমাৎ /৮ আটসের। কাথার্থ কুটিত শলুকা /৪ চারিসের, পাকার্থ জল ।৬ যোলসের, শেষ /৪ চারিসের। কল্কার্থ সৈন্ধবলবণ, হরীতকী, রাস্মা, শলুকা, যমানী, দক্জিকাকার, মরিচ, কুড়, শুঠী, সৌবর্চললবণ, বিট লবণ, বচ, বন্যমানী, সৈন্ধবলবণ, পুষরমূল (অভাবে কুড়), যফিমধু ও পিপুল; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৪ চারিভোল। পরিমাণে গ্রহণপূর্কক ভৈলমধ্যে নিক্ষেপ করতঃ হথাবিধানে মুত্র অগ্নি সংযোগে পাক করিবে। এই রহৎ সৈন্ধবাদ্য ভৈল শ্রেষ্ঠ আমবাত নাশক। ইহা শান, অভ্যঞ্জন ও বন্তিরপে প্রয়োগ করিলে রোগীর অগ্নির বল বৃদ্ধিত হয় এবং বজ্কণ, কটী, জাহ্ন, উক, সন্ধি, হনর ও পার্থদেশের বাতজনিত শূল, মৃত্রকুছে, অশ্বরী, বাহায়াম, অন্ধিত, মেহ, অদ্রবৃদ্ধি এবং অভ্যান্থ বাতজরোগ সকল আশু নিবারিত হয়।

জলমুষান্যং চূর্ণং।—
জলমুষাং গোল্বরকং গুড় চীং রদ্ধনারকং।
পিপ্পলীন্ত্রিরতাং মুস্তং বরুণং সপুনর্নবং।
ভিফলানাগরকৈব শ্লাক্ষ্রত্ণনি কারয়েৎ॥
মন্ত্রারনাল তক্রেণ প্রোমাংস রসেন বা।
জামবাতং নিহন্ত্যাশু শ্রপুং সন্ধিনংহিতং॥

অলম্বাদ্য তৈল।

অলমুমা (মৃতিরী), গোক্ষর, গুলঞ্চ, বিস্তাড়ক, পিপুল, তেউড়ামূল, মুথা, বফণরক্ষের ছাল, পুনর্নবা, হরীতকী, আমল্লকী, বহেড়া ও শুঠী; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বেক উত্তম প্রকার চূর্ণ করিয়া লইবে। এই অলম্বাদ্য চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় গ্রহণপূর্বেক মস্তু (দধিরমাৎ), আরমাল (কাঁজি), তক্র (হোল), পরঃ (হুদ্ধ) ও মাংসরস (মাংসের যুষ) ইহাদের যে কোন একটীর সহিত দেবন করিলে আমবাত এবং সন্ধিন্থানগত শোথ, নিশ্চয়ই আরোগ্য হয়।

গোগরা জতগ্তলুঃ।—

চিত্রকং পিপেলীমূলং যমানীং কাবরী ন্তপা।
বিভঙ্গান্য জমোনাক জীরকং স্থরদার চ।
চবোলাং দৈশ্ববং কুঠং রামা গোক্ষুর পান্যকং।
ত্রিকলাং মুস্তকং বোষং তৃগুলীরং যবাপ্রজং।
তালী পাত্রং পত্রঞ্চ শ্লুস্কচ্ণানি কাররেৎ।
যাবন্তোতানি চুণানি তাবনাত্রস্ত গুণ্গুলুং।
সংমর্দ্য সর্পিষাগাচং মিশ্বভাণ্ডে নিধাপা্রেৎ।
ততােমাত্রং প্রযুপ্তীত বথেন্টাহারবানপি।
যোগরাজ ইতি খ্যাত্যে যোগােহ্যমমূতােপমঃ।
আমবাতাতা বাতানীন্ ক্রিমিত্রন্ট ত্রনানপি।
প্রীহগুল্যােনরানাহ তুর্গামানি চ নাশ্রেৎ।
অ্রিক কুরুতে দীপ্তং তেজাের্দ্ধিং বলন্ত্রপা।
বাতরােগান্ জয়তােষ সন্ধিমক্রাণ্তানপি॥

(यागताक छग् अनु:।

রক্তচিতার মূল, পিগূলমূল, যমানী, কৃষ্ণজীরা, বিড়ন্ন, বন্যমানী, জীরক, দেবদাক, চই, এলাচি. দৈশ্ববলবন, কুড়, রাস্না, গোক্লুর, ধনিয়া, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মুথা, পিপুল, শুগী, মরিচ, দাকচিনি, বেণারমূল, যবক্ষার, তালীশপত্র ও তেজপত্র; এই দকল দ্রব্য তুলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে স্থাম চূর্ন করিবে। এবং এই দকল চূর্নের সমান পরিমাণে গুর্মপুত্র উহাতে মিল্লিভ করিয়া স্বভ্যহ গাঢ় হওয়া পর্যান্ত মর্জন করিবে। তৎপরে উহা একটা স্থিয় ভাগু মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই যোগরাজ গুগ্গুলু অম্ব্রোপ প্রথম বলিয়া জ্বানিবে। ইছা উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে আমনবাড, আচ্যবাড, ক্রিমি, ত্রক্তরণ, মীহা, উদ্বা, গুলা, আনাহ, অর্থা: এবং

সন্ধিগত ও মজ্জাগত বাতবোগ সকল বিন্ধ হইয়া থাকে। অধিকক ইছা অগ্নি, তে জ্বঃ ও বলবৰ্দ্ধক বলিয়া জানিবে।

> সিংহনাদগুগুণুলুঃ।— পলদ্বয়ং কষায়স্ত ত্রিফলায়াঃ স্কুচুর্ণিতং। मोगिकिक भन्टिककः कोनिकन्छ भन्छथ।। কুড়ব্ঞিত্র তৈলম্ম সর্বমাণায় যত্ত্তঃ। পাচরেৎ পাকবিবৈদ্যঃ পাত্রে লৌহময়ে দুঢ়ে। হন্তিবাতং তথা পিতং শ্লেক্সাণং খঞ্জপঙ্গুতাং। খাদং সুতুর্জ্জয়ং হন্তি কাদং পঞ্চবিধং তথা। কুষ্ঠানি বাতরক্তানি গুলাগুলোদরানি চ। আমবাতং জয়েদেতদপি বৈন্যো বিবৰ্জ্জিতং। এতদভগ্রীদ যোগেন জরাপলিতনাশনং। সর্পি স্তৈল রুদোপেত মন্ত্রীয়াচ্ছালি ষষ্টিকং। সিংহনাদ মিতি খ্যাতো রোগবারণ দর্পহা। বহের দ্বিকরঃ পুংসাং ভাষিতে। দওপাণিনা। অত্রাহ ত্রিফলা কাথং পৃথক্ত্রিপলসন্মিতং। কিকিত্রিগ্যাতি চৈরও স্বেহপাকো২ধিকঃ খরঃ॥ निःश्नाम खग छन्।

ह्वी उकी, आंभनकी अ रहिंछ। इंश्राप्त कार्य श्राप्त र भन, (मीग-ক্ষিক (শোধিত গন্ধক) > পল, শোধিত গুগ্গুলু > পল এবং চিত্রতৈল (এরগু-তৈল। /১ একদের। এই দকল ত্রব্য একত্রিত করিয়া পাকবিদ্বৈদ্য অতি সাবধানে স্থদূঢ় লৌহপাত্রে পাক করিবে। এই সিংহনাদ গুগগুলু ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবন ক্রিনে বাচ, পিত্ত, শ্লেম্মা, খঞ্জ, পদ্পুতা, প্রজ্ঞায়ান, পঞ্চবিধ কাদ, কুন্ঠ, বাতরক্তা, গুলা, উদর ও আমবাতরোগ আরোগ্য হয়। ইহা নিতা দেবন করিলে জর ও পালিত বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ দেবনকারী রোগী ঘত, তৈল ও মাংদরদ দহ শালি ও যফিক থাকের আন ভক্ষণ করিবেন। এই ঔষধ রোগরূপ হস্তীর দর্পনাশক বলিয়া সিংহনাদ গুগুগুলু নামে খ্যাত এবং দণ্ডপাণি কর্তৃক প্রকাশিত। ইহা অতীব অগ্নির্দ্ধি কারক।

রামবাণঃ।-

পারদায়তলবন্ধ গন্ধকং ভাগ যুগ্ম মরিচেম সংমিশ্রিতং। শত্র জাতীফলমথার্দ্ধভাগিকং তিন্তিভূী ফল রসেন মর্দ্দিতং। মাৰমাত মনুপান যোগঃ সদ্য এব জঠরাগ্নি দীপনঃ।
সেবতামখিল রোগ বারণং রামবাণ বটিকা রসায়নং।
সং প্রহগ্রহণীপাও রোগকং সামবাত স্বরদূষণং জয়েং।
বহ্নিমান্য দশবক্ত্র নাশনো বাতরোগ সমুদ্ধেরং।
কুঠবিদ্রধি ভগন্দরার্ব্ব দং মাংস মজ্জাগত মপ্যসূক্ষরং।
বাতরক্ত মুপদংশ দারুণং প্লীহ গুলামপদীং গুদাস্কুরং।
শীর্ষ কর্ণ মুখ নেত্র নাসিকা রোগ মান্ত বিনিহন্তি হেলয়া।
অনুপানং যুক্ত্যাদেয়ং দ্রব্যমধিপান মিতলবন্ধ মনুপেয়ং।
নাগপত্র মরিচেন ভক্ষিতং সদ্য এব জঠরাগ্নি দীপনং।

ইতি প্রয়োগচিন্তামণাবামবাতাধিকারঃ।

রামবাণ।

শোধিত পারদ ২ ভাগ, শোধিত বিষ ২ ভাগ, লবন্ধ ২ ভাগ, শোধিত গদ্ধক ২ ভাগ ও মরিচ ২ ভাগ এবং জাতীকল। ত অর্জভাগ, সমুদায় দ্রব্যগুলি এছন পূর্বক ভেঁতুলের রুদে মর্দ্দিত করতঃ ২ মায়া মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই রামবান বটীকা প্রতিদিন একটা করিয়া অত্পশান বিবেচনায় দেবন করিলে সদ্যই জঠরাগ্লি উদ্দিশু হয় এবং সর্ববিধ রোগ নিবারিত হয়। অধিকন্ত ইহা দ্বারা সংগ্রহগ্রহণী, পাণ্ডুরোগ, আমবাত, স্বরুদোয, অগ্লিমান্দ্য, বাতরোগ, কুঠ, বিদ্রধি, ভগন্দর, অর্ক্র দ, মাংস ও মজ্জাগভরোগ, প্রদর, রক্তনিও, দাক্রণ উপদংশ (গরমি), প্লীহা, গুল্ম, অপচী, অর্শঃ, শিরোরোগ, কর্ণ-রোগ, মুখরোগ ও চক্ষুরোগ অতি সম্বর নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে। এই রামবান রুম ঔষধ দেবনান্তে, লবন্ধের কাথে সমভাগ দাগকেশ্র, ভেজপত্র ও মরিচ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে সদ্যই জঠরাগ্লি বিদ্ধিত হইয়া থাকে।

ইতি জীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি গ্রন্থে ভামবাতরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

চতুর্বিংশতিভযোগধার:

অথ শূলাধিকারঃ।

শূলরোগন্য চিকিৎনা '।--

বমনং লজানং স্বেদঃ পাচনং ফলবর্দ্ধরঃ।
কারচূর্ণনি গুড়িকাঃ প্রশস্তং শ্লশান্তয়ে॥
পুংনঃ শ্লাভিপন্ন স্বাস্বেদ এব সুখাবহঃ॥
অভঃপর শ্লরোগের চিকিৎদা কথিত হইতেছে।
শ্লরোগের চিকিৎদা।

বমন, লজ্জ্মন, স্বেদ, পাচন উষধ, ফলবর্জি, ক্ষার, চূর্ণ উষধ এবং গুড়িকা ঔষধ, এই সকল প্রয়োগ দ্বারা শুলরোগের চিকিৎনা করিবে। ইহার মধ্যে শুলরোগাক্রান্ত পুক্ষের পক্ষেই কেবল মাত্র স্বেদই বিশেষ উপকারী বলিয়া জানিবে।

মাতুলুঙ্গরস শিগুকাথোঁ।—
মাতুলুঙ্গ রসোবাপি শিগুকাথ শুথাপরঃ।
সক্ষারো মধুনাপীতঃ পাশ্বদ্বন্তি শূলনুৎ॥
মাতুলুঙ্গ রস ও শিগুকাথ।

মাতৃলুক (ছোলজ) নেবুর রদে অথবা দজিনা মুলের কাথে যবক্ষার ও মধু উপযুক্ত মাত্রায় প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে পার্য্য, হদয় ও বন্তি দেশের শূলু নিবারিত হইয়া থাকে।

আমশ্লস্য চিকিৎসা।—
আমশ্লে ক্রিয়া কার্যা কফশ্লবিনাশিনী।
সেব্যমামহরং সর্বং যদগ্রিবলবর্দ্ধনং॥
আমশ্লের চিকিৎসা।

কক্ষণুল নাশককিয়া। এবং যে সকল আমনাশক ও অগ্নিবর্দ্ধক, দেই সঙ্গ-স্তই আমশুল চিকিৎসায় প্রয়াগ করিবে।

পঞ্চকোলাদিঃ।—

লবণত্রসংযুক্তং পঞ্চেলং সরামঠং।
শুংখাফেনামুনাপীতং কফশুলবিনাশনং॥
পঞ্চোলাদি।

रमक्षव लवन, महल लवन, विहे लवन, हहे, प्रक्लिकांत्र मूल, शिश्रूल, शिश्रुल, शिश्रुलमूल ७ हिन्नु; এই मकल ज्वरा ममजारा धाहन भूकिक स्काहन कित्रा लहेरि। এই हुन छियद जैनियुक माजाय जैन ज्ञल मह रमवन कित्राल कफण्ल विनय हहेया थारिक।

শতাব্যাদিকাথঃ 1—

শতাবরী স্বাধ্যাহ্ব বাট্যালক কুশগোস্থ রৈও।
শৃতশীতং পিবেভোরং সগুড়কৌদ্রশর্করং॥
পিভাস্গলহশূলত্বং সদ্যোদাহ জ্বরাপহং॥
শতাব্দ্যাদি কাথ।

শতাবরী, যফিমধু, বেড়েলা, কুশমূল ও গোকুর; এই সকল কৃটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছই তোলা। পাকার্থ জল ৩২ বত্তিশ তোলা এবং শেষ কাথ ৮ জাট ভোলা। এই কাথ গুড়, মধু ও শর্করা সহ পান করিলে সদ্যই রক্তপিত, দাহ, শুল এবং দাহ সংযুক্ত জরবোগ বিন্ট হয়।

ত্রিফলানিকাথঃ।—

ত্রিকলা নিয়যট্যাহ্ব কটুকারগ্বধিঃ শৃতং।
পায়য়েন্মপ্লুসংমিশ্রং দাহশূলনিবারণং॥
ত্রিফলাদি কাথ।

ত্রিফলা অর্থাৎ হরীতকী, আমলা, বহেড়া, নিমছাল, যফিমপু, কট্কী:
এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাক নিমিত্ত জল ৩২
তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথে ॥ অর্দ্ধ তোলা গোণালুব আঠা ও
।• মিকি তোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে দাহ ও শূলরোগ নিশ্চরই
নিবারিত হইরা থাকে।

মধুককাথঃ ।—
তৈলমের গুজহাপি মধুককাথসংযুতং ।
শূলং পিভোদ্ভবং হন্যাদ্ গুলাং পৈভিকমেবচ ॥
মধুককাথ।

কৃষ্টিত যঞ্চিমধু ২ ভোলা, পাকার্থ কল ৩২ ভোলা, শেয কার্থ ৮ ভোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় এরও তৈল প্রক্ষেণ-দিল্ল পান করিলে পৈত্তিক শূল এবং পৈত্তিকগুলা রোগ নিবারিত হইরা থাকে।

বলাপুনর বৈরও বৃহতীদ্বয়গোস্কুরৈঃ।
নহিন্ধুলবন্থ পীতং সদ্যোধাতরুজাপহং॥
বলাদি কাথ।

বেড়েলা, পুনর্নবা, এরও মূল, রহন্তী, কন্টকারী এবং গোক্ষুর; এই সকল দ্রব্য কুটিত সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ জোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় হিন্দু ও সৈদ্ধবলবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাত জনিত উদরিক বেদনা দুরীভূত হইয়া থাকে।

চতুর্বিংশভিতযোগ্যায়:। হিন্দু ফকচুর্ণম্।—

ं শুলীবিবদ্ধকোঠোহন্তি রুফাভিশ্চু র্ণিতংপিবেৎ। হিন্দু প্রতিবিষা ব্যোষ বচা দৌবর্চনাভয়াঃ॥ शिक्ष के क हुन।

হিন্ধু, আতইচ, শুগী, পিপুল, মরিচ, সৌবর্চল, বচ ও হরীতকী; এই সকল জব্য সমভাগে গ্রহণ পূর্ব্বক উত্তম রূপে স্থন্ম চূর্ণ করিয়া একত্র মিপ্রিড করিয়া লইবে। এই হিন্ধু উক চূর্ণ ঐবধ প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় উষ্ণ জল मह (मवल क्रितिल मुल, विवन्ना । क्रिक्ना विकास विकास हिन ।

হিলু পদিচু পৃষ্।—

সহিন্দুপ্তবুরুবোগৰ যুমানী চিত্রকাভয়াঃ। সক্ষারং লবণঞূর্ণং পিবেৎ প্রাতঃ সুখামুন্।॥ বিমৃত্রানিলমূলমুং পাচনং বহিনীপনং॥ हिन्। पि हुर्।

হিন্দু, ধনিয়া, ভগা, পিপুল, মরিচ, যমানী, রক্তচিতার মূল, হরীতকী, यनकात ७ रिकारलयन ; এই मकल जुला शित्रभारन अहन शूर्वक स्का हुन করিয়া উত্তম রূপে মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই হিন্দুদি চূর্ণ উপযুক্ত মাত্রায় লইয়া উষ্ণ হলের সহিত দেবন করিলে বিষ্ঠা, মূত্র ও বাতজ্বনিত শুল আরোগ্য হয়। এবং ইহা পরিপাচক ও অগ্রিনীপক বলিয়া জানিবে।

কফপৈত্তিকশূলস্য চিকিৎসা 1-

কফজে পিভজেবাপি ক্রিয়া যা কথিতা পৃথক্। একী ক্বতা প্রয়ঞ্জীত তাং ক্রিয়াং কফপিভজে। কফপৈত্তিক শূলের চিকিৎসা।

কফজশূলে এবং পিতজশূলে পৃথক্ পৃথক্ রূপে যে দকল ক্রিয়া কথিত ছইয়াছে; দে সমস্ত ক্রিয়া এঁকত্রিত করিয়া মুগপৎ প্ররোগ করিলে কফ-পৈত্তিক দ্বন্দ্বজ্ব শূলরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পটোলাদি কাথঃ —

श्रिका विकलातिष्ठं काथः मधुयूवः शिरवः। পিত্রেয়জ্ব ছর্দি দাহ্লগনিলশান্ত্রে॥ পটোলাদি কাথ।

পল্ডা, हती छकी, आमलकी, बरहण ও निमहाल , এই मकल जवा कृष्टिक সৰভাগে সমতে ২ হুই ভোলা, পাকাৰ্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ কাথ ৮ আট ভোলা। এই স্বাথে। ি সিকিভোলামধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে পিন্তমেশ্ব-জর, ছর্দি, দাহ ও বায়ু নিবারিত হইয়া থাকে।

त्राग्यकल्कशा-

রদোনং মদ্যসংমিশ্রং পিবেৎ প্রাতঃ প্রকাজ্যিতঃ ।
বাতশ্রেয়ভবং শূলং নিহ্ন্যাদ্বহ্নিনীপনং ॥
রদোন কল্ফ।

কিছু পরিমাণে রস্থন পেষণ পুর্বক মদ্যসহ মিশ্রিভ করিরা দেখন করিলে— বাতমেম্মজনিত শূলরোগ শ্রশমিত হয়। পরস্ত ইহা অতীক-অগ্রিদীপক।

বাতপিত্তজশ্লস্য চিকিৎসা —
সমাক্ষিকং রহত্যাদিং পিবেৎ পিতানিলাত্মকে।
ব্যামিশ্রং বা বিধিং কুর্যাৎ শূলে পিতানিলাত্মকে॥
বাতপৈত্তিক শলের চিকিৎসা।

বাওপৈত্তিক শূলরোণে জ্বাধিকারোক্ত বহুজ্যাদিগণের কাথ মধু প্রাক্ষেপে, অথবা বাতিক শূল ও পৈত্তিক শূলে প্রধাজ্য উভয় ক্রিয়া মিপ্রিত করতঃ প্রয়োগ করিলে বাতপৈত্তিক শূলরোগ প্রশমিত হুইয়া থাকে।

এরওদ্বাদশকং ।---

এরগুফলমূলানি রহতীদ্বরগোক্ষরং।
পর্নিয়ঃ সহদেবা চ সিংহপুচ্ছীক্ষুরালিকা।
তুলারেভিঃ শৃতং তোরং যবক্ষারযুতং পিবেৎ।
পৃথগ্দোষোদ্রবং শৃলং হন্যাৎ সর্বভবন্তথা॥
এরগু দাদশক।

এরও ফল, এরও মূল, রহভী, কণ্টকারী, গোক্ষুর, মুগানী, মাধানী, শাল-পানী, চাকুলে, সহদেবা (দণ্ডোৎপল বিঃ), সিংহপুচ্ছী (চাকুলে বিঃ) এবং ইকুরালিকা (খাগড়া); এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমু-দারে ২ ছই ভোলা, পাক নিমিত্তক জলু ৩২ বত্রিশ ভোলা, শেষ কাথ ৮ আট ভোলা। এই কাথে। সিকি ভোলা যবক্ষার চূর্ব প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে বাতিক, পৈত্তিকাদি সর্বপ্রকার শুলরোগ বিন্ত ইইয়া থাকে।

পিপালী মৃতং ।—
সপিপালী গুড়ং সর্পিঃ পচেৎ ক্ষীরে চতুর্গু নে ।
বিনিহন্ত্যস্লপিতক শূলক পরিণামজং ॥
পিপালী মৃত।

উৎকৃষ্ট গণ্য মৃত /৪ চারিসের; মৃধ্য ।৬ বোলসের, জল ।৬ যোলসের কাল্কার্থ গুড় এবং কৃষ্টিভ পিপ্পালী সমভাগে মৃষ্ট দ্রব্যে /১ একসের। যথা বিধানে এই মৃত পাক করিয়া প্রতিদিবস প্রাতঃকালে উপযুক্ত মাত্রায় সেব করিলে জনপিত রোগ এবং পরিণামন্ত শুলরোগ প্রশমিত হয়।

চতুৰ্বিংশভিতৰোধ্যায়: (

বীজপূরক ন্নতং ৷—

বী দপ্রক্ষেরও রাম্বাগোক্রকং বলা।
পৃথক্ পঞ্চপলান্ ভাগান্ যব প্রস্থ সমাষ্টান্ ॥
বারিদ্রোণেন সাধ্যং স্থাদ্যাবৎ পাদাবশেষিতং।
য়তপ্রস্থং, পচেতেন কল্কমক্ষসমন্বিতং ॥
তুমুরুণ্যভয়াব্যোষা সহিন্ধু সৌবর্চ্চলং বিভূং।
দৈরবং যাবশ্বক হজ্জিকা চারবেতসং ॥
কুষ্ঠং সদাভিমকৈব রক্ষারং জীরকদ্বরং।
মস্ত প্রস্থরং দত্বাশনৈর্ম দ্বিরানা পচেৎ ॥
পানমেতৎ প্রশংসন্তি শূলং হন্যা ভ্রিদোষজং।
বাতশূলং পৃষ্ঠশূলং গুল্মপ্রীহহরং পরং ॥
হচ্চূলং পার্শ্লক পত্তিশূলক সংহরেৎ।
বলবর্ণকরং হদ্যমগ্রিসন্দীপনং পরং ॥
জতুকর্ণেন মুনিনা ভাষিতং তদ্বিম্বণং ॥

বীজপুরক ম্বত।

উৎকৃষ্ট গব্য স্থত /৪ চারিদের; দিধির মাৎ /৮ আটদের। কাথার্থ ছোলঙ্গ নেবু, এরগুমূল, রামা, গোক্ষর ও বেড়েলা প্রভাবেক ৫ পাঁচ পল এবং যব, /২ ছইদের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ কাথ ।৬ ষোলদের। কল্কার্থ ধনিয়া, হরীতকী, শুঠী, পিপুল, মরিচ, হিন্তু, দৌবর্চ্চল লবণ, বিট্লবণ, দৈদ্ধব লবণ, যবক্ষার, স্বর্জ্জিকাক্ষার, অমবেতদ, কুড়, দাড়িম কলের ছাল, মহাদা, জীরক ও কৃষজীরা; এই দকল দ্রুব্য কুটিত করিয়া /১ একদের মাত্রায় তথাগে নিক্ষেপ করিয়া মুত্র আমি সংযোগে পাক করিবে। এই স্থত উপযুক্ত মাত্রায় প্রতিদিন পান করিলে ত্রিদোষজশূল, বাতশূল, পৃষ্ঠশূল, গুল্ম, প্রীহা, হদয়শূল, পার্শ্বণুল ও পান্তিশূল বিন্ত হয়। পরস্ত ইছা বলজ্বনক, বর্ণের উজ্জ্বলতা প্রসাধক, এবং আমি সম্পাপক। এই বীজপুরক স্বত জতুকর্ণ নামক ঋষি কর্ত্ত ক কথিত হইয়াছে।

শূলগজেন্দ্রতিলং।—
এরগুদশমূলক প্রত্যেকং পলপক্ষকং।
জলেচাইগুণে পাক্ত্রা তৈলপ্রস্থ দ্বরং পচেৎ॥
বিশ্বং জীরং যমানীচ পিপেলীচ বচাতথা।
দৈশ্ববং বদরীপত্রং প্রত্যেকক পলদ্বরং॥

যবকাথ জলকৈব তৈলাদেরং গুণদ্বরং।
তৈলমেতমহাতেজো নামা শূলগজেন্দকং॥
নিহন্ত্যাইবিধং শূলং উপদর্গ সমস্থিতং।
অগ্নিপ্রদং বমিহরং খাদকাদাক্তিজ্বং॥
জ্বন্ধং রক্তপিতম্বং প্লীহগুল্মবিনাশনং।
শ্রীমদগহণনাথেন রতিতং বিশ্বদম্পদি॥

শূলগজেন্দ্র তৈল।

উৎকৃষ্ট ভিল তৈল /৮ আটদের, জল ।৬ ষোলদের এবং যবের কাথ ।৬ ষোলদের। কাথার্থ এর গু মূল, বেল, দোণা, গাস্তারী, পাকল, গনিয়ারী, শালপানী, চাকুলে, রহতী, কন্টকারী ও গোকুর; এই দকল কুটিত দ্রব্য দমভাগে দমন্তে /৮ আটদের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ কাথ ।৬ ষোলদের। কল্কার্থ বেল ঠ, জীরক, যমানী, পিপুল, চই, দৈলবলবণ, বদরী (শুষ্ট কুল) ও ভেজপত্র; এই দকল কুটিত দ্রব্য প্রভ্যেকে ২ পল অর্থাৎ ১৬ ভোলা পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক ভৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া যথা বিধানে ভিল পাক করিবে। এই শূলগজ্জে তৈল যথানিয়মে গাত্রাদিতে মর্দন করিলে উপদর্গ দমস্থিত অন্যর্জানির মান্য, অফ্রিচ, জর, রক্তপিত, প্রীহা ও গুলারোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এই শূলগজেল্ক তৈল বিশ্বের হিতের নিমিত্ত শ্রীমণ্যহন নাথ কর্ত্বক প্রকাশিত হইয়াছে।

রহন্নারীকেলখণ্ডঃ।—

নারীকেলপলান্যন্ত্রী শর্করা প্রস্থমেবচ।
তজ্ঞলং পাত্রমেকস্তু সর্পিঃ পঞ্চপলানিচ॥
শুপ্তীচূর্ণক কুড়বং প্রস্থার্কিং ক্ষীরমেবচ।
সর্বমেকীকৃত্য পাত্রে শনৈর্ম দ্বিন্যু পচেব॥
তুগা ত্রিকটুকং মুন্তং চতুর্জাতং সধান্যকং।
দ্বিকণা কর্যুগ্রাক্ষ জীরকে তু পৃথক্ পৃথক্॥
শঙ্গমুক্ত বিনিক্ষিপ্য স্থাপয়েৎ স্লিক্ষভাজনে।
খানেৎ প্রতিদিনং শাণং যথেকীহারসেবিনঃ॥
সর্বদোষভবং শূলমান্যবাতক নাশ্রেৎ।
পরিণাম্ভবং শূলমান্যবাতক নাশ্রেৎ॥
বলপৃ্টিকরকৈব বাজীকরণমুভ্যং।
রক্তপিত্তরং শ্রেষ্ঠং ছর্দিষ্টোগনাশনং॥

অগ্নিসনীপনকরং সর্বরোগনিস্কনং। ধন্মনুরিক্তং স্থেতৎ নারীকেলমিদং মহৎ। বহুলারীকেল খণ্ড।

শ্রপক নারিকেলের শক্ত ৮ পল, ইক্ছ চিনি /২ ছইসের, নারিকেলের জল ৮ আটনের, উৎক্ষ গব্য ছত ৫ পাঁচ পল, শুঠী চুর্গ। অর্জনের এবং গব্য ছম্ব /২ ছইসের । সমস্ত দ্রব্য গুলি একত্রিত করিয়া একটী দৃচ পাত্রে ছাপন পূর্বক ক্মই অগ্নি সংযোগে যথাবিধানে পাক করিতে থাকিবে । যখন দেখিবে যে প্রায় আসন্ন পাকের সমন্ন উপস্থিত, তখন উহার মধ্যে তুগা (বংশলোচন), শুঠী, পিপ্শলী, মরিচ, দাকচিনি, তেজপত্র, নাগকেসর, ছোট এলাচি, ধনিয়া, পিপুল, গজপিপুল, জীরক এবং কৃষজীরা; এই সকল দ্রব্যের চুর্ণ প্রত্যেকে ৪ চারি তোলা পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক নিক্ষেপ করিয়া পাক সমাপন করিয়া লইবে । তৎপরে উহা একটা স্নিদ্ধ ভাও মধ্যে রাখিয়া দিবে । এই রহন্নারিকেল খণ্ড ঔষধ প্রতিদিন প্রান্তঃকালে ২ তোলা মাত্রার সেবন করিলে সর্ববিধ শূল, আমবাত, পরিনাম শূল, আঢ্যবাত (উক্তস্ত), রক্তপিত্ত, বমি ও ছন্দ্রোগ প্রভৃতি সর্বপ্রকার রোগ বিনাশ প্রাপ্ত হয় । পরস্ক ইহা বলপ্রদ, পুক্তিকর, প্রেষ্ঠ বাজীকরণ ও অগ্নি সন্দীপন । এই বৃহন্নারিকেল-খণ্ড ঔষধ স্বন্নং ধন্মন্তরি কর্তৃক কথিত হইয়াছে ।

নারীকেলায়তং।—

নারীকেলফল প্রস্থং সুপিন্টং স্বতভজ্জিতং।
প্রস্থে প্রস্থং সমাদার শুর্গ্যান্ট্র গং সমাজিতং॥
দ্বিপাত্রং নারীকেলায়ু তৎসমং ক্ষীরমেব চ।
ধাত্র্যান্ট স্বরসপ্রস্থং শুরুলাপি তুলা ভিষক্॥
একীকত্য পচেৎ সর্বাং শনৈয় দ্বিনা তথা।
স্বান্ধনীতে প্রদাতব্যঃ চুর্নমেবাং সুনোধিতং॥
ত্রিকটোস্ত, চতুর্জ্জাতং প্রত্যেকস্ত পলোমিতং।
ধাত্রীজীরকমুগান্ত ধন্যাকং গ্রন্থিপর্ণকং॥
তুগা পরোদচূর্ণানি ত্রিকর্গানি পৃথক্ পৃথক্।
চতুঃপলানি মধুনা মিধ্রে ভাগ্রে নিধাপরেৎ॥
কর্মপ্রাণং ভোক্তব্যং ক্ষীরং যুবং পিবেদনু॥
কর্মপিকং নিহন্ত্যান্ত শুলক্ষেব স্থলাক্রণং।
পরিণামভবং শুলং পৃষ্ঠশূলক্ষ নাশনং॥

উপদ্রবভবং শূলং হচছুলক সুদারুণং।
পীনসক প্রতিশারং যক্ষাণক নিষচছতি ।
পরং বাজীকরং শ্রেষ্ঠং বলপুক্টিবিবর্দ্ধনং।
অগ্রিসন্দীপনকরং রসায়নমিদং মহৎ ॥
মূত্ররোগেষু সর্ব্বেষু বাতরোগেষু শস্তে।
শুদজানি চ সর্বাণি নাশয়েদ্ধিত্যসেবনাৎ ।
সর্বরোগবিনাশায় লোকানু গ্রহহেতুনা।
অশ্বিভাগং নির্শিতং শ্রেষ্ঠং নারীকেলাম্বতং মতং॥
নারীকেলাম্বত।

শ্বত ভর্জ্জিত নারীকেল ফলের শাঁদ /২ ছুইদের, শুগীচূর্ণ /২ ছুইদের, नातीक्लात कल । ७ यालमात, कीत (इक्ष) । ७ यालमात, व्यामलकीत खतम /৪ চারিসের এবং ইক্লুচিনি।২॥• সাড়ে বারসের; এই শকল ক্রব্য একত্রিত করিয়া ষথাবিধানে মৃহ অগ্নিসন্তাপে পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে পাক সমাপ্ত প্রায় হইয়াছে. তখন নামাইবে। এবং শীতল হইলে, শুঠী, পিপুল, মরিচ, নাগকেশর, দাঞ্চিনি, ছোটএলাচি ও তেজপত্র ইহা-দের চুর্ন প্রত্যেকে ৮ তোলা; আমলকী, জীরক, কৃষ্ণজীরা, ধনিয়া, পিপুল-মূল, বংশলোচন ও মুখা ইহাদের চুণ প্রত্যেকে ৬ তোলা এবং মধু ৩২ জোলা উহাতে নিক্ষেপ করিয়া, দর্মী (হাতা) দারা উত্তমরূপে আলোড়ন পূর্ব্বক একটী স্থিদ্ধ ভাও মধ্যে রাখিয়া দিবে। প্রতিদিন প্রাভঃকালে প্রমধ্যাণসই শিব, ধলন্তরি এবং অন্যান্ত দেবতা ও মহাদেবকে পূজা করিয়া, এই ঔষধ ২ জোলা মাতায় দেবন করিয়া পশ্চাৎ হন্ধ ও মুগাদির যুয অহপান করিবে। ইহা षाता व्यव्यापित, ऋषाक्यं भूल, शतियामगूल, शृष्ठं गूल, উপদ্রবোদ্ধ ত শূল, হৃদয়শূল, পীনস, প্রতিশ্বায় ও ষক্ষারোগ আশু বিনষ্ট হইয়া থাকে। পরস্ত ইহা শ্রেষ্ঠ বাজীকর, বলজনক, পুষ্টিবর্দ্ধক, অগ্নিসন্দীপক, রদায়ন, সর্ব্ববিধ मूखदागंग अवर श्रमकदांग ममूह विनामक । अर्थ नात्री कलामू उ अयथ मर्क রোগ বিনাশের নিমিত্ত লোকের প্রতি অহু এই প্রকাশার্থে অশ্বিনীকুমারদর কর্ত্ক প্রকাশিত হইয়াছে।

শূলসংহারকঞ্ বং ।—
স্পুরাতন মণ্ডু রং পলাইক সমন্বিতং ।
মারীষ দাড়িমত্বক্চ কচ্বী কুট জবল্কলং ।
মুচুকুন্দক কক্ষোল মপামার্গক চিত্রকং ।
পৃথগ্দিকার্যিককৈষাং গুড়ু চীঞ্চ দ্বিকার্যিকং ।
আাঢ়কেন চ মূত্রেণ ভাবজ্বালং সমাচ্যেৎ ।

যারৎ পিতলকা মূর্দ্ধ বহিন্তনে প্রজারতে।
কারভূতং সমাপেষা রসগমে চ হিন্দুলং।
লবন্ধতেজপত্রক শুভা জাতীকলন্তথা।
শঙ্কাভি দক্রহারি প্রত্যেকক বিকার্ষিকং।
পূর্ববৎ পরিপেষা চ সর্ব্যেকত্র মেলয়েৎ।
প্রত্যামৃত্রভূয়েন পুনঃ সর্ব্যং তথাপচেৎ।
তোলকমুক্তভ্যান পায়য়েৎ কুশলোভিষক।
তাকজং দন্দ্রজকৈব ত্রিদোষজ মথাপি বা।
শূলমন্টবিধং হন্তি সাধ্যাসাধ্যং সমুদ্ধবং।
শূলসংহারকং নাম চূর্ণমেতৎ স্বভ্রল ভং।
অত্র কচীতি মানস্থ বল্কলং। কক্কোলমিতি কাক্রোলং। শুভেতি বংশলোচনা। দক্রহারীতি
কেত্রান্ধা যশু প্রসিদ্ধা॥

শূলদংহারক চূর্ণ।

শোধিত পুরাতন মন্ত্র ৮ পল অর্থাৎ /১একদের এবং মারীয় (চাপা-नटि भाक), माफि्मकल्लत होल, कठ्ठी (मान कठूत हाल), क्टेक हाल, सूठू-কুন্দ ফুল, কাকরোল, অপামার্গ, রক্তচিতার মূল এবং গুলঞ্চ; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৪ চারিতোলা মাত্রায় এহণ পূর্বক। ৬ ষোলদের গোমুত্র সহ পিতলের পাতে করিয়া পাক করিবে। যথন দেখিবে যে, সমস্ত গোযুত্ত শুষ্ক হইয়াছে এবং পাত্রের মধ্যস্থিত দ্রব্য সমূহে অগ্নিবন তেজস্বিতা জ্বনি-য়াছে; তখন তাহা চূলী হইতে নামাইয়া উত্তম রূপে পেষণ করিয়া লইবে। এবং উহার সহিত পারদ, গন্ধক, হিন্তুল, লবন্ধ, তেজপত্র, শুভা (বংশ-লোচন),জাতিফুল, শঙ্কনাভি এবং চক্রমর্দ্ধ ; এই সকল দ্রব্যের চুর্ন প্রত্যেকে s চারি তোলা মাত্রায় এইণ পূর্বক একত্রিত করতঃ উত্তম রূপে পেষণ করিয়া, সমস্ত দ্রবাঞ্চলি /৪ চারিদের গোমুত্র এবং /৪ চারিদের গ্রাভ্রন্ধ সহ পুর্ববৎ পাক করিয়া, দ্রব্যগুলি বিশেষ রূপে পেষণ করিয়া লইবে। এই "শুল সংহারক চুর্ণ" নামক ঔষধ উম্ব হন্ধ সহ ১ একতোলা পরিমাণে প্রতি-দিবদ দেবন করিলে একজ (বাতিক, পৈত্তিক ও শ্লৈষ্মিক), ছন্মজ (বাড-পৈত্তিক, বাডনৈশ্মিক ও পিত্তৈশ্মিক) আমশূল এবং ত্রিদোষজ্ব সান্ধি-পাতিক) শূল এই অফবিধ সাধ্যাসাধ্য শূলরোগ নিক্ষরই সত্তর আরোগ্য হইয়া,থাকে।

বিদ্যাধরাত্রং।— বিভূ**দমু**স্তত্তিফলা গুড়ু চী দন্তীতিরদ্বহি ক**টু**ত্রঞ্চ। প্রত্যেক্ষেষাং পিচুভাগচুর্ণং চন্তার্যায়সামলক্তর্নং,।
গোমূত্রগুদ্ধক পুরাত্রনক্ষ যদায়সন্তানি শিবাটিকায়াঃ।
কৃষণাভ্রকাচচুর্পপলং বিশুদ্ধাৎ নিশ্চন্দ্রকাৎ শক্ষমতীবস্তাৎ।
পালোনকর্ষং স্বরসেন খলে শিলাতলে মনুমুনের্দলক্ষ।
সংমদ্দা পশ্চাদতিশুদ্ধগন্ধং পাষাণচুর্নেন পিচন্মিতেন।
যুক্ত্যাততঃপূর্বে রজাংসিদত্বা সর্পির্মপ্রভাগমবয়দ্যযত্নাৎ।
নিধাপয়েৎ স্লিগ্রবিশুদ্ধভাগে ততঃ প্রযুজ্যাস্য রসায়নস্য।
প্রাঙ্গাধ্বকাপ্যথবা দ্বিতীয়োবা গব্যং পয়োবা শিশিরং জলয়া
পিবেদরং যোগবরঃ প্রভুতঃ কালপ্রনন্তানলদীপকেরু।
কোগেরু হন্যাৎ পরিণামশূলং শূলন্তথার্দ্রবসংজ্ঞকঞ্চ।
যক্ষামুপিত গ্রহণীবিকারান্ জীর্ণজ্বং লোহিতপিতকুর্টে।
নসন্তিতেযার নিহন্তি রোগান্ যোগোত্রমঃ সম্যগুপাস্যমানঃ॥
বিদ্যাধ্রাভ্র।

বিড়ঙ্গ, মুখা, হরীতকী, আমলা, বহেড়া, গুলঞ্চ, দন্তী মূল, ডেউড়ী মূল, বক্ত চিতার মূল, শুঠী, পিপুল, ও মরিচ; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে হ হুই জোলা, আরোমল (মণ্ডুর) চুর্গ ৪ পল, লৌহ বা লৌহপত্রিকা চূর্ণ ৪ পল এবং কৃষ্ণাজ চূর্ণ ১ পল। প্রথমে মহায়ুনির (থাহুকুনীর) রমে ১০০ দেড় তোলা শোধিত পারদ এবং ২ হুই জোলা শোধিত গন্ধক একজ্ব মর্ক্তন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে; ডৎপরে বিড়ঙ্গ হুইতে কৃষ্ণাজ পর্যান্ত সমস্ত চূর্ণ দ্রব্যগুলি উহার সহিত মিপ্রিত করিয়া মৃত ও মধু সহ মর্ক্তন করিয়া, এক টী স্থিম ভাগু মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই উমধ্য ১ মাষা বাহ মাষা মাত্রায় দেবল করিয়া, গব্য হুদ্ধ বা শীতল জল অহুপান করিবে। এই বিদ্যাধরাজ উমধ্য সেবল দ্বারা জঠরাগ্রি অতীব প্রদীপ্ত হয়। পরস্ত ইহা দ্বারা প্রিরণামশূল, অন্ধদ্রব শূল, যক্ষমা, অমপিত, গ্রহণী, জীর্ণ জর, রক্তপিত এবং কুর্ফ রোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। অধিক কি, এমন কোন রোগ নাই; যাহা এই উমধ্য নিয়মিত রূপে দেবন করিলে আরোগ্য না হয়।

শূলবজিনী বটী।—
রদগন্ধক লৌহানাং পলার্দ্ধেন দমন্বিতং।
টঙ্কণং রামঠং শুগু বিকটু বিফলা শুদ্ধী।
ত্বগেলা পত্রতালীশ জাতীফল লবঙ্ককং।
যমানী জীরকং ধান্যং প্রত্যেকং তোলকং শুভং।
মাধৈকা বটিকা কাগ্যা ছাগীত্বন্ধে প্রপেষিতা।

গুণেশজননী শড়ু হরিস্থ্যান্ প্রপৃজ্যচ। শীভতোয়ানুপানেন ছাগীত্রশ্বেন বা পুনঃ। একৈকা ভক্তিতা চেয়ং বটিকা শূলবজ্জিনী। मृनमरुविधः इति श्रीइल्यानतः ज्वतः। জ্ঞ্ঠীলাবাহ মেহাংশ্চ মূত্ররোগ হলীমকৌ। ষ্ক্রমপিভামবাতঞ্চ কামলাং পাণ্ডুরোগকং। শোথং গল মহং রুদ্ধিং শ্লীপদক ভগন্দরং। কাদং শ্বাদং ত্রণ: কুষ্ঠং ক্রিমিহিক্কামরোচকং। অর্শাংসি গ্রহণীত্রুষ্টাং সর্ব্বাতীসারনাশনং। বিস্থচীং কণ্ডু মন্দাগ্নিং পিপাদাং পীনসং গদং। একজং দ্বন্দ্ব জয়াপি দোষত্র সমুদ্ধবং। রষ্যা বলবতীচৈষা মন্দাগ্নি পরিদীপনী। কান্তিরদ্ধিপ্রদা নিত্যং সেবিতা চ চিরায়ুধী। ভাষিতং চল্রনাথেন বটীচৈষা প্রকীর্তিতা। সংসার লোকরক্ষার্থং বিচিন্তা পরিনির্দ্মিতং। কালব্যাধি বয়োবহ্নি তৃষ্ণাচ ত্রুটিবর্দ্ধনং। া গদানুমানকং বৈদ্যেরনুপানং প্রযুজ্যতে॥ मुलविकारी वरी।

পারদ, গন্ধক ও লৌহ প্রত্যেকে ৪ চারিভোলা, সোহাগার খৈ, হিন্তু, শুল্ব (তাত্র), শুগুন, পরিচ, হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, শুগী, দারু-চিন্নি, এপাচি, তেজপত্র, তালীশপত্র, জাতিফল, লবদ্ধ, যমানী, জীরা ও ধনিয়া প্রত্যেকে ১ একভোলা ; ক্ষন্ত দ্রবাগুলি চুণ করতঃ উত্তম রূপ মিপ্রিড করিয়া ছাগ হন্ধ সহ 'পেষণ পুর্বক ১ এক মাষা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতিদিন ইহার একটা করিয়া বটীকা শীতল জল বা ছাগ হন্ধ অরুপান সহ দেবন করিলে বাতিক, পৈত্তিক, দ্রৈত্মিক, বাতপিত্তিক, বাত্ত-দ্রৈত্মিক, পিত্ত দ্রৈত্মিক, আমজ্জ ও ত্রেদোষিক এই অন্টবিধ শূল, শ্লীহা, গুলা, উদর, জুর, অন্ঠালা, আনাহ, বিংশতিপ্রকার দেহ, মুত্ররোগ, হলীমক, অমপ্রনির, জ্বান, অনাবাত, কামলা, পাণ্ডু, শোপ, গলগ্রহ, রৃদ্ধি (অওকোষ ফোলা), স্লীপদ (গোদ), ভগন্দর, কাস, শ্বাস, ত্রণ, কুন্ঠ, ক্রিমি, হিক্কা, অন্তর্চি, অর্শঃ, এহণী, সর্বপ্রকার অভিসার, বিস্থচী (এলাউঠা বা কলেরা), কণ্ডু (চুল-কণা), মন্দায়ি, পিপাসা ও পীন্স এই সমস্ত রোগ একজ্ব (বাতিকাদি), দ্বন্দুজ্ব (বাত পৈত্তিকাদি) ও ত্রেদোষিক যে প্রকার হুন্টক, নিশ্চয়ই আরোগ্য

ছয়। পরস্ত ইহা রষ্য, বল জনক, অগ্নিপ্রানীপক, কান্তিবর্দ্ধক ও দীর্ঘায়স্থাপক বলিয়া জানিবে। এই শুল্লবজ্ঞিণী বঁটী উষধ সাংসারিক লোকরক্ষার্থ শ্র্যায় চন্দ্রনাথ কর্ত্ত্বক কথিত হইয়াছে। স্থবিজ্ঞ বৈদ্য এই উষধ কাল, ব্যাধি, বয়স-অগ্নি, ভৃষ্ণা এবং ব্যাধির বেণের ভূনোধিক্য দর্শন পূর্ব্বক পুনঃ পুনঃ অনুপান পরিবর্ত্তন পূর্ব্বক রোগীকে দেবন করিতে দিবেন।

ইতি জ্রীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্ররোগ-চিন্তাম্মণি গ্রন্থে শূলরোগের চিকিৎনা নমাপ্ত।

অথ পরিণামশূলাধিকারঃ।

পরিণামশূল চিকিৎসা।

বমনং তিক্ত মধুরা বিরেকশ্চাত্ত শদ্যতে । বস্তুয়শ্চ হিতাঃ শূলে পরিণাম সমুদ্ধেরে ॥ ঘতঃপর পরিণাম শূলরোগের চিকিৎদা কথিত হইতেছে। পরিণাম শূলের চিকিৎদা স্থত্ত।

ভিক্ত ও মধুর দ্রব্য দ্বারা বমন ও বিরেচন, লজ্যন এবং বস্তিপ্ররোগ ; এই দকল ক্রিয়া প্রয়োগ দ্বারা পরিণাম শুলরোগের চিকিৎসা করা কর্ত্ব্য।

শতাবরী মণ্ডুরং ৷—

সংশোধ্য চূর্নিতং কৃত্যা মঞ্ রস্য পলাইকং।
শতাবরী রস্ম্যাইটো দপ্পস্ত প্রস্তুপা।
পলান্যালায় চত্ত্বারি তথা গ্রাস্য সর্পিষঃ।
বিপচেৎ সর্ব্যমকত্র যাবৎ পিশুত্বমেতি তথ।
সিদ্ধান্ত ভক্ষয়েৎ মধ্যে ভোজনস্যাত্রতাপিবা।
বাতাত্মকং পিভভবং শূলঞ্চ পরিণামজং।
নিহন্ত্যেব হি যোগোহরং মঞ্রস্য শ সংশয়ঃ॥
শতাবরী মণ্ডর।

শভাবরী মণ্ট্র।
শোধিত মণ্ড্র চূর্ণ ৮ পল অর্থাৎ /১ একদের, শত মূলীর রস /১ একদের, দধি /১ একদের, হ্রম /১ একদের এবং উৎকৃষ্ট গাব্য দ্বত । অর্জ্জনের। সমস্ত দ্রবাগুলি একত্রিত করিয়া মূহ অগ্রিদন্তাপে পাক করিতে থাকিবে। যখন উহা পিগুকৃতি হইয়াছে, তখন চূলী হইতে নামাইয়া ঔষধ্ এইণ করিবে। এই শতাবরী মণ্ড্র ঔষধ প্রতিদিবদ উপযুক্ত মাত্রায় ভোজনের মধ্যে বা অ্থে দেবন করিলে বাতিক শুল, পৈত্তিক শুল ও পরিণাফ শুল নিশ্চরই আরোগ্য হইয়া থাকে, ভাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।

সামুদ্রাদ্যং চূর্ণং।—

সামুদ্রং গৈশ্ববং ক্ষারো রুচকং রোমকং বিড়ং।

দন্তী লৌহরজঃ কিট্রং ত্রিরচ্ছু রণকং সমং।

দধি গোমূত্র পায়সা মন্দপাবক পাচিতং।

তদ্যথাগ্বিলং চূর্ণং পিবেহুফেন বারিণা।
জীর্ণে জীর্ণে চ ভূঞ্জীত মাংসাদি মৃতসাধিতং।

নাভিশূলং প্লীহশূলং যক্ত্রং গুলাক্রতঞ্চ যং।

বিদ্রোগ্রীলিকাং হন্তি কফবাত ক্রতন্তথা।

শূলানামেব সর্বেষামৌষধং নাস্তি তৎসমং।

পরিণাম সমুখদ্য বিশেষেণান্ত ক্রমতং।

সামুদ্রাদ্য চূর্ণ।

নামুদ্র (করকট) লবণ, দৈশ্ববলবণ, যবক্ষার (দোরা), ক্চক (দৌবচল) লবণ, রোমক লবণ (অভাবে সাস্তরী লবণ), বিট্ লঘণ, দস্তীমূল,
লৌহ, মণ্ডুর, ভেউড়ী মূল এবং শ্রণ (ওল); এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক, উত্তম রূপ স্ক্রম চূর্গ করিয়া দথি ও গোমূত্র সহ মৃত্ব অগ্নি
সন্তাপে তপ্ত করতঃ চূর্ণবৎ করিয়া লইবে। এই ঔষধ রোগীর বল, আগ্নি আদি
বিবেচনা পূর্বক উষ্ণ জলের সহিত সেবন করিতে দিবে। এই ঔষধ জীণ
হইলে, অথবা জীর্ণ না হইতেই রোগীকে স্বতপক্ষ-মাংস-রুস পান করিতে
দিবে। ইহা দারা নাভিশূল, প্লীহশূল, যকুচ্ছূল, গুল্মশূল, বাত ও কফ ক্লাভ বিদ্রধি ও অতীলা রোগ বিনক্ত হইয়া থাকে। এবং ইহা দ্বারা সর্ব্বপ্রকার
শূল অর্থাৎ বাতজ্ব, পিত্তন্ত, কফজ্ব, রক্তপিত্তক্ব প্রভৃতি যতপ্রকার শূলরোগ
আছে, তৎসমূদায় নিবারণার্থ এরূপ দ্বিতীয় ঔষধ আর প্রায় দেখাবায় না।
বিশেষতঃ ইহা পরিণাম শূলের অন্তক্ব স্বরূপ বলিয়া জানিবে।

্ নশরীকেলৌষধিঃ —

নারিকেলং মতোয়ঞ্চ লবণেন প্রপ্রিতং।
বিপক্ষ মগ্নিনা সম্যক্ পরিণামজ শূলকুৎ।
বাতিকং পৈত্তিককৈব শ্লৈষ্মিকং সান্নিপাতিকং।
স্ক্রিথং শূলং হন্তি পরিণামজং দারুণং॥
নারিকেলোষ্ধি।

একটী স্থপক জলপূর্ণ নারিকেলের মুখ ছাড়াইরা, তথাধ্যে উপযুক্ত মাত্রায় সৈদ্ধব লবণ চূর্ণ নিক্ষেপ করিয়া মুখটী বন্ধ করিবে। পরে মৃত্তিকা ধারা লেপ দিয়া পুটপাকের স্থায় অধিতে দদ্ধ করিবে। অমি দারা উত্তম রূপ পক হইলে, নারীকেলের উপরিছিত মৃত্তিকার লেপ পরিত্যাগ করিয়া, উহার মধান্থ শাঁস এহণ করিবে। এই নারিকেল ত্তর্যধ উপযুক্ত পরিমাণে প্রতিদিন দেবন করিলে পাতিক, পৈত্তিক ও লৈত্মিক প্রভৃতি সর্ববিধ পূরি-গাম শুল নিশ্চয়ই বিন্ট হয়।

সপ্তায়ত-লৌহঃ ।—
মধুকং ত্রিফলাচূর্ণ মরোরজঃ সমং লিহন্ ।
মধুসর্পিযু তিং সম্যক্ গ্রাক্ষীরং পিবেদর্ম ।
ছক্তিং সতিমিরাং শূলমম্পিত্তং ক্সরং ক্রমং ।
আনাহ মূত্রসঙ্গক শোথকৈব নিহন্তি সঃ॥
সপ্তায়ত লৌহ।

যথি মধু ও ত্রিফলা (হরীতকী, আমলকী ও বছেড়া) ইহাদের সমভাগ চূর্ণ এবং সর্বাসফীর সমান মাত্রায় লেছি চূর্ণ গ্রহণ পুর্বাক উভরে একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় লইয়া মধু ও ঘৃত সহ মিশ্রিত করত: লেহনপূর্বাক সেবন করিবে এবং ছগ্ধ অনুপান করিবে। ইহা দারা বমি, ভিমির, শূল, অন্নপিত্ত, জ্বার, ভ্রম, আনাহ, মূত্রকৃচ্ছ ও শোধরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

তারামণ্ডুর গুড়ঃ।—
বিড়ঙ্গং চিত্রকং চবাং ত্রিফলা ত্যুরণানিচ।
নবভাগানি চৈতানি লৌহকিট্র সমানিচ।
গোমূত্রং বিগুণং দত্বা মূত্রার্দ্ধিক গুড়ান্বিতং।
শনৈম হিমিনা পজ্যা সুসিদ্ধং পিগুতা কৃতং।
বিশ্বভাগে বিনিক্ষিপ্য ভক্ষয়েৎ কোলমাত্রয়।
প্রাধ্যান্ত ক্রমেনেব ভোজনস্য প্রযোজিতঃ।
যোগোইয়ং শময়ত্যাশু পঙ্কিশ্লং সুদারুলং।
কামলা পাগুরোগঞ্চ শোথং মন্দায়িতানিচ।
পংকিশ্লান্তকোহেব গুড়ো মণুরসংজ্ঞিতঃ।
শ্লার্ডানাং ক্বপাহেতো স্তারয়া পরিকীর্তিতঃ॥

ভারামণ্ড র গুড়।
বিড়ঙ্গ, রক্তচিতার মূল, চই, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল,
মরিচ, ইহাদের প্রভাতেরে চূর্ণ ১ এক ১ এক ভাগ এবং শোধিত মণ্ডুর চূর্ণ
৯ নর ভাগ এহণ পূর্ব্বক দিগুণ গোমুত্র এবং গোমুত্রের অর্ব্বেক পরিমাণ ইকুগুড় সহ মূত্র অগ্নিসংযোগে পাক করিবে। যখন দেখিবে পিণ্ডাকৃতি হইরাছে, তখন উহা চূলী হইতে নামাইরা একটা স্বিশ্ব ভাণ্ডে রাখিয়া দিবে।
এই ব্রথ প্রতিবিদ্ধ ২ ভোলা মাতার অনুপান বিবেচনা পূর্বক ভোজনের

পূর্ব্বে, মধ্যে বা অন্তে দেবন করিলে আশু স্থলাকণ পক্তিশূল, কামলা, পাণ্ডু-রোগ, দেশাথ ও মন্দাগ্নি নম্ভ হয়। পক্তিশূলের অন্তক স্বরূপ এই তারা মণ্ডুর-গুড় শূল প্রশীড়িত ব্যক্তিনিগের প্রতি দ্যাপ্রকাশার্থে স্বরুং তারা কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে।

मृलगार्भार्थानि।-

ব্যায়ামং দৈথুনং মন্যং লবণং কটুবৈদলং। বেগরোধং শুচং ক্রোধং বর্জ্জয়েচছ লবান্নরঃ॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো শূলপরিণামশূলাধিকারঃ।

শুলবোগীর পরিত্যাজ্য বিষয় সকল।

ব্যায়াম (কুন্তিকরা), মৈপুন (ন্ত্রী দস্তোগ), মদ্যপান, লবণ, কটু এবং বৈদল (বুট, মটর আদি দাইল), মল, মূত্রাদির বেগ ধারণ, শোক এবং ক্রোধ; শুলরোগী এই সমস্ত অবশ্যুৎ পরিত্যাগ করিবে।

> ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" ঞ্চেস্থ শুল পরিণাম শুলরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথোদাবর্ত্তানাহাধিকারঃ

অতঃপর উদাবর্ত্ত আশাহ রোগের চিকিৎসা কথিত হইতেছে।

मीवर्फनाना मनिता।-

সৌবর্চ্চলাচ্যাং মদিরাং মূত্রেত্বভিহতে পিবেৎ ॥
নৌবর্চ্চলাদ্যা মদিরা।

২পল মদ্যের সহিত ৪ চারি মাষা সৌএর্চ্চল লবণ মিশ্রিত করিয়া পান করিলে মুত্রাভিগাত,জন্ম উদাবর্ত্তরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

। হৈন্ধু দি বর্তিঃ।—

হিন্দুমান্দিকসিম্ থৈঃ পক্তা বর্তিং সুবর্দ্ভিতাং। মুতাভ্যক্তাং ওদে দদ্যাত্রদাবর্দ্রবিনাশিনী॥

हिन्नु।मि वर्छ।

ধিকু, মধু ও নৈক্ষবলবণ, এই দ্রব্যত্তর সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক যথানিরমে পাক করিষা, দ্বত মিলিভ করতঃ বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া গুছ্মধ্যে প্রয়োগ করিলে উদাবর্ত্তরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

ফলবর্ডিঃ।---

বর্তিন্ত্রিকটুক সৈম্ববসর্থপ গৃহধুম সকুষ্ঠ মদনকলকৈঃ।
মধুনি গুড়ে বা পক্তা বিদধীতাঙ্গুঠসমাবর্তিরিয়ং।

দৃউকলা শবৈঃ শবৈঃ প্রণিহিত। স্থতান্তা । আনাহোদাবর্ত্তপ্রশমনী জঠরগুলাবিনাশিনী ॥ ফলবর্ত্তি।

ত্তিকটু (ভঁঠ, পিপুল ও মরিচ), সৈশ্বৰ লবণ, সর্থপ, গৃহধুম (ঝুল), কুড় ও মদন ফল (ময়না ফল); এই সকল দ্রব্য প্রভাৱেক ২তোলা এবং মধু ৮তোলা ও গুড় ২তোলা; এই সকল দ্রব্য একত্তিত কর্নতঃ যথানিয়মে পাক করিয়া অস্কুত প্রমাণ বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্ত্তি মৃত্যক্তিক করিয়া গুছ্ মধ্যে শনৈঃ প্রয়োগ করিলে আনাহ, উদাবর্ত্ত, উদররোগ ও গুলারোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হয়। এই বর্ত্তি দুইকল বলিয়া জানিবে!

শুকমূলান্যং মূতং ৷---

মূলকং শুক্ষমান্দ্র কি বর্ষাভূ পঞ্চমূলকং। আরেবভকলঞ্চাপি পিফ্রা তেন পচেৎ স্বতং। ভৎ পীতমাত্রং শময়েত্রদাবর্ত্তং বিশেষভঃ॥

শুক্যুলাদা মৃত।

শ্বত /৪ চারিসের, জল ১৬ ষোলসের ; কল্কার্থ শুক্ষমূলা, আদা, বর্ষাভূ (পুনর্নবা), পঞ্চমূল (বেলছাল, পাফলছাল, গনিয়ারীছাল, গাস্তারীছাল ও দোণাছাল); এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একসের মাত্র গ্রহণ পূর্বক শ্বত মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া যথাবিধানে শ্বত পাক করিবে। এই শুক্তমূলাদ্য শ্বত যথানিয়মে সেবন করিবামাত্রই উদাবর্তরোগ বিশেষরূপে প্রশ্-মিত ছইয়া থাকে।

হিঙ্গাদি চুর্ণমৃ ।—

দ্বিক্তরাহিন্ধু বচা সকুষ্ঠা স্থবর্চিকা চেতি বিড়ন্সচূর্ণং।
স্থানুনানাহ বিস্তৃচিকার্তিং হডোগ গুলোর্দ্ধিননীরণয়ং॥
হিন্দাদি চুর্ব।

হিন্দু ১ একভাগ, বচ ২ ছইভাগ, কুড় ৪ চারিভাগ, সাচিক্ষার ৮ আটভাগ এবং বিড়ক্ষ ১৬ যোলভাগ; এই সকল অব্য উত্তমরূপে স্থক্ষচ্ণ করিয়া লইবে। এই ছিল্পাদি চূর্ন ঔষধ উষ্ণ জলের সহিত যথোপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে আনাহ, বিস্কৃটী (ওলাউঠা বা কলেরারোগ), হুজোগ, গুল্ম ও উর্দ্ধ বায়ুরোগ বিন্দু ইইয়া থাকে।

নারাচচুর্ণং।—

খণ্ডপলং ত্রিভাসমমূপকুলা। কর্ম শ্লন্ধচূর্ণিতং। প্রাণাদেশ করেন সহমগ্র বিভালপদকং লিছেৎ প্রাতঃ।

এত লাঢ়পুরীষে পিতে ককে চ বিনিযোজ্যং। স্থাতুর্ প্যোগ্যোহয়ং চুর্ণোনারাচকে। নামা। ইত্যুদাবর্তানাহ চিকিৎসা।

শারাচ চূর্ণ।

খণ্ড (খাঁড় গুড় অন্তাবে চিনি)৮ আট ভোলা, ভেউড়ীযুল চূর্ণ ২ ভোলা এবং পিপুল চূর্ব ই হুই ভোলা; সমস্ত দ্রব্য চূর্বকরতঃ একত্র মিশ্রিত করিরা লইবে। এই নারাচ চূর্ব ঔষথ ২ হুই ভোলা পরিমাণে কিঞ্চিৎ মধু সহ ভোল-নের প্রাক্ষালে সেবন করিলে মলবদ্ধতা এবং কফ ও পিতক্ষনিত উদাবর্ত-রোগ নিক্ষরই আরোগ্য হয়।

বিশেষ কথা—এই নারাচ চূর্ণ ২ ছুই ভোলা মাদ্রার দেবন করিবার বিধি
আছে, কিন্তু আধুনিক হীনবীধ্য লোকদিগের পক্ষে এতাদৃশ পরিমাণ উপযুক্ত
নতে। অতএব সুবিজ্ঞ চিকিৎসকগণ রোগের অবস্থা নির্ণয় করিরা, উষধের
মাত্রা ছির করিরা দিবেন। ষেত্তে উষধ অষথামাত্রার প্রযুক্ত হলৈ ব্যাধির
উপশম হওরা দ্রে থাক্ বরং তদ্বারা অন্যান্য বিবিধ উৎকট রোগ জন্মিরা
থাকে। অস্থান্ত উষধেও এবদিধ অহপযুক্ত মাত্রা দৃষ্ট হইলে, চিকিৎসকগণ
অতি সতর্কে তৎসম্বন্ধে সমুচিত পরিমাণ নির্ণয় করতঃ রোগীর প্রতি
প্রযোগ করিবেন।

ু ইতি জ্রীরাম মাণিক্য সেন বিরুচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এছে উদাবর্ত্ত ও আনাহরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ গুলুাধিকারঃ।

অনন্তর গুলারোগের চিকিৎসা কথিত হইতেছে। গুলারোগক সাধারণ-চিকিৎসা।

লঘুনং দীপনং স্নিশ্বমুক্তং বাতানুলোমনং। রংহণং যদ্ভবেৎ সর্বং তদ্ধিতং সর্বকাল্যনাং॥

গুলারোগের সাধারণ চিকিৎসা।

লগু অন্ন. অগ্নিণীপ্তিকর জব্য, স্নিঞ্ধ জব্য, উষ্ণ জব্য, বায়ুর অন্নলোম-কারক জব্য এবং রংহণ জব্য (যে সকল জব্য ভক্ষণ দারা শরীর সমধিক-বলাধান ও ধাতু সমূহ অভীব পরিপুই হয়, সেই সমস্ত জব্যকে রংহণ জব্য বলা বায়; যথা মাংস, ছত প্রভৃতি); এই সকল সর্কবিধ গুলারোগীর পক্ষে বিশেষ হিডকর বলিনা জানিবে। ককগুলো — পঞ্চালী কাথানরঃ ।—
পঞ্চালী শৃতং তোরং পুরাণ বারুণীরসং।
কফগুলো পিবেৎ কালে জীর্ণং মাধ্রীকমেবচ॥
কফগুলোর চিকিৎসা।—পঞ্চালী কাথানি।

রহৎ পঞ্চমূল অর্থাৎ বেল ছাল, সোণা ছাল, পাকল ছাল, গনিয়ারী-ছাল ও গাস্তারী ছাল; এই পঞ্চ দ্রব্য কৃটিত দমভাগে দমন্তে ২ তুই তোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্রিশতোলা, শেষ কাথ ৮ আট ছোলা। এই কাথ পুরাতন বাকণী মদ্য (ভাল ও খেজুর রসের দ্বারা যে মদ্য প্রস্তুত হয়, ভাহাকে বাকণী মদ্য বলে) এবং মাধীক মদ্য (মধু দ্বারা যে মদ্য প্রস্তুত হয়, ভাহাকে মাধীক মদ্য বলা যায়) যথা সময়ে পান করিলে কফজনিত গুলুরোগ নিবারিত ছইয়া থাকে।

পিভগুলাুস্য চিকিৎসা।
কাকোল্যাদি মহাতিক্তং বাদাদৈয়ং পিভগুল্মিনং॥
পিভগুলের চিকিৎসা।

কাকোল্যাদিগণের কাথ ও কল্কমহ মিদ্ধ মৃত অথবা মহাতিক্ত দৃত কিম্বা বাসাদি মৃত উপযুক্ত মাত্রায় মেবন করিলে পিত্তজ গুল্মরোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

বিরেচন প্রয়োগঃ।—

রেচনার্থী রসয়াপি জাক্ষায়াঃ সগুড়ং পিবেৎ 1 পৈত্তিক গুলুরোগে বিরেচন প্রয়োগ।

পৈত্তিক গুলুরোগীকে বিরেচনার্থে কিন্দিদের রস ২ তোলা পরিমাণে লইয়া ॥• অর্দ্ধ তোলা গুড় মিশ্রিত করতঃ পান করিতে দিবে।

পকগুলান্য লক্ষণানি।—
দাহশূলানিল ক্ষোভ স্বপ্নগুৰারতিস্থারিঃ।
বিদ্যমানং জানীয়াদ্ গুলাং তমুপনাহয়েও॥
পক গুলোর লক্ষণ।

দাহ, শূল, বায়ু কর্ত্ত্ক শুক্ষতা, নিদ্রানাশ, গ্লানি ও জ্বর; এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইলে গুলা পাকিবে বলিয়া জানিবে। তখন ঐ গুলা শীদ্র পাকার্থ ত্রণ শোখোক্ত পাচন দ্রব্য উষ্ণ করিয়া গুলা স্থানে প্রলেপ দিবে। "

বাৃতগুলাুস্য চিকিৎসা।—

মাতুলুঙ্গ রসোহিন্দু দাড়িমং বিড়সৈদ্ধবং।

সুরামণ্ডেন পাতব্যং বাতগুল্মরুজাপহং॥

বাতগুলোর চিকিৎসা।

माञ्जूक (ছোলक) नितृत तम, रिक्, माञ्जिम कल्लत तम, विद्वेलवन

এবং সৈদ্ধবলবণ; এই সকল দ্রেষ্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক হুরা মণ্ডের সহিত উপযুক্ত মাত্রার সেবন করিলে বাতজ গুলারোগ নিবারিত হয়।

তিলাদিঃ।—

তিলপ্তৈকং গুড়পলং ক্ষীরেণোক্ষেন পারয়েৎ। বাতগুলামুনাবর্ত্তং যোনিশূলঞ্চ নাশয়েৎ॥ ভিলাদি।

তিল ১পল এবং গুড় ১পল লইয়া উষ্ণ ছগ্ধ সহ মিঞ্জিড করও: সেবন করিলে বাতগুলা, উদাবর্ত্ত এবং যোনিশুল নিবারিড ছইয়া থাকে।

যমানীচুৰ্য্।—

যমানী চূর্ণ উপযুক্ত মাত্রায় তক্র ও বিট্লবণ সহ মিশ্রিত করিয়া লব-গাক্ত করত: সেবন করিলে গুল্মরোগীর মন্দায়ি প্রদীপ্ত হয় এবং বায়ু, মৃত্র ও মল অধোনীত হইয়া থাকে।

স্বেদপ্রয়োগঃ ৷—

নিশ্ধক ভিষজা কেনঃ কর্তব্যা গুল্মান্তরে। শ্রোতদাং মার্দ্দবং কৃত্বা জিত্বা মারুতমুল্নং। ভিত্বা বিবদ্ধং নিশ্ধক স্বেদো গুল্মং ব্যপোছতি॥
ভল্বোগে স্বেদ প্রোগ।

চিকিৎসক গুলারোগীকে প্রথমতঃ স্মিদ্ধ করিয়া পশ্চাৎ স্বেদ প্রয়োগ করিবেন। যেহেতু স্বেদ স্মিদ্ধ রোগীর স্রোভঃ সমূহের মৃত্তা সম্পাদন করে; এবং বর্দ্ধিত বায়ু নিবারণ ও বাতাদিজ্বনিত বিবদ্ধতা ভেদ করিয়া গুলারোগ বিন্দ্ধ করিয়া থাকে।

'অন্যস্ত্র।—

কুন্তীপিণ্ডেউকা স্বেদান্ কারয়েৎ কুশলোভিষক্। উপানাহাঃ প্রকর্তব্যাঃ সুখোফাঃ শাল্নাদ্রঃ॥ স্ব্যু প্রকার স্বেদ।

গুলারোগে স্থাটিকিৎসক বাতনাশক উষ্ণ কাথানি পূর্ব কুন্ত, অগ্রি-সংযোগে সিদ্ধ বস্ত্রবদ্ধ মাবকলায়ানির পিণ্ড অথবা অগ্নিতে সন্তপ্ত ইক্টক (ইট) বাত নাশক দশমুলাদির কাথে সিদ্ধ করিয়া তদ্বারা স্বেদ নিবেন, এবং শালুনানি ক্ষত্রফ করিয়া তদ্বারা উপনাহ প্রয়োগ করিবেন। শালুনানি বাতব্যাধি অধিকারে উক্ত হইয়াছে জানিবে। গুলাস্য-হিতকরী ক্রিয়া।—
ভানাবদেকো রক্তক্ত বাহুমধ্যে শিরাব্যথঃ।
ত্বেদোহনুলোমনকৈব প্রশন্তং সর্বাগুলিয়নাং।
গুলুরোগে হিতকর ক্রিয়া।

গুলান্থান ছইতে ব্রক্তমোক্ষণ, উদরের যে পার্মে গুলা সেই পার্শের নাহসন্ধির অধোদেশে কুম শিরাবেধন, স্বেদ এবং বায়ুর অমুলোমন ক্রিয়া ব্র্মেপ্রকার ছিব্ন গুলারোগের পক্ষে প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

কফগুলো-মৃতম্।—
লজ্জনোলেখন খেনে ক্তে২গ্রো সম্প্রধুক্ষিতে।
মৃতং সক্ষারকটুকং পাতব্যং কফগুলোমা॥
কমগুলো মৃত প্রয়োগ।

লঙ্ঘন, বমন ও স্বেদাদি দারা ককগুলারোগীর অগ্নি সন্ধুক্ষিত হইলে, রোগীকে যবক্ষার ও ত্রিকটুর (শুঠী, পিপুল ও মরিচের) কল্ক নহ স্বত্ত নাক করিয়া র্পেবন করিতে দিবে।

বমনার্ছ-গুলুরী।---

यन्तं शिर्दिन ना यन्तं श्वरूखियिज्दको र्छेज । সোৎক্লেশা সাকৃচির্বস্য সগুলুী বয়নোপগঃ ॥ বয়নযোগ্য গুলুরোগী।

ষে গুলুরোগীর অগ্নিমান্দ্য, অম্পেবেদনা, গুরুতা, স্তিমিত কোষ্ঠ, ওৎক্লেশ ও অকচি; এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইবে ভাহাকে বমন প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য।

বাতাদি দোষভেদেন চিকিৎসা।—
মন্দেহগাবনিলে মূঢ়ে জ্ঞাত্মা সম্প্রেছমাশয়ং।
শুড়িকাচুর্ণ নির্মূছাঃ প্রযোজ্যা ককগুল্মানাং।
কারারিই গণাশ্চাপি লাহশোষে বিধীয়তে।
পিভোভরে রেচনং মিশ্বং রক্তে রক্তন্যমোক্ষণং।
বাতগুল্মে ককের্দ্ধে বাস্তি শুর্ণাদিচেষ্যতে সদা॥
বাতাদি দোষভেদে গুলুরোটার চিকিৎসা।

ককগুলো মন্দায়ি ও মুছবাত লক্ষিত হইলে রোগীকে বেহ পান করা-ইয়া চূর্ন, কাথ ও গুড়িকা এবং দাহ ও লোমযুক্ত হইলে ঘন্টাপারল্যাদির কার এবং গ্রহণী ও অর্শোরোগোক্ত অরিক্টগণ বিহিত উষধ প্রয়োগ করিবে। কিন্তু এই সকল ঐবধ ঘারা কোন উপকার না হইলে, পাশ্চাৎ সম্ভপ্ত লোহ শলাকাদি যারা মন্ধ করিবে।

रेशिजिङ्गधत्म अत्रथ रेजनामि दात्रा चिक्ष विद्वारम धातारा कतित्व। রজজ ওলো রজনোকণ করিবে এবং বাতিক গুলারোগে কক প্রবল হইলে, यमनकांत्रक कृतीनि छैयथ धारत्राश कतित्व।

অন্যবিধারাহ।---

তিলৈরগ্রভাতসীবীজ সহপৈঃ পরিলিপা চ। শ্লেষ্ঠল্যাময়ঃ পাতৈঃ স্থােকৈঃ স্বেদয়েন্তিষক্। স্বিধােকেনােদিতে গুল্যে পৈভিকে অংসনং হিতং। রুক্ষোফে পিত্রসম্ভূতে নূর্পিঃ প্রশমনং পরং॥

বাতাদি দোষভেদে অন্ত প্রকার ক্রিয়া।

কফজ গুলারোগে তিল, এরগুবীজ, তিদী এবং দর্বপ, এই দকল দ্রব্য ममान ভাগে लहेबा कल मह (প্रशं कदिबा श्रवाशात श्रात्म पित्रा नेयमुक লৌহপাত্র দ্বারা শ্বেদ প্রদান করিলে।

বিদ্ধ ও উষ্ণ পিত্তজ্বনিড গুলুরোগে অংসন (বিরেচন) প্রয়োগ করিবে। আর রক্ষ ও উষ্ণ সম্ভূত পিত্তজ গুলারোগে পাক করা দ্বত প্ররোগ বিধেয় বলিয়া জানিবে।

অন্যক্রিয়া।—

ষেহিতং ভ্রংসয়েৎ পশ্চাদেয়াজয়েৎ বস্তিকর্মণা। স্নিয়োক্তজে পিতততেল্য কম্পিলং মধুনা লিহেৎ॥ তার ক্রিয়া।

পৈত্তিক গুলারোগীকে স্থিম করিয়া পশ্চাৎ বস্তি প্রয়োগ দ্বারা বিরেচন করাইবে। আর লিমোঞ পৈত্তিক গুলারোগীকে বিরেচনার্থ মধুর সহিত কল্পিলক (কমলাগুড়ী বা গুণ্ডারোচনী) মিশ্রিড করিয়া লেছন করিতে मिट्न ।

> • পৰগুলাুস্য ক্রিয়া।— পকে তু ত্রণবঁৎ কার্যাই ব্যাধিশোধন রোপনং। স্বয়মূর্দ্ধমধোবাপি সচেদোষঃ প্রপদ্যতে।

. দ্বাদশাহ মুপেক্ষেত রক্ষন্যানুদ্রবান্। পরস্ত শোধনং সর্পিঃ শুদ্ধে মধু সভিক্তকং॥ পঞ্চ গুলোর ক্রিয়া।

खला भक्र रहेल याहार खलाञ्चान रहेर पृय अ त्रकानि निर्शेष रत्न, वर-चिश्व कित्रा कतित्व व्यर्वाय एक्तन, त्यांथन, त्रांथन व्यक्ति खनरय हिकियमा করিবে। পরে ক্ষত প্রভীকারের উষধ প্রয়োগ করিবে। যদাপি গুলা পঞ্ रहेशा चत्रःहे केंद्रायम (गूर्थनित्रा) किया व्याधारमम (अञ्चात) नित्रा नृयानि বহির্গত হইতে থাকে, তবে ১২ দাদশ দিন পর্যান্ত ছেদন, শোধনাদি ক্রিয়া করিবে না। কেবল বাহাতে জ্বাদি অন্যান্ত উপদর্গ সকল নির্ভ হয়, এই প্রকার চিকিৎসা করিবে। পরে ১২ দাদশ দিবস অন্তে ক্ষতশোধনার্থ রোগীকে শোধন দ্রব্য সহ মৃত পান করিতে দিবে। তদনন্তর শুদ্ধ হইলে রোগীকে রোপণার্থ তিক্ত দ্রব্য সংযুক্ত মধু ও মৃত পান করিতে দিবে।

मञ्जरहे् भनकः प्रुटः।—

পলিকৈঃ পঞ্চকোলৈশ্চ স্থতং মস্ত চতুত্ত বং।
সক্ষারৈঃ সিদ্ধমণপাশিং কফগুলাঞ্চ নাশয়েৎ।
মস্তবট্পলক স্বত।

উৎকৃষ্ট গৰা ছত /৪ চারিদের, মস্ত অর্থাৎ দধির মাত্।৬ যোলদের। কল্কার্থ পিপুল, পিপুল মূল, চই, রক্তচিতার মূল, শুঠী এবং যবকার; এই দকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একদের। যথানিরমে এই স্বত পাক করিরা প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে অগ্রিমান্দ্য ও কফজগুলা নিবারিত হইরা থাকে।

রসোনান্যং মৃতং।—

রসোন স্বরদে সর্পিঃ পঞ্চলুল রসান্থিতং।
স্থারনাল দধ্যে মূলক স্বরদৈঃ সহঃ।
বাোষদাড়িমরক্ষার ষমানীচব্য সৈন্ধবৈঃ।
হিন্ধু মবেতসাজাজী দীপ্যকৈশ্য পলাংশিকৈঃ।
দিন্ধং গুলু গ্রহণ্যর্শঃ খাসোঝাদ ক্ষয়জ্বরান্।
কাসাপঝারমনাগ্রি প্লীহশূলানিলান্ জয়েৎ।
রসোনাদ্য স্বত।

উৎকৃষ্ট গব্য দ্বন্ত /৪ চারি দের; রস্থনের হ্রেম /৪ চারি দের, মহৎ-পঞ্চমুলের কাথ /৪ চারি দের, স্থরা /৪ চারি দের, আরণাল (কাঁজি) /৪ চারি দের, দার্ঘ /৪ চারি দের এবং অল্লমূলক (কাঁজির নিম্নন্থ পদার্থবিশেষ) /৪ দের। কল্লার্থ কৃটিভ শুঠী, পিপ্পলী, মরিচ, দাড়িম ফলের ছাল, রক্ষাল (মহাদা), যমানী, চই, দৈন্ধব লবণ, হিন্তু, অলবেভদ (থৈকল), অজ্ঞাজী (জীরা) এবং দীপ্যক (ক্তের্র যমানী); এই দকল দ্রব্য প্রভাবে ২ একপল আর্থাৎ ৮ আটে ভোলা। যথানির্মে এই দ্বন্ত পাক ক্রিয়া প্রভিদিন উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে গুলা, গ্রহণী, আর্শঃ, খাদ, উন্মাদ, ক্ষয়, জ্বর, কাদু, অপস্থার, মন্দায়ি, গ্লীহা, শূলরোগ ও বায়ুরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

রৌধিরস্য তু গুলাস্য গর্ভকাল ব্যতিক্রমে। স্মিঞ্চবিদ্ধশারীরারে দৃদ্যাৎ স্মিঞ্চবিরেচনং॥

রক্তগুলোর চিকিৎসা।

জ্রীলোকের রক্তজ্ঞ গুল্মরোগে গর্ভকাল অতিক্রম করিয়া অর্থাৎ দশমাদ অতীর্ত হইলে, প্রথমতঃ রোগিণীকে স্কিন্ধ ও স্থিম করিয়া (স্বেদ দিয়া) তৎপরে এর গুতৈলাদি দারা স্থিম বিরেচন প্রয়োগ করিবে।

> শতাহ্বা চিরবিল্বুক্ দারভার্গী কণেদ্রবঃ। কলকঃ পীতো হরেৎ গুলাং তিলকাথেন রক্তজং॥

শানুকা, টিরবিল্বক্ (ভহরকরঞ্চের ছাল), দেবদাক, বামনহাটী ও পিপুল; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক ভিলের কাথের সহিত পেষণ করিয়া দেবন করিলে জ্রীদিণের রক্তত্ব গুল্মরোগ নিবারিত হয়।

> তিলকাথো গুড়ব্যোষ হিঙ্গু ভাগীযুতো ভবেৎ। পানং রক্তভবে গুলো নউপুঙ্গে চ যোষিতাং॥

কুটিত তিল সমান পরিমাণে সমস্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল /। • আর্দ্ধ সের এবং শেষ কাথ / ৮ অর্দ্ধপোয়া। এই কাথ সহ গুড়, শুঠী, পিপুল, মরিচ, হিং ও বামনহাটী; প্রত্যেকে সমভাগে উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে নারীদিশের রক্তসন্তৃত গুলুরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে; এবং নইসুম্পতা দূরীভূত হয় অর্থাৎ জ্রীরজঃ অদৃশ্য হইলে, তাহার পুনঃসঞ্চার ইইয়া থাকে।

সক্ষার তুষণং মন্যং প্রপিবেদস্রগুল্মিনী।
ं পলাশক্ষারতো:য়ন স্লিগ্ধং সর্পিঃ পিবেচ্চ সা॥

যবক্ষার, শুঠী, পিপুল ও মরিচ সমভাগে গ্রহণপূর্বক মদ্যসহ পান করিলে অথবা পলাশকারজলের সহিত ঘৃত পাক করিয়া, তাহা যথা-বিধানে দেবন করিলে নারীদিগের রক্তজ গুলুরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

উনৈর্কাভেদরেন্তিন্নে বিধিকাসুগ্দরেরিতঃ।
ন প্রভিদ্যেত বঁদ্যেবং দদ্যাদেয়ানিবিশোধনং।
কারেণ মুক্তং পললং সুধাকীরেণ বা পুনঃ।
রাধিরেংতিপ্রত্তে তুরক্তপিত্হরী ক্রিয়া॥

উষ্ণবীষ্য ঔষধ (মদ্য প্রভৃতি) দ্বারা নারীদিণের গুলা ভিন্ন (ফার্টিয়া যাওয়া) হইলে, তখন অস্থদর (প্রদর্ব্বাগ) বিহিত চিকিৎসার বিধান করিবে। কিন্তু গুলা ভিন্ন না হইলে যোনিবিশোধন ক্রিয়া করিবে। এবং তিলচ্ব ও পলাশক্ষার দ্বারা বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া অথবা তিলচ্ব ও মনসাসীজের হুদ্ধের সহিত্ত মর্দ্দন করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ যোনিমধ্যে প্রবেশ করাইবে। আর যদি অভ্যন্ত রক্তজাব হয়, তবে তাহাতে রক্তপিত্তনিবারক চিকিৎসার বিধান করা কর্তব্য বলিয়া জানিবে।

ভলাতক মৃতং ৷—

ভলাতকাৎ কল্ফ ক্ষায় পকং সর্পিঃ পিবেৎ শর্করয়া বিমিশ্রং। তদ্রক্তপিতং বিনিহন্তি পীতং বলাসগুলাং মধুনা সমেতং॥ ভলাতক মৃত।

উৎকৃষ্ট গবায়ত /৪ চারিদের, ভলাতকের কাথ ।৬ বোলদের, জল ।৬ বোলদের, কল্কার্থ শোধিত কুটিত ভলাতক /১ একদের। যথানিয়মে এই ছত পাক করিবে। এই ভলাতক ছত প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রায় শর্করা (ইক্টিনি) সহ সেবন করিলে রক্তপিত্তরোগ নিবারিত হয়। এবং মধুসহ সেবন করিলে শ্লেম্জ গুলুরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

वठांनि हुर्गः।-

বচা হরীতকী হিন্দু সৈদ্ধবং সাম্লবেতসং।
যবক্ষারং যমানীক পিবেতুফেন বারিণা।
এত্দ্ধি গুলানিচয়ং সশূলং সপরিগ্রহং।
ভিনত্তি সপ্তরাত্তেণ বচ্ছের দ্বিং করোতি চ॥
বচাদিচ্ব।

বচ, ছরীতকী, হিস্তু সৈদ্ধবলবণ, অন্নবেতস, যবক্ষার ও যমানী; ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে সমান পরিমাণে লইয়া উপযুক্ত মাত্রায় উষ্ণ জলসহ সেবন করিলে বেদনাসংযুক্ত শূল ও গুলুরোগ সপ্ত রাত্তির মধ্যে নিশ্চয়ই আ,,গ্য হয়। পরস্ত ইহা দারা অত্যন্ত জঠরাগ্নি প্রদীপ্ত হইয়া থাকে।

হিঙ্গু । —

হিঙ্গু গ্রাগন্ধা বিভ্শু গ্রাজা ইরীতকী পুন্ধরমূল কুন্ঠং। ভাগোতরং চুর্ণিতমেতন্ধি কুন্ঠগুল্মোদরাজীণ বিস্ফীকাসু॥

হিল্বাদি।
হিং ২ একভাগ, উপ্রাণন্ধা (বচ) ২ ছইভাগ, বিট্লবণ ৩ তিনভাগ, শুঠী
৪ চারিভাগ, জীরা ৫ পাঁচভাগ, হরীতকী ৬ ভাগ, পুষ্ণ মূল (অভাবে কুড়)
৭ সাতভাগ এবং কুড় ৮ ভাগ; এই সকল দ্রব্য প্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া লইবে। এই হিল্কাদি চূর্ণ ঔষধ প্রভিদিন উপযুক্ত মাত্রায় উষ্ণ জলের সহিত সেবন করিলে গুলা, উদর, অজীর্ণ (অগ্নিমান্দ্য) এবং বিস্টিকারোগ (গুলাউঠা) বিশ্চয়ই আরোগ্য হয়।

श्कितामुर्गः।—

হিন্দু ত্রিকটুকং পাঠাং হরুষামভয়াং শঠীং। অঙ্গদোদাজগদ্ধান তিন্দিড়ী চামুবেতদৌ। দাড়িমং পৌকরং ধান্যমুকান্দ্রী চিত্রকং বচাং। দ্বেলিগরে লবণদ্বে চ চব্যক্তৈকত চুর্ণয়ে ।
চুর্ণমেত প্রয়োক্তব্য মনুপানেষনতায়ং।
প্রাগ্ভুক্ত মথবা পেয়ং মদ্যেনোফোদকেম বা।
পার্শ্বন্ধস্থিলেয় গুলো বাতকফাত্মকে।
আনাহে মৃত্রকচেছ চ গুদ্যোনিগদেয় চ।
আহণ্যশোবিকারেচ প্লীব্লিপাগুন্ময়েইকচো।
উরোবিবদ্ধে হিক্কায়াং কাসে খাসে গলগ্রহে।
ভাবিতং মাতুলুঙ্গন্ত চুর্ণমেতদ্রমেন বা।
বহুশো গুড়িকাঃ কার্যাঃ কর্মকাঃ স্থান্ততোহধিকং॥

श्किनामा ह्वं।

হিলু, শুগী, পিপ্লুল, মরিচ, পাঠা (আক্নাদী), হরুষা (বণিক্ দ্রবা-বিলেষ), অভ্যা (হরীতকী), শঠা, অভ্যাদা। (বনষমানী), অভ্যাদা। (ক্রেয়মানী), অভ্যাদা। (ক্রেয়মানী), ভিন্তিড়ী (ভেঁতুল), অলবেভদ, দাড়িমফলের ছাল, পুদ্ধর্মুল (অভাবে কুড়), ধান্ত (ধনিয়া), অভ্যাজী (কৃষ্ণজীরক), চিত্রক (রক্তাচিতার মূল), বচ, যবক্ষার, দাচিক্ষার, দৈদ্ধবলবণ, দৌবর্চললবণ এবং চই; এই সকল দ্রব্য প্রত্যাকে দমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া। লইবে। এই হিল্বাদা চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় অন্ন পানীয়ের দহিত অথবা মদ্য বা উষ্ণ জলের দহিত ভোজনের আদিতে দেবন করিলে পার্যশূল, হদয়শূল, বক্তিশূল, বাতজগুলা, ক্ষজগুলা, আনাহ, যুত্রকৃজ্ব, ভ্রুরোগ, যোনিরোগ, গ্রহণী, আর্গা, প্রীহা, পাণ্ডু, অক্তি, উরোবিবন্ধ, হিন্ধা, খাদ, কাদ ও গলগুহরোগ বিন্ধ ইইয়া থাকে। পুর্বোক্ত হিল্বাদ্য চূর্ণ ছোলল্পনেবুর রুদ্দ ভাবনা দিরা শুড়িকা প্রস্তুত করিয়া ভাহা রোগান্থ্যারে অন্থপান বিবেচনার দেবন করিলে, হিল্বাদ্য চূর্ণ ঔষধ অপেক্ষা অধিকতর শুণদায়ক হয় জানিবে।

প্রাণবর্নভোরসঃ।---

লৌহং তান্ত্রং বরাটঞ্চ তুত্থং হিন্দু ফলতিকং।
কু হীক্ষীরং ষবক্ষারং জৈপালং টক্ষণং তির্থ।
প্রত্যেকং তোলকং আহুং ছাগীত্রুগ্ধে প্রপেষিতং।
চতুগ্রু প্রাং বটীং খাদেৎ বারিণা মধুনাপি বা।
প্রাণবল্লভনামোহয়ং গহনানন্দভাষিতঃ।
দোষং রোগঞ্চ সংবীক্ষ্য যুক্ত্যা বা ক্রটিবর্দ্ধনং।
নিহন্তি কামলাং পাণ্ডু মানাহং শ্লীপদার্ব্ব দং।

গলগণ্ডং গণ্ডমালাং ত্রণানিচ হলীমকং।
লোগং শূলমুলাবর্তং সংগ্রহমহণীং তৃষাং।
ছিদিং মূর্চ্ছাং ভ্রমং দাহং হিক্কাং শাসং গলগ্রহং।
আসাধাং সন্নিপাতক জীর্ণজ্বমরোচকং।
বাতরক্তক কুন্তক কণ্ডু বিক্ফোটকাপচীং।
দক্রবিচর্চিকাঠীলা গুলাপ্লীহোদরাণি চ।
ভগন্দরোপদংশক বিংশতি শ্লৈগ্রিকান্ গদান্।
জলদোষোদ্রবং রোগং মহত্রগং জলোদরং।
নাতঃ পরতরং শ্রেন্ডং কামলাত্রিতয়েঘপি॥
প্রাণ্যল্প বস।

জারিত লৌহ, জারিত তাম, কড়িতস্ম, তুঁতেতস্ম, হিন্ধু, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, সুহী (মন্সাসীজ) রক্ষের মূলের ক্ষার, ববক্ষার, শোধিত জমপালবীজ, সোহাগার খৈ এবং তেউড়ীমূল; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ১ একতোলা মাত্রার প্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যগুলি উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া ছাগ্রহ্ম সহ পেষণ করতঃ ৪ চারি রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রীমদ্ গহ্নানন্দ কর্ত্বক প্রকাশিত প্রাণহল্পত রস্তা নামক এই বটী রোগের অবস্থা ও দোষাহ্মসারে যথাবিধানে প্রতিদিন একটী করিয়া জল অথবা মধুর সহিত্ত সেবন করিলে কামলা, পাণ্ডুরোগ, জানাহ, দ্রীপদ, অর্ক্র্যুদ, গলগণ্ড, গণ্ড-মালা, ত্রণ, হলীমক, শোথ, শূল, উদাবর্ত্ত, সংগ্রহ্মহণী, তৃষ্ণা, বিমি, মূচ্ছা, জ্মা, দাহ, হিন্ধা, খ্যাস, গলগ্রহ, অসাধ্য সন্ধিপাত, জীর্ণজ্বর, আরোচক, বাত্রহুক, কুঠ, কণ্ডু, বিস্ফোট, অপচী, দক্রে, বিচর্চিকা, অঠীলা, গুল্ম, ধীহা, উদর, ভগন্দর, উপদংশ (গরমি), ২০ বিংশতি প্রকার দ্লেম্বরোগ, জলদদোষজ্বনিত রোগ এবং অতি কঠিন জলোদর রোগ বিনম্ভ হয়। বিশেষ্তঃ জিবিধ কামলা রোগের পক্ষে এই প্রাণ্ডলভ রুম অপেক্ষা শ্রেষ্ঠতর উষধ আর দেখা যায় না।

গুলাকালানলোরসঃ।—
পারদং গন্ধকং তাত্রং তালকং টক্ষণং সমং।
তোলদ্বর্মিতং ভাগং যবক্ষারক তৎসমং।
মুস্তকং মরিচং শুগুণী পিপেলী গজপিপেলী।
হরীতকী বঙা কুঠং তোলকং চুর্ণয়েৎ সুধীঃ।
সর্ব্বেমকীরতং পাত্রে ভাবনা ক্রিয়স্তে ততঃ।
পাপানী বারবং শুগুণী মপামার্গ পটোলকৈঃ।
তৎ পুনশ্চুর্ণয়েৎ পশ্চাৎ সর্ব্বগুলাবিনাশনং।

শুঞ্চাচত্ষ্টরং খাদেৎ হরীতক্যরূপানতঃ।
বাতিকং পৈতিকং শুলাং শৈষিকক তিদােষজং।
দেশ সঞ্চ নিহন্ত্যাশু বাতগুলাং বিশেষতঃ।
শ্রীমদাহননাথেন নির্মিতো বিশ্বসম্পদি॥
ইতি প্রয়োগচিন্তামণো গুলাাধিকারঃ।

গুল্ফালানলরস।

পারদ, গন্ধক, ভাত্র, হরিতাল ও দোহাগার থৈ প্রত্যেকে ২ ছইভোলা, যর্ক্ষার ১০ দশতোলা এবং মুখা, মরিচ, শুঠী, পিপুল, গজপিপুল, হরী-তকী, বচ ও কৃড়; ইহাদের চূর্ন প্রত্যেকে ১ একভোলা। এই দকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ক্ষেতৃপাপড়া, বারণ (হাতিশুড়া), অপামার্গ ও পটোলের রসে এক একবার ভাবনা দিয়া, পুনরায় উত্তমরূপে পেষণ করিয়া লইবে। এই গুল্মকালানলরম ঔষধ প্রতিদিন ৪ চারি রতি মাত্রায় অহ্পান বিবেচনার দেবন করিলে বাতিক, পৈত্তিক, স্নৈম্মিক, সাম্নিপাতিক, বাত-পৈত্তিক, বাতলৈম্বিক ও পিত্তিশ্রেমিক গুল্মরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হয়। বিশেষতঃ বাতগুল্মের পক্ষে ইহা মহৌষধ বলিয়া জানিবে। এই গুল্মকালানলরম জগতের হিতার্থে শ্রীমন্ধাহননাথ কর্ত্বক প্রকাশিত হইয়াছে জানিবে।

ইতি জ্ঞীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এছে গুলারোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ হৃদ্রোগাধিকারঃ।

'দশমূলী কষারুম্ভ লুবণকারযোজিতঃ। কাসং শ্বাসক হড়োসং গুলুমূলক নাশরেৎ॥

বেলছাল, পাফলছাল, গণিয়ারীছাল, শোণাছাল, গাস্তারীছাল, গোক্সর, রহতী, কটকারী, শালপাণী ও চাকুলে, এই ১০দশটী দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ হুইতোলা মাত্রায় এহণপুর্বক অপ্প কুটিত করিয়া ৴॥০ অর্ধনের জলের মহিত মৃৎপাত্রে করিয়৷ মৃত্তু, অগ্রিসংযোগে জ্বাল দিতে থাকিবে; যখন দেখিবে গে জল শুক্ষ হইয়৷ ৴৶০ অর্ধপোরা মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন উহা টুল্লী হইতে নামাইবে। এবং ১ একখানি পরিষ্কার বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া জলীয়াংশ কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথে।০ সিকিভোলা বৈশ্ববলবণ চুণ ও।০ সিকিভোলা ববক্ষার চুর্ন প্রক্রেশ দিয়া ঈষত্র ফাবছায় পান করিলে কান, খান, ছালোগ, গুলা ও শুলরোগ বিন্দী হইয়া থাকে।

धारत्राग- इसाम नः।

বলাদাং মৃতং ৷—

ন্বতং বলানাগবলার্জ্বনান্ধু সিদ্ধং স্যান্তিমধুকল্ক পাৰং। । হদ্যোগশূল ক্ষতরক্তিপিত কাসানিলাসূক্ শন্যত্নি গিং॥
বলায় বভা

উৎকৃষ্ট গবাছত /৪ চারিদের; কাথার্থ বেডেলা, গোরক্ষচাকুলে ও অর্জ্জুনছাল সমভাগে তিন দ্রবা মোট।৬ বোলদের, জল ৬৪ সের, শেষ কাথ ।৬ বোলদের। এবং কল্কার্থ কৃটিত যফিষ্যু /১ একসের। যথানিয়মে এই ঘৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় গুডিদিন দেবন করিলে হন্দোগ, শূল, উরংক্ষত, রক্তপিত্ত, কাস ও বাতরক্তরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

শুপ্তাভদোরসঃ।---

নিক্ষন্বয়ং শুদ্ধস্থতং নিক্ষ দ্বানশগন্ধকং।
গুঞাবী কথ ষারকং নিম্বী জং জরা তথা।
প্রত্যেকং নিক্ষমাত্রন্ত সমং কৈপালবীজকং।
জয়া জয়ীর ধৃস্তর কাকমাচী দ্রবৈদ্দিনং।
মন্দ্রং সর্বরসং কুর্যাৎ স্থতি গ্রান্থরং লিহেৎ।
গুঞাভদ্রসো নাম হিন্দু সৈম্বসংযুতং।
শময়ত্যেবনোচিত্রমূক গুডাদি কুঃসহঃ॥
গুঞ্জদ্রস।

শোধিত পারদ ৪ চারিতোলা, শোধিত গন্ধক ২৪ চিল্লিপতোলা, গুঞাবীজ (কুঁচ) ১২ তোলা, নিম্ববীজ ২ তোলা, জয়ন্তীবীজ ২ তোলা এবং শোধিত জয়পালবীজ ৪৪ তোলা। সমস্ত জবাগুলি এছণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ব করিয়া, জয়ন্তীপত্র, জম্বীরনের, কাকমাচী ও ধৃতুরাপাতা; ইহাদের রুদে একদিন মর্দ্দন করিয়া স্ব্যাতপে শুষ্ক করিয়া লইবে। এই ঔষধ ২ ফুইরতি মাত্রায় স্বত্তমহ অথবা হিন্তু ও সৈন্ধবলবণ সহযোগে। সেবন করিলে তুঃসহ উক্তপ্তাদি রোগসকল নিশ্চয়ই বিন্তী হইয়া থাকে।

হৃদয়ার্ণবোরসঃ।—

শুদ্ধ ক্ষতং সমং গন্ধং মৃতং তাত্রং দ্বরোঃ সমং।
মর্দ্ধরেৎ ত্রিফলাদোবৈঃ কাকমানী দ্রবেদ্দিনং।
চণমাত্রাং বটীং খাদেদ্রসোহরং হদরার্ণবঃ।
কাকমানীকলং শুক্ষং ত্রিফলফলসংযুতং।
দাত্রিংশভোলকং তোরং কাথমন্টাবশেষিতং।
শন্ধপানং পিবেছান্তে হদোগে চ ককোখিতে॥

समग्रार्थ वम ।

শোধিত পারদ ১ একভাগ, শোধিত গন্ধক ১ একভাগ এবং জারিত তাত্র' ২ ছইভাগ লইয়া ত্রিফলার কাথে ১ একদিবস এবং কাকমাচীর রসে ১ একদিবস মর্দ্দন করিয়া বুটপ্রমাণ বটীকা গুল্পত করিবে। এই উষধ প্রতিদিন একটী করিয়া সেবন করিবে এবং পশ্চাৎ শুদ্ধ কাকমাচীকল ও ত্রিফলা সমভাগে •সমন্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ ব্রিশভোলা এবং শেষ ৪ চারিতোলা; এই কাথ পান করিবে। ইছা দ্বারা কফোথিত হুজোগ শিশুরুই আরোগ্য হুইয়া থাকে।

পঞ্চনারোরসঃ।---

শুদ্ধসূতং সমং গদ্ধং ধাতীফলদ্ৰবৈদ্দিনং। যঞ্চিখৰ্চ্জু রদ্রাক্ষাণাং কাথেন মৰ্দ্দমেদ্দিনং। পঞ্চসারৱসো নাম ভক্ষয়েন্মাষমাত্রকং। ধাতীচুর্ণং সিতা চানু পিভদ্বদ্রোগজিৎ ভবেৎ॥

পঞ্চনার রম।

শোধিত পারদ এবং শোধিত গন্ধক সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তম-রূপে মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। এই কজ্জলী ১ একদিন আম-লকীর ক্বাথে ভাবনা দিয়া, পশ্চাৎ যফিমধু, খর্ল্জুর ও কিসমিসের ক্বাথে মর্দ্দন করিয়া ১ মাষা মাজায় বটীকা প্রস্তুত করিয়া লইবে। প্রতিদিন ইহার একটী করিয়া বটীকা আমলকীচ্ণ ও ইক্স্চিনি সহ সেবন করিলে পৈত্তিক হ্লোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

ষদোগিণং স্নেইরিত্বা বামরেদ্রেচরেভগা।
অচিরোথং লপ্সয়েভ মুদ্রোগং বাতিকং বিনা॥
ইতি প্রেশগচিন্তামণো মদোগাধিকারঃ।

হজোগীকে প্রথমতঃ শ্বিদ্ধ কঁরিয়া পশ্চাৎ বমন বা বিরেচন প্রয়োগ করিবে। এবং বাতিক হজোগ ব্যতীত অচিরোথ (নৃতন) হজোগীকে লঙ্ঘন প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য বলিয়া জানিবে।

্ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিম্বামণি" প্রস্থে • হুজোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ মূত্রাঘাতাধিকারঃ।

কফজে স্বেদনং বান্তি নিরুহস্তক্রসেবনং। যবারক্ষার গ্রীক্ষোঞ্জ তৈলঞ্চ তিক্তকৈঃ শৃতং॥

ককজ সূত্রকজ্পরোগীকে স্বেদ, বমন, নিকহবস্তি, তক্র, যবান, ক্ষার, তীক্ষ্ণ ও উষ্ণগুল্ক ঔষধ এবং তিক্তদ্রব্যের সহিত পক্ষ তৈল প্রয়োগ করিবে।

ক্ষারোক্ত তীক্ষ্ণৌষধমন্নপানং স্বেদো যবানং বমনং নিরুহাঃ।
তক্রং সতিক্রোষণ সিদ্ধতিলাদ্যভাঙ্গপানং কফ মৃত্তক্লচেছু॥
ক্ষার, উষ্ণ ও তীঙ্ক্ষণগৃক্ত ঔষধ ও অন্নপানীয়, স্বেদ, যবান, নিরুহ বস্তি,
তক্রপান এবং তিক্তম্ব্য ও ত্রিকটু সহযোগে পক তৈলের অভাঙ্গ ও পান;
এই সকল ক্ষত্ত মুত্রকুষ্ট্রোগীর পক্ষে বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

মূত্রেণ স্থরয় বাপি কদলী স্বরসেন বা । কক্ষমূত্রবিনাশার শ্লন্ধং পিফু ক্রটিং পিবেৎ॥

ছোট এলাচি উপযুক্ত পরিমাণে লইয়া গোসূত্র, সুরা অথবা কদলী-মূলের স্বরদ সহ পেষণ করিয়া দেবন করিলে কফজাত মূত্রকুচ্ছুরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

তক্রেণযুক্তং শিতিমারকস্থবীজং পিবেৎ ক্লচ্ছ্বিঘাতহেতোঃ। পিবেভগুলধাবনেন প্রবালচূর্ণং কফমূত্রক্লচ্ছ্। ... শ্বশংক্ষা বিল্তোরমা কফক্লচ্ছ্বিনাশনং॥

শিতিমারকের (শালিঞ্চ শাকের) বীজ উপযুক্ত মাত্রায় তক্রসহ দেবন করিলে কিঘা তণ্ডুলথৌভজলের সহিত প্রবাল চূর্ণ দেবন করিলে কিঘা গোকুর ও বেলগুঠ প্রত্যেকে ১ একতোলা করিরা মোট ২ ছুইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্রিশতোলা এবং শেস ৮ আটতোলা; এই ক্লাথ পান করিলে কফর মৃত্তকুচ্ছরোগ প্রশমিত হইরা থাকে। '

শতাবরী কাসকুশশ্বদংক্তা বিদারিকা শালীকা কশেরকানাং। কাথং পিবেমাকিকসং প্রযুক্তং রুচেছ্ সনাহে সরুজে বিবদ্ধে। শতাবরী কাস্যল, কুশ্যল, গোক্তব, ভূমি ক্যাঞ্চ, শালীগারের মন

শতাবরী, কাসমূল, কুশমূল, গোকুর, ভূমি কুত্মাণ্ড, শালীধান্তের মূল, ইকুমূল ও কেশুর; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ডোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ কার্থ ৮ ভোলা। এই কাথে মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে দাহ, বেদনা ও মলবদ্ধতা সংযুক্ত মুত্রকুচ্ছুরোগ বিনম্ভ হয়।

গুড়েনামলকং র্ষ্যং শ্রমত্বং তপ্ণং প্রিয়ং। পিভাস্পাহশূলত্বং মূত্রক্লচ্ছ নিবারণং॥ উপযুক্ত মাত্রায় আমলকী গুড়ের সহিত দেবন করিলে, শ্রীরের বল ' বর্দ্ধিত হর এবং পরিশ্রম জনিত ক্লেশ, রক্তপিত্তরোগ, দাহ, শূল ও মৃত্তকৃচ্ছু-রোগ বিনষ্ট হয়। এবং ইহা অতীব কৃপ্তিকর বলিয়া জানিবে।

> ় রুশঃ কাশঃ শরোনর্ভ ইক্ষুন্দেতি তৃণোদ্ধবং। পিত্তকুচ্ছ হরং পঞ্চমূলক বস্তিশোধনং। এতৎ নিদ্ধং পয়ঃ পীতং মেঢ়গং হন্তি শোণিতং॥

কুশ, কাশ, শর, দর্ভ ও ইকু; এই পঞ্চারের মূল সমভাগে সমস্তে ২ ছুই ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্রিশভোলা, শেষ কাথ ৮ আটভোলা। এই কাথ পান করিলে পৈত্তিক মূত্রকৃচ্ছরোগ বিন্ত হয় এবং বস্তি বিশুদ্ধ হইরা থাকে। পূর্বোক্ত কুশাদি পঞ্চ মূল মোট ২ ভোলা, পাকার্থ জল /। / দেড়-পোয়া ও ছুদ্ধ / ১০ অর্কপোয়া, শেষ ছুদ্ধ / ১০ অর্কপোয়া। এই পক ছুদ্ধ পান করিলে মেনু (পুত্র লিক্ষ) গত রক্ত আব নিবারিত হইয়া থাকে।

ঁ অভ্যঞ্জনম্বেছ নিরুহবস্তি স্বেদোপনাহোত্তরবস্তিদেকান্।

স্থিরা দিভির্বা তৃহরৈশ্চ সিদ্ধান্ দদ্যান্মাং সাশ্চানিলমূত্রকুচেছু॥ অভ্যঞ্জন, স্নেহ, নিক্ছবন্তি, স্বেদ, উপানাহ, উত্তর বন্তি, সেক এবং শালপর্ণাদি সহ সিদ্ধ মাংস রদ; এই সকল বাতপ্রধান সূত্রকুচ্ছুরোগে বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

অমূতানাগ্রধাত্রী বাজিগন্ধা ত্রিকণ্টকান্।

প্রপিবেদ্বাতরোগার্ভঃ সম্পে। মূত্রকুচ্ছুবান্॥

গুল্প, শুগুট, আমলকী, অধ্যক্ষা, ও গোকুর; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্তিশভোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা। এই কাথ পান করিলে শ্লসংযুক্ত বাতপ্রধান মূত্রকুজুরোগ নিশ্চরই আরোগ্য ছইরা থাকে।

ত্রিকণ্টকাদ্যং মৃতং।—

ত্রিকণ্টকৈরও কুশান্ত্রীর কর্কার কেন্ধু স্বরসেষু সিদ্ধং।
স্পিত ড়াদ্ধাংশধুতং প্রপেরং ক্লচ্ছাশ্রীং মূত্রবিদাতহেতোঃ॥
ত্রিকটকাদ্য দ্বত।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিসের; গোক্ষুর, এরগুমূল, কুশমূল, কাশমূল, শরমূল, দর্ভমূল, ইক্ষুমূল, শতাবরী, কর্কাফ (কুত্মাণ্ড বিশেষ, উৎকল দেশে প্রাসিদ্ধ) এবং উলুমূল; ইহাদের প্রত্যেকের স্বর্গ অথবা কাথ /৪ চারিসের। যথাবিধানে এই স্থত,পাক করিখে। এই ত্রিকন্টকাদ্য স্থত উপযুক্ত পরিমাণে চতুর্থাংশ । গুড় দহ দেবন করিলে অশ্বরী ও মূত্র্কুচ্ছুরোগ বিনষ্ট হয়।

সুক্মারকুমারকং মৃত্য । পুনর্নামূল তুলা দশমূলং শতাবরী। বলাতুরগগন্ধা চ তৃণমূলং ত্রিকণ্টকং।
বিদারীগন্ধানাগাখাং গুড় চাতিবলা তথা।
পৃথক দশপলান ভাগানপাং দোণে বিপাচয়েং।
তেন পাদাবশেষেণ স্বত্যাদ্ধানকং পচেং।
মধুকং শৃন্ধবেরঞ্চ দ্রান্ধানাগ্য কুড়বন্তপা।
দ্বিপলিকাঃ পৃথানদ্যাদ্যমানাগ্য কুড়বন্তপা।
তিংশং গুড়পলানাত্র তৈলকৈরগুজন্য চ।
প্রস্থং দত্মা সমালোদ্য সমান্ত মুদ্রমিনা পচেং।
বাতদীশ্বরপুত্রানাং প্রাগ্ভোজনমনিদিতং।
রাজারাজন্মানাঞ্চ বহুন্তী পতয়ন্চ যে।
মৃত্রকচেন্তু কটিন্তন্তে তথাগাত পুরীষিণাং।
মেতৃ বক্ষণশূলেচ যোনিশূলেচ শন্যতে।
যথোক্তানাঞ্গুলানাং বাতশোণিতিকান্চ যে।
বল্যং রনায়নং শীতং সুকুমার কুমারকং।
পুনর্ন্বা শতদোণো দেয়োখনেয়ু তথাপরঃ॥

সুকুমার কুমারক ঘৃত।

উৎকৃষ্ট গব্যস্থত /৮ আটদের ; কাথার্থ পুনর্নবা মূল ১২॥০ মাড়ে বার্মের এবং দশমূল (বেলমূল, শোণা, পারুল, সনিয়ারী, গোকুর, গান্তীর, শাল-পাণী, চাকুলে, ব্যাকুড় ও কউকারী), শতমূলী, বেড়েলা, অশ্বসন্ধা, তৃণপঞ্চ-মূল (কাস, কুশ, শর, দর্ভ ও ইকু, ইছাদের মূল), গোকুর, শালপাণী, গোরক্ষ-চাকুলে, শুলঞ্চ ও গ্নেডবেড়েলা, প্রত্যেকে ১০ দশপল ; পাকার্থ জল ২ চুই-দোণ, শেষ কাথ ৸ঽ বতিশদের। কল্কার্থ যফিনপু, শুগুী, কিসমিনু, দৈদ্ধ-লবণ ও পিপুল প্রত্যেকে ২ ছইপল, যমানী / ॥ অর্দ্ধদের এবং এরও তৈল /৪ চারিদের। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া, আসন্ন পাককালে উহাতে ৩ - ত্রিশপল গুড় মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই স্কুমার কুমারক য়ত ধনিপুত্র, রাজা বা রাজতুল্য ব্যক্তি এবং বহুপজ্বিক ব্যক্তিগণের আহারের আদিতে দেবন করা কর্ত্তব্য। এই মৃত মূত্রকুচ্ছরোগ, কটীস্তম্ভ, বিষ্ঠার গাঢ়তা, মে 🚌 শূল, বডফাণশূল, গুলা ও বাতরক্তরোগে প্রশস্ত। এবং ইছা বলকর, রুসায়ন ও শীতগুণ যুক্ত বলিয়া জানিবে। ক্লাথার্থ ২ ইইন্দ্রোণ সল লইতে বলিবার কারণ এই যে, প্রথম পুনর্ণবা একশত পলে ১ একজোণ জল এবং অসাস্ত ज्ञवा मगूर २ अकर्जान ज्ञल, सांहे अहे २ घ्रेटमान ज्ञल काथ कतिएड इहेंद्र ।

লেখং শুক্রবিবদ্ধোথে শিলাজতু সমাক্ষিকং।

• অয়োরজঃ শ্লক্ষণীষ্টং যধুনা সহ যোজিতং।

মূত্রকুচছূং নিহন্ত্যেতৎ ত্রিভির্লেহো ন সংশয়ঃ॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো মূত্রকুচ্ছু াধিকারঃ।

শোধিত শিল্পাজতু উপযুক্ত মাত্রার মধুসহ; জারিত লোহচূর্ণ মধুর সহিত পেষণ করিয়া ভাহা অথবা শোধিত শিলাজতু, কারিত লোহচূর্ণ এবং মধু এই ও তিন এবং সহযোগে লেহ প্রস্তুত করতঃ উপযুক্ত মাত্রার প্রত্যাহ বিধানাহ্ব-সারে সেবন করিলে মূত্রকৃচ্ছুরোগ যে নিশ্চরই আরোগ্য হয়,ভাহার অহ্ব-মাত্রও সন্দেহ নাই।

> ইতি জ্ঞীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এছে । মূত্রকুচ্ছুরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ মূত্রাঘাতাধিকারঃ।

মূত্রাঘাতং ষথাদোষং মূত্রকচছ্ হরৈর্জয়েৎ বস্তিমুক্তরবস্তিঞ্চ দদ্যাৎ স্মিগ্ধবিরেচনং॥ অনন্তর মূত্রাঘাতরোগের চিকিৎদা বলা যাইতেছে।

সূত্রাঘাতরোগীকে দোষের বলাবলাস্নায়ে মূত্রকুচ্ছুনাশক ঔষধ ছারা চিকিৎসা করিবে; এবং যথাসময়ে রোগীকে বস্তি, উত্তরবস্তি ও স্থিদ্ধ বিরেন্চন প্রদান করিবে।

> কল্কমের্কারুবীজানামক্ষমাত্রং সৈম্ববং। ধান্যামুযুক্তং প্রীত্বৈব, মূত্রাধাতাদ্বিমুচ্যতে॥

এর্বাফকের (গ্রীম্মকালীয় কাঁকুড়ের) বীজ ২ ভোলা মাত্রায় দৈশ্ববলবণ সহ পেষণ পূর্ব্বক কাঁজির সহিত পান করিলে মুত্রাঘাতরোগ বিনষ্ট হইয়া স্থাকে।

- ্জনেন খদিরীবীজং মূত্রাঘাতাশারীহরং। মূলং রুদ্রজটায়াশ্য তক্রপীতং তদর্থরুৎ।
- ১। খদিরীবীজ (আশোকের বীজ) জলের সহিত পেষণ করিরা সেবল করিলে মুত্রাঘাত ও অখারীরোগ বিন্দ্র হয়।
- ২। কন্তজ্ঞটার (শিবজটার) মূল ভক্রসহ পেষণ করিয়া রোগীর বলা-বলান্ত্রসারে উপযুক্ত মাত্রার দেবন করিলেও মূত্রাঘাত ও অশারীরোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

মূত্রে বিবদ্ধে কপূর্ রচুর্ণং লিঙ্গে প্রবেশয়েৎ।
শৃতশীতং পয়েশহরাশী চন্দনং তণ্ডু লামুনা।
পিবেৎ সন্ধর্বাং শ্রেষ্ঠং উষ্ণবাতে সন্দোণিতে।
কুষ্মাণ্ডক রসন্দাপি পীতঃ সন্ধারশর্করঃ॥

- ১। কপুর চূর্ণ করভঃ লিঙ্গ মধ্যে প্রবেশ করাইলে মূ্ভাঘাত নিবারিত হয়।
- ২। শোণিত আব ও উয়বায় প্রধান মৃত্রক্ব দ্রোগীকে পক্ষ য়য় শীতল করিয়া অনের সহিত ভোজন করিতে দিবে। এবং তৎপরে তণুলোদকের সহিত খেত চন্দনের কলক ও চিনি একত্র মিশ্রিত করিয়া রোগীকে পান করিতে দিবে।
- ৩। উপযুক্ত মাত্রার কুমাণ্ডের রস যবক্ষার চূর্ণ ও ইকু চিনি সহ সেবন করিলেও মূত্রাঘাতরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

জ্রীণামতি প্রসঙ্গেন শোণিতং যস্য দিচ্যতে। মৈথুনোপরমশ্চাস্য রংহণীয়ো হিতে। বিধিঃ॥

যে ব্যক্তির অধিক স্ত্রীদস্তোগছেতু লিঙ্গ দিয়া রক্তস্তাব হয়, দেই ব্যক্তি কিছুকাল রভিক্রিয়া পরিভাগে করিয়া বলকারক ঔষধ দেবন করিবে।

> পিবেচ্ছিলাজতু ক্বাথে গণে বীরতরাদিকে। রসং দ্রুরালভায়া বা ক্ষায়ং বাসক্স্য চ॥

বীরতরাদিগণের কাথে, কিম্বা দ্ররালভার কাথে অথবা বাসকের কাথে শোধিত শিলাজতু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে মূলাঘাতরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে। গুলঞ্চ, কাস, কুশ, পাযাণভেদী, ইক্ষুমূল, শোণা, হাভিশুঁড়া, শুইল্ভা (মভান্তরে গজপিপুল), আকন্দ, গনিয়ারী, শর, নীলিনিটী, পীতবিন্টী, উলু, পরগাছা, নলিকা, শতমূলী, গোক্ষুর, ও কছুইরক্ষ, এই সকল মিলিভ উমধকে বীরভরাদিগণ বলা যায়।

ত্রিকণ্টকৈরও শতাবরীভিঃ সিদ্ধং পয়ো বা তৃণপঞ্চূলৈঃ। গুড়প্রগাঢ়ং সন্নতং পরো বা বেগেরু রুড়্রাদিরু শস্তমেতৎ॥

গোকুর, এর ওমূল ও শতমূলী অথবা তৃণ পঞ্চমূল (কুশ, কাশু, ইকু, দর্ভ ও শর, এই পঞ্চ দ্রব্যের মূল) সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ২৪ তোলা ও গব্যত্বর ৮ তোলা, শেষ তৃথা মাত্র ৮ তোলা। এই তৃষ্ণে গুড় বা দ্বত প্রকেপ দিয়া পান করিলে মৃত্রকুচ্ছ ও মূত্রাঘাতাদিরোগ নকল বিনষ্ট ইইরা থাকে॥

স্বওপ্রাফল মুধীকা ক্লফেক্সুর্নিতারজঃ। সমাং সমর্দ্ধভাগানি ক্ষীরক্ষোত্র মৃতানি চ। সর্বিং সমায়িমথ্যাক্ষাত্রং লীচুা পরঃ পিবেৎ। হত্তি শুক্রাশয়োখান্ দোষান্ বন্ধ্যায়ত প্রদং।

শূকশিষীবীজ, কিসমিস, পিপ্পালী, তালমাখনাবীজ ও শর্করা; এই
সকল দ্রব্যের চূর্ণ সমভাগ এবং মৃত, মধু ও চুদ্ধা প্রত্যেকে উপযুক্ত মাত্রায়
লইয়া, সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রমিপ্রিত করতঃ লেহবৎ করিবে। এই ঔষধ প্রতিদিন ২ ছুই তোলা মাত্রায় লেহন পূর্ব্বক পশ্চাৎ হুদ্ধা পান করিবে। ইহা দ্বারা
শুক্রাশয় গত দোষসমূহ বিনস্ট হয় এবং বন্ধ্যা নারীর পুত্র জ্বো।

বিশেষ কথা—ইহাতে ২ হুই তোলা মাত্রায় ঔষধ দেবন করিবার বিধি করা হইয়াছে; কিন্তু একণে এতাদৃশ পরিমাণে রোগীর প্রতি প্রয়োগ করা যুক্তিযুক্ত নহে; ফেহেতু আধুনিক মানবগণের ধাত্বাদি অতীব ক্ষীণ হও-য়ায়, এবম্বিধ অধিক পরিমিতি ঔষধ পরিপাক না হইয়া, বরঞ্চ তদ্বারা সাতি-শায় অপকার সংঘটিত হইয়া থাকে।

বরুণাদ্যং প্রডং।—

নোজধাং ক্রিমিভির্ঘনং স্থাতরুণং স্নিধাং শুচিস্থানজং।

শ্লাস্থাপরীক্ষা তেন বরুণান্য ত্বচং তুলাং গ্রাহয়েও।

সংগ্রাহাস চতুগু গেরু বিপচেন্ত তুক পাদশেষং জলং।

তুলোনৈব গুড়েন বৈ দৃঢ়তরে ভাণ্ডেন বেতৎ পুনঃ।

ক্রোত্বিবং ঘনতাং গুড়ে পরিণতে প্রত্যেকমেষাং পলং।

শুগীবারণবীজ গোক্ষরকণা পাষাণভিচ্ছীতলী।

কুর্মাণ্ড ত্রিপুষাক্ষরীজ কুনটী বাস্তুক শোভাঞ্জনং।

তাক্রিলাগিরিজাভয়া ক্রিমিছতাং চুর্ণান্যমূনি ক্লিপেও।

পথ্যাশীর প্রতিবিষাক্ষাথং গুড়মদায়ো রক্ষ প্রমাণং পিবেও।

খাদেন্ত্রন্য সমস্ত দৌষজনিতাশার্মাঃ পতন্তি ক্রতং॥

স্কুণান্য গুড়

কীট কর্ত্বক ভক্ষিত নয়, ঘন, সুতকণ, স্নিগ্ধ, শুচি স্থানজাত ও শ্লন্ধ, এমন বক্ষণ রক্ষের ছাল ।২॥০ সাড়ে বার সের, পাকার্থ জল ১।০ একমণ দশ সের, অবশিক্ট ক্লাথ ।২॥০ সাড়ে বার সের । একখানি পরিষ্কার বস্ত্রম্বারা ছাকিয়া এই কাথ এহণপূর্বক উহার সহিত্ত তুলা পরিমাণে অর্থাৎ ।২॥০ সাড়ে বার সের গুড় মিশ্রিত করিয়া মৃত্ব অগ্নি সংযোগে যথানিয়মে পাক করিতে থাকিবে; যখন দেখিবে পাক সমাগু প্রায় হইয়াছে, তখন শুঠী, হাতি-শুড়ারবীজ, গোক্সরবীজ, পিপালী, পাষাণভেদী, শীতলী (সিউলীছোপ), কুত্রাগুরীজ, কারুড়বীজ, বহেড়ারবীজ কুনটী (মন:শিলা), বাস্তুকশাক, শোভাঞ্জন, রসাঞ্জন, ছোট এলাচি, কুটজ, হরীতকী ও বিভঙ্গ; এই সকল

দ্রব্যের চূর্ব প্রত্যেকে দডোলা পরিমাণে লইরা উহাতে নিক্ষেপ করতঃ উত্তযরূপে আলোড়ন করিয়া লেইবে। এই বরূণাদাগুড় ২ ছই ডোলা মাত্রায়
প্রতিদিন সেবন করিয়া পশ্চাৎ হরীতকী, বেণারমূল ও আতইস, ইহাদের
কাথ, গুড় ও মদ্য অন্থপান করিবে। ইহা দ্বারা সকল প্রকার দোষজনিত
অশারী রোগ অবশ্য বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

চিত্ৰকাদ্যং স্বতং।—

চিত্রকং শারিবা চৈব বলা কালামুশারিবা।

দ্রোক্ষা বিশালা শিপপল্যস্তথা চিত্রকলা ভবেৎ।
তথৈব মধুকং দদাধ দদ্যাদামলকানিচ।
মুত্রাচকং পচেদেতিঃ কল্কৈ রক্ষসমন্বিতঃ।
ক্ষীরদ্রোণে জলদ্রোণে তৎ সিদ্ধমবতারয়েৎ।
শীতং পরিস্রুত্তকৈব শর্করা প্রস্থসংযুতং।
তুগাক্ষীগ্রাক্ষ মতিমান্ তৎসর্বং প্রতিমিশ্রয়েৎ।
ততোমিতং পিবেৎ কালে যথাদোষং যথাবলং।
বাতরেতাঃ পিত্রেতাঃ শ্লোরেতাক্ষ যো ভবেৎ।
রক্তরেতাঃ এন্থিরেতাঃ পিবেদিচ্ছন্নরোগিতাং।
জীবনীয়ক রব্যক্ষ সর্বিরোগাপহং শিবং।
প্রজাহিতক ধন্যক সর্বরোগাপহং শিবং।
স্পিরেতৎ প্রযুঞ্জানং স্ত্রীগর্ভং লভতে চিরাৎ।
অস্পেদাবাঞ্জয়েচাপি যোনিদোষাংক্ষ সংহতান্।
মূত্রদোষেযু স্ব্রের্ কুর্যাদেতচ্চিকিৎসিতং॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো মূলাখাতাধিকারঃ।

উৎকৃষ্ট গবাস্থত।৬ যোলদের; ত্বম ৬৪ চৌযটিনের, জল ৬৪ চৌযটিনের। কল্কার্থ—রক্তচিতারসূল, অনস্তমূল, বেড়েলা, কালাহশারিব। (তগর-পাহকা), ত্রাক্ষা (কিদমিস), বিশালা (মামালাড়ু বা রাখালশশারমূল), পিপুল, চিত্রফলা (গোরক্ষকর্কটীবিশেষ), যফিমধু এবং আমলকী; এই সকল ত্রব্য কুটিত প্রত্যেকে ২ হুই তোলা। যথাবিধানে এই স্থত পাক করিবে। পরে শীতল হইলে বস্ত্রনার। ছাকিরা লইরা, উহাতে /২ হুইদের শর্করা এবং বংশলোচন /২ হুইদের মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চিত্রকাদ্যস্থত ঔবধ প্রজিনে উপযুক্ত মাত্রার বর্ষন, কাল, লোষ ও বলাবল বিবেচনা-পুর্বক দেবন করিলে বাতরেভাঃ, পিতরেভাঃ, ক্ষেম্মরেভাঃ, রক্তরেভাঃ এবং প্রস্থিতাঃ ব্যক্তিগণ বিশ্বরহ আরোগ্য লাভ করিতে পারে। পরস্ক এই

महाकल श्रेष श्रेष आह्मत, श्रांकृत्भाषक, भृतक्षित, धनश्रेष, नर्खगाधिनियातक अमल लख्नुक । देश खीगंग मित्रन कतिरल गर्डवं हत्त, खन्द उदारात तक-राम क रामित विनर्ध हत्त । नर्सविध मृत्रालाय विनामार्थ अदे युक् व्यक्तिय श्रांक विनामार्थ अदे युक् व्यक्तिय श्रांक विनामार्थ अदे युक

ইতি জীরামমাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগচিন্তামণি**এস্থে** মূত্রাঘাতরোগের চিকিৎনা সমাপ্ত।

অথ অশার্য্যধিকারঃ।

উষকাদিগণঃ।

উদকং দৈশ্বং হিন্দু কাশীশন্বয় গুণ্গুলু। শিলাজতু তুথকঞ্চ উষকাদি রুদাহতঃ। উষকাদি কফং হন্তি গণো মেদোবিশোধনং। অশ্বরী শর্করা মূত্রশূলঘঃ কফগুলানুৎ॥

উষক (ক্ষারমৃত্তিকা), দৈশ্ববলবণ, হিন্দু, কাশীশ দ্বর অর্থাৎ পুষ্পাকাশীশ ও ধাতুকাশীশ, গুগগুলু, শিলাজতু ও তুঁতে; এইকয়েটী মিলিত দ্রব্যকে উষকাদিগণ বলে। এই উষকাদিগণ কফনাশক, মেদোবিশোধক এবং ইছা অশারী, শর্করা, মূত্ররোগ, শূল ও কফজ গুলারোগ বিনাশ করে।

বরুণাদ্য মৃতং।—

গণে বক্ষণকাদ্যে তু গুগ্গুল্লোছরেনুভিঃ।
কুঠ মুন্তাখ্য মরিচ চিত্রকৈঃ সম্বাহ্বরৈঃ।
এতৈঃ সিদ্ধমন্তাসপি ক্ষকাদিগণেন চ।
ভিনত্তি কফ্সন্ত্রামশ্রীং ক্ষিপ্রমেব চ।
ক্ষারান্ যবাগৃং পেয়াংশ্চ ক্ষায়াণি প্যাংসিচ।
ভোজনানি চ কুর্বতি বর্গেহিস্মন্ কফ্নাশনে॥
বক্ষণাদ্য মৃত।

উৎকৃষ্ট ছাগন্বত /৪ চারিদের; কাথার্থ বক্ষণাদিগণ সমভাগে সমং আটসের, পাকার্থ জল ৬৪ চেইনটিসের এবং পাকাবশিষ্ট কাথ ।৬ বোল সের। কল্কার্থ—গুণ্ গুলু, এলাচি, বেণুকা, কুড়, মুখা, মরিচ, রক্তচিভারমুল এবং দেবলাক; এই সকল দ্রুব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমুদায়ে /১ এব সের। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া প্রান্তিদিবস উপযুক্ত মাতার সেব করিলে কফল্পত অ্যারীরোগ নিশ্চমই আরোগ্য ছইয়া থাকে। উক্ত ক্ষ নাশকগণের (বৰুণাদিগণের) সহিত পানীয়, ক্ষার, ধ্বাগূ, পেয়া, ক্ষায়, হ্র এবং অন্থান্য আহারীয় দ্রব্য প্রস্তুত করিয়া ব্যবহার করিলে বিশেষ উপ-কার হইয়া থাকে।

বরুণাদিগণঃ ৷—

বরুণার্ভগলঃ শিগু তর্কারীমধুশিগুকাঃ।
মেষশৃঙ্গী করঞ্জো চ বিশ্ব্যগ্রিমন্থমোরটাঃ।
শৈরীয়েবিশিরোদর্ভোবরীবস্থক চিত্তকৈঃ।
বিল্কেবাজশৃঙ্গীচ রহতীদ্ব্যমেবচ।
বরুণাদিগণোহেষ কফ্মেদোনিবারণং।
বিশহত্তি শিরঃশূলং গুল্মাভ্যন্তরবিদ্রেধীন্॥
বঞ্গাদিগণ।

বৰুণ, আর্ত্তগল (হোগল), শিশু (সজিনা), তর্কারী (জন্মন্তীমূল), মধুশিশু (রক্তশোভাঞ্জন), মেষশৃঙ্গী (মড়াশৃঙ্গী), হুইপ্রকার করঞ্জ (ডহুর করঞ্জ ও লার্টাকরঞ্জ), বিষ্ধী (তেলাকুচা), অগ্নিমস্থ (গনিয়ারী), মোরটা (ইক্ষুন্ল), শৈরীয়দ্ম (নীলপুষ্পামিন্টী ও পীতপুষ্পামিন্টী), বশের (গজ্জাপুল), দর্ভ (উলুমূল), বরী (শতাবরী), বস্তুক (বকপুষ্পা), রক্তচিতারম্ল, বেলমূলের ছাল, অজ্শৃঙ্গী, বৃহতী এবং কন্টকারী; এই সকল অধ্যকে বক্তগাদিগণ বলা যায়। এই বক্তগাদিগণ—কফ, মেদোদোধ, শিরংশূল, গুল্ম ও অন্তর্বিক্রিধিরোগ বিনাশক বলিয়া জানিবে।৬৭

বীরতরাদিগণঃ 1---

বীরতরঃ সহচরে দর্ভোরক্ষাননীনলী।
গুল্রাকাসকুশাবশ্যভেদমোরটটুণ্টু কাঃ।
কুরুণ্টিকা চ বনিরোবস্থকশ্চাগ্রিমন্থকঃ।
ইন্দ্রবরীশ্বদংক্ষাচ তথা কথোতবক্ত কঃ।
বীরতরাদিরিত্যের গণো পিভানিলাপহঃ।
আশারী শর্করা মূত্রকুচ্ছুনাহ বিকারনুৎ॥
বীরতরাদিগণ।

বারতর (শর), সহচরদ্বর (নীলপুষ্পানিন্টী এবং পীতপুষ্পানিন্টা), দর্ভ (উলুমূল), রক্ষাননী (পরগাছা), নলিকা, গুন্তা (গুলঞ্চ), কাশ, কুশ, পাধাণভেনী, মোরটা (ইকুমূল), টুন্টুক (শোণছিল), কুফন্টিকা (স্ত্রী-হস্তিনী অর্থাৎ হাতিশুড়া), বশির (শুইল্ডা), বস্তুক (বস্তুক্ত), আগ্লি-মন্থক (গণিরারী), ইক্রবরী (শতমূলী), খুদংষ্ট্রা (গোকুর) এবং কপোত-বক্তুক (কড়ই রক্ষ, ইহা শিরীবর্কের সদৃশ ক্ষুত্র পাত ও ক্ষুত্র শাখা বিশিষ্ট রক্ষবিশেষ) এই সকলকে বীরতরাদিগণ বলা যায়। এই বীরতরাদিগণ পিত্ত, বায়ু, অশারী, শর্করা, মৃত্রকৃচ্ছু ও আবাহরোপবিনাশক বলিয়া জানিবে।

١,

জাতীফলাদ্যবৰ্গঃ।---

জাতীফলং বরীভন্ম শর্করার তথিবচ।
এলাচৈব লবঙ্গানি সর্পিষা সগুড়ত্ত্বচং।
সমভাগানি সর্বাণি কার্য়েচৈত্ব যত্নতঃ।
অশ্বরী মূত্রকুচ্ছু ও মূত্রাবাত স্তথৈবচ।
প্রোত্যেরাধেষু সর্বেষু প্রমেহনিখিলেষুচ॥
জাতীফলাদ্যবর্গ।

জাতীকল, শতমূলী, বিভৃপ, শর্করা, ছোটএলাচি, লবপ, মৃত এবং দাক-চিনি; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গৃহীত হইয়া একত্রিত হইলে জাতী-কলাদ্যবর্গ বলা যায়। ইছা অশারী, মৃত্রকুজ্র, সুত্রাঘাত, নর্কবিধ জোতো-রোধ এবং সকলপ্রকার প্রমেহরোগে প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

শুঠাগ্নিমন্থপাষাণ শিগু বরুণগোক্ষুরৈঃ।
অভয়ারগ্বফলৈঃ কাথং কুর্যাদ্বিচক্ষণঃ।
রামঠ ক্ষারলবণং চুর্ণং দত্বা পিবেল্লরঃ।
অশারী মূত্রকুচছ্ মুং দীপনং পাচনং পরং।
হন্যাৎ কোষ্ঠাশ্রিতং বাতং কট্যুরু গুদমেট্রাং॥

শুঠী, অগ্নিমন্থ (গনিয়ারীছাল), পাষাণভেদী, সজিনাছাল, বঞ্চাব্রক্ষেরছাল, গোক্ষর, হরীতকী এবং সোণালুফল; এই সকল কুটিত দ্রব্য
সমান পরিমাণে সমস্তে ২ হুইতোলা, পাকার্থ জল /॥। অর্ধসের, শেষ কাথ

১০ অর্ধপোয়া। এই কাপ্নে ১০ ছুই আনা হিন্দু, ১০ ছুই আনা যবক্ষার এবং
১০ ছুই আনা মাত্রায় সৈন্ধবলবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে অখ্যরী, মূত্রকুদ্ধরোগ এবং কোর্ড, কতী, উক, গুছ ও মেদুগত বায়ুদোষ নিবারিত হইয়া
থাকে। পরস্ক ইহা অতীব অগ্নিদীপক ও দোবের পরিপাচক।

এলাদিকাথঃ।-

এলোপরুল্যা মধুকাশভেদ,কোন্তী শদংক্রার্যকোরুবুকৈঃ। কাশং পিবেদশার্জতুগাঢ়ং সশর্করাচাশারী মূত্রকচেভূ।

এলাদি কাথ।

এলাচি, উপকুল্যা (পিপুল), যফিষ্যু, পাষাণভেনী, কোন্তী (রেণুকা), প্রদংষ্ট্রা (গোকুর), রুষক (বানুক), এবং এরগুমুল; এই সকল দ্রব্য কুটিড জল্য পরিমাণে সমস্তে /২ ফুইডোলা, পাকার্য কলাক কালোকৰ কেবং কেবিটিট পানীয় কাথ ৮ তোলা। এই কাথে ৩।৪ মাষা শোধিত শিলাজতু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে শর্করা, অশারী ও মুত্তকুন্ত্রোগ সত্তর বিন্তু হইয়া থাকে।

কুলখাদ্যং মুতং !—

কুলথসিদ্ধৃথবিড়ঙ্গসারং সশর্করং শীতলীযাবশৃকং।
বীজানি কুরাওক গোক্ষুরাভ্যাং স্বতং পচেদ্বারুণকন্ম ভোয়ে।
ভুঃসাধ্য সর্বাশ্বরীমূত্রকুচ্ছুং মূত্রাভিঘাতক সমূত্রবদ্ধং।
তানি সর্বাণি নিহন্তি শীদ্রং প্রকৃত রক্ষানিব বক্ত্রপাতঃ॥
কুলখাদ্য স্থত।

উৎকৃষ্ট গব্য ঘৃত /৪ চারিদের ; বৰুণ রক্ষের ছালের কাথ ।৬ যোল-সের, জল ।৬ এবং কল্কার্থ কুল্থকলায়, দৈশ্ববলবণ, বিভূপদার, শর্করা, শিহলী ছোপড়, যাবশূক (যবক্ষার), কুম্মাগুলীজ এংং গোক্ষুরবীজ ; এই সকল কুট্টিল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একদের । যথানিয়মে এই ঘৃত পাক করিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় দেবন পরিলে ছঃমাধ্য সর্ব্যপ্রকার অশ্যরী, মৃত্রকুচ্ছুরোণ, মৃত্রাঘাত এবং বদ্ধমৃত্রতা বিনক্ট হইয়া থাকে।

বরুণাদাং তৈলং ৷—

ত্বক্পত্রমূলপুষ্পক্ষ বরুণাৎ সত্তিকণ্টকাৎ। কষায়েন পচেত্তিলং বস্তিনাস্থাপনমেবচ। শর্করাশ্রীশূলঘুং মূত্রকুচ্ছ বিনাশনং॥

বৰুণাদ্য তৈল।

উৎকৃষ্ট ভিল ভৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ বকণরক্ষের ছাল, পত্র, মূল এবং পুষ্প সমান পরিমাণে সমস্তে /৪ চারিদের এবং গোকুর /৪ চারিদের, পাকার্থ জল ৬৪ চৌরটিদের, পাকাবশিক্ষ কাথ ।৬ যৌলদের; এবং জল ।৬ যৌলদের। যথানিয়মে এই ভৈল পার্ক করিবে। এই বকণাদ্য ভৈল দ্বারা বস্তি কর্ম ও আছাপন প্রয়োগ করিলে শর্করা, অশ্যরী, শূল এবং মৃত্রকৃদ্ধু-রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

মধুনা চ যবক্ষারং লীড়ং স্থাদশারীং হরেও। উপযুক্ত মাত্রায় যবক্ষার (দোরা) গ্রছণ পূর্বক মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া লেহন করিলে অশ্রুরীরোগ নিশ্চয়ই নিবারিত হইয়া থাকে।

> ইন্দ্রবারুণিকামূলং সবচং ক্ষীরপাচিতং। পপ্পতিরসসংযুক্তং সপ্তাহাদশ্বরীং জয়েৎ॥

রাখালশশার মূল ও বচ সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল /। /ও দেড় পোয়া এবং গব্য হন্দ / /ও অর্দ্ধপোয়া। হন্দাবশিক্ট রাখিয়া ভাছাতে ক্ষেত্রপাপড়ার রম ২ ছুইডোলা মিশ্রিত করিয়া পান করিলে ৭ সাত দিবসের মধ্যেই অশারীরোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

ত্রিবিক্রমোরসঃ ।---

তাত্রং পৃতং গন্ধকঞ্চ নিশ্ত তীরসমন্দিতং।
তদেশালং বালুকাযন্ত্রে পচেদ্বলৃং প্রযোজয়েৎ।
মাতৃলুক্ষন্যমূলানি সজলকামুপায়য়েৎ।
রদস্তিবিক্রমো নামা শর্করাশ্মরীরোগজিৎ॥
অত্র বাভটাদো। মৃততাত্রমজান্দীরে স্তুলাঃঃ
পাচাং দ্রবেগতে। ইতি তাত্রসংস্করণমধিকং।
দীপিকাবলুগ্যাদো তন্নান্তি। অনুপানং মাতৃলুস্
জলাবিতি দীপিকাদি সম্বাদাৎ। বলুগ্যান্ত মাতৃলুস্
রুস রদৈরিতি জলং তদ্যৈবমূলঞ্চ বাভটাদি সন্মত
ইতি।

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো জশ্মগ্যধিকারঃ।
তিবিক্রম বস।

ভামভন্ম, শোধিত পারদ এবং শোধিত গদ্ধক; এই দ্রব্য তার সমান পরিমাণে এছণ পূর্বক নিসিন্দাপাভার রদে মর্দ্দন পূর্বক গোলাকৃতি করিয়া, তাহা বালুকাযন্ত্রে পাক করিয়া লইবে। এই ঔষধ প্রতিদিন ৩ তিন রতি পরিমাণে ছোলন্ধনেরুর মূল ও জল সহ সেবন করিলে শর্করা ও অশারী রোগ নিশ্চরই বিনম্ভ হইয়া থাকে।

.বিশেষ কথা—বাভটানি প্রস্থে সমান পরিমাণে ত্রন্ধ সহ তাত্র পাক করিয়া দ্রব[®]ভাগ নিংশেষিতৃ করতঃ তাত্র শোধিত করিয়া লইবে। দীপিকা এবং বল্পরী আদি প্রস্থেও এবস্প্রাকৃতির অথ্যে শোধনপ্রণালী কথিত আছে। দীপিকা প্রস্থে এই ত্রিবিক্রাম রস ঔষধ দেবনার্থে অন্নপানে মাতৃলুক্ত অর্থাৎ ছোলক নেবুর মূল ও জল প্রযোজ্য। কিন্তু বল্পরী প্রস্থে কেবল মাত্র ছোলক্ষ নেবুর রসই অন্নপানার্থে প্রাহ্ম বলিয়া প্রদিষ্ট ইইয়াছে।

> ²ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" **গ্রন্থে** ্ **জ্ঞা**রীরোগেঁর চিকিৎসা সমাপ্ত ।

व्यथ প্রমেহাধিকারঃ।

2,7

লোপ্রাভয়াক্ট্ফলমুন্তকানাং বিড়ঙ্গপাঠার্জ্জন ধর্মানাং।
কদরশালার্জ্জন দীপ্যকানাং বিড়ঙ্গদার্কীধব শল্যকানাং।
চত্তার এতে মধুনা ক্যায়াঃ ক্ষপ্রমেহেয়ু নিবেশনীয়াঃ॥

- ১। লোধ হরীতকী, কট্ফল ও মূথা। এই দকল দ্রবা সমভার্যে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্য জল ৩২ ভোলা, এবং পাকারশিষ্ট কাথ ৮ ভোলা। ।• দিকিতোলা মধু সংযুক্ত এই কাথ কফপ্রমেছনাশক।
- ২। বিড়ন্ত, আকনানী, অর্জুন বুক্ষেরছাল এবং ধ্যন (ধান্নি গাছ); এই দকল কুটিত দ্রব্য দমান পরিমাণে দমন্তে ২ তোলা, পাকার্থ জ্বল ৩২ তোলা এবং পাকাবশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথ। তিনিভোলা মধু প্রক্রেপে কফজ প্রমেহ নাশক বলিয়া জানিবে।
- ০। কদম রক্ষেরছাল, শাল বুক্ষেরছাল, অর্জুন রক্ষেরছাল এবং দীপ্যক (যমানী); এই সকল কুটিত দ্রব্য সমান পরিমাণে ২ ছইতোলা পাকার্থ জল /॥• অর্থাৎ ০২ তোলা, পাকাবশিষ্ট কাথ /৮০ অর্থাৎ ৮ তোলা। এই কাথ।• সিকিতোলা মধু প্রক্ষেপে ক্ষজ্ঞ প্রমেহরোগ বিনাশ করিয়া থাকে।
- 8। বিজ্ঞা, দাব্বী (দাকছরিন্তা), ধনে, অর্জুনরক্ষের ছাল এবং শল্যক (খদির) কাঠ : এই সকল তাব্য সমান পরিমাণে সমস্তে হ হুইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। ।• সিকিতোলা মধু প্রক্রেপিড এই কাথ কফজন্ম প্রমেছরোগ বিনাশক।

লোধ্রার্জ্জু নোশীরচন্দনানামরিষ্ট সেব্যামলকাভয়ানাং। ধাত্রার্জ্জু নারিষ্টক বৎসকানাং নীলোৎপলানাং তিনিশার্জ্জু নানা চত্ত্বার এতে বিহিতাঃ কষায়াঃ পিত্ত প্রমেহেয়ু মধুপ্রযুক্তাঃ॥

- ১। লোধ, অর্জুনছাল, উণীর (বেণ্রেমূল) এবং অরিষ্ট (নিম্ব) ছাল; এই জব্য চতুষ্টর সমান পরিমাণে সমত্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, পাকাবশেষ ৮ ভোলা। এই কাথ। গিকিভোলা মধু মহ পান করিলে পৈত্তিক প্রমেছ বিনষ্ট হয়।
- ২। নিষ্কাল, সেবা (বেণারমূল), আমলকী এবং হ্রীতকী; এই দ্রব্য চতুইন কুটিত সমান পরিমাণে সমুদায়ে ২ তোলা, পাক নিমিত্তক জল ।।। অর্ধনের (৩২ ভোলা) এবং শেষ কাথ /।। অর্ধপোরা (৮ তোলা)। এই কাথে।। সিকিতোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পিত্তজ প্রমেহ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে।
 - থাত্রী (আমলকী), অর্জুনছাল, অরিষ্টক (নিছ) ছাল এবং বৎসক (কুড়চি); এই সকল দ্রব্য কৃটিত সমান পরিমাণে সমুলারে ২ তুইভোলা,

পাকার্য জল /॥• অর্দ্ধসের, ভোষ / ১/• অর্দ্ধপোরা। এই কার্যে।• সিকি-ভোলা মধু উল্লেপ দিয়া পান করিলে পৈত্তিক প্রমেহ নিবারিত হইয়া থাকে।

চ। নীলোৎপল (নীলর্মুন), এলাচি, তিনিশ এবং অর্জুনবুন্দের ছাল; এই দ্রবা চতুইন সমান পরিমাণে সমত্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ০২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ। গিকিডোলা মধু প্রক্রেপ দিরা পান করিলে সর্ক্রিথ পৈত্তিক প্রমেহরোগ বিনক্ত হইরা থাকে।

> শ্যামক কোদ্ৰবোদ্দাল গোধুম চণকাঢ়কী। কুলথান্চ হিতা ভোজ্যৈঃ পুরাণমেহিনাং সদা। জাঙ্গলং তিক্তশাকানি যবান্নক তথা মধু॥

পুরাণ খ্যামক (খ্যামা) ধাক্স, কোত্রব (কোনো) ধাক্স এবং উদ্দাল বন্যকোনো ধাক্স), গোধুম, চণক (বুট), আঢ়কী (অড়হর) এবং কুল্থি কলাই, এই সকল দাইলের যুষ, জাদ্দল শশু পক্ষীর মাংস, তিক্তন্সাক, যবান (যবের ছাত্রু প্রভৃতি) এবং মধু; এই সকল ত্রব্য সর্কবিধ প্রমেহ রোগীর পক্ষে স্থপথ্য বলিয়া জানিবে।

পারিজাতজয়ানিম্ব বহ্নিগায়ত্তিণাং পৃথক্।
পাঠায়াঃ দাগুরোঃ পীতাত্ত্বম্য শার্দমাত।
জলেক্ষু মদ্যদিকতা শ্রেলবণ্পিইকান্।
সাক্রমেহান্ ক্রমাদ্মন্তি অইটো কাথাঃ সমাক্ষিকাঃ॥

- ়। পালিদাশাদারের মূলের ছাল ২ ছইতোলা, পাকার্থ জ্বল ৩২ ডোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা। এই কাথে। ি সিকিভোলা মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে জ্বল (উদক) মেহ বিনষ্ট হয়।
- ২। জন্মন্তীপত্র ২ জোলা. পাকার্থ জল ৩২ ডোলা, শেষ ৮ জোলা। এই কাথে। ি সিকিতোলা মধু প্রক্ষেপ দিন্না পান করিলে ইকুমেছ বিনম্ভ হয়। ত । নিম্নছাল ২ জোলা, পাকার্থ জল ৩২ জোলা, শেষ ৮ জোলা। এই কাথ মদা (সুরা) মেহ বিন্ধিক।
- ৪। বহির (রক্তিতার) মূল ২ তোলা, পাকার্থ জল /॥ অর্দ্ধনের,
 শেষ /১ ইছটাক। এই কাথ মধু প্রক্রেপে সিকতামেছ নাশক।
- ৫। গায়ত্রী (খদির) কাঠ ২ তোলা, পাকনিমিত্ত জ্বল /॥• অর্দ্ধদের, শেষ ক্লাথ /১ ওইছটাক। এই কাথ।• দিকিতোলা মধু প্রক্রেপে শনে-র্দ্দেহ বিনাশক।
- ৬। পাঠা (আকনাদী) এবং অগুৰুকাৰ্চ সমভাগে ছই দ্ৰব্য ২ ভোলা, পাকাৰ্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে। • সিকিভোলা মুধু প্ৰক্ষেপ দিয়া পান করিলে লবণমেছ বিনষ্ট হইয়া থাকে।
- ৭। পীতাদ্বর অর্পাৎ হরিদ্ধা এবং দাকহরিদ্রা, এই ছুই দ্রব্য সমানভাগে ২ ছুইডোলা, পাক নিমিত জল /॥• অর্দ্ধনের এবং শেষ ক্লাথ৮ ভোলা

(/ A - অর্দ্ধপোরা)। এই কাথ। • সিকিতোলা মধু সহ পান করিলে পিউক-মেছ বিনউ হইয়া থাকে।

৮। শারদ (ছাতিম) ছাল ২ তোলা, পাকনিমিত্তক জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথে । ি সিকিতোলা মধুপ্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সাজ্রদেহ নিবারিত হইয়া থাকে।

দূর্যবাকশের পৃতিক কুদ্ভীকপ্লবলৈবলং।

জলেন কথিতং পীতং শুক্রমেহহরং পরং॥ '

দূর্ম্বা, কেশুর, করঞ্জ, পানা, কৈবর্ত্তমুখা ও শেওলা, সমভাগে সমন্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথ শুক্রমেহনাশক।

ত্রিফলারথ্ধ দ্রোক্ষা কষায়ো মধুসংযুতঃ।

পীতো নিহন্তি ফেণাখ্যং প্রমেহং নিয়তং নৃণাং॥

ত্রিফলা (হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া), আরয়য় (সোঁদালফল)
এবং কিস্মিস্; এই দ্রব্য সকল কৃট্টিত সমভাগে সমত্তি ২ ভূইতোলা,
পাকার্থ জল ৩১ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথ। ি সিকিভোলা মধু সহ
পান করিলে কেণমেছ নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

অখথাচ্চতুরঙ্গুলান্নাগ্রোধানেঃ ফলত্রিকাৎ। সজিঙ্গীরক্তমারাচ্চ কাথা পঞ্চ সমাক্ষিকাঃ। নীলহারিদ্রেক্তকাখ্য ক্ষার্মঞ্জিঠকাহ্বয়ান্। মেহান্ হনুঃঃ ক্রমানেতে জানতা বৈন্যেন সহ॥

- >। অশ্বর্কের ছাল ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কার্থ তোলা। এই কাথ নীলমেহ বিনাশক বলিয়া জানিবে।
- ২। চতুরসূল (দোণালু) ফল ২ তোলা, পাকার্থ জল 🖊 ॥ তর্জনের, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ পান করিলে হারিদ্রমেহ বিনষ্ট হয়!
- ০। অথেথাদিগণ অর্থাৎ অ্যোধ (বট্ট), উভূ সর (যজ্জুমুর), অশ্বথ, রক্ষ (পাকুড়), মধুক (মালপুষ্পা), কপীতন (শিরীষর্ক্ষ), ককুভ (অর্জুন), নাত্র, কোষাত্র (কেওড়া), চোরকপত্র (পিড়িংশাক), জমুদ্ধর (বড়জাম রক্ষুদ্রজাম), পিরাল, যফিন্ধু, রোহিণী (কট্কী), ব্যঞ্জুল (তিনিশর্ক্ষ), গর্মী (কুল), তিন্দুক (গাব), শল্লকী (সীমূল), লোধ, মাবরলোধ, ভূলা-তক (ভেলা), পলাশ এবং নন্দীর্ক্ষ (গর্মুগু); এই সকলের যথোক্ত লোদির ছাল প্রভৃতি সমান পরিমাণে সমূদারে ২ ফুইভোলা, পাকার্থ জল বি। অর্দ্ধনের এবং শেষকাথ বি অর্দ্ধশেষা। এই কাথে । সিকিভোলা ব্রুপ্রেক্ষপ দিরা পান করিলে শুক্তমেহ (অল্পেছ) নিবারিত হয়।
- ৪। ত্রিফলা অর্থাৎ হরীতকী, আমলুক্রী এ বহেড়া; এই তিন দ্রব্যা
 নান পরিসাণে নমন্তে ২ ত্রইতোলা, পাকার্থ জ্ল /॥। অর্দ্ধার শেষ কার্থ

F .:

৮ (তালা (, / এ • অর্ধপোরা)। এই কাথে। • সিকিতোলা মধু প্রক্রেপ দিরা পান করিলে কারমেছ বিনক্ট হইয়া থাকে।

 ৫। জিল্পী (মঞ্জিষ্ঠা) এবং বক্তনার (বক্তচন্দন) সমানভাগে ইই দ্রব্য মোট ২ ছইভোলা, পাকার্থ জল ।। অর্দ্ধনের এবং শেষ কাথ ।। অর্দ্ধ-পোরা। এই কাথে। নিকিভোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে মাঞ্জিষ্ঠমেছ প্রশমিত হইয়া থাকে।

কদরখদিরপৃগকাথ ক্ষৌদ্রাহ্বয়ে পিবেৎ। অগ্নিমন্থকবায়ন্ত বসামেহে প্রযোজয়েৎ। পাঠাশিরীষ ত্রুপর্শ মূর্কাকিংশুক তিন্দুকাঃ। কপিত্বাশাং ভিষক্ কাথং হস্তিমেহে প্রযোজয়েৎ।

- ১। কদর (বিটখদির), খদির এবং পৃগা; এই দ্রাব্যন্তর সমভাগো সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ক্লাথ ৮ তোলা। এই ক্লাথ পান করিলে ক্লোদ্রমেহ প্রশমিত হইয়া থাকে।
- ২। অগ্নিমন্থের (গণিয়ারীর) ছাল ২ তোলা, পাকার্থ জঁল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ দেবন করিলে বসামেই নিবারিত হয়।
- ৩। আকনাদী, শিরীষছাল, হুরালভা, স্থচীমুখী, পলাশ, গাব ও ক্রেদ্বেল, ইহাদের কাথ হস্তিমেহ নাশক।

সর্বমেহহরে। গাত্র্যারসঃ ক্ষৌদ্র নিশাযুতঃ।

- ় ক্ষায়স্ত্রিফলা দারু মুস্তকৈরথবাক্তঃ।
- ১। আমলকীর রেনে উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও ইরিক্রাচ্র্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সর্বপ্রকার মেহরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।
- ২। আমলকী, বহৈড়া, হরীতকী, দেবদাক এবং মুখা; এই দকল দ্রব্য দ্মভাগে দমত্তে ২ ছুইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাতার মধু এবং হরিদ্রাচ্ণ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে দকল প্রকার মেহ বিরক্তি হয়।

ফলত্তিকং দারুনিগাবিশালা মুস্তঞ্চ নির্দাণ্য নিশাংশ কলকং। পিবেৎ কষারং মধুসং প্রযুক্তং সর্বপ্রমেহেযু সমুখিতেযু॥

ফলত্রিক (হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া), দাফনিশা (দাফহরিদ্রা), বিশালার (রাখালশশার) মূল এবং মুথা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছুইডোলা, পা চার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা। এই কাথে। দিকিভোলা হরিদ্রাচূর্ণ এবং। দিকিভোলা মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে সর্বপ্রকার মেহরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

> কটক্ষটেরী মধুক ত্রিফলা চিত্রকৈঃ সইমঃ। দিদ্ধঃ ক্যায়ঃ পাত্র্যঃ প্রমেহানাং বিনাশনঃ॥

কটন্ধটেরী (দাকহরিন্দা), মধুক (ষষ্টিমধু), ত্রিফলা (হরীক্রকী, আম-লকী ও বছেড়া) এবং রজ্ঞচিতার মূল; এই করেকটা দ্রব্য কুটিত সম্ভাগে সমস্তে ২ হুইতোলা, পাকনিমিত্তক জল /।• অর্দ্ধদের, শেষ কার্থ / ১/• অর্দ্ধপোরা। এই কার্থ পান করিলে সর্ব্ববিধ প্রমেহরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

দাড়িমান্যং দ্বতং।—

দাড়িমস্য চ বীজানি ক্রিমিত্বস্য চ তপ্তুলাঃ।
র জনী চবিকাজাজী নাগরং ত্রিফলা কণা।
ত্রিকন্টকস্য চ ফলং যমানী ধান্যকং তথা।
রক্ষার চপলাকোল সিদ্ধুদ্ধের সমাযুক্তঃ।
কলৈকরক্ষনিমরেতৈ প্রতিপ্রস্থং বিপাচয়েও।
ভোজ্যে পানে প্রদাতব্যং সর্বর্তু সু চ মাত্রস্থা।
প্রমেহান্ বিংশতিকৈর মূত্রাঘাতং তথাশ্যরীং।
হচ্ছুলং দারুণিকের হন্যাদের ন সংশ্রঃ।
বিবদ্ধানাহশুলত্বং কামলাজ্বরনাশনং।
দাড়িমাদ্য প্রতং নামা অধিভাগং পরিনির্দ্ধিতং॥
দাড়িমাদ্য ভা

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিদের; জল।৬ বোলদের, কল্কার্থ দাড়িমফলের বীন্ধ, বিড়ম্বের চাউল, ছরিন্ধা, চই, জীরক, শুঠী, হরীন্তকী, আমলকী, বহেড়া, পিপুল, গোক্বরীজ, যমানী, ধনিয়া, বৃক্ষাল (মহাদা), চপলা (সিদ্ধি), কোল (কুল) এবং দৈদ্ধবলবণ; এই সকল দ্রুবা কুট্টিত প্রভ্যেকে ২ ফুইভোলা। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাতায় ভোজ্য এ পানীয়ের সহিত দেবন করিলে ২০ বিংশাভূপ্রকার প্রমেহ, মূতাঘাভ, অশারী, দাকণ হনয়শূল, বিবদ্ধাজীন, আনাহ, শূল, কার্মলাও জ্বর নিশ্চয় বিষষ্ট হইয়া থাকে। এই দাড়িমাদ্যন্থত অধিনীকুমারম্বন্ধ কর্তৃক প্রকাশিত ছইয়াছে বলিয়া জানিবে।

রহদাড়িমান্যং দ্বতং।—

অমবেতদ দোকাচ যথিষু কপুলকৈঃ।
দাব্বীত্বক্ শিলাধাতু নীলোৎপল রসাঞ্জনৈঃ।
দেবৈয়ের কসমৈর্দেরং তঁদাক্তেরং রহদ্মতং॥
রহদাড়িশাদাম্বত।

উৎকৃষ্ট গৰাছত /৮ আটনের , জল ৩২ বত্তিশাসের ; কল্কার্থ অস্তবেতস, ক্রাকা (কিসমিন) ও যক্তিমধু প্রত্যেকে ৮ তোলা এবং দাক্তরিদার ছাল, শিলাধাতু (খড়ী), নীলোৎপল এবং রসাঞ্জন; এই সকল কুটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা। যথাবিধানে এই শ্বত পাক কুরিবে। এই বৃহদ্দাড়িমাদ্য-মৃত সর্ব্যঞ্জার প্রমেহরোগ বিনাশক বলিয়া জানিবে।

ত্রিকণ্টকাদ্যং তৈলং মতং যমকঞ্চ ৷—

ত্রিকণ্টকাশান্তক শোমবলৈকঃ ভল্বাভিকৈঃ নাভিবিবৈঃ নলোৱৈঃ।
বচাপটোলার্জ্জন বিশ্বমুন্তৈইরিদ্রোদীপ্যকপদ্ধকিশ্চ।
মঞ্জিষ্ঠয়া চাগুরুচন্দ্রিশ্চ নবৈরিঃ নমব্তিঃ কফবাতজেয়ু।
মেহেয়ু তৈলং বিপচেদ্রতন্ত পিতেয়ু মিশ্রং ত্রিয়ু লক্ষণেয়ু॥
ত্রিজন্টকাদ্য তৈল।

উৎকৃষ্ট তিলতৈল /৪ চারিসের; জল ।৬ যোলসের; কল্কার্থ গোক্ষুর, অশাস্থক (পাষাণ ভেনী), সোমবল্ক (গেতখদির), ভেলা, আতইস, লোধ, বচ, পটোল, অর্জ্জুনী বুক্লেরছাল, বেলশুঠ, মূথা, হরিদ্রা, দীপ্যক (যমানী), পদাক (পদাকার্চ), মঞ্জিচ। এবং অগুক চন্দন, এই সকল কুষ্টিত ত্রাব্য সম-ভাগে সমস্তে /১ একসের মাত্র। যথানিজমে এই তৈল পাক পূর্বক অভ্য-স্থাদিতে প্রয়োগ করিলে কফজ ও বাতজ মেহ সকল নিবারিত হইয়া থাকে। ত্রিকন্টকাদ্য মৃত্য।

উৎকৃষ্ট গব্য ঘত /৪ চারিদের; জল ।৬ যোলদের। কল্কার্থ গোক্সর, পাষাণ্নভেদা, শ্বেতখদির, ভেলা, আতইস, লোধ, বঢ, পটোল, অর্জ্জুনরক্ষের-ছাল্য বেলশুঠ, মুখা, হরিদ্রা, যমানী, পদ্মকার্য, মঞ্জিষ্ঠা এবং অপ্তকৃচন্দ্র; এই সকল কৃষ্টিত দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একদের। যথাবিধানে এই ঘৃত পাক করিয়া প্রভিদিন উপযুক্ত মাত্রায় পান করিলে পিত্তজ্ব প্রমেছ সকল বিন্দ্র ছইয়া থাকে।

ত্রিক-উকাদ্য যমক।

উৎকৃষ্ট ভিলত্তিল /২, ছইনের এবং উৎকৃষ্ট গণ্য মৃত /২ ছইসের। জলাঙ বোলদের। কল্কার্থ কৃষ্টিত গোকুর, পাষাণভেদী, শেতখদির, ভেলা, আছেইন, লোধ বট, পটোল, অর্জুনরক্ষেরছাল, বেলস্ট্রঠ, মুথা, ছরিদ্রা, যমানী, পদ্যকার্চ, মঞ্জিটা এবং অগুরুচন্দন; এই সকল দ্রণ্য সমান পরিমাণে সমস্তে /> একদের মাত্র। যথাবিধানে এই যমক (সমভাগে তৈল ও মৃত মিশ্রিও করত: পাক করিয়া লইলে, তাছাকে যমক বলা যায়) পাক করিয়া অভ্যন্ধ ও সেবনাদিতে, ব্যবহার করিলে তৈদোযিক প্রমেহরোগ সকল বিন্ধী হইয়া থাকে।

ন্যযোধাদ্যঞূর্ণং ।—
্ন্যথোগেড়ুম্বাশ্বথ শ্যোনাকারগ্বধাদনং।
ভাষেজমুকলিথক পিয়ালং ককুভং ধবং।

শধুকোমধুকং লোধ্রং বরুনং পারিজন্তকং।
পটোলং মেবশৃদীত দন্তী চিত্রকমাঢ়কী।
করঞ্জিফণাশক্র ভল্যভকফলানিত।
ত্রতানি সমভাগানি প্রাক্ষতুর্গানি কারয়েৎ।
ক্যুত্রোধান্যমিদং চুর্গং মধুনা সহ লেহয়েঁৎ।
কলত্র রসকার পিবেমুক্তং বিশুধাতি।
ত্রেন বিংশতির্দেহা মূক্রকুছ্যানি যানিত।
প্রশমং যান্তি বেগেন পিড়কা নত যায়েন্ত।
নাগ্রোধান্য মিনকুর্ণ মাম্রজন্বতি গৃহতে॥
হুপ্রোধান্য চুর্গ।

বটেরছাল, যজ্ঞ দুন্বেরছাল, ভাগ্গালুকেরছাল, শোণাছাল, শোণালুক্
অসন (গাঁতশাল), আমের আঠি, জামের আঠি, করেসংবল, পিরাল, করুভ
(অর্জুন) ছাঁল, ধবরক্ষেরছাল, যিটিমধু, মৌলপুণ্প, লোধ, বরুণছাল,
পালিদামাদারেরছাল, পটোল, মেয়পুনী, দত্তীয়ল, রক্ত চিতারয়ল, আঢ়কী
(অড়হর), ডহরকরঞ্জেরছাল, হরীভকী, আমলকা, বহেড়া, মিদ্ধি এবং
ভেলার আঠি; এই সকল দ্রুণ প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্দক উত্তম
রূপে কৃক্ষা চূর্ণ করিয়া লইবে। এই হার্মোধাদ্য চূর্ণ ঔষধ প্রতিদিবদ উপযুক্ত
মাত্রায় মধুর দহিত লেহন করিয়া, পশ্চাৎ ত্রিকলায় কাথ পান করিবে।
ইহা দারা মৃত্র বিশুর হয়। পরস্ত ইহা ২০ বিংশতি প্রকার প্রমেহ, মৃত্রকুদ্ধ
ও প্রমেহ পীড়কা নাশক।

বিড়ঙ্গানাং লৌহং।—
বিড়ঙ্গং ত্রিফলামুন্তং কণানাগর এব হ।
জীবকাভ্যাং যুতোহন্তি প্রয়েহানতিদারুণান্।
লৌহমূত্রশ্য বিকৃতিঃ সর্কানেব ন সংশ্রঃ॥
বিড়ঙ্গান্য লৌহ।

বিজ্ঞা, হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, মুথা, পিপুল, শুঠী, জীবক এবং ঋষভক; এই সকলের চূর্ণ প্রত্যেকে সমভাগ এবং সর্ব্ব সমষ্টির সমান লৌছ চূর্ণ একত্রিভ করিয়া লইবে। ইহা প্রভিদিন উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে সর্ব্বপ্রকার প্রমেছ এবং মুত্র বিকৃতি নিবারিও ছইয়া থাকে।

নেহনুদারো রসঃ।—
রসাঞ্জনং বিড়ঙ্গাব্ধ বিলুং গোক্ষুর দাড়িমং।
ভূমিয়ং পিপ্পলীমূলং ত্রিকটু ত্রিফলা ত্রিরং।
প্রত্যেকং ভোলকং দেয়ং লৌহচুর্ণঞ্চ তৎসমং।

শলৈকং গুণ্গুলুং দত্বা স্থাতেন বটিকাং কুরু।
মাবৈকা বটিকা কার্যা মেহমুদারসংক্ষিতা।
অনুপানং প্রকর্ত্তবাং ছাগীদ্রশ্বং জলস্তথা।
প্রমেহান্ বিংশতিং হন্তি মুত্রকচছুং হলীমকং।
অশারীং কামলাং পাপুং মূত্রাঘাতমরোচকং।
বড়শৃংসি ত্রনং কুঠং ভগন্দরমন্থরিকাং।
অনিলেঘিতি কর্তবাণ ত্রিস্থান্ধি সমন্বিতা॥

মেহ্যুদার রস।

রসাঞ্জন, বিভূদ, মুখা, বেলগুঁঠ, গোকুর, দাড়িমফলেরছাল, চিরতা, পিপুল্যল, ত্রিকটু অর্থাৎ শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ, ব্রিফলা অর্থাৎ হরীত্তনী, আমলকী, ও বহুড়া এবং ড়েউড়ীমূল; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্য ১ এক ১ এক তোলা, দর্বর সমান লোহচূর্য এবং ৮ তোলা প্রগ্রুলু, সমস্ত ত্রব্য-প্রলি একবি ত করিয়া ম্বত দহ মিশ্রিত করতঃ ১ এক মাষা মাত্রায় বটী চা প্রস্তুত করিবে। ইহার একটী করিয়া বটীকা প্রতিদিন ছাগত্বন্ধ বা জল অহ্পণান দহ দেবন করিলে ২০ বিংশতি প্রকার প্রমেহ, মৃত্রকন্ত্র, হলীমক, অশ্ররী, কামলা, পাতু, মৃত্রাঘাত, অরোচক, ৬ ছয়প্রকার অর্ণোরোগ ত্রাক্রক, তামন্বর ও মন্থ্রিক। বিসন্তরোগ। নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

বিশেষ কথা—এই মেহমুদারে রস ঔষধ দারা সর্ববিধ বায়ুবোগ বিনাশ করিতে হইলে, উহার সহিত উপযুক্ত মাত্রায় ত্রিস্থানি অর্থাৎ দাক্চিনি, তেজপত্র ও এলাচি চুর্ণ মিশ্রিত করিয়া লইতে হয়।

বঙ্গেশ্বঃ।--

বঙ্গভশ্ব দ্বিলুঞ্চলেহয়েৎ মধুনা সহ।
ততে ওড়েনমং গন্ধং ভক্ষরেৎ কর্মাত্রকং।
তড়ে চীনত্ত্ব প্রথা শর্করা সহিতং তথা।
স্ক্রেম্থা দ্বিশ্র ছেলা মণ্ডলাজ্জায়তে নরঃ॥
বিদেশ্র।

বঙ্গভম্ম ৬ ছয়রতি পরিমাণে মধুসহ সেবন করিয়া সমাস ভাগ গুড় ও গন্ধক; অথবা গুলঞ্চের রস শর্করা সহ সেবন করিবে। ইহা দ্বারা সর্ব্ব-প্রকার প্রমেহরোগ ও প্রমেহ জুনিত মগুলাকৃতি নিবারিত হয়।

চন্দ্রপ্রভাবটা।—
মৃতস্তঞ্চ কাণীশ মেলা জাতীফলত্বচং।
মধুকং মধুষ্ঠীচ ধাত্রীদাড়িমশর্করা।
কপুরং খদিরসারং শতাহ্বা কণ্টকারিকা।

অমবেতস তুল্যাংশং দিনৈকং লান্ধলীদেবৈঃ।
ভাবয়েৎ মেনী ছুমৈন্ট নাগবল্লা দিনং দিনং।
বটিকা বদরকোমানং নামা চক্রপ্রভা বটী।
ভক্ষয়েভীব্রমেহার্জো মেহান্ হস্তি চ ছুন্তরং।
গাত্রী পটোলপত্রাণাং ক্যায়ন্বা মৃতাহিতং।
সক্ষেত্রিং পার্য়েস্চারু সর্কমেহপ্রশান্তরে॥
চক্রপ্রভাগনী।

রসসিন্দুর, হিরাকস, এলাচি, জাতিফল, দাকচিনি, মৌলপুষ্পা, যক্তিমধ্, আমলকী, দাড়িমফলেরছাল, চিনি, কপুর, খদিরসার, শলুক্ত, কন্টকারী
এবং অলবেতস: এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে সমান ভাগে গ্রন্থপূর্বাক
উত্তম কপে স্ক্রম চূর্ণ করিয়া একদিবস বিষলান্ধলিয়ার রসে মর্দ্দন করিয়া
৪।৫ রতি পরিমাণে বঁটাকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইছার এক একটা
বঁটাকা মেঘীর দ্রন্ধ অথবা পানের রদের সহিত্ত সেবন করিয়া, পশ্চাৎ আমলকী, ও পটোলে পাত্রের কাথে ঘৃত ও মধ্ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে, সর্বব্যকার প্রমেছরোগ নিশ্চয়ই আবোগ্য হইয়া থাকে।

যোগিশ্বরো রসঃ

মৃতস্তাল্রনাগানাং তুলাভাগং প্রকাপারে ।
নহানিষ্ণ বীজোথং চূর্বং বোজ্যং ত্রিভিঃ সমং ।
মগুনা লেহরেনাধং নানামেহ প্রশান্তরে ।
সক্ষোদ্র রঙ্গনীচাথ লেহং নিষ্কত্রয়ং সদা ।
অসাধ্যং নাশ্রেনেহং বিন্যাদেয়াগীশ্রোরসঃ ॥
ধ্যাগীর বন।

রসদিন্দুর, অভ্র এবং রঙ্গভস্ম প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং মহানিষের বীজ চুর্ব ওভাগ, দমস্ত দ্রবাগুলি উত্তমকপে চুর্প করিয়া একত্র মিগ্রিত করিয়া লইবে। এই চুর্ব ঔষধ প্রতিদিন এক মাবা মাত্রায় মধুসহ দৈবন করিয়া পশ্চাং ৬ তোল। হরিদ্রাচুর্ব মধুসহ লেহন করিবে। ইহা দ্বারা সর্বপ্রকার প্রমেহ রোগ বিনম্ভ ইইয়া থাকে।

ষোগেশবো রসঃ।—
স্তকং গন্ধকং লৌহং নাগরঞ্চ বরাটকং।
তাত্রকং বঙ্গভন্মালি ব্যোমকঞ্চ সমাংশকং।
স্কোলাপত্রমুন্তঞ্চ বিড়ঙ্গং নাগকেশরং।
রেণুকামলকঞালি পিপ্পলীমূলমেবচ।
এয়াঞ্চ বিশুলং ভাগং মর্দ্রিত্বা প্রযুতঃ।

ভাবনা তত্ত্ব দাতবা ধাত্রীরস বিমদ্দিতা।
মাত্রা চণকমাত্রা চ গুটিকেরং প্রকীর্ত্তিতা।
প্রমেহান্ বিংশতিকৈব অশ্বরীণ চতুর্বিধাং।
ব্রণং হন্তি তথা ক্রচছু মর্লাংসিচ ভগন্দরং।
যথেষ্টচেন্টাভিরতঃ প্রয়োগেন নরো ভবেৎ॥

যোগেশ্ব রস।

পারদ গন্ধক লোছ, শুঠী, কড়িতন্ম ডাত্র, বন্ধতন্ম এবং আজ; ইহাদের চূর্ন প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং ছোট এলাচি, ডেক্সপত্ত, মুখা, বিভূক্ত, নাগকেশর, রেনুকা, আমলকী এবং পিপুলচূর্ন: ইহাদের চূর্ব প্রভোকে ২ চুইভাগ; সমস্ত দ্রবাগলি একত উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া আমলকীর রুদে মর্দন করিয়া ৩া৪ রতি প্রমাণ ইটীয়া প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ প্রতিদিন একটী করিয়া অমুপান বিবেচনা পূর্বক দেবন করিলে ২০ বিংশতি প্রকার প্রমেষ, ৪ চারি প্রকার অন্মরী, ত্রণ, মূত্রকুল্ড, আর্শঃ এবং ভগন্দররোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। এই ঔষধ দেবন করিয়া রোগী ইন্ছান্মারে আহার বিহার করিতে পারে।

তালকেশ্বরঃ।—

মৃতং সূতং মৃতং বৃঙ্গং মৃতং লৌহাত্রকং সমং।

মর্দ্দরেমধুনা চাত্র রসোহয়ং তালকেশ্বরঃ।

• মাধমেকং লিহেৎ ক্ষোতৈর্ভমূত্র প্রমেহমূৎ।

উত্ত্যরফলং পকং চূর্বিতং কর্মাত্রতঃ।

লেশ্বক মধুনাচার্দ্ধমনুপানং সুখাবহং॥

ভালকেশ্বর রদ।

রমসিন্দুর, বঙ্গভুম্ম, লৌহ এবং জ্জ; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে সমভাগে এইণপূর্বক জলমহ পেন্দা করিয়া ২ মাষা মাতায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার একটী করিয়া বটীকা প্রতিদিন মধু অথবা পাক যজ্জভুমুর চূর্ণ ও মধুসহ দেবন করিলে সর্বপ্রকার বহুমূত্ররোগ বিনম্ভ ইইয়া থাকে।

শোষং তাপান্ধ কাশ্যঞ্চ বহুমূত্রং তৃষাভ্রমঃ।

•অসাধ্যং সর্কশাস্ত্রেয়ু মেহো২য়ং বহুমূত্রজঃ॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো প্রমেহাধিকারঃ।

অসাধ্যবহুমুত্ররোগের লক্ষণ।

শোষ, সন্তাপ, কুশতা, বহুপরিমাণে প্রজাব হওয়া, তৃষ্ণা ও জ্রম; এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইলে বহুমূত্রজ প্রমেহরোগ বলিয়া জানিবে। ইহা সকল আয়ুর্বেদ শান্ত্রে অসাধ্য বলিয়া ক্রুখিড ফুইন্সালে

व्यथं स्थिनातिभेश्वाधिकातः।

শ্রমনিন্তাব্যবায়াপ্ত রৌদ্রজাগরণপ্রিয়ঃ। হন্তানশামতিস্থোল্যং যবশামাক ভোজনঃ॥

অত্যন্ত পরিশ্রম, অধিক চিন্তা, সমধিক দ্রী প্রদক্ষ, পথপর্যাটন, রৌদ্র-দেবন এবং অধিক রাত্রি জ্বাগরণ, এই সমস্ত দ্বারা স্থোলারোগ সম্বর নিবারিত হয়। এবং যব ও শ্বামাক (ধার্ম বিশেষ) ভোজন দ্বারাও অবিলয়ে স্থলতা বিনই হইয়া থাকে।

অম্বপ্নক ব্যবায়ক বাণয়ামং চিন্তুনানি চ। স্থোল্যমিচ্ছন্ পরিত্যক্তবুং ক্রমেণাতিপ্রবৃদ্ধয়েৎ॥ যে ব্যক্তি স্থলতা নিবারণ করিতে একান্ত ইচ্ছুক হইবে, তাহার অনিক্রা

থে ব্যাক্ত প্লুলভা নিবারণ কারতে একান্ত ২চ্ছুক ২২বে, তাহার আনিন্দ্র। (সর্বানা জাগারণ), ব্যবায় (মৈথুন), ব্যায়াম (কুন্তিকরা) ও চিন্তা নিরম্ভর রদ্ধি করা কর্ত্তব্য ।

> প্রাতম্পুযুতং বারি দেব্য তৎ স্থৌল্যনাশনং। উষ্ণমন্থ মণ্ডয়া পিবন্ রুশতনুর্ভবেৎ।

প্রাত্তঃকালে মধু মিশ্রিত জলপান করিলে স্থৌল্যরোগ নিবারিত হয়।
এবং উষ্ণ অন্নমণ্ড পান করিলেও অভিস্থল ব্যক্তি অভ্যন্ত কুশ হইয়া থাকে।

महवाकीतकरवाशि हिन्नु मीवर्फनाननाः।

মস্তনা শক্তবঃ পীতা মেদোলা বহ্নিদীপনাঃ।

চই, জীরা, ব্যোষ, অর্থাৎ শুগ্ঠী, পিপ্পালী ও মরিচ, হিন্ধু, দৌবর্চ্চল লবণ ও রক্তচিভারমূল; ইহাদের চুর্গ এবং এই চুর্গ দমষ্টির যোড়শ ভাগ যবের শক্ত; এই দকল দ্রব্য দধির মাতের দহিত মিশ্রিত করতঃ প্রতিদিন উপায়ুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে শরীরগত মেদঃ নক্ট হয় এবং অগ্নি প্রদীপ্ত হইয়া থাকে।

ব্যোষাদ্য শক্তু প্রোগঃ।—
ব্যোষং বিড়ঙ্গ শিগুণী ত্রিফলাং কটুরোহিণীং।
রহত্যে দ্বে হরিদ্রে দ্বে পাঠামতিবিষাং হিরাং।
হিন্পুকেরুকমূলানি যমানী থানাচিত্রকং।
সৌবর্চনমঙ্গাঙ্গীঞ্চ হরুষাঞ্চেতি চূর্ণয়ে্থ।
চূর্ণ তৈলম্বতক্ষোদ্রভাগাঃ স্থামানতঃ সমাঃ।
শক্তুণাং বোড়শোগুণো ভাগঃ সন্তর্পণং পিবেং।
প্রয়োগান্ত্র্যা শাষ্ট্র রোগাঃ সন্তর্পণোখিতাঃ।
প্রয়োগান্ত্র্যা শাষ্ট্র রোগাঃ সন্তর্পণোখিতাঃ।

প্লীহপাঞ্বাময়ঃ শোথো মূত্রক্তছ ্মরোচকঃ।
ছাদোগো রাজ্যক্ষাত কাসখালো গলগ্রহঃ।
ক্রিময়োগ্রহণীদোষঃ খৈত্রং স্থোল্যমতীব চ।
নরাণাংশীপাতে চাগ্নিঃ স্মৃতিরু দ্ধিশ্য জায়তে॥
ব্যোষাদ্যশক্ত প্রয়োগ

শুঠ, পিপুল, মরিচ, বিড়ঙ্গ, সজিনাগুলেরছাল, ছরীতকী, আমলকী, বছেড়া, কট্ কী, বৃহতী, কণ্টকারী, ছরিদ্রা, দাক্ছরিদ্রা, আক্নাদী, আত-ইচ, শালপাণী, ছিঙ্গু কেবুক (কেউনাড়া) মূল, যমানী, ধনিয়া, রক্তচিভার-মূল, গৌবর্চ্চল লবণ, অজাজী (কৃষ্ণ জীরা) ও ছবুমা; এই সকল দ্রব্য সমাননাংশে গ্রহণপূর্বক উত্তম রূপে চূর্ণ করিয়া লইবে। তৃৎপরে উক্ত চূর্ণ সমন্তির সমান তৈল, ম্বত ওম ধূ এবং চূর্ণ সমষ্টির যোড়শগুণ ববের শক্তু একত্র মিশ্রিত করতঃ সন্তর্পণ রূপে (জলে আলোড়িত করিয়া তরল ছাতুর স্থায় করতঃ) পান করিবে। এই উর্ব্ব পান করিলে সন্তর্পণোথিত রোগ সকল বিনষ্ট হয়। এবং ইহা দ্বারা বিংশতি প্রকার প্রমেহ, মূচ্বত, কুঠ, অর্শঃ, কামলা, প্লীহা, পাণ্ডু, শোথ, সূত্রকুল্জ, অরোচক, ছন্তোগ, রাজ্যক্ষা, কাস, খাস, গলরোগ, ক্রিমি, গ্রহণী, শ্বিত (ধ্বল কুঠ অর্থাৎ পাখর) এবং স্থোলারোগ বিন্ধী ছইয়া থাকে। অধিকন্ত ইহা অগ্নি, শ্বতি ও বুদ্ধি প্রবর্ষক বলিয়া জানিবে।

লৌহরসায়নং ৷---

গুগ্গুল্ভালমূলীচ ত্রিফলা খদিরং রুষং।
ত্রিরতালমূবাত্বক্চ নিগ্রু গ্রিচিত্রকং তথা।
থবাং শতপলান্ ভাগান্ তোয়ে পঞাচকে পচেৎ।
পাদশেষে ততঃ কৃত্বা কষায়্মবতারয়েৎ।
পলদাদশকং দ্রেয়ং তীক্ষলোইং স্কচুনিভং।
পুরানসপিষঃ প্রস্থং শর্করাষ্টপলোমিতং।
পঠেন্ডাম্ময়ে পাত্রে স্থলীতে চাবতারিতে।
প্রস্থার্দ্ধি মান্দিকং দেয়ং শিলাজত্ব পলদ্বয়ং।
মরিচং চাঞ্জনং কৃষ্ণা বিড্জানি পলত্রয়ং।
মরিচং চাঞ্জনং কৃষ্ণা বিড্জানি পলত্রয়ং।
মরিচং চাঞ্জনং কৃষ্ণা বিপলং ত্রিকলাম্বিভং।
পলদ্বয়ন্ত কাশীশং স্ক্রমচুনিক্তং বুধৈঃ।
চুর্নং দত্বা সুম্বিতং স্থিয়ে ভাগ্রে নিশ্পয়েৎ।
ততঃ সংশুদ্ধদেহস্ত ভক্ষয়েদক্ষমাত্রকং।
অনুপানং পিবেৎ ক্রীরং জাল্পনাই রুসং তথা।

বাতপ্লেম্বরং শ্রেষ্ঠং কুষ্ঠমেহোদরাপহং।
কামলাং পাণ্ড রোগক শ্বরপু সভগন্দরং।
মূর্চ্ছামোইবিষোনাদ গরাণি বিবিধানি চ।
সূর্চানাং কর্ষণং শ্রেষ্ঠমুদরে পরমৌষধং।
কর্ষরেচ্চাতিমাত্রেণ কুন্দিং পাতালসন্নিভং।
বলাং রসায়নং মেধ্যং বাজীকরণমুভ্রমং।
শ্রীকরং পুত্রজননং বলীপলিতনাশনং।
নাশীরাৎ কদলীকদং কাঞ্জিকং করমর্দ্দকং।
করীরং কারবেল্লক ষট্ককারাণি বর্জ্জয়েৎ॥
লোহ রসায়ন।

গুগ্গুলু, তালমূলী, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, খদিরকাষ্ঠ, বাদক, ভেউড়ীমূল, অলমুষা (মুণ্ডিরী), দাক্চিনি, নিমিনা ও রক্তচিভারমূল; এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ১০০ শত পল অর্থাৎ ।২॥০ সাড়ে বার্দের, পাক নিমিত্ত জল ৫ পাঁচ আঢ়ক এবং পাকাবশিষ্ট কাথ চতুর্থাংশ থাকিতে নামাইয়া বস্তু দ্বারা ছাকিয়া লইবে। তৎপরে ঐ কাথসহ ১২ পল ভীক্ষ্ণ লৌহচূর্ণ, পুরাতন য়ত /৪ চারিদের এবং ইকুচিনি /১ একদের মিশ্রিত করতঃ তাম্রপাত্রে পাক করিবে। পাকশেষে শীতল হইলে মধু /২ হুইসের, শিলাজতু ২ পল, এলাচি ও দাঞ্চিনি মিলিত ৪ তোলা, বিড়ঙ্গ ৩ পল, মরিচ, রসাঞ্জন, ও পিপুল প্রত্যেকে ২ ছই পল, ত্রিফলা (হরীতকী, আম-লকী ও বহেড়া) প্রত্যেকে ২ পল এবং হিরাকসচূর্ণ ২ পল ; এই সকল দ্রব্য উত্তম রূপে চূর্ণ করিয়া তাহাতে প্রদান করিনে। তদনন্তর উক্ত প্রকারে আলোড়ন পূর্ব্বক ছতাদি স্থিপ্ন পাতে রাখিয়া দিবে। রোগীকে বমন, বিরেচনাদি দ্বারা সংশোধিত করতঃ এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় হ্রপ্প ও জালল মাংস রম অভ্নপান মছ মেবন ক্রিভে লিবে। ইহা বাতল্লেম্বরোগ, क्षं, (मह, उत्तत, कामला, পाधुरताग, लायं, छगन्तत, मृष्ट्।, (माह, वियत्नाय, উন্মাদ, বিবিধ গরবিষ ও স্থলত। নাশক বলিয়া জানিবে। এই ঔষধ দেবন দার। দেহ এমন কর্ষিত হয় যে, নাভি পাতালদদুশ হইয়া যায়। পরস্ত ইহা বলকর, রুগায়ন, মেধাজনক, উত্তম বাজীকরণ, জ্রীজনক, পুত্রোৎপাদক ও বলীপলিত বিনাশক। এই ঔষধ দেবনকারী কদলী, কন্দ (৫ল), কাঞ্জিক, করমর্দ্দক (করমোচা), করীর (বাঁশের কোঁড়) এবং করলা উচ্ছে, এই ছয়প্রকার ককারাদিনামক ত্রব্য কদাচ ভোজন করিবে না।

ত্রিফলান্যং তৈলং ।—
ত্রিফলাতিবিষা মূর্কা ত্রিরচ্চিত্রকবানকৈঃ।
নিমারথ্য ষড় এন্থা নপ্তাপ্য নিশাদ্ধীয়ঃ।

গুড় চীক্রষবারক। কুষ্ঠ সর্মনাগরৈঃ।
তৈলমেভিঃ সমং প্রকং সুরসাদি রসাপ্ল তং।
পানাভ্যঞ্জনগণ্ড ষ নস্যবস্তিষু যোজিতং।
স্থানাস্যকণ্যাদীন্জরেথ ককরতান্ গদান্॥

ত্রিকলাদ্য তৈল।

হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, আতইদ, স্থচমুখী, তৈউড়ীমূল, রক্তচিডারমূল, বাদক, নিম্বছাল দোঁলাল, বচ, ছাতিমছাল, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা,
শুলঞ্চ, ইন্দ্রস্থরা (রাখালশশার মূল অথবা নিদিন্দা), পিপুল, কুড়, সর্থপ, ও
শুঠী; এই দকল কল্কদ্রব্য এবং স্থরদাদিগণের ক্লাথদহ যথাবিধানে ৪ দের
তৈল পাক করিবে। এই তৈল পান, অভ্যঞ্জন, নস্থ ও বভিরূপে প্রয়োগ
করিলে স্থলতা, আলস্থা, কণ্ডু ও কফকুত রোগ দকল বিনষ্ট ইইরা থাকে।

স্থরদাদিগণ—ছরদ (এক প্রকার পলাশ বৃক্ষ, কেছ কেছ রক্ততুলদী বলিয়া থাকেন), কয়েৎবেল, দেবলাক, গন্ধতৃণ, কট ফল, কান্মর্দ্ধ, বিড়ক্ত্য, ক্ষবক (ছিথিয়া), অলমুষা (ছাড়মুচা), কাকজগুবা, দন্তী, নিদিনা, পুনর্শবা, গুলঞ্চ, বামনহাটী ও লুজ্জালু।

অয়তাদ্যোগুগ্লুঃ ৷—

অমৃতাক্রটিবেল্ল বৎসকং কলিলং পথ্যামলকানি গুগ্ গুলুঃ। ক্রমরদ্ধনিবং মধুপ্লু তং পীড়কান্থৌল্যভগন্দরঞ্জে ॥ অমৃতাদ্যগুগুগুলু।

শুলক ১ভাগ, ছোটু এলাচি ২ভাগ, বেল (বিড়ঙ্গ) ১ভাগ, কুটজছাল ৪ ভাগ, ইস্তায়ব ৫ ভাগ, ছরীতকী ৬ ভাগ, আমলকী ৭ ভাগ ও গুণ্পুলু ৮ ভাগ এই সকল দেবা প্রোলিখিত মাতায় গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ব করিয়া উপযুক্ত পরিমিক্ত মধু মুিশ্রিভ কুরিয়া দেবন করিলে পীড়কা, স্থোলা ও ভগন্দররোগ নিবারিভ হুইয়া থাকে।

বেকোগুণ্ডলুঃ।---

বাোষাগ্নিত্রিফলামুস্ত বিভূঙ্গ গুণ্গুলুং সমং।

খাদন্ সর্বান্ জয়েদ্বাধীন্ মেদঃ শ্লোনামবাতজান্॥

নবকগুণ্গুলু।

শুঠ, পিপুল, মরিচ, রক্তচিতা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মুধা ও বিড়ঙ্গ; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে দমভাগ এবং ইহাদের সর্বাদমন্তির দমান গুণ্ গুলু লইরা একত্র মিশ্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিবে। ইহা হারা মেনং, শ্লেমা, আম ও বাতজ্বিতরোগ দকল নিবারিত হইয়া থাকে। বিভঙ্গনাগরক্ষার কাললোহরজোমধু। যবামলকচৃপন্ত প্রয়োগঃ স্থোল্যনাশনঃ॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো স্থোল্যদৌর্যাধিকারঃ।

বিজ্ঞা, শুণ্ঠী, যবক্ষার, যব ও আমলকী; ইছাদের সমভাগ চূর্ব ও সর্ব্ব-সমষ্টির সমান কাললোছচূর্ব (বজ্ঞাদি লোছ) এছণপূর্ব্বক মধু মিপ্রিত করতঃ বিশ্বন করিলে স্থোল্যরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য ছইয়া থাকে।

> ইতি জ্রীরামমাণিকা দেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি গ্রন্থে স্থোল্যনোর্গক্ষ্যরোগের চিকিৎনা সমাপ্ত।

অথ সর্বোদরাধিকারঃ।

উদরে দোষসম্পূর্ণে কুক্ষে মন্দো যতোহনলঃ।
তন্মান্তোজ্যানি যোজ্যানি দীপনানি লঘুনিচ।
রক্তশালীন্ যবান্ মুদ্যান্ জাঙ্গলাংশ্চ মুগদিজান্।
পয়োমূত্রাসবারিন্টান্ মধুনীধু তথা পিবেৎ॥

উদররোগে কুন্দিদেশে দোষের (বায়, পিত্ত কফ এই গ্রিদোষের)
সঞ্চর ছইলে জঠরাগ্লি নিস্তেজ হয়; একারণ উদররোগীকে সর্কাণা অগ্লিউদ্দীপক অথচ লখুপাকী দ্রব্য সকল ভোজন করিতে দিবে। রক্তশালি
(ধান্যবিশেষ), যব, মুগ, জাঙ্গল শশু পক্ষীর মাংদের খ্য, ছগ্ন, গোমুত্র,
আসব (মদ্যবিশেষ), অরিই, মধু ও সীধু (মদ্যবিশেষ), এই সকল দ্রব্য
উদররোগীর পক্ষে বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

সিশ্বার স্বেদিতাঙ্গার দদ্যাৎ স্বিশ্ববিরেচনং। বাতোদরং বলবতঃ পূর্ববং স্কেইরুপাচরেৎ। কতে দোষে পরিস্লানং বেউরেদ্বাদদ্যোগরং। তথাস্থানবকাশতাবায়ুর্নাধ্যাপয়েৎ পুনঃ॥

বাতোদররোগে বলবান্ ব্যক্তিকে প্রথমতঃ শ্বেই দেবন করিতে দিবে; তদনন্তর উক্ত স্থিম ব্যক্তিকে স্বেদ দিয়া স্থিম বিরেচন (তৈলাদি) প্রয়োগ করিবে। এবস্থাকারে স্থবিবেচনা দ্বারা উদরের দোয সকল নির্গত হইলে অর্থাৎ উদর উত্তমরূপ কোমল হইলে, বস্তা দ্বারা উদর বেইটন করিরা রাখিবে। যেহেতু বস্ত্র দ্বারা উদর বেইটিত থাকায় অনবকাশ হেতু বায়ু পুনরায় উদরাভ্যন্তরে প্রবেশ করিতে পারে না। অর্থাৎ এমন প্রকারে উদর বেইটন করিতে হইবে যে, যাহাতে বায়ু স্থান পাইয়া পুনর্কার উদরাধ্যান জ্যাইতে না পারে।

নোবাভিমাত্রোপচয়ে ত্রোভোমার্গনিরোধনাৎ।

সীস্তবভাগেরং ষমান্নিভামেবং বিরেচনং॥

উদরে দোষের অত্যধিক সঞ্চর হেতু স্রোতোবঁহা নাড়ী সমূহের মুখরোধ ছ এরায় উদররোগ উৎপন্ন হয়; একারণ উদররোগীকে সর্বাদা যথাসম্ভব বিরেচন প্ররোগ করা কর্তব্য।

> যমানী দৈদ্ধবাজাজী ব্যোষযুক্তং কফোণরী। পিবেন্মধুযুতং তক্রং ব্যক্তামুং নাতিপেলবং॥

ককোদররোগীকে যমানী, দৈন্ধবলবণ, জীরা, শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ। এই সকল ক্রেরের সমভাগ চূর্ণ, উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও অনভিগাঢ় ঈষদম তক্ষ (ঘোল) মিশ্রিত করতঃ পান করিতে দিবে।

বিরিক্তে চ তথা দোবহরৈঃ পেয়াশ্চ তা হিতাঃ॥
উদররোগীর উত্তমরূপে বিরেচন হইলে, দোষের (বায়ু, পিত্ত ও কক্ষের)
বলাবল বিবেচনা করতঃ তত্তদোষনাশক দশমূলাদি দারা পেয়া প্রস্তুত
পূর্মক রোগীকে পান করিতে দিবে।

বাতোনরী পিবেভক্রং শিপেলী লবণান্থিতং।
শর্করা মরিচোপেতং স্বাত্ব পিতোনরী পিবেৎ।
মধু তৈল বচা শুগুী শতাহ্বা কুণ্ঠনৈস্কবৈঃ।
যুক্তং প্লীহোনরীজাতং সব্যোষস্কাদকোনরী।
বদ্ধোনরী তু হরুষা দীপ্যকাজাজী সৈন্ধবৈঃ।
পিবেচছদ্রোনরী তক্রং পিপেলীক্ষোক্রসংযুতং।
ত্যুবণক্ষারলবনৈয়ু ক্তন্তু নিচয়োনরী।
স্ত্রিপাতোনরে সর্বাং যথোক্তান্ধারয়েৎ ক্রিয়াং।
প্লীহোনরে প্লীহহরং কুর্মোন্তরহরং তথা।
গৌরবার্যেচকার্তানাং সমন্দাগ্রতিসারিণাং।
তক্রংবাতকফার্তানাময়ত্বার কম্পতে॥

বাতজনিত উদররোগে পিপুল ও সৈদ্ধবলবণ সহযোগে যথোপযুক্ত মাত্রার তক্র পান করিতে দিবে। পিত্তজনিত উদররোগে শর্করা ও মরিচ চূর্ন সহ স্থবাত্ব তক্র পান করা কর্ত্তব্য। প্লীহোদররোগ্নী মধু, তৈল, বচ, শুন্ঠী, শুলুফা, কুড় ও সৈদ্ধবলবণ সহযোগে তক্র পান করিবে। দকোদর (উদকোদর অর্থাৎ জলোদর) রোগে শুঠ, পিপুল ও মরিচ সহযোগে তক্র দেবন বিধের বলিরা জানিবে। বজ্ঞাদররোগে হ্বুষা, দীপ্যক (বমানী), অজাজী (জীরা), ও সৈদ্ধবলবণ সহ তক্র দেবন করা কর্ত্তব্য। ছিজোদরী রোগে পিপুল চুর্ণ ও মধু

দহ তক্ৰ পান করিবে। সমিপাডোদরক্ষেটো ক্রিকট্ট, বৰকার ও নৈম্বল্পন সহিত্তক্র এবং পূর্ব্বোক্ত বাতজ, পিত্তক্ত ও কৰক উন্ধ্রে ক্ষিত ফ্রিয়া সকলও প্রয়োগ করিবে। প্লীছোদররোগে প্লীছানাশক ও প্লীছোদরনাশক ও প্রতানাশক ও ক্রিছাল ক্রিয়া ও কক্ষ প্রীড়িত ব্যক্তিদিণের পক্ষে তক্র অমৃত সদৃশ উপকারী বলিয়া জানিবে।

নেবদার পলাশার্ক হন্তিপিপালী শিগুকৈঃ।
নাশগবৈঃ সন্যোদ্ধিত্বং প্রনিষ্ঠাতুদরং শকৈঃ।
প্রনিষ্ঠাৎ প্রলেপয়েদিতার্থঃ।
মূত্রান্টাবুনর গাং দেকে পানে চ যোজয়েৎ।
মূত্রীপয়োভাবিতানাং পিপেলীনাং পয়োহশনঃ।
সহস্রহ প্রয়ন্তীত শক্তিতো জারাময়ী॥

দেবদাৰু, পলাশবুকের বীজ, আকশ্দদূলের ছাল, গজপেপুল, সজিনা-দূলের ছাল ও অন্যান্ধ।, এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রার গ্রহণপূর্বক গোগত সহ পেয়ণপূর্বক উন্বে প্রলেপ দিলে (ধীরে ধীরে মর্দ্দন করিলে) উদ্বরেগা প্রশামিত ছইয়া থাকে।

উদরবোণে ৮ আট প্রকাব মৃত্র (মেষ, ছাগ, গো, মহিষ, হস্তী, উক্ত্র, জায় ও গর্দ্দভ, এই ৮ প্রকার জন্তব মৃত্র) দেক ও পানার্থে প্ররোগ করিবে। উদররোগী কেবল মাত্র হ্রপ্পায়ভোজী হইয়া মনসাসীজের ক্ষীরে ৭ বার (মতান্তরে ২২ বার) ভাবনা দিয়া পিপুল দেবন করিবে। রোগী স্বায় শক্তিবিবেচনায় প্রতিদিবস ২ একটী, ২ হুইটী অথবা ৩ তিনটী করিয়া সহজ্র পিপ্রলী পর্যান্ত দেবন করিতে পারে।

শিলা সভুনাং মূত্রাণাং গুণ্গুলুকৈকলন্ত। সুখীকীর প্রয়োগশ্চ শময়পুনরামাং॥

শিলাজত্বি, গোমূত্র, ত্রিফলাগুগগুলু ও মনদাদীজের ক্ষীর; এই সকল দ্রব্য উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে উদররোগ প্রশামিত হইয়া থাকে।

> স্ব ক্পয়সা পরিভাবিত তওুলচূর্বৈবিনির্মিতঃ পূপঃ। উদরমুদারংহিংসাদেয়াগোইয়ং সপ্তরাত্তেণ॥

মনসাসীজের ক্ষীরে তণ্ডুল (চাউল) ভাবনা দিয়া, সেই তণ্ডুল চূর্ণ করিয়া তদ্বারা পিষ্টক (পিটা) প্রস্তুত করিবে। সেই পিষ্টক উপযুক্ত পরিমাণে ন সাতদিন পর্যান্ত দেবন করিলে উদর্রোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

> বিন্দুগ্নতং।— অর্কনীরং পলে দ্বে চ স্বুহীক্ষীরং পলানি ষট্।

পথা কলিপৃকং খাষা সম্পাকং গিরিকর্ণিকা।
নিলিনী ত্রিতা দন্তী শন্ধিনী তিত্রকৃত্তথা।
তাতেষাং পলিকৈর্ভাগৈ মুতি প্রস্থং বিপাচয়েৎ।
অথাস্য মলিনেকোঠে বিন্দুমাত্রং প্রদাপয়েৎ।
যাবন্স্য পিবেদ্বিন্দুন্ তাবদ্বারান্ বিরিচ্যতে।
জলং চত্ত্রপ্ত বিং।

িন্দুগ্নত।

উৎকৃত গবাছত /৪ চাবিদেব জল ।৬ যোলদেব, আকন্দের ক্ষীব ২ পাল, নিদাদীতেব ক্ষাব ৬ পাল এবং কল্কার্থ হবীতকী, কমলাগুড়ী, খ্যাম্বাল তেউড়ী, দোণালুকলেব মজ্ঞা, শ্বেত অপবাজিতাব মূল, নীলবুহুা, তেউড়ীন্মল, দন্তীয়ল, শাথুপুষ্পী এবং বক্তচিতাবমূল, এই দকল দ্রুব্য কুটিত সমান ভ'গে সমুদাবে /১ একদেব। যথানিবমে এই ম্বত পাক কবিবে। উদরবোগীব লোঠে অধিক মল দঞ্জিত থাবিলে, এই বিন্দুম্বত এক বিন্দু মাত্র বোগীকে দেবন কবিতে দিবে। এই মৃত যতবিন্দু বোগীকে দেবন কবান ঘার, ততবার দাস্ত হইবা থাকে বলিব। ইহাব নাম বিন্দুম্বত। ইহা দ্বাবা ৮ প্রকার উদররোগ এবং কুঠানি বিবিধবোগ নিবাবিত হইবা থকে।

নারায়ণচুর্ণং।---

যমানীহরুষাধান্য ত্রিফলানোপকুঞ্চিকা।
কারনী পিপ্পলীমূলমজগন্ধা শঠী বচা।
শতাহ্বা জীরকং ব্যোষং স্বর্ণকীরী সচিত্রকা।
দ্যোক্ষারো পৌক্ষরং মূলং কুঠং লবণপঞ্চকং।
বিড়ঙ্গক সমাংশানি দন্ত্যা ভাগত্রাহং তথা।
ত্রির্দ্ধিশালে দ্বিগুণে শাতলাস্যাচ্চতৃগু নং।
ক্রে নারায়ণো ম চুর্ণো রোগগণাপহঃ।
নৈনং প্রাণ্যাভিবদ্ধিন্তে রোগবিকুমিবাস্থরাঃ।
তক্রেণোদরিভিঃ পেয়ং গুল্মিভির্দ্ধিনায়না।
জানদ্ধবাতে স্বর্ধা বাতরোগে প্রদর্মা।
দ্যিমণ্ডেন বিট্নঙ্গে দাড়িমামুভিরশ্নে।
পরিকর্ভেচ রক্ষান্মেক্ষামুভিরজীর্ণকে।
ভগন্বরে পাণ্ডুরোগে খাসে কানে গল্মহে।
হুর্দেগে গ্রহণীরোগে কুঠে মন্দানলে ক্রে।।

দংক্রীবিষে মূলবিষে সগরে চ ত্রিলোষজে।
তথা হং স্নেহকোষ্ঠেন পেয়মেতত্ত্বিরচনং।
আজমোনা ক্ষেত্রমানী উপকুঞী কাকারাট্র ক্ষকণ জীরকত্ত্বাং।
দন্ত্যা ভাগত্ত্বাং প্রথম ভাগাপেকাহাঃ॥
নাবাহণ চুণ্।

यमानी, श्रृवा धनिया, श्री कि वामलकी, न्द्रण, छे १क श्रिका (कृत्र कीवा ।, रू'वर्गे (केयर कुछ कावरा ।, शिश्रामन (कर्यमाना मही, वह, শলুফ, জীব, শুঠ, পিপুল, মবিচ স্বর্ণ বৈ বক্তিভাব ল, যবসাব, माहिन्त्रात, शुक्क तमन (का छाट्त कुछ) कुछ, शिक्ष । तम (रेम मानान , महलान वर्ग, বিটুলবণ, করকচলবণ ও সাম্ভবীলবণ) ও বিডঙ্গ ওত্তোকে ১ ভাগ, দন্তী-মূল ১ ভাগ, তেউডীমূল ১ ভাগ ও বাখালশশ ব্যন ৬ ভাগ এবং শাতনা (চর্মাকষা) ১২ ভাগা, এই সকল দ্রন্য গ্রহণপুরুক উত্তমন্থে চুর্বিবর্ষা একত্র মিশ্রিত কবিয়া লইবে। এই নাবায়ণ চূর্ব ঔষধ সর্বাপক।ববে।গ নাশক। এই নাবায়ণ চুৰ্ণ উথৰ উপযুক্ত পৰিমাণে উদ্ববোগে ভকেব সহিত, ওন্ত-বোগে বদবীৰ (কুলেৰ) কাথেৰ সহিত, আনাহৰাতবেংগে সুবাৰ সহিত ৰাতবোগে প্ৰদন্ন। (মদোর উপবিস্থ স্বচ্ছভাগ) সহ, মলবোধে দ্ধিব মন্তেব সহিত অর্শোবোগে দাড়িমছালের কাথের সহিত, পরিকর্ত্তিকারেণগে এক্ষামের সহিত এবং অজীণবোগে উষ্ণজল মহ মেবন করিতে দিবে। ভগন্দব, পাণ্ড-বোগ, খান, কান, গলপ্রহ হৃদ্রোগ, প্রহণীবোগ, কুঠ, মন্দাগ্লি জ্ব, দ কী-বিষ, মূলবিষ, গববিষ এবং ত্রিদোষজ বিষবোগে এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রাষ স্মির কোঠবোগী বিরেচনার্থে দেবন কবিবে।

উদরারি রসঃ ।---

রসেন তান্ত্রায়সভন্ম গন্ধং শিলাহরিদ্রো জরপালতুলাং।
শিলাজতুং টক্ষণকঞ্চ সর্বাং বিমদ্য সমাক্ পরিভাবয়েভূ।
নিশু গুকা জুমণ ভূজরাজ চিত্রার্দ্র হোলেন্ প্রমানং।
কাথেন নিম্ন্য দিনপ্রমাণং সিদ্ধোরসঃ সায়েক্রারি সংজ্ঞঃ ব্
মথাশনিভূ ধরপক্ষপাতে তু তথারসোহসং উদরং নিহু নি ॥
উদ্বাবি র্ম।

ভাত্রভন্ম, লৌহ, বস, গন্ধক, মনঃশিলা, হবিদ্রা, জ্বপাল, শিলাজতু ও দোহাগাব থৈ, এই সকল দ্রুগ প্রত্যেকে ৮ এক একভাগ এবং সর্ব্রসমন্তির সমান কজ্জলী প্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যপ্তলি একত্র মিপ্রিড করিবে। তৎপবে উহা নিসিন্দা, ব্রিকটু, ভূদরাজ ও রক্তচিতা, ইহাদেব বসদ্বারা এবং নিম্ন-ছালের কাথে এক এক দিবস ভাবনা দিয়া ৩।৪ বতি মাত্রায় বটীক। এটে করিবে। এই উদবারি রস উষধ উদ্বর্বোগের মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

বড়বাগ্নিমুখোরসঃ।—

ত্রিহন্ধ ত্রিকন্ধ তিকলা দেবদার নিশাদ্বং।
ভলাতকং শিগুকলং কটুকী বিলুকং বস।
ভঠীতুলাং পঞ্চপটুং তুলা দথা বিপেষয়েৎ।
অন্তথ্নগতং দগ্ধং ক্ষারোহয়ং বড়বানলঃ।
ত্রিদিনং মাদিরাযুক্তং পিবেদা কাঞ্জিকৈঃ সহঃ।
মদ্যোথে বাথবা পের্যুদরং গুল্মগ্লনুৎ॥
বড়বায়িম্খ রদ।

হিন্দু ১ ভাগ, ত্রিকটু, ত্রিকলা, দেবদাক, হবিদ্রা, দাক্ষহবিদ্রা, শোধিত-ভেল বিনী জ, দজিনাবনীজ, কট কী, নেলগলেবছাল, বচ এ শুঠী প্রত্যেকে ১ ভাগ এবং সর্কাসমন্তিব সমান প্রিমাণে পঞ্চলবণ, এই সকল দ্রব্য প্রহণ-পূর্ব্বক উত্তম মপে চূণ কবভঃ তুল্য পরিমাণে দ্বিব সহিত পেষণপূর্ব্বক অন্ত-ধূমে দগ্ধ করিয়। ক্ষার প্রহণ কবিবে। এই ক্ষার উব্ধ উপযুক্ত মণ্ডায় মদিরা অথবা কাঞ্জিক সহ সেবন করিলে মদ্যজনিভরোগ, উদ্বন গুল্মবোগ ও শূল-ব্যাধি নিশ্চয়ই বিনস্ক হইয়া থাকে।

ব্ৰহ্মবটী।—

নিড়ঙ্গং দাড়িমং কুঠং নিষ্তৃক্ দহনং বচা।

কুষেণপাঠা দেবদা দে নিশাব্যান্ত্রনখাভ্যা।
রেণুকং রোহিণী চৈলা ত্রিহ প্রত্যেক কার্ষিকং।
কৈপালবী জচুর্নঞ্চ দাতীমূলং পলং পলং।
বেন্দণী রসপ্রস্থ প্রস্থকন্দ প্রাতনং।
পূর্বকন্দর্তং পাচ্যং মুদ্বনিনাম্পাচিতং।
ভক্ষায়ে দ্বর্নইরাং নিতৃাং বেন্দ্রবী।

াঙ্গ, দাড়িমকলেব ছাল, কুড়, নিমছাল, রক্তচিতা, বচ, ত্রিকটু, আকদ্বদাৰু, হবিদ্রা, ব্যাদ্রনখ, হবীতকী, বেশুকা, কট্কী, এলাচি ও গুল, এই সকল দ্রব্যেব চূর্গ প্রভাবেক ২ জোলা, জরপাল বীজ্ঞ ও চূর্গ প্রভাবেক ৮ ভোলা, ব্রৈক্ষাফীব রস /৪ চারিদেব এবং পুরাতন ওলচুল / ইইনের; এই সকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া মূহ অগ্নিদন্তাপে পাক করিয়া গাঁঢ় হইলে যথোপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটীকা দেবন করিলে নিশ্চয়ই উদর্রোগ বিনস্ট হইয়া থাকে।

পিপেলীমূল পিণ্ডাল ত্রিকত্রেন্দু নৈদ্ধবৈঃ। সর্বাচুর্ণসমং লৌহং হন্তি সর্বোণরাময়ং। পিন্ট্রাতো গন্ধরসঃ॥

रेन्द्रःकश्रवः।

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো সর্ব্বোদরাধিকারঃ।

পিপুলমূল, পিগুভি, ত্রিকত্রয় অর্থাৎ শুঠ, পিপুল, মরিচ, হরীভবী, বছেড়া, আমলকী, মূথা, বিভৃত্ম ও দাফটিনি, কপুব ও নৈদ্ধবলবণ , এই সকল তবেরর চূর্ণ দমানভাগ এবং সর্ব্যসফীব সমান লৌছচ্ণ প্রহণপূর্বক একত্র মিশ্রিভ করিয়া লইবে। এই ঔষধ উপযুক্ত পবিমাণে দেবন কবিলে সর্বপ্রকার উদ্বরোগ নিবারিভ ছইয়া থাকে।

ই**ত্তি এ**রামমাণিক্য সেন বির্নিত প্রয়োগ-চিন্তামণি **এস্থে সর্ক্ষবিধ** উদর্বোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শ্লীহযক্তদ্ধিকারঃ।

গুড়পিপ্পলী।-

তৃলৈকসুগুমানার পিপ্পালীক তথৈবচ।
হিন্দু ত্রিকটু চমানং নৈন্ধবানাং দ্বিকাষিকং।
চিত্রকক বিভূকৈব দ্বো ক্ষারো শিখরা ন্তথা।
তালপুষ্প কোকিলাক চিকাক্ষারং সফেণকং।
সুহীক্ষীর সমাযুক্তং প্লীহন্থরবিনাননং॥

শুড়। ১। । দের, পিপুলচ্ণ। ২॥। দেব । বং হিন্ধু, ত্রিকটু, দৈশ্ববলবণ, রক্তচিক্তা, বিড়ন্দ, যবক্ষার, সাচিক্ষার, আপার্থ বীদ্ধের ক্ষার, ভূতন তালের জ্ঞার
ক্ষার, কোকিলাক্ষযুলের ক্ষার, তিন্তাডীক্ষার, সমুদ্রফেণ ও মনসাসীদ্ধের ক্ষীর
প্রত্যেকে ৪ চারিতোলা। যথাবিধানে ইহা পাক করিয়া লইবে। ইহা শ্লীহা ও
জ্বর-বিনাশক।

রহদ্গুড়পিপ্পলী।—
বিড়ঙ্গং তাষণং হিন্ধু কুঠং লবণপঞ্চকং।
দ্বিকারং ফোকং চবাং শ্রেয়দী কৃষ্ণজীরকং।
ভালপুষ্পোদ্ভবং ক্ষারং নাড্যাঃ কুম্বাগুকদা চ।
অপানার্গোদ্ভব ক্ষারং চূর্ণানি চিত্রকদা চ।

এত সামিলিতা চ্বাৎ পুরাণো দিওণো ওড়ঃ।
ওড়তুলাং প্রদাতবাং চ্বাকৈব কণোড়েবং।
শাদেদগুলেরে নিতাং প্রীহানং হস্তি ভ্তরং।
প্রমহান্ পাওুরোগক শোথং জীর্ণজরন্তবা।
কামলাং ত্রিদোষোথক বহ্নিমান্টরং পরং।
সর্বেষাং বাতরোগাণাং বালানাক প্রশাসতে।
ভবিভাগং নির্বিতকৈতৎ তুর্মগুড়পিপ্রালী॥

वृश्म अफ़्लिश्नानी।

বিডল, শুঠ, পিপুল, মরিচ, হিন্ধু, কুড, সৈন্ধবলবণ, সৌবর্চচলবণ, বিট্লবণ, করকচলবণ, শান্তরীলবণ, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সমুদ্রকেণ', চই, হরীভকী, ক্ষজীবা, ভালপুষ্পের ক্ষাব, গেটেদুর্কার স্নার, কুড্মাণ্ডের ক্ষার,
অপামার্গের ক্ষার ও রক্তচিভারমলের ক্ষার, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক
এক ভাগ, এই দ্রব্য সমষ্টির দ্বিগুণ পুবাহন গুড, এবং গুড়েব সমান পিপুলচ্ণ।
সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করতঃ প্রতিদিন উপাত্ত মাত্রান দেবন কাবলে
হস্তর প্লীহা প্রমেহ, পাণ্ডুরোগ, শোগ, জীর্ণজ্ব, কামলা, ত্রিদোষজ্ঞ আগ্রিমান্দ্য এবং সর্বপ্রকার বাতরোগ বিনন্ট হইবা গাকে। বিশেষতঃ এই প্রমধ্ব বালকদিগেব অতীব উপকারী বলিয়া জানিবে। এই বুহুদ্ গুড়িপিপানী
অ্বিশীকুমারন্বয় কর্ত্বক নির্মিত বলিয়া প্রাসদ্ধ আছে।

মহারোছি চকং দ্বতং।—

রোহিতকাৎ পলশতং কোন্যেদ্দরাতকং।
সাধরিত্বা জলদোলে চতুর্ভাগাবশেষিতং।
দ্বত প্রস্থা সমাবাপ্য ছাগক্ষীর চতুপ্ত নং।
তিমিন্দল্যাদিমার কলকান সর্বোংস্তানক্ষসামিতান্।
ব্যোবং কলতিকং হিন্ধু যমানী ভুমুরং বিড়ং।
অভা দীং কৃষ্ঠলবনং দাড়িমং দেবদাক চ।
পুনর্নাং বিশালাক ষবক্ষারং সপৌষ্করং।
বিড়লং চিত্রককৈব হরুষাং চবিকাং বচাং।
এতৈন্ন তং বিপক্ত স্থাপয়েন্ডান্তনে, শুভে।
সাময়েভ্রিপলাং মাত্রাং ব্যাধিং বলমপেক্ষ্য চ।
রসকেনাথ যুষেণ প্রসা বাপি ভোন্ধরেং।
উপযুক্তে দ্বতে ত্যান ব্যাধীন হন্যাদিমান্ বহুন্।

[**]

যক্ত প্লীহোদরকৈব প্লীহশুলং যক্তথা।
কুক্দিশুলক হচ্ছুলং পাশুশুলমরোচকং।
বিবদ্ধশুলং শময়েৎ পাণ্ডুরোগং সকামলং।
ছন্টাতীসারশমনং তন্দ্রীজ্ববিমোক্ষণং।
মহারোহিতকং নাম প্লীহন্ম বিশেষতঃ॥
মহারোহিতক্ষত।

উৎকৃষ্ণ গবাঘ্ত /৪ চারিদের, ছাগাছ্পা।৬ যোলদের : কাঁথার্থ রোহিতক (রোড়া বাররনা ফল)।।। গাড়ে বারদের ও বদর (কুল) এক আড়ক, পাকার্থ জল একজাণ, পাকারশিষ্ট কাথ। ৬ যোলদের : কল্কার্থ তিকটু, ত্রিফলা, হিপু, যমানী, তিৎলাউ বিটলবণ, জারা, কৃষ্ণলবণ, দাড়িমফলের ছাল, দেবদাক্ষ, পুনর্নবা, রাখালশশার্যুল, যবক্ষার, পুক্তর্যুল (অভাবে কুড়), বিড়ল, রক্তচিতার্যুল, হরুষা, চই ও বচ, প্রত্যেকে ২ তোলা। যথানিয়মে এই মত পাক পুর্বক একটী উৎকৃষ্ট পাত্রে রাখিয়া দিবে। এই রোহিতক মত প্রতিদিন রোগার ও ব্যাধির বলাবলান্থনারে ০ পল মাত্রা পর্যন্ত দেবন করা যাইতে পারে। এই প্রয়ে মাংসরল, মুগাদির যুয় অথবা হ্যামছ দেবিতব্য। ইহা দারা যক্ত্র, প্রীহোদর, প্লীহশুল, যক্তমূল, কুক্তিশুল, হদ্মশূল, অর্নেচক, বিবদ্ধশূল, পাণ্ডুরোগা, কামলা, ছর্দ্দি, অভাগার, জ্ব ও তন্ত্রাবা বিন্দ্ট হইয়া থাকে। বিশেষতঃ ইহা প্লীহারোগের মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

মানান্য গুড়িকা।—

মানমার্গায়তা বাদা স্থিরা দৈয়ব চিত্রকং।
নাগরং তালগুওক প্রত্যেকস্তু ত্রিকাহিকং।
বিড় দৌবর্চলক্ষার পিপেল্যশ্চাপি কার্যিকাঃ।
এভচ্চ নীকৃতং ফর্বং গোমুল্ফাচ্নে পচেৎ।
সান্দ্রীভূতে গুড়ী কুর্যাৎ দহা ত্রিপল্মাক্ষিকং।
যক্তং প্রীহোদরহরো গুল্লার্শোগ্রহনীহরঃ।
যোগঃ পরিকরো নামা চাগ্রিদন্দীপনঃ পরঃ॥
মানাদ্য গুড়িকা।

মান (স্বনাম খ্যাত বড় কচু), অপামার্গ, গুলঞ্চ, বাসক, শালপানী, সৈন্ধবলবণ, রক্তচিভারমূল, শুগুী ও ভালের ভূতন জটা; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে ৬ ছন্ন ভোলা, বিট্লবণ, দৌবর্চ্চললবণ, ষবক্ষার (দোরা) এবং পিপুল ইহাদের চূর্গ প্রত্যেকে ১ ভোলা; এই সকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া এক আঢ়ক গোমুত্র সহ পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে উহা গাঢ় ছইয়া আদিয়াছে, তখন চূলী ঘইতে নামাইয়া উহার সহিত ও তিনপাল মধু
দিল্রিত করিয়া লইবে। এবং উপযুক্ত মাত্রায় গুড়িকা প্রস্তুত করতঃ প্রত্যন্ত ভাহার এক একটা দেবন করিবে। এই মানাদ্যগুড়িকা ঔষধ যকুৎ ও প্লীছো-দর, গুল্ম, অর্শঃ ও গ্রহণীরোগ নিবারক, অগ্নিসন্দীপক ও বিরেচক বলিয়া জানিবে।

তালপুর্পৌদ্ভবক্ষারঃ সগুড়ঃ প্লীহনাশনঃ।
ভলাতকাভয়াদাদী গুড়েন সহ মোদকঃ।
সপ্রাত্রাহিহন্তােষ প্লীহানমপি দারুণং।
পিপেলীং নাগরং দন্তীং সমাংশং বিশুণাভয়াং।
চূর্ণং পীতং বিড়ার্দ্বাংশং প্লীহন্মুক্তবারিণা॥

- ১। তালপুষ্পের ক্ষার গুড় मह मেरन করিলে প্লীছা বিনম্ট হইয়া থাকে।
- ্। শোধিত ভূগাত চ বীজ, হরীতকী ও জীরা সমভাগে এছণ পূর্বক চুর্গ করিয়া গুড় সহ মিশ্রিত করতঃ গুড়িকা প্রস্তুত করিয়া দেবন করিলে অতি দাকণ মীহাও বিশ্বই হইয়া থাকে।
- ু। পিপুল, শুণ্ঠী ও দন্তীমূল চুন প্রত্যেকে এক এক ভাগা, সর্বসমষ্টির দ্বিত্ব হরীতকী চুর্গ এবং সর্ববস্থির আর্দ্ধাংশ বিট্লবণ একতিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রার উঞ্জল সহ সেবন করিলে প্রীহা বিন্ধী হইরা থাকে।

অর্কলবণং।—

তার্কপত্রং সলবণমন্তর্ধুমিং দহেত্তঃ।
মন্ত্রনা তথ পিবেথ ক্ষারং গুলাগ্লীহোদরাপহং॥
তার্ক লবণ।

আকন্দের পাতা সমভাগ দৈশ্ববলবণ সহ মৃত্তিকাপাত্তে অন্তর্গুমে দক্ষ করিয়া লইনে। এই ক্ষার প্রতিদিবস উপযুক্ত পরিমাণে জল সহ সেবন করিলে গুলা, প্লীহা ও উদমুরোগ নিশ্চয়ই বিনক্ট হইয়া থাকে।

অগ্নিমুখং লবণং।—

দন্তীচন্দন চিত্রাণাং ত্রিব্রতং ত্রিকলা তথা।
সমভাগেন তচ্চুর্ণং তৎসমং সৈশ্ববং তথা।
স্বু হীক্ষীরেণ সংমদ্যু স্থাল্যামেব চ সম্পাচেৎ।
ষট্রক্তিকা প্রমাণেন ভক্ষয়েদ্বয়সঃ ক্রমঃ।
থক্বৎ প্রীহানমুদরং গুলারোগং বিস্ফ্রিকাং।
থিত্রকং কুঠরোগঞ্চ গৃপ্রসীমামদোষজং।
মেদোর্দ্ধিং বৃহৎকুঠং গলরোগসমন্বিতং।

শনরেদাশু রোগাংস্ত তুলামগ্রির্যথোখিতঃ ৷ লবণাগ্রিমুখে! নাম বিশেষাৎ যক্তুদরে ৷

व्यश्चिम्र्थलवन ।

मसीমূল, রক্তচন্দন, রক্তচিতারমূল, তেউড়ীমূল, হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া প্রত্যেকে একএকভাগ এবং দৈশ্ববলবণচুর্গ সর্বাম ক্রির সমান পরিমাণে প্রাহণপূর্বাক মনসাসীজের ক্ষীরে মর্দ্দিত করতঃ স্থালীতে করিয়া অগ্নিসংযোগ পাক করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৬ রতি হইতে বয়ঃক্রমান্ত্রসারে দেবন করিলে যক্কং, প্লীহা, উদর, গুল্ম, বিস্ফৃচিকা, থিত্র, কুঠ, গ্রুসী, আমজনিত মেদো-রোগ, বৃদ্ধিরোগ, মহাকুঠ সকল ও গলরোগ বিন্দ্র হইয়া থাকে। বিশেষতঃ এই অগ্নিমুখলবণ ঔষধ যকুৎ কৃত উদর্বোগের মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

শিবাবটী।—

অভয়ামরিচং কুষ্ঠং টক্ষণক সমাংশকং।
সর্বেষামপি তুল্যক দদ্যাকৈত্রপালজং রজঃ।
স্থাকীরৈকটি কার্য্যা যথা বিন্নকলায়কং।
বটাত্রয়ং শিবামেকাং ভক্ষয়েত্রক্ষবারিণা।
যক্ত প্লীহোদরহরী সামবাতং মহারুজং।
তঠালাং গলগওক গওমালাং স্থলারুণং।
তামজ্বং ত্রণং ঘোরং শোষং পাও হলীমকং।
হন্যাচিত্রাবটী নাম শিবেন ভাষিতং পুরা।
শিবাবটী।

হরীতকী, মরিচ, কুড় ও সোহাগার খৈ প্রত্যেকে সমভাগ এবং সর্ব-সমন্টির সমান শোধিত জনপাল চূর্ণ একত্রিত করিয়া সন্সাসীজের ক্ষীর সহ পেয়ণপূর্বক কলারপ্রমাণ বঢ়ীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার গটা বঢ়ী ১ একটা হরীতকী সহ উষ্ণ জলের সহিত সেবন করিলে যুক্ত্র, প্লীহা, উদর, আমবাত, ভাটীলা, গলগত, গওমালা, আমজ্বর, ত্রণ, শোগ, পাণ্ডু ও হলীমকরোগ ভারোগ্য হইয়া থাকে। এই শিবাবটা শুষ্ধ শিব কর্ত্বক কথিত জানিবে।

বহ্নিকুমারে। রসঃ।—
বহ্নিরামট টক্ষণ সৈশ্ববং ধান্যজীরকৈঃ।
যমানী মরিচং শুঠী লবকৈলা বিভূপকং।
প্রত্যেকং ভোলকচূর্ণং লৌহচূর্ণস্ত ভৎসমং।
রসন্ত গন্ধকন্তালি পলৈকা কজ্জলী শুভা।
স্থাতেন মধুনাখাদ্যং রসো বহ্নিকুমারকঃ।

শ্রকং প্লীহাদরানাহং হস্তি গুলাং হলী মকং।
বলবর্ণাগ্নিজননঃ কান্তিপুর্ফিবিবর্দ্ধনঃ।
মাষমেকং প্রকর্ত্তবাং যুক্তা বা ক্রটিবর্দ্ধনং।
শ্রীমদাহণনাথেন রচিতো বিশ্বসম্পদি॥
বহিক্ষার রস।

রক্ত চিতায় মূল, হিন্দু, টঙ্গন, দৈশ্ববলবণ, ধনিয়া, জীরা, যমানী, মরিচ, শুগী, লবন্ধ, ছোটএলাচি ও বিড্ল; ইহাদের চ্র্ প্রত্যেকে ১ তোলা, লৌহচ্র্ন দর্মাদমফির সমান এবং কজ্ঞালী ১৬ জোলা এহণপূর্মক উপযুক্ত-মাত্রার বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ ম্বত বা মধুসহ সেবা। ইহা যক্তৎ, প্রীহা, উদর, আনাহ, গুলা ও হলীমক রোগ নাশক; বল, বর্ণ ও অগ্রিজনক এবং কান্তি ও পুফিবর্জক। ইহা একমান পর্যান্ত মাত্রার রুদ্ধি অম্বক্তমে দেবিত্বা। এই বহ্নিকুমার রুদ্ধ উষধ বিশ্বের মঙ্গলজন্ম শ্রীমদ্গহন নাথ কর্ত্বক প্রকাশিত বলিয়া জানিবে।

রোহীতকান্যং লৌহং।— রোহীতক সমাযুক্তং ত্রিকত্রয়ুত্ত্বুয়ঃ। প্লীহানমগ্রমাংসঞ্চ যক্কতঞ্চ বিনাশয়েৎ॥ রোহিতকাদলৌহ।

রোছিতক, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, মুথা, বিড়ম, দারুচিনি ও লোহ; প্রত্যেকে সমভাগে গ্রহণপূর্বক চুর্ণ করিয়া লইবে। এই চুর্ন উপযুক্ত মাত্রায় অহ্নপান বিবেচনায় সেবন করিলে প্লীহা, অগ্রমাস ও যক্কমোগ বিনক্ট হুইয়া থাকে।

বঙ্গেরো রসঃ।—
স্তভ্য বঙ্গভ্য পলৈকৈকং বিমর্দ্ধেরে।
গন্ধকং ত্রিফ্লা তাব্রং প্রত্যেকক চত্তুঃপলং।
অর্কফীরে দ্রিন্থ মর্দ্ধাং সর্বত্রমেকত্রীকৃতং।
বদ্ধাথভূবেপাচাং পুটেকেন সমুদ্ধরেও।
পারদং গন্ধককৈব পশ্চাদ্দেরং বিচক্ষণঃ।
এব বঙ্গেশ্বরোনাম প্রীহগুল্মোদরপ্রয়েও।
য়তে গুঞ্গেরং লেইং নিক্ষং শেতপুনর্নবাং।
গবাং মূক্তৈঃ পিবেচ্চানু রজনীং বা গবাং জলৈও॥
বক্ষের রস।

রসনিন্দুর ৮ ভোলা, বন্ধভস্ম, ৮ ভোলা, গন্ধক, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া ও ভাজভস্ম প্রত্যেকে ৩২ ভোলা, সমল্য দ্রুলঞ্জি কেন্দ্রিক সাম্যাণ এক দিবস আকলের আঠ। দ্বারা মর্দ্দনপূর্বক মৃত্তিকার গর্ত্তমধ্যে পুটপাক করিয়া লইবে। তৎপরে উদ্ধার সহিত উপযুক্ত পরিমাণে কজ্ঞলী মিল্রিড করিয়া ২ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ঘৃত বা গোমুত্রসহ সেবনপূর্বক পশ্চান ২ ভোলা খেতপুন্দ্রনার রস অথবা গোমৃত্র সহ হরিদ্রা-চুর্ন দেবন করিবে। এই বদ্বেশ্বর রস ঔষধ প্লীহা, গুল্ম ও উদররোগ বিনাশ করিয়া থাকে।

লোকনাথ রসঃ 1---

পারদং গন্ধককৈব সমভাগং বিমর্দ্রয়ে ।
মতাভ্রং সর্ববৃল্যঞ্চ পুনস্তকৈব দাপয়ে ।
রসান্ধিতালোহঞ্চ লোহতুল্যঞ্চ তান্তকং ।
বরাটিকা চ ভস্মাথ রসতন্তিগুণক্ষু ক ।
নাগবল্লীরসেনেব মর্দ্রমেয়ত্বতো ভিষক্ ।
পুটেশাজপুটেনেব সাঙ্গলীতং সমুদ্ধরে ।
খাদেঘল্লন্বয়ং তন্মাতক্রকারু পিবেৎ স্থীঃ।
মধুনা শিপেলীচূর্ণং সগুড্যা হরীতকীং ॥
লোকনাথ রস।

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, গৃতাত্র ২ ভাগ, লৌহ ২ ভাগ, ভাত্রভস্ম ২ ভাগ ও কড়িভস্ম ৩ ভাগ; সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র করিয়া পানের রুসে মর্দনপূর্বক গজপুটে পাক করিয়া শীতল হইলে ঔষধ গ্রহণ করিবে। এই ঔষধ ৩ রতি পরিমাণে সেবন করিয়া পশ্চাৎ ভক্র, মধুমিশ্রিত পিপুলচূর্ণ অথবা গুড়মিশ্রিত হরীতকীচূর্ণ দেবন করিবে।

রহলোকনাথো রসঃ।—

শুদ্ধসূতং তথাগদ্ধং খলে কৃত্বাথ কজ্জ্লীং!
স্তত্তল্যং জারিতাল্রং সংমদ্যি কন্যকাদ্রবিঃ।
গোলং কৃত্বা ততো লোহং তাত্রশ্ব দিন্তনীকৃতং।
কাক্যাচীরসৈঃ পিইন গোলং তাভ্যান্ত কার্য়েৎ।
স্তান্নবস্তনং দদ্যাদ্বনাটিভস্মজং রজঃ।
পিইন জ্বীরনীরেন মূযাযুগ্যং প্রকল্পয়েৎ।
তন্মধ্যে গোলকং ন্যায় যত্ত্বেনাচ্ছান্য়েন্তিষক্।
শরাবসংপ্টে কৃত্বা মৃত্ত্মলবনামুভিঃ।
শরাবসন্ধ্যালিপ্য আতপে শোষ্য়েৎ ক্ষনং।
ততো গ্রুপুটে পক্তা স্বাক্ষ্শীতং সমুদ্ধরেৎ।

পিফু। তু সর্ববৈদ্ধথাং স্থাপরেন্ত্রাঙ্গনে শুভে।
শিবং সংপূজ্য সগণং দ্বিজাতীন্ পরিতোষ্য চ।
শূলকাউবিধকৈব উদরং সর্বরূপিণং।
কাংস্যক্রোড্ম গ্রমাংসং শূলকৈব ভগদরং।
বহ্নিদ্যুক্ত শমরেল্লোকশাথো রসোভমঃ।
হব্রি কুর্তং তথা মেহং পাণ্ডুরোগামপিতকং।
উদরারিরয়কৈব দৃষ্টো বাল্লসহস্রশঃ॥
রহলোকনাথ রস।

পারা ১ ভাগ, গদ্ধ ১ ভাগ ও জারিভাজ ১ ভাগ গ্রহণপূর্বক মৃতকুমারীর রদে মর্দিভ করিয়া পিগুাক্তি করিলে। পরে উহার দহিত পারার
দ্বিগুণ ভাসভস্ম ও লৌহ মিশ্রিভ করিয়া কাকমানীর রদে পেষণ করিয়া
লইবে। তদনন্তর পারার ১ নয়গুণ কড়িভস্ম মিশ্রিভ করতঃ জ্বন্তীরনেবুর রদে মর্দ্দনপূর্বক পিগুাক্তি করিয়া মৃষামধ্যে স্থাপনপূর্বক শরাবসংপুটে রাখিবে। পরে দেই শরাবের সন্ধিস্থান পোড়ামাটী, লবণ ও জল
দ্বারা প্রলিপ্ত করিয়া স্থ্যাতপে শুকাইয়া গজপুটে পাক করতঃ শীতল
হইলে ঔষধ গ্রহণ করিবে। প্রমথগণসহ শিবকে পূজা করিয়া ব্রাহ্মণদিগকে পরিতৃষ্ট করতঃ অভ্পান বিবেচনার এই ঔষধ দেবন করিবে।
অফীবিধ শূল, সর্ব্ববিধ উদর, কাংস্থকোড় (যাহাকে ভাষায় "কড়া" বলা
যায়), অগ্রমাংস (অগ্রমাস). ভগন্দর, অগ্রিমান্দা, কুঠ, প্রমেহ, পাণ্ডুরোগ
ও অঙ্গপিতরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে। এই বহুলোকনাথ রস ঔষধ শীহা,
যক্ত ও উনররোগের মহৌযধ বলিয়া জানিবে।

প্রীহগজকেশরী তাত্রং।---

জারিতং তাত্রচূর্ন গগণং মান্দিকং তথা।
পলার্নং পৃটিতং আত্মানিমন্থললোন্ত বৈঃ।
রিসভূ স্পলো থৈশ্ব লোহপাত্রবিশার দৈঃ।
তৎপ্রক্ষেপ চূর্নস্ত দলাৎ সমরি চাগতঃ।
ব্যোধং কলত্রিকং হিন্দু যমানী তুমক বিড়ং।
অঙ্গাজী ক্ষলবনং দাড়িমং দেবদাক চ।
ভক্ষয়েৎ প্রাতক্ষাম মতেন মধুনা সহ।
যক্ত প্লীহোদর কৈব প্লীহশুলং ক্রমং তথা।
কুক্দিশুলক হাছ্লং পার্শুলমরোচকং।
বিবদ্ধশুলং শময়েৎ পাপ্রোগং সকামলং।

অগ্নিঞ্চ কুরুতে দীপ্তং বড়বানলসন্নিভং। সর্ব্বরোগছরো ছেষ শিবো বাণাস্থরং যথা। শ্লীহগজকেশরী তাম।

জরিত তাম, অত্র ও স্বর্ণমাক্ষিক প্রত্যেকে ৪ তোলা মাত্রায় এছণপূর্বক গণিরারী ও ভৃত্বরাজের রসে মর্দিত করিয়া লৌহপাত্রে পূটপাক দিবে। তৎপরে উছার সহিত মরিচ. শুঁঠ, পিপুল, হিন্তু, যমানী, তিৎলাউ, বিট্লবণ, জীরা, কৃষ্ণলবণ, ত্রিফলা, দাড়িমফলের ছাল ও দেব নিফ, ইছাদের সমভাগ চূর্ণ মিপ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় স্বত ও মধুসহ সেবন করিলে যকুৎ, প্লীহা, উদর, প্লীহশুল, কুক্ষিশুল, হারমুল, পার্শ্বশিল, অরোচক, বিবদ্ধশুল, পাঞ্রোগ, কামলা ও অগ্নিমান্য নিবারিত ছইয়া থাকে।

তাত্ৰকণ্পং

দৌবৃষ্ঠলং রসং গন্ধং কর্ষদ্বমিত ন্ততঃ। সর্কৈঃ সমং ভবেতাম্রং জমীরাম্মেন মর্দ্ধয়েৎ। সূর্যাবর্ত্রসৈঃ পশ্চাৎ কর্ণমোচরসেন চ। যোজয়েভীব্রঘর্মেয়ু যাবৎ সর্ব্ব স্থু জীবতী। জমীরদ্য রদৈভূ যো বংশদণ্ডেন চালয়েৎ। দৃঢ়ে শিলাময়ে পাত্রে চূর্ণয়েদতিশোভনং। तिकिकानिकरमरेनव यो जार मोमव्याविध । জীর্ণে ভুঞ্জীত শাল্যরং মুতক্ষীরদমন্বিতং। হন্ত্যমূপিতং বিবিধং গ্রহণীং বিষমন্ত্রং। চিরজ্বং প্লীহণদং যক্তদোগং সূত্র্জ্রং। অগ্রমাংসং তথা শোথং কাংস্যক্রোড়সমুদ্ভবং। কমঠঞ্চ তথা শূলমুদরং সর্বরূপিণং। ধাতুরদ্ধিকরং রুষ্যং বলবর্ণকরং শুভং। রসায়নমিদং শ্রেষ্ঠং বাজীকরণমুক্তমং। সন্যোবহ্নিকরকৈব সর্বরোগহরং পরং। द्यामरत्रक ७रेथरेव७९ क्रामरेनव প্रवाधिरेजः। মুখশুদ্ধিবিধাতব্যাপথৈঃ পূগ্যমন্থিতৈঃ। তাত্রকল্পমিদং নামা সর্বরোগপ্রশান্তরে॥

ভাত্রকল্প।

দৌবর্চন লবণ, পারদ ও গন্ধক প্রত্যেকে ২ ভোলা পরিমাণে এবং তাত্রভন্ম দর্বসমন্তির সমান মাত্রায় এহণপূর্বক এক দিবস জ্বন্ধীররসে, এক দিবস স্থ্যাবর্ত্তরসে এবং একদিন কর্ণমোচ রসে মর্দ্দনপূর্বক ভীত্রতর স্থ্যাতপে শুষ্ক করিয়া লইবে। পরে পুনর্বার শিলাময় পাত্রে স্থাপনপূর্বক জ্বনিরসে আরুত্ত করতঃ বংশদগুদ্ধারা চালিত (মর্দিত) করিয়া শুষ্ক স্থাররদে আরুত্ত করতঃ বংশদগুদ্ধারা চালিত (মর্দিত) করিয়া শুষ্ক ইলৈ চূর্ণ ব্রিয়া লইবে। এই চূর্ণ প্রয়ন্থ অন্ধ্রপান বিবেচনায় একরতি হইতে ২ মাবা পর্যান্ত দেবনপূর্বক পশ্চাৎ ক্রমশঃ মাত্রায় কমাইবে। এই প্রথম সেবনপূর্বক জীর্ণ হইলে রোগীকে মৃত ও হ্রয় সহযোগে পুরাতন শালিধান্তের অন্ধ ভক্ষণ করিতে দিবে। ইহা দ্বারা অন্ধ্রপিত্ত, এইণী, বিষমজ্বর, প্রীহা, যক্ত্রৎ, অগ্রমাস, শোথ, কাংস্থাকোড় (কড়া), কমঠরোগ, শূল ও সর্ববিধ উদররোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে। পরস্ত ইহা ধাতুর্ভ্রিকর, র্য্য, বল ও বর্ণজনক, প্রেচরসায়ন, উত্তম বাজীকরণ, সদাই অগ্রিদীপ্তিকর এবং সর্বপ্রকার বাাধি বিনাশক বিলিয়া জানিবে। এই ঔষধ দেবনান্তে মুখশুভ্রির নিমিত্ত স্থারী মহ পান খাইবে।

দরভন্ম ৷—

দরং সৈদ্ধবগদ্ধক ভন্মীকৃত্য প্রযোজমেৎ। প্লীহানমগ্রমাংসক যকৃতক বিনাশয়েৎ॥ ইতি প্রয়োগিজ্ঞামণৌ প্লীহযকুনধিকারঃ।

দরভস্য।

দর (শখ্য), দৈশ্ববলবণ ও গদ্ধক, এই দ্রব্যত্তর সমভাগে প্রাহণপূর্ব্যক অগ্নিদ্বারা ভস্ম করিয়া লইবে। এই ভস্ম উপযুক্তমাত্রায় অন্তপান বিবেচনা করিয়া দেবন করিলে প্লীহা, অপ্রমাংস ও যক্তংরোগ বিনফ্ট হইয়া থাকে। ইতি জ্রীয়ামমাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি প্রস্থে প্লীহা ও যক্তংরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

উরোগ্রহ্নিদানং।

অভিষ্যানি শুর্বার্নীনি শুক্ষমূলাশনানিচ। সাগ্রমাংসং ষক্তৎ প্লীক্লোঃ সদ্যোবদ্ধিং সমাগতে। উরোগ্রহং তদা কুন্দো কুপিতো কফমারুতো। সমস্তং শঙ্করং ঘোরং রুক্ষং স্পর্শাসহং শুরু।

আধ্বানং কুক্ষিকচ্ছোথো বাতবিমৃত্তরোধিতা। তক্রারোচক শূলানি তান্যলিঙ্গানি নির্দিশেৎ॥ ॰ ইতি উরোগ্রহনিদান।

অভিযানিদ দ্রব্য, গুৰু অন্ন এবং শুক্ষমূলা ভোজন দ্বারা কফ ও বায়ু প্রকুপিত হইয়া কুক্ষিদেশে গমনপূর্বক অগ্রমাংন, প্লীহা ও যকুৎ বর্দ্ধিত করতঃ উরোগ্রহরোগ উৎপাদন করে। এই রোগে শরীরের কফতা, স্পর্শা-সহতা, গুৰুতা, আগ্নান, কুক্ষিশোথ, হান্যশোথ, বাত, বিষ্ঠা ও মূত্রের রোধ, ভন্দা, অকচি, শূল এবং অন্সাস্ত বিবিধ উপদ্ৰব (লক্ষণ) জন্মিয়া থাকে।

ইতি উরোগ্রহনিদান।

অথ চড়ীচিকিৎ গা।

ছঙীতি যস্য খ্যাতিক্যাধেশ্চিকিৎসামাহ। ডত্র স্বেদনং যুক্ত্যা দহনং রক্তমোক্ষণং। **ीटेक्क**र्वित्त्रहरेन्द्रतकः लब्दनक श्रायां करत्र । পুত্রজীবক শিগুত্বক্ স্থ্যাবর্ত্তদলোদ্ভবাঃ। রদা একৈকশঃ কোফাদিশো বা রামঠান্তিতা। সপঞ্চলবণাঃ পেয়াস্থিরদগুড়সুকলিগভা। হদেগিং ভেদঙ্গং তীক্ষ্ণ ভিষণভাপি যোজয়েৎ॥ ইতি ছড়ীচিকিৎসা।

ছড়ী (হ্লোগবিশেষ) রোগে স্বেদ, দহন, রক্তমেক্ষণ, তীক্ষবিরেচন ও লজ্জন প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য। পুত্রঞ্জীবক (জিয়াপুঁতি), সজিনার ছাল এবং সূর্যাবর্ত্তর পাতা ইহাদের রম, হিন্দু দৈদ্রবাদি পঞ্চবিধ লবণ ও গুড় এই দকল দ্রব্য দহযোগে পেয়া প্রস্তুত করিয়া ইবছুক্ত অবস্থায় দিবদে একবার অথবা হুইবার পান করিলে তীঙ্গভেদিস্নিত হঠেবা (ছড়ী) নিশ্চ-রুই আরোগ্য হয়।

ইতি ছড়ীরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শোপাধিকারঃ।

কফে তু রুষ্ণা দিকতা পুরাণ পিণ্যাক শিগত্তমা প্রলেপঃ। কুলথশুগুণী জলমূত্র সেকশ্চণ্ডাগুরভ্যামনুলেপনঞ ।

পুনর্ম বিশ্বতিরদ্গুড় চী সম্পাক পথ্যামরদার কলকং।
শোথে ককোথে মহিষাক্ষযুক্তং মূত্রং পিবেদ্ধা সলিলন্ত থৈষাং।
পৃশ্বিপর্নী ঘনোনীচ্য শুগুী সিদ্ধন্ত গৈতিকে।
দশমূলং সদাশস্তং বাতশোথে বিশেষতঃ।
বাতজে তৈলমেরণ্ডং বিগ্রহে প্রসা পিবেৎ॥

- ১। শৈষিক শোথে পিপুল, বালুকা, পুরাতন সর্যপের খৈল, সজিনার ছাল ও অত্যীমূল, এই সকল দ্রেব্য জ্লমছ বাটিয়া ওদ্বারা ফুলাস্থানে প্রালেপ দিবে।
- ২। কুল্থি কলাই ও শুগীর কাথ প্রস্তুত করিয়া অথবা গোমূত্র সহ সিদ্ধ উহাদের কাথ দারা শোথরোগীর শরার ধৌত করিয়া, চোরপুষ্পী ও অগুরুচন্দন জলমহ পেয়ণ পূর্বক তদ্ধারা প্রলেপ দিবে।
- ৩। পুনর্না, শুঠা, তেউ ট্রামূল, গুলঞ্চ, সোঁদালের আঠা, হরীতকী ও দেবদাক; ইহাদের কল্ক অথবা কাথ মহিযাক্ষ, গুণ্গুলু ও গোমুত্র মহ মেবন করিলে কফজনিত শোথরোগ নিবারিত হইর। থাকে।
- ৪। চাকুলে, মুখা, বালা ও শুগুী সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই কাথ সেবন করিলে পৈত্তিক শোথ নয় হয়।
- ৫। দশ্যল অর্থাৎ বেল, শোণা, গান্তীর, পাঞ্চল, গনিয়ারী, শালপানী, চাকুলে, বৃহতী, কউকারী ও গোলুর, এই সকল কুটিত দ্রব্য সমান ভাগে সমতে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই ক্বাথ অথবা হ্রন্ধ গহ এরও তৈল দেবন করিলে বাতজনিত শোথ নিবারিত হইরা থাকে।

অভয়া দার মধুকং তিক্তা দন্তী সপিপ্পলী।
পটোলং চন্দনং দার্কী ভারমাণেন্দ্রবারণী।
এবাং কাথঃ সমিপিকঃ মরপু জ্বদাহহা।
বিদর্প তৃষ্ণা সন্তাপ সন্নিপাত বিষাপহঃ।
শীতবীব্যৈহিমজলৈ রভ্যঙ্গাদীংশ্চ কারয়েং।
বিল্পত্রসং পাতু শোষণং শ্বয়থো তিজে।
বিট্সঙ্গে তৈব হুর্ণায়ি বিদদাৎ কামলাম্বপি।
দশমূলরসে বাঁপি গুগ্গুলুঃ শোধনাশনঃ॥

হরীতকী, দেবদাক, যফিমবু, কট্কী, দন্তীমূল, পিপ্পলী, পল্ভা, রক্ত-চন্দন, দাক্ষহরিদ্রা, বলাডুমুর ও রাখালশদা; এই দকল দ্রব্য দমভাগে দমু-দায়ে ২ ভোলা, পাকনিমিত্ত জল ৩২ ভোলা, পাকবিশিষ্ট ক্লাথ ৮ ভোলা। এই কাথে গাব্যন্থত প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে শোপ, জ্বর, নাহ, বিনর্প, তৃঞ্জান

সন্তাপ, সরিপাত ও বিষদ্যেষ বিনয়্ট হইয়া থাকে।

শোধরোগীকে শীতবীর্যা দ্রব্য ও ছিম জলের দ্বারা অভ্যঙ্গাদি প্রয়োগ করিবে। ত্রিদোষিক শোথ, অর্শঃ ও কামলারোগীকে মলরোধ অবস্থায় দাস্ত করাইবার জন্ম বেলপাতার রম পান করিতে দিবে।

বিল্বাদি দশম্ল সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জন ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে শোধিত গুণ্গুলু প্রক্ষেপ দিয়া পান ক্রিলে নিচ্ছাই শোথ আরোগ্য হইয়া থাকে।

পুনর্বা দ্বতং ।—
পুনর্বা কাপ কলক সিদ্ধং শোণহরং দ্বতং ॥
পুনর্বা দ্বত ।

গবাস্বত /৪ চারিদের; ক্লাথার্থ পুনর্নবা /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ।৬ সের এবং কল্কার্থ পুনর্নবা /১ একদের। যথানিয়মে এই ৃষ্ত পাক করিবে। ইহা শোথ নাশক।

পঞ্কোলাল্য স্বতং ৷—

রসেহপি পাচয়েৎ সর্পিঃ পঞ্চকোল কুলথয়োঃ। পুনর্বায়াঃ কল্কেন ঘুতং শোথবিনাশনং॥ পঞ্চোলাদা ঘৃত।

গব্যস্থত /২ দের ; কাথার্থ পঞ্চােল এবং কুল্থ কলার /৮ দের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ ।৬ যোলদের। কল্কার্থ পুনর্মবা /১ দের। যথা-নিয়মে এই স্থত পাক করিবে। ইহা শোথনাশক।

> বর্ধাভূ শৃঙ্গবেরাভ্যাথ কল্কো বা মর্বশোথজিৎ। সিংহাপ্তায়ভভল্টাকী ক্বাথং কৃত্বা সমাক্ষিকং। পিত্তশোথং জয়েজ্জফ্লঃ কাসং খাসং বৃমিং ভ্রমিং॥

পুনর্মবা ও আদা সমভাগে লইয়া জলদ্রহ পেষণপূর্বক দেবন করিলে শোথ বিন্ট হয়।

বাসক, গুলঞ্চ ও কণ্টকারী, এই দ্রব্যত্রর সমভাগে সমস্তে ২তোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে। • সিকিতোলা মরু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে পৈত্তিক শোণ, শ্বাস, কাস, বমি ও জ্বমিরোগ বিনম্ট হয়।

পুনর্বা লেহঃ।—

পুনর্বায়তাদার দশমূলাঢ়কে পচেৎ। আদ্রুকি স্বরসপ্রস্থে গুড়স্থ তুলাং পচেৎ। তৎসিদ্ধং ব্যোষ চবৈয়লা তুক্পত্রৈঃ কার্ষি কৈঃ পৃথক্। চুৰ্ণীক্তে। কিপেচ্ছীতে মধুনা কুড়বং লিছে । লেইঃ পৌননবোনাম শোপশুলনিস্কৃনঃ। খাস কাসাকচিহরো বলবর্ণাগ্রিবর্দ্ধনঃ॥ পুনন্বালেই।

পুনর্বা, গুলঞ্চ, দেবদাক ও দশমূল; এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমস্তে ২ সের, জল ।৬ ষোলসের, শেষ /৪ সের। এই ক্রাথ/৪
এবং /৪ আদার্য রম মহ ।২॥। সের গুড় পাক করিতে থাকিবে। যখন
দেখিবে গাঢ় হইয়া আগিয়াছে, তখন উহাতে ত্রিকটু, চই, ছোলএলাচি, দাকচিনি ও তেজপাতা, ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ন ২ তোলা মাত্রায় নিক্ষেপ
করিয়া আলোড়নপূর্বক নামাইবে। পরে শীতল হইলে /১ সের মধু
মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই পুনর্নবালেহ শোথ, শূল, খাস, কাস ও
অক্চিনাশক এবং বল, বর্ণ ও অগ্নিবর্দ্ধক।

কংস হরীতকী।—

দ্বিপঞ্চনশমূলতা পিবেৎ ক্ষায়ে কংশেইভয়ানাঞ্চ শতং গুড়াচচ।
লেহে সুসিদ্ধেচ বিনীয়চুৰ্ণং ব্যাষ ত্রিসৌগন্ধা মূষাস্থিতেচ।
প্রাস্থানিত বিনীয়চুৰ্ণং ব্যাষ ত্রিসৌগন্ধা মূষাস্থিতেচ।
প্রাস্থানিত মধুনঃ সুশীতে কিঞ্চিচ চুর্ণাদিশি যাবশ্কাৎ।
প্রকাভয়াং প্রাশ্য ততশ্চ লেহাচছু ক্তিং নিহন্তি শ্বয়পুং প্রবৃদ্ধা।
কাশ্যামবাতাবস্গম্পিভং বৈবর্ণ মূলানিল শুক্রদোষান্॥
কাশ্যামবাতাবস্গম্পিভং বৈবর্ণ মূলানিল শুক্রদোষান্॥

কংসহরীতকী।
দশমূল /৮ সের, পাকার্থ জলে ৬৪ সের, শেষ। ৬ ষোলসের। এই ক্লাথসহ

দেশমূল সদ সের, পাকাব জলে তচ দের, লেব চি বোলসের। এই কাখসছ ১০০ একশত হরীতকী ও ॥২॥০ সের গুড় পাক করিয়। গাঢ় ছইলে, উহাতে ক্রিকটু, দাকচিনি, তেজপত্র ও ছোট এলাচি চূর্ব কিঞ্চিৎ নিক্ষেপ-পূর্বক আলোড়ন করিয়া নামাইবে। পরে শীতল হইলে তাহাতে /২ সের মধু ও কিঞ্চিৎ পরিমাণে যবক্ষার চূর্ব মিশ্রিত করিয়া লইবে। প্রতিদিন ১ একটা হরীতকী ও ৪-তোলা মাত্রায় এই লেহ সেবন করিবে। ইহাদ্বারা শোথ, কাস, জ্বর, অফচি গুলা, প্রীহা, পাণ্ডু, কার্মা, আমবাত, রক্তপিত্ত, অমপিত্ত, বৈবর্ণ এবং মূত্র, বায়ু ও শুক্রের দোষ নিবারিত ছইয়া থাকে।

পুনর্বাদ্যং মৃতং।—

পুনর্বা চিত্রক দৈবদার পঞ্চোষণ ক্ষার হুরীতকীনাং। কল্কেন পকং দশমূলভোয়ে য়ভোভমং শোথনিস্থনক॥ পুনর্বাদ্য ছত।

গব্যছত /৪(সর; কাথার্থ দশমূল /৮ সের, পাকার্থ জ্বল ৬৪ সের,

শেষ। ৬ ষোলদের। কল্কার্থ কৃতিত পুনর্নবা, রক্তচিতা, দেবদাঞ্চ, মরিচ, শুঠী, পিপুল, রক্তচিতা, পিপুলমূল, যবক্ষার ও হরীতকী সমভাগৈ সমস্তে /২সের। যথানিয়মে এই শ্বতপাক করিয়া দেবন করিলে শোথ নক্ট হয়।

মাণক স্বতং।---

মাণকষায় কল্কাভ্যাং স্বতপ্রস্থ বিপাচয়ে । একজং দ্বন্দ্ব জং শোথং ত্রিদোষঞ্চ ব্যপোহতির মাণক শ্বত।

গব্যন্থত /৪ সের, কাথার্থ মাণকচু /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ।৬ ষোল-সের। কল্কার্থ মাণকচু /১সের। এই ঘত পাক করিয়া পান করিলে একজ, ছন্দ্বজ ও ত্রিদোযজ শোথ নম্ট হয়।

ক্ষীরং শোপহরং দারুবর্ষাভূ নাগরৈঃ শৃতং।
পেরাং বা চিত্রক ব্যোষ ত্রিরদ্দারু প্রদাধিতাং॥
দেবদারু, পুনর্নবা ও শুগী অথবা রক্তচিতা, ত্রিকটু, তেউড়ী ও দেবদারু,
শমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ২৪ ভোলা ও গব্যহ্র্য় ৮ ভোলা।
এই হুগ্নাবশিষ্ট কাথ পান করিলে শোথ আরোগ্য হইয়া থাকে।

গুক্মূলাদ্যং তৈলং ! —

শুক্ষমূলক বর্ষাভূ দারু রাস্বা মহৌষধৈঃ। প্রক্রমভ্যঞ্জনাতৈলং দশূলং শ্বয়থুঞ্য়েৎ॥ শুক্ষমূলাদ্যতৈল।

তিলতৈল /৪ চারিসের; কল্কার্থ শুষ্কগূলা, পুনর্নবা, দেবদাফ, রাম্মা ও শুগ্ঠী সমভাগে সমুদায়ে /১ সের এবং জল ।৬ যোলসের। এই ভৈল পাক করিয়া গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে বেদনাগুক্ত শোথ আরোগ্য ছয়।

সমুদ্রশোষ তৈল:।—,

নিগু তী দশমূলী চ ধুস্কুরক করঞ্জকো।
ভক্ষমূল জয়াবিশ্ব রাশ্বা দারু পুনর্নবা।
এষাক প্রকৃতে কাথে কাথে শাখোটজে তথা।
কটুতৈলং পচেৎ প্রস্থং সৈন্ধবং কল্কপাদিকং।
সন্নিপাতোদ্রবা শোখা যে চান্যে শ্লেল্লগিভজাঃ।
শিরঃকর্ণগতা যে চ শ্লীপদানি তথৈবচ।
গলগতং রধুরদ্বিং শোখং সর্ববান্ধসম্ভবং।
কর্ণশোধং দন্তশোধং হনুমূলাক্ষিসম্ভবং।

এতান্ সর্বান্ নিহন্ত্যাশু বাড়বাগ্নিরিবায়ুখিং। সমুদ্রশোষণন্নাম তৈলং কেনাপিকীর্ন্তিতং ॥ সমুদ্রশোষ তৈল।

সর্বপত্তল / ৪দের; ক্লাথার্থ নিসিন্দা, দশমূল, ধুতুরাবীজ, ডহরকরঞ্জা ও নাটাকরঞ্জছাল, শুক্ষমূলা, জয়ন্তীপত্র, শুণ্ঠী, রাম্মা, দেবদাক্ত, এবং পুনর্নবা, সমভাগে সমস্তে ঠিদের, জল ৬৪দের, শেষ।৬ যোলদের এবং শেওড়া (শাড়া) /৮ দৈর, জল ৬৪ দের শেষ।৬ যোলদের। কল্কার্থ সৈদ্ধবলবণ /১ একদের। যথানিরমে এই তৈল পাক করিয়া গাত্তাদিতে মর্দ্দন করিলে সর্বপ্রকার শোথ, শ্লীপদ, গলগণ্ড, ত্রয়্ল, বৃদ্ধিরোগ এবং কর্ণ, দন্তমূল, শিরঃ, হয়্ল, চক্ষু প্রভৃতি সর্ব্ধাদেহের শোথ নিবারিত ইইয়া থাকে।

শোথশার্দ্ধ তলং।—

দশমূলং করঞ্জ দিরুবার অচো জয়া।
কৃষ্ণপুস্ত রপ্তীকং ক্লুমাঢ়কমাহরে ।
জলদোনে বিপক্তব্যং চতুর্গাংশাবশেষিতং।
কালং গৃহীত্বা পক্তব্যং প্রস্থং তৈলক সার্বপং।
কলৈকমূলক বর্ষাভু দারু দার্কী সনাগরৈঃ।
রামা জাতীকুলথেশ্চ কট্ফলৈঃ সাধিতং জয়ে ।
সন্নিপাতং ক্লরং ঘারং কাসশ্বাসক দারুবং।
শোপং সর্বাপ্তজং হন্যাৎ একাপ্তস্থং বিশেষতঃ।
শ্বীপদং রপ্পক্তিশিক শিরোজ্ঞারুজং জয়ে ।
শোপশাদ্ লকং নাম তৈলং হারীতনির্বিতং।
শোপশাদ্ লকং নাম তিলং হারীতনির্বিতং।

সর্ঘণতৈল /৪ চারিদের কাথার্ছ দশমূল, ডহরকরঞ্জাল, নিসিন্দাছাল,
জয়ন্তীপত্র, কৃষ্ণপুতুরা, লাটাকরঞ্জ, এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমুদায়ে
লে ৬৪ দের, শেষ ।৬ ষোলদের। কল্কার্থ শুক্ষমূলা, পুনর্মবা,
াক্ছরিদ্রা, শুগী, রাস্ধা, জাতীফল, কুল্থিকলাই ও কট্ফল,
মন্তে /১ একদের, যথানিয়দে এই তৈল পাক করিয়া গাত্রাকরিলে সন্নিপাতজ্বর, কাস, খাস, শোথপ্রভৃতি বিবিধ রোপ
র। বিশেষতঃ ইহা একজিশোথের মহৌষধ্ব বলিয়া জানিবে।

• রহচেছাথশার্দ্দ লং তৈলং।—

মূলকং দশমূলঞ্চ কণামূলং পুনর্না।
প্রত্যেকং প্রস্থানায় জলেচাইন্তনে প্রেছ।

তেন পাদাবশেষেণ তৈলদ্যাদ্ধাঢ়কং পচেৎ।
দাপয়েতৈলত্ল্যক গোমুত্রং কুশলাভিষক্।
মূলকক মৃতাশুঠী পটোলক পুনর্বা।
পাঠায়ান্চ বলামূলং বালোনীরক শিগুকা।
হরীতকী কণাশুঠী বচা পুক্ষরমূলকং।
নিপ্ত ভীন্দ্রবাশ্যামা করঞ্জং বাদকং তথা।
রাম্মাবিড্রুং চব্যক্ষ হরিদ্রে দ্বে চ ধান্যকং।
ত্রিক্ষারং কেনকং পত্রং দেবদারু সচিত্রকং।
শাকরকণবিল্বক মঞ্জিষ্ঠা চ ততঃ ক্রমাৎ।
প্রত্যেকং বিপলোন্ধানং পেষয়িত্বা পুনঃ কিপেৎ।
অভ্যঙ্গেনতু তৈলদ্য শোখং হন্তিমনুত্র্যং।
নানাশোখাংন্ট নশ্যন্তি বাতপিত্তককোন্ত্রাঃ।
মাংস্ত্র্যান্ট যে কেচিদ্বিশেষোপজলাত্রাঃ।
অবশ্যং নিজ্জলাদেহা ভবিষ্যন্তি ন সংশ্রঃ।
বিপরীতং মহাশোথং হন্তি সত্যং ন সংশ্রঃ॥

রহচ্ছোথশার্দ্ ল ভৈল।

সর্বপতিল /৮ দের; কাথার্থ—গুক্ষগুলা, দশমূল, পিপুল ও পুনর্বা এই সকল কুটিত দ্রবা প্রভাকে /২ সের, জল ৮গুণ, শেষ চতুর্থাংশ কল্কার্থ—শুক্ষমূলক, গুলঞ্চ, শুগুী, পটোলপত্র, আকনাদি, বেড়েলারমূল বালা, বেণামূল, সজিনাছাল, হরীতকী, পিপুল, শুগুী, বচ, পুক্ষরমূল নিসিন্দা, ইন্দ্রযান, খামালতা, করঞ্জ, বাসক, রাম্লা, বিভূপ, চই, হরিদ্রা দাফহরিদ্রা, থনে, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সোহাগা, সমুদ্রকেণ, ভেজপত্র রক্তচিতা, তিনিশছাল, শুগুী, বেলমূলছাল ও নিঞ্জি।; এই সকল কুটিং দ্রব্য প্রত্যেকে ২ পল। যথানিয়মে এই ভৈল পাক করিয়া গাতাদিতে মর্দ্দন করিলে সর্ববিধ শোথ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

শুড়পিপ্পলীগুণ্ঠীনাং চুৰ্ণং শ্বরপুনাশনং।
আমাজীর্ণপ্রশমনং শূলত্মং বস্তিলোধনং।
পুরং মূত্রেন সংসেব্যং পিপ্পলী বাল্পরোহিরতা।
শুড়েন ভাবরাতুল্যং বিশ্বং বা শোধরোলিবাং;
ভূনিয়বিশ্বকলকং জগ্ধাপেরঃ পুনর্নবা কাথঃ।
অপহরতিনিয়তমাশু শোধং স্বাদ্ধিনং নৃবাং।

অঙ্গাজিপাঠা ঘনপঞ্চোল ব্যান্ত্রীরজনাঃ সুখতোরপীতাঃ।
শোপৃং চিরোত্থং চিরজং প্রবৃদ্ধং নিল্পন্তি ভূনিম্ব মহৌষধে চ।
গুড়, পিপুল ও শুঠী সমভাগে পেষণপূর্বক সেবন করিলে শোথ,
আমাজীর্ণ ও শূল নম্ভ হয় এবং বস্তি শোধিত হইয়া থাকে।

োামূত্রসহ শোধিত গুণ্গুলু, অথবা ত্রগ্ধসহ পিপুল; কিম্বা গুড় সহযোগে শুঠী বা চিরভা ও গুঠীর কল্কগছ পুনর্গর কাথ সেবন করিলে শোথরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

জীরা, আকনাদী, মুখা, পঞ্জোল, কন্টকারী, হরিদ্রা, চিরভা ও ওঠী; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় লইরা চূর্গ করতঃ যথামাত্রায় উফজল সহ দেবন করিলে বহুকালজাত শোথ বিনক্ট হইরা থাকে।

কারগুড়িকা :---

কারদ্বরং স্যাল্লবণানি চত্তার্যারোরজোব্যোর ফলত্রিকে চ।
সপিপলীমূল বিভূন্দনার মুন্তাজমোনামরদার বিলৃং।
কলিন্ধকশ্চিত্রকমূল পাঠের্যাইট্যাহ্বরং সাতিবিষং পলাশং।
সহিন্দুকর্মস্ত থশুক্ষচূর্ণং দোণন্তথা মূলকশুন্তাকানাং।
স্যান্ত্রেমনস্তহ্গলিলেনসাধ্য মালোদ্য বাবদ্যনমপ্যদগ্ধং।
ন্যান্ত্রেমনস্তহ্গলিলেনসাধ্য মালোদ্য বাবদ্যনমপ্যদগ্ধং।
ন্যানং ততঃ কোল্যমানমাত্রং ক্রত্বাস্থক্ষাং বিধিনা প্রযুপ্তাৎ।
প্রীহোদরাং শ্চাত্রহলীমকার্শঃ পাত্র্বময়ারোচকশোষ্যান।
বিস্তিকাগুল্মগরাশ্রীশ্চ স খাস্কায়ান্ প্রত্রদেৎ স কুন্তান।

সেবির্চলং সৈদ্ধবঞ্চ বিভ্যোছিদ্দেব চ। সচতুর্লবণ্যত্র স্যাজ্জলমউগুণস্তবেৎ॥ কারগুডিকা।

যবক্ষার, সাচিক্ষার, সৈদ্ধবলবণ, সৌবর্চেললবণ, বিট্লবণ, করকচ্লবণ, লৌছচূর্ণ, ত্রিকটু, ত্রিক্লা, পিপুলমূল, বিড়ন্ধনার, মুথা, বন্যমানী, দেবদাৰু, বেলমূলেরছালে, ইন্দ্রয়ব, ব্রক্তচিতারমূল, পাঠা, যফিষরু, আতইচ, পলাশছাল ও হিসু, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ তোলা মাত্রায় লইয়া চূর্ণ করিয়া রাখিবে। শুষ্কমূলা ৩২ সের প্রহণপূর্বক ৮ গুণ জলে ক্ষার জল প্রস্তুত করতঃ তৎসহ পূর্ব্বোক্ত চূর্ণগুলি পাক করিয়া ঘন হইলে নামাইবে। এই প্রয়য় ২ তোলা মাত্রায় সেবন করিলে প্রীহোদর, হলীমক, আর্শঃ, পাণ্ডু, আরোচক, শোখ, শোষ, বিস্কৃতিকা, গুল্ম, গার্রদোষ, আশারী, খাদ, কাম ও কৃষ্ঠরোগ বিনক্ত ইইয়া থাকে।

শোণশার্দুলোরসঃ —

কটুকং ক্র্যেবণং দন্তী বিড়ঙ্গং ত্রিফলাং তথা।

চিত্রকং দেবদারুক তির্দ্বারণপিপালী।
চূর্ণানিতানিতুল্যানি দ্বিগুণং স্যাদরোরজঃ।
ছাগীকীরেণ সংপেষ্য বটিকাং শোপনাশিনীং
শোথশাদুল্বন।

কট্কী, ত্রিকটু, দস্তীমূল, বিড়ন্ধ, রক্তচিতা, দেবদাক, তেউড়ীমূল ও ু, গজপিপুল; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে লমান পরিমাণে এবং দর্শবদাফীর দ্বিভণ পরিমাণে লৌহ গ্রহণপূর্বক মমস্ত দ্রব্যগুলি চূর্গ করিরা ছাগছমে পেষণ করতঃ ৪া৫ মতি মাতার বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ শোখ-নাশক।

শোথোদরারিরসঃ !--পুনর্ণবামুতাবহ্নি গ্রাফীমাণ্সীধ্বঃ। चूर्यावर्षार्कमृतक पृथन्ये भनः जता। পলদ্বয়ং কৌশিকস্য গন্ধকস্য পলং তথা। পর্লার্ক্ত পারদং দিদ্ধে বক্ষামাণক নিক্ষিপেৎ। কঙ্গত বহ্নিকদানাং গ্ৰাফী খণ্ডকৰ্ণকং। পলাশন্য চ বীজানি কঞুকী ভালমূলিকা। ত্রিফলায়াঃ ক্রিমিরিপোস্তিরদকীভবরুথা। সূর্য্যাবর্ত্তগ্রাক্ষ্যাশ্চ বর্হা ভূবজ্রবল্লিকাং। এষাং লৌহসমং মাত্রং স্লিগ্ধেভাণ্ডে স্থুগোপিতে। সংস্থাপ্য ভক্ষয়েঝাত্রা মনুপানঞ্চ যুক্তিতঃ। যে চ শোথাস্তুর্বারা শ্চিরকালানুবন্ধিনঃ। তে সর্বেব নাশমায়ান্তি নাত্রকার্য্য বিচরণা। নাতঃ প্রতর্থ কিঞ্চিৎ শোখোদর্হিনাশন্থ। অনুগ্ৰাক্ষা ভাগদ্বং কৈচিৎ শরাক্ষীবাপাঠঃ শরাক্ষী অপরাজিতা ॥

শোথোদরারিরস।

পুনর্বা, গুলঞ্চ, রক্তচিতা, রাথালশনা, মানকচ্. স্থ্যাবর্ত্ত (শৃণ্টা) ও আকল, ইহাদের মূল প্রত্যেকে ৮ পল মাত্রার গ্রহণপূর্বক ৬৪ সের জলসহ পাক করিয়া চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। তৎপরে শোহিত গুগ্-গুলু ২ পল, গন্ধক ১ পল, পারদ, কান্সুষ্ঠ (পার্বতীয় মৃত্তিকাবিশেষ), রক্ত-চিতারমূল, মানকচু, রাখালশনারমূল, খণ্ডকর্ণক (শকরকন্দ আলু), পলাশবীজ্ঞ, কঞ্চুকী (ঔষধিবিশেষ), অপরাজ্ঞিতা, তালমূলী, ত্রিফলা,

্বিড়ক্ষ, তেউড়ীমূল, দন্তীমূল, স্থ্যাবর্ত্ত, পুনর্ববা ও বজ্রবন্ধিকা (হাড়যোড়া), ইহাদের চূর্ণ সমভাগে সমস্তে ৮পল এবং লৌহ ৮পল গ্রহণপূর্ব্বক পূর্ব্বোক্ত কাথনহ বিদ্যান্ত করতঃ যথানিয়মে পাক করিয়া একটী স্মিদ্ধ পাত্রমধ্যে রাখিয়া দিবে। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে সর্ববিধ্ব শোথ বিনষ্ট হইয়া থাকে। এই ঔষধে অপরাজিতার পরিবর্ত্তে ২ ভাগ রাখালশনা লইলেও হইতে পারে ১

শোথেকু চ প্রয়োক্তব্যঃ পাপ্তুরোগহরো রসঃ। লৌহং নবায়সঞ্চাত্র প্রযোক্তব্যং সদৈবহি। শোথেবিষনিমিত্তে তু বিষোক্ত সন্মতা ক্রিয়া। রক্তাতীসারীশোথার্ডো ন শক্যন্তক্তিকিৎসিতুং॥

দর্ববিধ শোথরোগে পাণ্ডুরোগ নাশক রস (পারদাদি ধাতু সংযুক্ত বঁটী উষধ) এবং নবায়স লৌহ সর্বাদা প্রয়োগ করিবে। বিষক্তনিত শোথরোগে বিষরোগে কথিত ক্রিয়া সকল প্রয়োগ করিবে। রক্তাতিসাররোগী এব শোথপীড়িত ব্যক্তি অতীব ছন্চিকিৎস্ত বলিয়া জানিবে।

গ্রাম্যাক্তানূপপিশিত লবণং শুক্ষশাকং নবারং।
'গৌড়ং পিফারং দধিক্ষশরং নির্জ্জলং মদ্যমন্ত্রং।
খানাবল্লুর সমমসমমথো শুর্বসাত্যং বিদাহি।
স্বপ্নকারাত্রৌ শ্বয়পুগদবান্ বর্জ্জয়েইমথুনক্ষ॥

ইতি প্রয়োগচিত্তামণো শোথাধিকারঃ।

গ্রাম্য, জলজ ও আনুপ পশুপক্ষীর মাংস, লবণ, শুষ্কশাক, নবার, গুড়-বিকৃত দ্রব্য, পিউক, দধি, কুশরা (খিচুড়ী), নিজ্জনমণ্য, অস্ত্র, অঙ্কুরিত ভৃষ্টয়ব, বল্পুর (শুষ্কমাংস), একত্র পথ্যাপথ্য ভোজন, গুরুদ্রব্য ভোজন, অস্বাভাষিক ভোজন, বিদাহিদ্রব্য ভোজন, দিবা নিদ্রা এবং মৈথুন এই সকল ্শাথরোগী অবশ্য অবশ্য পরিজ্ঞাগ করিবে।

> ইতি জীরামমাণিক্য দেন ক্রিটিত প্রয়োগ-চিন্তামণি গ্রন্থে শোথরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত !

অথ র্দ্ধিব্রধাধিকার

সুরদাদিগণঃ।—
শ্বেরদ্বিং উষ্ণবীর্বৈয়ে ত্রাপির্বৈটঃ প্রলেপয়েৎ
পীতদারু ক্যারণ পিবেমুত্রেণ সংযুতং।
ব্বিরং মেদঃ সমুখন্ত লেপয়েৎ সুরদাদিনা।

শিরোবিরেকজবৈর্কা সুখোকৈর এ সংযুতে।
সংস্বেদ্যমূত্ত্বভবাং বস্ত্রপটেন বেষয়েৎ।
সীবন্যাঃ পার্বভোহধন্তাৎ বিধ্যেদ্রীহি মুখেন বা ।
নিগু গ্রী তুলদী ক্রন্দী রহতী কণ্টকারিকা।
পুনর্ণবা চ মুনিভিঃ সুরসাঃ ষট্প্রকীর্কিতাঃ॥

শ্লেমজনিত বৃদ্ধিরোগে উষ্ণবীর্যা (স্বক্রতোক্ত অজগন্ধাদি) ক্রব্য গোসূত্র সহ পেষণপূর্বক অওকোষে প্রলেপ দিবে।

দেবদাক ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা শেষ ৮ তোলা। এই ক্লাথ গোমুত্র সহ পান করিলে ক্লেমুজনিত হৃদ্ধিরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

মেদোজনিত ইদ্ধিরোগে গোময় পিওদারা কোরতে স্বেদ দিয়া, স্থরদাদি-গণ অথবা শিরোবিরেচক ঔষধ সকল গোমূত্র সহ পেযণপূর্ব্বক ঈষহয়ঃ করিয়া অগুকোষে প্রলেপ দিবে।

মৃত্রজ্বনিত র্দ্ধিরোণে কুরণ্ডে স্বেদ প্রদানপূর্ব্বক অগুকোষ বস্তু খণ্ড দ্বারা বেষ্টন করিয়া বন্ধন করিয়া রাখিবে। (কারণ ইহাতে মুদ্ধেরচর্ম্ম কোমল হও-রায় অস্ত্রচালন কালে অধিক বেদনা অহুভূত হয় না)। তৎপরে ত্রীহিমুখ নামকু অস্ত্রদ্বারা সীবনীর (শিশের অগ্রভাগ হইতে গুহুদেশ পর্যান্ত যে একটী দেলাই করার স্থায় দাগ দেখা যায়, তাহাকেই দীবনী বলিয়া জানিবে।

নিসিন্দা, তুলসী, ব্রহ্মীশাক, রহতী, কন্টকারী এবং পুনর্ণবা, এই মিলিত। ছয়টী দ্রব্যকে শহরসাদিশণ বলা শিয়া থাকে।

চন্দনং মধুকং পদ্মমুশীরং নীলমুৎপলং।
ক্ষীরপিষ্টৈঃ প্রদেহঃ স্থাদাহশোথরুজাপহঃ।
পঞ্চবল্কলকল্কেন সম্বতেন প্রলেপনং।
সর্বাং পিতহরং কার্যাং রাক্তজে রক্তমোক্ষণং।
গুণ্গুলুং রুবুতিলয়া গোর্মুত্রেণ পিবেন্নরঃ।
বাতরদ্ধিং নিহন্ত্যাশু চিরকালানুবদ্ধিনীং।
সক্ষীরমা পিবেতৈলং মাংগনেরওসম্ভবং।
পুনর্ণবায়াইন্তলং বা তৈলং নারায়ণত্তথা।
লেপেবস্তো রুবুইন্তলং পেয়ং বা কনলামুনা।
শাঙ্খোপরি চ কর্ণাস্তে ত্যক্ত্য সীবনিমাদরাং।
ব্যত্যসোদ্বাদিরাং বিধ্যেদন্তর্দ্ধি নিবর্তয়ে॥

तङ्ग्रहम्मन, यस्मिष्, शमामून, त्वशातमून अवः नीनर्द्धाः देशामत कम्क

ছম্মাহ পোষণপূর্বক অওকোষে প্রলেপ দিলে, রদ্ধি জনিত দাহ, শোথ ও বেদনা দ্বিবারিত হইয়া থাকে।

ু বট, যজ্জতুমুর, অশ্বখ, পাকুড় ও বেতদ এই পঞ্চবক্ষের বন্দল সমভাগে গ্রহণপূর্বক বাটিয়া মৃতদহ মিশ্রিত করতঃ অওকোষে প্রলেপ দিলে পিত্ত-জনিত দর্ববিধ বৃদ্ধিরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

রক্তজ বৃদ্ধিরোগে রক্তমোক্ষণ করিবে।

শোধিত গুণ্ভলু অথবা ভেরেগ্রার ভৈল গোমূত্র সহ পান করিলে বহু-কালজাত বাতজনিত বৃদ্ধিরোগ আশু প্রশমিত হইয়া থাকে।

এর ওতৈল ত্বপ্পদহ মিলিত করিয়া একমাস পর্যান্ত পান করিলে অথবা পুনর্ববা তৈল বা নারায়ণ তৈল পানে, প্রলেপে ও বস্তিরূপে প্ররোগ করিলে কিছা দশ্যলের কাথ সহ এর ওতৈল উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে বাত-জনিত রদ্ধিরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

শধ্যের (ললাটান্থির) উপরিস্থিত অথবা কর্ণের সমীপস্থ শিরাবেধ করিলে কোষান্তর্যন্ধি নিবারিত ছইয়া থাকে।

ত্রিফলাকাথ গোমূত্র পিবেৎ প্রাতরতাপ্রিতঃ।
কফবাতোদ্ভবং হস্তি শ্বরপুং রমণোপিতং।
বচা সর্যপকল্কেন প্রলেপো রদ্ধিনাশনঃ।
গব্যয়তং সৈদ্ধব সংপ্রযুক্তং শমূকভাণ্ডে নিহিতং প্রযত্নাৎ।
স্থাহমাদিত্যকরৈর্বিপক্ষং নিহন্তি কুরগুমতি প্ররদ্ধং।
মৃতমাত্রে তু বৈ কাকে শস্তে তু হি প্রবেশয়েৎ।
ত্রয়ং মুহূর্ত্তং মেধাবী তৎক্ষণাদরুজো ভবেৎ।
গোমূত্রসিদ্ধাং রুবুতিলভ্নতাং হরীতকীং সৈদ্ধবচূর্ণমুক্তাং।
খাদেররঃ কোঞ্জলারূপানারিহন্তি রদ্ধিঞ্চ রুদ্ধাং এরদ্ধাং।
রুদ্ধেন্টামুল্লিপ্তঃ কর্টব্যস্কর্চর্মণা।

বদ্ধা রদ্ধিশ্যং মাতি চিরজাপি ন সংশ্রঃ।
লক্ষ্যা গৃত্তমলাভ্যাঞ্চ লেপো রদ্ধিহরঃ পরঃ।
অবিক্ষীরেণ গোধুমকল্কং কুন্দুরুকস্য চ।
প্রলেপন্ং সুখোফং সাধ্রুধ্নুলং হরং পরং।
মৃত্য সৌরেশ্বং যোজ্যং তাধ্রুদ্ধি নিবর্ত্তয়ে॥

• হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া এই দ্রব্যত্তর সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা, এই কাথ প্রাভঃকালে গোমূত্র সহ পান করিয়া অনিদ্রিত থাকিলে কফ বা ভস্তু অওকোষের শোথ নিবারিত হয়। বচ এবং সর্থপ সমভাগে এহণপূর্বক জলসহ বাটিরা অওকোষে প্রলেপ দিলে রদ্ধিরোগ নিরত্তি পাইরা থাকে।

স্থৃত ২ তোলা ও নিকিজোলা দৈশ্ববলবণ একত্র মিশ্রিত করিয়া একট্রী শামুকের ভিতর পুরিয়া ৭ দিবস স্থ্যাতপে পাক করিয়া অওকোষে প্রলেপ দিলে রদ্ধিরোগ প্রশমিত ইইয়া থাকে।

একটী সদোম্ভ কাকপক্ষীর ক্রোড়দেশস্থ মাংস মধ্যে ব্রপ্ত প্রিয়া দৃঢ়রূপে বন্ধন করিয়া রাখিলে অতি অপ্পকালের মধ্যেই বেদনা দূরীভূত হয়।

হরীতকী গোমূত্রে সিদ্ধ করিয়া এর গ্রতিলে ভর্জনপূর্বক সৈশ্ববদান সহ-ষোগে ভক্ষণ করিয়া পশ্চাৎ উক্ষজল পান করিলে অতি প্রবল বৃদ্ধিরোগও নিবারিত হইয়া থাকে।

ক্তমজ্ঞতার (শিবজ্ঞতার) মূল জলদহ পেষণপূর্দ্ধক ভদ্বারা অগুকোয প্রালিপ্ত করতঃ করটবী (কটা অর্থাৎ কাঁকলাদ) জন্তর ক্রোড়স্থ চর্ম্ম দ্বার। বন্ধন করিয়া রাখিলে শীড্রই রুদ্ধিরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

বরাহক্রাস্তা এবং গৃপ্র পক্ষীর মল (বিষ্ঠা) একত্র করিয়া তদ্ধারা বৃষ্ণে প্রালেপ দিলে বৃদ্ধিরোগ নিবারিত হয়।

গোধুম এবং কুলুকখোটী ছাগীছম্ম সহ পেষণপূর্ব্বক ঈষছ্ম্য করিয়া, তদ্বারা কুরত্তে প্রলেপ দিলে; অথবা "সেইরেশ্বর স্থত" নামক ঔষধ সেবন. করিলেও ত্রশ্ন (রৃদ্ধিরোগ) নিবারিত হইয়া থাকে।

রহৎ দৈশ্ববাদ্যং তৈলং ।—

দৈশ্বং নিচুলং কুঠং শতহ্বা নিচুলং বচাং ।

হীবেরং মধুকং ভার্গী দেবদারু সনাগরং ।

কট্ফলং পৌষ্ণরং মেদাং চবিকাং চিত্রকং শঠীং ।

বিভূঙ্গাতিবিষে শ্যামা রেণুকাং নীলিনীং স্থিরাং ।

বিল্যাজমোদে কুঞাঞ্চ দন্তী রাম্মা প্রপিষ্য চ ।

সাধ্যমেরওজং তৈলং পিত বা ক্ফবাতন্থ ।

ত্রধ্যোদাবর্তগুল্মার্শঃ প্রীহমেদান্য মারুতান্ ।

আনাহমশ্রীকৈব হন্যাদাখনুবাদনাথ ।

এরগুতৈল /৪ সের, কল্কার্থ সৈদ্ধবলবণ, হিজ্ঞল, কুড়, শলুফা বেডসন্বচ, বালা, যফিমধু, বামনহাটী, দেবদাক, শুগী, কট্ ফল, পুদ্ধরমূল, মেদু, চই, রক্তচিভা, শাসী, বিভূদ্ধ, আডইচ, খ্যামাল্ডান রেণুকা, নীলবুহ্না, শাল্পানী, বেলমূলের ছাল, যমানী, পিপুল, দন্তীমূল এবং রাস্কা এই সকল দ্রব্য কুটিভ সমভাগে সমস্তে /১ সের এবং জল।৬ যোলদের। যথানিরমে এই ভিল পাক করিয়া অন্থবাসনে প্রয়োগ করিলে পিত্ত, বাত, কফ, ত্রয়, উদাবর্ত্ত, শুলা, অর্থা, স্লীহা, মেদ, আচ্যবাত, আনাহ এবং অ্যারীরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

নিত্যাননো রদঃ !—

মূলং বিল্ কপিথয়োরবল্লকস্যা গ্রহত্যোর্দ্রোঃ।
শ্যামাপৃতিকরঞ্জ শিগুকতবোর্দিখৌষধারুদ্ধরং।
কৃষ্ণা গ্রন্থিক চব্যঞ্জ লবণং ক্ষারাজমোদান্তিতাং।

পীতং কার্জিকতোয়কোঞ্চতোয় মথিতৈশ্চু নীকৃতং ত্রপ্পজিৎ । বেলমুলের ছাল, কয়েদবেলের মূল, সোঁদালের কিচ পল্লব, রহতী, কন্ট-কারী, স্থামালতা, লাটাকরঞ্জ ছাল, সঞ্জিনামুলের ছাল, শুণ্ঠী, শোধিতভেলা, পিপুল, পিপুলমূল, সৈশ্ববলবণ, যবক্ষার এবং বন্যমানী এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া কাঁজি, উষ্ণজ্বল অথবা নির্জ্জল ঘোল সহযোগে সেবন করিলে ত্রপ্রোগ নিবারিত হয়।

শ্লীপদাধিকারে অন্তর্বেরাঃ শ্লীপদোক্তং দর্বং কার্যাং •ভিষণ্জিতং ॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো রদ্ধিতাপ্লাধিকারঃ।

শ্লীপদরোগাধিকারে যে দকল ক্রিয়া কথিত হইবে, তৎসমস্তই তান্ত্রবৃদ্ধি ও কোমরদ্ধিরোগে বিশেষ উপকারী বলিয়া জানিবে।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিত প্ররোগ-চিন্তামণি গ্রন্থে রদ্ধিত্রগ্ধরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ গলগণ্ডগণ্ডমালাপচীগ্রন্থ্যর্দ্ধাধিকারঃ।

যবমুদাপটোলানি কটুরক্ষ ভোজনং।
ছিদিং সরক্তমুক্তিক গলগতে প্রযোজয়েৎ।
ততুলোদকপিষ্টেন মূলেন পরিলেপিতঃ।
হস্তিকর্ণপাশস্য গলগতঃ প্রশামাতি।
সর্বপং শিগুরীজানি শণবীজাতসী যবান্।
মূলক্স্য চ বীজানি তক্রেণামেন পেষয়েৎ।
গতানি গ্রন্থাইন্চব গলগতাঃ স্থলারুণাঃ।
প্রলেশাক্তেন শাম্যন্তি বিলয়ং যান্তি চাচিরাৎ।
জীর্ণকর্বারুকর্মং বিড় সৈন্ধ্বসংযুতং।
নস্যেন হন্তি তরুণং গলগতাং ন সংশ্রঃ।
জলকুন্তীকজং ভন্ম পকং গোমূত্রগালিতং।
পিবেৎ কোদ্রবভক্তানী গলগতাংশাক্রে

স্থাবর্ত্ত রদোনাভ্যাং গলগণ্ডোপনাছনে।
ক্রোটাঃ প্রাবৈষ্ট শমাং ষাতি গলগণ্ডো ম সংশয়ঃ।
তিক্রালাবুফলে পকে সপ্তাহমুষিতং জলং।
মন্যং বা গলগণ্ডমং পানাৎ পক্ষানুদেবিনঃ।
কট্ফলচুর্ণা ন্তর্গলঘ্রো গলগণ্ডমপোহরতি।
মৃত্যিশ্রং পীত্রমিব খেতগিরিকর্ণিকাচুলং।
মহীষীমূত্র বিমিশ্রং লৌছমল সংস্থিতং ঘটেনাসং।
অন্তর্গু মবিদগ্রং লিছান্মপুনাথ গলগণ্ডে।
জিহ্বায়াঃ পার্যভোহধন্ডাচিহ্রা দ্বানশকীর্ত্তিতাঃ।
তাসাং স্থলশিরে বিদ্ধে অধঃ ছিন্নাচ্ছনৈঃশনৈঃ।
বড়িশেনিব সংগৃহ কুশপত্রেণ বুদ্ধিমান্।
সূত্রক্তে ত্রণে তমিন্ দদ্যাৎ সন্তড়মান্ত্র কং।
ভোক্সকানভিষ্যন্দি যুষঃ কৌল্থ ইষ্যতে।
কর্ণগুগ বহিঃসন্ধি মধ্যাভ্যানে স্থিতঞ্চ যথে।
উপর্যুপরি তংছিদ্ধাৎ গলগণ্ডে শিরাত্রং॥

ষব, মুগ, পটোল এবং কটু ও রক্ষদ্রব্য ভোজন; এবং বমন ও বিব্লেচন; এই সকল গালগওবোগে প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

হস্তিকর্ণলাশের মূল তওুলোদকদহ পেষণপূর্বক গলগতে প্রলেপ দিলে গলগওরোগ প্রশামিত হইয়া থাকে।

সর্বপ, সজ্জিনাবীজ, শণবীজ, মিনা, যব এবং মূলারবীজ; এই সকল সমভাগে গ্রহণপূর্বক অন্নতক্রমহ পেষণ করতঃ প্রলেপ দিলে গণ্ডণালা, গ্রাস্থ্য ও গলগণ্ডরোগ শীত্রই বিলয়প্রাপ্ত হইয়া থণকে।

পরিপক ভিতলাউর রসে দমভাগ রিট্লবণ ও দৈশ্ববলবণ মিশ্রিত করিয়া তদ্ধারা নস্থ এছণ করিলে গলগগুরোগ প্রশমিত ছইয়া থাকে।

জলকুম্ভীক (পানা শেওলা) ভস্ম পানীয়ক্ষার বিধি অহুসারে গোর্মুত্র সহ পাক করিয়া বস্ত্রপুত করতঃ পানীয়াংশ গ্রহণ করিবে। কোদ্রবাম ভোজী উক্ত ক্ষার জ্বলপান করিলে গলগওরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

স্ব্যাবর্ত্ত এবং রুদোন সমান ভাগে গ্রহণপূর্বক জলসহ পেষণ করিয়া উষ্ণ করত: গলগণ্ডে প্রলেপ দিলে গলগণ্ড ক্ষুটিত হয়, তৎপরে আবিত হইয়া গলগণ্ডরোগের শাস্তি হইয়া থাকে।

পক্তিভলাউর মধ্যে জ্বল অথবা মদ্য পুরিয়া ৭ সাতদিবস পর্যান্ত ব্লাখিয়া দিবে। পরে স্থপথদেবী হইয়া উপযুক্ত পরিমাণে উক্তজ্বল বা মন্ট- কট্ফল চূর্ণ গলার মধ্যে ঘর্ষণ করিলে অথবা শ্বেড অপরাজিভারমূল শ্বেড্রনছ মিপ্রিডু করিয়া উপযুক্ত পরিমাণে দেবন করিলে গলগগুরোগ প্রশ-শুভ হয়।

্ব মণ্ডুর মহিষীর মূত্রের সহিত একটা ঘটে করিয়া একমাদ পর্যন্ত রাখিয়া ্দিবে; পরে উক্ত মণ্ডুর অন্তর্গুমে দক্ষ করিয়া মধুর সহিত মিশ্রিত করতঃ ছুন করিলে গলগঞ্বোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

জিহ্বার পার্শ্বে এবং অথোদেশে ১২ দ্বাদশটী শিরা আছে; তন্মধ্যে তুই
থেঁ ক্ষবর্গ থে তুইটা শিরা অবস্থান করে, তাহা বড়িশ দ্বারা শনৈ: শনৈ:
মান্তে আন্তে) আকর্ষণ করতঃ তাহার অথোভাগ "ক্শপত্র" নামক অস্ত্র বাবা ছেদন করিয়া দিবে। পরে ঐ রক্ত্রাত ত্রণে গুড ও আর্দ্রক মিশ্রিত ববতঃ প্রদান করিবে এবং রোগীকে কুল্থ কলান্নের য্যপান এবং রোগ-রদ্ধিনা হয় এমপ আহার কবিতে দিবে। অথবা কর্ণদ্বের বহিঃ সন্ধির সন্ধি-কট যে তুইটা শিরা অবস্থিতি করে, তাহা উপায়াপ্রি বেধ করিলে গলগগু-রোগ প্রশ্মিত হইনা থাকে।

তুষীতৈলং।—

বিভূদং সারশিন্ধ গ্রামাগ্লি ব্যোষদাকভিঃ।
কটুত্ব কলর সৈঃ কটু তৈলং বিপাচয়েৎ।
চিরোখমশি নম্যেন গলগণ্ডং নিবারয়েৎ॥

সর্বণ তৈল / ৪ দের ন কলকার্থ বিজ্ঞা, দৈশ্ববলবণ, বচ, বাস্থা, রক্তনি ভার্র্যুল, শুণ্ঠ নি, পিপুল, মরিচ ও দেবদাফ কুটিত সমভাগে সমস্থে / ১ এক-দের ; এবং পাকাতিতলাটর বস । ৬ যোলমের । হথাবিধানে এই তৈল পাক-পুর্বক ইছারার। নস্থ গ্রহণ করিলে বহুকলিজাত গলগগুরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

অমূভানাং তৈলং ।—

তৈলং পিবেচ্চায়তবৃত্তি নিষ্ণুং হিংস্পাহ্বয়া রক্ষক পিপেলীভিঃ। নিদ্ধং বলাভাগঞ্চ মনেবদার হিভাগ নিভাং গলগগুরোগী॥

তিলতৈল /৪ চারিদের, জল ।৬ যোলদের; কল্কার্থ গুলঞ্চ, নিমছাল, ছংলপদী, কুড়্চি, পিপুল, বেড়েলা, প্রেতবেড়েলা ও দেবদাক এই সকল কুট্টিড দ্ব্য সমান মাত্রায় সমুদায়ে /> সেব মাত্র। যথানিয়মে এই জৈল পাক-পূর্ব্বক উপযুক্ত মাত্রায় পান করিলে গলগ গুরোগ দূরীভূত হইয়া থাকে।

মাক্ষিকাট্টে সক্ত. শীতঃ কাথো বরুনমূল জঃ। গণ্ডমালাং নিহন্ত্যাশু চিরকালানুবন্ধিনীং। পিফু জ্যেষ্ঠামুনা পেয়াঃ কাঞ্চনালত্তঃ শুভাঃ। বিশ্বভেষজ সংযুক্তা গণ্ডমালাপহা পরাঃ। আরথধ নিকা ক্ষিপ্রং পিষ্ট্রা তণ্ডু লবারিণা।
সমাঙ্ নস্য প্রলেপাভ্যাং গণ্ডমালাং সমুদ্ধরেও।
গণ্ডমালাময়ার্ভানাং নস্য কর্মণি যোজয়েও।
নিক্ত গ্রাশ্চ নিকাং সমাথারিণা পরিপেষিতাং॥

বৰুণমূলের ছাল ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, অবশিষ্ট ৮ ভোলা এই কাথ মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে বহুকালজাত গগুদালাও নিবারি হইয়া থাকে। কাঞ্চনরক্ষের ছাল তণ্ডুলোদক সহ পেষণপূর্ব্বক উপযুদ্ মাত্রায় শুঠীচুর্গ সহ সেবন করিলে গগুমালারোগ নিবারিত হয়।

সোঁদালের মূল ওণুলোদক সহ পেষণ করিরা তদ্বারা নস্থ ও প্রলে দিলে গগুমালারোগ প্রশমিত হইরা থাকে। নিসিন্দার মূল জলসহ পেষণ পূর্বক তদ্বারা নস্থ প্রদান করিলে গগুমালারোগ বিনম্ট হয়।

কোষাত্ৰকীনাং স্বরসেন নসাং তুষ্যাস্ত্র বা পিপ্পলীসংযুত্তন। তৈলেন বারিউভবেন কুর্যান্বচোপকুল্যে সহ মাক্ষিকেন॥

ঘোষাফলের শাঁদ পিপুলচ্র্ন সহ অথবা তিতলাউর রদ পিপ্পলীচু সহ কিল্লা নিম্বতৈল বা বচ ও পিপুল একত্র পেষণপূর্বক মধু মিশ্রিক করতঃ তদ্ধারা নশ্য প্রদান করিলে গণ্ডমালারোগ নিবারিত ইই: থাকে।

ঐক্রা বা গিরিকর্ণা বা মূলং গোমূত্রযোগতঃ।
গণ্ডমালাং হরেৎ পীতং চিরকালোত্থিতা মপি।
অলমুষানলোন্ত,তাৎ স্বরসাৎ দ্বে পলে পিবেৎ।
অপচ্যাগণ্ডমালায়াঃ কামলায়াশ্চনাশনং।
গলগণ্ডং গণ্ডমালাং কুরণ্ডাংশ্চ বিনাশয়েৎ।
পিইং জ্যেষ্ঠামুনামূলং লেপেদ্রান্ধাব্যক্তিজং।

রাখালশদারমূল অথবা খেত অপরাজিতারমূল গোমূত্রদহ পেষণপূর্ব পান করিলে চিরকালজাত গণ্ডমালারোগ এশমিত হয়।

মুগুতিকার স্বরদ ২ পল মাত্রায় পান করিলে অপচী, গভিমালা কামলারোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

বামনহাটীরমূল তওুলোদক সহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে গালগঙ গণ্ডমালা ও কুরণ্ডরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

্ছুছুন্দরীতৈলং।—

অভ্যঙ্গারা শয়ের গাং গণ্ডমালাং সুনারুণাং। ছুছুদর্যা বিপক্ত ক্ষণাতৈলবরং ধ্রুবং॥ তৈল /৪ সের, জল।৬ সের এবং কল্কার্থ ছুছুন্দরীর (ছুঁছুঁরার) মাংই /১ একদের। যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক মর্দন করিলে স্থদাকণ গগুদালারোগ প্রশমিত হয়।

मार्थिषेकानाः टेजनः।—

গণ্ডমালাপহং ভৈলং সিদ্ধং শাংখাটকত্ত্বগ।

তৈল /৪ দের জল ।৬ যোলদের শেওড়াবৃক্ষের কল্ক /১ দের এবং উহার স্বরদ /৪ দের । যথানিয়মে এই তৈল পাকপুর্বক মস্ম প্রদান করিলে গগুমালারোগ নম্ভ হয়।

বিশ্বাদ্যং তৈলং ।—

বিষ্যশ্বমারনিত তী সাধিতকাপিনাশনং ॥

তৈল /৪ দের ; জল ।৬ দের এবং কল্কার্থ তেলাকুচা, করবীর ও নিসিন্দ-পত্র সমভাগে সমুদারে /১ একদের। যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক নস্ফ গ্রহণ করিলে গণ্ডমালারোগ প্রশমিত ছইরা থাকে।

নিগু ভীতৈলং।—

নিগু ভীম্বরদেনাথ লাঙ্গলীমূলকল্কিভং। তৈলং নম্মারিহন্ত্রাণ্ড গণ্ডমালাং স্থদারুণাং॥

তৈল /3 চারিদের, নিসিন্দাপাতার স্বরস /৪ চারিদের, জল ।৬ ষোল-দের এবং কল্কার্থ বিষলাঙ্গলিয়ার মূল /১ একদের। যথানিয়মে এই তৈল পাকপূর্বক নস্ত প্রদান করিলে স্থাকণ গগুমালারোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

বনকাপাদিকামূলং তণ্ডু লৈঃ সহযোজিতং।
পাক্ত্রা পূপিউকাং খাদেরপদী নাননায় তু।
শোভাঞ্জনং দেবলাক কাঞ্জিকেন চ পেষিতং।
কোক্ষং প্রশেপতো হন্যাদপদীমতি মুস্তরাং।
সর্বপারিষ্টপত্রাণি দগ্ধা ভল্লাতকৈঃ সহ।
ছাগমূত্রেণ সংশিষ্টমপদীত্বং প্রলেপনং।
অশ্বথকান্তং নিচুলং শ্ববাং দন্তক দাহয়েং।
ব্রাহ্মজ্জ্যং ভ্রাহন্ত্যপদীত্রণান্॥

বনকার্পাদের মূল ও তণ্ডুল একত্র পেষণপূর্ব্বক তদ্ধারা পিস্কক প্রস্তুত্ত চরিয়া দেবন করিলে অপচীরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

मिक्निनावीक ७ (प्रवास ममजारा अह्नभूर्वक (भवन कर छः केरकरः

শ্বেভসর্থপ, নিষপত্র ও ভেলারবীজ সমভাগে এছণপুর্ব্বক দক্ষ করিয়া ছাগাসূত্র সহ পেষণ করতঃ প্রলেপ দিলে অপচীরোগ নিবারিত ইইয়া থাকে। অশ্বথকান্ঠ, হিজলবীজ এবং গোদস্ত সমভাগে এছণপুর্ব্বক দক্ষ করিয়া, ঐ ভস্ম শ্করের চর্ব্বির সহিত মিপ্রিত করিয়া প্রলেপ দিলে অপচী ও ত্রণ বিনষ্ট হয়।

পাঞ্চিং প্রতিদানশচাঙ্গুলানি বিদ্ধেৎ বস্তি পরিবর্জ্য সম্যক্। বিদার্থ্যমৎস্যাওনিভানি বৈদ্যোনিকৃষ্ট জ্বালান্যনলং বিদ্যাৎ।

মণিবদ্ধোপরিষ্ঠাদ্ধা কুর্যান্দেখাত্রয়ং ভিষক্।
অঙ্গুল্যন্তরিতং সম্যাপদীনাং প্রশান্তরে।
দণ্ডোৎপালভবং মূলং বদ্ধং পুষ্ঠেইপদীঞ্জয়েৎ।
অপামার্গায় বা ছিন্না জিহ্লাভলগতে শিরে॥

অপচীরোগীর পায়ের গুল্ফের অধাদেশ হইতে ১২ দাদশ অসুলি পরিমিত স্থান (২ অসুলি পরিমিত ইক্রবন্তি পরিত্যাগ পূর্বক) অস্ত্রদারা বিদীর্ণ করিয়া, মৎস্থাভিধের ন্থায় যে একপ্রকার মেদোজাল দৃষ্ট হইবে তাহা আকর্ষণপূর্বক অগ্নিদারা দগ্ধ করিবে। ইহাতে অপচীরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

মণিবলৈর (হন্তবাহুদলির) উপরিভাগে ১ এক অন্সূলি বা ২ ত্বই অন্সূলি স্থান পরিভাগে পূর্মক অন্ত্রহারা এক এক অন্সূলি অন্তর ১ ভিন্টী রেখাবৎ ছেন্ন করিলে কক্ষা কুর্পর সন্ধিগত অপটীরোগ দূরীভূত হইয়া থাকে।

দস্তো শল অথবা অপামার্গের মূল পুষ্যানক্ষত্রে উদ্বৃত করিয়া গলদৈশে বন্ধন করিয়া দিলে, কিষা জিহ্বার নিম্নস্ত ছুইটা শিরা ছেদন করিয়া দিলে অপটারোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

ব্যোবাদ্যং তৈলং।—

ব্যোষং বিভূঙ্গং মধুকং সৈদ্ধবং দেবদারু চ। তৈলমেতৎ শৃতং নস্যাৎ কুচ্ছু ামপ্যপতীঞ্জয়েৎ॥

তৈল /৪ চারিদের ; জল ।৬ যোলদের এবঃ কল্কার্থ শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, বিড়ন্দ, যফিম্বু, সৈশ্ববলবণ ও দেবদারু সমভাগে সমুদায়ে কুটিড /১ একদের। যথাবিধানে এই ভৈল পাকপূর্বক নস্থ গ্রহণ করিলে অভি কন্ট-সাধ্য অপচীরোগও বিনম্ভ ছইয়া থাকে।

গুঞ্জাবৈতলং ।---

গুঞ্গাহরারিশ্যামার্ক সর্যপৈত্ব ভ্রমাধিতং। তৈলন্ত দশধা পশ্চাৎ কণালবণপঞ্চকঃ। মরিতৈশ্চ বিভিযুক্তিং সর্বাবস্থাগতাঞ্জয়েৎ। অভ্যঙ্গাদপ্চীমুগ্রাং বল্মীকার্শোর্ব্ব দত্ত্বণান্॥ তৈল প্রসের; গোমুত্র ।৬ বোলদের এবং কল্কার্প গুঞ্জাকল (কুঁচ), হরারি (ক্রবী), খ্যামা (রুদ্ধারক), আকল্দমূল এবং দর্ষপ এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একসের মাত্র। যথানিয়মে এই তৈল দশবার পাক করিয়া তৎসহ পিপুল, সৈদ্ধবলবণ, বিট্লবণ, সৌবর্চললবণ, শান্তরীলবণ, করকচলবণ ও মরিচ ইহাদের চুর্ন উপযুক্ত পরিমাণে মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই তৈল মর্জন করিলে অপচী, বল্মীক, অর্শঃ, অর্ক্ত্ব দ ও ত্রণরোগা প্রশামিত হইলা থাকে।

অন্থিয়ামেরু কুর্বীত ভিষক্ শোথ প্রতিক্রিয়াং।
পকান পাট্য সংশোধ্য রোপয়েৎ ত্রণভেষকৈঃ।
মধুক জয়্বর্জ্য নবেত্যানাং ত্বগ্ভিঃ প্রদেহানবতারয়েচ্চ।
কৃতেরু দোষেরু যথারুপূর্ব্যা এন্থে ভিষক্ শ্লেরাসমুথিতেরু।
জলারুকাঃ শিভক্তে হিতান্ত কীরোদকাভ্যাং পরিসেচনকঃ।
কাকোলীবর্গায় তু শীতলানি পিবেৎ ক্ষায়াণি সশক্করাণি।
আকারসেনেকু রসেন বাপি চুবং পিবেদ্বাপি হরীত্কীনাং।
হিংস্থাসরোহিণ্যয়্তাচ ভাগী শ্রামাক বিল্বাগুরু কৃষণদ্বাঃ।
গোপিভপিন্টাঃ সহতানিপত্র্যা এন্থে বিধে যোনিজে প্রলেপঃ॥

্চিকিংদক অপক্ষ গ্রন্থিরোগে শোথের স্থায় ক্রিয়া করিবেন। এবং পরি-পক্ষ গ্রন্থি ছেদনপূর্ব্যক ভাষা ত্রগশোথোক্ত সংশোধন ঔষধ দ্বারা সংশোধিত করিয়া পশ্চাৎ ত্রণাধিকারোক্ত ঔষধ প্রয়োগ দ্বারা পূরণ করিবেন।

মধুকপুষ্পা, জাম, অর্জ্জুনরক্ষ ও বেতসরক্ষ ইহাদের বিশকল সমভাগে এহণ-পূর্ব্বক পেষণ করিয়া তদ্ধারা প্রলেপ দিলে এত্রিয়োগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

নৈ স্মিক প্রস্থিরোগে ক্রমান্ত্সারে রোগীকে স্বৈহ ও স্বেদানি ক্রিয়া করা-ইয়া, বমন, কিরেচন ও রক্তমেষ্টুক্ষণ দ্বারা দোষ নিঃদারিত করতঃ প্রস্থিতে স্বেদ প্রয়োগ করিবে; ইছাদ্বারা, প্রস্থিরোগ প্রশামত ছইয়া থাকে।

পৈত্তিক অস্থিরোগীর গ্রন্থিতে জোঁক বসাইয়া রক্তমোক্ষণ করতঃ তত্ত্বপরি ত্রন্ধ মিশ্রিত জল সেচন করিবে এবং কাকোলীবর্গের কাথ পান করিতে
দিবে।

ন কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবক (অভাবে বংশলোচন), ঋষভক (অভাবে বংশলোচন), মুগালী, মাধাণী, মেদা (অভাবে অহাগন্ধা), মহা-মেদা (অভাবে প্রামালতা), গুলঞ্চ, কাঁকড়াগৃন্ধী, বংশলোচন, পদ্মকাঠ, পুর্তারয়াকাঠ, ঋদ্ধি (অভাবে বেড়েলা), রদ্ধি (অভাবে বালা), কিস্মিদ্, জীরা, কৃষ্ণজীরা ও যফিম্ধু; এই সকলকে কাকোলীবর্গ বা কাকোলাদিগণ বলা যায়। কাথার্থ এই সকল দ্রব্য কুটিত সমানমান্তায় সমস্তে ২ হুইতোলা পাকার্থ জ্বল ৩২ ভোলা এবং পাকার্যশিক্ট কাথ ৮ ভোলা।

দ্রাক্ষা রদে অথবা ইকুরদে উপযুক্ত পরিমাণে হরীতকীচ্ণ্ প্রেক্ষণ রা পান করিলে গ্রন্থিরোগ প্রশান্ত হয়।

হিংস্তা (কালিয়া কোঁড়া), কট্কী, গুলঞ্চ, বামনহাটী, খ্যামালভা, বলমূল, অপ্তৰুকাঠ, সজিনা, গোপিত ও তালমূলী এই সকল দ্রব্য সমানাত্রায় পেষণ করিয়া এছিতে প্রলেপ দিলে এছিরোগ প্রশমিত হইয়া
াকে।

গ্রন্থর্ব দানিজিলেপো মাত্বাহক কীটজঃ।
স্বাৰ্ক্সিন্দ্রলকক্ষারঃ শঙ্কাতৃর্বসমন্বিতঃ।
প্রলেপো বিহিত্তীক্ষো হন্তিগ্রন্থর্ব দানিকান্ ।
উপোদিকা রসাভ্যক্তান্তৎপত্র পরিবেষ্টিতাঃ।
প্রশান্তানিরান্ধাং পীড়কার্ব্ব দজাতয়ঃ।
উপোদিকা কাঞ্জিক তক্রপিন্টাতয়োপনাহো লবশেন মিশ্রঃ।
ফুন্টার্ব্ব দানাই প্রশমারকৈশ্চিদিনে দিনে রাত্রিমু মর্মজানাং।
লেপোর্ব্ব দজিদ্বাধানিক ভন্মত্ব শঙ্কাতৃর্বক্তঃ।
শর্টক্রিরাদ্রগন্ধক যবজবিড়ঙ্গনাগরেবাথ।
স্মুহাগণ্ডীরিকা স্বেদো্নাশ্যেদর্ব্ব দানিচ॥

্তি প্রয়োগ চিন্তামণো গলগওগওমালা পটী গ্রন্থ্যর্ক্র দাধিকারঃ!

মাতৃবাহক কীট (পাদগুঁড়া পোকা) ভস্ম, সর্জিকাক্ষার, মূলারক্ষার বং শশ্বচূর্য একত্র করিয়া প্রালেশ দিলে এছি ও অর্ধুদাদিরোগ বিনস্ক হইয়া াকে।

বনপ্তিকার রস দারা প্রস্থি সিক্ত করিয়া এবং উহার পত্রদারা বেস্ট্রন রিয়া রাখিলে অতি অপ্প সময়ের মধ্যেই পীড়কা ও অর্কুদাদিরোগ প্রশান্ত শ

বন্ধপৃতিকার পাতা কাঞ্জিক ও ডক্রসই পেষণপূর্বক কিঞ্চিৎ লবণ প্রতিত করতঃ প্রতিদিন রাত্রিতে প্রলেপ দিলে মর্মান্থান জাত হুই অর্ধুদ- । রাগের শান্তি হইয়া থাকে।

কলারমোচা ভস্ম, তুষ ও শশ্বচূর্ণ উপযুক্ত পরিমাণে এছণপূর্বক এক্তর পষণ করতঃ ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে অথবা গদ্ধুক, যবক্ষার, বিড়ঙ্গ ও শুঠী ই সকল দ্রব্য শরটের কধিরে (কাকলাসের রক্তে) আর্দ্রি করিয়া প্রলেপ লে অর্ম্বাবোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

মনসাসীজের কাণ্ড খণ্ড খণ্ড করতঃ অগ্নিসন্তাপে তপ্ত করিয়া তদ্বারা খদ দিলে অর্দ্রাদিরোগ বিনষ্ট হুইয়া থাকে।

ইতি গলগওগওমালাপচী অস্থাৰ্ম্বদ চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শ্লীপদাধিকারঃ।

শভানা লেপনং স্বেদং রেচনৈ রক্তনোক্ষণৈঃ।
প্রায়ঃ শ্লেম্থরৈরুকৈই শ্লীপদং সমুপাচরেৎ।
শ্লুন্ত বৈরুত্বর্ধাভূ নিশ্ত তী শিগু সর্য পৈঃ।
প্রলেপঃ শ্লীপদং হন্তি চিরোত্মপি দারুণং।
নিষ্পিন্যমারণালেন রূপিকামূলবল্কলং।
প্রলেপাৎ শ্লীপদং হন্তি বদ্ধমূলমপি দৃঢ়ং।
হিতশ্চালেপনে নিতাং চিত্রকো দেবদারু বা।
দিদ্ধার্থ শিগুকল্কো বা সুখোক মূত্রপেষিতঃ॥

লজ্বন, প্রলেপ, স্বেদ, থিরেচন, রক্তমোক্ষণ এবং শ্লেম্মনাশক অস্থাস্থ উঞ্চৰীহা দ্রবাদ্ধারা শ্লীপদ (গোদ) রোগের চিকিৎসা করিবে।

ধুভূরাবীজ্ঞ, এরগুপত্র, পুনর্ণবা, সজিনাছাল ও সর্ধপ এই সকল জ্রব্য ভুল্য পরিমাণে গ্রন্থপূর্বক পেষণ করিয়া ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে শ্লীপদরোগ প্রশ্মিত হইয়া থাকে।

কপিকা (আকন্দ) মূলের ছাল কাঁজির সহিত পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে অতি দৃত্যুল স্থদারুণ শ্লীপদরোগ বিনস্ট হইয়া থাকে।

রক্ত চিতারমূল কিম্বা দেবদারু অথবা শেতদর্ষপ ও সজিনা গোমূত্র সহ পেষণপূর্বক ঈষভ্ষ্ণ করিয়া প্রলেপ দিলে শ্লীপদরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

রজনীং গুড়সংযুক্তাং গোমুত্রেণ পিবেররঃ।
বর্ষোথং শ্লীপদং হন্তি দক্তকুঠং বিশেষতঃ।
শিরাং স্থবিদিতাং বিধ্যেদস্কুঠে শ্লেম্মীপদে।
মধুযুক্তানি চাতীক্ষং ক্ষায়ানি পিবেররঃ।
পিত্রীক ক্রিয়াং কুর্যাৎ পিতার্ব্ব দ বিসপ্বৎ।
গুল্ফস্যাধঃশিরাং বিধ্যেৎ শ্লীপদে পিতসম্ভবে।
কৃত্বা গুল্ফোপরি শিরাং বিধ্যেত্ব চতুরস্কুলে।

স্বেহস্বেদোপনাহাংশ্চ শ্লীপদেহনিলজে ভিষক্॥

-রিদ্রা এবং ইক্ওফু গোমূত্র সহযোগে দেবন করিলে এক বৎসরজ্ঞাত শ্লীপদরোগ বিশেষতঃ দক্তে ও কুঠরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ৈ স্নৈত্মিক শ্লীপদরোগে দর্মস্থান পরিত্যাগপূর্বক রোগীর পদের অঙ্গুঠের সমীপস্থ শিরা বেধ করিয়া দিবে এবং রোগীকে পুনঃ পুনঃ কফনাশক স্রব্যের ক্যায় মধুমিশ্রিত করিয়া পান করিতে দিবে। ্রপত্তিক দ্রীপদরোগে, পৈত্তিক অর্ধ্রদরোগে এবং পি**ভজবিমর্পরোগে** তি পিত্তনাশক ক্রিয়া সকল প্রয়োগ করিবে এবং রোগীর গু**রুষ্পদেশের** ক্রিত শিরা বেধ করিয়া দিবে।

বাতজক্ত শ্লীপদরোগে রোগীকে প্রথমত: শ্লেছ, স্বেদ ও উপনাছ (প্রলেপ) রাগ করিয়া পশ্চাৎ রোগীর গুল্কবেশের উপরিস্থ চারি অঙ্গুলি স্থানের ধ্য শিরা বেধ করিয়া নিবে।

মজিন্টাং মধুকং রাম্বাং সহিংজ্ঞাং সপুনর্গবাংণ পিন্ট্রারনালৈর্লেপোহয়ং পিত শ্লীপন্যান্তরে। পিবেৎ সর্বপতৈলেন শ্লীপদানাং নিবর্ত্তরে। পৃতিকরঞ্জ্ঞজনজং রসং বাপি যথাবলং। অনেন্ত্রের বিধানেন পুত্রজীবকজং রসং। কাঞ্জিকেন পিবেচ্চুর্ণং মূত্রের্ক্রা হদ্ধদারজং॥

মঞ্জিষ্ঠা, যক্তিমণু, রাশ্বা, কালিয়া কোঁড়া ও পুনর্ণবা এই সকল দ্রব্য সমান নাত্রায় গ্রহণপূর্বক কাঁজির সহিত পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে পিতজ্জ শ্লীপদরোগ বিনম্ভ ইইয়া থাকে।

লাট। করঞ্জের রদ অথবা জিয়াপুঁ তার রদ সর্বপতিলসহ কিন্তা। রুদ্ধার-কের বীজচুর্ণ কাঁজির সহিত বা গোমূত্রদহ দেবন করিলে শ্লেম জন্ত শ্লীপদরোগ বিন্ত হইয়া খাকে।

গোধাবতীমূলযুক্তাং খাদেমাবেওরীররঃ।
জয়েৎ শ্লীপদকোপোত্থং স্করং সদ্যোগ ন সংশয়ঃ।
গন্ধবিতিলভূড়াং হরীতকীং গোজলেন যঃ পিবেৎ।
শ্লীপদবন্ধনমুক্তো ভবতাসৌ সপ্তরাত্রেণ।
স্কৃতং দৌরেশ্বরং শ্লীপদেযুক্তং॥

গোরালিরা লতার মূল মহযোগে মাধেগুরী (মাষকলার দারা প্রস্তুত্ত পিউক বিশেষ) দেবন করিলে শ্লীপদরোগজ্ম জুর নিশ্চরই আরোগ্য ইইরা থাকে।

হরীতকী এর ওতৈলে ভর্জনপূর্ব্বক গোসুত্রসহ দেবন করিলে এবং "দৌরেশ্বর" ঘৃত পান করিলে নিশ্চয়ই সপ্তরাত্তির মধ্যে শ্লীপদরোগ হইডে নিম্কৃতিলাভ করা যায়।

-বিভূঙ্গানাং তৈলং।—

বিড়ঙ্গ মরিচার্কেয়ু নাগরে চিত্রকে তথা। ভদ্রদার্কেনকাখ্যেয়ু সর্কেয়ু লবণেয়ু চ। তৈলং প্রকং পিবেদ্বাপি শ্লীপদানাং নির্ভয়ে॥ ভিলতৈল /৪ চারিদের; জল। ৬ ষোলদের এবং কল্কার্থ বিড়ন্স, মরিচ, অর্কমূল, শুক্রী, রক্তচিভার-মূল, দেবদাক ও রেণুকা সমভাগে সমুদায়ে কৃতিও /> একদের। যথানিয়মে এই ভৈল পাকপূর্বক উপবৃক্ত বাত্তায় পান করিলে স্নীপদরোগ প্রশামিত ছইয়া থাকে।

কণকতৈলং।---

कर्गकार्क वला पृत्रवा वागक विकशास्त्रिका। নিষ্ঠ ধ্রী পৃতিকা ভাগী নিকোচক পুনর্ণব।। বদরী বিজয়াপত্রং শ্রীকলং রহতী ন্তথা। তিত্রকক অহীঘনমগ্লিসতে বাডয়কঃ। ब्रह्म भी भागित है भविभावधभमा है। श्राटाकः दिशनः देवसार गृजीशांख्यकागानि। জলদেশে বিপক্তব্যং হাবৎ পানাবশেবিতং । প্রস্থক তিলতৈলন্য পচেতেনৈব বারিণা। পূর্বোক্তং ভেষদং কলকং দেয়কান্টপলান্বিতং। ठ सुगृलः नितः गृलः भी पानः मारमत कुषः। আমবাতং দন্তশূলং রুদ্ধিঞ্চ গলগওকং। প্রের্ণণাং নাগকোহসো চ হন্যাদের ম সংশয়ঃ। দ্বরায়াং পতিতেবিন্দৌ শুক্ষতাং যাতি তৎক্ষণাৎ স্ত্রিপা তথ্রসায়ে তেল্যে তভ্রুক্তিদং। কণকং নামততৈলং সন্নিপাতহরং পরং। তৈলমেত্র প্রশংসন্মি জীর্ণজ্ববিন্ধনং॥

তিলতৈল /ও ঢাবিদের কাখার্থ বৃত্তরা, আকন্দ, দুধা, বাদক, জন্মন্তীপত্র, নিনিন্দা, বনপৃতিকা, বামনহাটী, ধলাআকডা,পুনর্গবা, বদবী, নিদ্ধিপত্র, বেলমূল, রহতী, রক্তিচিতা, দীজেরমল, গণিয়াবী, বাডম্বক (এবগু) মূল, রহস্ত তী
মিঞ্জিষ্ঠা), গো (ঋষভক অভাবে বংশলোচন), শটী ও দোণালুরপাতা;
এই দকল দ্রব্য কুটিত প্রত্যেকে ১৬ যোলভোলা, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ
১৬ মোলদেব , এবং কল্কার্থ পূর্বোক্ত ধূত্বা হইতে দোণালুবপাতা পর্যান্ত দ্রব্যগুলি কুটিত সমভাগে সমত্তে /১ একদেব মাত্র। যথানিয়মে এই তৈল পাকপৃব্বক অভাদিতে মর্দ্ধন করিলে চক্ষুংগুল, শিরংশুল, শ্লীপদ, আমবাত,
বৃদ্ধিরোগ ও স্থিপাত জ্বর প্রভৃতি বিবিধ রোগ আবোগ্য হয়।

> মহাকণকতৈলং।— শ্বেষ্মপ্রকোপে পুরুষে সদা প্রবণনাসিকে।

ষঃ ককা বৎসরশতং নস্নাত পুরুষাধমঃ।

এভিরভাঞ্জনে গাঢ়ং ভবেমারুতবিক্রমঃ।

সন্নিপাতেগতে দূরে ইন্দ্রিয়াগাং বিশুদ্ধরে।

বলাধানার্থ মপ্যেতদীয়তে ভিষকাংরৈঃ।

অর্কদীরং সমরিচং হরিণাখ্য বিষত্ত্থা।

যন্যেতদীয়তে তৈল মহাক্ণকমুচ্যতে॥

পৃর্ব্বোক্ত কণকভৈলের কল্কজনোর মধ্যে অধিকন্ত আকলের দীর, মরিচ ও হরিণাখ্য বিষ প্রদান পূর্বক তৈল পাক করিলে ভাষাকে মহাকণকতৈল বলা যায়। এই জৈল দ্বারা অভাদাদি করিলে ক্লাধিক্য মাধিপাত জ্বর প্রভৃতি দূরীভূত হইয়া ইন্দ্রিয়গণের বিশুদ্ধি এবং শরীর খনাধান হইয়া থাকে।

রুহৎ কণকতৈলং।—

कनकें ठाक वाद्वानः मुक्ताहुनः गवानकः। জয়ন্তী গণিকারীচ পৃতিকং ত্রন্নবাষ্টিনা। কুঠারকা চ বর্ষাত্র বদরীপত্রমেবচ। তৈলোক্য বিজয়াপত্রং ঐকলস্য চ বল্কলং। রুহতী চিত্রকং শীক্ষমূল নিগু গ্রীপত্রকং। এরওমূলং ভণ্ডীশ্চ বরী বার্ত্তাকুমূলকং। খ্যোনাকপত্রমেতেষাং দ্বিপলক পৃথক্ পৃথক্। গৃহীত্বা পাচয়েদ্রোণে জলে তৎপাদশেষিতে। তিলতৈলঞ্চ তেনৈবমেতেশং কল্কপাদিকং। পক্তা হৈত दिशास्त्रन मिश्वरेक्षव श्वकीर्खिङः। যাবত্তোপি শিরোরোগাঃ ত্রন্দ্রাদি চ সম্ভব।। তে সর্কে নাশ্যায়ান্তি তৈলস্যান্য নিষ্কেবনাৎ) শোপং শূলং তথানাহ জীর্ণজ্বমরোচকং। গাত্রবেদনমালসাৎ নাশমায়াত্তি সেবনাৎ। কণকং নামতৈলঞ্চ শিরোরোনং কফারুনং। হন্যাৎ শ্লেমবিকারাণাং ভ্রহ্মণাচ্চ ন সংশয়ঃ॥

ভিলতৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ ধুতুরা, আকন্দমূল, বেড়েলা, দূর্ব্বামূল, বাদক, জয়ন্তী, গণিয়ারী, লাটাকরঞ্জ, বাদনহাটী, কুঠারকা (কোদালে কুড়ুলে লভা), পুনর্ণবা, কুলপাডা, দিদ্ধিপাতা, বেলছাল, বৃহতী, ব্লক্ত-

চিতার মূল, নীজের মূল, নিসিন্দার পাতা, এরওমূল, মঞ্জিতা, শতাবরী, বার্ডাকুর মূল এবং শোণারপাতা; এই সকল দ্রব্য কৃটিত প্রত্যেকে ১৬ বোল-ডোলা, পাকার্থ জল ৬৪ চৌষটিসের, শেষ কাথ।৬ যোলসের এবং পূর্বোজ্ঞ ধুতুর। হইতে দোণার পাতা পর্যন্ত দ্রব্যগুলি কুটিত সমভাগে সমতে /১ একসের মাত্র। যুথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক জন্গাদিতে মর্দ্দন করিলে বিবিধ শিরোরাগ, শোথ ও শ্লীপদাদি নানাপ্রকার রোগ বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

হিন্দুলসন্তবং স্তং গন্ধকং মৃততামকং।
চিত্রকং দন্তীনীজক পিপেলী হরুমা বচা।
বৈদ্ধবকৈব কৈপালং চুর্নারে সমভাগতঃ।
হরীতকীজলেনৈব বটিকালারয়ে দুরুক্।
দ্বিগুঞ্জা পরিমাণেন শ্লীপদং হন্তিনার্থ।
আনাহঃ গুলুরোগঞ্চ প্লীহান্মগ্রিমান্যতাং।
শ্রীমানাহননাথেন রসস্বন ভৈরবঃ।
স্কুপানং প্রযোক্তবাং ভোজনে বিশ্বস্কুলং॥

িল্লোথ পারদ, গদক, তাম, রক্তচিতার মল, দথীবীজ, পিপ্পদৌ, ব্বা বচ, দৈদ্বলবণ ও জন্মপাল; এই দকল দ্রব্য ও ভাবেক দমান পরিমাণে এহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া হরীতকীর রাথে মর্দ্দনপূর্বক ভূইরতি
দার্গ্য বটীনা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহাব একটা ব্রিয়া বটীকা শুঠী
চূর্ণ ও ভিতলা উ অর্পান সহ দেবন বরিলে প্রীপদ, আনাহ, ওল্ম, গ্রীহা ও
অগ্নিমান্য প্রভৃতি বিবিধবোগ বিন্ধী হইঃ। থাকে।

भी प्रभ भक्रक बती तमः।--

ব্যোষায়তং ঘমানি চ হতানি গন্ধনং শিলা।
পো ভা তে জ্বাধানক্ষ চুৰ্নমেকত কার্য়েৎ।
ত্য গোমুৰ জ্বীরাদ্ধ ক তোধোনমৰ্দ্যেৎ।
ভাষ্য শুকান্ত্রীয় খানেজ্বভোষাত্মপানতং।
শ্লীপদং মুস্তাং হন্তি গ্লীহানং হন্তি মেবিতঃ॥

ত ঠাঁ. পিপুল, মরিত, গুলঞ্চ, যমানী, পারদ, রক্তচিতার মূল, গদক, মনঃশিলা, সোধাগার থৈ এবং জ্যাপাল । এই দকল দ্রবা দমান পরিমাণে এইণপুর্বক উক্তরশে চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিজ করিবে। তৎপরে উহা ভ্রমান্ধ, গোক্রর, জ্বীর ও আদা ইহাদের প্রত্যেকের রুদ্যে এক একদিন ভাবনা দিয়া ২ ফুইরতি মাত্রায় বটীকা প্রগ্রত করিবে। প্রতিদিবদ ইহার একটী করিয়া বটীক। উ ওজ্বলা অনুপান দহ দেবন করিলে লীপদ ও প্রীহাদি-রোগ নম্ম হব।

নিত্যানদ রসঃ।-

হিন্দলসম্ভবং স্তুভং গন্ধকং মুভভাশ্ৰকং ৷ কাংসাং বঙ্গং হরিতালং তুত্থং শঙ্গং বরাটকং। ত্রিকটু ত্রিফলা লৌহং বিভুন্নং পটুপঞ্চকং। চবিকা পিপেলীমূলং হরুষা চ বচা তথা। শঠা পাঠা দেবদাক এলা চ হদ্ধারকং। এতানি সমভাগানি সঞ্ধা বটিকাক ক। হরীতকীরসং দত্ব। পঞ্চপ্রধানিতাং ভভাং। একৈকাং ভক্ষয়েদ্রোগী শাতকানু জলং পিবেং। শ্লীপনং ক্রুবাতোথং লক্ত্রমান্ত্রক যথ। মেদোগতং ধাতুগতং হন্তি সকার সংশয়ং। গলগণ্ড গণ্ডমালামন্ত্রদ্ধিং চিরন্তর্নীং। এক জং দ্বন্দ্র জ কৈব গুদরো গং ক্রিমিন্তং।। অগ্নির্রান্ত্রংকরত্যেষ বলবর্ণক স্বস্থতাং। জীমদাহন নাথেন নির্মিতে। বিশ্বসম্পনি। निजानम तरमानाम त्रिक्त भीर्यभघाउकः। রক্তকে পিওজে গাপি भ्री পদে যোজয়েদর। নাতঃ পরতরং কিঞ্চিদ্যতে শ্লীপদে গদে। প্রাণবল্লভো রুমঃ গুলাধিকারেনোক্তঃ॥ ইতি প্রোগতিন্তামণো শ্লীপদাধিকারঃ।

পাবদ, গন্ধক, ভাত্রভস্ম, কাংসভস্ম, বদ্দভ্স্ম, হরিভাল, তু.ভেভস্ম, বিশ্বভ্স্ম, কভিভস্ম, শুঠা, পিপুল, মরিচ, হবাতকী, আমলকা বছেডা, লাহ, বিভন্ন, সৈদ্ধবলবণ, বিট্লবণ, সচললবণ, শাস্তরীলবণ, কববচলবণ, ই, পিপুলগুল, হবুষা, বচ, শটী, আকণাদি দেবদাক, এলাচি এবং বিস্তাপক্ষীজ্ঞ, এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্কক উত্তমকপে চূর্ণ করিয়া একত্র জ্লেভ করতঃ হবীতকীর কাথসহ মর্দ্দনপূর্কক পোচবতি মাত্রায় বঢ়ীকা স্প্রভ কবিবে। প্রতিদিন ইহার একটী করিয়া বটী শীতল জলসহ সেবন রিলে শ্লীপদ, গলগভ, পাস্তবৃদ্ধি প্রভৃতি নানাপ্রকার বোগ বিনষ্ট হইয়া কে।

ওল্মবোগাধিকাবে কথিত "প্রাণবল্লভব্দ" ঔষধ দ্বারাও নীপদ্রোগ্ ।শক্ট হয় জ্বানিবে।

₹ि सीर्थारात्रत हिनिद्मा समाश्च।

অথ বিদ্রধ্যধিকারঃ।

জলীকঃ পাতনং শস্তং সর্বসিন্নেব বিদ্রাধী।
মুতুর্বিরেকো লঘুনং স্বেদঃ পিভোতরং বিনা।
ইউকা সিকতা লৌহ গোসক্বত্ত্বপাংশুভিঃ।
মূত্রপিষ্টেশ্চ সততং স্বেদয়েৎ শ্লেম্ববিদ্রেধিং।
দশমূলী কষায়েন সম্বেহেন রসেন বা।
শোথং ত্রনং বা কোক্ষেন সমূলং পরিষেচ্য়েৎ।
ত্রিফলা শিশু বক্রণ নশমূলান্ত্রসা পিবেৎ।
গুগ্তলুং মূত্রযুক্তং বা বিদ্রেধা কফসন্তবে।

সকল প্রকার ^{*}বিদ্রধিরোগে জ্বলোকা দারা রক্তমোক্ষণ, মুহ্বিরেচন, লঘুপথ্য এবং (পৈত্তিক বিদ্রধি ব্যতীত) স্বেদ প্রয়োগ করিবে^{*}।

লৈ খিক বিত্রধিরোগে ইউক, বালুকা, লৌহ, গোময়, তুয় অথবা ধূলা এই সকল ত্রব্য গোমুত্রসহ পেষণপূর্বক উষ্ণ করিয়া ভদ্ধারা স্বেদ প্রদান করিবে।

বেল, শোণা, পাৰুল, গণিয়ারী, গাস্তারী, গোক্ষ্র, রহতী, কন্টকারী, শালপাণী ও চাকুলে সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা এবং অবশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথে তৈল বা ঘৃত মিশ্রিড করিয়া উষ্ণ করতঃ অথবা মাংসরসের সহিত তৈল বা ঘৃত মিশ্রিড করিয়া উষ্ণ করতঃ শূলবং বেদুনা সংযুক্ত শোথ ও ব্রণস্থানে সেচন করিবে।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, সজিনাছাল, বহুণছাল এবং দশমূল; এই
স্কল দ্রব্য সমানভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ
৮ তোলা। এই কাথ উপযুক্ত মাত্র#য় শোধিত গুণ্গুলু অথবা গোমূত্র প্রক্রেপ
দিয়া পান করিলে কক্ষক্ত বিদ্যাধিরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

পৈতিকে শর্করা লাজা মধুকৈঃ শারিবা যুতিঃ। প্রদিহাৎ ক্ষীরপিইউর্বা প্রস্যোশীর চন্দকৈঃ। পিবেদ্বা ত্রিকলা কাথং ত্রিয়ৎ কল্কাক্ষসংযুতং। পঞ্চবল্কল,কল্কেন স্থতমিশ্রেণ লেপ্নং। যট্যাহ্ব শারিবা দুর্কা নলমূলেঃ সচন্দকৈঃ। ক্ষীরপিইউঃ প্রলেপস্ত পিতবিদ্রধিশান্তয়ে॥

পিতজন্ত বিজেধিরোগে শর্করা, থৈ, যফিমধু ও শ্রামালতা ; এই সকল জব্য সমান পরিমাণে এহণপূর্বক হন্ধসহ পেষণ করতঃ প্রলেপ দিবে। অথবা ीत्रकारकाली, रवगात्रम्स ७ त्रकाम्मन नमकारगं सदेता इक्षमस् (भयनभूर्यकः । ।

হরীতকী, আমলকী ও বছেড়া সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্ব জল ১২ ভালা, অবশিষ্ট কার্থ ৮ ভোলা। এই কার্থে উপযুক্ত পরিমাণে ভেউডীচ্ণ ক্ষেপ দিয়া পান করিলে কক্ষ বিদ্রধিরোগ আরোগ্য ছুইয়া থাকে।

বট, অশ্বথ, যজ্জভুমুর, পাকুড় ও বকুল। এই পঞ্চবুক্ষেত্ব ছাল পেষণ-করতঃ ছাত্র মিশ্রিত করিয়া তদ্বারা প্রলেপ দিলে সর্কবিধ বিশেধবোগ বন্দ্র হইয়া থাকে।

যফিমধৃ, শ্বামলতা, দূর্ব্ব , রক্তচিভারমল এবং বক্তচন্দন ; এই সকল দ্রারা শমভাগে গ্রহণপূর্বক ভূমনছ পেষণ করিয়া ভদ্ধারা প্রলেপ নিলে পি ভদ্ধভ্র বিদ্রধিরোগ প্রশমিত ছইয়া থাকে।

বাতমুদ্দকলৈ বনাতৈলম্বাপ্ল তৈঃ।
স্থোক্ষো বহুলো লেপঃ প্রযোজ্যো বাত্রিদ্রথো।
স্থেদোপনাহাঃ কর্ত্রব্যাঃ শিশুমূলসমন্বিতাঃ।
ষবগোধৃমমুদাৈশ সিদ্ধপিষ্টেঃ প্রলেপয়েৎ।
বিলীয়তে ক্লেন্বৈর অপকশৈব বিদ্ধিঃ।
পুনর্বা দারু বিশ্ব দশমূলাভয়ান্তসা।
শুন্গুলুং রুবুতিলয়া পিবেন্নারুতবিদ্ধো॥

বাতজন্ম বিদ্রধিরোগে বাতম দশ্যলের কল্ক উপযুক্ত পরিমাণে বৃদান তৈল ও মৃতাপ্ল ত করিয়া ঈষভ্রণ করতঃ তদ্ধানা মূল (পুক) এলেপ দিনে।

সজিনারমূল সহযোগে বেশবারাদি দ্বারা স্বেদ ও উপানাই এদান কবিলে অথবা যব, গোধুম ও মুগা; এই দ্রব্যত্তর অপ্পে সিদ্ধ কবিল। পেমণপুর্বাব তদ্বারা প্রলেপ দিলে অপকবিদ্রাধি তৎক্ষণাৎ বিলীন ইইয়া যায়।

পুনর্বা, দেবদাক, শুণ্ঠী ও দশমূল: এই সকল দ্রব্য কৃটিত স্থান মানান্দ্র সমস্তে ২ তোলা, পাকনিমিত্ত জল ৩১ তোলা, পাকার্বশিষ্ট রাথ ৮ তোলা । এই ক্লাপ উপযুক্ত পরিমাণে শোধিত গুগ্গুলু অথবা ভেবেণ্ডার তৈনে প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে বাতজ্ঞ বিদ্রধিবোগ বিন্ট হইয়া থানে।

পিত্তবিদ্রধিবৎ সর্ববাং ক্রিয়াঞ্চ নিরবশেষিতঃ।
বিদ্রধ্যাঃ কুশলঃ কুর্য্যাদ্রক্তাগস্ত নিমিন্তয়োঃ।
শোভাঞ্জনক নির্যুহো হিন্ধু সৈম্ববসংযুতঃ।
অচিরাদ্বিদ্রধীন হন্তি প্রাতঃ প্রাতর্নিষেবিতঃ।
শিগুমূলং জলে ধৌতং দরপিন্তং প্রগালয়েৎ।
তদ্রসং মধুনা পীতা হন্তান্ত্র বিদ্রধিং নবঃ।

শেতবর্ষাভূবোমূলং মূলয়া বরুণসাচ।

ভৌলন কথিতং পীতমপকং বিদ্রেধিং জয়েৎ।

শমরতি পাঠামূলং ক্ষৌদ্রমূতং তণ্ডু লাজসা পীতং।

অন্তর্ভু তং বিদ্রমিন্নতমাথেব মনুজসা।

অপকে জেভভুদ্দিউং পকে তু ত্রণবং ক্রিয়া।

সূত্রেপ্রদ্রমধশ্চব মৈরেয়াম স্থরাসবৈঃ।

পেয়ো বরুণকাদিস্ত মধ্য শিগু রসোহথবা।

প্রিরম্ব ধাতকী লোধ্রং কট্কলং তিনিশত্বিং।

এভিস্তলং বিপক্তব্যং বিদ্রমো রোপনং পরং॥

িরিৎসা কুশল বৈদ্য রক্তজ ও আগস্থক বিদ্রাধিরোগে, পৈত্তিক বিদ্রাধি-বেংকে কথিত কিয়া সকল প্রয়োগ করিবেন।

मজিনার ছাল ই ভোলা। পাকনিমিত্ত জল ১২ ভোলা, পাকাবশিষ্ট কার্থ । ভোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় হিন্দু ও সৈদ্ধবলবণ প্রক্ষেপ দিয়া ভাছা । এতিদিন প্রাভালে পান করিলে সর্বপ্রকার বিদ্রধিরোগ নিবারিত হইয়া থাটে।

নজিনায়লের ছাল জলদ্বারা ধৌত করিয়া উত্তমরূপে পেষণপূর্ব্বক বস্ত্রদ্বারা ভাষা ছাঁকিয়া লইবে। এই রস মধুসহ পান করিলে অন্তর্ব্বিদ্রশিরাক নিশ্চয়ই দ্বীভূত হইয়া যায়।

শ্বেত পুনর্গর মূল ২ তোলা অথবা বহুণরক্ষের মূলের ছাল ২ ভোলা, পাকার্থ জল /॥• অর্দ্ধনের, শেষ / ৮ অর্দ্ধপোরা। এই কাথ পান করিলে অপক বিদ্রধি নীয়েই আবোগ্য হইয়া থাকে।

আকনাদিরগুল তণ্ডুলোদক সহ পেষণপূর্ব্বক মধু **প্রক্ষেপ দিয়া পান** ক্রিলে অতি প্রবল অন্তর্ভু ত বিদ্রধি অতি সত্ত্র বিন**ন্ট হ**ইয়া **থাকে।**

অপর্ক বিদ্রধিরোগে ,পূর্ব্বোক্ত উষধাদি প্রয়োগ করিবে; কিন্তু অন্তর্গত বিদ্রধি পরু হইলে তাহাতে ত্রণুক্ত চিকিৎসা করা কর্ত্তবা। আর যখন বিদ্রন্থর উদ্ধি না অধাদেশ দিয়া পূর রক্তাদি আবিত হইবে, তথন উহাতে পৌটিক হারা, কাঞ্জিক, অথবা আসব সহযোগে বহুণাদিগণের কাথ বা রক্ত-সজিনার কাথ রোগাকে পান করিতে দিবে। এবং বিদ্রধির ক্ষত পূরণার্পে প্রির্ম্পু, ধাইফুল, লোধ, কট্কল ও তিনিশের ছাল সহযোগে ছত পাক করিয়া তাহা ক্ষতছানে প্রয়োগ করিবে।

পারদদ্য ত্রয়োভাগান্তাত্রকলৈয়ক বিংশতিঃ।

নবভির্গন্ধকদ্যাংশৈঃ শৃঙ্গবেরেণ মর্দ্দরেৎ।

সপ্তাহমাতপে তীত্রে ভাবিতঃ শস্তবল্লিখেৎ।

গান্ধণাহিকেণং তুলাং ত্রাহং জনীরমর্দিতং।
কুমাধা। নরমূত্রেণ চিত্রকেন চ শিন্ধনা।
দৌবর্চলেন চ পৃথক্ যুক্তাচ বিধিবৎ ক্রমাং।
কাণীল সৈম্বৰ শিলাঙ্গত্ব হিন্তু চূর্ণে
মিঞ্জিকতো বরুণবলকলঙ্গং ক্যায়ঃ।
অভ্যন্তরোথিত মপস্কমতি প্রমাণ
ত্রণাময়ং জয়তি বিদ্রোধনায়ঃ॥

इंडि প্রয়োগ হিলামণো বিভ্রাধিকারঃ।

পারা ১ ভাগা তাম ১১ ভাগা এবং গান্ধক ৯ ভাগা একর মিঞ্জিত করতঃ
লার রসে মর্কনপূর্বক তার স্থাতিপে ৭ সাত্তিবিস ভাবনা দিয়ে ওদ্ধারা
লেপ দিলে বিদ্রেখির রগন্তলে শস্ত্রের ছায় লেখন। আঁচ্ছান) কবিবে এনং
নক, পারদ ও অন্ধিকেও প্রভাবেক সমান মাতার প্রাহণীপূর্বক ক্ষমীরলের,
কুমারী, নর্যক্র রক্তিভার কাথা সৈদ্ধনবংগের জল ও সচললগণের জল
লাদের প্রত্যেকের দ্বারা ০ দিন করিয়া পৃথল্জপে মর্কনপূর্যক ভদ্ধারা
লেপ দিবে। এবং মধ্যে মধ্যে ক্ষতের উপরি উপযুক্ত পরিমাণে কাশীশ
নিরাকন্) সৈদ্ধনল্যণ, শিলাজতু ও হিজুচ্ব প্রক্ষেপিত বক্ষণ্যক্ষের ছালের
থি পরিসেচন করিবে। ইছাতে অভান্তরগত অতি বৃহৎ অপক বিদ্রধি জন্ম
লিও শোখা বিনক্ত হইয়া থাকে।

ইতি বিদ্রধিরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শারীরত্রণসদ্যোত্রণাধিকারঃ।

আদে বিদ্লাপনং কুর্যাৎ দ্বিতীয়মবদেচনং।
তৃতীয়মুপনাহক চতুর্থীং পাটন ক্রিয়াং।
পঞ্চমং শোধনং কুর্যাৎ ষঠং রোপণমিষাতে।
এতে ক্রিয়া ত্রাদেগাকা সপ্তমো বৈক্ ভাপহঃ॥

ত্রণশোথরোগে প্রথমতঃ বিল্লাপন (শোথাদি বিনাশার্থে প্রলেপ, পরি-যক ও অভ্যঙ্গাদি প্রয়োগ), দ্বিতীয়ে অবদেচন (বিরেচন, বমন ও রক্ত-মাক্ষণাদি ক্রিয়া প্রয়োগ), ভৃতীয়ে উপনাহ (স্বেদ, প্রলেপাদি প্রয়োগ), ভূর্থে পাটনক্রিয়া (অন্ত্রাদি দ্বারা ছেদন করা), পঞ্চমে শোধন (আবিত য়ে, রক্তাদি দুরীভূত করিয়া পরিষ্কার রাখা) এবং যতে লেপনক্রিয়া (যাহাতে ব্য সত্তর পুরিয়া উঠে) প্রয়োগ দ্বারা চিকিৎন। করিবে। অজগন্ধাশগন্ধা চ কালা সরলয়া সহ।

বিকেশীকাজশৃন্ধী চ প্রলেপঃ শ্লেম্শোথহা।
দূর্কাচ নলমূলক মধুকং চন্দনন্তথা।
শীতলাশ্চগণাঃ সর্কে প্রলেপং পিত্রশোধহা।
নাথোধাড় মুরাশ্ব প্রক্ষবেতস্বক্ষলৈঃ।
সম্পিকৈঃ প্রলেপঃ স্যাচেছাথ নির্বাপনঃ স্মৃতঃ।
আগান্তো শোণিতোপে চ এব এব বিধীয়তে॥

বন্ধমানী, অগ্নগদ্ধা, কালা (কুলেথাড়া), সরলকার্চ, একেশিকা ্ (তেউড়ীমূল) ও অজশৃন্ধী (মেযশৃন্ধী) এই সকল দ্রব্য সমভাগে জলসহ পেষণপূর্ব্বক প্রলেপ দিলে শ্লেঘাজনিত ত্রণশোথ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

দুর্বা, নলমূল, যফিষণু, রক্তচন্দন এবং স্থ্রুভাক্তি কাকোল্যাদিগণ, উৎপলাদিগণ ও মধ্যোধাদিগণ প্রভৃতি শীতল গণ সমূহের প্রলেপ দিলে পিজজ্ঞ ত্রণশোথ নিবারিত হইরা থাকে। কাকোল্যাদিগণ—কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবক, ঋষভক, মেদা, মহামেদা, মুগানী, মাষাণী, গুলঞ্চ, পাদ্মকাঠ্ঠ, বংশলোচন, কাঁকড়াশৃঙ্গী, পুগুরিয়াকাঠ্ঠ, ঋদ্ধি, রদ্ধি, প্রান্ধা, জীরা, কৃষজ্ঞীরা ও যফিষণু। উৎপলাদিগণ—উৎপল, রক্তোৎপল, কুমুদ, দৌগানিক (কহলার), কুবলর ও পুগুরীক। মধ্যোধাদিগণ—বট, যজ্জভুমুর, অশ্বথ, পাকুড়, মৌলপুষ্পা, আমড়া, অর্জুনরক্ষা, আম, কেওড়া, চোরক, ভেজপত্র, জম্বু, বিশ্বজন্ম, বিশ্বজন্ম, কট্কী, বকুল, কদম্ব, বদরী, গাব, শালরক্ষা, লোধ, সাবরলোধ, ভেলা, পলাশ ও নন্দীরক্ষ।

বট, যজ্ঞভুমুর, অধ্বথ, পাকুড়, ও বেডস; এই পঞ্চরক্ষের ছাল পেষণপূর্বক মৃতসহ মিশ্রিভ করিয়া প্রলেপ দিলে ত্রণশোথ নিবারিভ ছইয়া থাকে।
ভুগাগন্তক এবং রক্তজন্ম ত্রণশোথরোগে পৈত্তিক ত্রণশোথের স্থায়
চিকিৎসা করিবে।

মাতৃলুঙ্গাগ্নিমন্ত্রী চ ভুদ্রদার মহৌষধং।
অহিংস্রাপ্টের রান্সা চ প্রলেপো বাতশোথহা।
কল্কঃ কাঞ্জিক সংশিষ্টঃ স্নিগ্ধঃ শাখোটকত্ত্ব চঃ।
স্থাপর্নের নাগানাং বাতশোগ্নবিনাশনঃ।
পুনর্গবা শিগু দারু দশমূল মহৌষধঃ।
কফবাতরতে শোথে লেপঃ কোঞো বিধীয়তে॥

ছালন্সলেবুর মূল, গণিয়ারী, দেবদাক, শুগ্ঠী, কালিয়াওকড়া এবং রামা; এই সকল দ্রুয়া পেষণপুর্বক প্রলেপ দিলে বাডজন্ম ত্রণশোধ দুরীভূত হইয়া থাকে। শৈওড়ারছাল কাজির সহিত পেখনপূর্বক ছত দিজিত করিয়া এলেপ দিলে গকড় কর্ত্ ক বিশক্ত নর্পের ভার বাডজত ত্রণশোধ নিক্ষাই আরোগ্য হবরা থাকে।

পুনর্গবা, সঞ্জিনাছাল, দেবৰাঞ্চ, দশমূল এবং শুঠী উষ্ণ করিয়া ইহাদের প্রালেপ দিলে বাতমেশ্য জন্ত ত্রপশোথ নিক্ষরই বিষয় হইয়া থাকে।

ন রাত্রে লেপনং দদাদেভক পতিতন্ত্রথা।
ন চ পর্যাবিতং তুরামানত্ত্বাবধারয়েৎ।
রক্তাবদেচনং কুর্যানাদাবেব বিচক্ষণঃ।
শোথে মহতিসংবদ্ধে বেদনাবতিচত্রণে।
যো নযাতিশমং লেপ স্বেদদেকাপতপ্রণিঃ।
দোপিনাশং ক্রজত্যাশু শোথঃ শোণিতমোক্ষণঃ।
বালরদ্ধকশক্ষীণ ভীক্ষণাং যোষিতামপি ।
মর্বোপরি তু যাতে চ পকে শোথে স্থদারুণে।
গবাং দন্তং জলেম্বইং বিন্দুমাত্রাং প্রলেপয়েৎ।
অত্যন্ত কঠিনে চাপি শোথে পাচনভেদনং।
কটুতৈলাম্বিত লেপাৎ সর্পনির্ঘোকভন্মভিঃ।
চয়ঃ শামতি গগুস্য প্রকোপঃ ক্ষু টতি ক্রতং॥

রাত্রিকালে কদাচ প্রলেপ দিবেন। এবং প্রদত্ত প্রলেপ পতিত হইলে ভদ্ধারা পুনরায় প্রলেপ দিবে না। আর প্রলেপ দ্রব্য পয়ুর্বিত (বাসী) বা শুষ্ক হইলে তাহা প্রলেপার্থে কদাচ ব্যবহার করিবে না।

যে ত্রণ অত্যন্ত শোথ ও বেদনা সংযুক্ত; বিচক্ষণ চিকিৎসক ভাছাতে প্রথমেই রক্তমোক্ষণ কার্য্য করিবেন।

যে ত্রণশোথ প্রলেপ, স্বেদ, সেক ও অপতর্পণ (লঙ্গন) প্রভৃতি দারা প্রশমিত না হয়, তাহা রক্তমোক্ষণ দারা উপশমিত হইয়া থাকে।

বালক, ব্লন্ধ, কৃশ, ক্ষীণ, ভীৰু ও ন্ত্ৰীলোক ইছাদের মর্মান্থানের উপরিম্ব অত্যন্ত শোথ সংযুক্ত ত্রণ পক্ষ ছইলে ভাছা এবং অভ্যন্ত কঠিন ত্রণশোথ কদাচ অন্ত্রদারা ছেদন করিবে না। (উছা ঔষধাদি দ্বারা ছেদন করাই কর্ত্তব্য) উছাতে গোদন্ত জলসহ ঘর্ষণ করিয়া ভদ্দারা বিন্দুমাত্র প্রলৈপ দিলেই উহা পাকিয়া স্বয়ং বিদীব্ ছইয়া যায়।

নর্পনির্মোক (নাপের খোলন) দক্ষ করিয়া নেই ভস্ম নর্বপ তৈল নহ-নিজ্ঞাপূর্বক ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে ত্রণশোথ বর্দ্ধিত হইতে পারে না এবং শ্বয়ং বিদীণ হইয়া (কাটিয়া) পুরবক্তাদি দোষ দকল অতি দত্তর বহির্গত হইয়া থাকে।

ভিলাগ্রকঃ।--

তিলকল্কঃ সলবণো দ্বে হরিদ্রে তিরুদ্রতং।
মধুকং নিয়পতাণি লেপঃ স্যাদ্ণশোধনঃ॥

উলকল্ফু (ভিলের খৈল), সৈত্ববলবণ, হরিন্তা, দাকহরিন্তা, ভেউড়ী, ্ন বফিদবৃ ও নিমপাতা; এই সকল দ্রব্য সমানভাগে এহণপূর্বক একত্র পেষণ করিয়া ভদ্বাবা প্রলেপ দিলে ত্রণশোধিত হইয়া থাকে।

নিম্বপত্রং তিলা দন্তী ত্রিব্রৎ দৈশ্বব মান্দিকং।

ফুউত্রণপ্রশমনো লেপঃ শোগনকেশরী।

কেম্বা শারিবামূলং সর্বত্রণ বিশোগনং।

নিম্বপত্রতিলৈঃ কল্কো মধুনা ক্ষতশোধনঃ।

রোপণঃ সর্পিয়াযুক্তো থবকল্কেইপ্যয়ং বিধিঃ।

নিম্বপত্র মৃতক্ষীদ্র দার্কী মধুকসংযুতা।

বর্তিন্তিলানাং কল্কো বা শোধয়েদ্রোপ্রেম্বনং।

নিম্বপত্রং মৃতং প্রলেপাৎ ক্ষতনাশনং।

করপ্রারিট নিশ্রতি তী রসোহন্যাদ্রণ ক্রিমীন্।

লশুনেনাথ বা দন্যালেপনং ক্রিমিনাশনং॥

নিম্বপত্র, তিল, দন্তীমূল, তেউডীমূল, দৈশ্ববলবণ ও মধু; এই সকল দ্রব্য একত্র অর্থবা কেবল মাত্র অনস্তমূল পেষণপুর্বক ডদ্বারা প্রলেপ দিলে দ্রক্টব্রণ বিশোধিত ছইয়া প্রশমিত ছইয়া থাকে।

নিমপাতা ও ভিল একত্র অথবা কেবলমাত্র যব মধুদহ পেষণপূর্বক প্রারোগ কবিলে ক্ষত বিশোধিত হয় এবং য়তসহ প্রয়োগ কি:লৈ ক্ষত পুরিয়া উঠে।

নিমপাতা, ছত, ৰধু, দাক্ষরিজা ও যফিমধু; এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণপূর্বক ভদ্ধাবা অর্থবা কেবলমাত্র ভিলের খৈল পেষণ করিয়া ভাষার বর্ত্তি প্রয়োগ করিলে ত্রণ শোধিত ছয় এবং পূরিয়া উঠে।

কেবলমাত্র নিমপাতা শ্বত সহযোগে পেষণ করিয়া ডদ্বারা প্রলেপ দিলে ক্ষেত্র বিনষ্ট হইরা থাকে।

নাটাকরঞ্জ, নিমপ্পাত। ও নিনিন্দাপাতা, ইহাদের রম অথবা বস্থনের রম প্ররোগু করিলে ত্রণগত ক্রিমি (পোকা) সকল বিনস্ট হইয়া যায়।

ত্রিফলা অগ্তালুঃ।—

ষে ক্লেদপাক সূতিগন্ধবস্তো ত্রণা মহান্তঃ সরুজঃ সশোধাঃ। প্রযান্তি তে গুণ্গুলুমিশ্রিতেন পীতেন শান্তিং ত্রিফলারসেন ॥ ত্রিকলা অর্থাৎ হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া; এই দ্রব্যন্তর সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ ডোলা, অবলিফ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথ গুণ্ডলু প্রক্রেণ দিয়া পান করিলে ক্লেন, পাক, পৃয়াদিজ্ঞাব, তুর্গন্ধ ও অত্যন্ত বেদনাসংযুক্ত অতি বৃহৎ ত্রণশোথ সকল নিবারিত হইয়া থাকে।

বটিকা গুগ্গুলুঃ।—

বিভঙ্গ ত্রিফলা ব্যোষ চূর্ণং গুণ্গুলুনাশনং। সর্পিষা বটিকাং কৃত্বা খাদেদ্বা হিতভোজনঃ। ফুউত্রণাপচী মেহ কুষ্ঠ নাড়ীত্রণাপহঃ॥

বিড়ন্দ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুগী, পিপুল ও মরিচ; এই সকল দ্রোর চূর্ণ প্রত্যেকে সমানভাগে এবং সর্ব্যসফির সমান পরিমাণে গুগুগুলু লইয়া পেষণপূর্ব্যক ঘুত সহ মিশ্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। স্থপব্যভোজী হইয়া এই বটীকা দেবন করিলে হুইত্রণ, অপচী, মেহ, কুঠ ও নাড়ীত্রণ (যাহাকে নালী ঘা বলা যায়) রোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

করঞ্জাদ্যং মূতং ৷—

নক্তমালস্য পত্রাণি তরুণানি ফলানি চ।
স্থমনায়াশ্চ পত্রাণি পটোলারিউরোন্ডখা।
দ্বে হরিদ্রে মধৃচ্ছিন্টং মধুকং তিক্তরোহিণী।
মঞ্জিষ্ঠা চদ্দনোশীরমুৎপূলং শারিবে ত্রির্হ্ ।
ত্রেষাং কার্ধিকর্ভাগৈন্ন তপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
ফুইত্রণং প্রশমনং তথা নাড়ীবিশোধনং।
সদ্যচ্ছিন্ন ত্রণানাস্ত্র করঞ্জান্থিদং স্বতং।

উৎকৃষ্ট গণ্য ছত /৪ দের, জল ।৬ দের এবং ক্লাথার্থ ডছরকরঞ্জের কোমলপত্র ও ফল, জাতীপত্র, পল্ডা, নিমপাডা, ছরিদ্রা, দাক্ছরিদ্রা, মাম, যফিম্থু, কট্কী, মঞ্জিটা, রক্তচন্দন, বেণারমূল, নীলোৎপল, অনস্ত-্লা, খ্যামালতা এবং তৈউড়ীমূল এই সকল কৃষ্টিত প্রত্যেকে ২ ভোলা। থ্যাবিধানে এই ঘত পাকপুর্বক প্রয়োগ করিলে ছফ্টরণ প্রশমিত এবং নাড়ী-রণ বিশুদ্ধ হইরা থাকে, এই "করঞ্জাদাস্ত" নদান্তিম র্ণেও অতীব প্রশন্ত লিয়া জানিবে।

জাতিকাদ্যং মৃতং।—

জাতীনিম্ব পটোলপত্ত কটুকা দাক্ষী নিশা শারিবা। মঞ্জিষ্ঠাভয় দিক্থতুল্য মধুকৈর্মকোহ্ববীকৈঃ সমৈঃ। সপিঃ সিদ্ধানেন স্কাবদনা মর্যাশ্রিতা আবিণা। গম্ভীরাঃ সরুজো ত্রণাঃ সগতিকাঃ শুশুন্তি রোহন্তি চ॥

ছত /৪ চারিসের, কল্কার্থ জাতীপত্র, নিষপত্র, পল্তা, কট্কী, দাক-ধরিদ্রা, হরিদ্রা, অনন্তমূল, মঞ্জিষ্ঠা, বেণারমূল, মোম, তুঁতে, ষফিমধু ও করঞ্জবীজ এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একসের। যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক প্রয়োগ করিলে স্ক্রমমুখ মর্মস্থানগড আবসংযুক্ত গভীর ও বেদনান্তিত নাড়ীত্রণ সকল বিশুদ্ধ ও রুঢ় হইরা। থাকে।

গৌরান্যং মৃতং।—

গৌরা হরিদ্রা মঞ্জিষ্ঠা মাংদী মধুকমেবচ।
প্রপ্রেলিং দ্রীবেরং ভদ্রমুস্তং দচন্দনং।
জাতীনিম্বপটোলঞ্চ করঞ্জং কটুরোহিণী।
মধুচ্ছিন্টং সমধুকং মহামেদা তথৈবচ।
পঞ্চলকলতোয়েন মতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
এম গৌরো মহাবীর্য্যোঃ দর্বব্রেণবিশোধনঃ।
আগান্ত সহজশৈচব স্থাচিরোম্বান্ট যে ব্রণাঃ।
বিষমানশি নাড়ীস্ত শোধয়েচ্ছীম্র মেবচ।
গৌরাদ্যং জীরকাদ্যঞ্চ তৈলমেতৎ প্রসাধাতে।
তৈলং স্ক্রাননে দুয়ে ব্রণে গান্তীর এবচ॥

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিসের, অথবা উৎকৃষ্ট তিলতৈল /৪ চারিসের, কার্থার্থ বট, অশ্ব্য, বজ্ঞভুসুর, পাক্ড ও বেতস ইহাদের ছাল সমভাগে সমস্তে /৮ সের, জল ৬৪ সের এবং অবশিষ্ট কাথ।৬ যোলসের। কল্কার্থ হরিদ্রা, লাকহরিদ্রা, মঞ্জিষ্ঠা, জটামাংমী, মৌলপুশা, পুগুরিয়াকাষ্ঠ, বালা, মুখা, বক্রচন্দন, জাতীফল, নিম্নপত্র, পল্ডা, ডহরকরঞ্জের ছাল, কট্কী, মোম, মফিম্বু এবং মহামেনা (অভাবে শ্রামালতা) এই সকল দ্রব্য কৃটিত সমভাগে সমস্তে /১ একসের। যথাবিধানে এই মৃত বা তৈল পাকপুর্বক প্রায়োগ করিলে আগন্তক, সহক্র, চিরকালোথ, ইক্ষমমুখ, মৃষ্ট, গন্তীর প্রভৃতি সর্ব্ব-প্রকার ত্রণ ও নাড়ীকেণ বিশুদ্ধ ইইয়া থাকে।

চন্দৰাদ্যং যমকং ৷—

চন্দনং বটগুঙ্গঞ্চ মঞ্জিষ্ঠা, মধুকন্তথা। প্রশোগুরীকং দুর্ববাচ পত্তঙ্গং ধাতকী তথা। এভিত্তিলং বিপক্তবাং সর্পিঃ ক্ষীরসমন্থিতং। অগ্নিদম্ব ত্রণজ্ঞেষ্ঠমুক্ষণাক্রোপনং পরং॥

উৎকৃষ্ট গবাস্থত /২ ছইসের, উৎকৃষ্ট ভিলভৈল /২ ছইসের; জল। । যোলদের; এবং কল্কার্থ চন্দ্রন, বটের ঝুরি, মঞ্জিষ্ঠা, যফিমধু, পুগুরিয়াকাষ্ঠ দুর্ব্বা. পাত্তক (রক্তচন্দ্রন) ও ধাইফুল এই সকল দ্রব্য কুটিত সমভাগে সমতে /১ একসের এবং ছগ্ধ ।৬ যোলসের। যথানিয়মে এই চন্দ্রনাদ্য যমক প্রস্তুত করিয়া প্রয়োগ করিলে (এক্ষণ করিলে) অগ্নিনগ্ধ-জ্বনিত প্রণ সকল রা ছইয়া থাকে।

দূর্বাদ্যং তৈলং স্বতঞ্চ।—
দূর্বা স্বরসদিদ্ধা তৈলং কম্পিলকেন বা।
দার্বীত্বচশ্চ কল্কেন প্রধানং ত্রণরোপণং।
ফেনৈব বিধিনা তৈলং স্বতং তেনৈব সাধ্য়েৎ।
রক্তপিভোত্তরং জ্ঞাত্বা সর্পিরেবাবচারয়েৎ॥

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিদের অথবা তিলতৈল /৪ চারিদের; দূর্ব্বারত্বরদ ।৬ যোলদের এবং কল্কার্থ কমলাগুড়ী /॥• অর্দ্ধনের ও দাক্তরিদোর
ছাল /॥• অর্দ্ধনের। যথাবিধানে এই তৈল ও মৃত পাক করিবে। এই
দূর্বাদ্য তৈল দর্ববিধ ত্রণরোপক এবং এই দূর্ব্বাদ্য মৃত রক্তপিত জন্ম ত্রণরোগে প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

কুঠারাদাং তৈলং।—

কুঠারকাৎ পলশতং কাথয়েল্ললনেইন্তান ।
ততঃ পানাবশেষেণ তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েও।
কল্কৈঃ কুঠারাপামার্গ প্রোষ্ঠিকা মান্দিকামু চ
এতৎ কুঠারকং তৈলং ত্রণশূোধন রোপনং।
নাড়ীয় পরমোহভাঙ্গে নিজ্যুষাগন্তকীয়ু চ॥

উৎকৃষ্ট তিলতৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ কুরালিয়া (কোদালে কুড়লে) লভা ।২॥• সাড়ে বারদের, পাকার্থ জল ১৪ চৌষট্রদের এবং পাকার্যশিষ্ট কাথ।৬ ষোলদের ও কল্কার্থ কুরালিয়া, অপামার্গ, প্রোষ্ঠিক (পুঁটিমাছ) এবং মক্কিকা এই সকলে দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একসের। বথাবিধানে এই ভৈল পাকপুর্বক অভ্যক্তে প্রয়োগ করিলে সর্ববিধ নাড়ীত্রণ আগন্তকত্রণ ও শারীরত্রণ বিশুদ্ধ ও প্ররুদ্ধ ছইয়া থাকে।

বিপরীত মলতেলং।—
সিন্দুরকুষ্ঠ বিষহিস্কুরগোন্চিত্র
বাণাজ্যি, লাঙ্গলিক কলক বিপক্ত তৈলং

প্রাদাদমন্ত্রযুতকং ক্বতত্বকেশঃ
ক্রিরত্রণপ্রশমনো বিপরীতমলঃ।
খজাভিঘাত গুরুগও মহোপদংশং
নাড়ীত্রণ ব্রণবিচর্চিকা কুষ্ঠপামা।
এতারিহন্তি বিপরীতকমল্ল নাম
তৈলং যথেই শ্রনাশন ভোজনস্য।
চিত্রকো রক্তচিত্রকঃ বাণাজ্যি, শরপুঞ্জায়
মূলং জলঞ্চ চতুগু লং তৈলঞ্চ সার্বপং
প্রাদাদামন্ত্রো মাহেশ্বরমন্ত্রঃ॥
ওঁ ই হীঁ হ্রী হেঁ হোঁ শিবায় স্বাহা।
ইতি পঠিত্বা ফুৎকারেণ ফেণমালোচ্যং॥

উৎকৃষ্ট সর্বপতেল /৪ চারিসের; জল ।৬ যোলদের এবং কুল্কার্থ নিন্দুর, কুড়, বিষ, ছিন্ধু, রসোন, রক্তচিতারগূল, শরপুঞ্জারগূল ও বিষলাঙ্গলিয়া; এই সকল দ্রব্য স্মভাগে সমন্তে /> একসের। যথাবিধানে এই তৈল পাক-পুর্বক "ওঁ ই হী ক্রী হেঁ হোঁ। শিবায় স্বাহা" এই মাহেশ্বর মন্ত্রপাঠ করিয়া ফুংকার দিয়া ফেণ আলোড়নপূর্বক তৈল সিদ্ধ করিয়া লইবে। যথেই শয়ন আসন ও ভোজনকারী ব্যক্তি এই বিপরীত মল্লভৈল ব্যবহার করিলে খঙ্গাভিঘাত-জনিত ক্ষত, গুক্তর শোথ, উপদংশ, নাড়ীব্রণ, ব্রণ, বিচর্চ্চিকা, কুষ্ঠ ও পামা প্রস্তৃতি বিবিধরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

তুলাং সর্জ্রনাং লোধ্রং সিন্দুরাতিবিষে নিশা।
তুলাং সর্জ্রনাং লোধ্রং সিন্দুরাতিবিষে নিশা।
তুলাংশং পিল্লীবাসো তুগ্তলু মৃততৈলকৈঃ।
তুলাংশং পেষয়েৎ পিণ্ডং ততুলাং সিক্থকং ভবেৎ।
মূদ্বিনা প্রেইৎ পাত্রে মিশ্রিতং তংসমুদ্ধরেৎ।
বর্ত্তিত নবতী নাম মুন্টা শীতজলান্বিতা।
তুংসাধ্য ত্রাগণেণ্ডমু তিহা নাড়ীত্রণেমু চ।
শোধনে রোপণে তিব স্বাস্থ্যমুৎপাদয়ত্যলং।

ধূনা, লোধ, সিন্ধুর, অতৈষ, হরিদ্রা, তিনিশারক্ষেরছাল, বোলনামক গদ্ধদ্বা, শিলারস, গুণুগুলু, দ্বত এবং তৈল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমানভাগ এবং সর্বসমষ্টির সমান মোম লইরা সমস্ত দ্রব্য একত্রিত করিরা মুদ্ অগ্নিসংযোগে পাকপূর্বক শীতলজ্ঞলসহ বর্ত্তি প্রস্তুত করক্তঃ প্রয়োগ করিলে হু:সাধ্য, ত্রণশোথ ও নাড়ীত্রগরোগ বিশুদ্ধ ও রুচ হইরা থাকে।

অমৃতগুড়িকা গুগ্গুলুঃ ৷—

অমৃতা পটোলমূল ত্রিফলা ত্রিকটু ক্রিমিয়ানাং। বিদ্যানাং চুর্ণং সর্বসমে। গুণ্গুলোর্ভাগঃ।
প্রতিবাসরমেকৈকাং গুড়িকাং খাদেদক্ষ পরিমাণক।
ক্রেত্থ ত্রেণবাতাসুগ্গুলোদরঃ শ্বরপু পাণ্ড রোগান্।

শুলঞ্চ, পটোলমূল, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ ও বিড়ঙ্গ প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং সর্বসমন্তির সমান শোধিত গুগাগুলু এইণপূর্বাক উত্তম প্রকার চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করতঃ ২ ভোলা মাত্রায় শুড়িকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার একটী করিয়া শুড়িকা সেবন করিলে সর্ববিধ ত্রণ, বাতরক্ত, গুলা, উদর, পাণ্ডু এবং শোথ প্রভৃতি বিবিধ-শ্রীগা বিনক্ট হইয়া থাকে।

বিভক্ষাদিবটিকা শুগ্ঞলুঃ ৷—

বিড়ঙ্গ ত্রিফলা ব্যোষচুর্ণং গুগ্গুলুনা সহ।
সপিষা বটিকাং খাদেজজ্ঞাত্বা চ হিতভোজনং।
ফুউত্রগাহপটী মেহ ফুউনাড়ী বিশোধনঃ॥

বিড়ঙ্গ, হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ প্রত্যেকে এক ভাগ এবং গুগগুলু সর্বাসমাধীর সমান মাত্রায় লইরা চূর্ণ করতঃ স্বত্তমহ বটিকা প্রস্তুত করিবে। স্থপথ্য সেবী হইরা এই বটিকা সেবন করিলে তুই-ত্রণ, অপচী ও মেহ বিনষ্ট হর এবং ত্রন্ত নাড়ীত্রণ বিশুদ্ধ ইইরা থাকে।

অমূতা তাগ্তলুঃ ! —

অমৃতায়াঃ পলশতং দশমূলপলন্তং।।
পাচা মূর্বা বলে দ্বে চ দার্ব্বী গন্ধর্বহন্তীনী।
পৃথক্ দশপলান্ ভাগান্ শতকাশি হরীতকী।
বিভীতকী শতে দ্বে চ চত্বার্যামলকানি চ।
গুগজনুপ্রস্থ সংযুক্তো দোণে২পামুষিতং নিশি।
পূর্বাক্ষে কাথয়েদ্ধীমান্ চতুর্ভাগাবশেষিতং।
উদ্ধৃত্য স্বাত্ববিপচেদ্যাবল্লেছ ক্রমা মনং।
শীতৈত্বে তানি মধুনঃ প্রক্ষিপেৎ পলিকানি চ।
ক্রিফলা ত্রিরতা ব্যোষ দন্তী ছিন্নাশ্যদ্ধকাং।
ক্রিমিশক্রদলং চোচং স্ক্রেলা নাগকেশরং।
স্বচ্ছনা হাবচেন্টায়া শীতান্তো র্ব্যাভোজনং।

অমৃতাগুণ্গুলুর্নাম সর্বব্রণবিশোধনঃ।
কৃষ্টকৃষ্ঠ বিসর্পাশ্য হিক্কামোহগরোদরং।
প্লীহানং যক্ষমহন্দোগং মুখগুদ্ধিকরং পরং॥

গুল্ঞা । ।।। সের, দশগুল । ২॥। সের, আকনাদী, স্চম্থী, বেড়েলা, শ্বেড-বেড়েলা, দাৰু হরিটা ও এর গুমূল, প্রত্যেকে দশপল, হরীতক্রী ১০০ একশত, বহেড়া ২০০ ছুইশত; আমলকী ৪০০ চারিশত এবং শোধিত গুগ্গুলু /২ ছুই দের ; এই দুকল দ্রব্য উত্তমরূপে কুটিত করিয়া পূর্বাদিন রাত্রে ৬৪ চৌষটি-দের জলে ভিজ্ঞাইয়া রাখিয়া পরদিন প্রাতঃকালে পাকপূর্বক ।৬ ষোলসের থাকিতে নামাইয়া বস্ত্রদারা ছাকিয়া জলীয় ভাগ কাথ গ্রহণ করিবে। তদননন্তর মৃত্র অগ্লি দন্তাপে পাক করিতে করিতে গাঢ় হইয়া আদিলে নামাইবে; এবং শীতল হইলে উহাতে /২ একদের মধু এবং হরীতকী, বহেড়া, আমলা, তৈউড়ীমূল, শুঠী, পিপুল, মরিচ, দন্তীমূল, গুলঞ্চ, অশ্লম্মা, বিড়ক্ষ, ভেজপত্র, দাক্তিনি, ছোটএলাচি ও নাগকেশর ইহাদের মিলিভচ্ব /২ একদের মিশ্রিত করিয়া লইবে। যথেক্ছ আহার বিহার, শীতল জল ও বলকর দ্রব্য দেবনী হইয়া এই অমৃতা গুগ্গুলু উপযুক্ত মাত্রায় দেবনী করিলে মর্কবিশ্ব ব্রণ বিশোধিত হয় এবং কৃষ্ঠ ও বীদর্পাদি বিবিধ্বোগ আবোগ্য হইয়া থাকে।

ত্র বর্গ গঃ।—

পারদদ্য ত্রেষ্ট্রাগান্তা দ্রকলৈ কিংশতিঃ।
জন্ধীরামেন তৎপিন্তং মানিমন্ত্র্যা সপ্তভিঃ।
নবভিগন্ধিনাং শৈঃ শৃঙ্গবেরেণ মর্দ্দ্রেৎ।
সপ্তাহমাতপে তীত্রে ভাবিতঃ শস্ত্রবল্লিখেৎ।
গন্ধেশাহিকেনং তুলাং ত্যহং জন্ধীরমর্দ্দিতং।
কুমার্মা নরমুত্রেণ ছিত্রকেন চ সিন্ধুনা।
দৌবর্চলেন চ পৃথুক্ যুক্ত্যাচ বিধিবৎ ক্রমাৎ।
তাবরোগের্যু সর্বের্যু সদ্যোজাত ব্রনেষু চ।
তথাহি ভগন্দরে গণ্ডমালাশ্চ নিয়োজ্যেৎ।
কৌন্দেণ বা যথাযোগং ক্রিবল্লং পুরুসেবিতং॥

পারদ ৩ ভাগ ও তাম ২১০ভাগ জন্মীর রদে পেষণ করিবে; এবং সৈদ্ধব-লবণ ৭ ভাগ ও গদ্ধক ৯ ভাগ লইয়া আদার রদে মর্দ্দন করিবে। পরে সমস্ত দ্রব্য একত্রিত করিয়া ৭ মাতদিন তীত্র স্থ্যাতপে ভাবিত করতঃ তদ্বারা ত্রণ শস্ত্রের লেখন এবং গদ্ধক, পারদ ও অহিফেন প্রত্যেকে সমভাগে গ্রহণপূর্বক জ্বীরনেবুর রস, স্বত্রুমারীর রস, নরমূত্র, রক্তচিভার কাথ, সৈদ্ধবলবণের জল ও দৌষর্চল লবণের জল এই সকল ছারা ১ বিব করির। পৃথক পৃথক মর্দ্দনপূর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে সর্ব্যপ্রকার ত্রণরোগ, ভগন্দর ও গওমাল। প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়। প্রতিদিন শোধিত গুগ্তলু ১ রভি পরিমাণে মধুসহ নেবন করিলেও ত্রণরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

যশ্চ চন্দ্রপ্রভালীহশ্চিরোপে মর্ম্মণে ত্রণে। ত্রণে গলতি গন্ধীরে কুষ্ঠোক্তোদয়ভাস্করঃ। গলৎকুষ্ঠহরশৈচব যোগঃ কার্য্যো বিজানতা॥

"চক্সপ্রভা লৌহ" এবং কুষ্ঠ অধিকারে কথিত "উদয় ভাস্কর" ঔষধ বথানিয়মে সেবন করিলে চিরকালজাত, মর্ম্মাত পুয়াদি আবসংযুক্ত গঞ্জীর ত্রণ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে এবং এই ঔষধ গলৎকুষ্ঠরোগের পক্ষে মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

ইতি ত্রণশোথ চিকিৎসা।
লবণায় কটুফানি বিদাহীনি গুরুণিচ।
বর্জ্জয়েদরপানানি ত্রণীমৈপুনমেবচ।
নবং ধান্যং মাষতিল গুড়কুলখমুদারুসরাঃ।
কলায়ানিষ্পাবা হরীতকী জলানুপপিশিতং।
হিমামো বলুরং লবণকটুকং পিউবিক্তির্দিধি
ফীরং তক্রং ত্রণেয়ু সকলং দোষজনকং॥

ইতি শারীরত্রণদদ্যোত্রণাধ্যায়ঃ।

লবণ রসাত্মক, অমরসযুক্ত, কটু, উষ্ণ, বিদাহি ও গুকদ্রব্য সহযোগে প্রস্তুত অমপান এবং দৈখুন এই সকল ত্রণরোগী অবশ্য অবশ্য পরিত্যাগ করিবে। তৃতন ধাস্ত, মাধকলায়, তিল, গুড়, কুলথকলায় ও মুগ সহযোগে প্রস্তুত কুসরা (থিচুড়ী), কলায়, রাজমাব, হরীতকী, আনুপজ্জল, আনুপ-মাংস, শীভলদ্রব্য, অমদ্রব্য, বল্লুর (২, মাংস), লবণ রসাত্মক্রব্য, কটুদ্রব্য, পিষ্টক, দধি, হ্রম ও তক্র এই সকল ত্রণরোগে বিশেষ উপকারী বলিয়া জানিবে।

ইতি শরীরত্রণ ও সদ্যোত্রণ চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ নাড়ীব্রণাধিকারঃ।

নাড়ীনাং গতিমন্বিষ্য শস্ত্রেণোৎপাট্যকর্মবিৎ। সর্বব্রেণক্রমং কুর্যাচেছাধনং রোপণাদিকং। শ্লৈম্মিকি তিল্মফ্যাহ্ব নিকুম্ভারিষ্টলৈম্ববৈঃ। শুলাজাং তিলমপ্পার্টজার্লেপরেচ্ছিন্ন শোধিতাং।
বৈশিক্তবীব্রিলমঞ্জিষ্ঠা নাগদন্তী নিশাযুগৈঃ।
নাড়ীং বাতক্তবাং সাধুপাচিতাং লেপরেন্ডিষক্।
প্রত্যক্পুজীফলযুতৈন্তিলৈঃ পিটেঃ প্রলেপরেহ।
পুরাতনগুড়েস্তলাং টক্ষণং স্ক্রমপেষিতং।
তদ্বস্ত্যাপ্রয়েনাড়ীত্রণং শীঘ্রতরং ব্রেজেহ।
আরগ্রধো নিশাকালা চূর্ণাজ্য ক্ষেদ্রমণ্ড্রতা।
মূত্রবর্তি ব্রণে যোজ্যা শোধনী গতিনাশিনী॥

নাড়ীব্রণ (ক্ষতশোষ বা নালী ঘা) হইলে স্থবিজ্ঞ চিকিৎসক নালীর গতি অন্নক্ষানপূর্বক অন্তব্যরা উৎপাটন (বিদারণ) করিয়া দিবেন এবং তৎপরে ত্রণরোগ্বের চিকিৎসার গ্রণালী অন্নসারে শোধন ও রোপণাদি চিকিৎসার বিধান করিকেন।

শৈষ্মিক নাড়ীব্রণে তিল, যফিমধু, নিকুম্ভ (দস্তীমূল), নিমপাতা ও সৈক্ষবলবণ এই সকল দ্রুব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্যক পেয়ণ করিয়া প্রলেপ দিবে।

শলাজন্ত নাড়ীত্রণরোগে প্রথমতঃ ত্রণ বিদীর্ণ করিয়া তংপরে তিল, মধু ও মৃত এই তিনদ্রবা সমভাগে একত্র পেয়ণপূর্বক প্রলেপ প্রয়োগ করিবৈ।

পিজজন্ম নাড়ীত্রণে তিল, মঞ্জিষ্ঠা, নাগদন্তী, ছরিদ্রা ও দাঞ্চরিদ্রা এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে উপযুক্ত মাত্রায় গ্রহণপূর্কক পেষণ করত: ভদ্বারা প্রলেপ দিবে।

বাভাত্মক নাড়ীত্রণে প্রথমতঃ ত্রণ অস্ত্রদারা উত্তমরূপে বিদীর্ণ করিয়া ক্ষতস্থানে প্রলেপ দিবে। পুরাতন গুড় এবং সোহাগার খৈ একত্র পেষণ-পূর্ব্বক ষর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া ক্ষত পূরণ করিলে নাড়ীত্রণ শীড্রাই আরোগ্য হুইয়া থাকে।

দোণালুর পার্তা, ইরিন্তা ও কালাকড়া এই তিনন্তবা চূর্ন করিয়া গোমুত্র সহ পাকপূর্বক মৃত ও মধুসহ মিশ্রিত করিয়া বর্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্তি ব্রণমধ্যে প্রয়োগ করিলে ব্রণমধ্যণত দূষিত পূয়রক্তাদি নির্গত হইয়া ব্রণ বিশুদ্ধ হইয়া যায় এবং পুনরায় নাড়ী (শোষ) আর বর্দ্ধিত হইডে পারে না।

বর্ত্তিকৃতং মান্দিকসংযুক্তং নাড়ীম্মুক্তং লবণোত্তমং বা।
ত্রুফাত্রণে ষদ্বিহিতন্ত তৈলং তৎসেব্যমানং গতিমাশু হন্তি॥
সৈদ্ধবলবণ ও মধু একত্র মিজিত করিয়া বর্তি প্রস্তুত করতঃ ক্ষতমধ্যে
প্রযোগ করিলেও নাড়ীত্রণ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

ছুই ত্রণরোগে যে সকল ভৈল কথিত হুইরাছে, সেই সমুস্ত ভৈল প্রক্রোগ করিলেও নাড়ীব্রণ প্রশম্ভি হুইভে থাকে, কদাচ বর্দ্ধিত হুইভে পারে না।

কশতুর্বলভীরণাং গতিমগাঞিতাচ্যা।
কারমুত্রেণতাং ছিন্নাান্নশস্ত্রেণ কলাচন।
অবণাগতিমবিষা কারস্ত্রানুসারিণীং।
সূচীং নিদধাদ্গতান্তে চোনম্যাশু চ নির্হরেছ।
স্ত্রন্যান্তং সমানীর গাঢ়বন্ধনমাচরেছ।
ততঃ ক্ষীণবলংবীক্ষা স্ত্রমন্যৎ প্রবেশয়েছ।
কারাক্তং মতিমান্ বৈদ্যো যাবন্নছিদ্যতে গতিঃ।
ভগন্দরেপ্যেষ বিধিঃ কার্যো বৈদ্যেন কানতা।
অর্ব্রুদানিষু চোৎক্ষীপ্য মূলে স্ত্রং নিধাপয়েছ।
সূচীভির্যবক্রাভি ব্যচিতং বা সমন্ত্রঃ।
মূত্রে স্ত্রেণ বন্ধীয়াচিছনে চোপাচরেদ্বণং॥

কৃশ, হর্বল ও ভীক ব্যক্তিদিগের নাড়ীত্রণ এবং যে সকল নাড়ীত্রণ মর্মস্থানজাত, তাহা ক্লাচ অন্ত্র প্রয়োগ দ্বারা বিদীর্ণ না করিয়া, ক্লারস্থত্ত বন্ধন দারাই ছেদন করিবে। ক্ষারস্থত্ত প্রয়োগ প্রণালী – প্রথমতঃ এষ্ণী-নামক শলাক। দার। নালীর গতি অহসদ্ধানপূর্বক কারস্থতাহ্বত্তি স্থচী নালীর মধ্যে প্রবেশ করাইয়া নালীর অপর প্রান্ত বিদ্ধ করিয়া স্থচী বাছির করিয়া লইবে এবং পশ্চাৎ নালীর মধ্যে প্রবিষ্ট দেই স্থতের প্রান্তদ্বয় ধরিয়া একত্র দৃঢ়রূপে বন্ধন করিয়া রাখিবে। কিন্তু ঐ স্থত্ত ক্ষীণবল হইলে (পচিয়া শক্ত না থাকিলে) পুনর্কার অস্ত ক্ষারস্ত্ত স্থচীদ্বারা নালীমধ্যে প্রবিষ্ট করিয়া, পূর্ববিৎ দূঢ়বন্ধন করিয়া রাখিবে। যাবৎকাল পর্যান্ত নালী ছিন্ন না হইবে, ভাবংকাল পর্যান্ত নাড়ী এবস্প্রকার স্ত্রদার। বন্ধন ক্রিয়া রাখিবে এবং স্ত্র ক্ষীণবল ছইলে পুনঃ পুনঃ পরিবর্ত্তন করিয়া দিবে। বিচক্ষণ চিকিৎসক ভগ-, ন্দর রোগের ব্রণও এইরূপে ক্লারস্ক্রদারা ছেদন করিবেন। আর স্ক্রম-সূল অর্কুণাদিরোগে অর্কুণ উৎশিগু করিয়া মূলদেশে স্থত বন্ধন করিয়া দিবেন; কিন্দু অর্কুদস্থল মূল ছইলে যববৎ মধ্য স্থূল অথচ স্থামমূখ ২য় এমন স্থচীদ্বারা চতুর্দ্দিক বিদ্ধ করতঃ মূলদেশে কারস্থত বন্ধন করিয়া ছিন্ন না হওয়া পর্যান্ত স্ত্রবন্ধন করিয়া রাখিবে; এবং ছিন্ন হইলে ত্রপ চিকিৎনার স্থায় চিকিৎদা বিধান প্রয়োগ করিবেন।

> স্বৰ্জ্জিকাদ্য তৈলং।— স্বৰ্জ্জিকা সিদ্ধুদন্ত্যগ্নি স্পোকামলনীলিকা।

শ্বমঞ্জরিবীজেষু তৈলং গোমূত্রপাচিতং। ফুউত্রণপ্রশমনং কফনাড়ীত্রণাপহং॥

তৈল /৪ চারিদের এবং কল্কার্থ স্বর্জিকাক্ষার, সৈশ্ববলবণ, দন্তীমূল, রক্তচিতারমূল, শেষ্ঠ আকন্দেরমূল, নল, নীলিকা ও খরমঞ্জরীর (অপামার্গের) বীজ এই সকলে দ্রব্য কুটিত সমভাগে সমন্তে /১ একসের এবং গোমূত্র ।৬ যোলসের ৮ যথানিরমে এই তৈল পাকপূর্ব্বক প্ররোগ করিলে হুই ত্রণ এবং কফজ নাড়ীত্রণ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কার্পাদ তৈলং।—

কার্পাসমূল রজনীকল্কং দত্বা জলে শৃতং তৈলং। পূরণ মাত্রাচ্চিরজা নাড়ীত্রণমাশু বিনাশয়তি॥

তৈল /৪ চারিদের, জল চৌষটিদের এবং কল্কার্থ কার্পাসমূল /। ত আর্দ্ধ-দের ও হরিদ্রা /। ত অর্দ্ধদের। যথাবিধানাস্থদারে এই তৈল পাক করিবে। এই তৈলদ্বারা ক্ষতপূরণ করিলে অতিসত্তর নাড়ীত্রণ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ভন্নাতকান্যং তৈলং।—
ভন্নাতকার্ক মরিচৈর্লবণোত্তমেন
দিদ্ধং বিড়ঙ্গ রজনীদ্বর চিত্রকৈশ্চ।
দ্যানার্কবদ্যচ রদেন নিহন্তি তৈলং
নাড়ীং কফানিলক্বতামপ্টীং ত্রণাংশ্চ॥

তৈল /৪ চারিসের, ভৃঙ্গরাজের স্বর্ম ।৬ যোলসের ; কল্কার্থ ভেলাবীজ্ঞ, আকন্দেরমূল, মরিচ, দৈশ্ববলবন, বিভৃঙ্গ, ছরিদ্রা, দাক্ষরিদ্রা এবং রক্ত-চিন্তারমূল, এই দকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একদের। মধাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক প্রয়োগ করিলে ক্ষবাভজ্ঞ নাড়ীব্রণ, অপচী ও ব্রণরোগ বিন্দ্য, ছইয়া থাকে।

• কুদ্বীকাধ্যাং তৈলং।—

কুষ্টীক খৰ্চ্জুর কপিথ বিলু বনস্পতীনাম্ভ শলাটুবর্গে। কৃত্বা কষায়ং বিপচেতু তৈলং প্রবাপ্যমুস্তা সরলা প্রিয়ন্তু। সৌগন্ধিকা মোচরসাহিপুষ্প লোগ্রানি দত্বা খলু ধাতকীঞ্চ। এতেন শল্য প্রক্রবাহি নাড়ীরোহেদ্রুণোবৈ সুখ্যাপ্রুয়াচচ॥

ভৈল /৪ চারিসের, কাথার্থ কুমারিয়ালতা, খর্জুর, করেদবেল, বেলমূলেরছাল, এবং বট, যজ্ঞভুমুর প্রভৃতি পুষ্পাহীনরক্ষের অপক (কাঁচা) কল
সমভাগে সমস্তে /৮ আটদের, পাকার্থ জল ১৪ সের, শেষ ক্কাথ।৬ বোলসের; এবং কল্কার্থ মুখা, সরলকার্চ, প্রিয়স্তু, অনস্তমূল, মোচরস, লোধ ও
ধাইফুল এই সকল কুটিত সমভাগে সমস্তে /১ একসের মাত্র। ম্থাবিধানে

এই জৈল পাকপূর্বক প্রয়োগ করিলে শলাক্ষমিত মাড়ীব্রণ অভি দীত্রই প্রমূচ হয় এবং রোগী স্বস্থকা লাভ করিয়া থাকে।

সপ্তাঙ্গগুণুগুণুঃ।—

গুণ্গুলুক্তিকলাবোটেষঃ সমাংশৈরাজ্যগোজিতৈঃ। নাড়ীতুক্তবাং শূলং ভগন্দরবিনাশনং। সর্বসমো গুণগুলুঃ॥

হবীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল ও মবিচ এই সকল ধ্রবা সম-ভাগে এবং সর্ব্বসমন্তির সমান ওগ্গুলু গ্রহণপূর্বক চূর্ণ কবিয়া স্বভসহ মিশ্রিত করতঃ উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে নাড়ীব্রণ, হুক্টব্রণ, শুল ও ভগন্দববোগ বিনক্ট হইয়া থাকে।

নাড়ীত্রণগজান্ধু শঃ।—

দরদঃ পার্কবিপুষ্প কুন্টী পুরুষোর্মঃ।
পোণিতং গন্ধকোনৈতাঃ দৈন্ধবাতিবিষা চবী।
শরপুখা বিজ্ঞাশত যমানী গছলিপপালী।
মারিচার্কন্ধ বরুণাস্কৃণকন্ধ হরীতকী।
মার্দিতং কটুতৈলেন গুড়িকাং কারয়েনিহঃ।
নাড়ীত্রণপ্রবাহন্ধ গণ্ডমালাং বিচর্চিকাং।
চিরং ত্রণ দক্রকুষ্ঠ পৃতিকর্ণ শিরোগদং।
পাদক্ষোটং তথা কুষ্ঠং বিচর্চিং বহুকীটন্ধং।
দরদো হিন্ধুল পার্কবিত গৈরিকং পুষ্পার্মাঞ্জনং।
কুন্টী মনঃশিলা পুরুষো গুগ্গুলুঃ।
শোণিতং দৈতাঃ লৌহং অ্লাক্ত ব্যক্তং॥
ইতি লাড়ীত্রণাধ্বিকারঃ।

দরদ (হিন্দুল), পার্কভী (গৈরিক), পুষ্পা (রসাঞ্জন), কুনটী (মনঃ-, শিলা), পুরুষ (গুণগুলু), রস (পারদ), শোণিত (কুন্ধুম), গদ্ধক, দৈত্য (লৌছ), দৈদ্ধবলনণ, আতইস, চই, শর্মূল, বিড়ক্ষ, যমানী, গজপিপুল, মরিচ, আকল্মূল, বরুণরক্ষেরছাল এবং হরীতকী , এই সকল দ্রব্য সমস্তাগে এহণপুর্ব্ধক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া সর্বপতৈলসহ মিল্লিত করতঃ যত্তামাতায় শুড়কা প্রস্তুত করিবে। এই গুড়িকা অহ্পপান বিবেচনায় প্রয়োগ করিলে নাড়ীত্রণ (ত্রণ শোষ বা নালী ঘা) গণ্ডমালা, বিচর্চ্চিকা, চিরত্রণ, দক্ষ, কুষ্ঠ, পুতিকর্ণ (কাণ দিয়া রক্তপুয়াদি পতিত হওয়া), শিরোরোগ ও পাদ-শেকটিক, প্রভৃতি বিবিধব্যাধি বিন্দুট ইয়।

ইতি নাড়ীত্রণরোগ চিকিৎসা সমাপ্ত।

অধ ভগন্দরাধিকারঃ।

লজ্জনস্বেদনালেপ বিশ্লাপনবিরেচনৈঃ। রক্তমোক্ষানিভিঃ শীত্রং গুদ্দ্য শ্বরপুঞ্জরেৎ। গুদ্দ্য শ্বরপুং দৃফ্ট্ বিশোষ্য শোধ্যেততঃ। রক্তাবদেচনং কার্যাং যথাপাকং নগচছতি॥

শুহদেশে শোথ লক্ষিত হইলে, তাহা লজ্বন, স্বেদ, প্রলেপ, বিশ্লাপন ও বিরেচন প্রয়োগদ্বারা শোধন করিয়া পশ্চাৎ রক্তমোক্ষণ করিবে; যেন ঐ াশাথ কোন প্রকারে পাকিতে না পারে তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখিবে।

বটপত্রেষ্টকা শুগুনী শুড়ুচাঃ সপুনর্গবাঃ। স্থানিষ্টাঃ পিড়কারস্থে লেপঃ শক্তো ভগন্দরে। পিড়কা নাম পকানামপতর্পণপূর্বকং।

কর্ম কুর্যাাদ্বিরেকান্তং ভিত্নানাং বক্ষ্যতে ক্রিয়া॥ বটপত্র, জলের নীচের ইট, শুগী, গুলঞ্চ ও পুনর্ণবা এই সকল ক্রব্য

পেষণপূর্ব্বক ভদ্ধার। পীড়কাবস্থার প্রলেপ দিলে ভগন্দররোগ প্রশমিত হয়। ভগন্দররোগে অপক পীড়কাবস্থায় রোগীকে অপতর্পণ (লঙ্কন) হইতে বিরেচন পর্যান্ত একাদশ প্রকার চিকিৎসা করিবে এবং পীড়কা বিদীণ হইলে যে প্রকারে চিকিৎসা করা কর্ত্তব্য, ভাষা পশ্চাৎ বলা যাইতেছে।

প্রবণী পাটনক্ষার বহিনাহানিকং ক্রমং।
বিধার ত্রাবৎ কার্যাং যথানোষং তথানোষং।
তিরভিলা নাগদন্তী মঞ্জিষ্ঠা সহ সর্পিরা।
তৎসাদনং ভবেদেতৎ সৈম্বর ক্ষৌদ্রসংযুতং।
রসাঞ্জনং হরিদ্রে দ্বে গ্রঞ্জিষ্ঠা নিম্নপল্লবাঃ।
তিরভেজোবতী দন্তী লেপো হন্তি ভগন্দরং।
কুষ্ঠং ত্রিইভিলা দন্তী মাগদ্ধ সৈম্ববং মধু।
রজনী ত্রিফলা তুথং হিতং ত্রণবিশোধনং।
অ্বুষ্ক কুশ্বদার্কীভির্বর্ভিং কুত্বা বিচক্ষনঃ।
ভগন্দরগতিঃ জাত্বা প্রয়েভাং প্রযুত্তঃ।
ত্রুষা সর্কারীরস্থাং নাড়ীং হন্যান্নসংশ্রঃ॥

ভগন্দররোগে প্রথমতঃ এষণীনামক শলাকাদারা ছেদন, ক্ষার প্রয়োগ, াগ্রিদারা দশ্বকরণ প্রভৃতি দারা যথাবিধানে চিকিৎসা করিয়া পশ্চাৎ ত্রণবৎ নিক্সা করিবে। ভগন্দররোগে শোধনার্থে ডেউড়ী, তিল, নাগদন্তী, নৈদ্ধন্দরণ ও মঞ্জিষ্ঠা এই সকল উপযুক্ত মাত্রায় সমানভাগে গ্রহণপূর্ব্বক পেয়ণ করিয়া ছুত ও মধ্-সহ মিশ্রিত করতঃ ভদ্বারা প্রলেপ দিবে।

রসাঞ্জন, হরিত্রা, দাকহরিত্রা, মঞ্জিষ্ঠা, নিম্বপত্র, তেউড়ী, তেজোবড়ী (চই অথবা জ্যোভিম্মভীলভা) ও দন্তী এই সকল সমভাগে লইয়া পেষণ করতঃ প্রলেপ দিলে ভগন্দররোগ বিনষ্ট হটরা থাকে।

কুড়, তেউড়ী, তিল, দন্তীমূল, পিপুল, সৈন্ধবলবণ, মধু, হরিন্তা, হরী-তকী, আমলকী, বছেড়া ও তুঁতে এই সকল একত্র পেষণপূর্বক ভদ্বার। প্রান্ধানিক দিলে ত্রণ বিশোধিত হয়।

মনসাদীজের ক্ষীর, আকন্দের ক্ষীর ও দাক্ষহরিদ্রা এই দ্রুগত্রর একত্র পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। ভগন্দরের নালী অন্থুসন্ধান করিয়া ভাহাতে এই বর্ত্তি প্রবিষ্ট করিলে ভগন্দররোগ বিনষ্ট হয় এবং ইহাদ্বারা শরীরস্থ অন্যান্থ নাড়ীত্রণও বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ত্তিফলারসসংযুক্তং বিড়ালান্থ প্রলেপনং।
ভগন্দরং নিহন্ত্যাশু হুউত্তবাহরং পরং।
লেপঞ্চ কুর্যাবিষতিন্দ্বীজং বলিঞ্গ ধুস্তুররসেন পিষ্টু।
নরান্থি তৈলেন বিপাচয়েচ্চ সর্বে ত্রণা যান্তি বিনাশমাশু।
পলাশবীজস্য রসেন গন্ধং মতেন যুক্তং পরিপাচয়েন্তু।
ভল্লেপনারাথ পলাশবীজ তৈলান্ত লেপাৎ ত্রণনাশনং স্যাৎ।

পঞ্চিক্তিয়তং শস্তং পঞ্চিক্তশ্চ শুগ্ঞলুঃ।
ন্যব্যোধাদিগণো যস্ত হিডঃ শোধনরোপণঃ।
তৈলং য়ত্যা তৎপকং ভগন্দারবিনাশনং॥

বিড়ালের অন্থি (হাড়) চূর্ণ ত্রিফলার রসসহ মিশ্রিত করিয়া তদ্ধারা প্রালেপ দিলে ভগন্দর ও হুস্ট ব্রণসমূহ নিবারিত হইয়া খাকে।

মাকড়াগাবেরবীজ্ঞ এবং গন্ধক ধৃভূরার রুদে পেষণপূর্ব্বক মন্ত্রোর ছাড়ের তৈলে পাক করিয়া তাহা প্রয়োগ করিলে সর্কবিধ ত্রণরোগ ্বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

ী গন্ধক পলাশবীজের রদে পেষণপূর্বক মৃতদহ পাক করিয়া ভদ্ধার। প্রালেপ দিলে, অথবা পলাশবীজ মৃতদহ পোষণ করিয়া ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে স্ব্বপ্রকার ত্রণ বিন্ট হইয়া থাকে।

"পঞ্চিক্ত ছত", "পঞ্চিক্ত গুণ্গুলু" এবং "স্থােধাদিগণ" ছগন্দর ও অস্থান্ত ত্রণরােগের শোধন ও রোপণ (পুরণ) কার্য্যে প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

উক্ত মগ্রোধাদিগণের সহিত পাক করা মৃত ও তৈল ভগন্দরোগ বিশা-শক বলিয়া জানিবে।

विशासनः टेजनः।—

িত্রকার্কে তির্থ পাঠে মলপু হয়মারকে।
স্থাং বচাং লাঙ্গলিকাং হরিতালং স্থ্রচিকাং।
জ্যোতিয়তীক সংস্কৃত্য তৈলং ধীরো বিপাচয়েথ।
এতদ্বিষ্যন্দনং নাম তৈলং দদ্যান্ত্রগন্দরে।
শোধনং রোপণকৈব স্বর্ণকরমুভ্যং॥

ভিলতৈল' ৪ চারিসের, জল । ৬ যোলসের এবং কল্কার্থ রক্ত চিতারমূল, আকন্দেরমূল, তেউড়ীমূল, আকনাদী মলপূ (কাকডুমর), হয়মারক (কর-বীর), মনসাসীজ্ঞ, বচ, বিষলাঙ্গলিয়া, হরিতাল, স্থবর্চিকা (স্বর্জিকাক্ষার) ও জ্যোভিত্মভীলতা এই সকল দ্রুব্য কুটিত সমভাগে সমস্তে /> একসের। এই বিষান্দননামক তৈল পাকপূর্মক প্রয়োগ করিলে ভগন্দর বিন্ত হয় এবং ইছা ত্রগশোধক, রোপক ও সবর্ণকারক।

করবীরান্যং তৈলং।—

করবীর নিশাপন্তী লাঙ্গলী লবণাগ্নিভিঃ। মাতুলুঙ্গার্কবৎসাইহুরঃ পচেৎ তৈলং ভগন্দরে॥

তৈল /৪ সের, জল ।৬ যোলদের এবং কল্কার্থ করনীর, হরিন্তা, দন্তীমূল, বিষলাঙ্গলিয়া, দৈশ্ববলবণ, রক্তচিতার মূল, ছোলঙ্গলেবুর মূল, আকন্দের মূল ও ক্ড়চিছাল; এই সকল দ্রব্য কৃটিত সমভাগে সমস্তে /> একসের মাত্র। যথানিয়মে এই তৈল পাকপূর্বক প্রাগ করিলে ভগন্দররোগ
বিনষ্ট হইয়া থাকে।

विभागार टेजनर।-

निमार्ककीत्रिम्बृति पूत्रायदन वर्गरेकः।

় সিদ্ধমভ্যঞ্জনে তৈলং ভগন্দরবিনাশনং॥

ভৈল /৪ চারিদের, জ্বল ।৬ শৈর এবং কল্কার্থ ছরিন্তা, আকন্দের ক্ষীর, দৈশ্ববলবণ, রক্তচিভার মূল, অগ্নছন (করবীর) ও কুড়চিছাল সমভাগে সমস্তে /১ একদের। যথাবিধানে এই ভৈল পাকপূর্ব্বক মর্দ্দন ক্রিলে ভগন্দররোগ বিনম্ভ ছয়।

নবকাহিকো গুর্গুলুঃ।--

ত্রিফলাপুরক্ষানাঁথ ত্রিপক্ষিকাংশ্যোজিতা।
গুড়িকা শোপগুল্মার্শো ভগন্দরবতাং হিতা॥
হরীতকী, ১ ভাগ, বহেড়া ১ ভাগ, আমলকী ১ ভাগ, শোধিত গুণ্গুলু
ভোগ এবং পিপুল ১ ভাগ; এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া উপযুক্ত মাত্রায়

প্রাড়কা অস্তত কারবে। বহা দেবৰ কারলে ওলা, অর্ণা: ও ভগন্দররোগ বিন্ট হইরা থাকে।

সপ্রধিংশতিকো গুগ্তলুঃ।—

ত্তিক টু ত্রিকলামুন্তং বিড়ঙ্গামুত চিত্তকং।
শটোলা পিপেলীমূল হবুষা স্থারদার চ।
তুমুকং পুক্ষরং চবাং বিশালা রজনী দ্বাং।
বিড়ং দৌবর্চ্চলং কারো সৈম্ববং গজপিপেলী
যাবন্তোতানি চূর্ণানি তাবদ্বিগুণ গুণ্ডলুঃ।
কোলপ্রমাণাং গুড়িকাং ভক্ষয়েমধুনা সহ।
কাসং খাসং তথাশোণমর্শাংসি চ ভগন্দরং।
ছচছুলং পাশুলুলক কুন্দিবন্তি শিরোক্ত জং।
অশারীং মূত্রকছে ক অন্তর্দ্ধিং তথা ক্রিমীন্।
চিরক্তরোপস্টানাং ক্রমাণাং হতচেতসাং।
আনাহক তথোনাকং কুটানি চোদরাণিচ।
নাড়ী দুউত্রণান্ সর্বান্ প্রমেহং শ্লীপদত্ত্থা।
সপ্তবিংশতিকোংছেষ সর্ব্বেরাগনিস্থানং।

শুগী, পিপ্পলী, মরিচ, হরিত্রকী, আমলকী, বহেড়া, মুগা, বিউ্লু, গুলঞ্চ, রক্তচিতারমূল, শাঁটী এলাচি, পিপুলমূল, হরুষা, দেবদাক, তিংলাউ, পুষ্করমূল (অভাবে কৃড়), চই, রাখালশানারমূল, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, বিট্লাবণ, যবক্ষার, নাচিক্ষার, সৈশ্ধবলবণ ও গর্জাপিপুল ইহাদের চূর্ণ প্রভাতেক এক এক ভাগ এবং সর্বসমন্তির দ্বিভণ গুগগুলু লইয়া একত্র মিপ্রিভ করিয়া লইবে। এই ঔষধ ২ তোলা মাত্রায় মণুসহ সেবন করিলে কাস, খাস,, আর্মা; ভাগন্তর, নাড়ীব্রণ প্রভৃতি সর্বপ্রকাররোগ হিনস্ত হইয়া থাকে।

রাবিতাওবঃ।---

শুদ্ধস্তং দিধাগন্ধং কুমারীরসমন্দিতং।

ত্রাহান্তে গোলকং কৃত্বা হণ্ডিকান্তর্নিরোধয়েৎ।

দ্বরোঃ সমং তাত্রপাত্রং সংশুদ্ধে সন্ধিলেপিতে।

তৎভাও ভন্মনাপূর্য্য চুল্ল্যাং তীব্রাগ্নিনা পচেৎ।

দ্বিমামান্তে তত্ত্ব্বত্য চুর্ণয়েৎ স্বাঙ্গনীতলং।

জ্মীরস্য দ্বৈঃ পিষ্টা রুদ্ধা সপ্তপুটে পচেৎ।

খুইঞ্জকং মধুনাজ্যেন লিছেদ্ধন্তি ভগন্দরং। • মূবলী লবণঞানু আরনালযুতং পিলেও।

পারন > ভাগ এবং গন্ধক ২ ভাগ স্বতকুমারীর রসে ও দিবস মর্দ্দনপূর্বক উভরের তুল্য ভাত্র মিশ্রিভ করিবে এবং একটী হাঁড়ির মধ্যে রাধিরা। অন্তঃসারাবে বদ্ধ করতঃ ও ভস্মধার। উদ্ধিদেশ পূর্ণ করিয়া ভীত্র ভাগ্নি সন্তাপে
২ প্রছর কাল পাক করিবে। তদনন্তর শীতল হইলে চুল্লী হইতে নামাইয়া
জ্বীর নেবুর রসে মর্দ্দন পূর্বক ৭ সাতবার পুটপাক করিয়া লইবে। এই
ঔষধ ২ রভি পরিমাণে মধু সহযোগে লেহন করিয়া তালমূলী, লবণ ও
কাঁজি অন্ত্পান করিবে।

রবিতাওবঃ।--

সমভাগং রসং নাগং সংযোজ্যক বিমর্দ্রেছ।
গন্ধকেন চ সংযোজ্য দদ্যাদ্রদ সমাং কণাং।
সর্ব্যেকত মৃদীয়াৎ তিনিনং জমীররসৈঃ।
কুমার্যা চ তথা জাত্যা ভাবরেচ্চ পৃথক্ পৃথক্।
সিদ্ধে শর্করয়া দদ্যাভিদপ্তাহন্তিবল্লকং।
শীতঞ্চ চুল্লকাদন্তো গোমূত্রং নচ ভোজয়েছ।
ভগন্দরার্ব্ব দান্ কোঠি ত্রণ বিষত্রণানপি।
সর্ব্বিশিকরদোহরতায়ং সূর্য্যাশস্কৃতি বিনির্মিতাঃ॥

পারদ এবং তাম একত্র মর্দন পূর্ব্বক তংসহ গন্ধক ও পিপুলচ্র্ন মিশ্রিড করতঃ জন্মীর নেবু, মৃতকুমারী ও জাতীপত্র ইহাদের প্রত্যেকের রুদে পৃথক্ পূথক্ ও দিন করিয়া ভাবনা দিয়া লইবে। এই ঔষধ ৪।৫ রুডি মাত্রায় ইক্টিনি সহ সেবন করিয়া অবিলে ২১ একবিংশতি দিবদের মধ্যে ভানদর, অর্ব্বদ, বণাদিরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। এই ঔষধ দেবন করিয়া কদাচ শীতলজ্ঞল, গ্রেকলাই ভিজান জলু ও গোমুক্ব পান করিবে না।

জমুকমাংসং ভক্ষরেৎ প্রকারের্যঞ্জনাদিভিঃ। অজীববিজ্ঞাসেন মুচ্যতে তু ভগন্দরাৎ। ব্যায়ামং মৈথুনং মুদ্ধং পৃষ্ঠযানং গুরুণি চ। সমুহসরং পরিহরেৎ উপরুচ্ ত্রণো দরঃ॥

ইতি ভগদরাধিকারঃ।

শৃগালের মাংদে বিবিধ প্রকার ব্যঞ্জনাদি প্রস্তুত করিরা ভক্ষণ করিলে।জীণবং ভিন মানের মরোই ভগন্দররোগ ছইছে মুক্ত ছওয়া ধার।

ভগদ্দর বোগীর ত্রণ প্রায় ছইলে (পুরিয়া উঠিলে) এক ব্রুসর পর্বান্ত । ব্যায়াম, স্ত্রীপ্রদল, মুদ্ধান্ত অস্থাদির পূঠে সমন ও ওক্তরীর স্বেদাদি পরিভাগ করিবে।

ইতি ভগন্দররোগের চিকিৎসা সমাস্ত।

অথ উপদংশাধিকারঃ।

পটোলনিয় ত্রিফল, শুড়ু চীরাথং পিবেদা খনিরাশনাভ্যাং ! স্থাপ্তলুং বা ত্রিফলযুত্থ বা সর্কোপদংশাপহরঃ প্রমেহা !

ত্রিফলারাঃ কষারেণ ভূঙ্গরাজরদেন বা।
ত্রণপ্রকালনং কুর্যাত্রপদংশ প্রশান্তরে।
জারাজাত্যশ্বনারাক শম্পাকানাং দলৈঃ পৃথক্।
কৃতং প্রকালনে কাথং মেচুপাকে প্রযোজরেৎ।
দহেৎ কটাহে ত্রিফলা সার্থী মধুসংযুতা।
উপদংশে প্রলেপোহ্যং সদ্যোরোপ্যতি ত্রনং॥

পল্তা, নিমছাল, ত্রিফলা ও গুলঞ্জ অথবা খদিবকার্চ ও পীতশাল ২ তোলা, জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা । এই কাথ গুগগুলু বা ত্রিফলাচূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান কবিলে সর্কবিধ উপদংশ বোগ বিনম্ট হয়।

ত্রিফনার কাথ, ভূঙ্গবাজেব বদ, অথবা জয়ন্তীপত্র, জাভীপত্র, করবীপত্র ও আকলপত্র ইহাদের প্রত্যেকের কাথে ত্রণ ও ক্ষত প্রকালন কবিলে উপদংশরোগ নিবারিত হইয়া থাকে এবং ত্রিফলা লোহকটাহে অন্তুর্ধুমে দক্ষ কবিরা ভাষা চূর্ণ কবভঃ মধ্ব সহিত মিশ্রিত কবিয়া প্রলেপ দিলৈ উপদংশেব ত্রণ প্রকাচ হয়।

র্গাঞ্জনং শিরীবেণ পথ্যরাবা সমন্বিতং।
সংক্ষীদ্রং বা প্রলেপেন সর্কালিঙ্গ গণাপহং।
কুমারীরস সংপিশু জীরকং লেপয়েন্দ্রিষক্।
তেন দাহক পাকক শন্ত্রাপ্রোতি নিক্ষরং।
মহাশঞ্জং জলৈর্ম্বইং তেন লিঙ্গং প্রলেপয়েং।
খনিরৈস্ত্রিফলৈর্বাপি তোরঃ প্রকালনং হিতং।
ত্রিফলৈর্বা জলৈঃ সারং খনিরং লেপয়েভথা।
সাগন্ধক স্থাতের্লেপঃ পক্ষালিকে সুখাবহঃ॥

त्रमाञ्चन ও नित्रीयहरकत हाल अथवा तमाञ्चन ও हती छकी अकछ ह्व कितृत्रा महैनह अटलान निरल উপদংশাদি সর্কবিধ लिक्टरोग आद्रोगा हत्र।

জীরক স্বতক্ষারীররদে পেষণপূর্বক এলেপাদিলে উপদংশ জন্ম দাহ ও পাক নিবারিত হইয়া থাকে।

মন্থ্যের কণ্টালান্থি জলে ঘর্ষণপূর্বক জদার। প্রলেপ দিলে অথবা খদি-রেব কাথ ও ত্রিফলার কাথে প্রকালন করিলে কিছা খদিরসার ত্রিফলার জল-সহ বা গন্ধক দ্বতাহ মিশ্রিত করতঃ জদারা প্রলেপ দিলে উপদংশ জনিত লিঙ্গপাক আরোগ্য হইয়া খাকে।

গন্ধকং দরদং তুত্থং খদিরং যাবশ্কজং।

সমভাগানি চৈতানি কার্য়েৎ কুশলোভিষক্।
তেষাঞ্চত্ত গং গ্রাহুং বদরাঙ্গারসম্ভবং।

মর্দ্ধ্রেৎ খল্মধ্যে তু বহু জমীরবারিণা।
রক্তিদ্ধ প্রমাণস্ত বদরাঙ্গার বহ্নিনা।
বিসম্ভাঞ্চ পিবেদ্ধুমং গুড়িকগ্রহসংজ্ঞকা।
পথাং মস্ত্রযুষঞ্চ লবণামিষবর্জ্জিতং।
উপদংশং মহাঘোরং নাশ্রেৎ সপ্তরাত্তিতঃ।
ভাওমধ্যে বদরাঙ্গারবহ্নিং সংস্থাপ্য তত্ত্বপরি
একৈকাং ব্টিকাং দত্তা শ্রাবেণাচছাদ্য ছিদ্ধেং
কৃত্বা নাদিকাবদ্ধেণ ধূমং পিবেৎ।
বিদ্ধাভ্যাং প্রত্যহং গ্রহসংজ্ঞকাং ব্টিকাং খাদেৎ॥

গন্ধক, হিন্দল, তুঁতে, খদির ও যবকার এই দকল প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং কুলকান্তের অন্ধার ২০ কুভি ভাগ একত্র জন্মীররদে মর্দ্দনপূর্বক ২ হুই রভিপ্রমাণ এটিকা প্রস্তুত করিবে। এবং একটি ভাও মধ্যে কুলকাঠের আয়ি রাখিয়া ভত্নপরি এক একটি বটা দা স্থাপনপূর্বক শরার দ্বারা ভাওের মুখ ক্ল কবিবে। এবং একটি ছিন্তু কবিয়া নাদিকা দ্বারা ধূমপান করিবে। প্রভিদিন এবস্প্রকারে ধুম পান ও মন্থরের পথ্য করিবে। কদাচ আমিত্র ও লবণ ভক্ষণ করিবে না। ইহাদারা ৭ রাত্রির মধ্যে উপদংশরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

উপদংশারি ধৃমং।—

মনংশিল। হিন্দুল গন্ধকঃ খবশ্বেতার্ক যবন্ধার জয়ীরনীরেণ পরিমর্দ্য বদরীকাণ্ডোন্তুব বহ্নি। স্বেদক কার্য্যা ত্রিদিন ক্রমেণ সর্ব্বোপদংশ বিষ বিস্ফোটক নাশ্যেৎ সর্ববৃষ্ঠক॥ মন:শিলা, বিকুল, গমক, খব (কুত্রনতা বিশেব), খেত আক্সের্যুল ও ব্যক্ষার একত্র স্বাধীররুদে মর্দনপূর্বক বুলকাকের অগ্নি সংযৌগে স্বেদ প্রয়োগ করিলে ৩ দিবদের মধ্যে সর্ববিশ্ব উপদংশ, বিষদোয়, বিশেষটি ও সকলপ্রকার কুঠরোগ বিনষ্ট ছইরা থাকে।

ভূনিয়াদাং মূতং।--

ভূনিয়নিয়ত্তিকলাপটোল করঞ্জাতী খদিরাশনানাং। সতোরকলৈকর্মতমাগু পকং সর্বোপদংশাপছরং প্রদিউং॥

ছত /৪ চারিসের, কাথার্থ চিরতা, নিমছাল, ত্রিফলা, পল্ডা, ডছবকরঞ্জের ছাল, জাতীপত্র, খদিরকাষ্ঠ ও পীতশাল সমভাগে সমত্তে /৮ সেব, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ।৬ সের এবং কল্কার্থ পূর্ব্বেক্তি চিরতা ছইতে পীতপাল পর্যান্ত দ্রব্যগুলি সমস্তে /১ একসের। যথাবিধানে এই ছত পাকপূর্ব্বক সেবন করিলে সর্ব্বিধ উপদংশ বিনক্ত হয়।

व्यागात्रध्यानाः टेडनः।—

আগারধুমো রঙ্গনী সুরা ক্লিট্রগ তৈস্ত্রিভিঃ। ভাগোভরৈঃ পচেত্রিলং কণ্ডুনোথরুজাপহং। জলং চতুর্গু শং॥

তৈল /৪ চারিদের, জল। ৬ ষোলদের এবং কল্কার্থ ঝুল > ভাগ ছরিদ্রা, ২ ভাগ এবং স্থরাবীজ ৩ ভাগ সমুদায়ে মোট /> একদের। ষণাবিধানে ওৈল পাকপূর্বক মর্দন করিলে উপদংশ জনিত কণ্ডু, শোথ ও বেদনা নিবারিত ছইয়া থাকে।

> দৈত্যেন্দ্র দৈতাহারক্ত তুপচূর্ণং সমান্দিপেৎ। বরাটিকা দৈত্যরক্ত পূগক্ষার মথাপিনা। শেষত্রয়ং ক্ষারং। দৈত্যরক্ত হিঙ্গুলং। দৈত্যহা-রক্তং গন্ধকং। পূগং পুরাতন চিকীস্থপারি॥

গন্ধক; গন্ধক ও তুঁতে অথবা কড়িভস্ম, গন্ধক ও পুরাতন চিকিস্থপারী ভস্ম ছতদহ পেষণপুর্বক প্রলেপ দিলে উপদ॰শ বিনষ্ট ছয়।

রস্পেখরঃ।-

পারদকাহিকেণক বিদ্বাদশক রক্তিকং।
আরঃপাত্তে নিম্বকান্তেমর্দ্ধরেত্রলদীদ্রেবিঃ।
তিমান্ সুমূচিছ তে দদ্যাদ্ধরণং রদস্মিতং।
মর্দ্ধরেচত্রলদ্যৈত তত্তেমানি নিক্ষিপেৎ।
জাতীকোষফলে চৈব পারদীয় ষমানিকাং।

আকাবকষ্তকৈব দাতিংশক্রজিকা প্রতি।
ভর্দিরেৎ তুলসীতোরৈ রেতেবাং দিগুণং শুভং।
দদ্যাৎ ধদিরদারক বটিকা চণকপ্রভা।
সায়ং দ্বে দ্বে প্রাদদ্যাল্লবণান্নক বর্জ্জয়েৎ।
গলৎকুষ্ঠং তথাস্ফোটান্ ফুফান্ গর্দ্দভকানপি।
যেস্থাত্ত্রণা নৃণামন্যে উপদংশ পুরঃসরাঃ।
তানু সর্বালাশ্যত্যাশু সিদ্ধোহয়ং রস্পেখরঃ॥

ইতি উপদংশাধিকারঃ।

প্রথমতঃ পাবদ ও অহিদেন প্রত্যেকে ২৪ রতি মাত্রার লইরা তুলদীর-রদ দহ লৌহপাত্রে নিমকাঠের দণ্ডদ্বাবা মর্দ্দনপূর্বক তৎসহ ১২ রতি হিসুল মিশ্রিত কবতঃ পুনবার তুলদীররদ দিরা মর্দ্দন করিবে। তৎপরে উহার সহিত জৈত্রী, জারুক্ল, পারদীর য্যানী, ও আকরকোবা চূর্ণ প্রত্যেকে ৩২ রতি পরিমাণে এবং খদিরদাব ৬৪ বতি মিশ্রিত কবিয়া তুলদীরদে মর্দ্দন-পূর্বক চণকপ্রমাণ বতীকা প্রজ্ঞত করিবে। এই বটীকা প্রতিদিন সন্ধাকালে দেবন কবিবে। কদাচ লবণ ও জন্মদ্রব্য ভোজন করিবে না। ইহাদ্বারা গলৎক্ষ্ঠ, ক্ষেটক, দ্রুইরণ, গর্দ্ধভরোগ ও সর্ববিধ উপদংশবোগ আরোগ্য হইরা থাকে।

इंडि উপদ-শ চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শৃকদোষাধিকার

শৃকলোষেয় সর্বেষু বিষম্না কারয়েৎ ক্রিয়া। হিতঞ্চ সর্পিষঃ পানং পথ্যঞ্চাপি বিরেচনং। হিতঃ শোণিতমোক্ষক যচ্চাপি লঘুডোজনং॥

সর্কবিধ শুকদোষবোগে বিষনাশক ক্রিয়া প্রয়োগ করাই কর্ত্তবা। এবং ইহাতে পঞ্জিক্তানি স্থত পান, বিবেচক আগার, রক্তমোক্ষণ ও লযুভোজন হতকর বলিয়া জানিবে।

সর্বপীং লিখিতাং স্থাক্ষিঃ কর্বারেরবচুর্ণয়েৎ।
তৈরেবাভ্যঞ্জনং তৈলং নাধয়েদ্র্লয়োপনং।
•ক্রিয়েয়মধিমন্থেপি রক্তং আব্যং ততোভয়োঃ।
অস্তীলায়াং হতে রক্তে শ্লেম্ম গ্রন্থিবলাচরেৎ।
কুজিকায়াং হরেদক্তং পকায়াং শোধিতে ত্রনে।

তিন্দুক ত্রিফলা লোধ্রৈর্লেপক্তৈলঞ্চ রোপণং। क्लजार चंडत क्लातांमत्रस्य क्रिता क्रमः। त्वनरात्रमा विजः निवार ना शिक्षरमन वृद्धिमान् । युर्थारिकक्रभनारेइन्ड युश्विरेक्षक्रभनाइराइ । উত্তমাধ্যাস্ত্র পীড়কাং সংস্থিন্য বড়িশোদ্ভৃত্যং। करेल्क कृरेन कशाशानाः को प्रयूरे क रूपा हरतः । ক্রমঃ পিতবিদর্পোক্তঃ পুন্ধরী মূদয়োহিতঃ। ত্বকপাকে স্পর্শহন্যাক দেচয়েন্দ্রিভং পুনঃ। বলাতৈলেন কোন্ডেন মধুরৈশ্চোপনাহয়েৎ। রসক্রিয়া বিধাতবা লিখিতে শতপোনকে। शृथक् अर्गानि मिन्नक टेडलः (नरामाखनः। রক্তবিজ্ঞধিবচ্চাপি ক্রিয়াশোণিতভেম্বর্দে। কষায়কল্কসর্পিংষি তৈলং চূর্বং রসক্রিয়াং। শোধনে রোপণেটের বীক্ষাবীক্ষাবভারয়েৎ। অর্ব্যুদং মাংসপাকঞ্চ বিদ্রেধিং তিলকালকং। প্রত্যাখায় প্রকুর্মীত ভিষক্ তেষাং প্রতিক্রিয়াং।

ইতি শৃকদোধাধিকারঃ।

যে ব্যক্তি লিঙ্গনাল বহির্গত করিবার ইচ্ছায় উহাতে অবিধিপূর্ব্ধক শুক নামক কীট প্রয়োগ করে, তাহার লিঙ্গে শুককীট প্রয়োগ জনিত যে নানা-বিধ রোগ উৎপন্ন হয় তাহাকেই শুক্দোবরোগ বলা যায়। এই শুক্দোব-রোগে লিঙ্গারো ভিন্ন ভিন্ন দোষ ভিন্ন আকৃতি বিশিষ্ট সর্যপী, ক্ষাত্তী-লিকা, এথিতা, কুম্ভিকা, অলজী, মৃদিত, সংসূঢ়, অধিমস্থ, পুষ্করিকা, শোণিত, উত্তমা, শতপোনক, স্বকপাক, শোণিতার্কুদ, মাংসার্কুদ, মাংসপাক, বিদ্রেধি প্র তিলকালক নামক এই ১৮ অফ্টাদশ প্রকার পীড়কা উৎপন্ন হয়। নিম্নে এই সকল পীড়কার পৃথক্ পৃথক্ চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

সর্ধপীনাল্লী পীড়কা কর্কশ (খনখনে) পত্রাদি দ্বারা ঘর্ষণপূর্বক তত্রপরি
হরীতকী প্রভৃতি কষার দ্রব্যের চূর্ণ প্রদান করিবে। এবং উক্ত হরীতকী আদি
দ্রব্য সহযোগে যথানির্মে তৈল পাক করির। ত্রণরোপণার্থে প্রয়োগ করিবে। অধিমন্থনামক পীড়কার উক্তপ্রকার ক্রিয়া প্রয়োগ করিবে। কিয় সর্ধপী ও অধিমন্থ এই উভর পীড়কাতে রক্তমোক্ষণ করা নিতান্ত আবিশ্রক বলিরা জ্বানিবে। অর্চিলানামক পীড়কাতে প্রথমে রক্তমোক্ষণ করিরা তৎপরে দ্বৈশ্বিক প্রস্থিরোগের স্বায় চিকিৎসা করিবে। কৃষ্টিকা ও অলজী নামী শীড়কাতেও রক্তনোক্ষণ করিবে; এবং পক্
বিলে এণপ্রাধিক উষধ বার। এণশোধন করিয়া পশ্চাৎ গাব, ত্রিকলা ও
কোধ এই সকল দ্রব্য পেষণপূর্বক ভদ্বারা প্রলেপ দিবে, এবং ঐ সমস্ত দ্রব্য
কেবোণে তৈল পাক করিয়া ত্রণশোধনার্থে প্রয়োগ করিবে। বুদ্ধিমান্
চিকিৎসক প্রথিতনামক শীড়কায় প্রথমে লিঙ্গাপ্রে বেণারমূল, গুলঞ্চ প্রভৃতি
দ্রব্যারা নাড়িকান্দের প্রদান করিয়া য়ত বা তৈল সংযুক্ত কফ্রনাশক দ্রব্যের
স্বস্থক্ত উপনাই প্রলেপ প্রয়োগ করিবে। উত্তমানামক শীড়কা বড়িশ
ঘাবা ধরিয়া ছেনন করিয়া দিবে এবং হবীতকা প্রভৃতি বা বট প্রভৃতি
ক্ষার্র্বন বিশিষ্ট চুর্ণ অথবা উহাদের কল্ক ম্বুসহ নিশ্রিত করিয়া ভদ্বারা
প্রলেপ দিবে। পুন্ধরী, সংমৃত, ত্বকপাক ও স্পর্ণহানীতে পৈত্রিক বিসর্প-রাগের স্থায় চিকিৎসা করিবে। মৃদিত শীড়কায় "বলাতৈল" স্বস্থক্ত
করিয়া অবসেচন করিবে এবং কাকোল্যাদি বা জীবনীয়াদি মধুর্ব্যানীয় দ্রব্য
বারা উষ্ণ উপনাহ (প্রলেপ বিশেষ) প্রয়োগ করিবে।

শত পোনকনামক পীড়কাতে লেখন করিয়া শোধক ও রোপক রদক্রিরার বিধান করিবে। এবং পৃশিপর্নী (চাকুলে), শালপর্নী (শালগানী) প্রভৃতি ার্নীগণ সহ যথাবিধানাত্মাবে তৈল পাক কবিয়া পীডকাতে প্রদান করিবে। 'শোণিতার্কুদ বোগে রক্তবিদ্রধির স্থায় চিকিৎসাব বিধান; এবং দ্বিত্রণী-য়াক্ত অবস্থা বিবেচনাপূর্বক শোধন বা বোপণার্থে ক্যায়, কল্ক, স্থত, তৈল চুর্ণাদি কিয়া রসক্রিয়া প্রয়োগ করিবে।

অর্ব্রুদ, মাংসপাক, বিদ্রধি ও তিলকালক এই পীড়কাচতুষ্টার প্রায়ই সাধা, একাবণ বুদ্ধিমান্ চিকিৎস চ উছা "অসাধ্য" এ কথা না বলিয়া সাধা যাপ্য ইত্যাদি বলিয়া প্রভান (অপলাপ আর্থাৎ মিথ্যাকথন) পূর্বক কিৎসা করিতে প্ররত্ত হইবেন । কারণ রোগের স্বভাব হুতীব হুজ্রের ধাৎ কুটিল, হরত চিকিৎসা করিতে করিতে অসাধালকণাপন্ন ব্যাধি ও ারোগ্য হইতে পারে । স্ব হবাং চিকিৎসক সম্পূর্ণ অসাধ্য লক্ষণ দেখিলেও গাধি অসাধ্য" এ কথা কদাচ বলেবেন না । সাধ্য বা যাপ্য ইত্যাদি রূপ ললে মিথ্যা কর্থন জক্ম পাপ হয় না ; বরঞ্চ অসাধ্য নির্দ্দেশ করিলে, গৌ নিরাশ হইয়া কদাচ চিকিৎসা করায় না, স্বতরাং আবোগ্যের যোগ্য লেও (যদ্যাপা প্রাক্তন কর্মকলে কোনপ্রকাব ব্যাধি হইতে মুক্ত হইয়া ।) চিকিৎসকরে "অসাধ্য" কথনের দোষে রোগী অকালে মৃত্যু প্রাসেত ছয়, এহেতু তজ্জ্য পাপ চিকিৎমকে বর্তে । অসাধ্য রোগকে সাধ্য যাপ্য বলিলে, যাহারা চিকিৎসককে মিথ্যাবাদী বলিয়া ছণা করে, তাহারা রে পুচ় মর্ম্ম অজ্ঞাও নিশ্চয় জানিবে।

ইতি শ্কদোষ চিকিৎসা সমাপ্ত।

অ্থ ভগাধিকারঃ।

আনে ভগ্নং বিদিত্বা তু সেচয়েচ্ছীতলামুনা। পক্ষেনা লেপনং কার্যাং বন্ধনঞ্চ কুশান্বিভঃ। স্প্রতোক্তম্ভ ভগ্নেয়ু বীক্ষ্য বন্ধাদিমাগ্রেৎ॥

প্রথমত: ভগ্নস্থান নির্ণয়পূর্ব্বক তত্তপরি জল দেচন ও কর্দ্ধ দ্বারা লেপন করত: তৎপরে বস্ত্রদ্বারা উত্তম প্রকারে থেফনপূর্ব্বক কুশা (কদম্ব, অশ্বথ প্রভাৱে ক্লাক্ষ্ণ বন্দল) দ্বারা এবং স্থঞ্জতোক্ত নিয়মাত্রসারেও ভগ্নস্থান বন্ধন করিয়া রাখিবে। ইহাতে ভগ্নস্থান সংহিত হয় অর্থাৎ যোড়া লাগিয়া যায়।

অবনামিতমুন্নছে ত্রতকাবনামরেৎ।
আঞ্জেদভিক্তিমধোগতকো পরিবর্ত্তরেৎ।
আলেপনার্থং মঞ্জিড়া মধুককামপেষিতং।
শতধোত রতোমিশ্রং শালিপিউক কার্যেৎ॥

অবনত (কর্কটাখ্য ও বক্ষ) ভয়কে উত্তোলন এবং উন্নত (অগ্নকণানি) ভয়কে অধোনমন করা কর্ত্তব্য। আর অবিক্ষিপ্ত (উর্দ্ধ বা অধোনিকে অতিনির্গত) ভয়কে প্রসারিত (আকর্ষণ পূর্ব্বক যথাস্থানে সংবদ্ধ) করিবে এবং মঞ্জিষ্ঠা ও যফিমধু কাঁজির সহিত পেযণপূর্ব্বক শতধোত মৃত মিশ্রিত করিয়া ভদ্ধারা অথবা শালিভগুল পেষণ করিয়া শতধোত মৃতসহ মিশ্রিত করিয়া ভগ্নথানে প্রলেপ দিয়া দৃঢ়রূপে বন্ধন করিয়া রাখিবে।

সপ্তরাত্রাৎ সপ্তরাৎ সৌমার্জু রু চি মোক্ষণং।
কর্তবাং ক্যাৎ তিরাত্রাচ্চ তথা ভয়েরু জানতা।
কালেচ সমনীতোকৈঃ পঞ্চরাত্রাৎ বিমোক্ষয়েও।
ন্যান্যোধানি ক্যায়স্ত সুনীতং পরিসেচনে।
পঞ্চমূলী বিপক্ষ ক্ষীরন্দ্যাৎ স্বেদ্নে।
সুখোক্ষমবচার্যায়া চক্রতিলং বিজানতা।
মাংসং মাংসরসঃ সর্পিঃ ক্ষীরং যুষঃ সতীনজঃ।
রংহণঞ্চানুপানং স্যাজেন্ড্রয়ং ভগ্নায় জানতা॥

শ্রীষ্মকালে ৭ সাতদিবস অন্তর অথব ১ তিনদ্রিন অন্তর এবং সম-শীডোঞ্চকালে প্রতি ৫ পাঁচ দিবস পরে বন্ধন উন্মোচন করা (প্রোলা) কর্ত্তব্য।

ভগ্নরোগে স্তগ্রেধাদিগণের কাথ শীতল করিয়া ভগ্নস্থানে অবসেচন করিবে এবং অধিক বেদনা থাকিলে শালপাণী আদি সম্পর্ণস্থানর সচিত इक्ष श्रीक क्रियो छ्याचारन (महन ७ त्रेयप्रक हक्टेडन (मामाना टेडन व्यवन স্ঞাতোক্তি বাতব্যাধির চিকিৎদার বিধানাত্সারে প্রস্তুত তৈল) মর্দ্দন করিবে।

ভগ্নরোগে মাংস, মাংসের যূষ, ম্বন্ত, হ্রন্ধ, বর্জু ল কলায়ের (মটরের) যূষ **এবং বলজনক অম্বা**শীয় বিধান করিবে।

> গৃষ্টিক্ষীরং সদর্পিক্ষং মধুরৌষধ সাধিতং। শীতলং লাক্ষাযুক্তং প্রাতর্ভগ্নঃ পিবেররঃ। সন্নতেনান্থিসংহারং লাকা গোধুমমর্জ্জুনং। সন্ধিমুক্তে হস্থিতে চ পিবেৎ ক্ষীরেণ মানবঃ। রদোৰ মধুলাকাজ্য দিতা কলকং সমশ্বতাং। ছিন্নভিন্ন চ্যুতাস্থিনাং সন্ধানমচিরাল্ভবেৎ ॥

कारकालां मि खेरा मकल २ (छाला, छल /। ४० (मङ् श्रीश) अरः शृक्ष कीत (একবার প্রস্থৃত। গাভীর হুদ্ধ) / ১০ অর্দ্ধপোয়া যথানিয়মে এই হুদ্ধ পাক করিয়া শীতল হইলে মৃত ও লাক্ষা মিশ্রিত করতঃ প্রাত্তংকালে ভগ্নরোগীকে পান করিতে দিবে।

সন্ধিযুক্ত অন্থি ভগ্ন হইলে হাড়বোড়া, লাক্ষা, গোধুম ও অর্জ্জুনরকের ছাল সমভাগে পেষণপূর্বক ছত ও হ্রন্ধসহ মিশ্রিত করিয়া পান করিবে।

্রদোন, মধু, লাক্ষা, মৃত ও শর্করা এই সকল দ্রব্য পেষ্ণপূর্বক পান করিলে ছিন্ন, ভিন্ন ও চ্যুত অন্তি সংলগ্ন হইয়া যায়।

পীতং বরাটিকাচুর্ণং দ্বিগুঞ্জং বা ত্রিগুঞ্জকং। অপক ক্ষীর পীতং স্যানস্থিভগ্ন প্ররোহণং। , भीतः मनाका মধুকং সমর্পিঃ স্যাথ জীবনীয়ক সুখাবছক।

ভগ্নঃ পিবেত্ত্বক্ পয় মাৰ্জ্জু নন্দ্য গোধুমচূৰ্ণং সন্থতেন বাথ। সত্রণা তু ভূগনা ত্রণং সর্পিমধুভরৈঃ।

প্রতিসার্য্য কমারৈশ্চ শেষং ভগ্নবদাহরেৎ।

ভগ্নং নৈতি যথা পাকং প্রযত্নেত তথা ভিষক্॥

•কড়িভক্স ২।০ রতি পরিমাণে অথবা কাঁচ। হ্রন্ধ উপযুক্ত মাত্রায় সেবন বিলে ভগ্ন অন্থি সকুল সংরু ছইয়া থাকে।

লাক্ষা, যক্তিমধু ও জীবনীরগণ হত্তের দহিত পেষণপূর্বক স্কৃতসহ পান ারিলে অথবা অর্জ্জুনছালের সহিত পাককর। হ্রহ্ম, দ্বত ও গোধুমচূর্ণ মিঞ্জিত করতঃ পান করিলে ভয়রোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে।

ত্রণাদির ক্ষতযুক্ত ভয়ে ক্যায় রস প্রধান ক্রব্য সমূহের কল্কে স্বত ও মধু মিজ্রিত করিরা ভদ্মারা প্রলেপ দিবে। এবং ডৎপরে ভগ্নরৎ অক্সাক্ত চিকিৎসার বিধান করিবে। আর ভয়ছান যাহাতে না পাকিতে পারে, চিকিৎসক তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন, কারণ পাকিলে অনিষ্ট ঘ্টিনার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।

গন্ধতৈলং ৷—

কাকল্যাদিং সম্ভ্রাহ্বং মঞ্জিষ্ঠাং শারিবান্তথা। कुष्टेर मर्ब्बत्रमः भारभी युत्रमातः महन्मनः। শতপুষ্পাঞ্চ সঞ্ব্য তিলচুর্ণেন যোজয়েৎ। शीफ़नोर्थक कर्छवे। भक्तिरेसः मृज्य भन्नः । চতুত ণেন পরসা তত্তিলং বিপচেৎ পুনঃ। এলাচাংশুমতীপত্রং জীরকং তগরন্তথা। লোদ্রং প্রপৌওরীকঞ্ক তথা কালানুশারিবাং। শৈলেয়কং কীরশুক্লামনন্তাং সমধুলিকাং। পৃষ্ঠাশৃঙ্গাটককৈব প্রাগুক্তানে। বিধানি চ। এভিন্তদ্বিপচেত্তৈলং শাস্ত্রবিন্যুত্রনাগ্নিনা। এতত্তিলং সদাপথ্যং ভগ্নানাং সর্ববর্ষস্থ । আক্ষেপকে পক্ষাঘাতে চাঙ্গশোষে তথাদিতে। মন্যান্তড্যে শিরোরোগে কর্ণশূলে হনুগ্রহে। বাধির্য্যে তিমিরেচৈব যে চ স্ত্রীয়ু ক্ষয়ং গতাঃ। পথ্যং পানে তথাভ্যঙ্গে নদ্য বস্তিষু ভোজনে। ত্রীবাক্ষন্ধোরসাং রদ্ধি বলেনৈবোপজায়তে। মুখঞ্চ পদ্মপ্রতিমং সুখগন্ধি সমীরণং। গন্ধতৈলমিদং নামা সর্ববাতবিকারনুৎ। রাজার্ছমেতৎ কর্ত্তব্যং রাজ্ঞানের বিচর্ক্ষণঃ। তিলচ্পশ্ততুর্পস্ত মিলিতং চ্পমিষ্যতে॥

কাকোল্যাদিগণ, যফিন্ধ, মঞ্জিষ্ঠা, অনন্তমূল, কুড়, ধুনা, জটামাংসী, দেবদাক, রক্তচন্দৰ এবং শলুকা এই দ্রব্য সমফির যত, তাহার চতুত্রপ তিলচুর্গ লইয়া উহা, এলাচি প্রভৃতি সর্বপ্রকার গন্ধদ্রব্যসহ পক্ত্রদ্ধ দ্বারা আর্দ্র করতঃ পীড়নপূর্বক তৈল বাহির করিবে। এবিষধ তৈল বুঃ চারি দের, হগ্ধ।৬ দের এবং কল্কার্থ—এলাচি, শালপানী, ভেজপাত্রণ, জীরক, তগর, লোধ, পুগুরিয়াকাষ্ঠ, তগরপাহকা, শৈলজ, ক্ষীরশুক্লা (ভৃষিক্ষাগু), অনন্তমূল, মধুলিক (গোধুমবিঃ), পানীকল, কাকোল্যাদিগণ, গোকুর, মঞ্জিষ্ঠা, অনন্তমূল, কুড়, ধুনা, জ্বটামাংসী, রক্তচন্দন ও দেবদাক;

এই সকল জব্য সমভাগে সমন্তে /১ একসের যথাবিধানে এই ভৈল পাক করিয়া প্রয়োগ করিলে সর্কবিধ ভগ্ন, সর্ক্তপ্রকার বাতব্যাধি, তিমির বিধিরতা প্রভৃতি বিবিধ রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

লাকাতগ্তলঃ —

লাকান্থিনং ষত ককুভাষণদ্ধান্চ নীকতা নাগবলাপুরশ্চ। সভগ্নযুক্তান্থি কজং নিহন্যাদঙ্গানি কুর্যাৎ কুলিশোপমানি। অত্রান্যতো দৃষ্টিবলাতুল্যশচ্বেন শুস্গুলুঃ॥

ইতি ভগ্নাধিকারঃ।

লাক্ষা, হাড়যোড়া, অর্জুনছাল, অশ্বগন্ধা ও গোরক্ষচাকুলে ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে সমান এবং গুগৃগুলু সর্বসমষ্টির সমান পরিমাণে প্রাহণপূর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে ভগ্নান্থি সংলগ্ন, বেদনা দুরীভূত এবং শরীর বক্তবং দৃঢ় হইয়া থাকে।

ইতি ভগ্ন-চিকিৎসা সমাপ্ত

অথ কুষ্ঠাধিকা

গবাং কোটী প্রদানেন গয়ায়াং পিতৃতর্পণে। বিশেশরপুরী বাদে তৎপুণ্যং কুন্ঠনাশনে॥

কোটি গৰুদানে, গরার পিতৃতপূর্ণে এবং বিশ্বেশ্বর পুরী (কাশী) বাস করিলে যত পুণা সঞ্চর হয়, কুষ্ঠরোগ আরোগ্য করিলে সেই পরিমাণে পুণা উপার্জ্জিত হইয়াঁ থাকে।

বাতোভরেষু সপি ব্রমনং শ্লেষ্মোভরেষু কুষ্ঠেষু।
পিভোভরেষু মোজোরজ্ঞার বিরেচনকাথাং।
পুচছনমণ্ণে কুষ্ঠে মহতিচ শস্তং শিরাব্যধনং।
বহুদোষঃ সংশোধ্যঃ কুষ্ঠীবহুশোহনুরক্ষতা প্রানানু॥

বাতপ্রধান কুর্চরোগে প্রথমে স্থত ও তৈলাদি প্ররোগ, মেত্মজন্ত কুর্চ-রোগে বমন প্ররোগ এবং পৈত্তিক কুর্চরোগে রক্তমোক্ষণ ও বিরেচন প্ররোগ করা কর্ত্তব্য। এবং অপ্পকৃষ্ট্ পুচ্ছন করা (অন্তদ্ধারা ক্ষত চিরিয়া দেওয়া) ও মহাকৃষ্ঠে শিরাবেধ করা নর্কতোভাবে কর্ত্তন্য বলিয়া জানিবে। আর দোষ সংযুক্ত কুর্চরোগীর যাহাতে বলক্ষম না হয়, এমডভাবে পুনঃ পুনঃ সংশোধন করিবে।

পঞ্চক্ষায়ঃ । —

বচাবাদা পটোলাশাং নিম্ন্য ফলীনীত্ব।

কষারো মধুমা পীতো বান্তি রুম্মদনাম্বিতঃ ॥ বিরেচনং প্ররোক্তব্যং ত্রির্দ্ধন্তি ফলতিকৈঃ। যে লেপা কুষ্ঠানাং যুজ্যন্তে নির্গতাভ্রিদোষাণাং। সংশোধিতাশয়ানাং সদ্যঃ সিদ্ধির্ভবতি তেয়াং॥

বচ, বাদক, পল্তা, নিম্বছাল ও কলিনী (প্রিয়স্কু) এই দ্রাকল দ্রব্য সমস্তে /॥• অর্ধদের, পাকার্থ জল /৮ আটদের শেষ /২দের,। এই ক্বাথ ১ জোলা মধু ১ ভোলা ও মদনফলচ্ব প্রক্ষেপ দিয়া বমনার্থে কুর্চরোগীকে পান করিতে দিবে। এবং বিরেচনার্থে ত্রিফলার কাথ উপযুক্ত মাত্রায় দস্তী-মূল চূর্ব ও তেউড়ীচূর্ব প্রক্ষেপ দিয়া রোগীকে পান করিতে দিবে।

কুঠরোগে প্রথমতঃ দূষিত রক্ত নির্গত করিয়া বমন বা বিরেচন প্রদানপুর্ব্বক দেছ বিশুদ্ধ করিয়া পশ্চাৎ প্রলেপ প্রয়োগ করিলে সদ্যই ফলপ্রাপ্ত
হওয়া যায়।

নবক্ষায়ঃ।—

ত্তিফলা পটোল রজনী মঞ্জিষ্ঠা রোছিণী বচানিষ্টে। এষকবারোহভ্যস্তো নিহন্তি কফপিভঙ্গং কুষ্ঠং॥

ত্রিফলা, পল্তা, হরিদ্রা, মঞ্জিঠা, কট্কী, বচ ও নিমছাল মোট ২ ডোলা, জল ৩২ ভোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা। এই কাথ পান করিলে কফপৈত্রিক কুঠ বিনম্ভ হয়।

হরিদ্রোকল্কসংযুক্তং গোন্ত্রস্য পলদ্বাং।
পিবেরর কামচারী কচ্ছ্ পামা বিনাশনং।
শোপণাঞ্ময়হরা গুলামেহককাপহা।
কচছ্ পামাহরীতিব পথা। গোন্ত্র সাধিতা।
ধাত্রী খনিরয়োঃ কাপং পীত্রাবস্তুজসংযুতং।
শঙ্গেন্দু ধবলং শিত্রং চুর্নং হন্তি ন সংশ্রঃ।
মনঃশিলালে মরিচানি তৈলমার্কং পরঃ কুষ্ঠহরঃ প্রদেহঃ।
করঞ্জবীকৈড্গজং সকুষ্ঠং গোন্ত্রপিন্তশ্চহর প্রনেহঃ॥

২পল গোমুত্রসহ হরিদ্রা বা হরীতকী পেষণপূর্বক সেবন করিলে কচ্ছৃ পামা প্রভৃতি বিবিধ কুঠব্যাধি আরোগ্য হইর ২থাকে। আমলকী ও খদিরের হাথে দোমরাজী চুর্ন প্রকেপ দিয়া পান করিলে শ্বিত্র (ধ্বল) কুঠ নিশ্বন্ধই আরোগ্য হয়।

মন:শিলা, ছরিতাল, মরিচ ও সর্ধপত্তিল আকল্বের ক্ষীর্মছ পেষণপূর্বক তদ্বারা প্রলেপ নিলে অথবা লাটাকরঞ্জের বীজ, সোমরাজীবীজ্ঞ ও কুড় গ্রোমুব্রমহ প্রেষণপূর্বক প্রলেপ নিলে কুর্চরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে। বিভুক্ত দৈয়ব শিবা শশিরেখা করঞ্জ সর্বপ রজনীভিঃ। গো দৰপেটো লেপঃ কুঠহরো দিবসনাথ সমঃ। দুর্ব্বাভয়া দৈশ্বব চক্রমর্দ্দ কুঠেরকাঃ কাঞ্চিক ভক্রপিষ্টাঃ। এভিঃ প্রলেপেরপি বদ্ধমূলং দক্তঞ্চ কণ্ডৃংশ্চ বিনাশয়ন্তি॥

विङ्क, रेमक्कवलवर्ग, इती छकी, भाभित्रथा (स्मीमदाखी) वीख, नांगिकद-अद्भविक, नर्यं १ ७ हिन्सा ७३ मकल खरा ममजारा अइनेपूर्वक मायूजमह পেষণ করিয়া ভদ্বার। প্রলেপ দিলে কুঠরোগ বিনষ্ট হয়।

मृद्या, हतीखकी, रिमक्तवलवर्ग, ठाकूरम ও वावूहे जुलमी अहे मकल स्वरा কাঁজি অথবা তক্রমছ পেষণপূর্ব্বক প্রলেপ দিলে দক্তে ও কণ্ড, বিনষ্ট ছয়।

দক্তগজেন্দ্রসিংহঃ ।—

তুল্যোরদঃ শালতরোস্তবেণ সচক্রমর্দ্ধোইপ্যভয়াবিমিশ্রঃ। পানীয়ভজেন তদমু পিন্টো লেপঃ ক্নতো দক্ত গজেন্দ্রসিংহ॥ ধুনা, তুষ, চাঠুনে, হরীতকী ও পানীয়ভক্ত (পাস্তাভাত) এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইরা পানীয়ভক্তের সহিত প্রলেপ দিলে দক্র বিনষ্ট হয়।

> সুক্কাও শুবিরে দগ্ধ গৃহধৃমং সবৈদ্ধবং। ষ্পত্তপূৰ্মং তৈলযুক্তং লেপদিন্ধন্তি বিচর্চিকাং। এড় गे জ ভিলসর্য পকুষ্ঠং মাগধিকা লবণত্রয়মস্ত । পৃতীক্বতং দিবসত্রয়মেভদ্ধন্তি বিচর্চিক দক্রসকুষ্ঠং॥

' মনসাসীজের কাণ্ড মধ্যে গর্ভ করিয়া তন্মধ্যে ঝুল ও সৈদ্ধবলবণ পুরিয়া অন্তর্গুমে দক্ষ করতঃ তাহা দর্ঘণ তৈলদহ মিঞিত করিয়া প্রলেপ দিলে विवर्षिका कूछ विनस् इम्र।

চাকুন্দে, ভিল, मर्राथ, कूड़, शिशूल, रिमञ्जवलवन, महललवन ও विहे लवन ুএই নকল দ্রব্য দধির মাভদহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে বিচর্চি, দক্তে ও কুঠরোগ আরেংগ্য ছইয়া থাকে,

খিত্র-দর্ক্তৎপাটন লেপঃ ।—

অশ্বহা রজনীহেম প্রত্যক্পুষ্পী প্রদহতে। চূর্ণঞ্চ স্বার্ছ্জিকাক্ষারং নীরং দত্তা প্রপচাতে। স প্রচছয়িত্বা ততে। স্থান মণ্ডলান্ তান্ বিলিপ্য চ। পাটলারিপতত্যঙ্গে বিস্ফোটাং শ্চাতিদারুণানু। সম্ভবন্ধি তিলাবক্তা কৃষ্ণবর্ণা ভবন্তিতে। নিমিলন্তি স্বশরীরেণ প্রকৃতাঙ্গা ভবন্তিতে॥ कत्रवीत, एति.जा, पुञ्जात्रवीक এवः व्यशामादर्गत्रवीक अरे मकल स्वत्र मक्ष

করিল ভংসহ চূর্ব ও সাচিকার বিভিত্ত করতঃ অসমহ পেরণ করিব। ইহা ছারা প্রলেশ নিলে গিত্রমুঠ ও ডব্জনিক বিক্ষোটারি বিষট্ট হয়। শিক্ষাবলেশঃ i—

সৈত্ববং রবিত্র্যেন লেপরিত্রা ক্ষত্ত্বগুলং।
প্রচন্থরিত্বা প্রলেপোহরং খিত্রকুন্তবিনালমঃ।
সৈত্ববলবণ আকন্দের হুদ্ধে পেবণপূর্বক ভদারা প্রলেপ দিলে ধবলকুন্তি।
রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

কুঠৰিত্ৰনাৰনো লেপঃ।--

মুখোখতেচ সংক্ষাতে কুঠানেনাং প্রতিক্রিয়াং। গন্ধকং চিত্রকাশীশং ছরিতালং ফলত্রাং। মুখে লিপ্তা নিনৈকেন বর্ণনাশো ভবিষাতি॥

গন্ধক, চিত্ৰ (রক্তচিভারন্ল) কাণীশ (হিরাকস), হরিভাল ও ত্রিকল । একত্র পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে মুখজাত বিত্তকুঠ দুরীভূত হইয়া যায়।

শ্বিত্রলেপঃ।---

গুঞ্জাফলাগ্নিচূর্ণঞ্চ লেপেন খেতকুন্ঠনুৎ। নিশাপামার্গভন্মানি লিপ্ত্যা খিত্রবিলাশ্যেৎ॥

শুঞ্জাফল ও রক্তচিতারমূল চূর্ণ অথবা হরিদ্রা ও অপামার্গ ভস্ম পেষণ পূর্ব্বক প্রলেপ দিলে নি×চয়ই বিত্রকুষ্ঠ (বেতকুষ্ঠ) বিনম্ট হয়।

ছিল্লায়াঃ স্বরসো বাপি দেব্যমানং যথাবলং। জীর্ণন্বতেন ভুঞ্জীত মুদ্যাযুষোদকেন তু। অতিপ্রতি শরীরোপি দিব্যরূপী ভবেল্লরঃ॥

ষে ব্যক্তি প্রতিদিন গুলঞ্চের স্বর্য উপযুক্ত মাত্রায় পান করে এবং উহা জীর্ন ছইলে মৃত ও মুগের যূষসছ আন্ধ ভোজন করে; সে অভ্যন্ত গলৎ-কুষ্ঠ সংযুক্ত ছইলেও রোগ-মুক্তিলাভপূর্বক দিব্যরূপ ধারণ করিতে পারে।

ভল্লাতকাৰীপি সুধার্কমূলং গুঞ্জাফল জুয়বন শঙ্খচুর্নং।
তৃথং সকুষ্ঠং লবণানি পঞ্চ কারদ্বয়ং লাঙ্গলিকাঞ্চ পজ্বা।
স্মুছর্ক ভূমে ঘনমায়সস্থং শলাক্ষা তং বিদধীত লেপং।
কুষ্ঠে কিলাসে তিলকালকে চ অনেষ ভ্রম্ম সুন্ধার্কীলে।

ভেলারবীজ অথবা মূল, রক্তচিভারমূল, মনসাসীক্ষেরমূল, আকন্দমূল গুঞ্গাফল (রভি), শুগুী, পিপুল, মরিচ, শুখচূর্গ, তুভিরা, কুড়, সৈন্ধবলবণ, সচললবণ, বিট্লবণ, শান্তরীলবণ, করকচলবণ, যবক্ষার, শাচিক্ষার ও বিষ-লাঙ্গলিয়ারমূল, এই সকল জব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া চতুগুর্ণ সীজেরক্ষীর ও আকন্দের হ্রম্মহ লৌহপাত্রে করিয়া পাক করতঃ ঘনীভ্ত হইলে, ভাহা ज्ञांका बाह्य क्षड्मभूक उद्माहा अलाश विल्य क्रंक, किमान, जिनकानक

বিষবরুণ হরিদো চিত্রকাগারধুম
মনল মরিচ দুর্ব্বাক্ষীরমর্কস্মু হীভাগং ।
দহতি পতিত্যাত্রাৎ কুষ্ঠজাতীরশেষাঃ
কুলিশ্যিব সরোধা চছক্রহাস্তাদ্বিযুক্তং ॥

ছাবরবিষ, বঞ্চণরক্ষেরছাল, হরিন্রা, রক্তচিতা, ঝুল, ভেলা, মরিচ, দুর্বা, আকন্দেরক্ষীর, ও মনসাসীজ্ঞেরক্ষীর; এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া লৌহ-শাত্রে পাক করিয়া ঘন হইলে ভদ্ধারা প্রালেপ দিলে বিবিধ কুঠ আরোগ্য হইয়া থাকে।

খেতজয়ভীমূলং পিউং পীতঞ্চ গব্যসর্পিষেব।
খিত্রং নিইন্তি নিয়তং রবিবারে বৈদ্যনাথাজ্ঞা।
ইন্দ্রাশনং সমাদায় প্রহস্তেইইনিচোদ্ভঃ।
তচ্চূর্ণং মধুসর্পিভ্যাং লিহেৎ ক্ষীরয়তাশনঃ।
হত্যাচ সর্ববৃষ্ঠানি জীবেদ্বয়শতং স্থাই।
যঃ খাদেদভয়ারিউ মরিচামলকং বারিণা।
স জয়েৎ সর্ববৃষ্ঠানি মাদাদূর্দ্ধং ন সংশয়ঃ॥

খেতজ্বস্তীরমূল গব্যয়ত সহ পেযণপূর্বক রবিবারে দেবন করিলে। খিত্রকুঠ আরোগ্য হয়। এবং খেতকু চেবমূল শুতদিনে উত্তোলনপূর্বক চূর্ব করতঃ মধু ও য়তসহ শিশ্রিত করিয়া দেবন কবিলে দর্ববিধ কুঠরোগ নিবা-রিত হুইয়া থাকে।

* হরীজকী, নিম, মরিচ ও আমলকী সমভাগে গ্রহণপূর্বক জলসহ পেষণ করিয়া দেবন করিলে এক মাদের মধ্যে সর্ববিধ কুষ্ঠরোগ হইতে মুক্ত হওয়া শায়।

পঞ্চতিক্তকং মুতং।—

নিয়ং পটোলং ব্যাখ্রীঞ গুড়ু চী বাসকন্তথা।
কুর্যাদনশপলান্ ভাগান্ একৈকস্য স্কুট্রিতান্।
জলদ্রোণে বিপক্তব্যং যাবৎ পাদাবশৈষিতং।
স্বতপ্রস্থং পচেত্রেন ত্রিফলাগর্ভসংযুতং।
পঞ্চতিক্তমিদং খ্যাতং সর্পিকুষ্ঠ বিনাশনং।
অশীতির্বাতজানোগাং শুড়ারিংশচ্চ পৈতিকান্।

বিংশতিং শ্লৈষ্মিকাংশ্চৈব পানাদেবাপকর্মতি। দুষ্টত্রণক্রিমিনর্শঃ পঞ্চকাসাংশ্চ নাশয়েৎ।

উৎকৃষ্ট গ্রাছত /৪ চারিদের; কাথার্থ—নিম্বছাল, পল্ডা, কণ্টকারী, গুলঞ্চ, বাসক এই সকল দ্রুব্য প্রভোকে দশপল, জল ৬৪ সের, শেষ ।৬ বোল-সের, কল্কার্থ—হরীতকী, আমলকী, ও বহেড়া সমভাগে সমস্তে /১ এক-সের। ষ্থানিরমে এই ন্বভ পাকপূর্বক সেবন করিলে সর্ব্ববিধ কুন্ঠ, বাত-ব্যাধি, শৈত্মিকরোগ, পৈত্তিক রোগসমূহ ও পঞ্চপ্রকার কালরোগ বিন্দ্ত হয়া থাকে।

মহাখদিরাদ্যং মৃতং ৷—

খদিরস্য তুলাঃ পঞ্চলিংশপাশনয়োস্তলে।
তুলাদ্ধা সর্বত্রবৈতে করঞ্জারিউবেতসাঃ।
পপটং কুটজশৈচব রষঃ ক্রিমিহরন্তথা।
হরিদ্রে কৃতমালশ্চ শুড়ু চী ত্রিকলা ত্রিহে।
সপ্তচ্চদশ্চ সংক্ষুত্বান্ দশটোণে চ বারিণা।
অইভাগাবশিষ্টপ্ত কষায়মবতারয়েহ।
ধাত্রীরসক্ষ তুলাংশং সপিষশ্চাটকং পচেহ।
মহাতিক্তক কল্কৈশ্চ যথোক্তৈঃ পলস্মিতিঃ।
নিহন্তি সর্ববৃষ্ঠানি পানাভ্যন্ত নিষেবনাহ।
খিদির্মিত্যেতহ মহাপরং কুষ্ঠবিনাশনং॥

উৎকৃষ্ট গ্ৰান্থত ।৬ ষোলদের; আমলকীররদ ।৬ দের এবং কাথার্থ—
খদিরকাঠ সাড়ে বাষটি দের, শিংশপা (শিশু) ও অশনরক্ষেরছাল ॥৫ দের,
ডহরকরঞ্জেরছাল, নিম্বছাল, বেড্সন ক্ষেত্তপাপড়া, কুড়চি, বাসক, বিড়েছ্ক,
হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, দোণালু, গুলঞ্চ, আমলকী, বহেড়া, হরীভকী, ভেউড়ী ও
ছাতিমছাল, প্রত্যেক /৬।০ সয়াছরদের, জেল ৬৪০ ছর শত চল্লিশদের,
শেষ ৮০ আশীদের এবং কল্কার্থ—মহাতিক্তক মতে কথিত ক্রব্য সকল প
অর্ধাৎ ছাতিম, অত্তৈম, দোণালু, কট্ কী, আকনাদী, বেণারমূল, ত্রিফলা
পলতা, নিম্বছাল, ক্ষেত্রপাপড়া, ত্ররালভা, রক্তচন্দন, পিপুল, গজপিপুল,
পদ্মকাঠ, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, যব, রাখালশ্যা, শ্রামালভা, শত্যুলী, অরন্তমূল, ইক্রেষব, বাসক, স্থচীমুখী, গুলঞ্চ, চিরভা, 'যফিমধু ও বলালভা প্রত্যেকে
৮ ভোলা। এই মৃত যথাবিধানে পাকপুর্বক পান অথবা অভ্যঞ্জন করিলে
সর্ববিধ কুর্চরোগ বিনক্ট হইয়া থাকে।

বজ্ঞকং মৃতং ।— বাদাগুড়ু চীত্রিকলাপটোল করঞ্জনিয়াশন ক্ষণবেত্রং। i

1

তৎকাথ কল্কেন মৃতং বিপক্ষ ভদ্বজ্ঞকং কুন্ঠহরং প্রনিষ্টং। বিশীর্ণক্রিকান্ত্রলী হন্তপাদঃ ক্রিমার্দিতো ভিন্নগলোপিমর্ত্যঃ। পৌরাণিকীং কান্তিমাবাপ্য জীবেদব্যাহতো বর্ষভঞ্চ কুন্ঠী॥

উৎকৃষ্ট গবায়ত /৪ চারিসের, কাথার্থ বাসক, গুলঞ্চ, ত্রিফলা, পল্ডা, করঞ্জ, নিন্ধঃ, অশন ও কৃষ্ণবৈত (কালিয়ালতা) সমভাগে সমস্তে /৮ সের, জল ৬৪ চৌষটি সের, শেষ কাথ।৬ যোল সের এবং কল্কার্থ—উক্ত বাসকাদি দ্রের সমস্তে /১ একসের মাত্র। যথানিয়মে এই মৃত পাকপূর্মক সেচন করিলে কুষ্ঠাদি বিবিধরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

গুণ্গুলু পঞ্চিক্তকং মৃতং।—

নিয়া২মুতার্ষ পটোলনিদিগ্নিকানাং ভাগান্ পৃথক্ দশপলান্ বিপচেৎ ঘটে২পাং। অষ্ট্রীশ শেষিত রসেন সুনিশ্চিতেন প্রস্থং য়ুতন্ত বিপচেৎ পিচুভাগকলৈকঃ। পাঠা বিড়ঙ্ক সুরদারু গজেপকুল্যা দ্বিক্ষার নাগরনিশামিসি চব্য কুষ্টেঃ। তেজোবতী মরিচ বৎদক দীপ্যকাগ্নি রোহিণ্যহরুস্করবচাকণমূল্যুটকঃ। মঞ্জিষ্ঠায়াভিবিবয়া ররয়া যমান্যা गः ७ म , ७ ग् ७ नू भरेन ति भ भ मः रे था । ज्यानिकः विषयि **अवनः म**भीतः সম্বন্ধি মজ্জগত মপ্যথ কুন্তমীদৃক্। নাড়ীত্রণার্ব্ব দন্তগন্দর গণ্ডমালা যভূর্দ্ধ সর্বগ্র গুলালোগে মহান। যক্ষাকৃতি শ্বনন পীনস কাদশোধান্ ছৎপাণ্ডুরোগমদ বিদ্রেধি বাতরক্তং ॥

ভিৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিসের, ক্লাথার্থ নিমছাল, গুলঞ্চ, বাসক, পল্ভা ও কন্টকারী, প্রভাৱক > দশ পল, জল ৬৪ সের, শেষ /৮ সের ; কল্কার্থ আকরাদী, বিড়ঙ্গ, দেবদাক, গজপিপুল, যবক্ষার, সাচিক্ষার, শুঠ, ছরিদ্রা, শলুকা, চই, কুড়, জ্যোভিত্মতী, (লভাকট্কী), কুড়চি, জীরক, রক্তচিডা, কট্কী, ভেলা, বচ, পিপুলমূল, মঞ্জিষ্ঠা, অভৈষ, ত্রিকলা ও বমানী প্রভাৱেক ২ ভোলা ও শোধিত গুণ্গুলু ৫ পল অর্থাৎ ৪০ ভোলা। যথানিরমে পাক- পূর্মক এই দ্বত উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে সর্বাঞ্চার স্কুইরোগ, বাড়ী-ত্রণ, ভগান্তর, যক্ষা, বাতরক্ত শ্রন্ডভি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

मित्रिकांगाः टेडलः।-

মরিচালশিলাকান্ধ পয়োশারি জটা তিরিং।
শক্রদাবিষালার্ক নিশাযুগদারুচন্দনৈং।
কটুট্তলাং পচেৎ প্রস্থং দ্বাকৈবিধালাহিতিঃ।
সন্মেচ্ছাং তদভালাকজকুঠ বিনাশনং।
সর্বেহপিচ কুর্চিত্ত ভৈলমেতৎ প্রশাসতে॥

বউটিতল অর্থান সম্পাটিতল /৪ চাবিসের, গোমত ।৬ ষোলামের এবং বলবার্থ—মবিচ, ছবিভাল, মন শিলা, আলাদের স্মাব, মুখা, বালা, কববীর, জটামান্দ্রী, তৈউড়ী, গোময়রম রাখালশনা, কুড, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, দেবদাক ও রক্তচন্দন, এই সকল দ্রব্য প্রভাকে ২ ভোলা এবং মিঠাবিষ
৮ ভোলা। যথানিয়মে এই ভৈল পাকপূর্বক মর্দ্দন করিলে দক্র আদি
সকল প্রকার কুঠরোগ আরোগ্য হইর। থাকে।

রহন্মরিচাদ্যং তৈলং।—

মরিচং তিরতা দন্তী ক্ষীরমার্কং সক্তদ্রে ।
দেবদারু ইরিছে দ্বে মাংগী কুঠং সচন্দনং ।
বিশালা করবীরঞ্চ ইরিতালং মনংশিলা ।
চিত্রকো লাঙ্গলাভ্যাক বিড়ঙ্গঞ্চক্রমর্দ্দকং ।
শিরীষঃ কুটজো নিয়ং সপ্তপর্ণ স্ব হায়তা ।
শালাকোনক্ত মালাকঃ খদিরং পিপ্পলী বচা ।
জ্যোতিয়তী চ পলিকা বিষদ্য দ্বিপলং ভবেৎ ।
আচকং কটুতৈলদ্য গোমূত্রস্য চতুও নং ।
মুৎপাত্রে লৌহপাত্রে বা শনৈম্ দ্বিমনা পচেৎ ।
পক্ত্রা তৈলবরং হেত মুক্ষয়েৎ কৌর্স্তিকান্ ত্রণান্ ।
পামা বিচর্চিকা দক্র কণ্ডু বিস্ফোটকানিচ ।
বলরঃ পলিতং ছায়া নীলী ব্যঙ্গ তথৈবচ ।
অভ্যঙ্গেন প্রণশ্তি সৌরুমার্য্যঞ্চ জায়তে ।
প্রথমে বয়িদ স্থীণাং যাদাং নদ্যম্ভ দীয়তে ।

PERSONAL PROPERTY !

वनीवर्कत्रताचा वा गटना या वात्रवाक्षण । विचित्रकाक्षरेगनीस्थ करवर्षाक्षण विक्रम

উম্ভতৈলং ৷—

উন্মত্তকদ্য বীজেন মানকক্ষারবারিণা। কটুতৈলং বিপক্তব্যং শীত্রং হন্তি বিশাদিকুং॥

কটুতৈল /৪ চাবিদেব , মানকচুদ্বাবা প্রস্তুত ক্ষাব জল। ৬ ষোলদের এবং কল্কার্থ—ধুতুবাব বীজ কৃটিত /> একদেব। যথানিয়মে এই তৈল পাক কবতঃ মর্দ্দনানি দ্বাবা বিপাদিকা কুষ্ঠবোগ আবোগ্য ছইয়া থাকে।

यदामिन्नृ तानाः टेजनः।—

সিন্দুরং চন্দনং মাংসী বিড়ঙ্গং রজনী দ্বরং।
প্রিরঙ্গু পদাকং কুষ্ঠং মঞ্জিষ্ঠাং খদিরং বচাং।
জাত্যক তিরতা নিম্ন করঞ্জং বিষমেবচ।
কুফবেত্রক লোপ্রক প্রপুরাড়ঞ্চ সংহরেৎ।
শ্লাঙ্গুপিন্টানি সর্বানি যোজয়ে ভৈলমাত্রা।
অভ্যঙ্গেন প্রযুঞ্জীত সর্বাকুষ্ঠবিনান্দাঃ।
পামাবিচর্চিকা কণ্ডু বিস্পাদি বিনান্দাং।
রক্তপিডোখিতান্ হন্তি রোগানেব বিধান্ বহুন্।

मर्शिटेजल /८ गितिस्त , जल । ७ सिलस्त अवर कल्कार्थ—मिन व, तज्ज-ग्निन, जिंगि, विज्ञ , रिति, पाकरित जा, शिश्च, शिल्ल , श्री क्रिके, क्रु, मिल्लिंग, थितिकार्थ. वह, क्षां शिव, जाकर्मित शांशा, विम्राल, क्रिक्ष, विष, क्रिक्षत्व, लांश्व छ ग्रोक्स्न अर्थ मैकल ज्वया ममान शित्रमार्थ ममारा /১ अक-स्त्र । यथारिश्वात अर्थ जिंगा शांकर्यक मर्मनद्वाता शामा छ विद्या क्रिका श्री क्रिके अर्था क्रिके अर्था अर्था स्त्रांग विनये हरेशा थारक।

> ভামুতিলং।— অর্কন্দীরং স্ল হীক্ষীরং ভঙ্গংস্ক ব্যহশাল বিং

দ্রবং জয়ীর গোমুত্রং প্রভোকং প্রশবিংশতিঃ।
ভিলতৈলং প্রাভিংশৎ সর্ববেকতা পাচয়েৎ।
তৈলাবশেষমূভার্যা তত্ত্ব চুর্ণমিদং ক্ষিপেৎ।
কাঞ্চনী ধাতকীপুষ্পং মঞ্জিষ্ঠা চ শতাবরী।
গন্ধকং পঞ্চলবর্ণং দ্বিনিশা বৎসনাভকং।
প্রতিচার্দ্ধপলং যোজাং একীক্বতা বিমন্দ্রেং।
মর্শন্থ সর্ববৃষ্ঠানি ভারতৈলং নিহন্তালং।

তৈল ৩০ তিশ পল, আকন্দের ক্ষীর, মনসাক্ষীর, ভৃত্ববাজের রস, ধৃত্বরার রস, জন্মীরনেবুর রস, ও গোমূত্র ওত্তাকে ২০ পল। যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক চৃল্লী হইতে নামাইবে। তৎপরে হরিদ্রা, ধাইফুল, মঞ্জিচা, শভাবরী, গন্ধক, সৈন্ধবলবণ, সৌবর্চ্চললবণ, বিটুলবণ, দাক্ষহরিদ্রা, গোরোচনা ও অমৃতবিষ ইহাদের চূর্ণ প্রত্যাকে ৪ ভোলা মাজায় ঐ তৈল সহ মিশ্রিভ করতঃ উত্তমরূপে আলোড়ন করিয়া লইবে। এই তৈল মর্দ্দনদ্বারা মর্মান্থানজ্ঞাত সর্বপ্রকার কুষ্ঠরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

বিষতৈলং ৷—

নক্তমালং হরিদ্রে দ্বে অর্কং তগরমেবচ।
করবীরং বচা কুষ্ঠ মাস্ফোতা রক্তচন্দনং।
মালতী সপ্তপর্ণক মঞ্জিষ্ঠা সিন্ধুবারকং।
এমামর্দ্ধ পলান্ ভাগান্ বিষদ্য দ্বিপলং ভবেৎ।
চতুগু ণে গবাং মূত্রে তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
শিত্র বিস্ফোট কিটীম কীটলতা বিচর্চিকাঃ।
কণ্ডু কচছু বিকারাশ্চ যে ত্রণা বিষদুষিতাঃ।
বিষ তৈলমিদং নামা সর্বত্রণ্বিশোধনং॥

তৈল /৪ চারিসের; গোমূত্র ।৬ যোলসের এবং কল্কার্থ—কর্ঞ, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, আকন্দের ক্ষীর, তগরপাহকা, করবীমূল, বচ, কুড়, বনমলিকা, রক্তচন্দন, জাভীপত্র, ছাতিমছাল, মঞ্জিষ্ঠা ও নিদিন্দাপত্র প্রত্যেকে ৪ চারি-তোলা এবং মিঠাবিষ ১৬ তোলা । যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক অভ্যু-ঞ্জনদারা শ্বিত্র, বিক্ষোট প্রভৃতি কুষ্ঠাদিরোগ স্মারোগ্য হয়।

'বাসারুদ্রতিলং।—

ত্তিফলা নিয় ভণ্টাকী রহত্যে সপুনর্গ। হরিদ্রে রয় নিগু ভোগ পটোল কনকাহ্বয়ে। হরিতালং শিলাকুঠো লাঙ্গলী দাড়িমাহ্বয়ে।

কৈব জয়ন্ত্ৰী পৃতিকট্কলো।

কাং কৰ্বয়ৈঃ কল্কৈন্তেলপ্ৰস্থ বিপাচয়েৎ।
চতুগুণে গুড় চ্যান্চ রসেবৈদ্যঃ সমাহিতঃ।
চতুগুণান্ত গোক্ষীরং রষপত্র রসন্তথা।
দ্বাবতারয়েৎ বৈদ্যো রুদ্রমন্ত্রং সমাজপেৎ।
দক্তকুষ্ঠং ভুফত্রণং বিসর্পং বিদ্রধিং তথা।
নাড়ীব্রণং ব্রণং ঘোরং বাতরক্তং সুভুর্জরং।
সন্নিপাভজ্বরকৈব শিরোরোগং স্থলারুণং।
শোথক গলগওক শ্লীপদন্ত্র ব্রু দং তথা।
বাতরোগানশেষাংশ্চ অন্তর্মনিং স্থলারুণং।
গীনস শ্বাসকাসক স্থলারুণ ভগনরং।
উপদংশ মহাঘোরং চক্ষুঃশূলক নাশয়েৎ।
চর্মোত্থান্ সর্বরোগাংশ্চ তৈলমেত্র বিনাশনং।
রুদ্ধতৈলমিদং নামা স্বয়ং রুদ্ধেণ ভাবিতং॥

তৈল /৪ চারিদের, গুলঞ্চের স্বরস, গব্যত্বন্ধ ও বাসকপাতার স্বরস প্রত্যেক ।৬ যোলসের এবং কল্কার্থ—ত্রিফলা, নিমছাল, তালমূলী, বৃহতী, কন্টকারী, পুনর্গবা, ছরিন্তা, দাক্ছরিন্তা, বাসক, নিসিন্দা, পল্তা, কনকপুতুরারমূল, ছরিতাল, মনঃশিলা, কৃড়, বিষলাঙ্গলিয়া, দাড়িমফলেরছাল, অপান্দার্গ, বিষ, জয়ন্তীপত্রু, লাটারমূল ও কট্ফল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ তোলা। যথানিয়মে এই তৈল পাকপুর্বক কন্তমন্ত্র জপ করিয়া ভদ্বারা গাত্রাদ্বি মর্দন করিলে দক্তকুষ্ঠ, হুক্টব্রণ, বীসর্পা, বিদ্রন্ধি, বাতরোগ্য, সন্ধিপাতজ্বর, শেরোগো ও শোথ প্রভৃতি বিবিধরোগ বিনক্ট ছইয়া থাকে।

মহারুদ্র তিলং।—

দশমূলী তুলা গ্রাহ্মা তুলাং নিশু তীকা তথা।
তুলার্ন্ধং বিজয়াপত্রং ভার্মী ধুস্তু রয়োস্তপা।
অর্কচিত্রকয়োশেচব স্বু হাগ্নিমন্থয়োস্তপা।
কুঠারৈরও বর্যাভু জ্বান্তী শতপৃতিকা।
তুলা তুরীয়ভাগেন পচেদইগুলে জঁলে।
পানশেষং পরিপ্রাব্য পচে ভৈলাঢ়কং ভিষক্।
কার্ষি কৈঃ কলক্রব্যাণাং রাস্মা সৈম্বর্যান্তথা।
পারনীয় যমানী চ যমানী গ্রাহ্মাণ্ডা।

FEETAN TARRAGES

वानो जी शक्तकां प्रविद्ध रिक्र शंचकर। **এতে याः कार्यिकः करेन्क्यृ खंबी जनमञ्जिकः।** প্রস্থানং তৈলাছবং প্রমেনং ভ্রেররঃ। পানাভায়ে সন্ত্রিপাতে মহাশোথে মহাত্রণে। আমবাতে মহাঘোরে বিষে সর্পানিসম্ভবে ! বাতাত্মিকে পিতভবে মহাশ্লেমসমুদ্ধবে। সন্নিপাতেন সন্থাপে রোগশঙ্করণে ছিভঃ। যাতি পাণ্ডাময়ী রোগী লোহবদ্ধেহধারকঃ। ত্রিমান পরিমাণেন কুগোনকীণগাত্তাং। ব্যাধ্যঃ কিং করিষালি দেহশুদ্ধিশ্চ জায়তে এতদ্রাঙ্গকুমারাণাং বীরাণাং পরিকীর্ন্তিতং . क्रक्टिलमिनः था जः वाधिनाः नमनः महे । যে তুট কুষ্ঠাত্বচ শোপত্রন্টাভগন্দরালৈর্গর দূষিভাশ্চ। মহারুদ্রিদং নামা স্বয়ং রুদ্রেণ ভাষিতং। রুদ্রমন্ত্র পঠিত্বা তু মুক্ষরেৎ কৌষ্ঠিকান্ ত্রণান্। নাশয়েত্তৎক্ষণাদেব রক্ষমিন্দ্রা শনির্যথা।

সর্বপতৈল।৬ যোলদের, এবওতৈল /৪ দের, কাথার্থ—দশমূল। গাঁও, নিদিন্দা। বাত, দিদিন্দা। প্রতিতাকে /৬। সমাছদদেব এবং কুঠারিয়া, এরও, পুনর্ববা, জয়ন্তী ও গিরিমল্লিকা প্রত্যেকে /৩৯ তিনদের অর্দ্ধপোয়া, পাকার্থ জল৮ গুণ, চতুর্ভাগাবশিক্ষ থাকিতে কাথ গ্রহণ করিবে। এবং কল্কার্থ—রাম্মারিদ্ধান্দাবলিন্দা থাকিতে কাথ গ্রহণ করিবে। এবং কল্কার্থ—রাম্মারিদ্ধান্দাবলিন, পারদীয়যমানী, যমানী, বন্যমানী, জীরক, গজপিপুল, মরিচ, কিলুল, গাকক ও ধুতুরার বীজ প্রত্যেকে ২ জোলা। যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক কন্দ্র মন্ত্র জপ করিয়া গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে সর্বপ্রকার কুঠ, পানাত্যয়, ত্রণবোগ, আমবাত, সিরপাতজ্বর, পাতু ও গ্রহণী প্রভৃতি বিবিধ রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।৮৬

রহৎ দোমরাজী তৈলং।—

সোমরা জ্যাস্তল। কাথে তথা দক্রত্মকন্যত। বিপতেৎ পলিকৈর্ভাগৈঃ কটুতৈলাঢ়কং ভিষক্। চিত্রকং লাঙ্গলী লোধ্রং কাগরং কুঠমেবত। হরিদ্রোনক্তমালঞ্চ হরিতালং মনঃশিলা। বৈণেয়ং করবীরক সপ্তপনীক গোনগুং ।

শব্দিরো নিম্বপত্রক মরিচং কাসমূর্ক ।

শ্বদিরা নিম্বপত্রক মরিচং কাসমূর্ক ।

শ্বদিরা নিম্বিতি নর্কার নিম্বার্কিনেবচ।

তিতানি মান্দ্রপিন্টানি কলকং দত্যা নিখাপয়েং ।

নিম্বুত্তি স্ব্রক্তিগানি ক্রিমিডুন্ট ত্রেণানি চ।

কিটিমং দক্রজাতক গাত্রবৈবর্ণমেবচ।

বিনীর্ণ কর্ণনাসাক্ষি হস্তপাদান্দুলীয় চ।

পাপুরোগ তথা কপুং বিসর্পং হন্তি দারুলং ।

যে চাস্য তুগ্গতে রোগাস্তাংশ্চ শীঘ্র বিনাশয়েং ॥

কটু তৈল ।৬ যোলসেব, কাথার্থ—সোমবাজী ।>॥• দেব, পাকার্থ জ্বল ৬৪ দেব, শেষ ।৬ দেব এবং চাকুন্দে ।>॥• দেব, জ্বল ৬৪ দেব, শেষ ।৬ ষোল-দের । কম্কার্থ—বক্তচিতা, বিষলাঙ্গলিয়া, লোধ, শুঠী, কুড, ছবিদ্রা, লাটা-কবঞ্জ, ছবিতাল, মনঃশিলা, গেঁঠেলা। কববীব, ছাতিমছাল, জাকন্দেব ক্ষীব, গোময়বস, খদিব, নিমপত্র মবিচ ও কালকাস্থন্দে, এই সকল দ্রব্য প্রস্তেকে ৮ জোলা এবং গোমুত্র ।৬ যোলসেব । যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক গাত্রাদিতে মর্দ্দন কবিলে শর্ম্ববিধক্ষ, ত্রণ, পাত্র ও বিদর্প প্রভৃতি বোগা জাবোগ্য হইয়া থাকে।

কন্দপনার তৈলং।—
সপ্তচ্ছদ জয়ানিই শিরীষ বল্কলং নবং।
মহাকালফলং রাত্রী তিক্তালাবু গুড় চীকাঃ।
মহাতিক্তং তিক্তফলা প্রত্যেকং পলিকাং হরেও।
জলটোণে বিপক্তব্যং যাবত পাদাবশেষিতং।
গোমূত্রমাটকং দত্বা কটুপ্রস্থং পচেত ততঃ।
আরথ্য জয়াভুঙ্গ বিজয়ার্ক দলানিট।
সংপীড়া বসনাদায় শুঁহী ধুন্তুরয়োন্তপা।
গোবিটনং তালমূলীই রনং হিত্রকনন্তবং।
প্রস্থান্ধিকব প্রত্যেকং ক্ষিপ্তা পাকং প্রকলপয়েও।
মহাকালং বচা ব্রদ্ধী তিক্তালাবুক্ষ নাবদী।
হিত্রকং গৃহধুমঞ্চ মেঘনাদ বলা শঠী।
অক্ষোঠং শাল্মলীং স্পুহিক্ষীর্মাদিত্যসন্তবং।
কাসম্বিং তথা বিশ্বী মহাভিক্তং কুঠেরকা।
বন্যকর্কটিকামূলং মূলঞ্চ পৃতিকেশ্রং।

মনুনিয়নলং বাধিঃ সোমরাজী চ দক্ষহা।
আন্ফোডা ত্রিরভা ভূক ষতিবাসাচ ভিক্তকা।

মূর্বোশ্যামাকট্টীলার কট্কলা গুরুমাংসীকা।
পচল্পচা হৈমবতী পিপ্পালীমূল কপ্রং।
এতেষাং কর্যমাদার প্রত্যেকং কল্কমাচরেৎ।
কুঠং হন্তি মহাঘোরং ত্রিদোষ দ্বন্দুজৈকজং।
বাতরক্তং তথা জাডাং উপদংশ ভগন্দরং।
বিপাদিকাং দক্র পামাং কণ্ডু বিস্ফোটকাপচীং।
জীর্ণজ্বং চামবাতং কর্ণরোগং হলীমকং।
জীর্ণজ্বং চামবাতং কর্ণরোগং হলীমকং।
ভামিদাহং তথা শূলং শিরোরোগঞ্চ ক্ষীবিকাং।
কন্দর্পসারাখ্যমিদং নামা তৈলং প্রকীর্তিতং।
অভিশুদ্ধং বপুঃ কুর্যাৎ কন্দর্পসদৃশং ভূশং॥

তৈল /৪ চারিদের, দোণালু, জয়ন্তা, ভৃত্বরাজ, আকন্দপত্র, মনসাসীজ, ধৃত্রা, গোময়, তালমূলী ও রক্তচিতা ইহাদের প্রত্যেকের রস /২ ছইসের; গোমুত্র ।৬ যোলদের , কাথার্থ - ছাতিমছাল, জয়ন্তীপত্র, নিমছাল শিরীষ্টাল, মাকালফল, হরিদ্রা, তিতলাউ, গুলঞ্চ, মহানিম্বত্বক ও মহাতিক্তনল্তা (যবেটী) এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৮ তোলা, জ্বল ৬৪ সের, শেষ ।৬ যোল । এবং কল্কার্থ—মাকালফল, ঝান্টী, মহানিম্ব, কুঠারিয়া, বনকার্ড্ডেরমূল, গারত্ব, নাগকেশর, থানকুড়ী, কুড, দোমরাজী, চাকুন্দে, গিরিকর্বিকা, তেউড়ী, ভৃত্বরাজ, যফিষ্ণু, বাসক, কট্ কী, স্বচমুখী, শ্বামালতা, কট্টী (লভাবিশেষ) কট্ফল, অগুক্তকান্ঠ, জ্বামাংসী, পচম্পাল (দাকহরিটা), বচ, পিপুলমূল ও কপুর এই সকল দ্রব্য কৃটিত প্রভ্যেকে ২ ভোলা, যথা-বিধানে এই তৈল পাকপুর্বক গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে সর্ব্যপ্রকার কুন্ত, নাত্রন্তক, উপদংশ, ভগন্দর, বিপাদিকা, দক্ত, পামা, কণ্ডু, বিজ্বোটক, অপচী, ক্জীর্ণজ্বর, আমবাত, কর্বরোগ, হলীমক, শীতিপিত্ত কোঠ, অল্লপিত, উদর্দ্ধ, জ্বন, লাহ, শুল, শিরোরোগ প্রভৃত্তি বিবিধ ব্যাধি দুরীভৃত্ত হইয়া থাকে।

নিম্বানি চুৰ্ণং।—

নিয়াভয়া মৃতা ধাত্রী প্রত্যেকঞ্চ পলোদ্মিতং।
সোমরাজীফলং শুগুী বিড়ঙ্গেলা গজকণা।
মুমানী চাম্মগদ্ধাচ জীরকং কুটজন্তথা।
খাদিরং সৈম্মবং ক্ষারং দ্বে ছরিত্রে সমুস্তকং।

দেবদার তথা কুঠং কর্যং কর্যক দাপরে ।

দবিং সক্তৃতিং ক্বত্বা স্কাবজ্বেণ প্রালয়ে ।
ভক্ষয়েৎ কর্যনাত্তম্ভ ছিত্বা কাথং পিবেদমু।
মাসমাত্র প্রয়োগেন ভবেৎ কাকনসন্নিভঃ।
বাচনোণিতমত্যুতাং শিত্রমৌত্যুর ন্তৃপা।
কোঠং চর্মদলাভ্যাক সিদ্ধালসবিপাদিকা।
দক্রবিচর্চিকাকগু ক্রিমিমগুলকিট্টিমং।
সর্বান্যের নিছন্ত্যাশু রক্ষমিন্তাশনির্যথা।
আমবাতং ক্বতং দোষমুদরং সর্বান্ধণিং।
আহণীগুল্পারাগক পাগুরোগং সকামলং।
সর্বান্যক্তবণাংশ্চিব হরতে নাত্র সংশয়ঃ।
এতন্নিয়াদিকং চুর্গং প্রাভ্রন্গাৰ্জ্বদ্যা মুনি॥.

নিষ, হরীতকী, গুলঞ্চ ও আমলকী প্রত্যেকে ৮ তোলা এবং সোম-রাজীরফল, শুণ্ঠী, বিড়ন্ধ, এলাচি, গজপিপুল, যমানী, অশ্বগন্ধা, জীরক, কুড়চি, খদির, সৈন্ধবলবণ, যবক্ষার, হরিজা, দাফহরিজা, মুথা, দেবদাক ও কুড় প্রত্যেকে ২ ভোলা। এই দ্রব্যগুলি উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া লইবে। এই নিম্বাদি চূর্ণ উষধ উপযুক্ত মাত্রায় সেবন পূর্বক জলঞ্চের কাথ অমুপান করিবে। এই উষধ একমানমাত্র দেবন করিলেই বাতরক্ত, শিত্রাদি বহুবিধ কুঠ, আমবাত ও গ্রহণীপ্রভৃতি বিবিধরোগ হুইডে মুক্ত হুইয়া কাঞ্চন সদৃশ্য আভাবিশিষ্ট হয়।

একবিংশতিকো গুগ্তসুঃ।—

চিত্রকং-ত্রিকলা ব্যোষঃ অজাজীং কারবীং বচাং।
বৈদ্ধবাতিবিমা কুঠং চবোলা যাবশৃকজং।
বিউন্ধান্যজনোনাত মুন্তান্যমরনার চ।
যাবন্ত্রোতানি সর্বানি তাবনাত্রস্ত গুণ্গুলুঃ।
সংক্ষুদ্দা সর্পিষা সার্দ্ধং গুড়িকাং কারয়েদ্ভিষক্।
প্রাতর্ভোজনকালেত ভক্ষরেত্র যথাবলং।
হস্ত্যেতানশকুষ্ঠানি ক্রিমিন্ন্যত্রণানপি।
গ্রহণ্যশৌবিকারাংশ্চ মুখাময় গলগ্রহান্।
গ্রদীমথগুলাক ভগ্নকান্ত নিষ্ট্রতি।
ব্যাধীন্ কুষ্ঠগতাল্যাঞ্জয়েদ্বিফুরিবাস্থয়ান্॥

উদয়ভাক্ষরঃ।—
গন্ধকেন হতং তাত্রং দশভাগং সমৃদ্ধরেৎ।
উষণং পঞ্চভাগং স্থাৎ জমৃতঞ্চ দ্বিভাগিকং।
দাতব্যং কুর্চিনে সমাগনুপানক যোগতঃ।
গলিতে ক্ষুটিতে চৈব বিস্ফাং মণ্ডলে তথা।
বিচর্চিকাদক্রপামা সর্ববৃষ্ঠ প্রশান্ধয়ে॥

গন্ধক দারা মৃত তাত্র ১০ দশভাগ, মরিচ ৫ ভাগ এবং মিঠাবিষ ২ ভাগ এই সকল তথ্য চূর্ণ করতঃ ১ রুভি পরিমাণে অন্ত্পান বিবেচনায় সেবন করিলে ইহাদ্বারা সর্কবিধ কুঠরোগ বিষম্ভ হয়।

অমৃতাঙ্কুরং লৌহং।— হুতাশমুখনংশুদ্ধং পলমেকং রসস্থ চ। পলং লৌহন্য তাম্রন্য পলং ভন্নাতক্ষ্য চ। অভ্ৰকদ্য পলকৈকং গন্ধকদ্য চ শুগুলোঃ। হরীতকী বিভীতক্যোশ্চুর্ণং কর্মন্বয়ং দ্বয়োঃ। অফমাসাধিকং তত্র ধাত্র্যাঃ পাণিতলানি ষ্ট। য়তমউপলং লৌহাদ্যাত্রিংশৎ ত্রিফলা জলং। একীক্বত্য পচেৎ পাত্তে লেইছেচ বি্ধিপূর্বকং। রক্তিকাদি ক্রমেনৈব মৃত ভামর্মাদিতং। অনুপানং প্রকুর্বীত নারিকেলোদকং প্রঃ। সর্ববকুষ্ঠহরং শ্রেষ্ঠং বলীপলিতনাৰনং। পাপ্তুমেহামবাতঞ্চ বাতরক্ত রুজাপহং। ক্রিমিশোথাশুরীশূল ত্রণাম বাতরোগ্রিৎ। হত্তিক্ষয় মহাখাদমতর্থং শুক্রবর্দ্ধনং। বলপুষ্টিকরং হন্যং কান্ত্যায়ুরগ্নিবর্ণক্তৎ। বিবৰ্জ্ঞ্য শাকামমপিস্তিয়ঞ দেব্যং সদা জাঙ্গলপাবকানাং। শাল্যোগেনং যতিক মুদামাজ্যং কৌত্রং সিতাকীরমিইক্রিয়ায়াং। विकलाहर् खरकना ।

রদনিন্দ র, লৌহ, ডাত্র, ডেলা, অজ, গড়ত ও জাঁতী, ব্রেকার ভোলা, হরীতকী ও বহেড়া প্রভাকে ২ ভোলা, আমদকী ১৬ ভোলা, 📱 ৮ शल, रेजिकलांत काथ ०२ शल बहे मकल खना बक्ज कवित्रा (मीर गाँ। পাক করিত্বে এবং পাকশেষে উপযুক্ত মাত্রায় ত্রিকলা চূর্ব প্রক্রেপ দিবে ইহা একরতি ক্রমে মৃত ও মধুসহ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিতে আরি कतिरा । এवः शभाद बांत्रीकालत छल ७ इस शान कतिरा है हा उर्स প্রকার কুর্চরোগ বিনাশক। এই ঔষধ দেবন কারী কদাচ শাক ও অল দ্রব্য ভোজন ও জ্রীপ্রমন্দ করিবে না। ইহাতে জালল জন্ত এবং লাবকাদি পক্ষীর মাণ্স রস, শালি ও যফিক থাক্সের অন্ধ, মুদ্ধা, ম্বড, মধু, শর্করা ও হ্রঞ্জ অভীব थ्यां था।

যোগরাজঃ ৷---

ত্রিফলা বাগুজীবীক ভুক্সরাজ কটুত্রয়ং। অমৃতা কেশরা দ্বা চক্রমর্দ্দ পরে ধরং। খনিরামল সিম্মুখং যমানী জীরকদ্বয়ং। কান্তক্রম বিভঙ্গানি প্লক্ষুচ্ণানি কারয়েৎ। যোজয়েদয়দাদো২য়ং যোগরাজ ইতি স্মৃতঃ॥

াফলা, সোমরাজীবীজ, ভৃঙ্গরাজ, ত্রিকটু, গুলঞ্চ, কেন্তর, চাকুন্দে, মুথা, व्यामना, रेमक्तर. यमानी, क्षीता, कृष्णकीता, ज्युमूर्था, এবং विष्क ; अह मक़ल खरा ममञारंगे গ্রাহণপূর্বক চূর্ণ করিয়া লইবে। ইছা দেবন করিলে কুষ্ঠ-রোগ বিনম্ভ ছইয়। থাকে।

কুষ্ঠকুঠারো রদঃ।—

ভন্মস্তো সমো, গন্ধো মূ চায়স্তাত্রগুগুলুঃ। ত্রিকলা বিষমুক্তিশ্চ শিলাজভূ ভিষশ্বরঃ। ইত্যেবং চূর্ণিতং কুর্য্যাৎ প্রত্যেকং নিক্ষ ষোড়শ। **চতুঃষ**ষ্ঠি করঞ্জमा বীজচুর্ণং প্রকম্পায়েৎ। চত্বঃষষ্ঠি মূতং চাল্রং মধাজ্যাভ্যাং চালোড়য়েৎ। ম্বিশ্বভাওগতং খাদেদ্ধিনিক্ষং গলিতং পৃথক্। রসঃ কুষ্ঠকুঠারো২য়ং গলৎকুষ্ঠ কুলান্তকঃ। পথ্যং ত্রিমধুরৈর্দেরং দত্ত ভোজনলেপনং। পঞ্চান্ধলত লীমূলং মধুপুষ্পাচ ধান্যকং।

নিতয়া ভক্ষেৎ কর্ষতিভাপ প্রশান্তয়ে। নিহাত্তগরোপমূল মধ্যজ্যৈর্বাভিভাপনুৎ॥

রসনিন্দ্র, গন্ধক, লৌহ, ভাজ, গুগগুল্, তিকলা, কুচিলা ও শিলাজভূ প্রভাবে ১২৮ ভোলা করঞ্জীজ ও অভুপ্রভাবে ১২৮ ভোলা, এই সকল দ্রব্য একত্র করতঃ য়ত ও মধুসহ মিশ্রিত করিয়া একটী স্থিম ভাও মধ্যে রাখিয়া দিবে। ইছা ২ ভোলা মাত্রায় চিনি, য়ত ও মধুসহ गেবন করিলে সর্ক্রিধ ক্ষরোগ নিবারিত হয়। এবং অভ্যাধিক সন্তাপ নিবারণার্থে সোণালু ও চাপানটেরমূল, ধনে ও মৌরী একত্র পেষণপূর্বক চিনিসহ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিবে। এবং বায়ু জনিত ভাপ নিবারণ জন্ম নাগ্যুথারমূল, মধু ও যুত্তসহ মিশ্রণপূর্বক দেবন করিবে।

তালকেশ্বঃ।—

কুষ্মাণ্ড ত্রিফলাতৈল কন্যা কাঞ্জিক ভাবিতং।

তালকং গ্রহলাগংশমর্দ্র পারদম্দিতং। অজাকীরেণ নিম্বক কন্যাতোয়ে দিনত্রং। প্রহরং ভাবয়েৎ শুক্ষং চক্রিকা কারতাং গতাং। বিপচেৎ হত্তিকামধ্যে পলাশক্ষার মধ্যগং। যামানু দ্বাদশনীতে২সিনু প্রযোজ্যং রক্তিকাদ্বং। হন্তাফাদশ কুষ্ঠানি রোমবিধ্বংসনং তথা। গলৎকুষ্ঠং মহাকুষ্ঠং শুক্ষঞ্চ ক্ষুটিভন্তপা। স্যাতালকেশ্বরাখ্য প্রয়োগে তক্রমাংসঞ্চ বিবর্জ্জনীয়ং। পথ্যং হি মুদ্যোদনমত্ত যোজ্যং প্রবাহ প্রায় সর্ক্রমনলপ ভীক্ষং॥ কুত্মাণ্ডেররস, তিফলার কাথ, তৈল, ছতকুমারীররস ও,কাঁজি ভারা ভাবিত হরিতাল, গন্ধক ও পারদ ; এই দকল দ্রব্য একত্ত্ব মর্দনপূর্বক ছাগছন্ধ, কাগজীনের ও য়ভ কুমারীররদে একপ্রহর করিয়া ও দিন শুষ্ক করভঃ চক্রি-কাকার করিয়া হাঁড়ীর মধ্যে পলাশক্ষার সহযোগে পাক করিয়া লইবে। এই উষধ ২ র্ভি মাত্রায় দেবন করিলে দর্মপ্রকার কুঠরোগ নিবারিত হইয়া থাকে। এই ঔষধ দেবনকারী কণাচ ভক্ত ও মাংস দেবন করিবে না। ইহাতে,, মুগের যুষদহ অন্ন ও গোছন্ধ এবং ঈষৎ তীক্ষ্ণবীৰ্ঘ্য দ্ৰব্য হিতকর পথ্য वित्रा कानित्।

মহাতালেশ্বরঃ :---

তালতাপ্যশিলাযুক্তং শুদ্ধং টক্ষণসৈম্বং। সমাঃশং চূর্ণয়েৎ খল্লে সুত দ্বিগুণ গদ্ধকঃ। গদ্ধত্লাং মৃতং ভাত্রং লৌহভকাপি তৎসমং।

ভাষীরামেন তৎসর্বং দিনং মদ্দাং পুটেনারু।

তিংশদংশং বিষং চাস্য কিপ্তা সর্বং বিচ্পরেৎ।

মহিষাজ্যেন সংমিশ্র নিক্ষাদ্ধং ভক্ষরেৎ সদা।

মধ্যক্রিতাং নিহন্ত্যান্ত মহাতালেখরো রসঃ॥

ছরিতাল, স্বর্ণমাক্ষিক, মনঃশিলা, মরিচ, টঙ্গণ ও সৈন্ধবলবণ, প্রত্যেকে ১ ভাগা, গন্ধক, তাম ও লৌছ প্রত্যেকে ২ ভাগা; সমস্ত দ্রব্য একদিন জ্বীর-নেবুররদে মর্দ্দনপূর্বক পুটপাক দিবে। তৎপরে উহার সহিত ত্রিশভাগ বিষ মিশ্রণপূর্বক চুর্গ করতঃ মাহিষ স্বতসহ পেষণ করিয়া লইবে। এই ঔষধ উপ-যুক্ত মাত্রায় দেবনপূর্বক পশ্চাৎ সোমরাজীরবীজ চুর্গ মৃত ও মধুসহ লেহন করিবে। ইহা সর্কবিধ কুঠনাশক।

মহাতালকেশ্বোরসঃ।---

প্রশোগনীক দলাভাবং শেতং রক্তং ঘনং গুরু।
গদকও দরাগক পুণ্ডরীকং বলাধিকে।
তালং তাপ্যং শিলাস্তং গুদ্ধ টক্ষণদৈদ্ধবং।
সমাংশং চুর্ণয়েৎ খলে স্তাদ্বিগুণ গদ্ধকং।
গদ্ধত্বল্য মৃতং তাত্রং জয়ীরৈদিনপঞ্চকং।
মদিঃ ষড় ভিঃ পুটেঃ পাচাং ভূখরে সংপুটোদরে।
পুটে পুটে দ্বৈর্মদিঃং সর্বমেন্ডচ্চ ষট্পলং।
দ্বিপলং মরিচং তাত্রং লোহভন্ম চত্তঃপলং।
জয়ীরামে প্তৎ সর্বং দিনং মদিঃং পুটেল্লঘু।
তিংশদংশং বিষং চাস্যক্ষেপাং সর্ব্ব বিচুর্ণয়েৎ।
জন্মপানং পূর্ববং॥

ছরিতাল, স্বর্গ। ক্লিক, মনঃশিলা, পারদ, মরিচ, দোছাগার খৈ ও দৈশ্বৰলবণ প্রত্যেকে ১ ভাগ এবং গশ্ধক, তাম প্রত্যেকে ২ ভাগ; সমস্ত দ্রব্য
একত্র করিয়া জ্বনীরনেবুররসে মর্দনপূর্বক পুটপাক ছয়বার দিবে ও ছয়বার
জ্বনীরসে মর্দন করিবে। তৎপরে এই সকল দ্রব্য সমস্তে ছয়পল, মরিচ
২ পলং তাম ও লোহ ৪ পল একত্র করিয়া জ্বনীরস্বদে সমস্ত দিন মর্দনপূর্বক
পুনরায় পুটপাক দিয়া উহার সহিত ৩০ ভাগ বিষ মিশ্রিত করতঃ চূর্ণ করিয়া
লইয়া উপযুক্ত মাত্রার সেবন করিবে। অহ্পান মহাতালেশ্বর উষধের স্থায়।
ইহা সর্ববিধ কুঠনাশক।

যোষিআংস স্থরাত্যাগঃ শালিমুদাযবানয়ঃ। পুরাণান্ডিক্তশাকঞ্চ জাঙ্গলং কুর্স্তিনাং ছিতং॥ ইতি কুষ্ঠাধিকারঃ।

ন্ত্রীপ্রসঙ্গ, মাংস ভোজন ও স্থরাপান এই সকল পরিত্যাগ এবং পুরাতন, শালিধান্য, যব, মুগ প্রভৃতি ও জ্ঞাঙ্গল দেশোন্ত ত শাক; 'এই স্কৃল মুষ্ঠ-রোগীর পক্ষে বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

ইতি কুঠরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শীতপিত্তোদৰ্দ্ধকোঠাধিকারঃ

অভ্যঙ্গঃ কটু তৈলেন দেকশ্চোঞায়ু ভিন্ততঃ।
উদর্দ্ধে বমনং কার্যাং পটোলারি ইবারিণা।
ত্রিফলা পুরক্ষাভিবিরেকশ্যাত্ত শস্যতে।
ত্রিফলাং ক্ষোদ্রসহিতাং পিবেদ্ধা নবকার্ষিকং।
বিসপোক্তময়তাদিং ভিষণতাপি যোজয়েই।
দিদ্ধার্থ রঙ্গনীকলৈই প্রপুরাভৃতিলৈঃ সহ।
কটু তৈলেন সংমিশ্রমেত ভূম্বর্তনং ছিডং।
দুর্ব্বা নিশায়ুতোলেপঃ কচছু পামাবিনাশনঃ।
ত্রিমিনক্তহরকৈব শীতপিভাপহঃ স্মৃতঃ।
অগ্রিমন্থতবং মূলং পিন্তং পীতঞ্চ সপিষা।
শীতপিভোগর্দ্ধকোঠান্ সপ্তাহাদেব নাশয়েই।
কুষ্ঠোক্তঞ্চ ক্রমং কুর্যাই অম্লিভত্বমেবচ।
উদর্দ্ধোক্তাং ক্রিয়াং বাপি কেইচরোগ্রমানতঃ।
সপি পিভা পঞ্চিক্তং কার্যাং শোণিভ্যমাক্রং।

কটুতৈল দার। অভ্যঙ্গ, উঞ্জল দার। পরিষেক, পল্ডা ও নিম্নছালের কাথ দার। ব্যব এবং গুণ্গুল ও পিপুলচ্র্ণ সহ ত্রিফলার কাথ দার। বিরেচন এই সকল উদর্করোণে প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

ত্রিফলার কাথ মধুসহ অথবা বাতরক্তাধিকারোক্ত নবকার্ধিক নামক কাথ, বিসর্পোক্ত অমৃতাদি কাথ উদর্ধরোগে হিতকর বনিয়া জানিবে।

খেতদর্থপ, ছরিক্রা, চাকুন্দে ও তিল; এই সকল জব্য কটু কৈলসহ মিশ্রগপুর্বাক উদ্বর্ভন (বিলেপন) করিলে উদর্করোগ, বিদফ্ট হয়।

দুর্বা ও কাঁচাছরিন্দা বাটিয়া ভদ্বারা প্রলেপ দিলে, উদর্দ্ধ, কচ্ছু, পামা, ক্রিদি, দক্রে ও শীতপিত্তরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

গৰিরারীরমূল মৃতদহ পেষণপূর্বক দেবন করিলে এক সপ্তাহের মধ্যেই শীতপিত্ত, ভিদর্ম ও কোঠরোগ বিন্দ হইয়া থাকে।

কৃষ্ঠরোগোক্ত চিকিৎসা, অমপিত্তনাশক প্রথম সকল, উদর্জোক্ত ক্রিয়া সকল এবং কুষ্ঠাধিকারোক্ত পঞ্চতিক্ত ঘত পানপূর্ব্বক রক্তমোক্ষণ; এই সকল কোঠরোগেঞ্জযোজ্য বলিয়া জানিবে।

নিম্বস্য পত্রাণি সদা মতেন ধাত্রীবিমিশ্রাণ্যথচোপযুঞ্জ্যাৎ। বিস্ফোটকোঁঠ ক্ষতশীতপিত কণ্ডুব্লপিতং ত্বক্সাঞ্চযোজ্যাৎ।

কারসিমূখ তৈলৈক গাত্রাভ্যন্থ প্রযোজরেথ।
গান্তারিকাকলং পকং শুক্ষমুৎস্থেদিতং পুনঃ।
কীরেণ শীতপিত্রং খাদিতং পথ্যদেবিনা।
তৈলোৱর্ত্রনযোগেন যোজ্যং এলাদিকোগণঃ।
যমানী গুড়সংযুক্তো ভ্যাস্তো দিগুপ্তকঃ।
শীতপিতং নিহন্ত্যাশু কটুতৈলেন মর্দরেথ।
শুক্ষমূলকযুবেণ কৌলখেন রসেন বা।
ভোজনং সর্বাদা কার্যাং লাবতিন্তিরিজেন বা।
শীতলান্যন্নপানানি বুদ্ধা দোষগতিং ভিষক্।
উক্তানি বা যথাদোষং শীতপিতে প্রজ্বেথ।

ইতি শীতপিতোদৰ্শ্বকোঠাধিকারঃ।

নিম্বপত্ত অথবা আমলকী চূর্ণ স্তমহ মেবন করিলে বিক্ষোট, কোঠ, ক্লেড, শীতপিত্ত, কণ্ডু ও রক্তপিত্তরোগ মহদাই নিবৃত্ত হইয়া থাকে।

যবক্দার, দৈৰাবলবণ ও তৈল একত্র মিশ্রিত করি। গাত্রাদিতে অভ্যন্ত্র প্রদান করিলে অথবা স্থুপথ্যদেবী হইয়া স্থপক গান্তারীফল শুষ্ক করতঃ ত্বন্ধ সহ দিদ্ধ করিয়া দেবন করিলে অথবা এলাদিগণ কট তৈলসহ মিশ্রিত করিয়া তদ্বারা উদ্বর্ত্তন (প্রলেপ) করিলে কিছা যমানীচ্প ও গুড়সহ রস-দিন্দুর ২ রতি মাত্রায় দেবন করিলে ও কটু তৈল দ্বারা অভ্যঞ্জন করিলে শীত্তপিত্রোগ বিন্ত হয়।

শুষ্ক মূলার য্য, কুলুথ কলাঞ্চের যুষ অথবা লাব ও তিত্তির পক্ষীর মাংস রসের সুহিত অনভোজন এবং দোষা হুসারে শীতল বা উষ্ণ অন্নপানীয় সেবন এই সকল শীতপিত্রোগে সর্বদা প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

ইতি শীডপিত, উদর্জ ও কোঠরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ অমুপিত্তাধিকারঃ।

বান্তি রুত্বারূপিতে তু বিরেকং মৃত্র কাররেৎ।
সমাথার বিরিজ্ঞানা পুনিশ্বানামূবাদনং ।
ক্রিরাশুদ্ধন্য শমনীস্থাবন্ধ ব্যপেক্রা।
দোষসংসর্গতে কার্যা ভেষজাহারকপনা।
উদ্ধাং বমনৈর্থীমানধোগং রেচনৈর্থরেৎ ॥

আমপিত্তরোগে প্রথমতঃ বমন করাইরা পরে মুদ্র বিরেচন প্রয়োগ কুরিবে। এবং সমাক্ প্রকার বমন ও বিরেচন ছইলে রোগীকে ম্লিন্ধ করিয়া পশ্চাৎ অন্থবাসন (ম্লিন্ধ বিরেচক দ্রাব্য দ্বারা পিচকারী) প্রয়োগ করিবে।

বাউপৈত্তিকাদি ছন্দ্রজ অমপিত্তে অভ্নত্তত্ত্ত বাতাদিদোয প্রশমক ঔষধ ও আছার, কঞ্চাধিক উদ্ধা অমপিত্তে বমন এবং মলরোধ সংযুক্ত আধোগ অমপিত্তে বিরেচন প্রয়োগ করিবে।

তিক্তভূরিষ্টমাহারং পানমাপি প্রকলপয়েও।
যবগোধুমবিকৃতি তীক্ষ্মংস্কারবর্জ্জিতাঃ।
যথান্ধং লাজশজুন বা সিতা মধুযুতান পিবেও।
নিস্তব্যবর্ষ ধাত্রীকাথ স্তিস্থান্ধি মধুযুতঃ পীতঃ।
অপনয়ত্যমপিতং যদিভুঙ্ ক্তে মুদাযুষেণ।
কফব্যিকওুজুর বিক্ষোটদাহহা।
ছিন্নাখদির্ঘট্যাহ্ব দার্ক্যন্তো বা মধুদ্রবং।
সদ্রাক্ষামভ্রাং খাদেও সক্ষোদ্রাং সংগুড়াকতাং।
কটুকাসিতাবলেহাপটোল বিশ্বক্ষ মপুস্মাযুতং।
রক্তসূত্রে চ যুক্তা খণ্ডকুয়াণ্ডকং শ্রেষ্ঠং।

অন্নপিত্তরোগে তিক্তরস প্রধান আহার অথবা কটু, অন্ন, লবণাদির সংযোগ রহিত তীক্ষ্ণ সংস্কার বর্জিত যব, গোধুমের পেরা প্রভৃতি অথবা চিনিসহ খইরের ছাতু দোষাত্মসারে তত্তদোষ বিরোধিক্রব্যের সহিত রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

নিশ্বয় বব, বাসক, আমলকী ইহাদের কাথে ছোটএলাচি, তেজপত্র ও দাক্চিনি ইহাদের চূর্ণ ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিয়া পশ্চাৎ মুদ্যাযুবের সহিত অন্ন আহার করিলে অন্নপিত্ত, কফ, কাস, কণ্ডু, ত্বর, বিচ্ছোট ও দাহ নিবারিত হুর।

खनकः, थनित, विष्टिमध् अ नाक्वतिला देशामत कार्थ मध् धारणा निता कथवा इद्रोक्किकी, क्षांका वो मधु व्यथवा ७ एमइ स्मरन कदिए विमिश्व नर्छ

कहेकी हिनिमह अथवा शन् का ७ ७७ दे काथ मधुमह शान कतिएन এবং রক্তজাব অবস্থায় খণ্ডকুত্মাণ্ডক উষধ দেবন করিলে অঙ্গণিত আরোগ্য इस् ।

> পটোলনিম্বত্রিফলা শৃতং মধুযুতং পিবেৎ। পিত্রেশ্বাজ্বরছর্দি দাহশূলোপশান্তরে। নিংহাস্যামূতভণ্ডাকী ক্বাথং কৃত্যু সমাক্ষিকং। অমুপিতং জয়েজ্জন্তঃ কাদং খাদং জুরং বৃদিং। জমীরম্বরদঃ পীতঃ দারং হন্ত্যমূপিতকং। গুড় পিপ্পলী পথ্যাভিস্তল্যাভির্দোদকঃ কতঃ। পিত্রেষ্মাপহঃ পীতে। মন্দমগ্লিঞ্চ দীপরেৎ। বাসান্নতং তিক্তন্নতং পিপ্পলীন্নতমেবচ। অমপিতে প্রয়োক্তবাং গুড়ুকুমাওকভ্রথা। পক্তিশূলাপহা যোগা স্তথা খণ্ডামলকাপি॥

भन्छ।, निम्हान ও बिकला, এই नकल खन्य नम्लार्ग नम्र १ (ए)ला, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথ মধ্ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে অমপিত পিত্রেশ্বত্বর, ছর্দি, দাহ ও শূলরোগ বিনষ্ট হয়।

বাসক, গুলঞ্চ ও কন্টকারী ২ ভোলা, জ্বল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে মধু প্রক্ষেপ, দিয়া পান করিলে অলপিত্ত, কাস, খাস, জুর ও বমি আরোগ্য হয়।

জম্বীরনেবুর স্বরস পান করিলে অম্লপিত্ত বিনষ্ট হয়। অথবা গুড়, পিপুলচ্ণ ও হরীতকী চূর্ণ সমভালা এছণপূর্ব্বক মোদক প্রস্তুত করিয়া সেবন ্করিলে অন্তপিত, পিত্তনেত্ম ও মন্দাগ্নি বিন্ট হইয়া থাকে।

বাদান্থভ, তিক্তকর্মত, পিপ্পলীন্বত, গুড়কুত্মাগু এবং খণ্ডামলকী ঐষধ সেবন করিলে অঙ্গপিত ও পজিশুল নিবারিত ছইয়া থাকে।

দ্রাকানাং মুতং।-

ক্রাক্ষামূতা শক্রপটোলপট্রঃ সোশীরধাত্রীঘনচন্দ**ৈ** 🖛 । ত্রায়ন্ত্রিকা পদ্মকিরাতধান্যৈঃ কল্কৈঃ পচেৎ সর্পিরুপেতমেভিঃ। যুঞ্জীতমাত্রাং সহভোজনেন সর্বর্ত্তপানেইপিভিষগ্নিদ্দাণ । েবলাশপিতং গ্রহণীং প্রবৃদ্ধং কাদাগ্নিদানজ্বরম্মণিতং। मर्त्वः निह्नान् मुख्रम्खना ७ मगक् श्रमुक्तः स्मृत्वान्मक ॥

গাব্যন্থত /৪ চারিদের, জল । বোলদের এবং কল্কার্থ—প্রাক্ষা, গুলঞ্চ, ইল্রেয্ব, পল্ডা, বেগারমূল, আমলকী, মুখা, রক্তচন্দন, বলালড্ পামকাঠ, চিরডা ও ধনিয়া সমভাগে সমজে /১ একদের। যথাবিধানে এই মৃত পাক-পূর্বক সকল কতুতে পান ও আহারীয় প্রবের সহ উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে ক্ষেত্রা, পিত্ত, গ্রাহ্ণী, কাস, অগ্নিমান্যা, জ্বরুও অসপিত রোগ আরোগ্য হয়।

শতাবরী মৃতং।—

শতাবরীমূল কক্ষং য়তপ্রস্থং প্রঃ সমং। পচেন্দ্রগ্নিনা সম্যক্ ক্ষীরং দত্বা চতুত্ত নং। নাশয়েদমুপিতঞ্চ বাতপিতোত্তরং জয়েও। রক্তপিতং ভূষাং ঘূর্চ্ছাং শ্বাসং সন্তর্পান্তথা॥

গবাছত /৪ চারিদের, হ্রন্ধ।৬ দের এবং কল্কার্থ—শতাবরীর মূল />
একদের। যথাবিধানে এই ছত পাকপূর্ব্বক উপায়ুক্ত মাঁত্রায় দেবন কবিলে
বাতপৈত্তিক ভ্রমপিত্ত, রক্তপিত্ত, তৃষ্ণা, মূর্চ্ছা ও শ্বাদরোগ বিনষ্ট হয়।
অধিকন্ত ইছা অতীব দন্তর্পণ কারক।

দিদ্ধার্থকহিতং তৈলং হিমসাগরমুত্তমং ॥ শিদ্ধার্থক তৈল এবং হিমসাগর তৈলও অমপিত্তরোগের পক্ষে বিশেষ উপকারী বলিরা জানিবে।

অবিপত্তিকরং চুর্ণং।—

ত্রিকটু ত্রিকলা মুস্তং বিড়কৈব বিড়ঙ্গকং।

ত্রলাপত্রাণি সর্ব্বাণি শ্লাক্ষ্চুর্ণানি কার্য়েৎ।

যাবন্ত্রেতানি চুর্ণানি লবঙ্গং তৎসমং ভবেৎ।

সর্ব্বচুর্ণা দ্বিগুণিতং ত্রিরচ্চুর্ণং প্রদাপয়েৎ।

ত্রতদেকীকৃতং যাবৎ শর্করাভিঃ সমং ভবেৎ।
পিবেৎ সর্ব্বাণি চুর্ণানি নারিকেণােদকেন বা।

ততাে যথেন্টমাহারং কুর্যাৎ ক্ষীররসানিনঃ।

অন্নপতিং নিহন্ত্যাশু বিবদ্ধ মলমূত্রয়াঃ।

অন্নিমান্দ্যান্ত্রান্ রোগান্ নাশ্রেদ্বিকলপতঃ।

বলপুর্ফিকরকৈব শূলভূর্ণামনাশনং।

প্রমেহান্ বিংশতিকৈব মূত্রাঘাতন্তথাশ্রীং।

অবিপত্তিকরং চুর্ণং আগন্ত্য মুনিভাবিতং।

ভবেন্মাধ্বয়াদূর্দ্ধং চুর্ণানাং হীনবীর্য্যতাং॥

ত্রিকটু, ত্রিকলা, মুথা, বিট্লবণ, বিড়ক্স, এলাচি, ডেক্সপত্র, এই সকল
দ্রব্যের চুই প্রজ্যেকে এক একভাগ, লবক্ষচুর্ণ ১২ ভাগ, ডেউড়ীচুর্ণ ৪৪ ভাগ
এবং শর্করা ৬৬ ভাগ সমস্ত দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চুর্ণ
ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় নারীকেলের জলসহ সেবন পূর্বক হল্প ও মাংসরস
সহযোগে অন্ন আহার করিবে। ইহাদ্বারা অম্পিত্র, মলমুত্রের অবরোধ,
প্রমেহ প্রস্তৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

বিশেষকথা—চূর্ণ ঔষধ একেবাবে অধিক পরিমাণে প্রস্তুত করিরা অনেক দিন পর্যান্ত বাবছার করা যাইতে পাবে না। কাবণ উছা > ছই মানের পরে ছীনবীর্ষাত্ব প্রাপ্ত হয়। স্থতরাং তাহা দেবন করিলে কোন উপকার পাওয়া যায় না।

এলাদিমোদকঃ।---

এলাং ধাত্রীং পঞ্চগণাহ্বা যক্তি সর্বমেতৎ সমাংশং।
এতৎতৃল্যা দক্তিকাচ ত্রিরৎস্থাৎ সর্বৈস্তল্যাঃ শর্করাপাদভাগাঃ।
গোলং কৃত্যা মাক্ষিকেনাক্ষমাত্রাং প্রাতঃখাদেদমুপিতং প্রশাইব্রাঃ॥
• এলাচি, আমলকী, পঞ্চগণ (ভূমিকুত্মান্ত, রহতী, চাকুলে, কন্টকারী ও
গোক্ষর) এবং যক্তিমণ্ এই সকল দ্রব্যের চুণ প্রত্যেকে একভাগ, দন্তীমূলচুণ
৮ ভাগ, ভেউভীচ্ ৮ ভাগ এবং শর্করা ৬ ভাগ: এই সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র
কবিয়া মণুদহ মিশ্রিত কবিয়া উপযুক্ত মানায় গুডিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা
সেবন করিলে অম্লপিতরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

শুধাবতী গুড়িকা।—
গগণা দ্বিশলং চৃণিং লোহদ্য পলমাত্রকং।
লোহনিট্রপলার্দ্ধ দর্বমেনত সংস্থিতং।
মণ্ডুকুপণ্বিশিরং তুলমুলীরদৈঃ পুনঃ।
বরী ভৃঙ্গকেশরাজ কালমারিষজৈরথ।
তিফলাভদ্রমুন্তাভিঃ স্থালীপানাত্বিচুর্ণিতং।
রদগন্ধনয়োঃ কর্ষং প্রত্যেকং গ্রাহ্থমেনতঃ।
তন্মদৃণে শিলাখলে যতুতঃ কজ্জলীকতং।
বচাচব্যং যমানী চ জীরকে শতপুজ্পিকা।
ব্যোধং মুন্তং বিড়ঙ্গক গ্রন্থিকং খরমঞ্জরী।
তির্ভা চিত্রকো দন্তী সুর্যাবর্ত্ত দিতন্তথা।
ভৃঙ্গমানক কনাখ্য খণ্ডকর্ণক গ্রহ।
দেখেৎপলা কেশরাজঃ কালাবক্ড্কোপিচ। •

এষামর্কপলং প্রাহ্থং পট্রয়ইং সুচ্পিতং।
প্রত্যেকং ত্রিফলায়াদ্চ পলার্ক্তং পলবেবচ।
ত্রতং সমালোড্য লোহপাত্রে বিভাবয়েৎ।
আতপেনগুনং মুক্তং চার্ক্র ক্যা রুদৈন্ত্রিধা।
তর্দ্রেনন শিলাপিন্তং গুড়িকাং কারয়েছিষক্।
বদরান্থিনভাং শুক্তাং স্থনিপ্ত প্রাং নিধাপয়েৎ।
ততঃ প্রাতর্ভোজনাদে দেবিতং গুড়িকাত্রয়ং।
অরোনকান্প্রপানঞ্চ হিতঞ্চ মধুবর্জ্জিতং।
হ্রমঞ্চ নারিকেলঞ্চ বর্জ্জনীয়ং প্রযন্ত্রতঃ।
ভোজ্যং যথেষ্টমিষ্টঞ্চ বারিভক্তান্ন কাঞ্জিকং।
হস্তান্নপিতং বিবিধং শূলঞ্চ পরিনামজং।
পাতুরোগঞ্চ সকলং শোথোদর গুদাময়ান্।
যক্ষাণং পঞ্চনামংশ্য মন্দান্নিত্বয়রোচকং।
প্রীহানং খাসমানাহমামবাতং সুনাক্রণং॥

অল ১৬তোলা, লৌহ ৮ তোলা এবং মণ্ডুর ৪ তোলা একত্র করিয়া থানকুনী, বশির (গজপিপুল) ও তালমূলী ইহাদের বনে প্রথমবার; শতমূলী, ভৃঙ্গরাজ, কেশুর ও কালমারিষ (কাটানটে) ইহাদের রসে দ্বিভীরবার এবং
ক্রিফলা ও মুথার রসে ভৃতীরবার ভাবনাদিয়া চূর্ণ করিয়া লইবে। তৎপরে ঐ চূর্ণ
দ্রব্য সকল এবং কজ্জলী, বচ, চই, যমানী, জীরা, কৃষ্ণজীরা, শলুকা, ক্রিকটু,
মুথা, বিড়ন্দ, পিপুলমূল, খরমঞ্জবী (অপামার্স), ভেউড়ী, রক্তচিতা, দন্তী,
সূর্যাবর্ত্ত (খেতসুইন্টা) ভৃন্দরাজ, মানকন্দ, খণ্ডকর্ণক (খারকোণ) দণ্ডোৎপল, কেশুর ও কালাবকরক (কাণাকড়ী) চূর্ণ প্রত্যেকে ৪ চারিভোলা এবং
কিকলাচূর্ণ ১২ ভোলা, সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রমিশ্রিভ করওঃ আদাররসে
ত দিবদ ভাবনা দিয়া আদার রস সহ মর্দ্দন পূর্বেক ক্রেরে আগিপ্রমাণ বটীকা
প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ প্রাত্তংকালীন ভোজনের পূর্বেক দেবা। অমুপান
কাঁজি। এই ঔষধ সেবনকারী ব্যক্তি কদাচ মধু, ছ্ল্ম, নারীকেল জল, যথেষ্ট
মিষ্ট দ্রব্য সহ অন্ন পানীয় ভোজন করিবে না। ইহাদারা বিবিধ অন্নপিত্ত,
পারিণাম শুল, পাণ্ডু, শোথ, যক্ষম, কাদ প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হইয়া
থাকে।

ভানুরদঃ।---

পারদং গদ্ধকং ব্যোধং তাত্রং লৌহং বিমর্দ্ধয়েৎ। ধাত্র্যক্ষদলিলৈগামং ভানুশুক্ষং তদম্পকং। মুষ্টং মৃত্যুক্তিবেণ মর্দ্দরেদস্যবল্কণং। প্রযুঞ্জ্যাদমুপিভক শান্তার মধুনানি বুধঃ।

পারদ, গন্ধক, অভ্র, তাত্র, ও লৌহ এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে একভাগ লইয়া আমলকী ও বহেড়ার রদে এক প্রহর স্থ্যপাক করিয়া শুষ্ক হইলে পরে ভূলুরাজের রদ দহ মর্দ্দন পূর্বক ৬ রিডি ুমাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা মধুসহ দেবন করিলে অমপিত নিবারিত হয়।

नीनाविनात्मात्रमः।-

রসোবলির্ব্যোম রবিস্ত লৌহং ধাত্রাক্ষনীরৈস্ত্রিদিনং বিমর্দ্য। তদম্পদ্বউং মৃত্নাপবেন সংমর্দ্ধয়েদস্য চ বল্লযুগ্মং। নিছন্ত্য পিতং মধুনাবলী ঢ়। লীলাবিলাসো রসরাজ এষঃ। ত্রগ্ধং সকুন্মাপ্তরসং সধাত্রীফলং সমেতৎ সমিতং জয়েদ্বা॥

পারদ, গন্ধক, জাত্র, তাত্র ও লৌহ এই সকল দ্রব্য জামলকী ও বছেড়া রুমে ৩ দিন মর্দ্দনপূর্ব্যক স্থ্যাতপে শুষ্ক করিয়া ভৃঙ্গরাজ্বের রুমে মর্দ্দন করতঃ ৪ রভি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ মধুসহ সেবন পূর্ব্যক পদ্দাৎ আমলকীফল চুর্ণ হৃষ্ণ, কুত্মাণ্ডরস ও চিনি সহ সেবন করিলে অমপিত্রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

অন্নপিভান্তকোরনঃ।—
মৃতস্তার্ক লৌহানাং তুল্যং পথ্যা বিমর্দ্ধয়েৎ।
মাষত্ত্বয়ং, লিহেৎ ক্ষৌত্তৈরন্নপিত প্রশান্তয়ে॥

ইতি অমুপিভাধিকারঃ।

রুসসিন্দ্র, তাত্র ও লোহ সমভাগে গ্রহণপূর্বক হরীতকীর রুসে মর্দন করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৩ শীষা মাত্রায় মধুসহ লেহন করিলে তল্লপিত্ত রোগ নিবারিত হইয়াপাকে। •

ইতি অলপিত্তরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ বিদর্শবিক্ষোটস্বায়াধিকারঃ।

বিরেকবমনালেপ সেচনানুবিমোক্ষণৈঃ। উপাচরেদ্যথাদোষং বিদর্পমবিদাহিভিঃ। কুটজত্বগ্ভবো লেপো বিসর্পে শ্লেষ্মসম্ভবে। ভিক্তলাপ্পদক্ষানীর সমস্থা করনীবক্ত। নলমূল মনন্তাচ লেপশ্লেষ্ম বিসর্পহা।
প্রপণিগুরীক মঞ্জিষ্ঠা পদ্মকোশীর চন্দনৈঃ।
স্যাফীন্দীবরৈঃ পিত্তে ক্ষীরপিটেইঃ প্রলেপনং।
কুষ্ঠা শতাহ্বা স্থরদারু রাম্মা বরাহিন্দু স্তমুরু রুফণন্ধা।
বাতেহর্কবং শর্ভগলাশ্চ যোজ্যা সেকেষু লেপেষু তথা ইতেষু।

মুন্তারিষ্ট পটোলানাং কাথঃ সর্ববিসর্পন্ত । ধাত্রীমুন্ত পটোলানাং মথবা মুতসংপ্লুতং ॥

বিরেচন, বমন, প্রালেপ, সেচন, রক্তমোক্ষণ এবং অবিদাহি অন্ন পানীর এই সকল দ্বারা বিদর্পরোগের চিকিৎসা করিবে।

শৈষ্মিক বিসর্পে কুড়চিছাল পেষণপূর্ব্বক ভদ্বারা প্রলেপ দিবে। এবং ত্রিফলা, পদ্মকাষ্ঠ, বেণারমূল, মঞ্জিষ্ঠা, করবী, নলমূল ও অনন্তমূল এই সকল দ্রব্য পেষণপূর্ব্বক ভদ্বারা প্রলেপ দিলেও শৈব্যিক বিমর্পরোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

পুগুরিয়া কার্চ, মঞ্জিষ্ঠা, পদাকার্চ, বেণারমূল, রক্তচন্দন, যফিমবু ও নীলপদ্মের মূল এই সকল দ্রব্য পেষণপুর্ব্বক তদ্বারা প্রলেশ দিলে সর্ব্ব-প্রকার বিদর্পরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে।

কুড়, শলুকা, দেবদাৰু, রাস্মা, বরাহক্রাস্তা, ধনিয়া, সজিনাছাল, আকন্দমূল, বাঁশের কোঁড় এবং নীলবিন্টী, এই সকল স্বব্যের দ্বারা সেক ও প্রলেপ
দিলে অথবা মৃত প্রস্তুত করিয়া তাহা সেবন করিলে সর্ব্ববিধ বিসপ্রোগ
আরোগ্য হয়।

মুথা, নিমছাল ও পল্তা সমভাগে সমতেও ২ তোলা, জল ১২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই ক্লাথ সৰ্কবিধ বিদৰ্প নাশক।

আমলকী, মুথা এবং পল্তা দমভাগে দমশ্তে ২ তোলা, জল ৩২ তে।লা, ত শেষ ৮ তোলা। এই কাথ ঘতাপ্ল ত করিন্না পান করিলে দর্কবিধ বিদর্প বিনষ্ট হয়।

অয়তাদি পাচনং।---

অমৃতর্ষপটোলং মুস্তকং সপ্তপর্ণং। খনিরমসিতবেত্তং নিম্নপত্তং হরিদ্রে। বিবিধ বিষবিস্পান্ কুষ্ঠ বিস্ফোটকণ্ডু। রপনয়তি মস্থরীং শীতপিভন্ধরণঃ॥

শুলঞ্চ, বাসক, পল্ডা, মুথা, ছাতিমছাল, খদিরকার্চ, কুঞ্বেড, নিম্বপত্র, ছরিদ্রা এবং দাকছরিদ্রা এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ১২ ভোলা শেষ ৮ ভোলা। এই কাথ পান করিলে বিবিধ কুঠ, বিসর্প,

त्रयोगार घुडर।-

রষ্খিদিরীপটোলপত্র নিয়ত্বগম্বতামলকী ক্ষায়কলৈকঃ। স্বতমভিনবমেতদা স্থপকং জয়তি বিসর্পমদ কুষ্ঠগুল্মানু॥

উৎকৃষ্ট গ্রায়ত /৪ চাবিদের, জ্বল ।৬ দের এবং বাসক, খদিরকার্চ, পলতা, নিমছাল, গুলঞ্চ, ও আধলকী সমভাগে সমস্তে /১ একদের। যথা-নিয়মে এই য়ত পাক করিয়া উপযুক্ত পরিমাণে দেবন করিলে বিসর্প, মদ্দ, রক্তদোষ, কুষ্ঠ ও গুলারোগ আবোগ্য ছইয়। থাকে।

মহাপদাকং মুতং :--

পারকং মধুকং লোধ্রং নাগপুষ্পান্য কেশরং।
দ্বে হরিদ্রে বিজ্ঞ্পানি স্থান্মলা তগরং তথা।
কুঠং লাক্ষাপত্রকণ নিক্থকং তৃথ্যেবচ।
বহুবারঃ শিরীষশ্চ কপিথফলনেবচ।
তোরেনালোড়া তৎসর্বং স্থতপ্রস্থ বিপাচরেছ।
যাংশ্চ রোগারিহন্ত্যান্ত তারিবোধ মহানুনে।
সর্পনীটাখুদংফৌর লূভামূত্রকভেষ্চ।
বিবিধেষু চ ক্ষোটের তথা ক্রটবিদপের্ছ।
নাড়ীযু গণ্ডমালার প্রভিত্নার বিশেষভঃ।
স্থান্তাবিহিতং ধানাং পদ্যকন্ত্র মহান্নতং॥

ম্বন্ত /৪ চারিদেব, জল ।৬ যোলদের , কল্কার্থ—পদ্মকান্ত, যফিমধু, লোধ, নাগকেশর হরিদ্রা, দাক্তররিদ্রা, বিভূঙ্গ, ছোটএলাচি, তগরপাদিকা, কুড়, লাক্ষা, ভেজপার, মোম, তুঁতে, চালিতাবীজ, শিরীযভাল এবং করেদ্বেশ্বেশাস সমভাগে সমস্তে /> একদের। এই মৃত উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে সর্পাদির বিষদোষ বিসপ্ত বিস্ফোট, নাড়ীত্রণ প্রভৃতি রোগ সকল বিন্দ্র হইয়া থাকে।

•কালাগ্নিকদ্রোরসঃ।—

স্তাল কাৰ্ডীক্ষানাং ভন্মাক্ষিকগন্ধকং।
বন্যাক কলোটকদোবৈস্তল্যং মদ্যং দিনাবধি।
বন্যাক কটিকা পিন্ধী স্থাপ্যং লেপ্যং মূদাবহিঃ।
ভূধরাখ্যে পুটিভব্যা দিনৈকং ভংকিচুর্নয়েৎ।
দশমাবং বিষং যোজ্যং মাষ্মাত্রক ভক্ষরেৎ।
রসঃ কালাগ্রিক্ডোইয়ং দশাহেন বিস্পন্ধ ।
পিপেলী মধুসংযুক্তমনুপানং প্রকশ্পয়েৎ।

পারদ, অত্র, কান্তলোহ, গন্ধক এবং অণ্যাক্ষিক এই সকল দ্রবা সমভাগে শ্রহণপূর্বক বনকাকুড়ের রসে ১ একদিবস মর্দ্দন করিবে। তৎপাল বনকাকু-ড়ের মুলপিওমধ্যে নিহিত ক্রিয়া মৃত্তিকা দারা বহিন্ডাগ লেপনপূর্বক ভূধর্যক্রে পাক করিবে। তদনন্তর দশ্যাংশ বিষ মিশ্রিত করিয়া ১ মাধা পিপুলচ্ণ ও মধুসহ সেবন করিলে বিদর্পরোগ বিনষ্ট হয়।

বিসর্পবিস্ফোট স্নায়ুকানিদানং।---

বেগেস্ত স্নায়ুকাখোগংয়ং ক্রিয়াতত বিদর্পবি ।
গবাং সর্পিস্তাহাৎ পীতা নিত্ত তীম্বরসংত্যহং।
পিবেৎ স্নায়ুক্মত্যাথং হন্তাবশ্যং ন সংশরঃ।
শোভাঞ্জনমূলদলৈঃ কাঞ্জিকৈঃ পিষ্টেঃ দলবগৈলেপঃ।
হন্তিস্নায়ুক্রোগং যদ্ধামোত্তালেপঃ।
মোচং কদলীফলং॥

স্বায়ুকরোগে বিদর্পরোগের ন্থায় চিকিৎসা করিবে। তিন দিন গব্য-ছত পান করিয়া তৎপরে ৩ দিবদ নিদিন্দার স্বর্ম পান করিলে নিশ্চয়ই স্বায়ুকরোগ বিনম্ট হইয়া থাকে।

দজিনামুলের ছাল কাঁজি ও দৈশ্ববাদহ পেষণপূর্বক ভদ্বারা প্রলেপ দিলে স্বায়ুকরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে এবং কলার মোচার স্বক্ বাটিয়া ভদ্বারা প্রলেপ দিলে বিদর্প, বিক্ষোট ও স্বায়ুকরোগ বিনম্ব ছইয়া থাকে।

ইতি বিমর্প, বিক্ষোট ও স্বায়ুকরোগের চিকিৎনা মমাপ্ত।

অথ মস্থ্যি ধিকারঃ।

শর্করাপ্রকেণঃ।---

তত্তাদৌবমনং যুজ্ঞাৎ তথা লব্জনপাচনং।
সর্বাসাং বমনং পূর্বং পটোলারিউবাসকৈঃ।
কষারৈশ্চ বচা বৎস যক্ট্যাহ্বা ফলকল্কিইনঃ।
ফলং মননফলং।
হুরালভাপপটকং ভুনিষং কটুরোহিশীং।
ফোম্মকাপিভজায়াস্ত পানেনিকাথ্যনাপয়েৎ।
দোক্ষাকাশ্য্য খর্জ্জুর পটোলারিউবাসকৈঃ।
লাজামলকত্তপর্শঃ সিভামুক্তস্ত পৈতিকে॥

দর্কবিধ মহুরীরোগে প্রথমেই বমন, লণ্ডবন ও পাচন্ উষধপ্রয়োগ করিবে।
সকল প্রকাশী মহুরীরোগীকে পল্ডা, নিমছাল ও বাসকছাল ইহাদের কাষ্
প্রস্তুত্ত করিয়া, তাহাতে বচ, ইক্সমব, ষ্টিন্ধু ও মন্দক্ষচূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া
বমনার্থ পান করিডে দিবে। ছরালভা, ক্ষেত্রপাপড়া, চিরডা ও কটুকী
সমতাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই
কাষ্থ পান করিলে সেম্পতিজ মহুরিকা নিবারিত হয়। দ্রান্ধা, গাস্তারী,
ইর্জ্বর, পল্ডা, নিমছাল, লাজ (থৈ), আমলকী ও ছরালভা সমভাগে
সমস্তে ২ ভোলা, পাক নমিত্ত জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা; এই কাষ্
শর্করা প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পৈত্তিক মহুরিকা আরোগ্য হইয়া থাকে।
দশমূল, রাম্মা, দেবদাক, বেণাবমূল, ছরালভা, গুলঞ্চ, ধনিয়া ও মুথা সমভাগে সমুদায়ে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই
কার্থ পান করিলে বাতজ মহুরিকারোগ আবোগ্য হইয়া থাকে।

দিশক্ষুলং রামা চ দার্ক্র শীরং তুরালভা।

সায়তং ধান্যকং মুস্তং জয়েদ্বাত সমুথিতাং।

নিয়ং সপপটিকং পাঠাং পটোলং কটুরোহিণীং।

নাদাং তুরালভাং ধাতী মুশীরং চলনদ্বয়ং।

এষনিয়াদিকঃ খাতঃ দিত্রা চ সমন্বিতঃ।

হন্তি ত্রিদোরমস্থবীং বিস্প্ ক্রেসম্ভবাং॥

নিমছাল, ক্ষেত্রপাপড়া, আকনাদী, পল্ডা, কট্কী, বাদক, প্রাল্ডা, আমলকী, বেণারমূল, খেতচন্দন ও রক্তচন্দন এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ২২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই কাথে উপ-যুক্ত মাত্রায় চিনি প্রক্রেপ দিয়া গান কবিলে বিসর্প ও ত্বরোজ্ভ তৈনেদা বিক শস্বিকারোগ আরোগ্য ক্রো থাকে।

'শেতচন্দন কল্কাট্রং ইংলমোনী ভবং রসং। '
পিবেম্মস্থারিকারছে বৈষয়াকেবলং রসং।
স্থাবীপত্রনির্বাসং হরিদ্রা চুণসংযুতং।
রোমা শ্রীকারবিক্ষাট মস্থানীশাস্তরেপিবেছ।
স্থাবীকারবেল্ফ কল্কেনালি পিবেররঃ।
তিত্তী মন্ধকং তাক্ষামোরটং লাড়িইমন সহ।
কিকালেভদাতব্য ভেষজং গুড়সংযুতং।
তেনপাকং ব্রজভাগশু নচবায়ুঃ প্রকুণ্যতি॥

মস্থ্রিকার প্রথম অবস্থায় শ্রেডচন্দনের কল্ফ হিঞ্চাশাকের রস সহ অথব। কেবলমাত্র নিমপাতার রস পান করা কর্তব্য। করলাপতের রস হরিজাচ্ব সহ সেবন করিলে রোমান্তী (হাম) জ্ব বিক্রোট ও মস্থরীরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

মন্ত্রিকার পাককালে ছোট করলা ও বড় করলার কক্ষেদ্র গুলঞ্চ, যক্তিন্দু, দ্রাক্ষা, ধলা-আকড়া ও দাড়িমফলের ছাল ইহাদের কাপ অথবা গুড়সছ্ শুঠীচুল রোগীকে দেবন করিতে দিবে। ইহাদ্বারা মন্ত্রিকা শীদ্র পাকিয়া বিনক্ত হইয়া যায়; এবং বায়ু প্রকৃপিত হইয়া পুনরার মন্ত্রিকা উৎপশ্পত হইতে পারে না।

নিশাদ্বরোশীরং শিরীষমুস্তকৈঃ সলোধভদ প্রিরনাগকেশরৈঃ। সঞ্জেদবিস্ফোট বিসর্পকুঠদৌর্গন্ধ্য রোমান্তিহরপ্রদেহঃ।

ভদ্ৰিরং শেতচন্দন।
বিষদ্ধৈ সিদ্ধান বৈশ্ব কাল্টি পুনঃ পুনঃ।
তথাশোনিত সংস্থাঃ কাল্টিৎ শোনিত্মাক্ষণৈঃ।
পঞ্জিত প্রযুঞ্জীত পানাভাঞ্জন ভোজনৈঃ।
কুর্যাাহ্ন বিধান্ধ তৈলানীন্ বর্জ্যেচিরং॥

ইতি মসুহাধিকারঃ।

হরিদ্রা, দাক্ত্ররিন্তা, বেণারসূল, শিরীষছাল, মুথা, লোধ, শ্বেতচন্দন ও নাগকেশর এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক পেষণ করিয়া ভূদ্ধারা প্রলেপ দিলে বিক্ষোট, বিদর্প, কুষ্ঠ, দৌর্গন্ধ্য ও বোমান্ত্রী (ছাম) বিশ্বস্ট ছইয়া থাকে।

মস্বিকারোগীকে বিষয় সিদ্ধ মন্ত্রপ্রক পুনঃ পুনঃ মার্জন করিবে। রক্তসংস্ট মস্বিকা রক্তমোক্ষণদ্বারা ্বারিত হইরা থাকে। মস্বিকারোগীকে কৃষ্ঠাধিকারোক্ত পঞ্চিক্তন্ত পান অভ্যঞ্জন ও ভোজনার্থে প্রোগা এবং ত্রণরোগোক্ত বিধানান্ত্রসাবে চিকিৎ্ন, করিবে। আর অনেক দিন পর্যন্ত রোগীকে তৈলাদি ব্যবহার করিতে দিলেনা।

इंভि मस्त्री-िहिक्दमा ममार्६

অথ ক্ষুদ্রবোগাণিকারঃ।

তত্ত্বাজগল্লিকা মামাং জলৌকা ভিরুপাগরে । শুক্তিনৌরাস্ক্রিকাক্ষার কল্কৈশ্চালেপয়েলু হুঃ। কাচলাং ক্ষার্যোগৈশ্চ প্রাব্য়েদ্জগল্লিকাং। অজগদিকা (শিশুদের আচলিনামকরোগ) রোগের অপকাবছার জোঁকদারা রঙ্কিমাক্ষণ করিবে। এবং নিছক, দৌরা ইয়ুজিকা ও ববক্ষার সমভাগে এহণপূর্বক পেষণ করিয়া ভদ্বার। প্রলেশ দিবে। অজগদিকারোগ
অভ্যন্ত কঠিন হইলে উহাতে ঘন্টাপারল্যাদির ক্ষার প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য।

শ্বেরতামিক্ররিঞ্চ গর্জ ভীং জালগর্জভং।
বিরতামিক্ররিঞ্চ গর্জ ভীং জালগর্জভং।
ইরিবেলীং গন্ধনামাং জয়েৎ পিত বিদর্পবং।
মন্ত্রবিধনিদ্ধেন সপিধাশময়েদ্ব গাং।
রক্তাব্যেকবহুভিঃস্বেদনৈ রপতপ্রিঃ।
জয়েদ্বিদারিকাং লেপেঃ শিগদেব ক্রমোদ্ধেরঃ॥

বৈদ্যগণ সৈত্মিক বিজ্ঞধিরোগের চিকিৎসার বিধানাত্মসারে অত্মশরী (পাদরোগ বিশেষ) রোগের চিকিৎসা করিবেন।

বিবৃতা, ইন্দ্রবৃদ্ধা, গর্দভী, জালগর্দ্ধভ, ইরিবেল্পিকা ও গৃদ্ধমালা এই সকল রোগের চিকিৎসা করিবে। এবং কাকোল্যাদি মধুরগণের সহিত সিদ্ধন্থত-দ্বার। ত্রণরোগের চিকিৎসা করিবে।

পুনঃ পুনঃ রক্তমোক্ষণ, স্বেদ, অপত্রণণ (লজ্মন) এবং দজ্জিনা ও দেব-দাক পেষণপূর্বক তদ্ধার। বিদারিকারো শীর চিকিৎদ। করিবে।

পন্দিকাং কচ্ছপিকা মুক্ত্রীনবিধিনাভিষক্।
সাধ্যেৎ কঠিনানন্যানুষ্ঠান দোষসমুদ্রবান্।
অন্ত্রালজীং কচ্ছপিকাং তথা পাষাণ গর্জভং।
সুরনার বিলাকুটে জোনরিত্বা প্রলেপয়েৎ।
কক্ষার তলোগণে লেপঃ পাষাণগর্জভে॥

ানসিকা কচ্ছপিক। বৈং অক্সান্ত দোষোজ্ত শোথরোগ সমূহের চিকিৎসাও বিদারিকারে সাক্ত বিধানান্ত্যারে করিবে।

অন্তালজী, কদ্দ[ি]কা ও পাষাণার্মভরোগে প্রথমতঃ স্বেদ প্ররোগ করিয়া পশ্চাৎ দেব কে, মনঃশিলা ও কুড় ইহাদের প্রলেপ দিবে। এবং পাষাণার্মজনে ক্রিক ক্ষবাতজ শোখনাশক প্রলেপ প্রয়োগ করিবে।

নোৎ হত্যবল্মীকং ক্ষারাগ্রিভ্যাং প্রসাধয়ে ।
শশালভল্লাত স্থাক্ষলাগুরুদ্দনং।
জাতীপল্লবকলৈকশ্চ নিষ্ঠতলং বিপাচয়ে ।
বল্মীকং নাশীয়ত্যাশু বহুছিদ্রং বহুত্রবাং॥

বল্যীকরোগে প্রথমতঃ শস্ত্রদার। বল্যীক উৎপাটন করডঃ তৎপরে ক্ষার ও অগ্নি প্রয়োগ করিবে। এবং মনঃশিলা, ছরিডাল (ভল্প, ছোট এলপ্টি অপ্তক্তার্চ, রক্তচন্দ্র ও জাতীপার এই সকল কল্ফ লহ নিষ্ঠতেল পাক করিরা প্ররোগ করিবে। ইহারারা বহুদ্ধির ও বহু ত্রণসংযুক্ত বিদ্যীক-রোগ বিন্তু হইরা থাকে।

পাননারিযুক্তনিরাং বাধরেক্তলশোধনীং।
ক্ষেহথেনোপদ্নীত পানোচাপানয়েযুক্তঃ।
মধুচিত্টং বসামজ্জ স্বতক্ষারৈকিমিজিতিঃ।
সর্জ্ঞাকনিস্কৃত্তবয়োক্ত্র্বং মধুস্বতাপ্লতং।
নির্মাথ্যকট্রতলাক্তং হিতং পাদ প্রমার্জনং।

পাদদারীরোগে পাদভলগামিনী নিরা বিদ্ধ করিয়া স্বেছ ও স্বেদ প্রদানপূর্বক মোম, বসা, মজ্জা, খুড় ও যুবক্ষার ইছাদের প্রলেপ প্রয়োগ করিয়া
পাশ্চাৎ ধুনা, সৈদ্ধবলবণ, মধু ও ঘুত একত্র কটুতৈলের দহিত মিপ্রিত করতঃ
পাদমার্জন করিবে।

উপোনিকা সর্বপনিষ্মোচকর্ক্ক কির্ববারক ভন্মতোরৈঃ। তৈলং বিপক্ক লবণাংশযুক্তং তৎপাদদাব্দীং বিনিষ্ক্তিলেপাৎ॥

পৃতিকা, সরিষা, নিমছাল, লোচা, কর্কাক (কুল্পাণ্ডেদ), কাঁকুড় এই সকল ভস্ম করিয়া কার জল প্রস্তুত কুরিবে। উক্ত কারজল উপযুক্ত পরিমাণে সৈশ্ববলবণ কলক প্রদান করতঃ ভল পাক করিবে। এই তৈল দারা প্রলেপ দিলে পাদদারীরোগ বিনষ্ট বুর।

অলদেই মেন্টিরং নিজে । চানো পরিলেপয়ে । পটোলারি ইকাশী শং ত্রিফল শ্ভিমু ভ্রু ভ্ঃ । করপ্রবী জং র জন কাশী শং মর্গুক্র মধু । রোচনাহরি তালক লেপোহরমল সহিতা। লাক্ষাভয়াবদোলেপঃ কার্যার ধা । ক্রমোক ার্থ। রহতী রসনিদ্ধেন তৈলে না ভাজা বা ন্যান্। শিলারো চনকাশী শ চু বৈর্বাপ্রতি সারং হৈ ॥

অলসকরোগীর পাদদর অলক জিকমধ্যে বছকণ নিমগ্ন শিখ্যা পল্ ৩ , নিমছাল, হিরাক্স, ও ত্রিফলা এই সকল একত্র পেয়ণপূর্বক ওদ্বারা পুন:. পুন: প্রলেপ দিবে।

ডহরকরঞ্জারবীজ, হার্ত্রা, হিরাকস, যফিমবু, মধু, গোরোচনী ও চরি-ভাল ইহাদের প্রলেপ কিষা লাক্ষা, হরীভকী ও গন্ধবোল ইহাদের প্রন্তেপ; অথবা রক্তমোক্ষণ বা বহুভীরদের সহিত তৈলপাকপূর্বক ভদ্বারা অভা েন করিয়া মনঃশিলা, গোরোচনা ও হিরাকস এই সকল জব্যের অতি স্ক্রম চ্ণ করিয়া তদ্বারা মর্দ্দন করিলে অলসকরোগ নিবারিত হইয়া থাকে। দহেৎকদর মুদ্ধতা তৈলেন দহনে ন বা।

কিপামুক্ষামুনাধির মুদ্ধতা খজাতং ত্রণং।
দত্তাসর্জ্ঞরনং চুনং বদ্ধাত্রণ বদাচরে ।
স্বর্গেন হরিক্রায়াঃ পাত্রেক্ন রস্ভেয়াং।
য়্ট্রাতজ্জেন কল্কেন লিম্পেচ্চিপ্পং পুনঃ পুনঃ।
চিপ্পেন্টঙ্গনাক্ষাতা মূল্লেপন খপ্রনঃ।

কদরবোঁশে অন্তর্নার। বদব উদ্ধৃত করিয়া তপ্ততৈল বা অগ্নিদারা উহা দক্ষ করিয়া দিবে।

চিপ্পাবোগে প্রথমত: উক্ষজনদ্বারা স্বেদ দিরা পশ্চাৎ উদ্বা ছেদন করত: তৈলাভ্যন্ধ করিবে। চিপ্পাবোগে পুনাচ্গ করিয়া তাদ্বা প্রদানপূর্বক ত্রণোক্ত বন্ধনান্ত্র্যারে ক্ষতস্থান বন্ধন কবিয়া বাখিবে, এবং বোগীকে ত্রণরোগোক্ত আহাব ও ঔষধাদিদ্বারা চিকিৎসা করিবে।

কৃষ্ণলৌহপাঁৱে হরীতকী রসের সহিত হরীতকী ধর্বণ করির। ভদ্ধারা বার্ষার অলেপ দিলে অথবা গোহাশার দৈ ও হাপর্যালীর্মূল পেবণ ক্রিয়া ভদ্ধারা প্রদেশ দিলে চিপ্পারোগ প্রশ্নত হয়। নিয়োদকেন ব্যন্থ পদ্ধিনী ক্তিকেহিতঃ।

নিয়োদকেন বমনং পদ্ধিনী কিউকেহিতঃ। নিয়োদককুতং সপিঃ সঙ্গৌদ্ধে পানমিষ্যতে। পদ্মনালকুতঃ ক্ষারঃ পঢ়িনীং হস্তিলেপতঃ।

পদ্মিনীকউকরোপে নিম্ছালের 'নিথ মন্ত্রকলচ্প প্রক্রেপ দিয়া বননার্থ রোগীকে পান করিতে দিবে। নির্ছালের কাথ সহ স্বত পা চপুর্বক মধ্-বিশ্রিত করিয়া পান করিলে জ্থা পদ্মনাল দগ্ধ করতঃ সেই ক্ষার ছারা প্রলেপ দিলে পদ্মিনীকউকরোর বিষষ্ট হইয়া থাকে।

> নিয়ারথণ কলৈক: বাঁমুহুরুদ্বর্তনং হিতং। নীলীপটোলমূলাভ্যাং সাজ্যভাং লেপনং হিতং। জালগদ্ধভিনৌশঞ্চ দিনােহস্তি চ বেদনাং॥

নিমপাতা ও বৃষ্টু, নালপাতা পেষণপূর্বক তদ্বারা প্রালেপ দিলে অথবা নীলবুরা ও পট্টুে, নমূল পেষণপূর্বক স্বত বিশ্রেত করিয়া তদ্বারা প্রালেশ দিলে জালগ্_{টু,} তরে।প এবং ডজনিতা ধ্বদনা সদাই নিরারিত হয়

> অহিপৃত্নকেধাত্ত্যাঃ পূর্বেং স্তন্যং বিশোধয়েৎ ত্রিফলাখনিরকাথৈত্র গানাং গারণং সন্য। করঞ্জত্বিফলাতিকৈঃ স্পিসিদ্ধং শিশোহিত রুসাঞ্জনং বিশেষেণ পানলেপন্যাহিতং

অহিপৃতনকরোগে প্রথমতঃ পিত্তমেত্মনিবারক অব্যাদিদ্বারা ধাত্রীর স্তম্ভ-বিশুদ্ধ করতঃ পশ্চাৎ খদিরকাষ্ঠ ও ত্রিফলার কাথ দ্বারা ত্রণধৌত স্কুরিবে।

ডহরকরঞ্জ, ত্রিফলা ও ভিক্নরগবিশিষ্ট দ্রব্য সহবোগে পাক করা স্থত সেবন করিবে; বিশেষতঃ রুদাঞ্জন পান বা প্রলেপ রূপে ব্যবহার করিলে শিশুদিশের অহিপুতনকরোগ বিন্দ্ট হইয়া থাকে।

তানভাবেশ তাদং স্নেইরভাজাত প্রবেশরে ।
প্রবিন্টং খেদরেচ্চাপিবদ্ধং গোক্ষনা ভূশং।
কোমলং পদ্মিনীপত্রং যঃ খাদেচ্ছের্নান্বিতং।
এতরিশ্চিতনির্দিন্টং নতক্তদেনির্গমঃ।
রক্ষামানলচাক্ষেরী বিশ্বপাচা যবা গ্রজং।
তক্রেণশীলয়ে পাযুভাং নার্ভোংনলদীপনঃ।
তদেকগব্যবসরা মুক্ষরেদবিশক্ষিতঃ।
ভূপ্রেদেশতিদভাইশা বিশত্যাশুনশংসরঃ।
মুষিকাণারসাভিক্ষা গুদেসমাক্ প্রলেপনং।
বিরম্বিক্মাংসেন ক্রেণবা স্বের্দ্তেনে॥

গুদজংশরোগীর গুছদার মৃত ঐচ্লাদি স্নেহদাবা পরিলিপ্ত করতঃ উছা অতিশীয়ে গুছমধ্যে প্রবেশ করাইয়া দাবে। উহা প্রবিষ্ট হইলে পরে উহাতে স্বেদ দিয়া দক্ষিত্র বৌপীনবস্ত্র পরিধান করিয়া থাকিবে।

কোমলপদ্মপত্র চিনির সহিত উপস্থাৎ মাত্রায় সেবন করিলে, গুহু দ্বার পুনর্কার বহিগত হইতে পারে না। ।

রক্ষান, রক্তচিতা, চাকেরী, আকনাদী, পুঠী ও যবক্ষার; এই সকল দ্রুব্য তক্রসহ সেবন করিলে গুদভংশবোগীর উণ্ম প্রদীও ছইয়া থাকে।

বহির্গত মলদ্বারে অশঙ্কিতচিতে গোবসা, ম[্]ন করিলে অতি হচ্ছেবেশ গুদজংশও সত্তর গুছমধ্যে নিশ্চর প্রথিক হইঃ। থ[^]িক।

মুষিকের বদাদার। প্রলেপ দিলে, অথব কাঁজির দৈছিত দিছা ও দৃতভ্ত মুষিকমাংদদার। গুছদেশে স্বেদ প্রদান করিলে গুট্র-শরোগ আরোগ্য হইরা থাকে।

চাঙ্গেরীয়তং।—

চাঙ্গেরীকোলনগ্নামনাগর ক্ষারশংযুতং।. যুতমুৎ ক্থিতং পেয়ং গুদভংশ রুজাপহঃ। শুঠীক্ষারাবত্তকল্কৌ শিষ্টস্কডব্যিষ্যতে॥

স্ত /৪ চারিসের; আমকলের রদ, ওছকুলের কাথ ও অলপথি প্রত্যেশে, ৴৪ চারিসের,এবং কল্কার্থ—শুঁ ঠ⁄॥• অর্ধ্বসের ও যবক্ষার ∕॥• অর্ধ্বসের। ষ্ণানির্মে এই ভৈল পাকপূর্বক উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে বেদনা-সংযুক্ত গুদ্ধংশরোগ বিন্ত ইইয়া থাকে।

মূষিকাদ্যং তৈলং 🕌

ক্ষীরেমহৎ পঞ্চমূলং মূষিকা মন্ত্রবৰ্জ্জিতং। পক্ত্রাতিমান্ পচেত্তিলং বাতত্বৌষধ সংযুতং। শুসত্রংশমিদং তৈলং পানাভ্যঙ্গাৎ প্রসাধয়েৎ॥

বৃহৎ পঞ্চসূল / থ দের ; অন্ত্রাদিবর্জিত মূঘিক একটী, ভ্রম / থ ভূইদের ও জল / থ দের। এই দকল দ্রব্য একত্র পাক করিয়া ভ্রমনাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া কাথ প্রহণ করিবে। এই কাথ এবং ভদ্রনার্কাদিগণের কলকদহ / ১ একদের তৈল পাক করিবে। এই ভৈল অভ্যন্তরূপে প্রয়োগ করিলে গুদ্রভ্রেগাবিন্দ্র ইইয়া ধাকে।

স্বেদোপনাহো পরিকর্ত্তিকায়াৎ কৃত্বাসমৃষ্ট্যজ্ঞায়তেন পশ্চাৎ। প্রবেশয়েকর্মননৈঃ প্রবিষ্টের্মাংসৈঃ সুধাকৈরূপনাহয়েতু।

স্বেহন্থেলৈন্তথৈরেনাং চিকিৎদেবিপাটিকাং।
নিক্তন্ধ প্রকাশেনাড়ীং দ্বিমুখীপ কনকাদিজাং।
কিপ্তাজ্যক্তনাং চূলকাদি স্থেহন পরিষেচয়েও।
তৈলেন বা বচাদাক গবৈদ্ধান্তনিক্তন্ধরে।
পুনস্থলতরানাড়ী দেয়া প্রাতোবিশুদ্ধরে।
শস্ত্রেণ সেবনীং বুদ্ধা দিয়াত্রণবদাচরেও।
স্বিশ্বক্ষ ভোজনং ক্ষম্ক দেপোষ ক্রমোমতঃ॥

- পরিকর্তিকারোগীকে প্রথা হ স্থাভান্ধ করিয়া বাডয়দ্রব্যদারা স্বেদ এবং শাল্নাদিদারা উপনাহ নাদ্দন করিবে। ইহাদারা চর্মা মৃত্ হইলে চর্মা সম্যক্রপে আনয়ন করিবে, এবং চর্মা আনীত হইলে ঈ্যত্ন্য মাংসদ্বারা উপ-নাহ করিবে।

অবপাটি কারোগে প্রিছ, স্বেদ, উপনাছ ও চর্মানয়ন করিয়া টিকিৎসার বিধান করিবে। ি ক্রপ্রকাশ ও ক্রপ্তলবোগে কণকাদি নির্মিত দ্বিম্থনল চুল্লকী (শুশুক বিরাহাদির স্নেছে ভিজাইয়া গুল্লমধ্যে প্রবিষ্ট করিবে। এবং বচ, দেবদাক প্রভৃতির কলক দ্বীরা যথাবিধি তৈল পাক করিয়া ভদ্বারা অবসেচন বিরবে। এইরূপে ৩ তিন দিবদ অন্তর প্রোতোবর্দ্ধনার্থ স্থলতব্বনল গুল্লমের প্রবিষ্ট করিবে এবং রোগীর সেবনীশিরা পরিত্যাগ পূর্বক অন্তর্ভাব বিদারণ করতঃ ত্রণবৎ চিকিৎদা করিবে, ও রোগীকে স্মিদ্যন্তর সমূহ ভোজন করাইবে।

চর্মকীলং জন্তমণিং মদকাং ন্তিলকালকান্।
তৎক্রতাশস্ত্রেণ দহেৎ ক্ষারাগ্রিভাগমশেষতঃ। করুনালান্ত চুর্নেন ঘর্ষোমদকনাশনঃ।
নির্মোকভদ্মবর্ধান্তামদক্ষ শামান্তিলাকাণঃ।
যুবানপিড়কানাঙ্গনীলিকাব্যঙ্গশর্করাঃ।
শোরাব্যধৈঃ প্রলেপেশ্চ জয়েদভাপ্তনৈ তথা।
লোপ্রধান্যবচালেপং ন্তাক্রণাপিড়কাপহঃ।
তদ্বদেশারোচনাযুক্তং মরিচং মুখলেপনাৎ।
সিদ্ধার্থকবচালোপ্রিমন্ত্রেশ্চ প্রলেপনং।
ব্যক্ষের্চার্জ্জন্ম্রামপ্রিট্রান্সমান্ধিকা।
লপ্র সনবনীনার্মপ্রভাশ্বভ্রজামনী।
রক্তচন্দ্রপ্রিট্রান্সমান্তিদা।
বাঙ্গান্ত্রাশ্চ সাক্র্মণাপ্রভাশনী।
বক্তচন্দ্রপ্রিট্রান্সম্বাদ্রিদা।
বাঙ্গান্ত্রাশ্চ স্ক্রেণ্ডাপ্রজামনী।
বক্তচন্দ্রপ্রাশ্চ স্ক্রেণ্ডাপ্রজামনী।
বাঙ্গান্ত্রাশ্চ স্ক্রেণ্ডাপ্রজামনী।
বাঙ্গান্ত্রাশ্চ স্ক্রেণ্ডাপ্রজামনী।
বাঙ্গান্ত্রাশ্চ স্ক্রেণ্ডাপ্রজামনী।
বাঙ্গান্ত্রাশ্চ স্ক্রেণ্ডাপ্রজামনী।

চর্ম্মনীল, জাতুমণি, মসক ও দালকালক অস্ত্রদারা উৎপাটন কর্তঃ
কার ও অগ্নিদারা নিংশেষরূপে দক্ষ দ্বিবে। এরও নালদারা শশ্বচ্ গ্রহণপূর্বক উক্ত চূর্ণদারা অথবা ক্লফ্সপে । খোলস ভস্মদাবা ঘর্ষণ করিলে
মসকরোগ নিবাবিত চইয়া থাকে।

যুবান পীড়কা (বয়স ফোড়া), স্থাচ্ছ, মুরীলিকা, ব্যঙ্গ ও শর্করা রোগে শিরাবেধ, প্রলেপ ও অভাঙ্গ প্রভৃতি দারা ব্রিকিৎসা করা কর্ত্তব্য।

লোধ, ধনিয়া ও বচ ইহাদের প্রালেপ দিঁ ব তরুণ যুথানপীড়ক। এবং গোবোচনা ও মরিচ একত্র পেষণপুদ্ধক তস্কুরো মুখ প্রলেপ দিলে সর্ক্ষিধ, যুবানপীড়কা বিনক্ট হয়। রাইসরিষা, বচ, লোধ ও দুদুরবলবণ ইহাদের দ্বারা প্রালেপ ও বমন করাইলে যৌবনজ্ঞাত পীড়কা সকলা স্ফ ইইয়া থাকে।

অর্জুনরক্ষের ছাল অথবা মঞ্জিষ্ঠা পেষণপূর্বক মধুন, মিশ্রিত করিয়া ভদ্বারা প্রলেপ দিলে, কিছা খেত অপরাজিতার মূল ও অথেরখুর দ্বার করিয়া দেই ভন্ম নবনীতদহ মিশ্রণপূর্বক তদ্বারা প্রক্রেপ দি, র বাদরোগ প্রশ্বিত ছইয়া থাকে।

রক্তচন্দন, মঞ্জিষ্ঠা, কুড়, লোধ, প্রিয়জু, বটাঙ্কুর ও মন্থ্র এ সকল একত্র পেষণপূর্বক ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে অথবা শশকের রক্তদারা প্রথে প্রলেপ দিলে ব্যঙ্করোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

কেবলান্ পারদা পিফ্রা তীক্নান্ শাল্মলী কণ্টকান্। অশিলপ্তং ত্রাহমেতেন ভবেৎ পদ্মোপমং মুখং। मस्रेतः मर्लिवानिरेकेनिश्वमान्तः नर्शान्त्रिकः। সপ্তরাত্রান্তবেৎ সদ্যঃ পুণ্ডরীক দলপ্রভং। মাতুলুফ জটানর্পিঃ শিলাগোশকভোরদঃ। মুখকৃণত্তি করোলেপ পীড়কাতিলকালজিৎ। নবনীত গুড়কৌদ্র কোলমজ্ঞ প্রলেপ । । ব্যঙ্গক্রিকুর্য়ং বা ছাগন্দীর প্রপেষিভা। णा जीकन कर्याला भारती विकास कि ने भारती विकास की कि कार्या कि कार्या कि कार्या कि कार्या कि कार्या कि कार्या के कि कार्या कि সার্থ কটুতৈলেনাভ্যম বক্তপ্রশাধনঃ। কানীয়কোৎ পলাময় দ্ধিসরবদরাকে মধ্যফলীনিভিঃ। লিপ্তং ভবতি চ বদ্দং শশিপ্রত**্র**সপ্তরাজেণ্। प्यक्षेत्रिका मन्न शवहर्ग मयिक्षिम् लिप्यालिल्य । ভবতি মুখং পরিনিজিউত চামী করচার নৌভাগ্যং। त्रत्याच्यार्यकी वश माञ्चिति रिगि निग भावख्या शह সিদ্ধেন লিপ্তমান্ ন হ্ল্যান্ত্রি, দিরিভাতি। পরিণত দ্বিসরপুথে কুর্বায়দল মুঠ চন্দ্রোনীরৈঃ। মুখকমল ান্তীকরী <u>ক্র</u>কু/ভিলকালকাঞ্জয়তি 🛭

শিন্লের কণ্টক ছুপ্পের সহিত্য বিশপুর্বক তদ্বারা মুখে প্রলেপ দিলে তদিনের মধ্যে পাল্যের আর মুখেন লিন্তি হয় এবং মন্থর ঘৃতদহ পেষণপুর্বক ছুপ্পের সহিত মিশ্রিত করিয়া প্রাটি হয় এবং মন্থর ঘৃতদহ পেষণপুর্বক ছুপ্পের সহিত মিশ্রিত করিয়া প্রটির হয়রা থাকে। ছোলঙ্গনেরবমূল, ঘৃত, মনঃশিলা ও গোময়ুর্বা এই সকল এচত্র পেষণপুর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে মুখের কান্তি বিদ্ধি হয় এবং পীড়কা ও তিলকালকরোগ বিনম্ট হইয়া থাকে। নবনীত, পুরাসন শুড়, মর্ এবং কুলের আঁঠির শাস এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণপুর্বক ভিদ্ধারা প্রলেপ দিলে অথবা বকণবৃক্ষের ছাল ছাগছপ্রসহ শোষণ করিয়া ক্রিরা প্রলেপ দিলে বিদ্ধা ছাভাফলের কল্ক কটু তার্থাৎ সর্বপতৈলসক মিশ্রণপুর্বক ভদ্বারা সায়ংকালে মুখে প্রলেপ দিলে মুখের কান্তি রিষ্কি হয় এবং নীলাও বাঙ্গাদিরোগ বিনম্ট ইইয়া থাকে। কালাকড়া, নীলোও লি, কুড়, দ্বির সর, কুলের শাস এবং প্রিয়্র এই সকল একত্র পেরনপুর্বক ভদ্বারা প্রলেপ দিলে ৭ রাত্রির মধ্যেই বাঙ্গরোগ বিন্ত ইইয়া চক্ষের ছার মুখের কান্তি হইয়া থাকে।

তুষরহিত ষ্বচ্ব, যক্তিমধু ও লোধ ইহাদের প্রলেপ দিলে অর্থবা রক্ষোই (খেতসর্থপ), হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, গেরীমাটী, দ্বত ও ছাগত্বই এই সকল পেষ্বপূর্বক তদ্বারা মুখে প্রলেপ দিলে ব্যঙ্গরোগ আরোগ্য হইয়া চক্সবং মুখের কান্তি হয়।

পুবাতন দধি, শরপুথা। নীলোৎপলপত্র, কুড়, রক্তচন্দন ও বেণারমূল এই সকল দ্রুব্য পেষণপূর্বক তদ্ধারা প্রলেপ দিলে পদ্মের স্থান্ন মুখকান্তি, ললাটবলী শোভিত এবং তিলকালক প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়।

হরিদ্রান্থয় কালীর কুষ্ঠচন্দ নৈঃ।
প্রপৌওরীক মঞ্জিষ্ঠা পদ্ম পদ্মক কুন্ধু মৈঃ।
কপিখতিন্দুকপ্লক বটপত্রৈঃ পয়োশ্বিতঃ।
লেপয়েৎ কল্কিতৈরেভিত্তৈলং চাভ্যঞ্জনং পচেছ।
পিপ্রবং নীলিকাব্যঙ্গান্তিলকাল মুখ দূষকান্।
নিতাসেবীজয়েঞ্জিপ্লং মুখং কুর্যান্মনোরমং॥

ছরিদ্রা, দাকছরিদ্রা, ধ্যফিম্বু, কালাকড়া, রেক্তচন্দন, পুগুরিয়াকার্চ, মঞ্জিচা, পদ্মপুষ্পা, পদ্মকার্চ, নৃকুম, কয়েদ্বেল, গাব, পাক্ড ও বটপত্ত, এই সকল দ্রব্য হ্রেরে সহিত পেষণ কুর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে, অথবা উক্তদ্রব্য সকলের কলক এবং চতুগুল ভ্রম্বিক্রিক তদ্বারা অভ্যন্ধ প্রয়োগ করিলে বিশ্বার ক্রিল তদ্বারা অভ্যন্ধ প্রয়োগ করিলে বিশ্বার ক্রিল ১ নীলিকা, বান্ধ, তিলকালক ও ম্থ দূষিকা প্রভৃতি রোগ মই ব বিনক্ত হইয়া থাকে।

कनकः शुर्मः ।--

মধুকস্য কৰায়েণ তৈলস্য_{াক}ড়বং পচেও। কল্কৈঃ প্রিয়ন্ত্ব মঞ্জিন্ত চন্দ্র গেওপল কেশবৈঃ। কনকং নামতভৈলং মুখকাজ্যিচরং পরং। অভিক্রমীলিকাব্যন্ত শোধনংশ্রমী মার্চিতং॥

তাভিরুনীলিকাব্যঙ্গ শোধনং প্রা মার্চিত ।।
তিল /১ একদের ; যফিমধুর কাথ /৪০ারিনে গুলং কলকার্থ ;—প্রিরজু,
মঞ্জিষ্ঠা, রক্তচন্দন, নীলোৎপল, নাগকেশর, এই সংলে বিলে মুখের কান্তি
। একপোয়া যথানিয়মে এই তৈল পাকপুর্বক মর্দ্দন হুই প্রভৃতি রোগ বিদ্ধি হয় এবং অভীক (জটুল), নীলিকা ও বা মুশ্রি

মঞ্জিষ্ঠা তৈলং ।

মঞ্জিষ্ঠা মধুকং লাকা মাতৃলুঙ্গ সমষ্টিকং।
কংমানৈরেতৈ স্ত তৈলদ্য কুড়বং তথা।
আকং পয়স্তদ্বিগুণং শনৈমুদ্ধিনাপচেৎ।

নীলীকাপিড়কাব্যঙ্গানভ্যঙ্গাদেবনাশয়েৎ।
মুখং প্রসন্নোপচিতং নাত্রকার্য্য বিচরণং।
সপ্তরাত্র প্রয়োগেন ভবেৎ কনক সন্নিভং।

ভৈল /> একসের; ছাগছম /ং দের এবং কল্কার্থ;—মঞ্জিষ্ঠা, ষঞ্চিমধু, লাক্ষা, ছোলঙ্গনৈবুরমূল ও যফিমধু সমভাগে সমস্তে /। একপোয়া। এই তৈল যথানিয়মে পাকপুর্বক মর্দ্দন করিলে নীলিকা, পীড়কা ও বাজ প্রভৃতি রেশ্য আরোগ্য হয় এবং ৮রাত্রির মধ্যে মুখের কান্তি উজ্জ্বল ও বলী-পালিতাদি দূরীভৃত হয়।

কুন্ধু মান্যং তৈলং।—

কুল্ব মং চন্দনং লাক্ষা মঞ্জিতা মধুয় ফিলা।
কালীয়ক মুশীরঞ্চ পদ্দকং নীলমুপুশলং।
ন্যশ্রেপাদাপ্লক্ষ্যান্ডলাঃ পদ্দা কেশরং।
বিপঞ্চল সহিতেঃ ক্ষাহৈশ্য থক্পলৈঃ।
জলাচকং বিপক্তব্যং পাদশ্যে মথোদ্ধরেৎ।
মঞ্জিতা মধুকং লাক্ষা পভক্ষ মধুয় ফিলা।
কর্মপানেরেতিস্ত তৈলক, কুড়বং তথা।
অজাক্ষীরং তদ্বিতাং প্লেম্ দ্বিনা পচেৎ।
সম্যক্পকং পরং হেত্ম খবন প্রসাদনং।
নীলিকা পিড়কাব্যদ্ধান্ত।ঙ্গাদেব নান্তেং।
সপ্তরাত্র প্রোগ্যে ভবেৎ কনক সন্ধিভঃ।
কুল্ব মান্য মিদং কুলে মশ্বিভাং নির্মিতং পুরা।

সপ্তরাত প্রয়োগের তিবেৎ কনক সন্নিভং।
কুল্কুমান্য মিদং তল মশ্বিভাং নির্মিতং পুরা।
তৈল /২ একদের ; ছা দ্রুদ্ধ /২ ছইদের। কাথার্থ ; —কুকুম, রক্তচন্দন,
লাক্ষা, মঞ্জিষ্ঠা, যফিমন কালাকড়া, বেণারমূল, পদ্মকার্য্ত, নীলোৎপল,
বটেরশুলা, পাকুড়ের উলা, পদ্মকার এবং দশমূল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৮ডোলার পাকার্য জল। ও যোলদের, শেষ /৪ চারিদের।
কল্কার্থ ;—মঞ্জিনা, যফিমধু, লাক্ষা, রক্তচন্দন ও যফিমধু সমভাগে সমস্তে
/া একপে লাক্ষা, এই তৈল ষথাবিধানে পাকপুর্বক অভাঙ্গ প্রদান করিলে
সপ্তরাতির বিধা মুখের উজ্জ্ল শোভা হয় এবং উহাদারা নীলিকা, পীড়কা
প্রবাদ্ধি জানিবে।

কুন্ধু মান্যং তৈলং ।— কুন্ধু মং কিংশুকং লাকা মঞ্জিষ্ঠা রক্তচন্দনং। কালীয়কং পদাকক মাতৃলুক্স সকেশরং।
কুসুমং মধুষ্ঠী চ ফলিনি মদয়ন্তি চ।
নিলেদ্বেরোচনা পদামুৎপলক মনঃশিলা।
কাকোলাদি সমাযুক্তৈ রেতৈরক্ষ সমৈর্ভিষ্ক।
লাক্ষারসপরোভ্যাক তৈলপ্রস্থ বিপাচয়েৎ।
কুক্ষুমাদ্যমিদং তৈল মভ্যন্তাৎ কাকনোপমং।
করোতি বদমং সদাঃ পুর্ফিলাবণ্যকান্তিদং।
দৌভাগ্যলক্ষী জনন বশীকরণমূত্রমং।

তিলতৈল /৪ চারিদের; লাক্ষার কাথ /৮ আটদের ও গব্যত্বয় /৮ আটদের। কল্কার্থ;—কুকুম, কিংশুক, লাক্ষা, মঞ্জিষ্ঠা, রক্তচন্দন, কালাকড়া, পদ্মকার্ফ, ছোলঙ্গদেবুর মূল ও কেশর, কুসুমফুল, যফিমধু, প্রিরন্তু, মাল্লকাপুপ্প, হরিদ্রা, দাকহািনুদ্রা, পদ্মপুষ্পা, উৎপালপুষ্পা, মনংশিলা, গোরোচনা এবং কাকোলাাদিগাণ এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একদের। যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্ব ক অঙ্গে মর্দ্দন করিলে মুখের কান্তি স্মর্ণের স্থার এবং শরীরের পুর্ফি, লাবণা ও কান্তি বর্দ্ধিত হয়। পর্ছ ইছা লক্ষ্মীপ্রদা, দৌভাগ্যজনক ও উত্তম বশীকরণ পিলিয়া জানিবে।

वर्गकर्द्भुष्टः।

মধুকং চদ্দনং কন্ধুঃ সর্বপতি পদ্দকং তথা।
কালীরকং হরিদোচ লোপ্রনৈভিশ্চ কল্কিতঃ।
বিপচেদ্ধিয়তং বৈদ্য স্তৎপক ব্দুগালিতং।
পানাংশ কুন্ধু মং দিক্গং কিন্তু মন্দানলে পছে।
তৎ দিদ্ধং শিশিরেনীরে প্রক্ষিপাককর্বয়েততঃ।
তদেববর্ণকং নাম য়তং বক্ত্র প্রদাননং।
অনেনাভ্যাং সলিপ্তং হি বলীভূতমি কুন্ধাৎ।
নিক্ষলক্ষেকুবিয়াভং স্যাদ্বিলাস্বতী মুখীব্য়

যফিমণু, রক্তচন্দন, কলু (কাগুনীদানা), সর্থপ, পদ্মকা হ কালীরকার্চ, হরিদ্রো ও লোধ এই সকল বস্তু উত্তমপ্রকার কৃটিত করতঃ /৪ মিরিসের স্থত সহ পাক করিবে। অপ্যক্তল অবশিষ্ট থাকিতে স্থত নামাইট্রী বস্ত্রদারা ছাকিয়া লইবে। তংপরে উহাতে স্থতের চতুর্থাংশ কুঙ্কুম ও মোম প্রান্থিক পাক সমাপ্ত করিয়া লইবে। পরে উক্ত স্থতসহ পাত্রটী নীজনজন্ম মধ্যে রাখিবে এবং নীতল হবলে স্থত গ্রহণ করিবে। এই বর্ণক স্থত উপায়ুক্তি মাত্রায় সেবন করিলে শ্রীরের বর্ণ উচ্ছেল হয় এবং উহা মুখে লেপন

করিলে বলীপলিত বিন্ধ হইয়া বদন নিষ্কলত্ব চঞাৰিত্বেরভার স্থকান্তি সমন্তিত হয়।

অরুং ষিকারাং রুধিরে হবসিক্তে সিরাব্যার্টধ নাথ জলৌকসাবা। নিয়ায়ুসিক্তে শিরসি প্রলেপো দেয়োহখবর্চ্চোবসং সৈম্ববাভ্যাং।

> পুরার্ণমথপিণ্যাকং পুরীষং কুরুটদ্য বা মূত্রপিষ্টং প্রলেপো২য়ং শীস্ত্রং হন্যাদরুংষিকাং। অরুংষিত্বং ভৃষ্টকুষ্ঠং চূর্ণং তৈলেন সংযুত্থ।

আকংষিকারোপে শিরাবেধ অথবা জোঁকদ্বারা রক্তমোক্ষণ করা বিধের এবং নিষের অর্জাবশিষ্ট কাথদ্বারা মস্তক ধৌভ করিয়া, ঘোটকের বিঠার রস, ও সৈশ্ববলবণ একত্র মিশ্রিভ করভঃ মস্তকে প্রালেপ দেওয়া কর্ত্তবা।

পুরাতন তিলের খইল অথবা ক্রুটের বিষ্ঠা গোমূরসহ পেষণপুর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে, অথবা ভৃষ্টকুড়চ্ন তৈলস্যু মিশ্রণপূর্বক মন্তকে মর্দ্দন করিলে অকংযিকারোগ বিনক্ট হইয়া থাকে।

দ্বিহরিদ্রে তৈলং

হরিদ্রাবয়ভূনিয় ত্রিফলারিষ্ট / দিনৈঃ এতত্তিল মরুংধীণাং দিদ্ধস্ভ্যঞ্জনেহিতং॥

তৈল /৪ চারিদের; জল ।৬ সের/এবং কল্কার্থ—হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, চিরডা, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া, শিমছাল ও রক্তচন্দন সমভাগে সমস্তে /১ একসের; যথাবিধানে এই তৈত^{্তি} পাকপূর্মক অভ্যঞ্জন করিলে অরুং-্রিকারোগ বিনম্ভ হয়।

দারুণেতু শিরাং বিধ্যেৎ স্বিশ্বভিন্নাং ললাটজাং।
অবপীড়াশিরোবতী নভাঙ্গাং শ্চাবভারয়েৎ।
কোদ্রবাণাং তৃণুকারপানীয়ং পরিধারণে।
কার্যোনারুণ ফুর্নি প্রলেপো মরুসংযুতঃ।
পিরালবী সংগ্রুক কুন্ঠ মান্ট্রিঃ স্টেস্ক্রট্রিঃ।
কাঞ্জিকস্থানিরুল কুন্ঠ মান্ট্রিঃ স্টেস্ক্রট্রিঃ।
কাঞ্জিকস্থানিরুলিরুল মানারুণকাপহা।
সহনী শাৎপল কেশর ষ্টিমপ্রতিলেন্তু সদৃশ মামলকং।
চিত্রুলাভ্যপিচ শীর্ষে দারুণরোগং শ্যনং নয়তি॥

দাৰুণ্

(উক্থিকা বা খুড়নী) রোগ প্রথমত: স্নেছ ও স্বেদ প্রদানপূর্বক ললাটি হি শিরাবেধ করিবে এবং অবপীড়ন নম্ম, পুর্বোক্ত দিহরি দ্রাটেডল দারা শিরোবস্তি ও অভাঙ্গ প্রস্তুতি দারা চিকিৎসা বিধান করিবে এবং নিদা ধান্মের তৃণ দদ্ধ করিয়া ক্ষারজল প্রস্তুত করত: তদ্ধারা মন্তক বাভ করিবে।

পিয়ালবীজ, যফিমধ, কুড় ও সৈশ্ববলবণ ইহাদের দ্বারা অথবা নামকলাই কাঁজিতে ৩ নপ্তাহ অর্থাৎ ২১ দিবদ পর্যান্ত ভিজাইয়া পেষণপুর্বব ভদ্ধারা মন্তকে প্রলেপ দিলে দাৰুণকরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

नीत्नां १ शत्वादक भाव, जिल, यकि मधु ७ व्यामल की अहे मकल जावा পেষণপূর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে বছকালজাত দাকণক রোগও বিন্ট ছইয়া থাকে।

> ত্রিফলারা রজোমাংসী মার্কবোৎপদশারিবেঃ। मरेमञ्जरेवः পঢ়ে देखन मछ। ङ्गान् मृकिथकार जरा ॥

जिलटेडल / 8 हातिरमत ; छल । ७ यालरमत बन्द कल्कार्थ ;-- जिक्लाहर्न, জটামাংনী, ভৃপরাজ, নীলোংপল, অনন্তমূল ও সৈদ্ধংলবণ সমভাগে সমস্তে **बहे टिल शाक शूर्वक मस्टरक मर्फन करितल माक गकरदाग** বিন্ধ্য হয়।

্টিত্রকং দৰিমূল ্বু কোধাতকী সমন্বিতং ।

কল্কং পিন্টা পদ্ধৈতলং কেশশক্ত বিনাশনং ।
তৈল /৪ চারিদের; জল ৬ দের এবং কল্কার্থ;—রক্তচিতা, দন্তীমূল
ও ঘোষাফল সমভাগে সমস্তে / নু একদের, এই তৈল পাকপূর্বক মন্তকে
মর্দ্দন করিলে কেশসম্বন্ধীয় মন্তক খা নিবারিত হয়।
তিল্পান্তিলং ।—
তিপ্তাহিলিঃ শৃতং তৈলংগীক্সরাজ রসেন্তু।

কণ্ডু দারুণ হৎকুষ্ঠ কপালবৈগাধিনাশনং।

জৈল /৪ চারিদের ; ভূলরাজের রদ। 🕏 দের এবং গুঞ্জাফলের কল্ক 🗸১ একদের। এই তৈল পাক করিয়া মর্দ্দন দ্বার ঠুক গু, দারুণক, কুঠ ও কপাল-কুঠ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

ভূপরা জতৈলং ।- ্যা

ভূপরা জস্ত্রিকলোৎ পলশারি লৌহপুমীয় সমন্বিতক।।।।। তৈলমিদং প্রদারুণ হারিকুঞ্চিৎ কেশ-খূনস্থিরকারি॥

ত্তিল /৪ চারিদের, ভৃঙ্গরাজের স্বরম, Ib ষোলদে_{সাকা}এবং কল্কার্থ;— ত্রিফলা, উৎপল, আফ্রান্থির। যথাবিধানে এই ভৈন্_ধ পাক করিয়া অভাঙ্গ প্রদান করিলে দারুণক রোগ বিনষ্ট হয় এবং কেশ কাইইবৈত্য, ঘনত্ব ও স্থিরত্ব জমিরা থাকে।

প্রপৌত্তরীকমধুকং পিপ্পলী চন্দনোৎপলৈঃ। कार्षि रेकरेखन कूड़वछिद्धतामनकीत्रमः। সাধ্যঃ সংপ্রতিমর্যস্থাৎ সর্বলীর্গদাপ্রঃ॥ তৈল /> এক্দের, আমলকীররদ /> দের এবং কল্ফার্থ—পুগুরিয়া-কার্চ, যতিমধু পিপুল, রক্তচন্দন ও উৎপল প্রত্যেকে ২ তোলা যথাবিধানে তৈল পাক করিয়া ভদ্মারা নস্ম গ্রহণ করিলে সর্বপ্রকার শিরোরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

> মালতীকর্বীরাগ্নিক্তমালবিপাচিতং। তৈলমভ্যঞ্জনে শস্তমিক্রলুপ্তাপহং স্মৃতং।

ইদং মুদ্ধিহিতং হন্তি দারুলং নিয়তং নৃণাং॥

ি তৈল /> একদের; গোস্ত্র /৪ চারিদের এবং জাতীপত্র, করবীর, রক্ত-তৈ ও করঞ্জ সমভাগে সমস্তে /। একপোয়া। যথাবিধানে তৈল পাক করিয়া মর্দন করিলে ইজলুপু (টাক) ও দাকণক রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

পাতাশন্ত মজ্জলেপাৎ স্যাথ ছিরোবাদিধকেশত। ইব্দুলুপ্তেশিরাং বিদ্ধানিলাকাশীশত্বিকৈঃ। লেপয়েৎ পরিতঃ কলৈকঃ তৈলং চাজ্জাঞ্জনে হিতং। কুটত্বচং শিখী গাতী করঞ্জকরবীরুক্তিঃ।

আমলকী ও আঁমের আঠির শাঁদ পেষণপুর্নক ছদ্বারা মন্তকে প্রলেপ দিলে ইন্দ্রনুপ্রোগ বিনষ্ট হয়। কিন্তা পুরালুপ্তের সমিহিতন্ত শিরা-বেধ করিরা মনঃশিলা, হিরাক্য ও তুঁতে পুক্র পেষণপুর্বক তদ্বারা মন্তকে প্রলেপ দিলে; অথবা কৈবর্ত্তমুক্তক, ক্রিচিভারমূল, জাতীপত্র, করঞ্জ ও করবীমূল ইহাদের কল্কনহ যথানির্মে তৈল পাক পূর্বক তদ্বারা জভাঞ্জন করিলে ইন্দ্রনুপ্ররোগ বিনাশপ্রাপ্ত হুই। থাকে।

অবগাত পদকৈব প্রচ্ছ রত্ব। পুনঃ পুনঃ।
'গুঞ্জাকলৈশ্চিরং লিপে কেশভূমিং সমন্ত্রঃ!
হস্তিদর্ভমনীং কৃত্বা, পুর্যাকৈব রসাঞ্জনং।
রোমান্যনেনজাই তৈ নৃশাং পানিতলেষপি।
ভল্লাতক রহু কিলওঞ্জামূল ফলেভা একৈকেন।
মরুসহিত্বে বিলপ্তং সুরপতিলপ্তং শনং নয়ভি।
রহতীফু বরস্পিন্তং গুঞ্জাকলম্লেক্রপ্রস্য।
কন্ত্রনিয়্রস্য সভো দাতব্যং প্রস্থিতন্যস্বা।
য়ুইস্যকর্কশৈঃ পত্রৈরিক্রলপ্রস্য গুঞ্জনং।
চুনিতির্গ্রিচঃ কার্য্যক্রিক্রপ্র বিনাশনং।
ছাগন্দীররসাঞ্জনপুট্দগ্ধগজেক্রন্ত্রমনীলিপ্রশং

জায়ন্তেসপ্তরাত্রাৎ খন্যামপিকুঞ্চিতাশ্চিকুরাঃ। মধুকেন্দীবর্মুর্কাতিলাষ্ট গোক্ষীরভূঙ্গলেপন 🕫 অতিরাদ্ভবন্তি কেশাঘন দৃঢ়মূলায়তানৃজবঃ ॥

ইম্রলুপ্তস্থান স্থচী প্রভৃতি দ্বারা বারম্বার পুচ্ছন (আলেখন) করতঃ ঐ ভলে রক্তগুঞ্জা ফল পেষণপূর্বক তদ্বারা পুনঃ পুনঃ প্রলেপ দিলে; অথবা দক্ষ ছন্তিদন্তের মদী (কালী) ও রসাঞ্জন একত্র মিশ্রণ পূর্ব্বক ভদ্মারা 📝 প্রলেপ দিলে, কিঘা ভেলাররস, রহতীফলের রস, ঋঞ্জমুল ও ঋঞ্জাব ইহাদের যে কোন একটা মধুদহ মিশ্রণ পূর্বক ভদ্বারা মন্তকে প্রলেপ দিলে ইল্লনুপ্তরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

কনকধৃত্রাফলের কাঁটা অথবা অস্ত্রদ্বারা ইঞ্চলুপ্ত স্থল পুনঃ পুনঃ পুচ্ছন (विल्थन) पूर्विक भक वृष्डीकलात तम ख्रुशामूल वा ख्रुशकल मह भिवन পুর্বক মন্তকে প্রলে গ দিলে, অথবা ইন্দ্রলুপ্ত (টাকপড়া) স্থান কর্মশ পকালি ছারা ঘর্ষণ পূ-র্বক দেইছলে মরিচচ্ণ মর্দন করিলে ইব্রুলুগু রোগ বিনাশ প্রাপ্ত,হয়।

মন্তকের সমস্তকেশ উ ঠুরা যাইলেও ছাগান্তম, রুসাঞ্জন ও পুটদম ছন্তি-দন্তভুমা একত্র পেমণপুর্বাং, তদ্ধারা মন্তকে প্রালেপ দিলে ৭ সাভ দিবদের

মধ্যেই মন্তকে পুনরার কুঞ্চি ্বকেশ উৎপন্ন হইরা থাকে। যফিম্ব্, নীলোৎপল, স্থাবুষী, তিল, মৃত, গণ্যত্বন্ধ ও ভূল্পরাজ এই সকল দ্রুগাধ্যকি ভদ্দার্থী মন্তকে প্রলেপ দিলে অম্পকালের মধ্যেই কেশ দৃঢ়মূল, ঘন, আয়ত ও কুঞ্চি^{ট্র} হইয়া থাকে।

স্মুহাদ্য^{্য}ৈ তৈলং।— স্মুহীপয়ঃ পয়োহর্কন্য মক্তিবোলাঙ্গলীবিষং। मूबगाङः मरगामृबः तक्ति गरमञ्चवाक्रगी। দিদ্ব্যর্থং তীক্ষতৈল্ঞ গর্ভং ্রা বিপাচিতা। विद्याग्रह्मा भक्रः देखनः शाहि कु नामनः। कूर्पशृष्टिममानाभि जन्मायारनांघर दृती। नियामारनन जात्रदस्य श्रीक्रमातीत्रदर्भे भगा॥

তৈল /৪ চারিদের; গোমুত্র /৪ দের, ছানীমূত্র 🏃 দের এবং কল্কাপ मनमामी छात्र ७ व्याकत्मत्रक्तीत्, ज्नताकः वियलाक्नलित्रा, वाथालनमात्र सूल, খেডসর্যপা, লভাকট্কী ও গুঞ্জামূল সমভাগে সমস্তে /১ সেঁতু। যথাবিধানে এই তৈল পাক করিয়া মর্দন করিলে খালিতা ও ইব্রুলুপ্ত অধ্বাদ্য হউয়া... থাকে।

> বটাব্রোহকেশীনেয়া ক্রেনাদিত্য পাচিতং গুড় চীম্বরসে তৈল মভাঙ্গাৎ কেশরোহনং।

বটাকুর ও ভ্তকেশী (কেছ কেছ জটামাংসী ব্যবহার করিছে বলিয়া থাকেন) চূর্ণ ইছই দ্রব্যের কল্ক এবং উপযুক্ত মাত্রায় গুলঞ্চের স্বর্যের সহিত তৈল বিভিত্ত করিয়া স্থাপক করিয়া লইব। এই জৈল মন্তকে মর্দ্দন করিলে ইক্সলুগু ও থালিতা আরোগ্য হইয়া মন্তকে কেশ প্রক্রচ হইয়া থাকে।

ठमनामाः देखनः।—

চন্দনং মধুকং মূর্কা ত্রিফলা নীলমুৎপলং।
কান্তাবটাবরোহশ্চ গুড়ু চী বিষমেবচ।
লৌহচুনং তথাকেশী শারীবে দ্বে তথৈবচ।
মার্কবম্বরমে নৈব তৈলং মুদ্বগ্রিনা পচেৎ।
শিরস্থাৎ পতিতাঃ কেশা জায়ন্তে কার্কিতাঃ।
দূদ্মূলাশ্র্যা কিশ্বাশ্চ তথা ভ্রমর সন্থিতাঃ।
নম্যেনাকালপ্রিতং নিহন্যাকৈল খুভ্রমং॥
•

তৈল /৪ চারিদের, ; ভৃদরাজের স্বরস ।৬ বোলসের এবং কল্কার্থ—রক্তচন্দন, যফিমধু, মুর্বা, ত্রিফলা, নীলোৎপর্ন, প্রিয়ন্তু, বটাঙ্কুর, গুলঞ্চ, মুণাল, লৌহচুর, ভৃতকেশী, অনন্তমূল ও স্থানীলতা যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক মন্তকে মর্দ্দন করিলে মন্তকে দুলুল ও ভ্রমর সদৃশ ক্লাবর্গ হয় এবং ইশ্র নক্ত এছণ করিলে অকালজাত পালিতাদি নিবারিত হইরা থাকে।

তৈলং সযফিমধুকৈঃ ক্ষারেধাতীফলৈঃ মুভং।
নস্যেদতাং জনমতি কে নাশশাশ্র নিগপাপ।
ত্রিফলা নীলিনীপতাং লৌহভূপর জঃ সমং।
জাবমূত্রেণ সংযুক্তং ক্ষেটীকরণ মুভমং।
ত্রিফলা চূর্ণ সংযুক্তং লৌহচূর্ণং বিনিক্ষিপেৎ।
ঈর্বৎ পক নার্মিকেল ভূপরা জ রসান্থিতে।
মার্মেকস্ত নিক্ষিপ্য সম্যুগ্রভাৎ সমুদ্ধরেৎ।
ততঃ শিরোমুগুরিত্বালেপং দ্বাহ বিচক্ষণঃ।
সংবেষ্টা ক্ললী পত্রেম্মাচয়েৎ সপ্তমেদিনে।
ক্শালয়েৎ ত্রিফলাকাথৈঃ ক্ষীরমাংস র্মাশনং।
কপালয়ঞ্জনকৈব ক্ষীকরণ মুভমং॥

্ৰষ্টিমধুর কলক, ত্বন্ধ ও আমলকীর রম সহ তৈলপাকপুর্বক নম্ম প্রাহণ করিলে কেন্দ্র ও শাক্ষ উৎপন্ন ছইয়। থাকে। তিফলা, নীলবুরাপত্র, লৌহ ও ভূলরাজ এই দকল দ্রব্য সমান পদি-মাণে গ্রহণপূর্বক ছাগ্মুত্তের সহিত পেষণ করতঃ মন্তকে আলেপ দিলে ২০ দিনের মধ্যে কেশ কৃষ্ণবর্ণ হইয়া থাকে।

ত্রিকলাচূর্ন এবং ভূঙ্গরাজের স্বরস একত্র করিয়া একটী নারিকেলের মধ্যে পূরিয়। রাখিবে। ভদনন্তর ঐ নারিকেল ভূলিয়া •উহার মধ্যম ঔষধ্য সকল এহণপূর্বক মস্তকমুগুন করতঃ ভদ্বার। লেপনপূর্বক মস্তকটী কদলী-পত্র দ্বারা বেস্কন করিয়া রাখিবে এবং সপ্তাহপরে মস্তকের বন্ধন মোচনপূর্বক ত্রিফলার কাথে মস্তক ধেইত করিবে এবং রোগীকে দ্বন্ধ ও মাংসরস সহ ভ্রমপথা করিতে দিবে। ইহা দ্বারা শুক্লবর্ণ কেশ কৃষ্ণবর্ণ ও কপালে স্বরঞ্জিত হইয়া থাকে।

উৎপলং পয়সাসার্দ্ধং মাংসং ভূমৌ নিধাপয়েছ।
কেশানাং য়য়্কীকরণং স্নেহনঞ্চ বিশেষতঃ।
ভৃত্বপূষ্পং জনিপ্তপং মেষত্রশ্বং প্রপেষিতং।
ভেনিবালোডা,ভং সমাক্ পাত্রস্থং ভূমাধঃ রুতঃ।
সপ্তাত্রদ্ধতং পশ্লুৎ ভূত্বরাজ রসেন ভূ।
আলোডাগভাঙ্গ চর্দশরো বেইয়িত্বা রশেরিশাং।
প্রাতন্ত্র ক্ষালনং কার্দ্ধ্য মেবংস্যামুর্দ্ধরঞ্জনং।
এবং সিন্ধুরবা নাম্র হুদ্ধু ভৃত্বরদৈঃ ক্রিয়া॥
নীলোৎপল এবং য়্ল একত্র মিন্তু করতঃ লৌহপাতে রাধিয়া ১ মান

নীলোৎপল এবং ত্র্য় একত্র মি ত করতঃ লৌহপাতে রাখিয়া ১ মান পর্যান্ত মৃত্তিকার মধ্যে পুতিয়া রাখিবে তৎপরে এক মানাত্তে উক্ত ঔষধ তুলিয়া তদ্বারা মন্তকে প্রলেপ দিলে শুইবর্গ কেশ সকল ক্রাণ্ডবর্গ ও স্থাচিকণ ইইয়া থাকে।

ভৃগরাজ পুশা ও জবাপূল্প মেয়ীলুগ্নে প্রেমণপূর্বক উক্ত গ্রন্ধারা আপ্তা করিয়া, অথবা সিন্দুর, কচি আত্রের বাঁচ ও শঞ্চনাভিচ্ন একত্র করতঃ ভৃশ্বরাজের রুসে পরিপক্ষ করতঃ লোছপাত্র ছাপনপূর্বক ৭ দিবস পর্যন্ত মাটার মধ্যে পুতিয়া রাখিবে। তদনন্তর সপ্তাহ'ত্তে উহা উত্তোলনপূর্বক ভূদরাজের রুসে আলোভিত করিয়া তদ্বারা মন্তক প্রলিপ্ত করতঃ কদল্পীপত্র দ্বারা মন্তক বেফিত করিয়া রাখিবে এবং পর্দিন প্রাভঃকালে ত্রিফলার কাথ দ্বারা মন্তক ধেতি করিয়া কেলিবে। ইহাতে শুজবর্ণ কেশও ক্রম্প্রেপ হইয়া থাকে।

নরত্ব্যশঙ্খচুর্ণাং কাঞ্জিকসহিত হি সীসঁকং মৃষ্টু ।
লেপাৎ কচান্কলিলোবক্তদ্ধান্তভান্ করোতিংনীল বান্
লৌহনলমেলকলৈকঃ সঙ্গবাকুস্থ ম র্বঃ সদাসায়ী।
পালিতানীহনপশ্যতি গঙ্গাস্থায়ীব নরকাণি।

নিষ্ণ্যবীজানীহভাবিতানি ভূপন্য তোয়েনতথাসন্স্য। তৈলম্ভ তেষাং বিনিহন্তিন্সাং দুগ্ধান্নভোক্তঃ পলিতং সমূলং। নিষ্ণ্য তৈলং প্রকৃতিস্থমেব নস্তোনিসিক্তং বিধিনা যথাবং। মাবেণ গোক্ষীরভূজোনবদ্য জরাগ্রভূতং পলিতং নিহন্তি।

> ক্ষীরাৎ সমাবরবসাৎ ব্রিপ্রস্থে মধুকাৎ পলে। তৈলস্য কুড়বং পকং তনুসাং পলিতাপহং॥

নারীছ্ম্ম, শঙ্খচ্ব ও দীদক এই তিনদ্রব্য কাঁজির দহিত মিশ্রাপৃর্ব্বক ভদ্যরা কেশ প্রালিপ্ত করতঃ আকলের পাতা দ্বারা বন্ধন করিয়া রাখিবে। ইহাতে কেশ নীলবর্ণ হইয়া থাকে।

মণ্ড্র, আমলকী ও জবাপুষ্পা একত্র পেষণপুর্বক ভদ্ধারা মন্তক লেপন-করতঃ স্থান করিলে বলীপলিতাদি বিনম্ট হইয়া গাঁকে।

নিষের বীজ ৭ দিন পর্যান্ত ভৃঙ্গরাজের রেন্দ্র এবং ৭ দিন পর্যান্ত পীত-শালের রনে ভাবনা দিয়া নিজ্যীড়নপূর্বক উ নির ভৈল গ্রহণ করিবে। ছম্মান-ভোজী হইয়া উক্ত তৈল দ্বারা নম্ম গ্রহণ দূরিলে পালিভাদি বিনম্ট হয়। ভাবনা ব্যভিরেকে নিম্ববীজের তৈল গ্রহণপূর্বক ভদ্বারা নম্ম গ্রহণ করিলে একমানের মধ্যে জরাগ্রন্তুত পালিভাদি নিবারিত হয়।

তৈল /> সের; ছগ্ধ /৪ সের; ভূপরাজের রস /৪ সের এবং কল্কার্থ— ্যক্টিমধু ৮ডোলা (/১ অর্ধপোর শী); যথানিরমে এই তৈল পাকপূর্বক • উদ্ধারা নস্থ গ্রহণ করিলে অকালগুলত বিনম্ভ হইয়া থাকে।

মহানীলতৈলং।—
আদিতা বলীঘূলানি ক্ষীমৌনীরকম্যত।
মার্কবং কাক্মার্চিত মধুকং দেবদারু চ।
পূর্গদ শপলাংশানি পিপেল্যান্তিকলাঞ্জনং।
প্রপ্রেক্তির মঞ্জিঠা লোপ্তং ক্রন্য গুরুৎপলাং।
আমান্তিকন্মঃ ক্রন্য মূলানি রক্তচন্দনং।
নীলীভল্যতকান্তীনি কালীলং মন্যন্তিকা।
সোমরাজ্যা শনঃশস্তং ক্র্নেট্রিভিত চিত্রকো।
পূপান্তের্জু নকাশ্র্যাকান্ত্র জন্ম ক্লানিত।
পূপান্তর্জু নকাশ্র্যাকান্ত্র জন্ম প্রেচিত।
পূপান্তর্জু নকাশ্র্যাকান্ত্র জ্বিট্রাট্কং প্রেছ।
বৈভীতক্যা তৈল্যা ধানীর্স চতুগুণিং।
কুর্যাদাদিত্য পাকং বা যাবচছু স্কো ভবেদ্রনঃ।

পানে নন্তক্রিরাঞ্চাঞ্চ শিরোভ্যঙ্গে তথৈবচ। এতচ্চ র্যামায়ুষ্যং শিরসঃ সর্বরোগনুৎ। মহানীলমিতিখাতিং পলিভন্ন মনুভ্যং॥

वर्षात रिजा । धरानामत, व्यामनकीत तम ७८ किस्पि मित्र, अवर कल्लार्च—एर्यावर्ज्यन, नीनितिकीम्न, ज्वताज, काकमाठी, यकिमध् अ तिवास आरणारक २० थन अवर थिभून, जिक्का, तमाञ्चन, भूखितित्राकार्घ, मञ्जिकी, लाध, क्र्याछक, উৎथन, वाँतित वाँठित मां मा, थाम्त्वत कर्मम, थाम्न, त्रज्ञाछक, वेश्यन, एनात वीज, दित्राकम, मिल्रकाभूभ, माम्नवाक्ष, विज्ञानम, नीनवृद्दा, एनात वीज, दित्राकम, मिल्रकाभूभ, माम-त्राक्षीति, शिज्ञान, कानतिहर्म, क्र्यभूष्यमनक्रम, क्र्यभूष्यतिकिक्ष, वांकीवीज, शिज्ञान, कामकन अव्यामकन अव्यामकन अव्यामकन अव्यामकन व्याप्तित्र विज्ञान विज्ञा व्याप्तित्र विज्ञान व्याप्तित्र विज्ञान व्याप्तित्र विज्ञान व्याप्ति विज्ञान व

ভূপরাজরদেপকং নির্থিপিতেন কল্কিতং। মুতং নদ্যেনপলিতং হন্যাৎ সপ্তাহযোগতঃ।

ছত /৪ চারিসের, ভূঙ্গরাজের স্বরুদ। ১ যোলদের এবং মর্রের পিত্ত /১ একদের, যথানিয়মে এই তৈল পাঁহ্রপূর্ত্তক ভদ্বারা নশ্ম গ্রহণ করিলে । পালিত বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কাঞ্জিকপিউশেল্ফলমজ্ঞনিস্কৃদ্র লৌহনে।
যদর্কতাপাৎ পততি তৈলং তন্স্যমুক্ষণাৎ।
কেশানীলানি সন্ধাণাঃ সদ্যঃ স্নিস্ধাঃ ভবন্তিচ।
মরন প্রবণ গ্রীবাদন্তরোগাংশ্চ হন্তদঃ।
কাশীশং রোচনাতৃল্যং হরিতালং রুমাঞ্জনং।
অন্নপিউটঃ প্রলেপোহয়ং রুষণকচছ হিপুতরোঃ॥

শেলু (চালিডা) ফলের মজ্জা কাঞ্জিক সহ পেষণপূর্ব্বক একটী সচ্ছিত্র লৌহপাত্রে স্থাপনপূর্ব্বক রোজে রাখিয়া দিলে উহা হইতে লৌহপাত্রের নীচে চুরাইরা বে তৈল পতিত হইবে সেই তৈলের নস্য অথবা অভাঙ্গ করিলে মন্তকের কেশ সকল দীলবর্ণ ও স্থিম হয়; এবং চর্নুরোগ, কর্নরোগ, শীবারোগ ও দন্তরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

হিরাকস, গোরোচনা, তুঁতে, হরিডাল ও রদাঞ্জন এই সকল বিষ্
কাঞ্জিক সহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে র্যণকচছু ও অহিপৃতনরোগ নিরা
িজ হয়।

পটোলপত্তং ত্রিফলা রসাঞ্জন বিপাচিতং। পীতং মুতং নাশয়ন্তি কুচ্ছামপ্যহিপৃতনাং॥ शहीलशब, हती कती, जामनकी, बहरण अ तमाक्षन अहे मकल कन्क-

দ্রব্য সহ উপযুক্ত, পরিমাণে তৈল পাকপুর্ব্বক ভাহা পান করিলে কুচ্ছুসাধ্য অহিপুতনক্ষেণ অভি সত্ত্ব বিন্ট হইয়া থাকে।

রজনীমার্কবং মূলং পিটং শীতেন বারিণা। ফুল্যং হন্তিবিদর্পং লেপাদ্বরাহদশনাহ্বয়ং ঘোরং ।

ইতি শ্বদ্রোগাধিকারঃ।

হরিদ্রা এবং ভ্রুরাজের মূল একত্র শীতল জলসহ পেছাপুর্ব্বক ভদ্বারা শরীরে প্রলেপ দিলে বিদর্প ও শুকরদংষ্ট্রকরোগ বিনষ্ট হয়।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিএম্থে কুম্ররোগ চিকিৎনা সমাপ্ত:।

অথ মুখরোগাধিকা:

শিরোবিরেচনং ধুমঃ স্বেদঃ কবড়ধারণং। হুতরক্তে প্রয়োক্তব্য মোষ্ঠরোগে কফাত্মকে। ত্রিকটু স্বর্জ্বিকান্দারঃ ক্ষারশ্চ যাবশৃকজঃ। ক্ষৌদ্রযুক্তং বিধাতন্য মেতচ্চ প্রতিসারণং। বেধং দিরালবণং তিক্তদাপানং রুদভোজনঞ। শীতান্ প্রলেপান্ পরিষেচনঞ্চ পিত্তোপসৃষ্টেষধরেষু কুর্য্যাৎ। পিত্তরক্তাভি ঘাতোখান্ জলৌকাভিরুপাচরেৎ। পিঁতবিদ্ধিবচ্চাপি ক্রিয়ারুর্য্যাদশেষতঃ॥

ককজাত ওঠরোগে প্রথমতঃ রক্তমোক্ষণ করিয়া তৎপরে শিরোবি ত্তন, ধুমপান, স্বেদ ও কবলধারণ প্রয়োগ করিবে।

ভিক্ট, সাচিক্ষার ও যবক্ষার এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণপুর্বক মং সহিত মিশ্রিত করছ: তদ্বার। প্রলেপ দিলে কদজন্ত ওঠরোগ নিবারি **ছहेश था**टक।

ুপিত্তাধিক্য ওষ্ঠরোগে শিরাবেধ, বমন, বিরেচন, ভিক্তকশ্বস্ত ও মাংসং শীতল প্রলেপ ও পরিষেচন ধ্যবস্থা করিবে।

পিত্তরক্ত ও অভিঘাত নিমিতিক ওঠরোগে জোঁকদারা বুক্তমোণ 🗹 করিয়া পৈত্তিক বিদ্রধিরোগের স্থায় চিকিৎসা করিবে।

ওঠ প্রকোপে বাভোখে শালুনেনোপনাহরে । মন্তিকে হৈবনস্যেত তৈলবাত হরেস্থভং। স্বেদোভাঙ্গমেহণানং রদায়ন মিহেষাতে। প্রিবেষ্টকং সর্জ্জরসং গুর্গুলুং সুরদার চ। যুষ্টিমধুক চূৰ্ণক বিদ্ধ্যাৎ প্ৰতিসাধনং।

বাতজন্ম ওঠরোগে শালুন মেদ প্রয়োগ করিবে। এবং ভদ্রদার্মাদিবাত-নাশক দ্রুত্য সহযোগে তৈল পাক করিয়া তদ্ধারা শিরোবন্তি ও নর্গ্য প্রয়োগ কবিবে ।

মর্কবিধ গুঠরোগে স্বেদ, তৈলাভ্যঙ্গ, স্নেছপান ও রুমায়ৰ ঔষধ দেবন করিতে দিবে। এবং লোবান বা মোম, ধুনা, গুগ্গুলু, দেবদাক ও यकिष्यु इंहात्मत हुन (तागौत एए घर्षन कतिता।

> মেদোর জবেদিতে ভিন্ন শোধিতে জুলনোহিতঃ। প্রিয়ঙ্গুত্রিফলা লৌ ধ্রুং সক্ষেক্তিং প্রতিসারণং। হিতঞ্চিকলাচুৰ্ং ্রুযুক্তং প্রলেপয়েৎ। তৈলাক্তং সৰ্জ্ঞচূৰ্ণঞ্চ জলপ্ৰেত মনেকংগণিচ। লেপতোবহুধা দুফৌ মোঠক্ষ্ট্ৰণ নাশনং। সর্জ্জকনক গৈরিকধান্যক দ্বত তৈল সিন্ধুসংযুক্তং। দিদ্ধং দিক্থক মধুরে ক্ষুটিতোচ্চাটিতং ব্রণং হরতি॥

মেদোক্ত ওঠরোগে স্বেদ, ভেদ, শোধন এবং অগ্নিকর্মা প্রয়োগ করা কৰ্ত্তৰ্য।

প্রিয় সু. ত্রিফলা, লোধ, এই সকল দ্রন্যের চূর্ণ অথবা ত্রিফলাচূর্ণ মধু সহ মিশ্রিত করিয়া তদ্বারা প্রলেপ দিলে ওঠরোগ বিন্দ্র হইয়া থাকে।

ধুনা চূর্ণ তৈল মহ মিশ্রিত করিয়া অনেকবার জলদারা ধৌত করতঃ তদারা ওঠে প্রলেপ দিলে ওঠক্ষ্ টণ আরোগ্ধ হয়।

ধুনা, স্বৰ্ণগৈরিক, ধনিয়া, ঘৃড, তৈল, দৈন্ধবল্বণ ও মোম এই সকল দ্রুব্য ্ একত্র মিশ্রিত করিয়া ভদ্দার। প্রলেপ দিলে ওঠে বা অধরে ক্ষ্টিত ত্রণ সকল বিন্ধ্য হইয়া থাকে।

> রহত্যাস্ত ফলং পিফু সর্পিষা সহদাহয়েৎ। অगाशृरमा मूर्यरेनव कार्यान ख वज्जी शहः। নীলবায়স জংঘাত্তক বজ্ঞীণাং মূলমৈকৈকং। সচব্য দশনং ক্রিমি পাতনং সদ্যঃ 1 দন্তশূল ক্রিমিছরং বাসাঘূলস্য চর্বণং। বী দপুরকামূলস্ত বাত্ত গীবীজসংযুতং।

বর্ত্তীক্বতং দন্তদন্তং ক্রিমিদন্তক নাশনং।
'মু ইক্রোকা দ্রুপ্ধেন দন্তছিদ্ধং প্রপূরক্ষেৎ।
ফলান্যমানি শীতায়ুক্রকান্নং দন্তধাবনং।
তথাতি ক্রিনাভ্যঙ্গ দন্তরোগং বিবর্জ্জিতং॥

রহতীর ফল মৃত্র্যহ পেষণপূর্ব্বক দন্তমূলে প্রয়োগ করিলে দন্তরোগ দক্ত হয়।

নীলবুহা, কাঁকজ্ঞজ্ঞা, মনদাদীজ্বেরমূল এবং ছাড়যোড়ারমূল; ইহাদের যে কোন একটা গ্রহণপূর্বক চর্বণ করতঃ দস্তে ধারণ করিলে দস্তের ক্রিমিন সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে। বাদকেরমূল চর্বণ করিলেও দস্তমুলের ক্রিমিন সমূহ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ছোলদনেবুরমূল এবং সোমরাজীবীজ একত্র পেষ্ণপুর্ব্ধক বর্ত্তি প্রস্তুত্ত করতঃ দন্তমূলে প্রয়োগ করিলে ক্রিমিদন্তকরোগ বিন্ত হয়। অথবা মনসাসীজের ক্ষীর বা আকন্দের ক্ষীরদারা দন্তমূলের ছিন্তা পূর্ণ করিলে দন্তের ক্রিমি সকল বিন্ত ইইয়া থাকে।

অন্নফল সকল, শীতলজল, রক্ষ অন্ন, দন্তধাবন এবং কঠিন দ্রাব্য ভক্ষণ এই সকল দন্তবোগী পরিভ্যাগ করিবে।

মাক্ষিকং পিপেলী সপির্দ্মিত্রিতং ধারয়েনুখে।
দন্তপূলং হরং প্রোক্তং প্রধানমিদমৌষধং।
মরিচাতি বিষাপাঠা বচাকুঠা ক্ষুদৈত্তথা।
ক্ষৌদ্রেইক্তঃ সদিন্ধুইখ র্গলশুঠীং প্রঘর্ষরেও।
উপজিহ্বাং তৃথাহন্তি গলশুঠী মনেষতঃ।
গলশুঠী হরং তত্তৎ শেকালী মূলচর্ব্বণং॥

শ্বাধ্, পিপুলচ্র ও ঘৃত এই সকল দ্রব্য একত মিশ্রিত করিয়া মুখে ধারণ করিলে দন্তশূল শিবারিত হইয়া থশকে। ইহা দন্তশূলরোগের সর্কোৎকুষ্ট উষধ বলিয়া জানিবে।

মঞ্জিষ্ঠা, অতৈস, আকনাদী, বচ, কুড় এবং দৈশ্ববলবণ ইহাদের সমভাগ চূর্ণ মধ্^দদহ মিশ্রিত করতঃ গলশুগুীতে ঘর্ষণ করিলে উপজিহবা ও গলশুগুী-রোগ নিবারিত হয়। অথবা শেকালিকা (শিউলি) মূল চর্মণ করিলেও গলশুগুীরোগ বিনম্ভ ইইয়া থাকে।

সাধ্যানাং জাহিণীনীন্ত হিতং শোণিত মোক্ষণং।
ভূদিনং ধুনপানক গগু যোত্রণকর্মচ।
বাতিকীন্ত গতেরকে লবগৈঃ প্রতিসারয়েৎ।
সাধ্যরোহিণীরোগে রক্তযোক্ষণ, ব্যন্ধ ধুমপান, গগু মধারণ ও ত্রণ-

হয় |

বিহিত কর্ম প্রযোজ্য। এবং বাতিক রোছিণীরোগে প্রথবে বক্তমোকণ করিয়া ভৎপরে দৈৰবলব ছারা মর্দ্দন করিবে।

> শীতাদেহতরভৈ চ ভোরৈন্গার সর্বপান। নিক্ষাথ্য ত্রিফলাইঞ্চব কুর্য্যাগণ্ডুষ ধারণং। প্রিয়ঙ্গবশ্চ মুস্তাচ ত্রিফলা চ প্রলেপয়েই।।

শীতাদরোগে প্রথমতঃ রক্তমোক্ষণ করিয়া তৎপরে শুঠী, দর্ষণ ও ত্রিফলা এই দকল দ্রব্য দ**হ কাথ প্রস্তুত করতঃ তাহার গণ্ড**ুষ ধারণ করিবে; এবং প্রিয়স্থ্র, মুথা ও ত্রিফলা জলসছ পেষণপুর্ব্বক তদ্বারা আলেপ দিবে।

कूर्रानाः हुनः।-

কুষ্ঠং দাৰ্ল্লীলোগ্ৰমকং সমঙ্গাপাঠাতিক্তাতেজনীপীতিকাচ। চ্ৰ্ণং শস্তং বৰ্ষণ্ড তদ্বিজানাং রক্তত্রাবং হত্তিকগুরুজাক॥ কুড়, দাৰুহরিদ্রা, লোধ, মুথা, মঞ্জিষ্ঠা, পাঠা, কট়কী, মুর্বা ও ছরিদ্রা ইহাদের চূর্ণ দম্ভগুলে ঘর্ষণ করিলে দন্তমূলের রক্তজাব, কণ্ড ও বেদনা বিনষ্ট

কাশীশাদ্যং চুৰ্বং।---

কাশীশলোধ্র কৃষ্ণানমঃ শিলাল প্রিয়ন্ত্র চব্যোত্থং। চূর্ণং মধুক সংযুক্তং শীতাদে পৃতিমাংস হরং ॥

হিরাকণ, লোধ পিপুল, মনাশিলা, ছরিতাল, প্রিয়সু ও চই ইহাদের চূর্ণ মধুদহ মিশ্রণপূর্বক প্রলেপ করিলে দক্তমুলের শীতাদরোগ ও দন্তমূলের পুতিমাংস নিবারিত হইয়া থাকে।

কাণকচূৰ্ণং ৷—

গৃহধূম যবক্ষার পাঠাব্যোষ রসাঞ্জনং। ভেছেগহ্বাত্রিফলালোহং চিত্রকঞ্বিচুর্ণদেও। সক্ষৌদ্রং ধারয়েদেতৎ গলরোগ বিনাশনং। কাণকং নামভচ্চুৰ্ণং দন্তাস্য গলরোগনুৎ ॥

গৃছের ঝুল, যবক্ষার, আকনাদী, শুগী, পিপুল, মরিচ, রুমাঞ্জন, চই, হরী-তকী, বহেড়া, আমলা, লৌহ ও ব্রক্তচিতা, এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে এছণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া ভৎপরে উহা মধুসহ মিপ্রিত করিয়া মুখে থারণ করিলে সর্ব্ধপ্রকার গলবোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

পীতকচুৰ্ণং।—

মনঃশিলা যবক্ষারং হরিতালং স্টেম্বরং। দাৰ্কীত্বক্যোতিভচ্চ ৰ্ণং মান্ধিকেন সমাযুতং। মুর্চ্ছিতং মৃতভাতেন কণ্ঠরোগেমু ধারয়েৎ।
। মুখ্রোগেমু চ শ্রেণ্ডং পীতকং নাম কীর্ত্তিতং।

মনঃশিলা, যবক্ষার, হরিতাল, সৈশ্ববলবণ ও দাকহরিদ্রার ছাল এই সকল দ্রুব্য তুল্যমাত্রায় গ্রহণপূর্বক উত্তমপ্রকার চূর্ণ করিবে। তৎপরে উহা মধুসহ মিশ্রিত একটী দ্বতভাতে আলোড়ন করিয়া লইবে। ইহা মুখে ধারণ করিলে সর্ব্ববিধ মুখরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

স্বল্পখনিরানি গুড়িকা।—

খনিরস্য তুলাং সম্যক্ জলজোণে বিপাচিতং।
শেষেহতভাগে তত্ত্রব প্রতিভাগং প্রদাপয়েত।
জাতীকপূর পূগানি কক্ষোলক ফলানিচ।
ইত্যেষা শুড়িকা কার্যাঃ মুখ সৌভাগ্য বর্দ্ধিনী।
দক্তোষ্ঠ মুখরোগেয়ু জিহ্বাতালামরেয়ু চ ॥৭৮

খদিরকাষ্ঠ । ২॥ • লাড়ে বারদের, পাকার্থ জল ৬৪ দের দেখি ৮ দের। এই কাথে জাতীফল, কপুর, স্থারি, কাঁকলা ও জায়ফল ইহাদের প্রত্যেতাকের দতোলা মাত্রায় নিক্ষেপ করিয়া যথানিথি পাক করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই ওড়িকা দেবন করিলে মুখের কান্তি বর্দ্ধিত হয় এবং দন্তরোগ, ওঠরোগ, মুখরোগ, জিহ্বারোগ ও তালুরোগ নিন্ট হইয়া থাকে।

রহৎ খনিরাদি বটিকা।—
গায়ত্রী সারভলয়েরিমবলকলানাং
সার্দ্ধস্থলা মুগল মুমু ঘটেশ্চভৃর্ভিঃ।
বিদ্যাপাদ মবশেষ্য স্থ্যপুত্ঃ
শায়ঃ প্রেদ্ধশনৈ মু দুপাবকেন।
উন্মিন্ ঘনত্ব মুপ্রিচছতি চুব্দেষাং
শ্রুম্ ফিপেন্ড কর্বড় গ্রহভাগিকানাং।
এলা মুণাল সিভ্রন্দনামু
শ্রামা তমাল বিক্রসা ঘনলৌহ্যবী।
লক্ষ্যক্রয়র সাঞ্জনধাতকী ভান্দী
পুপ্রতিরিক কর্টস্লটকট্ ফলানাং।
পদাহ্ললোপ্রবটরোহ্যবাদকানাং
মাংসীনিশাসুরভিবলকলসংযুতানাং।
কক্ষোলজাতীকলকোষ লবন্ধকানি

চুণীকতা নিবিদ্যীতপ্লাংশকানি।
শীতেইবতার্য্য ঘনসারচতুষ্পলঞ্চ।
কিপ্তাকলায়সদৃশীগুড়িকাঃ প্রকুর্যাৎ
শুক্ষামুখেবিনিছিতা বিনিবারয়ন্ত্রি
রোগান্ গলোষ্ঠবসন্দ্রিজতালুজাতান্
কুর্ত্যু খে সুরভিতাং পটুতাং রুচিঞ্ছ ভৈষ্যুম্পারং দশনগং রসনালঘুত্বং।

খদিরদার ।২। দাড়ে বারদের ও গুরেবাব্লা ॥৫ দের, জল ২৫৬ দের
শেষ ৬৪ দের। এই কাথ মৃত্ন আগ্রিমংযোগে পাক করিতে করিতে যখন
দেখিবে ঘন হইয়াছে, তখন উহাতে এলাচি, বেণারমূল, শ্বেডচন্দন, বালা,
রক্তচন্দন, প্রিয়পু, তমালপজ্ঞ, মঞ্জিচা, মুথা, যফিমরু, বরাহজান্তা, হরীতকী,
আামলকী, বহেড়া, রদাঞ্জন, ধাইফুল, নাগকেশর, পুগুরিয়া কার্চ্চ, গেরীমাটী,
দাক্তরিদ্রা, কট্ফল, পদ্মকার্চ, লোধ, বটাঙ্কুর, ছরালভা, জটামাংসী, হরিদ্রা
ও দাক্তিনি ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ ভোলা এবং কাঁক্লা, জাভীফল,
জৈত্রী ও লবল চূর্ণ প্রত্যেকে ৮ ভোলা পরিমাণে নিক্ষেপ করিবে এবং
শীতল হইলে ৪ পল পরিমাণ কপুর মিশ্রিভ করিয়া কলায় প্রমাণ বটীকা
প্রস্তুভ করিয়া স্ব্যাত্রেপ শুষ্ক করিয়া লইবে। ইহা মুখে ধারণ করিলে
গলরোগ, ওন্ঠরোগ, দন্তরোগ, জিহ্লারোগ ও ডালুগতরোগ আংরোগ্য
হইয়া থাকে। অধিকন্ত ইহাদারা দন্তদমূহ দৃঢ় ও মুখের জড়তা প্রশান্ত
হইয়া থাকে।

সপ্তামৃতরসঃ'।—

মৃতস্তাত্রকং ওুল্যং মৃতলৌহং শিলাজতু। গুগ্গুলুঞ্চ শিলাতাপ্যং সমাংশ মধুনালিহেং। মাসমাত্র প্রয়োগেন মুখ্রোগং বিনাশয়েৎ॥

ইতি মুখরোগাধিকারঃ।

রদদিন ব, অভ, লৌহ, শিলাজতু, গুণ্গুলু, মনঃশিলা এবং স্থাপাক্ষিক এই সকল দ্রব্য প্রভ্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক মধুসহ উত্তমরূপে মিশ্রিত করতঃ লেহন করিলে ১ একমাদেও মধ্যে মুখরোগ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিএন্থে মুখরোগ-চিকিৎদা নমাপ্ত:।

অথ কর্ণরোগাধিকারঃ।

কপিথ মাতুলুঙ্গায়ু শৃঙ্গবের রসৈঃ পৃথক।
ফুখোস্ফৈঃ প্রয়েৎ কর্ণং কর্ণশূলোপশান্তয়ে।
শৃঙ্গবেরঞ্চ মধুচ সৈদ্ধবং তৈল মেব চ।
কর্কিং কর্ণয়োর্দের মেতদ্বা বেদনাপহং।
লক্ষনাদ্র কি শিগুণাং স্বস্গামূলক্স্য চ।
কদলাগি স্বর্সঃ শ্রেণ্ডাঃ কতুক্তঃ কর্ণপূরণে।

অর্কস্যপত্রং পরিণামপীতমাজ্যেন লিপ্তং শিখিনাচ তপ্তা। অপীড্যতোরং প্রবণে নিষিক্তং নিহন্তিশূলং বহুবেদনঞ্চ।

তীজ্রশূলান্বিতে কর্ণে সশব্দে ক্লেদবাহিনী। বস্তমূত্রং ক্লিপেৎ কোক্যং দৈশ্ববেন বিচুর্নিতং॥

·করেদ্বেলের শাঁস, মাতুলুঙ্গের কেশর এবং আদি। একত্র পেষণপুর্বক ঈষত্রগু করঙঃ ভদ্ধারা কর্ণপুরণ করিলে কর্ণশূল নিবারিভ হয়।

আলার রস, দৈশ্বলবণ, মধু ও ভৈল একত্র মিশ্রিত করতঃ ঈষত্বয় করিয়া কর্ণে পূরণ করিলে কর্ণের বেদনা নিবারিত হইয়া থাকে।

রন্থন, আদা, শজিনা, রক্তশজিনামূল ও কদলী ইহাদের স্বর্দ ঈষত্বসং
করতঃ ওদারা কর্ণপূরণ করিলে কর্ণশূল বিনয়্ট হইয়া থাকে।

পীতবর্ণ পরু আকন্দপাত। মত মাখাইয়া অগ্নিসন্তাপে গ্রম করতঃ নঙ্গীড়ন করিলে যে রস বাহির হইবে, তদ্বারা কর্ণপূর্ণ করিলে কর্ণশূল ও বিবিধ বেদনা বিন্তী হইয়া থাকে।

- ° তীত্রশূল, শব্দ ও ক্লেদ সংযুক্ত (পূররক্তাদি) কর্ণে ছাগমূত্র ঈষত্বফ করতঃ সৈষ্কৃবলবর্ণ চূর্ণ সহযোচগ প্রদান করিবে।
 - ৃবিস্বাদ্যং তৈলং।— হিঙ্গুত্বসুরু শুঠীভিঃ সাধ্যং তৈলস্ত্র সার্ষপং। কর্ণশূলে বিধানঞ্চ পূরণং হিতমুচ্যতে॥

দর্ধপত্তিল /১ একদের, জল /৪ চারিদের এবং কল্কার্থ ;— হিন্তু, ভিত-লাউ ও শুগ্রী দমভাবে দমত্তে /। একপোয়া যথাবিধানে এই তৈল পাহ করিয়া তদ্বারা কর্ণপুরণ করিলে কর্ণশূল নিবারিত হয়।

ক্ষারতৈলং।—

বালমূলক শুঠীনাং ক্ষারোহিন্দু সনাগরং। শতপুজাবচাকুষ্ঠং দারু শিগ রসাঞ্জনং। দৌবজলং যবকার স্বর্জিকৌন্তিন নৈদ্বং।
ভূজ্জগ্রন্থি বিড়ং মুক্তং মধুশুক্তং চতৃত্ত নং।
মাতৃলুঙ্গব শৈচব কদল্যা রস এবচ।
তৈলমেভির্বিপক্তব্যং কর্ণশূল হরং পরং।
বাধিগ্যং কর্ণনাদক প্রপ্রাবশ্চ দারুণঃ।
পূর্ণাদ্যা তৈল্যা ক্রিময়ঃ কর্ণসংস্থিতাঃ।
ক্রিপ্রং প্রণাশং গচ্ছন্তিক্ষণত্রেয়স্য শাসনাৎ।
ক্রারতৈল্মিদং প্রেষ্ঠং মুখদন্তাময়াপহং॥

देखल / 8 निर्दासित ; मन् कु उ खेखा । ७ स्मित्र, हिल्ल स्नित्र तम । ७ स्मित्र ख कपलोम् लित तम । ७ स्मित्र व वर कल्कार्थ ; — वालक, मृला, ख भी हेशा पत कात्र, हिन्नू, ख भी, मल्लूका, वन, क् इ. (प्रवपाक, मिक्नाम् ल, तमाक्षन, मिक्नाम, विव्लवन ख लवन, यवकात्र, मान्कितात, मान्धतीलवन, क् इक्षित्र कि विव्लवन ख मूथा ममजारा ममस्ख /> वक्सित्र यथानिधात वहे देखल शांक कि ति व्रा छम्नात्र। कर्नश्वन कर्तित्व कर्नग्ल, वाधिका, कर्ननाप, श्रुच्चाव ख कर्नगं कि कि (शांका) मकल विनक्ष हेशा थारक।

মধুপ্রধানং শুক্তন্ত মধুশুক্তং তথা পরং।
জমীরদ্য ফলরদং পিপ্পলীমূলদংযুতং।
মধুভাওে বিনিক্ষিপ্য ধান্যরাশো নিধাপয়েৎ।
মাদেনৈতৈর্জ্ঞাতরদং মধুশুক্ত মুদাহতং॥

মধুপ্রধান শুক্তকে মধুশক্ত বলা যায়। তাহা প্রস্তুত করিবার প্রণালী—
জন্মরনেবুর রম ও পিপুলমূল একত্রিত করিয়া একটা মধুপূর্ণ ভাওমধ্যে
নিক্ষেপ করতঃ ধাতারাশির মধ্যে > এক মাম রাখিয়া ভাহা এছণ করিলে
ভাহাকে মধুশক্ত বলা যায়।

কর্ণনাদে কর্ণক্ষেড়ে কটুতৈলেন পূরণং। নানবাধিধ্যয়োঃ কুর্যাৎ বাতশুলোক্ত মৌনধং॥

কর্ণনাদ ও কর্ণক্ষেড় রোগে কটুতৈল দারা কর্ণপূরণ এবং কর্ণনাদ ও বধিরতা রোগে বাতশূলোক্ত ঔষধ সকল প্রয়োগ করা কর্ত্ব্য।

> চূর্ণপঞ্চমায়ানাং কপিথান সংযুতং। কর্ণশ্রাবে প্রশংসন্তি পুরণং মধুনাসহঃ॥

প্রক্রত এত্থে কর্ণআবোক্ত ভিক্তকাদি পঞ্চরক্ষের বল্কলচ্ব অর্থাৎ পা।।
হরীত্তনী, লোধ্য মঞ্জিষ্ঠা ও আমলকী এই পঞ্চ দ্রব্যের চ্ব করেদবেলের রসে
মিশ্রিত করত: মধু সহযোগে কর্বপুরণ করিলে কর্ণআব (কর্ব হইতে দূষিত
পূররক্তাদিআব) বিনক্ট হইয়া থাকে।

শমুকদ্যচ মাংদেন কটুতৈলং বিপাচিতং। ' তক্তপূরণ মাত্তেণ কর্ণনাড়ী প্রশাম্যতি।

শস্ক্মাংসের সহিত কটুতৈল পাকপুর্বক ভদ্ধারা কর্ণপুর্ব করিলে কর্ণনাড়ী (কর্ণমধ্যে ক্ষত হইয়া দালী বা শোষ হওয়া) প্রশমিত হইয়া থাকে।

কর্ণাক্সা ভৈষজ্যং কুর্যাৎ ক্ষত বিসর্পবৎ।

নাড়ীস্বেদোথ বমনং ধুমোমূর্দ্ধ বিরেচনং।
বিধিশ্চকফহাসর্বঃ কর্ণকগুং ব্যপোহতি।
স্বেদয়িত্বাতু তৈলেন স্বেদনং প্রবিলায়াতি।
শোগয়েৎ কর্নগুথস্ত ভিষক সম্যক শলাকয়া॥
কর্ণপাকরোগে ক্ষত বিদর্পোক্ত ঔষধ সকল প্রয়োগ করিবে।
নাড়ীস্বেদ, বমন, ধূম, শিরোবিরেচন এবং কচনাশক ক্রিয়াসমূহ প্রয়োগ
করিবে কর্ণকগু প্রশমিত হইয়া থাকে।

কর্ণগৃথরোগ ইছলে তৈলদ্বারা কর্ণের মধ্যস্থলে ক্লিন্ন করিয়া স্বেদ প্রদান• পূর্ব্বক শলাকাদ্বার। কর্ণের মল বহির্গত করিয়া ফেলিবে।

লান্ধলীমূলজরসং জুগ্বণেনাবচুর্নিতং।
প্রয়েৎ ক্রিমি কর্নস্ত জন্তু নাং নাশনং পরং।
ক্রিমিকর্নবিনাশার্থং ক্রিমিল্লং যোজয়েৎ বিধিং॥
বার্ত্তাকুধৃমক্ষহিতঃ সর্ধপম্বেহ এবচ।
হলিসুর্য্যাবর্তব্যাধ স্বর্মে নাত্র প্রিতে।
কর্নেপ্তন্তি সহদা সর্বাস্ত ক্রিমিজাতয়ঃ।
বিদ্রেধীচাপিকুর্বীত বিদ্রধ্যক্তস্তমেষধং॥

• বিষলাঙ্গলিয়ার মূলের রুম সহ ত্রিকটুচ্ণ মিপ্রিত করতঃ ওদ্ধারা কণপূরণ করতঃ ক্রিমনাশক প্রক্রিয়া সকল প্রয়োগ করিলে কর্ণগত ক্রিমিসমূহ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

বার্ত্তাকুর ধুম এবং সর্ঘপতৈল কর্ণমধ্যে প্রয়োগ করিলে কর্ণস্থ ক্রিমিনকল বিনফ হয়। অথবা ঈফলাঙ্গলিয়ার ও স্থাব্যব্তির রুসে ত্রিকটুচ্ব বিশ্রেড করিয়া ডদ্বারা কর্ণপুরণ করিলে কর্ণগত ক্রিমিনকল কর্ন হইতে পতিত হইয়া যায়। কর্ণবিদ্রধিরোগে ভিদ্রধিরোগাধিকার ক্থিত ঔষধ সকল প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

শতাবরীতেলং।—

শতাবরীবাজীগন্ধাপয়সৈয়রও জীরকৈঃ। তৈলং বিপক্ষ সক্ষীরঃ পালীনাং পুষ্টিরুৎ,পরং॥ শতাবরী, অশ্বগদ্ধা, ক্ষীরকাকোলী, এর এবীক্ত ও জীরা; এই সকল এবা সমানভাগে /।• একপোয়া ও হৃদ্ধ /৪ চারিসের সহবোগে /১ একসেঞ্ছ তৈল পাক করিবে। এই ভৈল কর্ণমধ্যে প্রয়োগ করিলে কর্ণপালী (কাণের পাড়া) পরিপুষ্ট হইয়া থাকে।

> গুঞ্জাচূর্ণযুতেজাতে মাহীষক্ষীর উদ্ধৃতাং। নবনীতং তদভাঙ্গাৎ কর্ণপালী বিবদ্ধনং॥

ইতি কর্ণরোগাধিকারঃ।

শুঞ্জাফল চুর্ণ করিয়া মাহিষ ছফ্ষনহ মিশ্রণপূর্বক দ্বি পাছিয়া ভাহ। হইতে নবনীত উদ্ধৃত করত: উহা দ্বারা মর্দন করিলে কর্ণপালী (কর্ণের পাডা) বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিক্রন্থে কর্ণরোগ চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ নাসারোগাধিকারঃ।

যঃ পিবতি শয়নকালে শয়নর ঢ়ঃ সুশীতলং ভূবি।

দলিলং পীনসমুক্তঃ সমূচ্যতে তেন রোগেণ।

দোষণং গুড়সংমুক্তং দ্বিধাং দধ্যমভো দনং।

নবপ্রতিশ্যায়ং হরং বিশেষাৎ কফপাচনং।

প্রতিশ্যায়েন বেশস্তোমুষশ্চিকাছদোক্তবঃ;

ততঃপক্ষং কফংজ্ঞাত্বা হরেচ্ছীর্যবিরেচনৈঃ।

পঞ্চুলীশৃতং ক্ষীরং স্যাচিত্রক হরিত্কী।

সপিও ডিঃ ষড়ঙ্গশ্চ যুষঃ পীনসশান্তয়ে॥

যে ব্যক্তি শরনকালে শ্যাক্ষি ছইরা অধিক পরিমাণে শীতল জল পান-পুর্বাক নিদ্রিত হয়, সে সত্ত্বই পীনস রোগ হইতে মুক্ত হইতে পারে।

মরিচচ্প ও গুড়মহ অলপথি দেবন করিলে নবজাত প্রতিশ্যায়রোগ নিবারিত হইয়া থাকে এবং ককের পরিপাক দাধিত হয়।

তেঁতুলপত্রের যূস পান করিলে ত্তন প্রতিখ্যার এবং শিরোবিরেচন, শিরোভাঙ্গ, স্বেদ ও ঘৃতপানাদি দ্বারা পক্ষ কক্ষদংযুক্ত প্রতিখ্যার রোগ বিনুষ্ট হইয়া থাকে।

পঞ্চমূলীসহযোগে প্রস্তুত ভ্রম্ম, চিক্সকহরীতকী, সর্পিগুড় ও ষড়ঙ্গমূষ সেবন করিলে পীনসরোগের শান্তি হইয়া থাকে।

क्ट्रिक्ट्मिक्ट्मिक्ट्मिक्ट्मिकः ।

চিত্ৰকহরীতকী।—

চিত্রকদ্যামলক্যাশ্চ গুড়ু চী দশমূলজং।
শতং শতং রসং দত্বা পথ্যাচুর্ণাঢ়কং গুড়াৎ।
শতং পুচেৎ ঘনীভূতে পলদ্বাদশকং ক্ষিপেৎ।
ব্যোষ বিজ্ঞাতয়োঃ ক্ষারাৎ পলার্দ্ধমপরেহনি।
প্রস্থার্দ্ধং মধুনোদৃত্বা যথাগ্রাদ্যাদতন্ত্রিতঃ।
রদ্ধমেংগ্রেং ক্ষয়ং কাসং পীনসং ভ্রন্তরং ক্রিমীন্।
গুল্মোদাবর্ভভূর্ণাম খাসান্ হন্তি রসায়নং॥

রক্তিতা, আমলকী, গুলঞ্চ ও দশমূল ইহাদের প্রত্যেকের কাথ ।২॥।
সাড়ে বার্দের, হরীতকী চূর্গ /৮দের এবং গুড়।২॥। সাড়ে বার্দের। যথাবিধানে ইহা পাক করিতে করিতে ঘনীভূত হইয়া আসিলে উহাতে ত্রিকটু
ও ত্রিজাতক চূর্গ মিলিত ১২ পল এবং ববক্ষার চূর্গ ৪ তোলা মাত্রায় প্রক্ষেপ
দিয়া আলোড়িত করিয়া নামাইবে। তৎপরে শীতল হইলে /২ দের মধ্
মিপ্রিত করিয়া লইবে। এই রসায়ন ঔষধ দেবন করিলে অগ্নি বর্দ্ধিত হয়
এবং কয়, কাদ, পীনস, ক্রিমি, গুল্ম, উদাবর্ত্ত, অর্শাঃ ও শ্বাসরোগ বিন্ত
ইইয়া থাকে।

ব্যান্ত্রী বরাশিগ্র স্বরস ব্যোষ সৈম্ববৈঃ। পাচিতং লবণং তৈলং পৃতিনাশগদঞ্জয়েৎ ॥

কণ্টকারী, দন্তীমূল, জিফলা, শজিনাছাল, ভুলমী ও নৈশ্ববলবণ; এই সকল দ্রব্যের কল্কসহ উপযুক্ত মৃাত্রায় তৈল পাক করিয়া নম্ম গ্রহণ করিলে নামাপাক (পুতিনস্ম) রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

'নাসাপাকেশিভন্তং সমিধানং কার্যাং সর্বাং বাহ্বমভ্যস্তরঞ্চ। শুঠীকুসীকণাবিল্ডীক্ষাকল্কক্ষায়বৎ। সাধিতং তৈলমাজীয়া নস্যক্ষবপুরুক্তপ্রবুৎ॥

•নাদাপাকরোণে বাহন্ত-আভ্যান্তরিক পিত্তনাশক ক্রিরা সকল প্রয়োশ করিবে। শুণ্ঠী, কুড়, পিপুল, বেলমূল ও দ্রান্ধা (কিদমিদ) এই লকল দ্রব্য •সহযোগে তৈল বা ছন্ত যথাবিধানে পাক •করিরা ভদ্বারা নম্মঞহণ করিলে ক্ষরপু (হাঁচি) শ্লোগু বিন্দ্ধ হ≷য়া থাকে।

> ভক্ষরতিভুক্তমাত্রে সলবণমুৎ স্বিন্নমানমভ্যক্তং। সঙ্গয়তি সর্ব্বসমুখং চিরঙ্গাতঞ্চ প্রতিশায়ং॥

আহারান্তে শিদ্ধ মাষ্কলাই অভ্যন্ত উঞ্জ অবস্থায় লবণসহ সেবন করিলে বছকালজাত সর্কবিধ প্রতিশ্রায় রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

শিখরীতৈলং ৷—

গৃহধূমকণাদার ক্ষারনজ্ঞাহ্ব দৈন্ধবৈঃ।
দিন্ধং শিখরিবীকৈশ্চ তৈলং নাদাশ্যাংহিতং ॥

গৃহধূম, পিপুল, শেবদাৰু, যবক্ষার, ছরিন্দ্রা, দৈন্ধবলাবণ ও অপামার্গের বীজ এই দকল কল্ক দ্রব্যাসহ উপয়ুক্ত পরিমিত তৈল পাকপুর্যক নম্ম এছণ করিলে নামার্শরোগ প্রশমিষ্ক হইয়া থাকে।

হ্বৰ্কান্যং তৈলং।—

হ্ববাভব্যকলং মাষকুলখো বংশপত্রিকা।
জলস্থলোড়বৌ কর্ন মোরট খরমঞ্জরী।
দণ্ডোৎপল্য্য মূলানি নিক্ষাথ্যাই গুণে জলে।
তৎপাদ শেষিতং তৈলং তুল্যং দত্মা বিপাচিতং।
তত্তিলং প্রতিমর্ষেন আহারাভ্যাং জয়েদ্ তুং।

তৈল /৪ দের; কাথার্থ,—দূর্ব্বা, চালিতা ফল, মাষকলার, কুলঅফলার, বংশপত্রিকাতৃণ, স্থলজ ও জলজ দিবিধ কর্ণমোরট (নীলপুপা দীর্ঘপর্ণ তৃণ, বিঃ) অপামার্গ ও দণ্ডোৎপলের মূল এই দকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /৪ দের, জল ৸২ দের, শেয /৮দের, যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক তদ্বারা প্রতিমর্ঘ (নস্তা) শ্রহণ করিলে বিবিধ প্রকার কর্ণরোগ প্রশমিত হয়।

ব্যোষাদিচূর্ণং।—

ব্যোষ্চিত্রকতালীশ তিন্তিড়ীকান্ধবেত্সাং।
সচব্যজাজীভূল্যাং শমেলাত্মকপত্রপাদিকং।
ব্যোষাদিকঞুর্ণমিদং পুরাণ শুড় সংযুতং।
পীনসম্বাসকাসম্বং রুচি স্বর করং পরং॥

ইতি নাদারোগাধিকারঃ।

ভগী, পিপুল, মরিচ, রক্তচিতা, তালীশপত্র, তিন্তিড়ী, অমবেছদ, চই ও জীরা প্রত্যেকে একভাপ এবং নএলাচি, দাকচিনি ও তেজ্ঞপত্র প্রত্যেকে ,দিকিভাগ, সমস্ত দ্রব্য উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় পুরাতন গুড় দহবোগে দেবন করিলে পীনদ, খাদ ও কায়রোগ বিনক্ত হয়। পরস্ত ইহা কচিকর ও স্বরবর্দ্ধক বলিয়া জানিবে।

इंडि व्यातार्ग-विद्यामिकारम् नामाद्वार्ग विकित्मा ममाथ ।

অথ চক্ষুরোগাধিকার

কফজে লজ্ঞনং স্বেদো নস্যং তিক্তান্নভোজনং। তীক্ষৈঃ প্রথমনং কুর্য্যাৎ তীক্ষৈকৈবোপনাহনং। ফর্নিজরুকাক্ষোত কপিথ বিল্পভূরপীলু সুরসার্জ্জভঙ্কৈঃ। স্বেদং বিদ্যাদ্থ্য প্রলেপং বর্হিন্ত শুগী সুরদারুকুঠিঃ॥

কফজ চন্ধুরোগে লঙ্ঘন, স্বেদ, নস্থা, তিক্তান্নভোজন এবং তীক্ষ্চূর্ণ দ্রব্য দ্বারা নস্থা ও তীক্ষ্ণ উপনাহ প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য।

তুলদী, হাফরমালী, কয়েদ্বেল, শালিঞ্চশাক, পীলু, কৃষ্ণতুলদী ও শ্বেড-তুলদী, এই দকল দ্রব্য দারা মৃদ্ধ স্বেদ দিলে অথবা বালা, ওঁঠ, দেবদাৰু ও কুড়; এই দকল দ্রব্য পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে চকুরোগ প্রশাষিত হয়।

শুর্গী নিমদলৈঃ পিণ্ডঃ মুখোফৈঃ স্থাপের বিঃ।
ধার্য চন্দুবিসংক্ষেপা চেছাথকণ্ড, ব্যপোহতি।
বল্কলং পারিজাতঞ্চ তৈল কাঞ্জিক সৈত্ধবং।
কফোন্ড,তান্দিশূলমং তরুম্বং কুলিশং যথা।
হরিদ্রে মধুকং দোক্ষা দেবদারু চ পেবয়েই।
আজেন প্রসা শ্রেষ্ঠং অভিষ্যন্দে তদপ্তনং।
গৈরিকং সৈন্ধবং রুফা তগরক যথোভরং।
পিন্টংরিরংশতোহন্তির্কা শুড়িকাঞ্জন মিষাতে।
প্রপৌণ্ডরীক যন্ট্যাহ্ব নিশামলক পদ্দকৈঃ।
শীক্তর্মধুসমাযুক্তেঃ দেকঃ পিভান্ধিরোগনুই॥

শুঠ, নিমপাত। এবং কিঞ্চিং দৈশ্ববলবণ একত্র পেষণপূর্ব্বক ঈষত্নষ্ট কক্ষতঃ পিণ্ডাকৃতি করিয়া চন্ধুর উপরি ধারণ করিলে শীত্রই চন্ধুগত শোখ, কণ্ডু ও বেদনা নিবারিত হয়।

পালিদামাদারেরছাল, তৈল, কাঁজি ও সৈশ্ববলবণ, এই সকল দ্রব্য একত্ত করিয়া তামপাত্তে যুর্ঘণপূর্ব্বক•চঙ্গুতে অঞ্জন দিলে কক্ষন্ত চঙ্গুণুল বিনষ্ট হয়।

হরিদ্রা, দাক্তহরিদ্রা, যক্তিমধু, কিস্মিস্ ও দেবদাক; এই সকল দ্রব্য ছাগছ্য সহ পেষণপূর্বক তদ্ধারা অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চঙ্গুগভ অভিষ্যন্দ-রোগ (চঙ্গুদিরা জ্বল পড়া) নির্বত্ত হয়। গেরিমাটী > ভাগ, দৈছবলবণ ২ ভাগ, পিপুল ৪ ভাগ এবং ভাগরপাছকা ৮ ভাগ ; এই দকল দ্রব্য ছাগছন্দ্র অথবা জলদহ পেষণপূর্বক শুদ্ধিকা প্রস্তুত করতঃ ঘর্ষণ করিয়া অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চন্দুরোগ আরোগ্য হয়।

পু গুরিরাকার্চ, যফিমধু, হরিদ্রা, আম্লকী ও পদ্মকার্চ; এই সকল দ্রব্যের কাথ শীতল হইলে মধু সহযোগে সেক দিলে পিতৃজ্জনিত চক্রোগ নিবারিত হয়।

ধাতীফলনির্যাসে নবদৃকেকাপং হন্তি পুরণতঃ।
সক্ষেত্রি সৈম্ববোবাশিগুদ্ধের পত্রসেকঃ।
দার্ক্রীরমাঞ্জনং বাপি স্তন্যযুক্তং প্রপূরণং।
নিহন্তি শীদ্রং দাহাব্র বেদনাসান্দ সন্তবাঃ।
করবীর কিমূলয় ছেদোদ্ভব বহুসলিল সম্পূর্ণং।
নয়নযুগং ভবতিদৃঢ়ং সহসৈব তৎক্ষণাৎ কুপিতং।
শিখরিমূলং তামভাজনে স্তোক সৈম্ববোঞ্জিশ্রং।
মস্তুনিমুষ্ট ভরণাদ্ধরতিং নবলোচনাৎ কোপং॥

আমলকীর রস চক্ষতে পূরণ করিলে অথবা মধু ও সৈশ্ববলবণ সংযুক্ত শক্তিনাপাতা রস দারা চক্ষতে সেক দিলে নবজাত চকুরোগ বিন্ত হয়।

দাক্ষরিদ্রার কাথকৃত রুসাঞ্জন শুনত্বন্ধ সহ মিশ্রিত করিয়া চকুতে প্রদান করিলে নেত্রাভিষ্যন্দজনিত দাহ, অঞ্জ্রাব ও বেদনা সমূহ নিবারিত হয়।

করবীরের ত্তন পদ্ধবেররস চকুতে প্রদান করিলে অথবা অপামার্গেরমূল ও কিঞ্চিৎ সৈশ্ববলবণ দধির মাতের সহিত মিশ্রিত করতঃ তামপাত্রে ষর্ধণ করিয়া চকুতে প্রদান করিলে চকুগত অভিনব প্রকোপ সমূহ প্রশমিত হয়।

নৈশ্বদারুহরিত্রা গৈরিকপথ্যা রসাঞ্জনিঃ পিঠিউঃ।
দভোবহিঃ প্রলেপোভবত্য শেষাক্ষিরোগহরঃ।
তথাশাবরকং লোগ্রং মৃতভ্বং বিড়ালকং।
কার্যাহরীতকী তদ্বদ্মৃত ভৃষ্ট বিড়ালকঃ।
শালাক্যোক্মের্বিহির্লেগ্যে বিড়ালক তদারুতঃ॥

সৈবদ্বলখণ, দাৰুহরিদ্রা, গৈরিক, হরীতকী ও রসাঞ্জন; এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণ করিয়া চক্ষুর বাহিরে প্রলেপ দিলে সকলপ্রকার চক্ষুরোগ বিনস্ট হয়।

শাবরলোধ, অথবা হরীতকী স্বতে ভাজিয়া চকুর বাহিরে বিড়ালক (চকুর বহির্ভাগে শলাকাদারা যে প্রলেপ দেওয়া যায়, ভাহাকে বিড়ালক কহে) প্রদান করিলে সর্কবিধ চকুরোগ নস্ক হয়।

> গিরিম্বচন্দনং নাগরখটিকা যোজিতো লেপঃ। কুরুতে বচয়ামিশ্রো লোচন মগদং ন সন্দেহঃ।

ভূমামলকীয়ুষ্টা মুড্লৈশ্বব গৃহবারি হোজিতাতাত্ত্রে। বাবদয়নত্ব মক্ষোর্জ্জয়তি বহিলেপক গীড়াং।

গৈরিক; রক্তচন্দন, শুঠী, খড়ী এবং বচ; এই দকল দ্রেব্য দমভাবে পেষণপূর্বক চকুর বাহিরে প্রলেপ দিলে অথবা ভ্য্যামলকীরমূল, দৈরবলবণ এবং গৃহবারি (কীজি) একত্র ডাম্রপাত্রে ঘর্ষণপূর্বক ঘনীভূত হইলে ডদ্বারা চকুর বহিতাবো প্রলেপ দিলে চকুগত পীড়া সমূহ নিবারিত হয়।

আন্দের্যাতনং মারুতভেজিবাথে বিল্বাদিভি হিতঃ।
কাষ্ণ দৈরগুরহতী তর্কারী মধুশিগুভিঃ।
এরগুপল্লবে মূলে তুচিচাজং পরঃ শৃতং।
কণ্টকার্যাক্ষ মূলের সুখোকং দেচলেহিতং।
সংপক্ষেহক্ষি গদেকার্য্য মঞ্জনাদিক বিষ্যতে।
প্রশন্তবর্ততাচাক্ষোঃ সংরক্তাক্র্য প্রদান্তিতা।
মন্দবেদনতা কণ্ডঃ পক্ষাক্ষিগদলক্ষণং।
অঞ্জনাদি বিধিশ্চাগ্রে নিখিলেন বিধান্যতে।
রহত্যেরগুমূল ত্বকপিগ্রোর্ম্মলং স্টেসক্ষবং।
অজ্ঞাকীরেণ পিন্টং স্যাৎ বর্তিবাতাক্ষি রোগকুৎ॥

বিল্বাদি মহৎপঞ্চমূল, এরগুমূল, রহতী, জয়ন্তী ও রক্তশজিনা, ইহাদের উষ্ট কাথ অথবা ভেরেগুারপিত্র, মূল ও ছাল এবং কন্টকারীমূল, ইহাদের ছাগত্রন্ধ মহ প্রস্তুত কাথ ঈষত্রকাবস্থার আন্দ্যোতন (চক্ষুতে দেচন) করিলে সর্ব্ববিধ বায়ুজ্জা নেত্ররোগ বিনষ্ট হয়।

চকুরোণের পকাঁবস্থায় অঞ্জনাদি বিশেষ হিতকারী বলিয়া জানিবে।
চকুরুত্মের প্রশান্তভা, শোথের হ্রাসভা, অল্পাত্রুপাভ, বেদনারঅল্পতা ও
কণ্ড,; এই সমস্ত লক্ষণ দারা চক্ষ্রোগের পরিপকাবস্থা জানাযায়। এই
অবস্থায় প্রথমভাতঃ বিবিধ অঞ্জনাদি প্রযোজ্য।

রহতী, ভেরেগুান্লৈরছাল, শজিনারমূল ও সৈম্বলবণ; এই সকল দ্রব্য ছাগছ্যা সহ পেষণপূর্বক বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ চক্ষুতে অঞ্জন প্রয়োগ করিলে বায়ুক্তর চক্ষুরোগ বিশ্বই ইইয়া থাকে।

> তীক্ষরকোক বিষদৈঃ প্রশাস্যতি কফাতাকে। পিতজ্যে মুহুশীতিক ক্ষিগ্রেফকৈক বাতজঃ। তীক্ষাক মুহুশীত নাং ব্যত্যাসাং সন্নিপাতকঃ॥

তীক্ষ্ণ, রক্ষ, উষ্ণ ও বিষদ প্রক্রিয়া দারা কফজ, মৃত্ব ও শীতল ক্রিয়া দারা পিতত, স্মিন্ধ ও উষ্ণ ক্রিয়া দারা বাতজ এবং তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, মৃত্ব ও শীতল ক্রিয়ার পরস্পার বিপর্যায়ে ত্রিদোষক চক্ষুরোগের চিকিৎনা করিবে তীরীট ত্রিফলা ষধী শর্করা ভদ্র মুস্তকৈঃ। পিটেটঃ শীতামুনা সেকো রক্তাভিষ্যন্দ নাশনঃ। কশেরু মধুকানাঞ্চ চূর্ণমন্থু রসংযুতং। ন্যন্তম্পনৃত্তরীকান্ত হিত মাস্চ্যোতনং ভবেৎ।

পাটিয়ালোধ, ত্রিফলা, যফিমধু, ইকুচিনি ও মুখা; এই সকল দ্রব্য শীতল জলসহ পেয়ণপূর্বক তদ্ধারা দেক দিলে চকুগত ব্যক্তজ্ঞাব নই হয়!

কেঞ্চর ও যফিমধুচ্র্ণ বস্ত্রে বাঁধিয়া পুটলী করতঃ হাফির জলে রাখিয়া ভদ্ধারা দেচন করিলে চক্ষুরোগ নই হয়।

বাসকাদি।--

আটরুব'ভয়ানিষ ধাত্রীমুস্তাক কুলকৈঃ।

রক্তেত্রাবং ক'কং হন্তি চক্ষুষ্যং বাদক'দিকং । বাদক, হরীতকী, নিম্ব, আমলকী, মুথা, বহেড়া ও পল্ডা, ইহাদের কার্থ প্রয়োগ করিলে চকুগত রক্তন্তাব নম্ক হয়।

> কণা ছাগশক্ষমধ্যে পক্তবাৎ দ্রুদপেষিত।। অচিরাদ্ধন্তি নক্তান্ধং তদ্ধৎ সক্ষোদ্ধ মূষণং। দগ্নানিস্থাইং মরিচং রাত্র্যান্ধাঞ্জন মূভ্যং। তামুলযুক্তং খন্যোতং ভক্ষণঞ্চ তদর্থক্য ॥

পিপুল অথবা মরিচ ছাপ্ষক্ষৎ মধ্যে স্থাপনপূর্মক পাক করিয়া সেই পিপুল অথবা মধু সংযুক্ত দেই মরিচ চক্ষুতে প্রদান করিলে অথবা মরিচ দ্বিদহ ঘর্ষণপূর্মক অঞ্জন প্রয়োগ করিলে কিম্বা খদ্যোত (জোনাকী) ভামুল্মহ ভক্ষণ করিলে রাত্রন্ধতা (রাতকানা) হুরীভূত ইইয়া থাকে।

রহদ্বাসকাদি।--

বাসাবনং নিম্নটোলপত্তং তিক্তামতা চন্দনবৎসকত্বক্।
কলিঙ্গনাব্বনিধ্নং সবিশ্বং ভূনিম্ব ধত্যিবভয়া বিভীতং ।
তথাববকাথ মথাউভাগং পিবেদিমং পূৰ্বনিনে ক্ষায়ং।
তৈমিৰ্য্যকণ্ডঃ পটলাৰ্ব্ব দক্ষ শুক্তং সদাহত্ত্ৰণ মত্ত্ৰণক্ষ।
কাচক্ষ শৈলক মহাক্ৰজাক্ষ নক্তাম্বরাগং শ্বয়থুং সশূলং।
বাসাদিরেষ প্রথিত প্রভাবোনিছন্তি সর্বান্তমাম্বাংশ্চ॥

বাসক, মুথা, নিমছাল, পল্তা, কট্কী, গুলঁঞ্চ, রক্তচন্দন, কুড়চি, ইন্দ্রখব, দাকহরিন্তা, রক্তচিতা, শুগুী, চিরতা, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া এবং যবঃ এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা জ্বল ৩২ তোলা শেষ ৮ তোলা । এই ক্লাথ বালি করিয়া পাল করিলে তিমির, কণ্ডু, পটল, আর্বুদ প্রস্তৃতি সর্ক্রিধ স্কুরোগ মন্ট হয়।

চতুৰ্বিংশভিভশেহখার: i

প্তভূচী ত্রিফলা কাথ মধুনা সহ যোজয়েৎ। পীতঃ সর্বাক্ষিরোগল্প কৃষ্ণচূর্ণাব চূর্ণিতঃ॥

গুলঞ্চ ও ত্রিফলার কাথ মধু ও পিপুলচ্ণ সহ পান করিলে সর্কবিধ চকু-রোগ নউ হয়।

ষড়ঙ্গ শুগ্গুলুর্ তং।---

বিভীতক শিবাধাতী পটোলারিষ্ট বাদকৈঃ।
কাথো গুণ্গুলুনাপেরঃ শোথোশূলান্দি পাকনুথ।
সপিওং সত্ত্রণং গুলুং রোগানীংশ্চ বিনাশরেং।
এতৈশ্চাপি মৃতং পকং রোগাংক্তাংশ্চ ব্যপোহতি।
মৃতপাকে বিভীতানাং কাথোপি গুণ্গুলুঃ কক্কঃ॥

বহেড়া, হরীজুকী, আমলকী, পল্তা, নিমছাল ও বাসক; এই সকল দ্রব্যের ক্লাথ গুণগুলু সহ পান করিলে অথবা বহেড়া প্রভৃতির ক্লাথ ও গুণ্-ভলুর কল্কসহ মৃত পাক করিয়া ভাহা পান করিলে চক্ল্যাত শোধ, শূল, পাক প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়।

ত্রিফলাদ্যং স্নতং।—

ত্তিকলাকাথ কল্কাভ্যাং সপরস্কং শৃতং মৃতং। তিমিরাখ্য চিরান্ধন্যাৎ গীতমেতন্নিশামুখে॥

ছত /৪ দের, ত্রিফলার কাথ /৬ দের, গব্যহ্র্ম ।৪ দের এবং কল্কার্থ ত্রিফলা /> দের। যথা বিধানে এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় সন্ধ্যা-কালে দেবন করিলে-তিমিররোগ নম্ভ হয়।

মহাত্রিফলায়তং।—

ত্রিফলায়ারসঃ প্রস্থং প্রস্থং ভূঙ্গরাজস্য চ।
বার্দকস্যরসঃ প্রস্থং শৃতাবর্যা চ তৎসমং।
অঙ্গান্দীরং গুড়ু চার্দক আমলক্যা রসস্তথা।
প্রস্থং প্রস্থং সমাস্বত্য সর্বৈরেভি ব্লু তং পচেৎ।
কলককণাসিতাদ্রোক্ষা ত্রিফলা নীলমুৎপলং।
মধুকং ক্ষীরকাকোলী মধুপণী নিদিষ্কিকা।
তৎ সাধ্যমংবিজ্ঞায় শুভেভাণ্ডে নিধাপয়েৎ।
উর্দ্ধান মধঃপানং মধ্যেপানঞ্চ শস্যতে।
যাবস্থোনেত্রজারোগা স্তান্পানাদপকর্যতি।
সরক্তেরক্তকুষ্টে চ রক্তে চাতিশ্রেত্রক্রিদ্র

রক্তান্ধে তিমিরেকাচে মীলিকা পটলার্ব্ব দা।
অভিষ্যন্দেইধিমন্থেচ পক্ষকোপের দারুণে।
নেত্রবোগের সর্বের্বাতপিত কফেরুচ।
অনৃষ্টি মন্দদ্ধিক কফবাত প্রদূষিতান্।
স্থান্ধিকরং সদ্যো বলবর্ণায়ি বর্জনং।
স্বানেত্রাময়ং হনাং তিফলাদ্যং মহদ্রতং॥

ম্বত /৪ সের; ত্রিফলার রস, ভ্রুরাজের রস, বাসকের রস, শতাবরীর রস, ছাগছজ, গুলপ্থের রস ৩ আমলকীর রস প্রত্যেকে /৪ সের। কল্কার্থ পিপুল, ইক্ল্চিনি, ডাক্ষা, ত্রিফলা, দীজোৎপল, যফ্টিমধু ক্ষীরকাকোলী, গাস্তারী ও কন্টকারী; এই সকল দ্রব্য কৃষ্টিত সমভাগে সমজ্ঞে /১ সের। বথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় পাদ করিলে রাত্র্যন্তা, তিমির প্রভৃতি বিবিধ চক্লুরোগ বিদক্ত হইয়া থাকে।

ভূঙ্গরাজানাং তৈলং।—
ভূঙ্গরাজ্বনঃ প্রন্থে ষধীমগু পলেম চ।
তৈলদ্য কুড়বং পক্ষং সদ্যোদৃষ্টি প্রদাদয়েৎ।
নদ্যাবলী পলীতম্বং মানেনৈতৎ ম শংসয়ঃ॥

তৈল /।। দের, ভূমরাজের রস /৮ দের এবং কল্কার্থ কুট্টিত যঞ্জিন্ধ্
৮ তোলা। যথাবিধানে এই তৈল পাক করিরা অঙ্গাদিতে মর্দ্দন করিলে দৃষ্টি
প্রদান হয় এবং ইহার নম্ম প্রদান করিলে একমাদের মধ্যে বলীপালিত বিনষ্ট
হইয়া থাকে।
নুপবিশ্বভিটিক্তলং ঘুত্ত ।—

জীবনর্যস্তকোমেদে দ্রাক্ষাংশুমতি নিদিয়িকা হুহতী।
মধুকং বলাবিড়ঙ্গে মঞ্জিষ্ঠা রাম্মা শর্করা।
নীলোৎপলং শ্বদংস্কা প্রপৌগুরীকং পুমর্মবা লবণং।
পিপেল্যাঃ সর্বেষাং ভাগৈরক্ষাংশিকৈঃ পিকৈঃ।
সার্পিন্তলং যদিবাদত্বা ক্ষীরক চতুর্গুণং পকং।
আত্রেয় নির্মিত মিদং তৈলং নূপবল্লভং সিদ্ধং।
তিমিরং পটলং কাচং রক্তান্ধকার্যবুদন্তশা।
শ্বেত্দলিন্দনাশং নাশ্য়তি মীলিকাব্যক্ষং।
মুখনাশাদৌর্যন্ধা পলিত্কাকালজং হনুস্তজ্ঞঃ।

কাুসং খাসং শোষং হিক্কাং শুডংতথা নেতে।

মুখজেকমর্দ্ধভেদং রোগং বাহুগ্রহং শিরস্তন্তং। রোগানর্থোদ্ধজাত্রাঃ সর্বানু চিরেণ নাশয়তি॥

ভিলতৈল অথবা গ্রাছত /৪ সের, গ্রাছম্ব ।৬ সের। কল্কার্থ জীবক, শ্বভক, মেদ, মহামেদ, দ্রাক্ষা, শালপানী, কন্টকারী, রহতী, যফিমধু, বেড়েলা, বিড়ঙ্গ, মঞ্জিষ্ঠা, রাস্মা, চিনি, নীলোৎপল, গোক্ষর, পুগুরিয়াকাষ্ঠ, পুনর্বা, সৈশ্ববলবণ ও পিপুল; এই সকল কৃটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা। যথাবিধানে •এই তৈল পাক করিয়া প্রয়োগ করিলে ভিমির, পটলা, কাচ প্রভৃতি চক্ষুরোগ এবং নীলিকা, ব্যক্ষ প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

বৈদেহীশ্রেতমরিচং দৈদ্ধবং নাগরং সমং। মাতুলুঙ্গরসৈঃ পিঠ্ব মঞ্জনং পিড়কাপহং॥

পিপুল, দজিনাবীজ, দৈশ্ববলবণ ও শুগী; এই দকল দ্রব্য সমভাগে প্রাহণপূর্ব্যক ছোলঙ্গনেবুর রসমহ মর্দ্দন করিয়া তদ্ধার। অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চক্ষুর পীড়া নম্ব হুঁয়।

চুर्नाञ्चनः।—

মঞ্জিষ্ঠা মধুকোৎপলো দ্বিকফলত্ত্বক্ সেব্যগোরোচনা।
মাংসীচন্দন শঙ্গপত্ত গিরিম্বভালীশপুষ্পাঞ্জনৈঃ।
সবৈরেবসমাংশমঞ্জনমিদং শন্তসদাচক্ষুষোঃ।
কণ্ড ক্লেন্মলাত্র শোণিতক্তবা পিভার্যশুক্রাপাছং॥

নাঞ্জা, যৃষ্টিমধ্, উৎপাল, কদ্বেলের ছাল, দারুচিনি, বেণারমূল, গোরো-ছনা, জ্ঞামাংসী, রক্তচন্দন, শঙ্কা, ভেজপাত্র, গেরিমাটী, তালীশপত্র ও পুষ্পা-গুষ, এই সকল দ্রব্যের অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চক্ষুর কগু, ক্লেদাদি নষ্ট ছয়।

সিরুঅপিপপলীকুষ্ঠং পর্ণিনী ত্রিফলারসৈঃ। স্থরামণ্ডেন বর্তিস্যাৎ শ্লেয়াভিষ্যন্দনাশীনী। শোষ্টকীরাত্যাপরোষ ক্রিমিমন্থি কুলোদ্ভবঃ।

দৈশ্বৰণ, পিপুল, কুড়, এই জন্যজন্ম সমভাগে লইয়া মুগানী, মাষানী, শালপানী, চাকুলে ও জিফলা রুগে পেষণ করিয়া স্থরামণ্ড সহ বর্তি প্রয়োগ করিলে চকুগত লৈখিক অভিযান্দ শোথ প্রভৃতি নই হয়।

চন্দ্রপ্রভাবর্তিঃ।—

অঞ্জনং খেঁতমরিচং পিপ্পলীমধুষঞ্চিকা। বিভীতকন্ত মজ্জাচ শঙ্খনাভির্মনঃশিলা॥ এতানিসমভাগানি ছাগীন্দীরেণ পেষয়েৎ। ছারাশুক্ষরতোবর্তী নেত্তেমু চ প্রযোজয়েৎ। অর্ব্ধ দং পটলং কাচং তিমিরং রক্তরাজিকাং। অধিমাংস সমকৈব যশ্চ রাত্রো ন পশ্যতি। বর্ত্তিশ্চন্দ্রপ্রভানাম জাতান্ধ মণি সাধ্যেৎ॥

সজিনাবীজ, পিপুল, যফিমধ্ বহেড়ারশাস, শঙানাভি ও মনঃশিলা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে ছাগাড়গ্ধ সহ পেখণপূর্বক বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া ছায়ায় স্ক করতঃ নেত্রে প্রয়োগ করিলে অর্ব্রুন, পটল, কাচ প্রভৃতি বিবিধ চকু-রোগ বিনষ্ট হয়।

চক্রোদয়াবর্তিঃ।—

হরীতকী বচাকুঠং পিপেলী মরিচানি চ।
বিভীতক্যামজ্জাচ শঙ্গনাভির্মনঃশিলা।
সর্বমেতৎ সমং কুত্বা ছাসীকীরেণ পেষয়েও।
বর্ত্তিশ্চন্দোনয়ানাম নৃণাং দৃষ্টিপ্রসাদিনী।
নানয়েভিমিরং কণ্ডু পটলান্যর্ব্ব দানিচ।
অধিকানিচ মাংসানি যশ্চরাত্রো ন পশ্যতি।
অপিদ্বিবাহিকং পুপ্রাং মাসেইনকেন মাধ্য়েও॥

হরীতকী, বচ, কুড়, পিপুল, মরিচ, বহেড়ারশাঁস, শঙ্কাভি ও মনঃশিলা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে ছাগত্তম সহ পেযণপূর্বক বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ চর্চুতে প্রয়োগ করিলে তিমির, কণ্ডূ আদি চকুরোগ নম্ট হয়।

গদকেশরীবর্তিঃ।—

মনংশিকাহতংশগাদিত্তণরপ্যকং। কিঞ্চিৎকপূরি সংমদ্যি জোণপুষ্পরসৈদ্দিনং। বর্ত্তিবেশক্যভিষ্যন্দি নাশয় গজকেশরী॥

মনঃশিলা দ্বারা মৃত দীদক > ভাগ, রূপা ২ ভাগ ও কিঞ্চিৎ কর্প র একত্ত ছলকদার পুষ্পরদে > দিন মর্দ্দনপূর্বক বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ চঙ্গুতে প্রয়োগ করিলে অভিযান্দরোগ দূরীভূত হয়।

তারকাদ্যাবর্তিঃ !—

তারং তাত্রং রসং নাগং কপূরিং খর্পরন্তথা। রসাঞ্জনং কাংস্যং শঙ্খং হংসপান্যাদ্রবেদ্দিনং। বর্ত্তিং কৃত্বাঞ্জনাদ্ধন্তি সমস্তং নেত্রজামরং॥ রূপা, ডাত্র, পারা, নীসা, কপূরি, খর্পার, রসাঞ্জন, কাঁমা ও শশ্ব; এই সকল দ্রব্য সমভাগে হংসপাদীর রসে মর্দ্দনপূর্ব্যক বর্ত্তি প্রস্তুত্ত করত: চকুতে প্রস্থোগ করিলে সর্ব্যবিধ চকুরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।
সপ্তায়তলোইং।—

जिक्नाञ्चनभावमः हृन् मध्योभयुकः मभाः भयुकः ।

सयुनामस्मिनिनात्त পुक्रसानिष्मित्राव्यानिने ।

विभिन्नार्य्य नताष्मि कछ् क्रमाञ्चार्य्य मर्जानाम् ।

शिक्षः भरत्रक्तकाहिन्दः भगरत्रकाविन्यविकः श्रात्रात्रः ।

शिक्षानिनिनिनामात्रः वर्थाप्रिविन्निः क्रूक्ति श्राप्तः ।

नहर्क्वनर्भवत्नाः विद्यात्रात्रं निवर्षनात्रं श्रुर्भाः ।

मन्नश्चन्यार्भिक्षकंष्मारः श्रम्भरस्च्वत्रः मुर्चानामानाः ।

श्राद्यन्नीत्नां श्रम्भत्रस्थि क्र्षानिस्नीमक शांधु किनामः ।

स्राद्यन्नीत्नां श्रम्भत्रस्थि क्र्षानिस्नीमक शांधु किनामः ।

स्राद्यन्नीत्नां श्रमाममानत्नाः शिक्षानिस्नीमक शांधु किनामः ।

स्राद्यन्नीत्नां श्रमाममानत्नाः श्रमान्यः नर्थावर्यम् क्ष्मीवि ।

ত্ত্বিক্ষাত্ত্ব চুৰ্ণং লৌহচুৰ্ণসমানমের। অনুপানং প্রকুর্কীত গ্রাজয়াজলম্ভণা॥

ইতি চম্বুরোগাধিকারঃ।

ত্রিফলা ১ ভাগ, যফিষধু ১ ভাগ ও লৌ ছচ্ব ২ ভাগ; এই সকল দ্রব্য ্অথবা ঘ্তসহ সেবন করিয়া পশ্চাৎ গৰ্যত্ত্ব্য অথবা ছাগত্ত্ব্য জ্বল শান করিলে তিমির অর্কুনানি বিবিধ চক্ষুরোগ এবং কর্ণরোগ, অর্শঃ, ভগ-ন্দরাদি বিবিধ রোগ শক্ত হয়।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণি**গ্রন্থে চকুরোগের চিকিৎ**সা **সমাপ্ত।**

তাথ শির্নবোগাধিকারঃ।

কফজেলজ্মনং স্বেদোরক্ষোইকঃ পাচনাত্তি । তীক্ষাবপীড়ধুমান্চ তীক্ষান্চ কবড়াহিতাঃ। অচছঞ্চপায়য়েৎ সর্পিঃ পুরাশং স্বেদয়েভতঃ। মধুকসাব্বেণশিবস্থিকখাস্য বিরেচয়েৎ॥

কছল শিরোরোগে লঙ্মন, স্বেদ, রক্ষ ও উষ্ণবীর্ধ্য পাচনাদি দেবন, ভীক্ষ্ণ, নত্ম ও ধূম এবং ভীক্ষ ও উষ্ণ কবল হিতকর। ককজ শিরোরোগীকে প্রথ-মতঃ মৃতপান করাইয়া স্বেদ প্রদান করিবে। তদনন্তর বৃক্তিমধু চূর্ণ উষ্ণ জল-সহ মিঞ্জিত করিয়া তদ্ধারা শিরোবিরেচনার্থে নত্ম প্রদান করিবে। ক্বফাভ্রন্থ সম্বাদ্ধ শতাহ্বোৎপলপাকলৈঃ। জলপিটেটঃ শি্রোলেপঃ সদ্যশূল নিবারণঃ। দেবদারুনতং কুষ্ঠং নলদং বিশ্বভেষজং। লেপঃকাঞ্জিকঃসংপিষ্টব্যেলযুক্তঃ শিরোর্ভিনুৎ।

পिপूल, गूथी, चँठे, विष्युष, भलूका, नीलां भल बर क्ष् स्वा नम्चात खलगर शिवनपूर्वक मखरक धालभ मिरल नगर भूल नहें रूप।

দেবদাক, তগরপাছকা, কুড়, জটামাংদী, শুগুী; এই দকল অব্য দম-ভাগে কাঁজীদহ পেষণপূর্বক তৈলের সহিত মিশ্রিত করিয়া মন্তকে প্রলেপ দিলে শিরোরোগ নউ হয়।

সন্নিপাতভাবকার্য্যোদোষত্ত্রয় হরীক্রিয়া।
সপিঃপানঃ বিশেষেণ পুরাণান্তদিশন্তিহি॥
সান্নিপাতিক শিরোরোগে বাতাদি ত্রিদোষ নাশক ঔষধাদি এবং পুরাতন
মৃত প্রোগ করিবে।

ত্রিকটুক পুস্কররজনীরান্ধা স্থরদারু তুরঙ্গদ্ধানাং। কাথনিরোর্ভিজালং নামাপীতোনিবারয়তি।

ত্রিকটু, পুষ্ণরমূল, হরিন্তা, রাস্না, দেবদারু ও অশ্বগদ্ধা; এই সকল দ্রুব্যের কাথ নাসিকা দ্বারা পান করিলে নানা দোষজনিত শিরোরোগ সমূহ বিনষ্ট হয়।

পৈভেন্বতং পয়ঃ দেকাঃ শীতালেপাঃ সনাবনাঃ।
জীবনীয়ানি সপীংষি পানারকাপিপিত্র ।
পিতাত্মকেশিরোগে সিশ্বসম্যাধিরেচনং।
মুদ্বীকাত্রিফলেক্ষুনাং রসৈঃক্ষীরৈর্হ তৈরপি॥

পৈত্তিক শিরোরোগে মৃত, মৃধ্ব, শীতল দেক, শীতল প্রলেপ, নস্থা, জীব-নীয়াণ দাধিত মৃত এবং পিত্তনাশক অমপান হিতকর বলিয়া জানিবে।

পৈত্তিক শিরোরোগীকে প্রথমত: স্নেষ্থ প্রয়োগ করিয়া পশ্চাৎ জাক্ষার-রুদ ও ইকুরুসে তেউড়ীচূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া অথবা ত্রিফলার কাথ কিষা ছতে বা ছগ্নে তেউড়ীচূর্ণ মিশ্র করিয়া বিরেচনার্থে প্রয়োগ করিবে।

শতধৌতম্বতাভ্যঙ্গঃ শীতোবাতাদি দেবনং।
মুণালবিষশাল্প চন্দনোৎপল কেশরৈঃ।
মিশ্বশীতৈঃ শিরোদিন্টাস্তদ্বদামলকোৎপলৈঃ।
মন্ট্যাস্কচন্দনানন্তাক্ষীরদিদ্ধং মৃতং হিতং।
নাবনং শর্করাদ্রাক্ষা মধুকৈরপিপিত্তে

শতথেতি স্বত মন্তকে মৰ্চন করিলে অথবা শীতল বাডাদি লেবন করিলে শিরোগত্র দাহ নিবারিত হয়।

মৃণাল, পদ্মশাল্ক, রক্তচন্দন ও উৎপদ কেশর অথবা আমলকী ও নীলোৎপল একত স্থতনহ পেষণপূর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে দাহ নিবা-রিত হয়।

ষষ্টিমধু, রক্ত্রন্দন ও অনন্তমূল অথবা চিনি, দ্রোক্ষা য**ঠি**মধু, এবং ৪ গুণ হন্ধদহ মত পাক করিয়া নম্ম প্রয়োগ করিলে শিরোরোগ নিবারিত হয়।

> ত্ত্বকপত্রশর্করাপিন্টানাবনং তণ্ডুলাঘুনা। ক্ষীরসর্পিহিতং তস্য রসাবাজাঙ্কলাঃ শুভাঃ। রক্তক্তেপিতত্ত্বৎ সর্ববং ভোজনালেপ সেচনং। শীতোক্তয়োক্ত ব্যত্যাসোবিশেষোরক্তমোক্ষণং॥

দাকটিনি, ভেজপত্র ও শর্করা সমভাগে তণ্ডুলোদক সহ পেষণ করিয়া তদ্বারা অথবা মুদ্ধ সহিত ছতের নম্ম গ্রাহণ করিয়া জ্বাঙ্গল পশু মাংস রস পান করিলে শিরোরোগ নম্ট হয়।

রক্তজ শিরোরোগে পৈত্তিক শিররোগোক্ত ভোজন, প্রলেপ ও দেকান্দি প্রয়োগ করিবে। কিন্তু তন্মধ্যে উহাতে শীত ক্রিয়ার পর উষ্ণ ক্রিয়া এবং উষ্ণ ক্রিয়ার পর শীতল ক্রিয়া ও রক্তমোক্ষণ করা কর্ত্তব্য।

বাতিকেশিরসোরোগে স্বেহস্বেদান্ সলবণান্। পানান্নমুপনাহাংশচ কুর্য্যাদ্বাতাময়াপহান্। বাতিক শিরোরোগে সৈন্ধবসংযুক্ত স্বেহ, স্বেদ প্রভৃতি ক্রিয়া এবং বাত-নাশক পান আহার প্রলেপাদি প্রয়োগ করিবে।

কুঠমের ও্র্লিফ লেপাৎকাঞ্জিক পেষিতং।
শিরোর্ভিং নাশ্যত্যাশু পুষ্পায় চুকুন্দ দং।
পঞ্চলীশৃতং ক্ষীরং নস্যং দদ্যাচিছরোগদে।
জ্ঞানিরোধ্যায়তং কর্মকার্মান্ত লমুচিছুতং।
তেনাবেস্টানিরোধস্তামান্যকল্কেন লেপয়েৎ।
নিশ্চলস্যোপবিষ্ণায় তৈলৈক্ষকৈঃ প্রপুরয়েৎ।
ধারয়েদাক্তরঃ শাল্তৈর্যামং ধামার্দ্ধনেববা।
শিরোবন্ডির্জ্জিয়ত্যেধনিরোগাং সমুদ্ভবং।
হর্মনাক্ষিকণীর্ভিমিন্দিতং নিরঃকম্পানং।
তৈলেনাপ্র্যুদ্ধানং পঞ্চরাত্যশতানিচ।
তিঠেৎ শ্লেষ্মাণপিতেহকৌ দশবাতে শিরোগদী।
এষ এববিধিকার্য স্ত্রাক্ণাক্ষিপুরণে।

কুড়, এর গ্রমূল অথবা মুচুকুন্দকুল, কাঁজীর সহিত পেষণ করিরা মন্তকে প্রালেপ দিলে শিরোরোগ প্রশমিত হয়।

স্বন্পপঞ্চমূলের সহিত ছম্ব পাক করিরা নস্তগ্রহণ করিলে বাউপৈত্তিক শিরোরোগ এবং মহৎপঞ্চমূলের সহিত ছম্ব পাক করিরা নস্তগ্রহণ করিলে বাতলৈস্মিক শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

আট অঙ্গুল প্রশন্ত মন্তকের বেউন যোগ্য লক্ষান্ একটি চর্মান্বারা মন্তক বেউন করিয়া রাখিবে এবং মন্তকের অধ্যেদেশে মাযকলাই পেষণ করিয়া প্রলেপ দিবে। ভংপরে রোগাকৈ ছিরভাবে উপবিষ্ট করাইয়া এখাবিধানে পরু সংখাঞ্চ ভৈল্বারা ঐ চর্মা বেউনটা পূর্ণ করিয়া (ভিজাইয়া) রাখিবে। এবস্প্রকারে বাতজ শিরোরোগে ১ প্রহর ও পৈত্তিক শিরোরোগে অর্দ্ধ প্রহর ওথবা যে পর্যান্ত শিরোবেদনার শান্তি না হয়, তাবৎকালপর্যান্ত ঐ চর্মা বেউনটি ধারণ করিয়া রাখিবে এবন্ধি বন্তি দারা বাতিক শিরংগীড়া, হয়, মন্যা, চঙ্কু ও কর্ণ প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়। কেহ কেহ বলেন পূর্ব্বোক্ত ভৈল সৈন্মিক শিরোরোগে ১০৫ মাত্রা (একবার অঙ্গুলি, ক্ষোটন অর্থাৎ ভুড়ী দেওয়াকে একমাত্রা বলে,) পৈত্তিক শিরোরোগে ১০৮ মাত্রা এবং বৃত্তী দেওয়াকে একমাত্রা বলে,) পৈত্তিক শিরোরোগে ১০৮ মাত্রা এবং বৃত্তী দেওয়াকে একমাত্রা বলে,) বিশ্বতিক শিরোরোগে ১০৮ মাত্রা এবং বৃত্তী দেওয়াকে এক ব্যাবস্থেয়।

পুংসাং নানানোষোদ্য তাং শিরোজাং হন্তিতীব্রতরাং।
নাগরকল্কবিমিশ্রং ক্ষীরং নসোন যোজিতং।
নতাৎপলং চন্দনকুষ্ঠযুক্তং শিরোক্ষায়াং সন্তপ্রদেহঃ।
প্রপৌগুরীকং স্থরদাক্ষরুষ্ঠং যফ্ট্যাহ্বমেলাকমলোৎপলেন।
শিরোক্ষায়াং সন্থতঃ প্রদেহোলোহৈরকাপদকচোরকৈশ্য॥

গৰাত্বন্ধ ৮ ভোলা এবং শুগীচূর্ণ ও মাধা একত্র পেষণপূর্ব্বক নাসিকা দ্বারা পান করিলে বিবিধ দোষজাত শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

ভগরপাছকা, নীলেং পল, রক্তচন্দন ও কুড় অথবা পুগুরিয়াকার্চ, দেবদাক, কুড়, ষফিমধু, এলাচি, পদ্মপুষ্পা, নীলোৎপল, অগুক্তকার্চ, হোগল, পদ্মকাঠ ও চোরপুষ্পী, সমভাবে একত্র ছত সহিত পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে
শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

নাবনং সগুড়ং বিলৃং পিপালীয়াসনৈদ্ধবা।
ভুজগুড়াদিরোগ্রেরু সর্বেষ্দ্ধগদেরু চ।
স্থ্যাবর্ত্তে বিধাতব্যং নস্তক্ষাদিভেষজং।
পায়য়েৎ সণ্ডড়ং সর্পিন্নতপুরান্নভক্ষয়েৎ।
স্ব্যাবর্ত্তেশিরাবেধোনাবনং ক্ষীরস্পিষা।

হিতংকীর মৃতাভ্যাসস্তাভ্যাবৈধব বিরেচনং। কীরৈঃপিঠৈন্ডিলৈঃ স্বেদোজীবনীয়শ্চ শস্যতে।

ভূজন্তম্ভাদিরোগে এবং দর্বপ্রকার উদ্ধান গভরোগে গুড়সহ শুঠীচুর্ণের নক্ত অথবা সৈন্ধবসহ পিপুলচুর্ণের নক্ত প্রয়োগ করিবে।

श्र्यावर्छ निर्दादार्ग नग्र कर्मानिक्र अध्य श्राका।

গুড়সহ মৃতপান ও মৃতপুর (হুমা, নারিকেল, মৃত, চিনি প্রভৃতি সহযোগে পাক করা ভক্ষাদ্রব্য) ভক্ষণ করিলে স্থাবিত্তরোগ প্রশমিত হয়। পূর্ব্বোক্ত ক্রিয়াদির দ্বারা স্থ্যবিত্ত রোগ প্রশমিত না হইলে, শিরাবেধ করতঃ হুমো-খিত মৃতদ্বারা নস্থ এবং হুমা ও মৃত পান অথবা হুমা ও মৃতের সহিত বিরেচ্চ দ্রব্য মিশ্রিত করিয়া তাহা চিরেচনার্থে কিমা হুমানহ তিল বা জীবনীয়-গণোক্ত ঔষধ সকল পেষণপূর্বাক ডদ্বারা স্বেদ প্রয়েষ্ঠা করিবে।

সশর্করং কুলু মমা জ্যভৃষ্টং নদ্যং বিধেরং প্রনাদ্ত্তথে।
দ্রোশশুষ্ণণাশিদশিরোর্দ্ধশাদিনাভির্দ্ধিঃ প্রভবেচ্চরোগে।
কৃত্যালপল্বরদে ধরমঞ্জারকল্কদিদ্ধং নবনীতং।
নদ্যেন জয়তিনিয়তং সুর্যাবর্তং সুদ্রবারং॥

শর্করা ও কুঁকুম হতে ভাজিয়া তাহার নস্ত প্রয়োগ করিলে বাডজ ও রক্তজ জ্ঞা, শঙ্খদেশ, কর্ণ, চন্দু ও অর্দ্ধশিরোবেদনা এবং স্থাবর্তরোগ বিনষ্ট হয়।

় °দোণালুপাভার রম ও অপামার্গের্থীজ, মুবনীত (মাখন) মহ পাক করিয়া নম্ম গ্রহণ করিলে স্ব্যাণ্ডরোগ বিন্ত হয়।

দশমূলীক্ষায়ন্ত সূর্পিঃ সৈন্ধব সংযুতং।
নদ্যামর্জাবভেদত্বং সূর্য্যাবর্ত্তশিরোর্ত্তি।
নিরীবমূলককলৈরবপীড়গ যোজয়েৎ।
অরুপীডোহিতোবাস্যাদ্বগপিপলীভিঃ ক্রতঃ॥

ন্পমূলের কাথে ছাঙ ও গৈন্ধক প্রক্রেপ দিয়া নাসিকা দ্বারা পান করিলে অদ্ধাবভেদ ও স্থায়াবর্ত্ত শিরোরোগ নউ হয়।

• শিরীষছাল ও মূলাবাঁজের রমদারা অথবা বচ ও পিপুলচ্ব দারা নক্ত এছণ করিলে স্থাবিত ও শিরোরোগ সকল নউ হয়।

জাঙ্গলানি চ মাংসানি কার্য্যেত্রপনাহনং।
তেনাস্যশীম্যতিব্যাধিঃ স্থান্তর্গ্র স্থান্তর্গ্র প্রাবর্ত্তঃ স্থান্তর্গ্র ।
এষ এববিধিক্তব্দঃ কার্য্যাশ্যাদ্ধান্তভদকে।
সাবিরোৎপলকুষ্ঠানি মধুকশ্চাম্পনিতং।
স্পিত্তিলযুভোলেপঃ সুর্যাবর্তাদ্ধভেন্যোঃ॥

ৰাত্তনাশক উষধের সহিত নিদ্ধ জালল প্রান্ত মাংস দারা অথবা অনস্তম্ল, নীলোএপল, কুড় ও যক্তিমুধু একত্র কাঁজীসহ পেষণপূর্বক ভৈছা ও ছত মিশ্রিত করিয়া তদ্বারা প্রলেপ দিলে স্ব্যাবর্ত ও অর্দ্ধশির:পীড়া নির্ভ হয়।

পিবেৎ দশর্করং ক্ষীরং নীরম্বানারিকেলজং। সুশীতমাপিপানীয়ং দর্পির্বানস্ততস্তরোঃ॥

ত্বন্ধ, নারিকেল জ্বল, শীতল জ্বল অথবা ঘত, শর্করাস্থ নীসিকা দারা পান করিলে স্থানিবর্ত্ত অর্দ্ধ শিরঃপীড়া নিহত্ত হয়।

অনন্তবাতেকর্ত্তবাঃ সুর্যাবর্তহিতোবিধিঃ।
শিরাবেধশ্চ কর্ত্তব্যোহনন্তবাত প্রশান্তয়ে।
আহারশ্চবিধাতব্যো বাতপিত্তবিনাশনঃ।
মধুমস্তকসংযাব হবিঃ পূরিশ্চমঃ ক্রমঃ॥

স্থ্যাবর্ত্তোক্ত হিডকর বিধি দকল, শিরাবেধ এবং মধু মস্তুক (ভক্ষ্য বিশেষ) দংযাব (খণ্ড, এলাচী, মরিচাদি দহ প্রস্তুত ভক্ষ্যদ্রব্য বিশেষ) ত মৃত্পুর, এই দকল আংগরীয় দ্রব্য প্রয়োগ করিলে অনন্ত বাতনামক শির:-পাঁড়া প্রশমিত হয়।

সূর্যাবর্ত্তিহিতং যন্তচ্ছৠকেম্বেদবর্জ্জিতং।
ক্ষীরসর্পিঃ প্রশংসন্তি নন্তপানকশ্বাকে।
শতাবরীং ক্ষতিলান্ মধুকং নীলমুৎপলং।
দূর্বাং পুনর্মবাকাপি লেপং সাধ্বতারমেৎ।
শীততোয়াবসেকাংশ্চ ক্ষীরসেকাংশ্চ শীতলান্।
কল্কৈশ্চন্দীররকানাং শ্বাক্যায়ে কুচ্ছপ্রা চ।
রসৈঃ সংস্থংহীতস্যাথ ত্যা শ্বাক্সন্ধিকাঃ।
উর্জং তিশ্রঃ শিরাপ্রাজ্ঞো ভিন্যাদেবাবতারয়েৎ॥

স্বেদ ব্যতীত স্থানিত বিহিত হিতকর বিধি সকল, ভ্রমজাত মতের মস্ত ; শতমূলী, কৃষ্ণতিল, যফিমধু, নীলোৎপল, দূর্ব্বা ও পুনর্নবা, ইহাদের প্রলেপ, শীতল জল বা শীতল ভ্রম দারা সেক ; ও ক্ষীরাইক্ষেরছাল দারা প্রলেপ দিলে শঞ্চ শিরোরোগ নই হয়। অপিচ, বক, কলছংস, ইংস, শরারিপক্ষী ও কচ্ছপ ; এই সকল প্রাণীর মাংসরস পান করিয়া মাংস বর্দ্ধিত ছইলে শঞ্চমন্ধিত শিরাকৃষ্ণ ভেদ করিলে (কিন্তু উক্ত বিদ্ধ শিরাপীড়ন করিবে মা।) শেশুক শিবোরোগ বিশ্বী হয়।

শিরঃ কম্পে২মূতারাস্বাবলাস্থে**হ স্থান্ধিভিঃ।**

্রেরহেনে নিবা হল্পং শিরোবন্ডিশ্চ শস্যতে।

গুলক, বাস্তা, বেড়েলা, স্বত ও অগুরু গুড়ান্ত সুগন্ধি দ্রা একত্র পোষণ-পূর্বক গুলেপ দিলে অথবা বাতমুম্বত ভৈলাদি স্বেহ, স্বেদ ও শিরোবন্ধি গুয়োগ করিলে শিরঃকম্প রোগ বিন্দু হয়।

যন্তাপাং দ্বতং।—

যতীমধুবলারাসা দশমূলামু সাধিতং। মধুরৈশ্চ মুভং শিল্প মূর্দ্ধজ্ঞানশিহং।

উৎকৃষ্ট গলস্থ সং সেব ; যথিমধু বেছেল, বাস্ত্র ভ দশনল ইছাদের কাগ 15 সেব এবং কলক'র্থ কাবেলাগে মধ্বগনীয় দেশ সবল সমভ গো সমপ্তে /-সের। যথাবিধানে এই স্থান ক'রয়, ব্যবহার করিলে ইছিড্জেল-গভরোগ সকল বিশ্বই হয়।

ময়ুরাদাং মতং।—

দশমূলবলারাসা মধুকৈ স্থিকলৈঃ সহ।
ময়ুরপক্ষণিভা লুশরুৎ পাদান্য বির্দ্ধিতং ।
জলেপজ্বান্নত প্রস্থং তিমিনক্ষীর সমং পচেছ।
মধুরৈঃ কাষি কৈঃ কলৈকঃ শিরোরোগার্দিভাপহং।
কর্ণনাশাক্ষিজহবান্য গলরোগবিনাশনং।
ময়ুরান্যমিনং খাত মূর্জজ্ঞগদাপহং।
আখুভিঃ.কুরুটেহ ইনেঃ শশকৈ দ্বানিবৃদ্ধিমান্।
কলেকনানেনবিপচেছ স্পির্দ্ধি গদাপহং।
দশমূলা দিনা তুল্যো ময়ুরইহগৃছতে।
জনোজ্বাক্ষতিমানেন ময়ুর গ্রহ ং বিদুঃ।

য়ঙ /৪ দের। কৃথিপি দশ্দুল, নৈড্লো, হাল্ল ও যক্তিমধু পতিতাকে হচতোলা এবং পাল্ল, পিন্ত, অন্ত, বিষ্ঠা, পাল ও সংগণি পান্ডি, তে সমুব্যাণ লক্ষ্য পাল্ল, জল ৬ দের, শেষ /১ দেব। কৃল্ফার্গ জাল্লায়গণ / দেব, এবং তৃত্ব /৪ দের। যথানিধানে এই মুভ পাক কবিয় দেবল ক' লে ক্লানোগণ, আদিভরোগ কর্ণ,নাসিকা, চন্দু, জিহ্বা, মুখ ও গলবোগ এব উর্জ জক্তাভরোগ সকল নইছেয়। এক্সাকারে ইন্দুব, কৃত্ব ইন্ছণ্য, লাল্ক ও ভৃতিব কাথ ও জাবলায় সপের কৃল্ফাছ মুভ পাক কবিয়া দেবল করিলেও উর্জ জক্তাভরোগ সকল নইছিয়। মুগুব মাংস দশম্বালের সমান গ্রহাভবা। কেং কেল বিলে বিশ্ব একটা মুগুবের মাংস গ্রহাভবা। কেং কেল বিলের ভ্রতি পারে।

রহময়রকং মৃতং।—

মৃত ।৬ দের, কাথার্থ ময়ৢর মাংস। ২॥ দের, জল ৬৪ দের, শেষ।৬ দের, মশ্যুল ও বেড়েলা সমভাগে ।২॥• দের, জল, ৬৪ দের এবং শেষ।৬ দের। কল্কার্থ পুগুরিয়া কার্ছ, যফিষ্, পিপুল, রক্তচন্দ্র, নীলোৎপল, জীবক, ঋষভব, মেধ, মহামেধ, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবন্তী, যষ্টি-মধ্, ঋতি ও রদ্ধি সমভাগে সমতে /৪ দের, এবং হৃদ্ধ ৬৪ দের। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া দেবন করিলে মেধা, বৃদ্ধি ও শ্বৃতি বর্দ্ধিত হয়। অপিচ ইহা উদ্ধিজক্রণতবোগ সর্কবিধ বাতরোগ এবং ময়া, কর্ব, শিরঃ, চক্ষুরোগ ও অপস্মার প্রভৃতি বিবিধরে, গ নাশক।

প্রপৌওরীকান্যং তৈলং।—

প্রপৌণ্ডরীকং মধুকং পিপ্পলী চন্দনোৎপলৈঃ। সিদ্ধং ধাত্রিরসৈতৈলং নস্যেনাভ্যঞ্নেন্বা। সক্ষানুদ্ধিসনান্ছন্তি পলিতানিচ শীতলং॥

ভিলতৈল /৪ দের; আমলকীর রদ। ৬ দের; কল্কার্থ পুণ্ডরিয়কার্চ, যক্তি-মধু। পিপুল, রক্তচন্দন ও উৎপল সমভাগে সমস্তে /> দেব। যথাবিধানে ভৈল পাক করিয়া নম্ম ও অভাঞ্জনে প্রয়েগ করিলে শরীরের উর্দ্ধগভরোগ এবং বলিপলিভাদি নম্ট হয়।

जीवकानाः रेजनः।—

জীবকর্যভকৌদ্রাক্ষা নিতাযধ্যী খনোৎপলৈঃ। তৈলং নস্যং ধারঃনিদ্ধং বাতপিত শিরেশানে॥

ভিলত্তিল /৪ সের. হৃদ্ধ যোলদের এবং কল্কার্থ জীবক, ঋষভক, দ্রাক্ষা, চিনি, বেড়েলা ও উৎপল সমভাগে সমস্তে /> সের যাথাবিধানে এই তৈল পাক কার্য়। নম্মে প্রয়োগ করিলে বাডপৈত্তিক শিরোরোগ আরোগ্য হয়।

শতাহ্বাদাং তৈলং।—

শতাহৈর গুমূলোগ্রাবক্র ব্যাগ্রীফলৈঃ শৃতং। তৈলং নস্যং মরুৎশ্লেগ্রতিমিরোর্দ্ধগদাপহং।

তৈল /৪ দেব, জল ১৬ দের। কল্কার্থ শলুফা, ভেরেগুরিয়ল, ডগর-পাচকা, বচ ও কন্টকারীব ফল সমভাগে সমস্তে /১ সের। যথাবিধানে এই তৈল পাক ক্বিয়া নম্ম গ্রহণ করিলে বাওলৈত্মিক, তিমিবরোগ ও উর্দ্ধগত-রোগ সকল নম্ট হয়।

দশমূলং তৈলং ।—

দশমূলতুলাকাথে তৈলং প্রস্থং বিপাগরেছ।
মাতৃলুঙ্গরসকৈব প্রস্থং দদ্যান্তিষগ্রন্ত।
দশমূলীবলারাস্মা সৈম্ববং মননং তথা।
হরিদ্রে পিপ্পলীমূলং শতাহ্বাকুঠমেব চ।
মঞ্জিঠা মুন্তকং ধান্যং ভাগাস্থাঃ কার্ষিকাঃ পৃথক।
এততৈলং বরং শ্রেঠঃ বাতশ্রেশ্ব বিনাশনং।
অভ্যক্তেম শিরোরোগং দনুরোগং জরন্তথা।

তৈল /৪ দের; দশমলের কাথ ১৬ দের, ছোলজনেরর রস /৪ দের এবং কল্কার্থ বেডেলা, দশমল, বাস্থা, দৈকন, জটামাংসী, ছরিন্তা, দাক-ছবিন্তা, পিপুলম্ল, শলুকা, কুড়, মঞ্জিষ্ঠা, মুথা ও ধনিরা শুড়োকে ২ ভোলা। এই তৈল পাক করিয়া অভ্যঙ্গ প্রয়োগ করিলে বাউলৈম্বিক শিরো-রোগ, দন্তরোগ ও জুর নক্ট হয়।

মহাদশমূলতৈলং ৷—

দশমূলীক্ষায়েণ পচেৎ তৈলন্ত সার্যপং।
কল্কং কণা বচাশুকী পিপ্পলী চ বরীশারী।
কট্ফলং মরিচং চব্যং জীরকং শতপুশ্পিকা।
পুনর্নবা হরিদ্রা চ দেবদারু ঘনাবলা।
শুক্ষমূলক রাম্মা চ জীরকং ক্রফজীরকং।
এষামর্দ্ধপলৈভাগৈত্তিলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
শত্তাঙ্গাছন্তি শ্লেম্মাণাং পানাৎ কাসং ব্যপোছতি।
শ্রথকোদরকৈব শিরোরোগমরুদ্ধবং।
জীবজ্বং সাম্বাভং নিদ্রালম্য মরোচকং।
পীনসং শ্লীপদং রুদ্ধিং ভগন্দর বিনাশনং।

সার্বপত্তিল / দ সের ; কাথার্থ দশমল । বা • সের জল ৬৪ সের, শেষ
১৬ সের । কল্ফ র্থ পিপুল , কচ, শুর্কী, পিপুল, শতমলী, শাসী, কট্রফল, মরিচ,
চই, জীরা, শলুকি, পুনর্না, বেশদাক, থেড়েনা, শুদ্ধুলা, জীরক, কঞ্জীরা
ও মাধানী প্রত্যাকে ৮ ভোলা। এই ভৈল ম্থানির্মে পাক করিরা অভ্যন্ত প্রয়োগ করিলে স্লৈম্মিকরোগ, পান করিলে কাস এবং শোথ প্রভৃতি রোগ
আরোগ্য হর।

রহদশমূলং তৈলং।—

দশমূলং করঞ্জ নিশু ভী চ জয় দ্বিকা।

পুস্তু রং ষটপলান্ ভাগান্ জলদোণে বিপাংরেছ।
পাননেমেরদেতৈলং কটু প্রস্থং বিপাংয়েছ।
তৎকলকং সহিতং শ্রেঠং ভাগান্ ষট্পলকান্ পুনঃ।
বাতশ্রেম্বমুদ্ভূতং সন্নিপাত জ্বরাপহং।
কাসং পঞ্চবিধং শ্বাসং জীবজ্ব বিনাশনং।
তৃষ্ণার্তিদাহশমনং পিত্রেম্ম বিনাশনং।
শিরোরোগং কর্বশোগ মন্যান্তম্ভ বিনাশনং।
র্মিত্রেম্ব হর্বশেব অশ্বিভ্যাং পরিক্টিতিং।
দশমূল্যিনং তৈলং রাথকলক সমীরিতং॥

কটু হল / ৪ সের । দশ্যল, করঞ্জ, নিসিন্দা, জয়ন্তী ও ধুভূরা, ইহাদের ক্লাপ ১৬ দেব এবং কল্কার্থ পূর্বোক্ত দশ্যলাদি প্রভ্যেকে / ৮০ পোরা। যথাবিধানে এই তৈল পাত ক বয়ং অভ জাদিতে গুরোগ কালে বাত-লৈ আকরোগ, দারিপাতিক জা, কাদ ও ভৃতি রোগ আরে!গ্য হয়।

मर्काष्ट्रयम्द्रश ।—

গগণং শোদিতং আহং পলৈক্মিউকা সমং।

টিস্কাস্টেড্রথিংশং গাবার্ক তিবুগদ্ধিকং।
কপ্রং লব কিব জাতীকোষ ফলং ঘনং।
নাকেশ্রলবঙ্গক কুঠকং তিফলা তথা।
জলেন বটিকাকাগা ছাঁয়ায়াং শোষয়েতথা।
প্রনরং নাশ্যত্যাশু সর্বদোধান ভ্রামানিশি।
অনীতির্বা চন্দান রোগান শিরংশুলাতিদার ।
জ্বক্ষ গ্রহীদোধং রক্ত পিত মরোচকং।
শেরসাপিনাশার সুইঃ স্বাক্ষ্মদ্বঃ।

আত্র ৮ আটডোলা, ইউক ৮ ভোলা, টন্থন ২ ভোলা, ডেল্পত্র, এনাটী, নাকচিনি, কপুর, দৈদ্ধবলবণ, জাডীফল, জৈত্রী, মুখা, নাদেগর, কুড়, লবল, এবং ত্রিফলাচ্ব প্রস্থোকে অন্ধ মাযা পরিষাণে এহণপুর্বক জলসহ বাটিয়া ভিন চারি রতি প্রামাণ বটীকা প্রস্তুত করিয়া ছায়ায় শুষ্ক করিয়া লইবে। ইহা দেবন করিলে প্রদর, প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

শিরঃশূলাদি বজ্ঞিকা।

পলং রসং পলং গন্ধং পলং লৌহং পলঞ্চাল্ডং।

ত্বিগ্ৰুত্ব কোলচত্বারিতদন্ধি ত্রিকলারজঃ।
কুঠমরুকণাশুগী গোক্ষুরং ক্রিমি নালনং।
প্রত্যেকং দলমূলক তোলকং বন্ত্রশ্রেধিতং।
স্বত্যোগাৎ প্রকর্তব্যা মাধৈকা, বটিকা শুভা।
ছাগীভূষারপানেন মধুনাপরসাথবা।
কাথেনদলমূল্যাশ্চ যথা স্বং তং বিভাবয়েং।
শিরঃশূলাদিবজ্রোহয়ং চল্রনাণেন ভাষিতং।
কফ জং দ্বন্দ্রক্তিক ত্রিদোষজনিত্ত্রথা।
বাতিকং পৈতিকং সর্বং শিরোরোগং বিনালনং।
ত্রমাং নেত্রগদং হন্যাৎ ক্রিমিকুঠং হলীমকং।
ত্রণানিগওমালানাং মূত্রকুচ্ছু ক বিদ্বিধ।
উপদংশং বাতরক্তং ভগন্দর মন্থ্রিকাং।
গীড়কাং জলদোধাখং সংগ্রহ গ্রহণীং জরেং ॥

পারদ, গৰক লোগ ও ত জ প্রজোকে ৮ তোলা। গুণ্গুলু ৪ তোলা, ত্রিকুলা ২ ডোলা এবং ড্ড়, ষ্ফিন্ধু পিপুল, শুণ্ঠী, গোকুর, বিড়াল ও দশ-মূল, প্রভাবে ২ ডোলা। এই সকল প্রখা চুল করতঃ এক ে মুভদহ পেমণ-পূর্বক এক মায়া মাজীয় ইট্টাকা প্রশুভ করিবে। ইছার এবটা করিয়া বিলিজ্ঞ প্রভিদিন ছাণ্ড্রন্ধ, মধু, গ্রাড্রন্ধ অথবা দশমূলের কাংসহ সেবন করিলে স্ববিধি শির:শূলা দ্রোগ আরোগা ছয়।

সুর্থানয়োরসঃ —
য়তস্তাভতীক্ষ গমকং তাভকং সমং।
য়ুহীকীরৈর্দিং মর্দ্য ভক্ষথেৎ মাধমাতকং।
সপ্তাহাৎ স্থ্যবর্তানীন্ নিরোরোগারিবারয়েৎ র
স্থ্যোদয়োরসোনামা সর্বমূর্দ্রগদাপহঃ।
ইতি নিরোরোগাধিকারঃ।

জ্জ, লৌহ,গন্ধক ও ভাষা প্রত্যেকে সমভাগে প্রহণপূর্বক মনসাসিজ্বের-ক্ষীর সহ বাটিয়া এক মাষা মাজায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবই করিলে স্ব্যাবর্তানি শিরোরোগ সকল আরোগ্য হয়।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিগ্রন্থে শিরোরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ প্রদর্বেগগাধিকারঃ।

রোহিতকামূলকলকং পাওরে২স্পরেপিবেৎ।
জলেনামলকারীজ কলকমাসংসিতামধু।
ধাতকঃশাদাকমাত্রায়াচামলকঃগমধুদ্রবং।
কাকজানুকমূলয়া মূলং কাপাস মেববা।
পাও প্রদরশা রার্থং পিবেভগু লবারিণা।
সং

রোহিতক (রয়না) রক্ষেরমূল অথবা আমলকীর বীজ চিনি ও মধুসহ কিয়া ধাইফুল বা আমলকী মধুসহ অথবা কাকজ্ঞগ্যারমূল বা কার্পাসমূল তণ্ডুলো-দক সহ পান করিলে পাণ্ডুপ্রদররোগ প্রশমিত হয়।

> শিবেলৈণেয়কং রক্তং শর্করা মধুসংযুতং। বাদকস্বরদং পৈতেগুড়্চা রদমেববা। দধাসৌবর্চনাজাজী মধুকং নীলমুৎপলং। শিবেৎ ক্ষোদ্রযুভানারী বাভাদ্যকর পীড়িত।।

ছরিণের রক্ত শর্কর। ও মধুসছ পান করিলে সর্ববিধ প্রাদররোগ বিনষ্ট ছয়।

বাসকের রস অথবা গুলঞ্চের রস চিনি ও মধুসহ পান করিলে পৈত্তিক প্রদর্বোগ নউ হয়।

দধি দৌবর্চন লবণ, ক্ষক্তীরা, যফিমধু ও নীলোৎপল একতা মধুসহ পেষণপূর্বক পান করিলে বাভজ প্রদররোগ নউ হয়।

> দার্করিসাঞ্জন রুশান্ত্রকিরাত বিল্ভলা-তকৈরবক্তোমধুনা কষায়ঃ। পীতোজরতাতিবলং প্রদরংসশৃলং পীতাণীতারুগলোহিত্দীলশুক্রং। রুশাঞ্জনং তণ্ডুলীয়স্যমূলং কৌডোবিত তণ্ড লভোরপীতং

অসুগদরং সর্বভবং নিছন্তি
খাসঞ্চার্গাসহনাগরেণ।
দশমূলসমূদ্ধতা পেবয়েত্তপুলারুনা'।
এতৎ পীত্বা ত্রাহাৎনারী প্রদরাৎ পরিমুচ্যতে।
কৌর্দ্রযুক্তং ফলরসং কাচ্চৌড়ু ম্বরজং পিবেৎ।
অসুগদরবিনাশায় সশর্করপয়োরভুক্।
রক্তপিত বিধানেন প্রদরাংশ্চাপুপোচরেৎ।
অসুগদর বিশেষেণ কুটজাইটকমাচরেৎ॥

দাকহরিন্দ্রা, রসাঞ্জন, বাসক, মুথা, চিরহা, বেলশুঠি. ভেলা দফুল, ইহাদের কাথ মধুসহ পান করিলে পীত, খেত, অরুণ, লোহিত, ব্যক্ত এবং সশুল অতি প্রবল প্রদররোগ সকল বিনষ্ট হয়।

রসাঞ্জন ও ট্বাপানটের মূল পেষণপূর্বকে মধু ও ডণ্ডুলোদক সহ পান করিলে সর্বপ্রকার প্রদর্রোগ নষ্ট হয়।

বামনহাটী ও শুঠী চূর্ব একত্র দেবন করিলে প্রদার ও শ্বাসঁরে ।
কুশমূল, তণ্ডুলোদকসহ পেষণপূর্বক ও দিবস দেবন করিলে অথবা কাঠ
ডুমুর ফলেররস মধুদহ পান করিয়া শর্করা ও ডুম্মনছ অল্লাহার করিলে সর্বাবিধ অস্থদর (প্রদর) রোগ সকল প্রশাসত হয়।

বক্তপিতাধিকারোক্ত ঔষধাদি, বিশেষতঃ কুটজাইক প্রয়োগ দ্বারা প্রাদররোগের চিকিৎনা করা অতীব কর্ত্তব্য।

মুদ্যাদাং মৃতং।—

মুদামাযস্যনিযুর্তে রান্ধা চিত্রক নাগরৈঃ। সিদ্ধং স্পিপালীবিলৈঃ স্পিশ্রেষ্ঠমস্করে॥

• খত /৪ দের, জল ।৬ দের, মুগ ও মাষকলাইয়ের ক্লাথ ।৬ দের। কল্কার্থ রাক্ষ, রক্তচিতা, ৬৯ী, পিপুল্প ও বেলশুঠ সমভাগে সমস্তে /১ সের। যথাবিধানে এই দ্বত পাক করিয়া পান করিলে প্রদর্রোগ নম্ট হয়।

শীতকল্যাণকং দ্বতং ।—
কুমুদং পদ্মকোশীরং গোধ্মো রক্তশালয়ঃ।
মুদ্যাপণীপ্রস্যা চ কাশ্মরী-মধুষ্টিকা।
বলাতিবল্যোর্গ্লী মুৎপলং তালমুক্তকং।
বিদারী-শতমূলী চ শালপণীসজীরকা।
কলত্রিপুষ্বীকানি প্রভাগ্রং কদলীকলং।
এষাম্প্রপান্ ভাগান্ গ্রাক্ষীরং চত্ত্বিং।

পানীরং বিশুণং দত্বা স্থত প্রস্থং বিপাচয়েছ।
প্রদরে রক্তাশিকে চ রক্তগুল্মে হলীদকে।
বহুরপঞ্চ মহ শিতুং কামলাবাতলোণিতে।
অরোচকেন্তরেজীর্ণে পাণ্ডুরোগে মদেল্রমে।
তরুণীচালপপুপা চ যাচগর্ডং মবিন্দতি।
অহনাহনিচ স্থীণাং পরং প্রীতিবিবর্দ্ধনং॥

মৃত /ও সের, জল /৮ সের, হ্রাঙ সেব। কলকার্থ রক্তকুমুন, পদাকার্ছ, বেণার দল, গোধুম (গম), রক্তশালি ধানোরমূল, মুগানি, ক্ষীরকাকোলী, গাস্তারীফল, ষফ্টিমবু, শেড়েলামূল, গোরক্ষচাকু,লরমূল, নীলোৎপল, তালমন্তক, ভূঁইকুমুড়, শতস্ত্রী, শালপর্ণী, কিলল, শশারবাজ ও অপক্ষকদলী কল এই সকল দ্রব্য প্রত্যুক্তে ৪ ডোলা। যথানিরমে এই মৃত পাক করিয়া সেবন করিলে প্রদ্বে, রক্তপিত ও রক্তক্তম্ম প্রভৃতি বিধিধ রোগ আরোগ্য হ্র।

অশোকান্যং মৃতং ৷

্ৰাশ্ৰক্ষলং প্ৰস্থং ভোয়াঢকে বিপাচিত্তং। তেমপানাবৰেষেণ জীৱকেন ভথৈবচ ৷ ন্নত প্ৰস্থ পচেনেতৎ প্ৰক্ষিপাচ তথা রং। **७७ लामू द्रकां भी तर अयर धारर शृगक् शृशक्।** কেশরাজরসস্যাপি প্রস্থমেকং ভিষথ্রঃ। जीवनीरेयः পियारेलम्ह পरूरेयः मत्रमाञ्चरेनः। ষ্ট্যাহ্বাশোকমূল্ঞ মুদ্বীকাচ শভাবরী, তণ্ড লীয়কমূলক কল্কৈরেভিঃ পলার্দ্ধিকঃ। শর্করায়াঃ পলান্যটৌ গর্ভং দত্বাস্চৃণিতং। পুষণাষোগেন তৎপীতং নিহন্যাৎ দৰ্বদোষজং। শেতং কৃষ্ণং ত**ণানীলং প্রদের**ং হ**ন্তিত্বন্ত**রং। কুন্দিশূলং কটীশূলং যোগি শুলক সর্বাং। মন্দাগ্নি মক্রচিং পাওুং ক্রন্তাং খাদকাদিনাং। আয়ুঃপুষ্টিকরং বল্যং বল্বর্ণ প্রসাননং। দেয়মেত্ররং সর্পিকিফুনা পরিকীর্ত্তিতং। कीवनोटें कीवनीय मन्दिकः ॥

শ্বন্ত /৪ দের, ভণ্ডুলোদক /৪ দের, ছাগছ্য /৪ দের, কেণ্ডব্যার রদ, /৪ দের ও অশোকছালের দার্থ /৪ দের এবং কম্পর্য জীবনীরগণ শিরাল- े বীজ, পৰুষকল,রমাঞ্জন, ষষ্টিমধু, অশোকমূলেরছাল, কিস্মিন, শতমূলী ও চাঁপানটেবৰ্ক্ন প্রত্যেকে ৪ ভোলা এবং ইক্ষ্ চিনি /> সের। ষণাবিধানে এই ছত পাক করিরা পুষ্যানক্ষত্র যোগে পান করিলে সর্কদোষজ্ঞ দ্বেড, নীলাদি প্রদর্রোগ সকুল ও অক্সাত্য বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

> অশোকবলকলকাথশৃতং ত্রন্ধং সুশীতলং। ষথাবলং পিবেৎ প্রাতম্ভীব্রাস্কর নাশনং। প্রদীরং হন্তিবলারামূলং ত্রন্ধেন মধুমুতং পীতং। কুশবাটাগলকমূলং তণ্ডুল সলিলেন রক্তাখ্যং॥

আশোকছাল > তোলা, জল । দের, হন্ধ / এ পোয়া। এই হুদ্ধা-বশিষ্ট কাথ প্রাতঃকালে পান কবিলে সকল প্রকাব প্রদবরোগ নষ্ট হয়।

বেড়েলারমূল ছগ্ধনহ বাটিয়া মণুব সহিত পান করিলে অথবা কুশমূল ও বেড়ালারমূল একতা চাউলেব জলসহ পান করিলে রক্তপ্রদররোগ নউ হয়।

পুৰাগন্তুগং চূৰ্ণং 1—

পাঠাজয়ায়য়োর্ঘয়ার্ঘয় বিলোন্তেদ রসাঞ্জনং।
কটুঙ্গবৎসকানভাগাতকী মধুকাঞ্জনং।
পুষ্যেনোদ্ধতাত্তলানি শ্লক্ষচুর্ণানি কারয়েৎ।
তানিক্ষোদ্দেশসংযোজ্য পায়য়েৎ তণ্ডুলাগ্লুনা।
অর্শঃস্কুচাতিসারেয়ু রক্তযচ্চোপবেশ্যতে।
দোশগন্তকতায়ে চ.বালানাং তাংশ্চনাব্যেৎ।
যোনিদোষং রজোদোষং শ্বেতনীলং সপীতকং।
স্থীনাং শ্বাবারুণং যচ্চতৎ প্রসন্থনবর্তয়েৎ।
চর্ণং পুরানুগং নাম হিতমাত্রেয় পুজিতং॥

চুশ্থ পুর্যানুগং নাম হিতমা: ত্রয পৃজিতং ॥
আক্রাদি, জামেরফলেবআগি, আঁথেরআগি, পাষাণভেদী, দোনাছাল,
কুড়চী, অনস্তয়ল, ধাইফুন, যষ্টিমধু ও অর্জুনছাল, এই সকল দ্রেযা পুষাানক্ষরে আহরণ পূর্বক সমভাবে একত্র চুর্ন কবিষা লইবে। এই চুর্ন ঔষধ্ব প্রভিদিন উপযুক্ত মাত্রায় ডণ্ডুলোদক ও মধুসহ সেবন করিলে সর্কবিধ্ব প্রদর্ম ও অভিদারাদি রোগ আবোগ্য হইয়া থাকে।

> যফিন্ধু নিশাচূর্ণং ভোলকৈকং সমন্বিতং। বঙ্গভন্মার্কপত্রস্য রসেনাপ্লাব্যনীয়তে। প্রাতঃ প্রাতঃ প্রতিদিনং প্রদরং হন্তিনিশ্চিতং। বাসাক্ষায়সহিতং রসভন্ম প্রযোজিতং।

প্রদরং হন্তিবেগেন বলাকে। দ্রেণ যোজিতং।
রসভন্মবিনায়ত্র কথাতে সহিতোক্রমঃ।
অনুক্তমপিত:জজ্জরং সর্বরোগ প্রশান্তরে॥
ইতি প্রদর**িকিৎ**সা।

যফিমধু ও ছরিজাচ্ব এবং বঙ্গভন্ম প্রভোকে সমভাগে। নদ-পাভাররদে মর্দ্দন করিয়া প্রতিদিন প্রাভংকালে পান করিলে অথবা রস-সিন্দুর বাসকেব ক্কাথসছ কিন্তা বেডেলাচ্ব মধুব সহিত সেবন করিলে সর্ব-বিশ্ব প্রদাববোগা নম্ভ ছর।

রক্তাতিদারে কথিত ঔষধাদি প্রদররোগে সর্বতোভাবে প্রযোজ্য। রদদিক্দুর, কোম যোগ মধ্যে কথিত না হইলেও যে তাহাদ্বারা সর্বপ্রকার রোগ বিনম্ট হইলা থাকে, তাহার আর অনুমাত্রও সন্দেহ নাই। ইতি প্রযোগ-চিন্তামণিপ্রাস্থে প্রদর্রোগর চিকিৎসা সমাপ্ত।

रा द्यापर ता ना विकास

কদলীনাং কলং পকং ধাত্রীকল রসোমধু।
শর্করাপয়নাপেরং সোমধারণ মৃত্রমং।
মাবচুর্ণকমধুরং বিদারীমধুশর্করা।
পারসাপার্য়েৎ প্রাভন্তপাং ধারণ মৃত্রমং।
তালপুষ্পান্ম মৃকং খর্ল্জুরীকদলীকলং।
পারসাপার্য়েৎ প্রাভন্তধাং ধার 'মৃত্রহং॥

পর কদলীকল, আমলকারবদ, দবু ও ইকুটিনি ত্রপ্পদহ হিছা মাষ্ট্রনাই চুন, মধুরগণীয় দ্রনা, ভূমকুমাণ্ড, দবু ও শর্কা, ত্রপ্পছ অথশ ভালপুপ্র যিনিধু, পি এংভুব ও পর নেলা ফর ত্রপ্র প্রভিন্ধ, পি এংভুব ও পর নেলা ফর ত্রপ্র প্রভিন্ধ। প্রভিন্ন কেবল করেল নাবাদিশের দেনে ধাতুব ক্ষয় নিবারি ভ্রম। (স্ত্রীগণের কর্ষশারীরে বাপ্তে জল্মর পদ বিধে দামবাতু বলা যার। ইহাব ক্ষয় হইলে নারীদিশের শরীর ক্রমশা ক্ষাণ হইতে থাকে এবং ইহাতে দ্রীগণের প্রদরাদি বিবিধরোগ্র সমুদ্ধ ভ্রম।।

ধার্তীয়তং।—

ধাত্রীকলর সপ্রস্থে বিদর্গাঃ স্বরদেত পা।
তৃণপঞ্চর সপ্রস্থে স্কৃত প্রস্থা বিপাচয়ে ।
ক্ষীরস্যাপি শতাবর্গাঃ প্রস্থং প্রস্থার রাম্যাচ।
দত্যামূদ্রশ্লিবাবৈদ্যৈঃ পাক্ষিদ্ধং বিধানতঃ।

স্থাতেপ্রক্ষিপেচচূর্ণ মেষাকাশি পৃথক্পলং।

মন্ত্রকং ত্রিভাকৈর কারক রন্ধনারকং।

শর্করারাঃ পলান্যটো মধুনন্দ পলাইকং।

চূর্ণই দত্বা স্থাথিতং স্নিয়োভাতে নিধাপরেছ।

সোমরোগং নিহন্ত্যাও তৃকাং দাহ মরোচকং।

মূল্রুচচ্ছু, ক বিবিধং বহুমূত্রং বিনাশয়েছ।

পিত্তজানু বিবিধানু বাগিনু বাতভাংশ্চান্যসম্ভবানু।

করোতিশুকোপচয়ং দর্পি রেতদনুভ্রমং॥

ছত /৪ (मর,; আমলকীর রদ /৪ দেব, ভ্'ম কুমাণ্ডের রদ /৪ দের, ভ্ণপঞ্চম্লেব রদ /৪ দেব, শত্যলীর বদ /৪ দেব, ও চৃদ্ধ /৪ দের এবং কল্কার্থ হাইটি দধু, তে উড়া মূল, যবক্ষার ও বিস্তাভ চবীজ প্রভোচে ৮ ভোলা শর্করা ও মধু প্রক্রোকে /১ দেব। মথানিঃমে এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রার দেবন করিলে দোমরোগ, হয়া, দাহ প্রভৃতি বিবিধ্রোগ আরোগা হয়।

গগণানিলোহং ।—
গগণং ত্রিফলালোহং কুটজং কটুকত্রয়ং।
পারনং গন্ধককৈব বিট্সৈন্ধব স্বার্চ্জিকা।
স্থানলাপত্রকং চোরং বঙ্গং জীরক যুগ্মকং।
তানিসমভাগানি শ্লক্ষ্ট্ণানি কারয়েৎ।
তদর্ধং দীপ্যকং চুর্ণং কর্ষেকং মধুনা লিহেৎ।
অবশ্যং বিনিহন্ত্যাশু মূত্রাভিসারসোমগং॥
ইতি সোমরোগচিকিৎসা।

অভ্ৰ, ব্ৰিফলা, লোহ কৃষ্ণিচ, ত্ৰিকটু, পারা, গন্ধক, বিটুলবণ, সৈদ্ধানলবণ, দাচিকার, দাক্চিনি, ভোটুএলানি, ভেজ্ঞপত্ৰ, বন্ধ, জীবা, কৃষ্ণজীরা ও চোরনামক গন্ধ দ্রবা। এই দকল দ্রব্য সমভাগ এল দর্বসমন্টির জার্দ্ধিক ব্যানী গ্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যগুলি চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করিয়া লাইবে। এই চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় মধুসহ লেহনপূর্বক দেবন করিলে জ্রীনিগোর মৃত্যাভিসার গত দোমরোগ নিশ্চয়ই বিষ্ক্রই হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিশম্থে দোমরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ যোনিব্যাপদাধিকারঃ।

যোনিব্যাপৎ সুভূরিষ্ঠং শশুতে কর্মবাতজিৎ।
বস্ত্যভাঙ্গপরিষেক প্রলেপাঃ পিচুধারণং।
কদমূলকল্কঞ্চ খনিরাঙ্গারমিপ্রিতং।
মাসং নারীপিবেৎ কালে যোনিশূলনিপীড়িতা'
বচোপকুঞ্চিকাজাজীক্ষার্যকলৈদ্ধবং।
অজোমোনা যবক্ষার চিত্রকং শর্করান্থিতং।
পিষ্ট্যপ্রসন্থালোডা খানেতন্ম্মতভজ্জিতং।
ধোনিপাশার্তি হুদ্রোগ শুলার্শো বিনিবর্ত্রেৎ॥

যোনিব্যাপদ্রোগে বায়ুন।শক ক্রিয়া, উত্তর বস্তি, অভাঙ্গ, পরিথেই প্রলেপ ও পিচু (বস্ত্রখণ্ড) ধারণ প্রভৃতি প্রযোজ্য।

কদলীমূলের কল্ক, খদিরকাষ্ঠের অঙ্গারসহ একমাস সেবন করিছে যোনিশুল নিবারিত হয়।

বচ, কৃষ্ণজীরা, জীরা, পিপুল, বাসক, সৈশ্ববলবণ, যমানী, যবক্ষার, রক্ত-চিতা ও শর্কর।; এই সকল দ্রব্য সমভাগে প্রসন্না (মদ্যের উপরিস্থ স্বাচ্ছ-ভাগ) সহ আলোড়নপূর্বক ছতে সন্তলন করিয়া সেবন করিলে যোনিব্যাপদ্ প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়।

বচোপকুঞীকাজাজী বচা রাম্মা চ চিত্রকং।
যমানী সৈম্ববং ক্ষারং পিফ্বাভৃষ্টা মতেন তু।
যোনিজং কর্মাশূলঘুং পেরমুফদকাদিভিঃ।
উপকুঞ্চকার্যুক্তীরা ইতি।

ৰচ, কৃষজীরা, জীরা, বচ, রাস্না, চিতা, যমানী ও, যবক্ষার ; এই সকল দ্রুব্য একত্র পেষণপূর্বক স্থতে সন্তলন করত: উঞ্চোদকাদির সহিও পান করিলে যোনিশূল নম্ভ হয়।

পিফৃ শৈষ্ কজং মাং সং পক্ষতি নিড়ী সংযুতং।
লেপমাত্রেণ নারীণাং যোনিকন্দ হরং পরং।
ঘোষাক্ষপুষ্পলেপেন কন্দশান্তিত্রেজেদ্ ফ্রবং।
রক্তযোন্যাং যথাদোষং প্রদরত্বোহিতোবিধিঃ।
শতাবরীল্পতং শস্তং যোনিপিত বিকারন্থ ॥
শামুকের মাংস ও পাকাতেঁতুল একত্র পেষণ,করিয়া ভদ্বারা অথবা

বোষাফল, বছেড়া ও পুষ্পাঞ্জন একত্র পেষণপূর্বক ভদারা প্রালেপ দিলে থৈনিস্পারোগ আরোগ্য হয়।

রক্তদ্যিত যোনিরোগে প্রদর্নাশক কিরা প্রযোজ্য। অপিচ শতাবরী স্থত দারা বোনিবিকার নউ হয়।

ফলয়তং ৷ —

মঞ্জিষ্ঠামধুকং কুষ্ঠং ত্রিফলাশর্করা বলা । মৈদা পয়স্যা কাকোলী মূলকৈবাখগস্কজং। অজমোদা হরিদ্রেদ্বে হিন্দু কটুকরোহিণী। উৎপলং কুমুদং জ্বাকা কাকোল্যো চন্দন দ্বয়ং। এতেষাং কার্ষিকৈর্ভাগৈয় ত প্রস্থং বিপাচয়েৎ। শতাবরী রসক্ষীরং মুতং দেয়ং চতুর্গু ণং। সর্পিরেভন্নরঃ পীত্রা নিতাং স্ত্রীযুর্ষায়তে।. পুত্রান জনয়তেনারী মেধাচ্যান প্রিয়দর্শনান। ষা হৈবস্থিরগর্ভাস্যাৎ যা বা জনয়তে মৃতং। অপ্পায়ুষ্যং বা জনয়েৎ যাচকন্যাং প্রসূরতে। যোনিদোষেরজোদোষে পরিস্রাবেচ শক্তে। প্রজাবর্দ্ধন মায়ুষ্যং সর্ব্বগ্রহ নিবারণং। নামাফলম্বতহেতৎ অশিভাগং পরিকীর্ত্তিতং। অনুক্তং লক্ষণামূলং কিপন্তাত্র চিকিৎসকাঃ। জীবেদ্বৎবৈদকবর্ণায়া মুতমত্রত্বগৃহতে। আরণ্যগোময়ে নৈব বহিত্বালা প্রদীয়তে॥

স্থাত /৪ সের; শতাবরীর রস ও হন্ধ প্রত্যেকে।৬ সের. কল্কার্থ মঞ্জিষ্ঠা,
বৃষ্টিমধ্, কুড়, শর্করা, কেড়েলাং দেদ, হুগুলিয়া, কাকোলী, অশ্বসন্ধা, যমানী,
হরিত্রা, পাকহরিন্তা, হিন্ধু, কট্কী, শীরকাকোলী, উৎপল, কুমুদ, দ্রাক্ষা,
কাকোলী, গীরকাকোলী, রক্তচন্দন ও সারক্দন প্রত্যেকে ২ তোলা। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া পান করিলে নারিদিসের যোনিরোগ ও অক্সান্তরোগ আরোগ্য হয়।

ফলদ্বতং ।---

সহচরদ্বে ত্রিফলাং গুড়ু চীং সপুনর্ন বাং।
শুকনাসাং হরিদ্রেদ্ধে রাস্নাং মেদাং শতাবরীং।
কল্কীকৃত্যন্নতং প্রস্থং পচেৎ ক্ষীরচতুর্গু নং।
তৎ সিদ্ধং প্রপিবের ইংকি ক্ষেত্রিক ক্ষিত্রিক

পিওতা চলিতা যাচ নিঃসৃতা বির্তা চ যা।
পিওযোনিস্ত বির্তা বওদোনিশ্চ য স্মৃতা।
প্রপদ্যন্তে তৃ তা স্থানং গর্ভং গৃক্তি চাসরুৎ।
একংকলমুতং লাম গোলিদোষ হরং গরং ॥

ছাত /৪ দেব, ত্রান্ধ দেব, কল্কার্থ নীলানিন্দী, পীতবিন্দী, ত্রিফলা, গুলাঞ্চ, পুনর্না, কেউরাঠেলা, হরিলা, দাকহরিলা, রাল্লা, দেদ ও শতাবরী কমভাগে সময়ে /১ দেব। এই ছাত যথাবিধানে পাক করিয়া দেবন করিলো ধোনিশুলাদি বিবিধ স্ত্রীবোগ আরোগ্য হয়।

নীলোৎপলান্যং মৃতং ।—
নীলোৎপলানীর মধুক্ষকী দ্রাকা বিদারীকুশপক্ষুলৈঃ।
স্যাক্ষ্রীবনীয়ৈশ্চ মৃতং বিপক্ষং শতাবরীকার্মপুর্মাঞ্রং।
তচ্ছক্রা পান্যুতং প্রশন্ত মনুগদরে মারুত্রক্তেপিতে।
ক্ষীনেবলের ভিনি সং প্রন্তেকচেচ্চু চ পিত প্রভবেচ গুল্মে।
মৃত /৪ দেব, শতাবরীব হম ও ছম্ম প্রভেকে /৪ দেব; কল্কার্ধি
নীলোৎপল, বেণার্ম্বল, যক্তিমধু দ্রাক্ষা, ভূমিচ্ম্বাত, কুশাদিপঞ্চম্ল এবং জীবনীয়াণ স্মভাগে স্মন্তে /১ দেব। যথাবিধানে এই মৃত পাক

করিয়া উহার দহিত্য / দেব ইকু চনি মিজিত করিয় লইবে। এই য়ত উপ-

যুক্ত মাত্রায় প্রভার দেবন করিলে প্রদরানি বিবিধ স্ত্রীরোগ আরোগ্য হয়। ক্ষার ভৈলং।—

শুক্তি শষ্ক শঙ্গা বং দীর্গজ্ঞাৎ সমুক্ষর ।

দক্ষা কারং সমানার ধরমুত্তেল গালয়েৎ।

ক্ষারোউভাগং বিপচেৎ তৈলং সার্ধানাং বুধঃ।

ইনমন্তঃপুরেনেয়ং তৈলমাত্তে যঃ পুজিতং।

বিন্দুরেকঃ পতেদ্যত্ত তত্ত্রোম ন জারতে।

মননানিত্রণেতৈল অখিভাগমেব নির্মিতাং।

অশ্সাং কুঠরোগানাং পামানক্র বিচর্চিকাং।

কারতৈলমিদং শ্রেঠং স্ক্রেক হরং পরং।

কটুতৈল /৪ দের, বিষ্কৃক, শাসুক, শধ্ব সোনাছাল ও ঘণীপাৰুল গৰ্মত সূত্ৰ আবিত ইছাদের ক্ষার জল ৮০ দের এবং জল ৬ দের। যথাবিধানে এই তৈল পাক করির। প্রায়োগ কবিলে উপদংশানিরোগ আবোগ্য হয়। আপিচ এই তৈলের একবিন্দু শরীরের বেস্থলে পতিত হয়, তথায় আর লোম উৎ-

ভগশকোচ !--

সমস্তং বাতজিৎ কর্মহোনিব্যাপথ স্থানিত।
সর্ববিধ বাতনাশক কিয়া যোনিব্যাপদ্রোগে প্ররোগ করা কর্তব্য।
যোনীনাং স্বেদলেপাক্ত বরানীরেণ কারয়েৎ।
প্রকালয়েৎভগং নিত্যং পুত্রামলকবল্কলৈঃ।
রুদ্ধাপিকামিনীকামং বালবং কুরুতেরতিং।
ইতি যোনিব্যাপদাধিকারঃ।

ত্রিকলার কাথ ছ'রা ধোনি প্রকালন পূর্বক আমলকীরছাল ছারা সেদ ও প্রলেপ দিলে রদ্ধ: নারিগণেরও ধোনি এতাদৃশ সঙ্কৃচিত হর্ম যে, তাহারা বালাদিগের স্থায় নৈথুনে সমর্থা হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিপ্রস্থে যোনিব্যাপদুরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ স্ত্রীরোগাধিকারঃ।

প্রদঙ্গতঃ প্রবন্ধ্যামি বাধকঃ প্রক্রিয়াবিধিং। ভতো গর্ভচিকিৎসাঞ্চ বালকাময় মেবচ। রক্তমাদীত ষষ্ঠীত ডাঙ্কুরো জলকুমারকঃ। চতৃ বিধাে বাধকসাাহ মুনিভিশ্চ যথােনিতঃ। তেষাং স্ভাবং বঞ্গামি ষথাশা দ্রং নিশমতোং। এতেষাং পূজনং কার্যাং জনৈঃ সন্ততিকাংকিভিঃ। নিঃসরণং স্থানঞ্বলিদানং বিশেষতঃ। কুর্ত্তবাং শুকবাক্যেন ধ্যাত্রা শাস্ত্র সালকাং। চতুর্বিধা বাধকাঃস্থাবিজেয়া ঋতিকালতঃ। ব্যাথাৎ কটান্তথানাভে রগঃ পার্শ্বেন্ডথা। রক্তমাদী প্রদোষেণ জায়তে বাধক্ষিয়ঃ। নেত্রেহন্তেতথাজ্বালা যোগে। চৈববিশেষতঃ। লালয়া সংযুতং রক্তং ষষ্ঠীনাং বাধকঃ স্মৃতঃ। উদ্বেগোগুরুতাদেহে রক্তপ্রাবো ভবেদ্বন্থঃ। নাভেরধোভবেচছ্ শং ডাক্বুরস্য চ বাধকঃ। সশৃলসোদগর্ভাচ স্ক্রাদেহাপরক্তিকা।

मायरमकः ष्रशिशि श्वरीना ভर्तन्यनि।
तक्तमानी श्रमार्थन कन्तरानिक जात्र छ।
मारेयक ভर्तन्यमा श्रिष्ट्यानष्यः छथा।
मनिनः यानित्रकः मार्थः यश्रीनाः मृष्यः छर्वः ।
मायज्ञः ठपूर्यः वा श्रष्ट्यीना छर्तन्यनि।
क्षिणे कित्रभारममाष्ट्यानष्यक्त मृष्यः।
मना कृषा ভर्ति श्रृणा वस्त्रभात्र खथा।
ख्यास्त्रीयन्त्रका मारेयर्ब्वनक्रमात्रेषः।

অত্রোপারঃ।

ত্রিকোণমথষট্কোণং নবকোণ মণ্ডলাক্তিং।
মন্ত্রানি তানিচ লিখ্যাবাহয়েশ্বন্ত্রপূর্বকং।
মন্ত্রং যথা।

ওঁ হুঁ হ্রীঁ ফট সাহা। ওঁ হ্রীঁ বজ্ঞযোগিনি স্বাহা। ওঁ হ্রীঁ ওঁ ক্রীঁ ফট্ স্বাহা। ওঁ শ্লায়বজ্ঞহন্তায় স্বাহা॥

অথ তদেবতাধ্যানং যথা।
রক্তনাদীং দ্বিভূগাং রক্তালক্ষারভূষিতাং।
রক্তাম্বধরাং দিব্যাং রক্তনেত্রাং সুশোভনাং।
বরদাং ব্যগ্রহন্তাঞ্চ নমামি রক্তনত্তিকাং।
ষষ্ঠীং গৌরবর্ণাং পীতাম্বর্ধরাং সর্বলক্ষণ গুণোপেতাং।
নানালক্ষারভূষিতাং দ্বিভূগাং ক্রোড়পুত্তিকাং।
ওঁ ডাক্বরঃ সমহাগোমনুষ্যানাং শুভপ্রনঃ।
গঙ্গাপুত্রোসি বিখ্যাতঃ সর্বাপেৎ শান্তিকারকঃ।
জলকুমারোমহাভাগোজলস্থলনিবাসকঃ।
দ্বিভূজোপি জটাভার ধ্রণ্যাং ধ্যায়য়েৎ সদা॥

অনস্তর প্রসদ্ধানে স্ত্রীনিগের বাধক প্রক্রিয়া, গর্ভ চিকিৎসা ও বালক রক্ষা বিধি বলাঘাইতেছে। রক্তমান্ত্রী, ষষ্ট্রা, ভাকুর ও জলকুমারক ভেনে স্ত্রীনিগের বাধক চারি প্রকার। এই চতুর্বিধ বাধক স্ত্রীনিগের ঋতুকালে সমু-পন্ন হইয়া থাকে। সম্ভানার্থী ব্যক্তিগণ এই বাধক নিবারণার্থে নিসঃরণ, স্থাপন ও বলিধানানি প্রক্রিয়া অবলম্বন করিবেন।

রক্তমান্ত্রী বাধক কর্তৃক স্ত্রীদিণের কটিদেশে, নাভির অধঃপার্শ্বেও গুল-দেশে বেদনা জন্মে। বন্ধীবাধক কর্তৃক স্ত্রীদিণের নেত্রে, হল্তে ও বোদিডে জ্বালা হয় এবং লালা সংযুক্ত বক্তস্রাব হইয়া থাকে। ডাকুর বাধক কর্তৃক নামীদিক্ষে উদ্বেপ, দেহের গুৰুতা, বক্তস্রাব ও নাভির অধোদেশে বেদনা সমুস্ত ত হয়। এবং কুমারক বাধক কর্তৃক স্ত্রীদিগেঁর বেদনা সংযুক্ত শর্ভপীড়া, দেহের শুষ্ঠা ও অপ্পরক্তস্রাব হয়। ইহাতে গর্ভ নিক্ষল হইয়া থাকে।

যদ্যপি রক্তমান্দ্রীবাধক দোষে স্ত্রীদিগের একমান অথবা ত্রই মান অন্তর ঋতু হয়, তবে ভাহাতে গর্ভ নিষ্কল হইয়া থাকে।

যদাপি ষতীবাধক হেতু স্ত্রীদিণের একমাদের মধ্যে ছইবার ঋতু হর ও যদি দেই আঁর্ত্ব-রক্ত মলিন হয়, তবে তাহারও গর্ভ নিক্ষল বলিয়া জানিবে। ডাক্ক্রবাধক দোঘে স্ত্রীদিণের তিনমাদ অথবা চারিমাদ অন্তর ঋতু হয়, এবং শরীরের ক্ষ্যবর্গতা ও হস্তপাদে জ্বালা হইয়া থাকে। এবং জলক্মারবাধক কর্ত্বক নারীগণ দর্মদা ক্ষোধলীলা, অভার স্থল দেহা, বহুকালে ঋতুমতী, স্থলস্তনী ও অপ্পরজ্বো বিশিষ্টা হইয়া থাকে। এই চতুর্বিধ বাধক নিবারণার্থ ব্রিকোণ, ঘট্কোণ অথবা নবকোণ বিশিষ্ট একটা মণ্ডলাকৃতি প্রস্তুত করিয়া পালাং "ওঁ হুঁ হুটা—ধ্যায়য়েৎ দদা" পর্যান্ত মন্ত্রটী পাঠকরিবে।

অধ নম্পুষ্পিতায়াং।

পারাবত পূরীবঞ্চ মধুনায়া পিবেভতঃ। রঙ্গপুলাভবেরারী মূলদেবেনভাষিতং। জ্যোতিয়তি কোমলপত্রমগ্নৌভৃষ্টং ষবায়াঃ রুসুমঞ্পিষ্টং। গৃহাঘনাপীতমিদং যুবত্যাঃ করোতিপুষ্পং স্বরমন্দির্দ্য। স্বানকালেসমুৎপত্তেদেয়মৌষধ মুচ্যতে। রক্তকার্পাদমূলক নাগনানান্ত্রথৈব চ। পিন্টাবলায়ামূলঞ মরিচেন সমন্বিতং। দ্রেয়ং দিনত্রয়ং তর্মশুচিঃ স্যাৎ বরাঙ্গনা। ্সানোপরিচপাতব্যং বার্ত্তক্যাঃ কীটমুভ্রমং। একবিংশদ্দিনং যাবদু শ্বেন সহ মেথিকাং। पिथीरजानकरमकक थे ७ रजान बर खरा। য়ুভঞ্জোলকমিদঃ ভুশ্বেন খিপ্রিতং পিবেৎ। মৃতবৎশা মৃতগর্ভা কাকবন্ধ্যা তথৈৰ চ। পুত্রহীমাচ বন্ধ্যাচ পারমাপিঙ্গরভ্যতা। সংহরেৎ সর্বদোষানি মেথীলক্ষণ মুত্তমং গ নাভিন্তনানাং জ্রীণামপরখন্তিসানকালে দেয়মিদমোরহং।

অশ্বগদ্ধাবটব্যাল লক্ষণামূলকন্ত্রথা।
ভক্ষয়েৎ সপ্তরাত্রন্ত চুথৈঃ পিন্টা পুনঃ পুনঃ।
অবশ্বং সন্তুভিং ভস্যাঃ পুত্রীসা গর্ভধারিনী।
বটব্যালো বটান্ধুরঃ অন্যেতু বটাবরোহঃ।
কেচিছ্বটব্যালোহনন্তমূলং।
ত্রগ্ধমন্ত্রপানং।
অনুক্তাং ক্ষীরকাকোলী ভ্রমেন সহ ভক্ষয়েৎ।
পুপাহীনাচ বা নারী ভক্ষয়েদিদমৌধধং॥
ভঁহাঁ হু মং জং লং সাং সিদ্ধিং।
ক্রীং স্থাহা হ্রাং হ্রীং হুং।

পূর্ববাস্ত্রং বন্ধারো মৃতবৎসারা নাভৌ প্রজপ্রবাং। এবং যাবদীয়ৌৎ পাতিকবেদনারা জলমাত্র কঞ্চ দেরমভি মন্ত্রিত মিতি। পরস্তু সর্পদংক্রেমুখামৃতং দত্বা ফুৎকারং দদ্যাৎ নান্তীতি ব্যক্তব্যঞ্চ পতিকোপিত বালায়ামপি সিন্দুরাভি মন্ত্রিতং দদ্যাৎ॥

কবুতরের বিষ্ঠা মধুদহ অথবা জ্যোতিত্মতী লতার কোমল পত্র অগ্নিতে ভর্জনপূর্বক তাহা অথবা জবাফুল কাঁজীদহ পেযণপূর্বক দেবন করিলে স্ত্রীদিগের নউপুষ্প (রক্তঅদৃশ্র হওয়া)পুনকস্তৃত হয়।

রক্তকাপাদেরমূল, নাগদানা অথবা বেড়েলামূল ও মরিচ কিন্থা বেগুণের কীট বা ত্রশ্বসহ মেথী ২ তোলা, ইকুচিনি ৩ ডোলা ও স্বত ২ ডোলা একত্র মিশ্রিত করত: ঋতুস্বান কালে দেবন করিলে মৃতবৎসা, মৃতগর্ভা, কাকবন্ধ্যা প্রভৃতি নারীদিগের সর্কবিধ দোষ দুরীভূত হয়।

অন্বগন্ধা, বটাঙ্কুর ও লক্ষণামূল, ত্বধ্বসহ অথবা ক্ষীরকাকোলী ত্বধ্বসহ পেয়ণপূর্বক দেবন করাইরা পশ্চাৎ "ওঁ, হুঁ কুঁ মং জং লং সাং দিদ্ধিং ক্লীং স্বাহা, হ্রাং হ্রাং তং" এই মন্ত্রটী বন্ধ্যা ও মৃতবৎসা নারীর নাভিতে জপ করিয়া জল ও আদা প্রদানপূর্বক পরে সর্পদন্তে মুখায়ত (খু খু) প্রদান করতঃ ফুৎকার দিয়া "নান্তি" এই কথা বলিবে এবং পশ্চাৎ দেই নারীর ললাটে দিন্দুরের ফোটা প্রদান করিবে। ইহাদ্বারা জ্লীদিশের নই পুষ্পতা, বন্ধ্যাত্ব প্রস্তৃতি রোগ আরোগ্য হয়।

শীততোয়েন সংপিটা শরপুৠকমূলকং। কর্মং পীত্রা লভেচ্গর্ভং পূর্ববৎ ক্রমযোগতঃ। মুম্ভা প্রিরন্থ দৌবীর লাকা কৌদ্রসমং পিবেৎ। কর্ষং তণ্ডুলতীয়েণ বন্ধা ভবতি পুত্তিণী।
সমূলাং সহদেবীক সংগ্রান্থ পুষ্যভান্ধরে।
ছারাশুক্ষক চূর্ণ একবর্ণ গবাং পরঃ।
প্রয়েঘা পিবেল্লারী বন্ধা ভবতি গর্ভিণী।
কলমীং শর্করাং দূর্কবাং প্রকাল্য ব্যুষিতামূনা।
তৃদক্তঃ পানমাত্ত্বেণ হন্তি শূলসমুদ্ধরং।
তদ্বদেব চিরোক্ত্ তন্ত্ব্ থপীতমসংশয়ঃ।
ত্রীণাং মৃত্যুসমুখক শূলং নিলকুরুকিং।
আন্ত্রুমুব্রুচ কাথং লেহয়েল্লাজশক্ত্রভিঃ।
অনেন লীচুমাত্রেণ গর্ভিণী গ্রহণীংশ্লেশ্রের।

শরপুখা মূল ২ তোলা শীতল জল নহ পেয়ণ করিয়া অথবা মুথা, প্রিয়ক্ত, কাঁজী, লাক্ষা ও মরু সমভাগে সমস্তে ২ তোলা তওুলোদক সহ পেষণপূর্বক কিয়া বেড়েলারমূল স্থ্যসংগুক্ত পুর্যানক্ষত্যোগে উত্তোলন-পূর্বক চূর্ করতঃ ছায়ায় শুক্ষ করতঃ ছগ্পদহ সেবন করিলে ক্রীদিগের বক্ষ্যাত্ত্ব-রোগ বিনষ্ট হয়।

কল্মশাক, শর্করা ও দুর্ব্বা এই সকল দ্রব্য বাসি জ্বলসহ প্রক্ষালন করিয়া সেই জ্বল পান করিলে অথবা নীল সিন্টারমূল বাসি জ্বলস্থ বাটীয়া সেবন করিলে জ্রীদিগের সর্কবিধ শ্বারোগ আরোগ্য হয়।

আত্র ও ছামের ছালের কাথ থৈ চ্ণদছ লেহন করিলে গর্ভিণীদিগের গ্রহণীরোগ নউ হয়।

সহচরকৃতঃ কাথঃ পিপ্পলীচুর্ণসংযুতং।
দীপনো জরশোথম্বঃ স্থৃতিকাতক্ষনাশনঃ।
চন্দনং শারিবা লোধ্রং মুদীকা শর্করাম্বিতা।
কাথং কৃত্যা প্রদাতব্যং গর্ভিণ্যা জরনাশনং।
হীবেরারুণ রক্তাচন্দন বলা ধন্যাক বংসাদনী।
মুস্তোশীর যবাস পর্পট বিষা কাণং সিবেদার্ভিণী।
নানাবর্ণ রুজাতি সারক গদে রক্তপ্রুতে বা জ্বরে।
যোগোইয়ং মুনিভিঃ পুরা নিগদিতঃ স্থৃত্যাময়েযুক্তমঃ॥

বিন্টীর ক্বাথ, পিপুল চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে স্ত্রীদিগের শোষ্ট্র ব্রুব ও স্থতিকারোগ আরোগ্য হয় এবং অগ্নি প্রদীপ্ত হইয়া থাকে।

রক্তচন্দন, অনন্তমূল, লোধ ও কিসমিস, ইহাদের ক্লাথে শর্করা প্রক্ষেপ্ দিয়া পান করিলে গর্ভিগীর জর নম্ট হয়। বালা, ব্রক্তচন্দন, পুয়াগপুষ্পা, বেডেলা, ধনিয়া, গুলঞ্চ, মুথা, বেণারমূল, ছরালভা, কেতপাপড়া ও অতৈস, ইহাদের কাথ পান করিলে গাি্নীদিগাের নানাবর্ণ বিশিষ্ট অতিসার, ব্রক্তপ্রাব ও জুর নই হয়।

মধুকং শাক্ষী জঞ্চ পরস্থা স্থুরদার চ।

অশান্তকং রুফ্তিলা স্থান্তবল্লী শতাবরী।
রক্ষাদনী পরস্থা চ তথৈবোৎপলশারিবা।
অনন্তা শারিবা রাম্মা পদ্মা মধুকমেবচ।
রহতীদ্বর কাশার্যা শীরীশুলা স্থুচো রুভং।
পৃথক্পনী বলা শিশু শ্বদংক্রী মধুয়ন্টিকা।
শ্রাটকং বিষ্ণ দ্রাকা কলের মধুকং দিতা।
মানেরু সপ্তযোগাস্থা রর্দ্ধানো কান্ত সপ্তম্থ।
যথাক্রমং প্রযোক্তব্যা গর্ভপ্রাবে পরোয়ুতা।

गिर्डिगीरक ध्येषम मारम यखिम्यू, शांकवीक, कारकाली ও (प्रवास ; हिडी मारम ख्यांखक (खांमकल), क्रथंडिल, मिक्किं। अ शंख्यूली ; ज्ञी 'म्र मारम, श्रवशाहा, क्षीदकारकाली, उर्थंडिल, मिक्किं। अ शंख्यूली ; ज्ञी 'म्र मारम, श्रवशाहा, क्षीदकारकाली, उर्थं खांम्यू ; शक्ष्य मारम, दृश्जी, ककें-कान्नी, गांखानी बवर वह, ख्यांथ, यख्डपूर्व, शांक्यू अ मनमामीक, बहे शक्ष कीन्नी द्राक्यक की अ हाल बवर मुख ; यक्ष मारम, हांकूरल, वर्ष्या, मिक्ना-गूरलन हाल अ यखिम्यू बवर मक्षम मारम, शांनीकल, मुंगाल, खांका रक्यू यिम्यू अ हेक्ष्र हिनि, बहे मकल ख्या क्रमांचर इक्षमह (श्रवश्रूवक ख्यांच इक्षमह शांक करिन्ना रावन करिराड हिर्द । हेशांक गंडियांच निवादिक हन ।

কপিথ বিল্ রহতী পটোলেকু নিদিম্বিকাঃ।
মূলানি ক্ষীরসিদ্ধানি দাপরেন্দ্রিমণ্টমং।
নবমমপুকানন্তা পরস্থা শারিবং পিবেৎ ।
পরস্ত দশমে শুঠ্যা শৃতশীতং প্রশক্ত ।
সক্ষীরা বা হিতা শুঠী মধুকং দেবদারু চ।
এবমাপ্যর্যতে গর্ভ শুব্রিরুক্ গোপশাম্যতি।
কুশকানোরুকানাং মূলৈর্গোকুরকল্প চ।
শৃতং ত্রম্বং সিতা যুতা গর্ভিণ্যাঃ শূলক পরং॥

গর্ভিণীর গর্ভজাবের সম্ভব হইলে গর্ভিণীকে অফটম মাসে কয়েদবেল, বেলমূল, বৃহতী, পটোল (অথবা পল্ডা) ইকু ও কণ্টকারীমূল, ভ্রন্ধসহ পাক করিয়া পান করিতে দিবে। নবম মাসে, যঞ্চিমধু, অনন্তমূল, ক্ষীর- কাকোলী ও অনন্তমূল; দশম মাসে, ৩১ ী অথবা শুগু ী ও যফিনধু ছগ্ধনহ পাক করিয়া পান করিতে দিবে। ইহা দারা গর্ভন্থ দন্তানের পোষণ ও ভীত্র-বেদনাদির শান্তি হয়। কুশন্ল, কাশমূল, এরগুমূল ও গোক্ষর ছগ্ধনহ পাক করিয়া ইক্চিনির সহিত পান করাইলে গৃভিণীদিগের শূলবৎ বেদনা উপ-শমিত হয়।

কশের শৃঙ্গাটক জীবনীয় পদ্মোৎপলৈরও শতাবরীভিঃ।
নিদ্ধং পায়ঃ শর্করয়া বিদিশ্রং সংস্থাপয়েদার্ভ মুদীর্ণশূলং।
কশের শৃঙ্গাটক পদ্মকোৎপলং সমুদ্যাপর্ণীং মধুকং সশর্করং।
সশ্লগর্ভসূতি পীড়িভাঙ্গনা পয়োমিশ্রং পায়সানন্তক পিবেৎ।

কেশুর, পানীফল, জীবনীয়গণ, পদ্ম, নীলোৎপঁল, এরগুমূল ও শতমূল এই সকল দ্রব্য হ্রমস্থ পাক করিয়া ইকুচিনিস্থ সেবন করাইলে গর্ভিণী-দিণের গর্ভস্কাব শিবারিত হয় ও শূলবৎ বেদনা বিনক্ট হইয়া থাকে।

কেশুর, পানীকল, পদ্ম, উৎপল, মুগানী, যষ্টিমধু ও শর্করা°ছদ্ধসহ সেবন-পূর্ব্বক, শুক্ষার সহ ভোজন করিলে গার্ভিণীদিগের শুলবৎবেদনা ও গার্ভজ্ঞাব নিবারিত হয়।

গর্ভে গুকেতু বাতেন বালানাঞ্চাপি শুব্যতাং।

সিতা মধুক কাশ্মগ্যহিত মুখাপনে পয়ঃ।
গর্ভশোষে ত্বামগর্ভা প্রসহাল্চ সদা হিতা।
পাঠালঙ্গানি সিংহাস্য ময়ুরজটেঃ পৃথক্।
নাভিবত্তি ভগা লেপাৎ সুখং নারী প্রস্থতে॥

বায়ুকর্ত্ত্ ক গর্ভশুষ্ক ইইয়া গার্ভিণীকে শুষ্ক করিলে ভাষার পুষ্টির নিমিত্ত যঞ্চিম্বর্, শর্করা ও গান্তারী, তুজাসহ পাক করিয়া ভাষা এবং হংস, কচ্ছ-পাদির ডিম্ব ও কুকুটার্দির মাংস ম্বেবন করিতে দিবে।

আকনাদি, বিষলান্ধলিয়া, ব্যাসকু ও অপাদার্গমূল, ইহাদের যে কোন একটী পেষ্ণপূর্বক তদ্ধারী নান্ধি, বস্তি (ভলপেট) ও ষোনিতে প্রলেপ দিলে জ্রীদিগের সুখে প্রদাব ছইয়া খাকে।

ইহায়তক সোমশ্চ চিত্রভারুশ্চ ভাবিনী। উচ্চঃপ্রবাশ্চ তুরগো মন্দিরে নিবসম্ভতে। ইদময়তমপাং সমুদ্ধতং বৈভব লঘুগর্ভমিমং বিমুক্তর স্ত্রী। তদনল প্রনার্ক বাসবাস্তে সহ লবণামুধ্যৈদ্দিনস্ত শান্তিং।

> মুক্তাশাসাবিপাশাশ্চ যুক্তাঃ সূর্যোণ রশায়ঃ। মুক্তঃ ভ্রাদার্ভত্তে দশহি মারিচ স্বাহা। জলং চ্যবন্যস্ত্রেণ সপ্তবারাভিষম্ভিতং।

পীত্বা প্রস্থাতে নারী দৃষ্ট্বা চোভয় ত্রিংশকং।
তথোভয় পঞ্চনশ দর্শনং সুখস্তিক্বং।
নারী ঋতু বস্তুভিঃ সহ পক্ষ দিগফ দশভিরেবাচ।
অর্কভুবনান্ধি নহি তৈরুভয় ত্রিং কিমিব মার্শ্চর্যাং।
বস্তুত্বাবেব্যাক বাব নব্যট্সপ্তধোবিগঃ ক্রেমাং।
সর্বাং দশদিক্ষু ত্রিংশকং ন্বকোষ্ঠকে॥

"ইহামৃত মারিচ স্বাহা" পর্যান্ত চাবন মন্ত্রটী দ্বারা ৭ সপ্তবার জল আভি-মন্ত্রিত করিয়া দেইজল গার্ভিণীকে পান করাইয়া, ৩০ ত্রিংশৎ অঙ্কে পূরিত কোটা অথবা ১৫ পঞ্চদশ অঙ্কে পূরিত কোটা দর্শন করাইলে গার্ভিণীদিগের স্থাথ প্রদান হইয়া থাকে। নিম্নে ত্রিংশদক্ষে পূরিত কোটার একটা প্রতিকৃতি ও পঞ্চদশাক্ষে পূরিত কোটার একটা প্রতিকৃতি প্রদর্শিত হুইল।

	ত্রিংশদক্ষিত কোষ্ঠী।					পঞ্চনশাঙ্কিত কোষ্ঠী।			
	٥٠	٥.	٥.			5 &	2 ¢	; Ġ	•
ು	ડહ	2	ડ ર	00	٥٢	b -	3	৬	>@
৩৽	৬	> 0	> 8	00	20	9	¢	9	٥ د
৩৽	Ъ	> ir	8	00	5@	8	٦	२	5 C
	٥.	৩৽	٥.	_		>¢	> ¢	٥٢	

কটু বুয়াহি নির্মোক ক্বতবেধন সর্বপিঃ।
কটু বৈলান্থিত ধূমো থোনেঃ পাতরতে ২মরাং।
কচবেষ্টিতরান্ধুলা স্বষ্টে কণ্ঠে সুখং পততামরাং।
মূলেন লাঙ্গলাক্যাসংলিপ্তে পাণি পাদে চ।
অমরাপাতনং মদৈঃ পিপল্যাদি রজঃ পিবেৎ।

তিৎলাউ, দর্পেরখোলস, ঘোষাফল, খেতদর্ধপ ও কটুতৈল, ইহাদের ধূম বেদনাতে প্রদান করিলে অথবা অন্তুলিতে কেশ বেষ্টনপূর্বক সেই অন্তুদ্ধি গর্ভিণীর কণ্ঠদেশে ধর্ষণ করিলে কিম্বা বিষলাঙ্গলিয়ারমূল গর্ভিণীর হন্তে ও পাদে লেপনপূর্বক মদ্যের সহিত পিপ্পল্যাদিগণের চূর্ণ দেবল করাইছে গর্ভিণীর অতি সহজে শীত্র অমরা (কূল) পতিত হয়।

পারাবত শক্তৎ পীত সিততত লবারিণা। গর্ভপাতানন্তরোখং রক্তত্রাবনিবারণং। জলপিষ্ট বরুণপত্তৈঃ সন্থতৈ রুদ্বর্ত্তনা লেপে। শকক্কিশরোগং হরতো গোময় মুর্বাদুখো বিহিতো॥

কবুত্রের বিষ্ঠা, শালিভণুলের জলের সাঁহত পান করিলে প্রসবজনিত রক্তপ্রাবাধিক্য নিবারিত হয়। সমস্ত শরীরে গোময় ঘর্ষণপূর্বক ভত্নপরি বক্ষণরক্ষেরছাল জলসহ পেষণ করিয়া ছত মিপ্রিত করতঃ উদ্বর্তন ও লেপন করিলে কিন্ধিশরোগ (গর্ভোৎ পীড়ন হেতু বস্তি প্রস্তৃতির চর্মা অম্প অম্প বিদীধ হওয়া) নিবারিত হয়।

অমৃতা নাগর নহচর ভটোৎকট পঞ্চমূল জলদজলং।
শীতং মধুযুতং নিবারয়তি স্তিকাতক্ষং।
সহচর পুক্ষর বেতসমূলং বৈকক্ষত দাকু কুলখসমং।
জলমভয় সৈশ্বব হিন্দুযুতং সদ্যোজর স্থতিকা শূলহরং।
দশমূলীক্ষত কাথ সদ্যঃ স্থতিক্ষপহঃ॥

গুলঞ্চ, ওঁঠ, বিন্টী, ভদ্রমুথা, ইকড় নামক ড্ণেরমূল, স্বল্প পঞ্চমূল ও মুথা, ইহাদের শীতল কাথ মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে অথবা বিন্টী, পুষ্ণরমূল, বেতসমূল, বৃঁইচুরক্ষেরমূল, দেবদাক ও কুল্থিকল।ই, ইহাদের কাথে দৈশব-লবণ ও হিন্ধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে কিম্বা দশমূলের কাথ পান করিলে স্থৃতিকা জ্বর শীঘ্রই নিবারিত হর।

বজ্ৰকাঞ্চিকং।—

পিপ্পলী পিপ্পলীমূলং চব্য শুগ্ঠী যমানিকা। জীরকে দ্বে হরিদ্রে দ্বে বিড়ং সৌবর্চ্চলং তথা॥ এতৈ রেবৌষধৈঃ পিষ্টেরারনালং বিপাচিতং। আমবাতং হরং রুষ্যং কফল্পং বহ্নিদীপনং। কাঞ্জিকং বজ্কবং নাম স্ত্রীণামগ্রিবিবর্দ্ধনং॥

পিপুল, পিপুলমূল, চৈ, শুগী, যমানী, জীরা, কৃষ্ণজীরা, ছরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, বিট্লবণ ও সচললবণ; এই সকল দ্রব্য মিলিত ৬ ভোল। কাঁজী

া সের, যথাবিধানে ইহা পাক করিয়া ব্যবহার করিলে ইহাদ্বারা আমবাত
প্রভৃতি বিবিধরোগ নম্ভ হয়।

অখগনা মৃতং।—

কাথেন হয়গদ্ধানাং সাধিতং সন্নতং পয়ঃ। খতুব্বাতাবতী পীত্বা গর্ভং ধতে ন সংগয়ঃ॥

স্থত /৪ দের, অখগদার কাথ।৬ দের, হ্রদ্ধ।৬ দের। যথাবিধানে এই স্থত পাক করিয়া ঋতুমতী স্ত্রী দেবন করিলে নিশ্চয়ই গর্ভ হয়।

রহনখগনা মৃতং।—

অখগন্ধা পলশতং শুভদেশে সমুদ্ৰবং। পুণ্যেহনি সমারত্য সাধয়েৎ শ্লক্ষকুটিতং। দ্রোণে২ন্ত্রিস শনৈস্তাবৎ যাবৎ পাদাবশেষিত সর্পিঃ প্রস্থং পচেতেন গ্রাক্ষীরং চতুগু বং। স্বয়ং গুপ্তার্গভকৈনাং যফিমধুকমেবচ। भृषीका भूकाभर्ता ह जीवली हमनाः वनाः। নারায়ণীং বিদারীঞ্চ দত্তা সম্যাথিপাচয়েৎ। দিতা মাক্ষিকয়োঃ শীতে মাক্ষিকং প্রক্ষিপেদুধঃ। লিঢ়া পাণিতলং যুঞ্জাৎ পূর্মবাহার বিবর্জ্জিতং । ক্ষীণেন্দ্রিরাং ক্ষতক্ষীণা রদ্ধা বালা তথাবলা। হীনগাংসাশ্চ যে কেচিৎ প্রশেচদং মাত্ররা মৃতং। **७ज(छ(जो२थ मोथाक श्रमां निम्निहमा ह।** লভতে ভূষ্যসক্ষাশো নিতাং স্ত্রীযু র্ষায়তে। রুদ্ধো রুষায়তে ন্ত্রীয়ু নিত্যং ষোড়শ বর্ষবৎ। নারীণাঞ্চ শতং গচেছৎ নচ শুক্রক্ষরে। ভবেই। বন্ধাপি লভতে পুত্রং বুদ্ধিমেধ। সমন্বিতং। মাৰমাত্ৰ প্ৰয়োগেণ বলীপলিতনাশনং। খাদেরিতাং তিমিরঞ সর্ববাত গদন্তথা। প্রকানান্ ক্ষয়ং শ্বাসং হিক্কাঞ্চ বিষমজ্বান্। হত্তি সর্কান্ প্রয়োগোইরম্মিভ্যাথ নির্মিতং পুরাঃ।

মৃত /৪ সের, তুম ।৬ সের ; কাথার্থ অশ্বন্ধা ।২॥• সের, জল ১॥৪ সের, শেষ ।৬ সের । কল্কার্থ আলকুশী, ঋষভক, যফিদ্ণু, এলাচি, দ্রাক্ষা, মুগানী, জীবন্তী. পিপুল, বেড়েলা, শতমূলী ও ভূমিকুত্মাণ্ড, সমভাগে সমক্তে /১ সের । যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া শীতল হইলে চিনি ও মধু /১ সের মিশ্রিত করিয়া লইবে । ইহা সেবন করিলে ক্ষীণেক্সিয়তা প্রভৃতি নম্ট হয়।

্ ত্রীপর্ণী তৈলং।—

শ্রীপর্ণীরসকল্কাভ্যাং সিদ্ধং তৈলং তিলোদ্ভবং।
তুলকেনৈব তত্তিলং স্তনস্যোপরি ধারয়েৎ।
পত্তিতাবুত্থিতৌ স্ত্রীনাং ভবেয়াতাং পয়োধরো।

তৈল /৪ দের, গাস্তারীছালের কাথ ।৬ দের। কল্কার্থ গাস্তারীছাল কুটিড /১ প্রের। যথাবিধানে এই তৈল পাক করিয়া তুলিকা দ্বারা স্তনো-পরি প্রয়োগ করিলে বুদ্ধানারীদিগেরও স্তন পুনক্ষথিত হয়।

কাশীশাদ্যং তৈলং।—

কাশীশ তুরগন্ধা সাবরী গঙ্গপিপ্পলী বিপক্তে। তৈলেন যান্তির্দ্ধিং শুনকর্ণবরাঙ্গনানি॥

তৈল /৪ দের, কল্কার্থ হিরাকস, অশ্বগদ্ধা, লোধ ও গজপিপুল, সম-ভাগে সমস্তে /১ সের। যথাবিধানে এই তৈল পাক করিয়া তদ্বারা মর্দ্দন করিলে স্তন, কর্ণ, যোনি ও লিক্ষ পরিবর্দ্ধিত হয়।

দৌভাগ্যশুধী।—

নাগরস্য পলান্যটো য়ত্স্য পলবিংশতিঃ।
ক্ষীরাচ্কেন সংযুক্তং খণ্ডসার্দ্ধ শতন্ত্রথা।
শতাহ্বা জীবক ব্যোষ ত্রিস্থান্ধি যমানিকা।
কারবী মিষি চব্যাগ্রিং মুন্তানাঞ্চ পলং পলং।
লেহীভূত মিদং সিদ্ধং য়তভাওে নিধাপয়েৎ।
তদ্মথাগ্রিবলং খাদেৎ প্রস্থায়া বিশেষতঃ।
বল্যং বর্ণদমায়ুষ্যং বলীপলিতনাশনং।
বয়সঃ স্থাপনং হৃদ্যমগ্রিয়দ্ধিকরং পরং।
আমবাত প্রশমনং সৌভাগ্যকরমূভ্যং।
মূকত্ব শূলশুমনং সূত্কিগরোগনাশনং॥

চীচ্ব /১ দের, গবাছত /২। • দের, ত্রন্ধ ।৬ দের, চিনি /৬। দের এবং
•শলুফা, জাবক, ত্রিকটু, তেজপাতা, ছোটএলাচি, দাকচিনি, যমানী, ক্রন্ধজীরা, মৌরী, চৈ, রক্তচিত। ও মুখা, ইহাদের চ্ব প্রত্যেকে ১পল। যথানির্দে পাক করতঃ ঘন হইলে একটা ছত ভাণ্ডে রাখিয়া দিবে। এই অবলেহ প্রস্থাতা নারীর দেবা। অপিচ ইহাদ্বারা আমবাত প্রভৃতি বিবিধরোগ
বিষষ্ট হইয়া শরীরের বল, বর্গাদি পরিবর্দ্ধিত হয়।

মহাদৌভাগাগুগী।—

শুঠাাশ্চ কুড়বং আছ্ং ম্বতত্বাং সমাক্ষিকং।
ত্রিকটু ক্রিকলানাঞ্চ ত্রিস্গন্ধি বিড়ঙ্গকং।
লবঙ্গং জাতীপত্রঞ্চ জাতীকল মুরা তথা।
মুস্তকং বালকং রাহ্মা আম্ম জম্ম পিয়ালকং।
মাদ্রিযুশং শাসী এন্থী বাম্পাকো মধুরিতিচ।

লোপ্রস্য বব্বলকৈব ধাতীবন্কলমেবচ।
সর্জ্জরসং তথা বিলৃং শাল্মলী ধাতকীতিচ
যমানি চাজুমোদাচ মরিচং মাগধীত্বচং।
কেশরং বারিপিপেল্যো বারুণী গোকুরীতি, চ।
কোকিলাকা মখগদ্ধাং বাট্যালক শতাবরীং।
বিদারী মূষলী চৈব পিচুভাগং সমাহরেৎ।
যবস্ত্যেতানি চুর্ণানি তাবন্মাত্রস্ত মেথীকাং।
সর্ব্বে দ্বিগুণোদেয়া সিতা মশুন্তিকন্তথা।
সর্ব্বেমকীরুতং চুর্ণং মোদকং পরিকল্পয়েৎ।
ভক্ষয়েদনুপানক ছাগীত্র্বানুপানতঃ।
স্থাতকাং হন্তি বিবিধাং গ্রহণীক বিনাশ্রেৎ।
অতিসারং মহাঘোরং জ্বাতীসারনাশনং।
অগ্রিমান্দ্যং জ্বং শূলং অশাংসিচ ভগন্দরং।
অস্বপিত্তক বিবিধং বিক্ষোটং শীতপিত্তনুৎ।
সৌভাগ্য মোদকং ছেব মুনিনা পরিভাষিতা।

শুপীচূর্ণ /॥॰ সের, স্থান্ড ও মধু মিলিড /২॥॰ সের এবং ত্রিকটু, ত্রিফলা, ত্রিস্থান্ধি, বিড়ন্দ, লবন্ধ, জাতিপত্র, জাতিকল, মুরামাংনী, মুথা, বালা, রামাণ্জাবের আঁঠার শাঁদ, জামের আঁঠার শাঁদ, পিয়ালবীজ আতইচ, শুপী, গোক্রমুল, শ্বেডবচ, নটেশাক, লোধ, বাবলারছাল, আমলকী, ধুনা, বেল-শুঠ, শিমুলছাল, যফিমধু, ধাইফুল, যমানী, বনযমানী, মরিচ, পিপুল, দাফ-চিনি, নাগকেশর, পিপুল, রাখালশশারমূল, গোক্ষর, কোকিলাক্ষ, অশ্বগন্ধা, বেড়েলা, শতমূলী, ভূমক্মাণ্ড ও ভালমূলী, ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ ভোলা এবং এই সকল চূর্ণ সমষ্টির সমান মেখীচুর্গ এবং সমস্ত দ্বোর দ্বিগুর্ণ ইকু-চিনি ও মিছির। যথাবিধানে মোদক প্রস্তুত্ককরিবে। এই মোদক উপযুক্ত মাত্রায় ছাগ ছন্ধদহ পান করিলে স্থিকনা, প্রহণী প্রভৃতি বিরিধরোগ আরোগ্য হয়।

রহৎ সৌভাগ্য শুগী।—
রহৎ শুগীং সমাদায় চুর্ণয়িত্বা বিধানতঃ।
পলষোড়শিকাং আছং ক্ষীরেদশগুণেপ্রচৎ।
ক্রেমেণ পাকশুদ্ধিঃ স্যাৎ মৃতপ্রস্থে চ ভর্জ্জয়েৎ।
লঘুপাকং প্রকর্তব্যা নখবো মোদকেষপি।
শভাবরী বিদারীত মুষলীগোক্ষুরোবলা।

ছিত্রাসত্বং শতাহ্বচ জীরক্ষো ব্যোষচিত্রকো। ত্রিযুগন্ধি যথানী চ তালীশং কারবীনিষি। রাস্না পুক্ষরমূলক বাশীদারু শতাহ্বয়ং । শঠীমাঞ্দী বচামোচভক্পত্রং নাগকেশরং । জীবন্তি মেথিকা যটি চন্দনং রক্তচন্দনং। ক্রিমিম্বং তোয়সিংহাস্য ধন্যাকং কট্ফলং ঘনং। কৰ্ষদ্বয়মিদং ভাগং প্ৰত্যেকং পট্টি ঘৰ্ষিতং। সর্ববৃণাদ্ধিগুণিতা প্রদেয়াসিত শর্করা। যুক্ত্যাপাক বিধানজ্জে মোদকং পরিকল্পয়েৎ। শুদ্ধেভাণ্ডে নিধায়াপ খাদেরিত্যং যথাবলং। বীক্যাগ্রি বলকোঠঞ্চ নারীণাঞ্চ বিশেষতঃ। ক্ষৌদ্রাত্রপানতঃ প্রাতঃ গুরুদেবান সমাচরেৎ। . তদ্বৰ্ণ্যং বল্যমায়ুষ্য বলীপলিত নাশনং। বয়সস্থাপনং প্রোক্তমগ্রি দীপকরং পরং। র্ষ্যানামতি রুষ্যঞ্চ রুদায়নমিদং শুভং। বিষেশাৎ স্ত্রীগদেপ্রোক্তং প্রস্থতানাং যথায়তং। বিংশতির্ব্যাপনোযোনিঃ প্রদরং পঞ্চধার্মপ। ষোনিদোষহর স্থীণাং রজোদোষ হরোপিচ। পাপ সংসর্গজোদোষ নাশ্যেরাত্রশংসয়ঃ। আমবাত হরকৈব শিরঃশুল নিবারণঃ। সর্বাশূল হরকৈব বিশ্বোথ কটীশূলরুৎ। বীৰ্ণারদ্বিং করং পুংসাং স্থতিকাতক্ষনাশনঃ। বাতপিভক্কোট্র তান্ ছন্দুজান্ সন্নিপাতিকান্। इत्तिमर्क भनात्मश छर्थी मो जाभागाशिमी। নৌভাগ্যদারিনী স্ত্রীণামতঃ সৌভাগ্য শুর্গ ীকা।

৬১ চুর/২॥সের ;>/একমণ ত্বুন্ধনছ পাক করিয়া /৪সের স্থত দ্বারা ভাজিয়া তৎসহ শতমূলী, ভূমিকুত্মাণ্ড, ভালমূলী, গোক্ষুর, বেড়েলা, গুলঞ্চ, বিক্তিই, শলুকা, জীরা, কৃষ্ণজ্ঞীরা, ত্রিকটু, রক্তচিতা, ত্রিবৃগন্ধি, যমানী, তালীদপত্র, মারী, রাস্মা, বনযমানী, পুষ্করমূল, বংশলোচন, দেবদাক্ষ, শাসী, জটামাংসী, বচ, মোচরস, শলুকা, দাক্ষনি, ডেজপত্র, নাগকেশর, জীবস্তী, মেথী, যফি-ধু, রক্তচন্দন, সারচন্দন, বিড়ন্দ, বালা, বাসক, ধনে, কট্কল ও মুথা, ইহা- দের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ তোলা এবং এই সমস্ত চূর্ণের দ্বিগুণ ইক্ষুচিনি যথা- বিধানে এই মোদক পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় মধুর সহিত স্থেন করিলে বলি পালিতাদি নই হইয়া বল, বর্ণাদি বর্দ্ধিত হয় এবং প্রস্থৃতা নারী প্রভৃতির বিবিধ রোগ আরোগ্য হয়।

জাতীফলান্যা বটিকা।—

বিশুদ্ধ সূত্রা চ গদ্ধক্যা প্রত্যেকশো মাষ্চতুইয়ন্ত ।
বিধায় শুদ্ধোপলমাত্রমধ্যে স্কজ্জলীং বৈদ্যবর প্রয়ণ্ডাং ।
জাতীকলং শালালী বেইমুন্ডং সটল্পং সাতিবিষং সজীবং ।
প্রত্যেক মেতন্মরিচ্ন্যশানং প্রমাণমেকং বিষমায়কক ।
বিচূণ্য সর্বৈবাবতুর্ণ্য পশ্চাৎ বিভাবয়েৎ পত্রস্কেরমীয়াং ।
বাদান্ত ভদ্রোৎকট কঞ্চানাং ইন্সানিকেন্দ্রাশনকঞ্জমু ।
সাবিল্কং দাড়িম কেশরাজ মবিদ্ধ কর্ণাপি চ ভূপরাজং ।
বিভাব্য সমায়টিকা বিধেয়া কোলান্থিমানাথ মথারপানং ।
সোহং নিহন্ত্যত্রভ্রকারান্ সূতিবিকারং শ্রয়থুং সমগ্রং ।
কামঞ্চ পঞ্চানক মন্ত্রপিভানয়ং নিহন্তি গ্রহণী বিকারান্ ।
আভ্যায় জীয়াদ্গুদজান্ সাধ্যানামাত্র বদ্ধস্তুতিসারমুগ্রং ।
শ্বামং তথা পাণ্ড গদং নিহন্তি চিরোদ্রবাঞ্চ গ্রহণী প্রস্কুটাং-।
জীবেন্ত্রশং যোগশতৈ্যরসাধ্যাং বিবর্জ্জনীয়া ইহ ইন্ট মৎস্যাঃ ।
মৎস্যাং তথা পাণ্ডব বর্ণকাশ্চ রন্তাফলাদ্যা বর্টিকা প্রশন্তা ॥

কজ্জনী, ৮মামা, জাতীফল, মোচরস, মুথা, টঙ্কন, আতৈস, জীরা ও মরিচ হ ইহাদের প্রত্যেকের চূর্গ অর্জভোলা এবং বিষচ্গ একমামা। এই সমস্ত চূর্গ যথাক্রমে বাসক, আত্র, গন্ধভূগ, কঞ্চট, নিমিন্দা, সিদ্ধি, জাম, বৈল, দাভিম-ছাল, কেশুরিয়া, ভীমরাজ ও আকনাদি, ইহাদের রসে ভাবনা দিরা ফুল প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে স্থতিকাদি বিবিধ প্রকার গ্লোগ আরোগ্য হয়।

গর্ভবিলাদোরদঃ।—
রসগন্ধক তুলাঞ্চ ত্রাহং জগীর মন্ধিতং।
ত্রিভাবিতং ত্রিকটুনা দেরং গুঞ্জা চতুষ্টরং।
গর্ভিণ্যাঃ শূল বিষ্টম্ভ জ্বরাজীর্ণেয়ু কেবলং।
ইতি শুরোগাধিকারঃ।

রস, গন্ধক ও তুঁতে, জন্তীর রসে মর্দ্দন করিয়া স্থ্যাতপে শুক্ষকরতঃ তিকার কাথ দারা ভিন বার ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা দেবন করিলে গার্ভিণীর শূল, বিষ্টৃত্ত, জ্বর ও অজীর্ণ রোগ আরোগ্য হয়।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণি-এছে জ্বীরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ বালরোগাধিকারঃ।

কুষ্ঠাভয়াবচা ব্রদ্ধীকট্ফলং ক্ষেদ্রি সর্পিষা।
বর্ণায়ুঃ কান্তিজননং লেহং বাল্যা দাপয়েৎ।
ব্যোষশিবোগ্রা রজনীকল্কং বা পীত মথবাপয়সা।
উল্পংনিঃবেশাং কুরুতে পটুতাং বাল্যাচাতান্তং।
মুৎ পিণ্ডেনাগ্রি তপ্তেন ক্ষীরসিক্তেন সোয়তা।
স্বেদয়েত্বতাং নাভিং শোথন্ডেনোপশাম্যতি।
নাভিপাকে শিশালোগ্র প্রিয়ন্ত্ব মধুকৈঃ শৃতং।
তৈল মভ্যঞ্জনেশস্ত মেভির্কাপ্যবচর্ণিতং।

্ড, হরীতকী, বচ, ব্রহ্মীশাক ও কট্ফল, এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণ•পূর্ব্যক মৃত ও মধুসহ লেহন করাইলে বালকের বর্ণ; আয়ুঃ ও কান্তি বর্দ্ধিত
হয়।

ত্রিকটু, হরীতকী, বচ ও হরিদ্রা ইহাদের কল্ক হ্রমসহ দেবন করাইলে বালকদিনের লেখা নম্ট হয় এবং শরীরের পাটুত। জ্বান্তিয় থাকে।

একটী মৃৎপিও অগ্নিতে উত্তপ্ত করত: তত্ত্পরি হন্ধ দেবন করিলে যে , উন্মানির্গত হয়, তদ্বারা স্বেদ দিলে বালকের উথিত নাভী ও শোথ উপ-শমিত হয়।

হরিদ্রা, লোধ, প্রিরন্ধু ও ম্বন্টিমধু, এই দকল দ্রব্যদ্য তৈল পাক করিয়া ভদ্ধারা নাভীতে প্রলেপ দিলে অথবা উহাদের চূর্ণ নাভীতে প্ররোগ করিলে • শিশুদিগের নাভীপাক নিবারিত হয়।

সোমগ্রহণে বিধিবৎ কেকি শিখামূলং মুদ্ধৃতং বদ্ধং। জঘনেহথ কন্দুরায়াং ক্ষপায়ত্যহিত্তিকাং নিয়তং। জমুকনালা বায়সজিহ্বা নাভির্বস্থাহ সম্ভূতা। কাংশ্য রসোথগরলং প্রাব্ধতেক বামজজ্ঞান্তি। ইত্যেক শোথ মিলিতং বিয়তং গ্রীবাদি কটীদেশে। অহিত্তিকা প্রশমন মভ্যঙ্গোনাতি পথ্যবিঞ্চি।

চন্দ্রপ্রহণ সময়ে ময়ুরশিখার মূল উত্তোলনপূর্বক বালকের ক্টাদেশে অথবা গলদেশে বন্ধন করিয়া দিলে অহিতৃত্তিকা রোগ বিন্ট হয়।

শৃগালের নাসিকা, কাকের জিহ্বা, শুকরের নাভী, কাংস্ক, পারদ, বিষ ও বর্ষাকালীন ভেকের বাম জঙ্বার অন্থি, বালকের থীবাদেশে অথবা কটিদেশে বন্ধন করিয়া দিলে, অহিতৃতিকা রোগ বিনস্ট হয়। ইহাতে অভ্যন্ধ ও পথ্যা-দির বিচার নিপ্রবাজন।

অনামকে সুদু রিকাবুক্কা মরিচ রোচনা।
নবনীতঞ্চ সন্মিপ্র্যাখাদেতু দ্রোগনালনং।
তৈলাক্তং শিরস্তালুনি সপ্তদলার্কস্বাহী ক্ষীরং।
দত্বাচ রজনীচূর্ণে দত্তেনস্যোশ্চদনামকাখ্যং।
লেহয়চন্ডনা বালং নবনীতেন লেপিতং।
পুটক পত্রজারদেনোদ্বর্ভনগতদ্ধিতং॥

খুর্খুর্ পোকার বুক, মরিচ, গোরচনা ও ননী একত্র সেবন করাইলে অথবা বালকের মন্তকের ভালুদেশে ভৈলঅক্ষণ করিয়া ভত্নপরি ছাতিম, আকন্দ ও মনসা সিজ্বের হন্ধ প্রক্ষেপপূর্বক ছরিদ্রাচ্ণ প্রদান করিলে শিশুদিগের অনামক (পুঞ্জিকা) রোগ আরোগ্য হয়।

বালকের সর্বাগাত্তে নবনীত লেপনপূর্ব্বক কুরুর দ্বারা লেহন করাইয়া পুটকী পত্তের রুদে উদ্বর্তন করিলে, শিশুদিগের অনামক রোগ বিনম্ভ হয়।

> চালনিকা তলসংস্থিতপোতং সংপ্লাব্য গ্রামূত্রেণ। ওকোনশালিকারাং রজকক্ষারোদক স্থানং। দাসক্রয়ণ আবণ বটিকা রসেন্দ্র প্রিভাগ্নতা কর্পে। নলিনীদলেচ শয়নং দৃষ্ট মনামকাখ্য রোগন্নং॥

চালনীর নিম্নে বালককে শয়ন করাইয়া গোমূত্ত দেচনপূর্বক স্থান করা-ইয়া পশ্চাৎ রন্ধকের ক্ষারজল দারা স্থান করাইলৈ বালকদিনের ওক্ষেশা-লিকা রোগ আরোগ্য হয়।

কপট বেশধারী পাষগু যোগীর নিকট হইতে ভূত্য দ্বারা কড়ী ক্রয়পূর্ব্বক তাহাতে পারদ পূর্ণ করিয়া বালকের কঠদেশে বাঁধিয়া দিলে এবং পদ্মপত্তে বালককে শন্তন করাইলে অতি কউদায়ক অনামক রোগও প্রশমিত হয়

ভৈষজ্যং পূর্বেম্র্লিন্টং নরাণাংযদ্জ্রাদিষু।
কার্যন্তদেব বালাপাং মাত্রাতস্য কণীয়সী। '
সহামুখীতিকোদিচ্যকাথৈঃ স্নানং গ্রহাপহং।
বলিশান্তীষ কর্মানি কার্যানিগ্রহ শান্তয়ে।
মন্ত্রন্টায়ং প্রযোক্তব্যং তত্রাদৌ সার্বকর্মিকঃ।

ওঁ নমো ভগবতে গড়ু রায় ত্রায়কায় সদ্যন্তবস্তুতৎ স্বাহা।
ওঁ কং টং পং সং বৈনতেয়ায় নমঃ।
ওঁ ব্রং ব্রীং ক্ষঃ।
বালদেহ প্রমাণেন পুষ্পমালাস্তু সর্বতঃ।
প্রগৃহ মুচিকাভক্তং বলিদেমুস্ত শান্তিকঃ।
ওঁ কারীস্বর্ণ পক্ষীবক্ষবক্ষবালকং স্বাহা॥
ওঁ নমো বিরেচনায়।

এভিমন্ত্রৈরন্যৈশ্চ রাবণতন্ত্রোক্ত মাতৃকাপৃজা কর্তব্যা ।
পূর্বেজ্ব, অতিনার প্রভৃতি রোগে যে দকল ঔষধাদি কথিত হইয়াছে,
শিশুদিগের জ্বর, অতিনারাদি রোগেও দেই দেই ঔষধ প্রয়োগ করা যার,
কিন্তু তদপেক্ষা অপ্প মাত্রায় ঔষধ শিশুদিগকে প্রয়োগ করিবে।

নিন্টী, মুগুরি ও বালা, ইহাদের কাথ দারা বালকদিগকে স্থান করাইলে অথবা "ওঁ নমোঃ ভগবভে—হ্রীং ক্ষঃ" এই মন্ত্রটী পাঠ করিয়া বলী কর্মাদি আচরণ করিলে কিন্তা বালকের দেহ প্রমাণ পুষ্পমালা প্রস্তুত করতঃ রাবণ ভরোক্ত "ওঁ,কারি—নমঃ বিরোচনায়" এই মন্ত্রটী দারা মাতৃকা পূজা করিয়া অন্নাদির বলীপ্রদান রূপ শান্তিকর্ম্ম করিলে বালকদিগের গ্রহদোষ দ্রীভূত হয়।

প্রথমে মাসি জাতস্য শিশোর্ভেষজ রক্তিকা।
অবলেহাতু কর্ত্তব্যা মধু ক্ষীর সিভান্নতৈঃ।
একৈকাং বর্দ্ধয়েভাবৎ যাবৎ সংবৎসরোভবেৎ।
তদুর্দ্ধ মাষরদ্ধিঃ স্যাদ্যাবদা ষোড়শাব্দিকাঃ॥

• একমান বয়ক্ষ বালকের কোন রোগ ছইলে, তাহাকে ১ রতি পরিমাণ ঔষধ মধ্, ত্বন্ধ, স্থত ও চিনিনন্ধ লেহন করিতে দিবে। তদনন্তর ১ মানের পর ত্বই মান্দ হইতে এক বৎসর পর্যান্ত প্রতি মানে ১ রতি প্রমাণ রক্ষি করিয়া ঔষধ দিবে। তৎপরে ১৬ বৎসর বয়ন পর্যান্ত প্রতি বৎসরে এক এক মাষা করিয়া ঔষধের মাতা বাড়াইয়া দিবে।

হরিদ্রারর যান্ট্যাহ্ব সিংহীশক্রযবৈরতঃ।
শিশোর্দ্ধরাতিসারলঃ কষার ন্তন্যদোষহৎ।
অশ্বপত্বশ্বলং কৌদ্রেশ্ব পাকেতুলেপনং।
দার্কীয়ন্ট্যভারা জাতীপত্রং কৌদ্রেন্তথাপরং।
সজমীর রসেন স্থালরস ঘর্ষণং সদ্যঃ।
কৃত্যপহরন্তিপাকং মুখজং বালস্যান্থেব।

হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, চাকুলে, যফিমধু ও ইন্দ্রয়ব ; ইহাদের ক্লাঞ্চ দ্বারা শিশুদিগের জ্বরাতিদার ও প্রস্তুতিদিগের স্তম্ভদোষ দ্রীভূত হয়।

অখথ রক্ষের ছাল অথবা পত্র কিম্বা দাকহরিত্রা, ষষ্টিমধ্, ছ্রীতকী ও জাতিপত্র মধুসহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে বালকদিগের মুখপাক আরোগ্য হয়।

পুটপাক বিধানে গৃহীত জম্বী । রর রম ও মনদা দীজের পাতার রম একত্ত মিত্রিত ক্রিয়া মুখে ঘর্ষণ করিলে শিশুদিগের মুখপাক বিনম্ট হয়।

লাবতিভিরিবল ররজঃ পুষ্পরসসমন্বিতং।
ক্রতং করোতি বালানাং দন্তকেশরবৎ মুখং।
দন্তোন্তবোশ্বরোগের ন বালমভিষন্তরেছে।
স্বরমেবোপনামন্তি জাতদন্তন্য তে গদাঃ।
মায়ুরপক্ষভন্ম ব্যুষিভঙ্গলন্তেন ভাবিতং পেরং।
তৃষ্ণাশ্বং বটকার্চক ভন্মজলং বক্তুনোধজিদ্ভং বক্তে।
পিষ্টেঃ ছাগেন হুগ্ধেন দার্কীমুন্তক গৈরিকৈঃ।
বহিরালেপনং শন্তং শিলোনেভাময়ার্তিজিৎ॥

লাব ও তিত্তিরি পক্ষীর শুষ্ক মাংস চূর্ণ মধুসন্থ বালকের দন্তে ঘর্ষ।
করিলে দন্ত পঙ্ক্তি কেশর বং স্থান্য হয়।

বালকদিশের দন্ত উথিত হইবার সময়ে যে সকল রোগ জন্মিয়া থাকে ভাহা নিবারণার্থ কোন প্রকার কউদায়ক ঔষধাদি বালকদিশের প্রতি প্রয়োগ করিবে না। কারণ দন্ত উৎপন্ন হইলে সেই সকল রোগ স্বয়ংই বিন্দ ছইয়া থাকে।

ময়ূরপুচ্ছ ভস্ম পূর্ব্যদিবসীয় বাসি জ্ঞান সহ পান করাইলে বালকদিগের তৃষ্ণা নিবারিত হয়। উক্ত প্রকারে বটরক্ষের কৃষ্ঠিভন্ম জলে স্রাবিত করিয় দেই জ্ঞান করাইলে শিশুদিগের মুখশোষ নিবৃত্ত হয়।

দাকহরিক্রা, মুথা ও গেরীমাটী ছাগত্ত্মগৃহ পেষণপূর্বক চক্ষুর বহির্ভাগে প্রালেপ দিলে শিশুদিগের চক্ষুরোগ বিনষ্ট হয়।

নাগরাতিবিষামুন্তং বালকেন্দ্র যবৈঃশৃতং।
কুমারং পারয়েৎ প্রাক্তঃ সর্বাতিসার নাশনং।
বিল্মূল কষায়েপ লাজাঃ স মধুশর্করা।
আলোড্যপারয়েদ্বালং ছদ্যিতিসার নাশনং।
লাজা স যফিমধুকং শর্করা কৌদ্রমেবচ।
তণ্ডুলোদক সংযুক্তং ক্ষিপ্রং হস্তিপ্রবাহিকাং।

অক্টোঠকমূল মথবা তঙু লসলিলেন বটজমুদলয়া। শীতং হত্তাতীসারং গ্রহণীরোগঞ্চ কুর্বারং।

শুঠী, আত্তইয়, মুখা, বালা ও ইন্দ্রয়র ইহাদের ক্ষাথ পান করাইলে শিশুদিশের সর্বানিধ অভিসার প্রশমিত হয়।

বিল্মূলের কাথে খৈ চূর্ণ মধু ও শর্করা আবোড়িত করতঃ পান করাইলে বালকদিগের বমি ও অভিসার নউ হয়।

খৈ চূৰ্ব, খঞ্চিমধু, শৰ্করা ও মধু একত্র ডণ্ডুলোদক সহ সেবন কর্নাইলো ৰালকদিনের প্রবাহিকা রোগ দূরীভূত হয়।

অকোঠমূল অথবা বটের ও জামের পত্র তণ্ডুলোদকদছ পেষণ করিয়া পান করাইলে শিশুদিণের দর্ববিষ অভিদার ও গ্লুহণীরোগ আরোগ্য হয়।

অশ্বসন্ধান্নতং।—

পাদকক্ষেহখগন্ধায়াঃ ক্ষীরেদশগুণেপচেৎ। স্বতং পেরং কুমারাণাং পুঞ্জিদ্বল বর্দ্ধনং।

স্বৃত্ত /ঃ সের হন্ধ > / মণ এবং কল্কার্থ ;—অশ্বগদ্ধা /> সের যথাবিধানে এই স্বৃত্ত পাক করিয়া দেবন করাইলে শিশুদিগের পুর্ফি ও বল বর্দ্ধিত হয়।

কুমারকল্যাণয়তং I—

হজ /৪ দের, হন্ধ ।৬ দের, কন্টকারীর কাথ ।৬ দের কল্কার্থ;—শৃথ্য পূম্পী, বচ, ব্রহ্মীশাক, কুড়, ত্রিকলা, দ্রাক্ষা, শর্করা, শুগুী, জীবন্তী, যফিদ্যু, বেড়েলা, শঠী, হুরালভা, বেলশুঠ, দাড়িমকলের ছাল, তুলদী, শালপানা, মুথা, পুক্রমূল, ছোটএলাচী ও গক্তপিপুল, প্রভাকে ২ ভোলা মথা- বিশ্বাদে তৈলপাক করিয়া দেবন করাইলে শিশুদিগের বল, বর্ণ, অগ্নি প্রভৃতি,
বর্দ্ধিত হর এবং দন্তবোগাদি বিবিধরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

লাকাদি তৈলং।

লাক্ষারস সমং দিদ্ধং তৈলমস্ত চতুগু ণং । রামা চন্দন ক্রকান্ধ বাজিগদ্ধানিশাষ্ট্রঃ। শতাহ্বাশার যন্ত্যাহ্ব মূর্ব্বাতিক্তাহরেণুভিঃ। বালাং ক্বর বিনাশার মভাঙ্গাদ্বল বর্ণকং ।

তেল /৪ দেব লাক্ষার কাথ /৪ দেব, দধিরমাত্।৬ দের। কন্ফার্থ;—
রাক্ষা বক্তচন্দন, পিপুল, মুথা, অশ্বনদ্ধা, হরিদ্রা, শলুফা, দেবদাঞ্জ, যফিষ্ধু,
স্থানীয়খী, কট্কী ও রেণুক', এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ দের।
যথানিধানে এই তৈল পাক করির অভাঙ্গ প্রদান করিলে বালকদিগের
স্করে বিন্তি হয় এবং বলবণাদি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

বিল্পক্রায়ু মোতাহানিদ্ধমাজং পরঃ শিলা। সামং সংযুভাং গ্রহণীং পীতং হন্যাৎ ত্রিরাত্ততঃ ॥

বেলশুঠ, ইন্দ্রয়ৰ, বালা, মোচরম ও শিলাজতু, এই দকল দ্রুব্য ছাগছন্ধ সহ কাথের বিধি অঙ্গারে পাক করিয়া পান করাইলে তিনরাত্তি সংখ্যই শিশুদিনের আমশংখুক্ত গ্রহণীরোগ আরোগ্য হয়।

শিশু চাতুর্গকং।—

ঘনক্ষারুণা শৃঙ্গীচূর্ণং ক্ষোদ্রেণদংযুতং। নিশোর্দ্ধরাতিসারত্বং কাস শ্বাস ব্যিহরং॥

মুথা, পিপুল, আতইচ ও কাঁকড়াশৃলী, ইহানের সমভাগে চূর্ণ মধুসছ বোগে লেছন করাইলে শিশুদিয়ের জ্বাতিসার, কাস, খাস ও বমি নিবান বিক হয়।

त्रजनगानिष्ट्रंश । ,,

রজনী দারুসরল শ্রেরদী রহতীদ্বরং।
পৃশ্বীপর্ণীশতাহ্বা চ লীচং মান্দিক সর্পিষা।
গ্রহণী দীপনং হৈত্যারুতার্ভি নকামলাং।
জ্বাতীসার পাও স্বং বালানাং সর্কশেংথহা॥

জুরাতীসার পাণ্ডু ছং বালানাং সর্বশেংথহা। ছরিক্রা. দেবদাক, সরলকার্চ, পিপেলী, বহুতী, কন্টকারী, চাকুলে ভালুকা, এই সকল দ্রব্যের সমভাগে চুর্ণ ও ঘৃতসহ লেহন করাইলে বালক-দিগের গ্রহণীজনিত নিজেজ অগ্রি উদ্দীপ্ত হয় এবং বায়ু, কামলারোগ, ক্লুব্রাজিগর, পাণ্ডু ও সর্বপ্রকার শোথ বিন্দ হইয়া থাকে।

সুস্কাং পিপেলীনান্তচ্বং সমন্থ্যকরং।
বিন মাতুলুঙ্গ্য হিন্তা ছর্দি নিবারনং।
বিত জীরকসর্জচুর্বং বিল্বলোখান্থিনিশ্রং পীতং।
হন্যাম্রক্তং শূলং গুড় সহিতই খেতসক্রোবা।
গৃঙ্গীমুন্তাবিবাং বিচুর্ব্য লেহং বিদ্যাৎ মধুনাশিশুনাং।
কাসন্ত্র ছর্দিভিবর্দ্বিতানাং সমাক্ষিকাং বাতিবিযামথৈকাং।
জান্ত্রান্ত্রিজ দিন্তু থৈলেহ ক্ষোদ্রেণ বাত্তিভিছ।

পিপুলচূর্ণ, মধু ও ইক্ষুচিনি সমভাগে ছোলজনেবুর রসমন্থ সেবন করা-ইলে শিশুদিগের ছিকা ও বমি নিবারিত হয়।

খেওজীয়া ও ধূনা চূর্ন বেলপাতার রস্বাহ অথবা শেত ধূনা চূর্ব ইকুগুড়-সহ দেবন করাইলে শিশুদিগের আমরক্ত ও শূল বিন্তই হয়।

কাঁকড়াশৃদ্ধী, মুথা ও আতইচ, ইহার চূর্ণ একত্র অথবা কেবলমাত্র আত-ইচ চূর্গ মধুসহ লেহন করাইলে শিশুদিগের কাস, দ্বর ও বৃষি আরোগ্য হয়।

অন্ত্রের আঁটীর শাস, থৈচু ওি সৈদ্ধবলবণ একত্র মধুসছ লেছন করিতে দিলে শিশুদিগের বমি নিবারিত হয়।

মহাগন্ধকঃ।--

গন্ধকং পারদং শুদ্ধং কর্ম গ্রাহ্থং পৃথক্ পৃথক্।
ততঃ কজ্জলিকাং রুত্বা মৃত্রপাকেন সাধ্যে ।
ভাতীফলং তথাকোবং লবদারি উপত্রকং।
গিন্ধুবারদলকৈব এলাবী জং তথৈব চ।
এতেবাং কষমাত্রেণ পর্নেন সহমদিরে ।
বিকাণ্ছে পুনুষাপ্যং রন্ত্রাপত্রেণ বেন্টরে ।
ঘনপক্ষে বহিলিপূর্ণ পুটমাত্রং প্রয়োজরেই।
ততঃ প্রয়োজ্যং কুমারাণাং রুক্ষণার মহৌবধং।
ভবোদ্ধঃ দীপনকৈব বলবর্ণ প্রনাদনং।
ভ্বারং গ্রহণীরোগং জরেচ্চেন এবাহিকা।
গ্রহণী দূষিতং রক্তং অশোরক্ত সমুদ্ধবং।
স্থিবাগ জয়েদেতনপিবৈদ্য বিবর্ণিন্ডং।

কাদ শ্বাদাতিসারন্থং বাজিকরণ মুদ্ধং। বালরোগং নিহন্তান্ত দর্বোপদ্রবসংশুতং। পিশাচা দানবাদৈত্যা বালানাং বিদ্বকারকাঃ যত্রৌষধি বরস্তির্চেভত সীমাং ন যান্তিতে! বালানাং গদমুক্তর্নাং স্ত্রীণাক্ষৈব বিশেষতঃ। এতদেবৌষধং ঐ্রেচ মশ্বিভ্যাং নির্দ্বিতং পুরা! মহাগন্ধক নামেতি দর্বব্যাধি নিস্থদনং। অত্ত জাতীফলাদীনাং প্রত্যেকং রসত্ল্যতা। বিনা পাকেন দর্বান্ধ স্থদরঃ পরিকীর্ত্তিতঃ॥

পারা ২ ভোলা, গন্ধক ২ ভোলা এবং জাতীকল, জৈত্রী, লবন্ধ, নিষপত্ত নিদিন্দাপত্ত ও ছোটএলাচী, ইহাদের চূর্ণ প্রভোকে ২ ভোলা। এই সকল দ্রব্য জলসহ পেষণপূর্বক বিছকের মধ্যে পুটপাক দিয়া ২।৩ রভি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিয়া লইবে। এই ঔষধ অন্তপান বিবেচনায় দেবন করাইলে শিশুদিগের অর্দঃ, গ্রহণী ও অভিসারাদি বিবিধ রোগ আরোগ্য হয়। এই ঔষধকে পুটপাক না দিলে দর্ব্বান্ধ স্থানর বলা যায়।

বালকুমারোরসঃ।-

নাণং শুদ্ধন্য স্তৃন্য গন্ধকন্য চ তৎ নমং।
স্থবৰ্ণ মান্ধিকন্যাপি ভাগান্ধিং সম্প্ৰকলপয়েৎ।
ততঃ কজ্জলিকাং কৃত্বা ভাবয়েদ্ৰনসংযুতং।
কেশরাজনা ভূঙ্গন্য নিশু গুণাঃ পত্ৰসম্ভবং।
শুভেশিলাময়েপাত্ৰ লোহদণ্ডেন মৰ্দ্ধয়েৎ।
দেয়ং রদ দ্বিভাগেন চূৰ্ণং মরিচ, সম্ভবং।
শুক্ষমাতপ সংযোগাদ্ শুড়িকা ন্যপ্রিমিতা।
হন্যাদোষ ত্রাকেব কানকৈব স্থলাকণং।
চির জ্বক কানক শূলমন্তবিধন্তথা।
শিশুনাং জ্বনাশায় রসোহয়ং শ্বিনির্মিতঃ॥

ইতি বালকুমারোরসঃ।

পারা > ভোলা, গন্ধক > ভোলা ও অর্থনাক্ষিক অর্দ্ধভোলা একত্র মর্দ্ধনপূর্বক কেশুরিয়া, ভাষরাজ ও নিদিন্দা, ইহাদের পাতার রুদে মর্দ্ধনপূর্বক

তৎসহ ২তোলা মরিচচূর্ণ মিল্রিড করতঃ সর্বপ প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে।
• ইহা জুল্পান বিবেচনার সেবন করিলে শিশুদিগের সর্ব্ববিধ কাস, পুরাতন
জর ও অফীবিধ শূল আরোগ্য হয়।

্ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিপ্রস্থে বাল্করোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ বিষাধিকারঃ।

শ্বেষণ কর্ণ গ্রাণ বামানামিকরা কুতঃ।
লেপোহন্যাদ্বিষং ঘোরং নৃমূত্তিঃ দেচনন্ত্রপা।
শিরীষ পুষ্প স্বরেস ভাবিতং মরিচং সিতং।
সপ্তাহং সর্প দংক্রানাং নস্যপানাঞ্জনোহিতং।
দ্বিপলং নত কুঠাভ্যাং ম্বত ক্ষোক্তং চতুঃপলং।
স্বাপ তক্ষক দংক্রানাং পান্মেত্ৎ সুখপ্রদং।
গৃহধূমো হরিদ্রে ছে সমূলং তণ্ডু লীয়কং।
অপি বাস্থকীনাদ্রীঃ পিবেদ্ধি ম্বতাপ্লুতং॥

বামহন্তের অনামিক। জঙ্গুলী দ্বারা সর্পদ্ধ স্থানে মুখন্থিত শ্লেম্বা অথবা কর্ণমল লেপন করিলে কিন্তা দংশনমাত্র তৎক্ষণাৎ দফ্টস্থানে মন্থ্যের মৃত্র দেবন করিলে নিয় বিনষ্ট হয়।

শিরীয় পুষ্পের রসে ৭ দিবদ খেডসরিয়া ভাবনা দিয়া তদ্বারা দর্পদ্র ব্যক্তিকে নম্ম, পান ও অঞ্জনার্থে প্রয়োগ করিবে।

কুড় > পলা, তগরপাছক। ১পলা, স্থাত ৪পলা ও মধু । পালা এই সকল জবা একেএ পেষণপূর্বক দেবন করিলে তক্ষকদেউ ব্যক্তিরও বিষন্ষ হয়। ্বা গৃহধুম, হরিদ্রা, দাকহারিদ্রা ও টাপানটের মূল একত্র পেষণপূর্বক দাধি ও মৃতাপ্লাত করিয়া দেবন করিলে বাহ্মকির বিষও নাই হয়।

কালপৈলাশনিঃ।—

সূত্ৰকং গদ্ধকথ তুল্যং টক্ষণং রজনীসমং। দেবদাল্যা চ বৈমৰ্দ্যং দিনং নিক্ষন্ত্রতথা। কালশৈলাশনিন্মিরসঃ সর্বা বিষাপহঃ।

ইতিঃবিষাধিকারঃ।

পারা, গন্ধক, তুঁতে, টক্ষণ ও হরিজাচুর্ণ ঘোষাকলের পীতার রস সহ

এক দিবস মর্দনপূর্বক উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে সর্ববিধ বিষ্ট নউ।

হয়।

ইতি প্রােগ-চিন্তামণিশ্রে বিষরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।
ইতি প্রারামমাণিকা দেন ক্রিভূষণ বিরচিত রােগ পর শিশন্তর
উষধ প্রকরণ বিষয়ান প্রােগ-চিন্তামণি আছে
চতুর্বিংশতিত্যোহধ্যায় সমাপ্ত।
সমাপ্তাহয়ং গ্রন্থ:।

শুদ্ধিপত্ত।

:অগুদ্ধ	শুদ্ধ	পূঠা	পূত ক্তি
ক্লীবিত কালেয়	জীবিভ কালের	•	ર
<u>ञ्</u> ञादनो	ভ ্ৰাদে ী	ঞ	8
পিত্তৈশ্চ	পিকৈ*চ		২৮
পিত দারা	পিটাভাষাণ দারা		8
্ব্রু রিভ	শ্ব ্য িত		: 6
কুরণ	স্ফূরণ		۲
পাশাত্ত্	পাশ্যাত্য		২্ প
ষামে,	য†দে	<u>`</u>	ক্র
চক্রেণমিশ্র	চক্রেণমি শ্রা	২8	22
চেত্বিকট জ ন	চেল্লিক টজন	্র	>5
>2	১২ এবং নিক টস্থজনসং খ্যা	ঐ	२ 8
क्रानिट्य।	জানিবে। ৭ জন নিকটে		
•	থাকায় যোগভাগ দেও		
	য়ার আবশ্যক হইল না।	ঐ	28
অনেন	এতেন	२8	>
দংজায় তে নাৰ্য্যঃ	শংক্ৰায়তেনাৰ্য্যাঃ	२४	٢
र प्रनील अथह	অব্যয় এবং	ঐ	२५
ক্ষীরান্ত বর্ত্তকঃ .	ক্ষীরান্নবর্ত্তক	92	>8
भू गमर्भिः अभितः	পু পদর্গি: প্র পূর্বর :	ঐ	5.0
পুগ (সুপারী)	'পুণ (পিটা)	9>	62
[मन 🕽 🗋	মদ, শুজ (কঁ!জিবিঃ)	95	•
र् षकार्थः	गू नर्फ्क	၁၈	ঽ
উদার্দ্ব্য	উদার্দ্য	ঐ	20
क्षिनि *ठग्र	ৰু যি নি শ চয়	ঐ	₹•
নৈৰ্গকো	নৈৰ্গক।	Ď.	•
ুখ ⁴	স্থ	ঞ	૭ ૨
বিশোধনম্	বিশোষণম্	08	>
কৈন্ত	কিন্ত	હક	۲
মৰ্শ্বঃ	অৰ্শ:	: !	२8

	-	
অভ দ্ধ	9 5	¥ ou∔u
বুদ্ধা বুদ্ধা		्र ेटा ,
মূল' উচিৎ	ৰুছ্ব। উপ্তিভ	6 5
শ্রোভনাং	ৰে;াভসাং	3 2 ′
ভামলক বাসক)	वामनक वामनकी)	.82
বাসক	्रामनकौ	8 2
>8 खन छट्ल	১৯ গুণ জ্বাল	80.
৬ গুণ জলে	১১ গুণ জ্বাল	ঐ
8 ଖ୍ୟ	৯ গুণ	ক্র
>8 € 4	১ ৯ গু ণ	4
৬ গুণ	১১ গুণ	<u> </u>
৪ গুণ	৯ গুণ	- -
শোষণং	শেষণং	es
श्रीरून:	क्षीशंबर	á)
নিম্ন লিখিড	পশ্চালিখিভ	€8
वुक्तामली वन्मा	द्रकापली वक्षा	c &
নিম্ব	ভূনিস্ব	66
নিম্ব (নিম্ছাল)	ভূনিম্ব (চিব্লডা)	্র
বাসক	অ।মলকী	Š
বক্ৰী (হাড়ভাঙ্গা)	বজ্ঞ (মনসাসিজ্ঞ)	*8
সিংহা	সিংহী	ð
জুরঞ্চ	জরমূৎ	69
ৈ মতেত্ব [′] তং	শেতৈ ত্ব'তং	& >
দাকহারিজী	माक् रतिज्ञा	9@
বিনিৰ্দ্ধেন্তা	বিনিদেখা	92
বাদিশীতল মুদ্ধত্য	স্বাদশীতল মুদ্ধ্তা	>
বালাপযয়	বালাপচয়	22
সর্কালমাশ্রয়ং	भर्काष्ट्रयः खन्नः	ঐ
বিমর্দ্ধিতং	বিমৰ্দ্দিতং	25
বর াজ	বি দৃষ্ণ	29
বরাঞ্চকল্কল	কল্কল	39
বহেড়া ১ তোলা	বহেড়া ২ডোলা,বিড়ন্স ২ে	
भःभाषा	भः मर्फा	2.2
ভক্ষেন্ন তলে	ভক্ষায়েন্বলে	>• ₹
হ্মদুতঃ নিরাব্ডকঃ	মৃতী সর্ভাজনির্ধসক	3.4
41700 14414A40	ববদুভনিবারক:	200

- 	শুদ্ধ	পৃষ্ঠা	পঙ্জি
্বিলুঁ	বিল্	288	•
ুৰ্ভুচ্যা ভি বেষা	শুড় চাতিবিষণ	284	•
<u>প্রৌক্তরিত্বা</u>	পোথয়িত্বা	, >e>	● ≷
্রক্তসতিং	রক্ত শু ডিং	265	०२
	নিৰ্যূহ:	246	34
ী নিৰ্যাহঃ ই যদ্ধবাং	यम्मु वार	246	, >
ইভ্যাতিশারী	ইভাতিসারা	ð	. >8
প্রাহণ্যাধিকার:	এছ ণ্যবিকার:	369	ર
ভায়ধিষ্ঠান	অগ্ন্যধিষ্ঠান	ক্র	*
বিয়েষকথা	বিশেষকথা	369	08
কুৰ্য্যাচ্ছভাং	কুৰ্য্যাচ্ছু ভা ং	220	22
শুড়যোগাদ	গুড়যোগাদ্	222	\$,5
গজেন্দ্ৰ বটিকা '	शट्डस वर्षी	22 F	26
বান্ধং শীতলতা	দাঙ্গ শীতনভাং	२२३	२३
ইতি	ইভ্যত্তগোলিকা	201	२ ৯
কাধান্তা •	(†ভা	२७३	8
চু ণয়িত্বার্স	(য়ি ত্বার সে	ত্র	29
পাতন্তি	গ স্তি	२ ৫ २	2%
ह खना	11	२ ৫७	>
मेळुत्रक	ূ রঞ্	ঽ৬•	24
আখান	થે <u>ા</u> 1ન•	২৬৪	e
ন্ <u>ত্</u> ৰমোহরো	হ ে বা	२७८	>
র্মশ্বর্জম্বে	मार्म (य	246	٥٠
(নেবুর)	াণ্ডীলেবুর)	2 6 5	২৭
কৌষ্ঠগডং	াষ্ঠগতং	२१०	ŧ
शन्। भ ुवाग	নুশ্যোগঃ	&	२१
मश् वृत्याग	, এ্রঘোগঃ	२१४	92
ত্তিভাগি চুৰ্ণ	ব্ৰিভণ্ডাাদি চূৰ্বং	२१৯	₹•
मनः यस्त्रा मिर्चे प्य	মদয় ন্ত্যদি <u>ৰ্</u>	₹₽8	2>
চুৰ্ণানি।	हुर्ग मकल।	२४०	٩
চল্যোপদ্ৰ ব	, সর্কোপদ্রব	२৮१	ŧ
বিং শত্য	বিংশত্যা	२৯७	4)
বিশুদ্ধ:স্থাৎ	স্থবিভূদ্ধা	२२१	24
শান্তরী বটী	শাস্ত্ৰবী বটী	a	18
কিতবানসয়ো	কি তবাজ্য য়ো	®	(Alleger)

অশুদ্ধ	শুদ্ধ	20
শান্তরী	শান্তথ	229
শান্তরী বটী	ঁ শাস্ত্ৰ ী ৰ টী	ঐ
জরকবীজ	নি <u>'</u> শ্ববীজ	শ্র
म ७ यञ्ज	দ_ী্যান্ত	્ર રુષ્ટ્ર
নস্ <u>তাঞ্জ</u> ন	নু গুড়ান এ	600
ন ন্ত	ু,(শ্ব্য	ঐ
তৈল দ্বারা	'তৈল দ্বারা বা তালশাখার	
	রুম দ্বারা	Ġ
শিবায়ত ম্	শিবায়তং তৈলং যমকঞ	038
গ্ৰাম্ভ /৪	গ্ৰায়ত /৪ অথবা তৈল /৪	
	কৈষা ঘৃত তৈল মিশ্রিত /৪	200
শিবাকৃত	শিবায়ত শিবাতৈল ও	
	শিবাযমক	900
এই স্বত	এই ঘৃত তৈল বা যমক	4
শিবার্ড	শিবাত্বত, শিবাবৈত্তল ও	
	শিবায়মক	ঐ
ক্ষীরচতুর্গুণং	ক্ষীর চতু গু পে	286
পিচেৎ	পিবেৎ	ঐ
ক্ষণগৰ্ভে	ক্∂ণগভ	386
ক্ষণগর্ভত।	ক্ষ ীণগ্ৰন্ <u>ত</u> ।	589
মালতী।	মাল্ তী	282
তালকেশ্বনামে	তালকেশ্বরনামা	৩৬২
মুগুতিক ৷ চূৰ্ণং ৷	মুণ্ডিতিকা চূৰ্ণং।	206
মুঞ্জিকা	মুণ্ডিতিকা	ঐ
ব ৰ্ষাভয়ত	বু ষ াভুমূত	cro
ও পীনস	शीनमं ७ क्षं,	3 63
ল্ঘুন্ং	লঘু নং	226
ভল্বাতক ঘতং।	ভলাভক ঘতং।	8 • ₹
মৃত্রাঘাতাধিকার: ।	মূ বক্বছু।ধিকারঃ।	8.4
উষকাদিগণ:।	ঊষক:দিগণঃ।	826
উষকং	উষকং	্ঐ
(হাড়মুচা)	(বড়্থুলকুড়ী)	809
তাত্রং।	তামঃ।	88.
বৃ দ্ধিত্রধাধি কারঃ।	হৃদ্ধিত্রপ্লাধিকার: । সংগীতীত	862
মুও তিকার	मू छो दो द	844

r f

₹

म२ वि

বর বর বহে বংহ

ङ्क मूखी यममू

, অশুদ্ধ 🔑	শু দ্ধ	পৃষ্ঠা	পঙ জি
मोखा ं शन	मरखां<्रीम -	844	ેર∙
লেপনং	লেপনাৎ\	895	ર
(শ্বদৎ	ट्य नाम \	& _	ক্র
মাষকলার 📍	শাষকলায় ব	892	₹8
কণকবৈতল্ং।	কনক ভৈলং '	890	t
কণকাৰ্কু	ক্ৰকাক	٠.٠ خ	<u>۔</u> ق
কণকং	কৰকং	٠ ا	٤.
ম হাকলক	মহাক নক	Ğ	0>
মহাকণক	মহাকনক	848	•
কণক তৈলের	কনক ভৈলের স	ক্র ক্র	9
কণক ভৈলং।	কনক তৈলং	G G	\$٤
লেপনক্রিয়া	রোপণক্রিয়া	87.	২৯
উঠে)	উঠে) আর সপ্তমে বৈকৃত		ζ
·	নাশক ক্রিয়া	ক্র	9.
['] হু' পটেণৰ	স্থপৰ্বৰ	843	26
ত্রণরোগ:।	ত্ৰণ ে শাখাদে	872	34
লেখি কি	ং শিশ্বকে	8>•	65
ক্ষ ত স্থানে	ক্ষতস্থানে আপাংবীজ		¥.
	ও তিল একত্তে বাটিয়া	822	ર૭
	ভদ্ধারা		
ছিন্ন্যাম	, ছি ন্ধ ান	8৯२	œ
মহুষ্যের হাড়ের	কিন্তা মহুযোর সার	826	રe
् भूल,	भूल, खग्छलू.	829	રહ
িবিনির্মিডাঃ	বিনিশ্মিতঃ	822	34
জারা	্ জয়া	¢••	٥٠
় শূর্জ	- পত্রি এবং শোণালু পাতা	ঐ	3 F
শ-রাপ্নোতি	শমশপ্রেতি	ঐ	۶.
<u> নাসিকাবাদ্ধন</u>	নাসিকারান্ধ্রণ	æ•5	>>
ত্ৰিসন্ধাভাগং	<u> বিসন্ধ্যাভ্যা</u>	ক্র	₹•
অাকাবক	আকারক ঁ	C • D	>
ুপ্ৰত্যান	প্ৰত্যাখ্যান ু	C • C	২২
- 	সপ্তরাত্তাৎ	6.9	22
मर्गुलिक	মধুলিকা	6.4	95
क्ली नी वृष्ठ	क लिनीषुहः	¢•>	92
ান্ড্ৰুৎ পাটন	म ऊ ८भावेन	, 622	২ ৫

অণ্ডদ্ধ	%	পৃষ্ঠা প্ত
ধ্থোশ্যভেচ	বুখেন্বেডেচ	6) Sea
यू एका। प्रन	ब्रुटक ी हुन	eze
পিত্তোদৰ্দ্ধ	পিতে নৰ্দ	ezb
উদ দ্ধ	छ नर्क	eta
শ্বাযুাধিকার:।	স্নায [়] ধকাব:।	696
चिन्ध्रम् लः	ইফাঁর অস্থাহ পূর্বের তিন	•
	निर्म	602
রোগের	রোগের পিত্তবিমর্পতৎ	685
ন্তবিরাং	তুমিরাং	685
মুদ্ধ ত্য	মূ ধ ৃত্য	689
মু ষিকা	মূষিক	£8£
অভ্যক	পান ও অভাঙ্গ	<u> </u>
চুলকাদি	চুলক্যাদি	ঐ
কণকাদি	ক্ৰকাদি	ঐ
জ্জনণি	জতুমণি	€85
সঙ্গ	মুদ্	ঐ
ठार्ज्जूनमञ्जा	ठार्ज्जूनन्मक्षु ।	a
পায়দা	প্রসা	6 89
ত্ব ত্বং	দ্বকণ্ডক্	ঐ
ষ ঠালাপ।	কল্কালাপা	ર્થ
কালাকড়া,	কালাকড়া, কুড়.	€8৮
সিষাব্যাথে	মিরাব্যা ধ	642
बगः .	রুম:	ঐ
খুক্ণী) রোগ	খুকনী) রোগে	&
বিদ্ধা	विधाद	609
কু টস্ব চ ্	কুটনটং "	A
७ अ भू ल	ও ঞ্গমূল	t e8
কপালে	কপাল	669
ह न्। १	ब ्द	ঐ
সহিত	সহি ত ং	ঐ
ू माः	তু থ ং	GEA
टेडल .	ঘুত	669
মাৰ্কং মূলং -	মাৰ্ক বমুলং	ঐ
তৈল বাতহার স্থতং	তৈল বাতহার: শুভং	69.
প্ৰতি সাধনং	গুতি সারণং	ঐ

		_	
অশুদ্ধ .	শুদ্	পৃষ্ঠা	পঙ্ক্তি
क र	নু ক্	es •	•
महर्वा	म हर्वे । ब	ঐ	6 >
বীজপুরকা	ব জিপ্ রব	à	99
পূৰ্বক	পূৰ্বক ভংগ্ৰন্তধূম	692	ŧ
নভ্যঙ্গদম্ভরোগং	नजनाः मस्टिन्ति	692	8
मृ लः :	শূলহরং	4	72
মরিচা তি	মঞ্জিচ্চাত্তি	ঐ	₹•
গণ্ডুয়ো	গগু ষো	ঠ	٥.
কাণকচুৰ্ণং	গণ্ডুষো কানকচূৰ্ণং।	662	રર
শারতল য়ে	শাবতুলয়ে	4 8	>>
সমাপ্তঃ।	मगर्थ ।	6.98	٥.
সূবজ্যা	স্ র দ্যা	696	•
শা হীষ	শ †হিষ	ወ ፅ ৮	œ
. উভ্ যতাং	উদ্ভং	• 🍳	ক্র
র্ণাতিশ্যারং হরং	প্রতিশায় হরং	4	> b
বেশান্তা	বৈশাস্তা	` &	39
ছত্বা	मञ्चा	665	• •
কুষ্ঠী	কুষ্ঠ	ক্র	20
হৰ্কাদ্যং	मृ र्खामाः	e 9•	9
হৰ্কা	प् र्र्स।	A	F
কর্ণমোরট	কর্ণামারটে	à	٠ ۵
চক্ষুরোগাধিকার:	চক্রোগাধিকার:	493	,
সমা যুক্তে	भगायू रेकुः	ঐ	₹•
পুরণতঃ	পুরসতঃ	@ 92	9
কাষ্য	(কম্ব	e19	•
শং পক্ষে	সং পক্ষে	ঐ	>>
'শিকো	লিত্যো	G G	> ¢′
শকুলাধ্যে	यकुष(धा	¢ 98	30
পক্তবাৎ	পক্তাত,	ঐ	<i>ই</i>
পলীতমুং	প্ৰিডয়ং	@9@	ب کو
থৌদ্ধজাত্ৰা:	থোদ্ধজ্জকাৰ:	699	2 7
শিক্	পিক।	ক্র	>•
ৰৰ্জিবে য া	বর্তিরেষা	e 9 y	
নাশয়	নাশার	ر م	२ २ 5
इर्षिः	त्रक्षिः इक्षिः		&
-	₹1 AI €	, 610	20

শশুক •	শুদ্ধ	প্ৰকা
क्रिशा रनवा	ভিন্যাদেশ	€ b 8
কৰ্ণাশাকি	কৰ্ণাশাকি	are
রহম ারকং	রহম্মরক:	erb
যাথাবিধানে	যথাৰিধানে	٠ ٠
मणगून मगूसङा	मगर्मः गगूक् छा	422
পুষ্টোনাদ্ধতা	બુ ર્તિશોવાજ્ઞ હો	(A)
गगना मिटलो इः	^१ त्रशां पिटली इ ९	4 > 3
গ গণং	ৰ্গ গৰং	ক্র
,যোনিব্যাপদাধিকারঃ	(যানিব্যাপদ্ধিকারঃ	હઢ૭
ভগশকোচ	্ভগদকোচ:	623
হ্	্ স্	৬৽১
হ	হু।	≨ه وا
লাঙ্গানি	लाइनी	9.C
ময় বজটে:	ম র্রজাটঃ	D
ইহায়ত	ইহায়ত	৬•৬
শৰ্দ্ধিতং	মৰ্দ্দিত্তং	હ >૨ [•] ં
এছে	গ্ৰন্থে	७ > ೨
বিরেচনায়	বিরোচনার	9 > G
মুগুরি	মগুরী	ð
ওঁ কারি	ওঁ কারী	ď
যা উ াহ্ব	यस्रास्त	ঐ
যাদং যংযুতাং	যাম সংযুতাং	৬১৬
ভতঃ	ত ৎ	७२৯
ৰাস্থী নাদ ক্ৰ ি	বাস্থকিনাদংফ্রা:	952
मर्का - भवीकारसव	ग र्व	S
পরীক্ষান্তের	পরীকানন্তর	७२२
ভাষা। ধ্যায়	তম অধ্যায়	ঐ
	ভাৰি গত সমাগু।	